MUKTA JAN-MAY 1980-81

G.K.U.

110682

Khodiyar
खोडियार

मुक्ता

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

कला · कांति · कर्मण्यता

लेख

कथा साहित्य

कविताएं

स्तंभ

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

मई (प्रथम) 1981
अंक : 355

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स. प. प्रा. लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा (केवल टिकट नहीं) आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

मूल्य : एक प्रति : 2.75 रुपए, एक वर्ष : 55.00 रुपए. विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 रुपए.

मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एम—12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

संपादक के नाम

मार्च (द्वितीय) अंक के 'मुक्त विचार' में अखबारी कागज पर लगाए गए भारी कर के संबंध में आप की टिप्पणी बिलकुल उचित है. सरकार ने अखबारी कागज पर यह कर केवल पत्र-पत्रिकाओं की प्रसार संख्या कम करने के लिए लगाया है क्योंकि आजकल अधिकतर पत्रपत्रिकाओं द्वारा सरकारी नीतियों की कड़ी आलोचना की जाती है.

21 करोड़ की अतिरिक्त आमदनी के लिए सरकार को केवल अखबारी कागज ही मिला था? इतना कर तो विलासिता की किसी भी वस्तु पर केवल कुछ प्रतिशत शुल्क बढ़ा कर ही प्राप्त किया जा सकता था. अगर सरकार इन वस्तुओं पर कर नहीं बढ़ाना चाहती थी तो जहां घाटा 1,539 करोड़ रुपए का हो रहा था वहां 21 करोड़ रुपए और हो जाता तो सरकार को कौन सा फर्क पड़ जाता?

—मुकुल माथुर

मार्च (द्वितीय) अंक के 'मुक्त विचार' में प्रकाशित 'नया बजट : मुंह में राम' शीर्षक टिप्पणी में व्यक्त आप के विचारों से मैं पूर्णतया सहमत हूं.

हमारी सरकार हर वर्ष न केवल अपना खर्च बढ़ाती जाती है बल्कि सैकड़ों खर्चीली योजनाएं शुरू कर देती है, जिस का लाभ या तो राजनीतिबाजों को मिलता है या फिर सरकारी कर्मचारियों को. बेचारी जनता तो भूखी ही मारी जाती है.

—मो. सफीरुद्दीन अंसारी

मार्च (द्वितीय) अंक के 'मुक्त विचार' में प्रकाशित टिप्पणी 'बढ़ती जनसंख्या—कैसा बोझ' से मैं पूर्णतया सहमत हूं. अपना परिवार कितना बड़ा हो, यह प्रत्येक गृहस्थ का निजी मामला है. राष्ट्रीय स्तर पर जनसंख्या कोई समस्या नहीं है. उत्पादन व आर्थिक विकास का यह एक महत्वपूर्ण साधन है. जरूरत है इस के सही व समुचित उपयोग की.

हमारी मनोवृत्ति आज ऐसी बन गई है अथवा बना दी गई है कि हम संपन्न बनने के लिए स्वयं मेहनत करने से कतराते हैं पर अमीर बनने की दुर्दमनीय महत्त्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए हम अपने सहउत्तराधिकारियों की मृत्यु या विनाश की कामना करने लगते हैं जिस से उन का धन भी हमारी झोली में आ गिरे.

पूंजी क्या है? यदि कोई व्यक्ति अपने श्रम की बदौलत 10 रुपए कमाता है और आठ रुपए अपनी आवश्यकताओं पर खर्च कर दो रुपए बचा लेता है तब ये बचे हुए दो रुपए उस की पूंजी बन गए. पूंजी बचाया हुआ श्रम है और इस

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

बीरबल की सूझबूझ
एक विनोदप्रिय बादशाह और एक पैनी बुद्धि वाले वजीर की तीखी नोकझोंक का चटपटा संग्रह.
रु. 4.00

प्रकार श्रम न केवल पूंजी का समर्थ विकल्प है, वरन पूंजी का जनक भी है.

श्रम अपव्यय के मूल में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारण है हमारी कुशिक्षा. हमारे देश में शिक्षा का एक ही मापदंड रह गया है—अंगरेजी बोलने की क्षमता. अंगरेजी पढ़ालिखा व्यक्ति स्वयं को विशिष्ट नागरिक समझने लगता है. अतः कुशिक्षा अशिक्षा से भी अधिक देशघाती हो जाती है. अशिक्षित को कम से कम अपनी कमजोरी का तो एहसास होता है पर कुशिक्षित को तो अज्ञान के साथ अपने शिक्षित होने का मिथ्या दंभ भी होता है.

इसलिए अनुत्पादक काम करने वाला हर व्यक्ति बेकार है, चाहे वह कितनी भी ज्यादा तनख्वाह क्यों न ले रहा हो.

—कस्तूरचंद जैन

✦

मार्च (प्रथम) अंक के 'मुक्त विचार' में 'कैसी गुटनिरपेक्षता?' शीर्षक टिप्पणी काफी तर्कसंगत लगी. सचमुच यह तथाकथित गुटनिरपेक्ष आंदोलन सिर्फ भानुमती का पिटारा बन कर रह गया है.

वास्तव में इस गुटनिरपेक्ष आंदोलन के प्रायः सभी देश रूस व अमरीका के ही पिछलग्गू हैं. इसलिए इन देशों में विश्व की हर समस्या पर मतभेद बना रहता है और ये मिल कर कोई भी एक राय नहीं बना पाते. अगर ये देश अपना एक दृष्टिकोण बना लें तो भी इन की आवाज में इतनी ताकत नहीं कि ये महाशक्तियों पर प्रभाव डाल कर अपनी बात मनवा सकें.

इसी कारण इस तथाकथित गुटनिरपेक्षता पर आधारित हमारी विदेश नीति बुरी तरह असफल रही है. यह एक कटु सत्य है कि अन्याय के विरुद्ध संघर्ष में किसी भी तथाकथित गुटनिरपेक्ष देश ने हमारा साथ नहीं दिया. पाकिस्तान के साथ लड़ाई में सिर्फ इजराइल ही था जिस ने खुल कर हमारा समर्थन किया. फिर भी हम ने उस के खिलाफ अरब देशों का ही हर समय आंख मूंद कर समर्थन किया है जब कि अरब देशों ने मुसलमान होने के कारण हमेशा हमारे विरुद्ध पाकिस्तान का साथ दिया. हमारी विदेश नीति के दिवालिएपन का इस से ज्यादा स्पष्ट प्रमाण और क्या हो सकता है? आखिर हम कब तक अपने राष्ट्रीय हितों से खिलवाड़ करते रहेंगे? क्या हम में अपने दोस्त और दुश्मन को पहचानने की क्षमता नहीं है?

अगर हम चाहते हैं कि विश्व में हमारा मान हो तो सर्वप्रथम हमें शक्तिशाली बनना होगा. शक्ति के बिना शांति की बातें करना सिर्फ एक धोखा, दिखावा है.

—सुधीर नारायण खन्ना

✦

फरवरी (प्रथम) अंक के 'मुक्त विचार' में 'बागपत कांड के दोषी' शीर्षक टिप्पणी पढ़ कर ऐसा लगा कि आज रक्षक ही भक्षक हो गए हैं. आज देश के हर कोने से प्रतिदिन नईनई खबरें मिलती हैं. जैसे—पुलिस द्वारा बलात्कार, पुलिस द्वारा डकैती, पुलिस द्वारा अमानवीय व्यवहार, पुलिस हिरासत में मृत्यु, पुलिस ने आंखें फोड़ दीं, टांग तोड़ दी आदि. ये ऐसी घटनाएं हैं जो पुलिस सुरक्षा व्यवस्था पर दोबारा सोचने को विवश कर देती हैं.

आखिर ऐसा क्यों होता है? क्या यह राजनीतिबाजों और सरकार की गलती नहीं है? यह पुलिस व्यवस्था अंगरेजों ने बनाई थी और वह भी जनता की सेवा के लिए नहीं, बल्कि आजादी की मांग करने वाले देशभक्तों और भारतीय जनता के स्वतंत्रता आंदोलन को कुचलने के लिए, विद्रोह का नाम दे कर उस को दबाने के लिए.

उस समय देश में विदेशी सरकार थी. उस ने जानबूझ कर पुलिस विभाग का ऐसा ढांचा कायम किया था, जिस से भारतीय जनता में आंतक और डर व्याप्त किया जाए तथा कोई भी भारतीय आजादी की मांग न कर सके. परंतु अब

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक
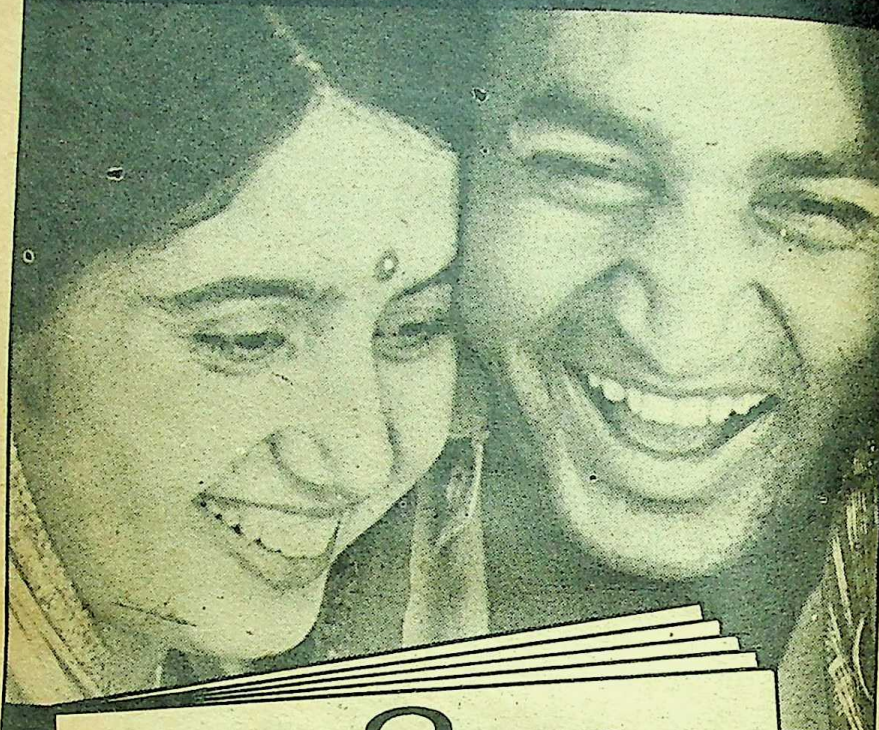
तो भारत स्वतंत्र है और अपने ही देश की सरकार भी है. लेकिन पुलिस का वही 'दमनकारी' ढांचा अब भी जैसा का तैसा कायम है.

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि पुलिस विभाग में शीघ्र बहुत अधिक परिवर्तन की आवश्यकता है. पुलिस ढांचे को जनवादी तरीके से कायम किया जाए, राजनीतिक हस्तक्षेप को खत्म किया जाए, पुलिस के अधिकारों को कम किया जाए, तभी देश की जनता का पुलिस में विश्वास पैदा किया जा सकता है और देश को पुलिस के दमनचक्र से बचाया जा सकता है. —बलजीतकुमार बिहाना

दिसंबर (प्रथम) अंक के 'मुक्त विचार' में 'न करेंगे, न करने देंगे' शीर्षक टिप्पणी के अनुसार मैं समझता हूं कि हमें निजी व्यवस्थाओं के प्रति विश्वास प्रकट कर इन में और दिलचस्पी दिखानी चाहिए और सरकार को भी इस प्रकार की व्यवस्थाओं को प्रोत्साहन देना चाहिए. —डा. लाभसिंह चौहान

अप्रैल (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'सरकारी बैंकों के रंग' (लेख: सत्येंद्र उप्पल) में लेखक ने बैंकों का मुख्य कार्य लोगों से कम ब्याज पर रुपया लेना और अधिक ब्याज पर लोगों को रुपया उधार देना बताया है जो शायद उन्होंने किसी पुरानी पुस्तक में पढ़ा होगा.

सरकारी बैंक नईनई योजनाओं के अंतर्गत आजकल मात्र चार प्रतिशत वार्षिक ब्याज पर लोगों को ऋण प्रदान कर रहे हैं, जब कि साधारण बचत खाते पर भी बैंक पांच प्रतिशत वार्षिक ब्याज देते हैं. —इसरार अहमद कुरैशी

कुछ व्यक्तियों को छोड़ कर बाकी से बैंक 18 से 22 प्रतिशत तक ब्याज लेते हैं. अन्यथा पांच प्रतिशत पर रुपया ले कर चार प्रतिशत पर दे कर बैंक चल कैसे रहे हैं? —संपादक

मुक्ता के लेखक

छाया श्रीवास्तव

प्रस्तुत अंक में प्रकाशित कहानी 'बेड़ियां टूट गईं' की लेखिका छाया श्रीवास्तव सतना (मध्य प्रदेश) की निवासी हैं. सामाजिक व पारिवारिक बिखराव और टूटने को सही अभिव्यक्ति देना ही आप के लेखन का मुख्य लक्ष्य रहा है. समाज सेवा में भी आप खासी दिलचस्पी रखती हैं.

बलवंत चौधरी

इस अंक में प्रकाशित लेख 'ग्रामीण क्षेत्रों के प्राथमिक विद्यालय' के रचयिता बलवंत चौधरी अलवर (राजस्थान) के निवासी हैं. ग्रामीण समस्याओं के अतिरिक्त आप साहित्यिक गतिविधियों में रुचि ही नहीं लेते बल्कि उन्हें सरल व सुगम्य भाषा में लिपिबद्ध भी करते हैं.

विश्व विजय प्रकाशन

का एक और नया सेट

विश्व सुलभ साहित्य

● **खाई** — कुसुम गुप्ता

यौन स्वच्छंदता के मुलम्मे के नीचे छिपी जिंदगी की तस्वीर और-एक नारी का अंतर्द्वंद्व प्रस्तुत करने वाला मनोवैज्ञानिक व सामाजिक उपन्यास.

2.50

● **ये पति**

हास्य के मूल स्त्रोत आप खुद भी हैं. आप व आप की पत्नी व रिश्तेदारों की कई बातें व्यंग्य के रूप में पतियों पर छींटाकशी करती हैं जिन्हें सुन कर पति महोदय के अतिरिक्त पूरा परिवार हंसने लगता है.

2.50

● **मेहंदी का पौधा** — रा. श्यामसुंदर

दांपत्य जीवन कैक्टस की तरह नहीं है जो कि हर हाल में बिना कुछ पाए भी जीवित रहे. यह तो मेहंदी के पौधे की तरह है—बेहद नाजुक और स्नेह का प्यासा.

2.50

विश्व पाकेट बुक्स

● **प्रतिहिंसा** — जनमित्र

प्रतिहिंसा की आग में जलते हुए लोगों की एक ऐसी कहानी जिस की शुरुआत रहस्यों से होती है और अंत भी चौंका देता है.

2.50

हर कदम पर एक नया रहस्य, एक नई उलझन.

● **आधी रात को दिन** — सुनील नाथ चक्रवर्ती

सुनामिका समझ रही थी कि वह सेठ हिरजी के खिलौने ढो रही है पर उसे पता नहीं था कि वह स्वयं एक गिरोह के हाथ का खिलौना बन रही है. क्या था उन खिलौने में जो सेठ हिरजी इतनी गोपनीयता बरत रहा था.

2.50

● **एक भूल** — मदन मसीह

प्रकाश की हत्या कर दी गई. संदेह में किशनसिंह गिरफ्तार. कुसुम व भूपेंद्र से कागजातों की मांग व अपहरण! बोस जांच करते खुद ही जाल में जा फसा. लेकिन जब कोहरा छंटा तो किशनसिंह की भूल का पता चला. वह क्या भूल थी? रहस्य, रोमांच व मनोरंजन से भरपूर रोचक उपन्यास.

2.00

पूरा सेट लेने एवं पूरा धन अग्रिम भेजने पर 10% छूट एवं डाक व्यय केवल पचास पैसे वी. पी. द्वारा.

सभी पुस्तक विक्रेताओं से प्राप्य या

44 - VV

विश्वविजय प्रकाशन एम 12, कनाट सरकस नई दिल्ली-110001

मार्च (द्वितीय) अंक में 'अमोल पालेकर' (लेख : इब्राहीम 'अश्क') पढ़ा. यह ठीक है कि अमोल पालेकर का चेहरा एक साधारण आदमी का चेहरा है परंतु मैं इस बात से कतई सहमत नहीं हूं कि अमोल पालेकर को अभिनय करना नहीं आता या वह केवल दफ्तरी बाबू का ही चरित्र निभा सकता है या उस की जो फिल्में हिट हुईं उन में उस का कोई योगदान नहीं है.

लेखक की याददाश्त के लिए मैं बता दूं कि अमोल पालेकर ने 'अगर' फिल्म में एक धनवान व्यापारी की और 'सोलहवां सावन' में एक अपाहिज व्यक्ति की भूमिका अदा की थी और उस के इस अभिनय को काफी सराहा गया था. 'गोलमाल' भी अमोल के बलबूते पर ही चली तथा उस के उत्कृष्ट अभिनय के लिए उसे फिल्म फेयर अवार्ड भी मिला था.

—डायमंड के. पुरोहित

✦

मार्च (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'भाषायी विवाद में धधकता बिहार' (लेख : आनंद भारती) पढ़ा. इस लेख के आंकड़ों ने मुझे सोचने पर विवश कर दिया. हमारे राजनीतिबाजों को चाहिए कि वे उर्दू को बीच में ला कर गृहयुद्ध न भड़काएं.

12 मार्च को बिहार की राजधानी में द्वितीय राजभाषा संघर्ष समिति के शांतिपूर्ण जलूस पर जो लाठी प्रहार हुआ वह केवल प्रदर्शनकारियों पर ही नहीं बल्कि तमाम हिंदी प्रेमियों के ऊपर हुआ. यदि इस प्रस्ताव को वापस नहीं लिया गया तो आए दिन ऐसी ही घटनाएं सुनने को मिलेंगी.

—रमेशकुमार ●

मुक्त विचार

खालिस्तान की मांग क्यों?

पंजाब के अकालियों के एक गुट ने अब खालिस्तान के नाम से एक अलग देश की मांग शुरू कर दी है. विदेशों में बसे समृद्ध सिख इस मांग के लिए पैसा और शक्ति दोनों दे रहे हैं. अकाली दल, जो सत्ता से बाहर है और आपसी फूट से कराह रहा है, इतने अच्छे शगूफे को छोड़ना नहीं चाहता.

यह तो शायद खालिस्तान की मांग करने वाले सिरफिरे से सिरफिरे नेता को भी मालूम है कि यह एक ऐसी मांग है जिसे हरगिज नहीं माना जा सकता. सिखों को भारत से अलग होने की बात तब तो सूझ सकती थी जब वे शोषित या व्यथित होते. अब तो वे देश के सब से समृद्ध राज्य के वासी हैं और जहां भी हैं वहां ठाठ से हैं.

हिंदू-मुसलिम, शिया-सुन्नी, सवर्ण-दलित जैसे दंगे चाहे जितने हों, पंजाब के विभाजन के बाद हिंदू-सिख झगड़े तो नामुमकिन हो गए हैं. अतः सिखों को परेशानी की बात ही नहीं है. यह मांग तो आज एक राजनीतिक हथियार है जिस से आने वाले चुनावों में अकाली दल को मत मिल सकें. बदले में सिवा कुछ विदेशी सिखों को हार पहनाने के दिया भी क्या जा रहा है?

जहां तक इस मांग के औचित्य का प्रश्न है, इस पर कम से कम कोई हिंदू तो सवाल उठा नहीं सकता. जब तथा-कथित ऊंची जाति वाले हिंदू अपने ही धर्म के छोटी जाति वालों को अपना मानने को तैयार न हों, क्षेत्र, भाषा या रंग पर खून बहाने को तैयार हों तो सिखों को क्या पड़ी है कि वे अपने को भारतीय कहें?

ऐसी स्थिति के रहते इस तरह की मांगें तो इस देश में उठती ही रहेंगी.

विरोधी दल—विरोध कहां?

श्रीमती इंदिरा गांधी की सरकार दिन ब दिन कमजोर होती जा रही है. कारण है—एक तो पार्टी की अंदरूनी फूट और दूसरे आर्थिक व व्यवस्था संबंधी असफलताएं. सिवा प्रधान मंत्री पद के श्रीमती इंदिरा गांधी की सरकार में कहीं भी मजबूती या स्थिरता नहीं है.

फिर भी विरोधी दलों की ही कृपा से इंदिरा कांग्रेस के पदच्युत होने की आशा क्षीण होती जा रही है. विरोधी दलों के नेता इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाने के स्थान पर अलगथलग हो कर स्वयं श्रीमती इंदिरा गांधी के हाथ मजबूत करते जा रहे हैं.

लोक दल के तीसरे विभाजन में बस जरा सी ही कसर रह गई है. 1979-80 के चुनावों में उभरे इस सब से शक्तिशाली विरोधी दल में से राजनारायण काफी पहले ही जा चुके हैं. थोड़े दिन पहले बनारसीदास व चंद्रजीत यादव भी अलग हो गए. अब देवीलाल और कुंभाराम आर्य अपनी अलग खिचड़ी पकाने

की फिराक में हैं. इस में जहां दोष उन का है जो दल छोड़ रहे हैं, वहां बहुत बड़ा दोष चरणसिंह जैसे नेताओं का भी है.

राजनीतिक दल किसी व्यक्ति की बपौती नहीं होता, चाहे उस का गठन उस व्यक्ति ने ही क्यों न किया हो. राजनीतिक दल लाखोंकरोड़ों व्यक्तियों की आशाओं का प्रतिनिधित्व करता है. अतः नेता का कर्त्तव्य है कि वह सब को साथ ले कर चले.

जब दलीय नेता स्वयं को तानाशाह मानने लगे तो न केवल दल बल्कि उन सिद्धांतों व नीतियों की भी बलि चढ़ जाती है जिन पर दल का निर्माण हुआ होता है. राजनीतिक दलों के वरिष्ठ नेता उच्चतम नेता के मात्र सहयोगी नहीं होते, वे अपनेअपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व भी करते हैं. उन्हें आसानी से हाथ से निकलने देना प्रमुख नेता की असफलता ही है.

चौधरी चरणसिंह इस मामले में सब से अधिक जिम्मेदार हैं. किसान की भलाई चाहने वाली नीतियों के बावजूद उन्होंने अपने अहंकार, सनकीपन और 'मैं ही ठीक हूं' की नीति से अच्छे भले लोक दल को नष्ट कर दिया है.

गनीमत है कि अब तक जनता पार्टी और भारतीय जनता पार्टी में फूट शुरू नहीं हुई. पर सत्ता व प्रभाव के लिहाज से ये लोक दल से कमजोर ही हैं. जरा सी शक्ति बढ़ने पर क्या होगा, कोई नहीं कह सकता.

जब तक राजनीतिक दल अपनी अंदरूनी एकता और नेताओं के सौहार्द का उदाहरण देश के सामने नहीं रखेंगे, हमारा समाज एक कैसे रहेगा? हां, यह तो संभव है ही कि समाज का विघटन ही दलों को भी तोड़ रहा हो.

इंदिरा कांग्रेस का नया पैंतरा

श्रीमती इंदिरा गांधी को देश की समस्याएं सुलझाने में लगातार असफलताएं मिल रही हैं. इस से पहले कि ये असफलताएं उन पर हावी हों, वह जनता का ध्यान ऐसी दूसरी बातों पर ले जाना चाह रही हैं जहां सफलता की गुंजाइश हो. पश्चिमी बंगाल में मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी की सरकार पर इंदिरा कांग्रेस का हमला इसी नीति के अनुसार है कि बचाव का सब के अच्छा तरीका आक्रमण करना है.

श्रीमती इंदिरा गांधी अपने विरोधियों को बता देना चाहती हैं कि उन में लड़ने की शक्ति समाप्त नहीं हुई है और इसी लिए वह अपने सब से कड़े राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी को मैदान में आने के लिए ललकार रही हैं. उन्हें आशा है कि जैसे अन्य राज्यों में उन की यह नीति सफल हुई है, वैसे ही पश्चिमी बंगाल और केरल में भी सफल रहेगी.

बजाए इस के कि श्रीमती इंदिरा गांधी महंगाई, मुद्रा स्फीति, आर्थिक ठहराव, गरीबी, अशिक्षा, गिरते राष्ट्रीय मनोबल, जातीय फूट, भ्रष्टाचार जैसे मुख्य मुद्दों पर अपना समय व शक्ति इस्तेमाल करतीं, वह एक अच्छी भली स्थिर व कानून के अनुसार चल रही सरकार को गिराने में समय लगा रही हैं.

इस का परिणाम यह हुआ है कि इन दोनों राज्यों में भी उसी तरह की राजनीतिक अस्थिरता पैदा हो रही है जैसी इंदिरा कांग्रेस द्वारा शासित अन्य राज्यों में है. बाकी राज्यों में तो खैर यह अस्थिरता दलीय स्तर की है पर पश्चिमी बंगाल व केरल में यह अव्यवस्था को जन्म दे सकती है.

किसी नए विवाद को खड़ा करने की चेष्टा में यदि श्रीमती इंदिरा गांधी इन दोनों राज्यों में राष्ट्रपति शासन लागू कर दें तो कोई आश्चर्य नहीं होगा. यह भी संभव है कि फिर लड़ाई मतपेटी में नहीं, सड़कों, दफ्तरों और कारखानों में होगी. यह तो निश्चित ही है कि राष्ट्रपति शासन लागू करने के बाद भी लंबे

समय तक चुनाव नहीं हो सकते क्योंकि उन में इंका की विजय संदिग्ध है.

वैसे श्री ज्योति बसु ने लोकप्रियता को परखने के लिए 31 मई को राज्य के 89 नगरों व कसबों के स्थानीय निकायों के चुनाव कराने का अच्छा निर्णय लिया है. अब या तो राष्ट्रपति शासन 31 मई से पहले लागू करना पड़ेगा वरना जनमत के अनुसार चलना होगा.

पोलैंड समस्या—हल क्या है?

पश्चिमी देशों के कड़े रुख, अमरीका की धमकी और पोलैंड के स्वतंत्र मजदूर संघ के समझौतावादी रुख ने रूस को पोलैंड की समस्या टैंकों से सुलझाने से फिलहाल रोक दिया है वरना जिस तरह वारसा पैक्ट के सदस्य पोलैंड की सीमा पर हजारों सैनिकों के साथ सैनिक अभ्यास कर रहे थे, उस से तो यही लग रहा था कि रूस चेकोस्लाविया की तरह पोलैंड पर भी आक्रमण कर देगा.

1968 की चेकोस्लाविया की स्थिति और अब की पोलैंड की स्थिति में फर्क जरूर है. तब लोकतांत्रिक सुधार कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता अलेग्जेंडर डुबचेक की उपज थे और जनसाधारण यदि उन के विरुद्ध नहीं तो उदासीन सा था. रूसी आक्रमण पर चेक जनता ने विरोध तो किया पर वह विरोध कुछ प्रबुद्ध लोगों का ही था.

पोलैंड में स्थिति दूसरी है. यहां लगभग सारी मजदूर जनता (और कम्यूनिस्ट देशों में हर नागरिक मजदूर के अलावा होता ही क्या है) सरकार के विरुद्ध है और अपने रहनसहन में सुधार चाहती है. सरकार की नीतियों से यह संभव नहीं, क्योंकि केंद्रीयकरण के नाम पर देश की कितनी ही पूंजी व शक्ति व्यर्थ का प्रशासनिक आडंबर बनाने में समाप्त हो जाती है. मजदूर काम ज्यादा करते हैं पर उन्हें मिलता कम है.

लेच वालेसा के नेतृत्व में मजदूरों ने अब जो मांगें रखी हैं उन्होंने कम्यूनिस्ट पार्टी को धर्म संकट में डाल दिया है. मांगों को मानने का अंतिम मतलब है कम्यूनिस्ट पद्धति को समाप्त करना और हर व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार बिना सरकारी हस्तक्षेप के कमाने की अनुमति देना. दिक्कत यह है कि कम्यूनिस्ट पार्टी अब मजदूरों की नहीं शासक वर्ग की पार्टी बन कर रह गई है. अतः वह मजदूरों को छलावे में भी नहीं रख पा रही है.

रूस को डर है कि यह बीमारी कहीं रूस में भी न फैल जाए. लेकिन वह करे तो क्या करे? टैंकों से वह उपद्रव रोक सकता है, नेताओं को गिरफ्तार कर सकता है. पर क्या मजदूरों से फैक्टरियों में जबरन काम करा पाएगा? उस के लिए हर दस व्यक्तियों पर एक रूसी रखना होगा. हजारों पोलों को मारना होगा और लाखों को जेलों में बंद करना होगा. यदि उत्पादन नहीं हुआ तो बलवे होंगे, उस के लिए पूरे युद्ध की तैयारी करनी होगी.

ऊपर से पश्चिमी देश भी कड़ा रुख अपना रहे हैं कि सैनिक कारवाई की गई तो सभी आर्थिक संबंध तोड़ दिए जाएंगे. (रूस अपनी जनता को खुश रखने के लिए खाद्यान्न व हजारों अन्य वस्तुओं का आयात करता है.)

अब देखना यह है कि अफगानिस्तान में हाथ जलाने के बाद कम्यूनिज्म के ढहते किले को बचाने के लिए रूस क्या और कैसे कदम उठाता है.

कागज की बचत—एक ही रास्त

अखबारी कागज पर 15 प्रतिशत आयात कर को समाप्त करने के बारे सरकार ने अब तक कोई फैसला न किया है. लगता है इंदिरा कांग्रेस निश्चय कर लिया है कि अखबारों जब तक पूरी तरह जर्जर न बना दि

जाए, देश में लोकतंत्र (इंदिराशाही) नहीं चलेगा.

इंदिरा कांग्रेस के वित्त मंत्री ने शिकायत की थी कि अखबार जरूरत से ज्यादा विज्ञापन छापते हैं, इसी लिए यह कर लगाया गया है. छापने को तो अखबार सब से ज्यादा राजनीतिबाजों के वक्तव्य छापते हैं. आठदस पृष्ठों के समाचारपत्र में दो से तीन पृष्ठ प्रधान मंत्री, केंद्रीय मंत्रियों, मुख्य मंत्रियों आदि के समाचारों से ही भरे होते हैं. इन में जनता की रुचि नाममात्र की होती है पर शासन और जनता के बीच की कड़ी होने के कारण समाचारपत्रों को इन्हें छापना पड़ता है.

लगता है समाचारपत्रों को इन मंत्रियों के फोटो व वक्तव्यों को न छाप कर अखबारी कागज की बचत करने की मुहिम चलानी पड़ेगी. इस से कागज की जो बचत होगी वह निश्चित ही 15 प्रतिशत से अधिक होगी.

अंतरिक्ष विज्ञान—नई उपलब्धि

अंतरिक्ष शटल के सफल प्रयोग ने अंतरिक्ष के उपयोग की नई संभावनाएं पैदा कर दी हैं. अब तक अंतरिक्ष में उपग्रह आदि भेजने के लिए अरबों रुपयों की लागत के राकेटों का इस्तेमाल करना पड़ता था जो वायुमंडल के घर्षण से नष्ट हो जाते थे. कोलंबिया शटल की सब से बड़ी उपलब्धि यह है कि इस का कोई भी भाग नष्ट नहीं होने दिया गया. अपोलो श्रृंखला की समाप्ति के बाद अमरीका का अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यक्रम धीमा पड़ गया था और लगने लगा था कि दूसरे ग्रहों पर जाने का विचार फिर सपना बन कर रह जाएगा. पैसे की तंगी के कारण ही नासा (अमरीका का अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र) का कार्यक्रम धीमा हो गया था. नासा ने अब नए प्रयोग से काफी धन की बचत शुरू कर दी है और अंतरिक्ष यात्राएं थोड़े ही समय में इतनी ही सहज हो जाएंगी जितनी कि हवाई यात्रा.

इस सफलता के लिए नासा के वैज्ञानिक बधाई के पात्र हैं जिन्होंने पूरी मानव जाति के लिए नए दरवाजे खोल दिए हैं और नई चुनौतियां पैदा कर दी हैं.

पीठ की स्थापना खटाई में

यदि किसी मामले को टालना हो तो इस का सब से आसान तरीका है उस के लिए आयोग या ट्रिब्यूनल बैठा देना. पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिए इलाहाबाद उच्च न्यायालय की अतिरिक्त पीठ की मांग के बारे में भी यही किया गया है.

वकील ही नहीं, व्यापारी, कर्मचारी और जनसाधारण भी कई वर्षों से पश्चिमी उत्तर प्रदेश में उच्च न्यायालय की पीठ कायम किए जाने की मांग कर रहे हैं ताकि उन्हें जरा से काम के लिए 500 से 700 किलोमीटर का सफर न करना पड़े. पिछले कुछ महीनों से सरकार से इस मांग को मनवाने के लिए जलूस, धरने, भूख हड़ताल का तरीका अपनाया जा रहा है.

राज्य सरकार तो अब सिद्धांत रूप में इस बात के लिए तैयार है पर न जाने इलाहाबाद के मुट्ठी भर वकीलों के हितों की रक्षा के लिए केंद्र सरकार इसे क्यों टाल रही है. केंद्र ने अब एक आयोग की नियुक्ति की घोषणा की है जिसे अपनी रिपोर्ट देने के लिए छः माह का समय दिया गया है.

बस, मामला दो वर्ष के लिए टल गया समझिए. छः माह के स्थान पर एक वर्ष तो आयोग ही लगाएगा. फिर सरकार छः माह उस पर विचार करने के लिए लगाएगी. एक साल विभिन्न कानूनों में संशोधन करने में लग जाएगा. तब कहीं पीठ के लिए भवन और जजों के लिए मकान ढूंढ़े जाएंगे. तब तक जनता पिसती रहे, रोती रहे, इस की किसी को क्या चिंता. ●

विश्व पर परमाणु युद्ध की छाया

लेख • डा. सुभाषचंद्र शर्मा

आज विश्व परमाणु युद्ध से भयभीत है मगर दूसरी ओर जिस गति से परमाणु अस्त्रों का भंडार बढ़ता जा रहा है उस से तो यही लगता है कि विनाश तो क्या सर्वनाश ही न हो जाए. इतना ही नहीं विशेषज्ञों के अनुसार 1995 के आसपास तो परमाणु युद्ध अवश्यंभावी भी है...

हम जानते हैं कि विश्व में आज तेल के लगातार बढ़ते मूल्यों के कारण ऊर्जा संकट कितना गंभीर हो गया है. वैज्ञानिक आज ऊर्जा के अन्य विकल्पों की खोज में रातदिन जुटे हुए हैं. प्राकृतिक साधनों विशेषकर कोयले एवं तेल की
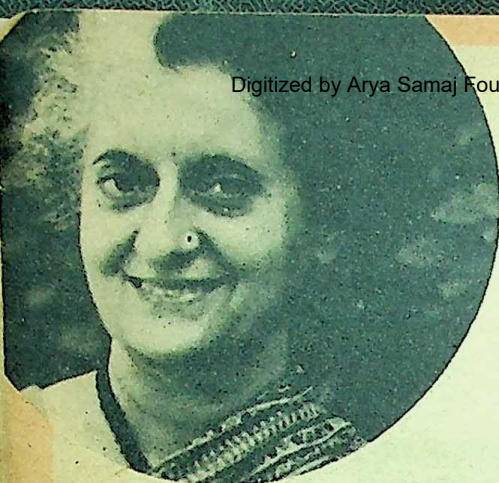
प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी : राष्ट्र की सुरक्षा के लिए परमाणु विज्ञान के क्षेत्र में लगातार बढ़ना ही होगा,

कमी का यदि कोई विकल्प है तो वह है— 'फ्यूजन अंडर प्लाज्मा कंडीशंस.' इस प्रक्रिया में हाइड्रोजन ही रासायनिक क्रियाओं में भाग लेती है और सौभाग्य से जल के रूप में हाइड्रोजन का विपुल भंडार विश्व में मौजूद है और तमाम विश्व की ऊर्जा संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मात्र कुछ सौ ग्राम हाइड्रोजन ही पर्याप्त होगी.

बहुत अधिक ऊर्जा देने वाली ऐसी एक अन्य प्रक्रिया 'न्यूक्लियर फिशन' है. इस में यूरेनियम का प्रयोग किया जाता है. शुद्ध यूरेनियम की उपलब्धि बहुत ही दुष्कर कार्य है. ये दोनों प्रक्रियाएं आज के परिप्रेक्ष्य में मानव जाति की सेवा की अपेक्षा विनाश के लिए अधिक उपयुक्त समझी जा रही हैं. विज्ञान की उपलब्धियां आज मानव के लिए ही नहीं अपितु समूची मानव सभ्यता के लिए जितना खतरा उत्पन्न कर रही हैं उतना पहले कभी नहीं सुना गया.

आज विश्व परमाणु युद्ध से भयभीत है और जिस गति से परमाणु अस्त्रों का भंडार बढ़ता जा रहा है उस से तो यही लगता है कि विनाश तो क्या सर्वनाश ही न हो जाए. आज संसार में उपलब्ध कुछ परमाणु विस्फोटक हथियारों की क्षमता हिरोशिमा में पर डाले गए परमाणु बम से दस लाख गुना अधिक है. अभी भी लोग नागासाकी एवं हिरोशिमा में परमाणु बम द्वारा किए गए नरसंहार को नहीं भूल पाए हैं. वहां पर जानमाल की भारी क्षति के अतिरिक्त पीढ़ी दर पीढ़ी रेडियोधर्मिता से आज भी भारी हानि हो रही है.

चीन और अमरीका के बीच संधि की शुरुआत : दो महाशक्तियों का मिलन या एकदूसरे की शक्ति को मान्यता?

आज संसार में घटनाचक्र जिस तेजी से घूम रहा है, ऐसे में भविष्य के प्रति

आशावान हो कर नहीं बैठा जा सकता. आज दुनिया भर के विकसित कंप्यूटर इस गणना को प्राथमिकता दे रहे हैं कि परमाणु युद्ध कब और किन दो शक्तियों के मध्य प्रारंभ होगा, और इस से कितनी क्षति होगी. सन 1981 से 2000 तक पांचपांच वर्ष के अंतराल में परमाणु युद्ध की संभावना का जायजा लेने पर कुछ चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं. विशेषज्ञों के अनुसार 1995 के आसपास तो परमाणु युद्ध अवश्यंभावी ही है. हां, उस से पहले आरंभ हो जाए तो कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए. और यदि सन 2000 के बाद हुआ तो परिणाम निश्चित रूप से भयंकरतम होगा.

आज दुनिया लगभग दो भागों में विभाजित हो गई है. एक तरफ अमरीका, सोवियत संघ, ब्रिटेन, फ्रांस एवं चीन आदि देश हैं, जिन के पास परमाणु अस्त्रों का प्रभूत भंडार है तथा वे राष्ट्र हैं जो परमाणु अनुसंधानों को प्राथमिकता दे रहे हैं और निकट भविष्य में ही परमाणु अस्त्रों का उत्पादन आरंभ कर देंगे अथवा उत्पादन के लिए सामर्थ्य जुटा लेंगे. दूसरे वर्ग में वे
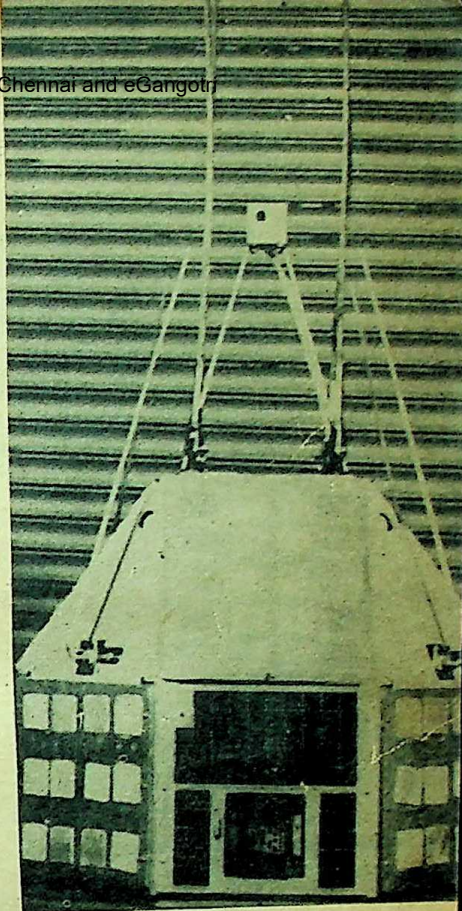
भारतीय प्रक्षेपण स्थल : जहां से रोहिणी—1 उपग्रह छोड़ कर भारत ने भी प्रक्षेपास्त्र क्षमता प्राप्त कर ली है.

रूसी राष्ट्रपति ब्रेझनेव अफगान में वहां के राष्ट्रपति बबरक करमाल के साथ : सेना का निरीक्षण या अस्त्रशस्त्रों का शक्ति परीक्षण?

पाकिस्तान के सैनिक प्रशासक जिया उल हक: केवल हथियारों से लैस सेना ही नहीं परमाणु अस्त्रशस्त्रों की भी दरकार है.
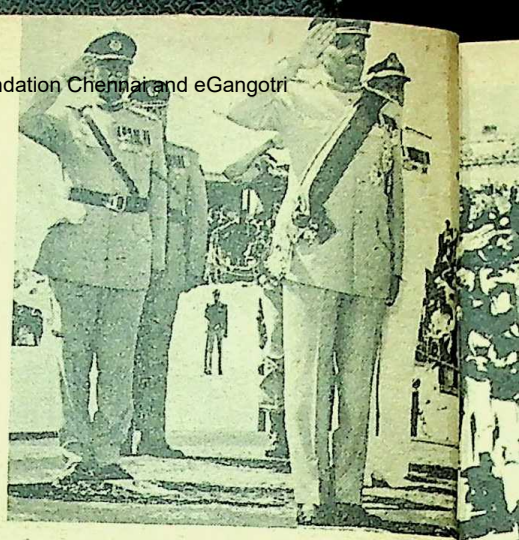
राष्ट्र हैं जो अभी परमाणु बम की तकनीक से 20 वर्ष से अधिक दूर हैं. छः करोड़ अरबों से घिरे इजरायल पर यह संदेह किया जाता है कि उस ने परमाणु बम बना लिया है. वहां निगेव रेगिस्तान स्थित डिमोना अनुसंधान केंद्र में परमाणु टैक्नोलाजी पर अनुसंधान जारी है.

इराक का परमाणु कार्यक्रम आंतरिक तोड़फोड़ के बावजूद आगे बढ़ रहा है. उस के पास पेट्रोल की बिक्री से प्राप्त डालरों की भी कमी नहीं है. उस ने फ्रांस से 1979 में तोतून स्थित परमाणु रिएक्टर (भट्ठी) खरीदा.

एक और घटना

एक और लोमहर्षक घटना से आज मानवता कांप उठी है. वह है न्यूक्लियर संस्थानों पर बमवर्षा, जैसा कि ईरान इराक युद्ध में ईरान ने करने का प्रयास किया. विश्वास किया जाता है कि इस से भारी मात्रा में रेडियोधर्मिता फैल जाती और अपार क्षति होती.

उधर लीबिया एवं दक्षिणी अफ्रीका परमाणु बम बनाने के लिए कोशिश कर ही रहे हैं. दक्षिण अफ्रीका ने 1984 तक दो न्यूक्लियर रिएक्टर स्थापित करने की योजना बनाई है. दक्षिण अफ्रीका के पास यूरेनियम का भी पर्याप्त भंडार है. उस की तरह ही ब्राजील एवं आर्जेनटीना भी भविष्य में परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र हो जाएंगे. यदि हम मानचित्र में परमाणु क्षमता वाले क्षेत्रों पर नजर डालें तो हम वस्तुस्थिति से आश्चर्यचकित हो जाएंगे. संसार के तीन सर्वाधिक जनसंख्या वाले राष्ट्र—चीन, भारत व अमरीका एवं सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला सोवियत संघ आज परमाणु क्लब के सदस्य हैं.

पाकिस्तान भी स्वयं को इसी श्रेणी में लाने का प्रयास कर रहा है. एशिया में सोवियत संघ, चीन, भारत, इजरायल, इराक, पाकिस्तान, इंडोनेशिया आदि इस क्षेत्र में अग्रणी हैं. उत्तर वियतनाम सोवियत संघ से घनिष्ठता रखता है तथा जापान एवं ताइवान अपनीअपनी सुरक्षा के लिए अमरीका पर निर्भर करते हैं. अब हम एशिया में ही देखें कि कितने राष्ट्र परमाणु टैक्नोलाजी से दूर रह गए? ठीक ऐसी ही स्थिति अन्य महाद्वीपों में भी है.

भारत का परमाणु कार्यक्रम

हमारे देश में परमाणु कार्यक्रम में लगभग 30,000 वैज्ञानिक लगे हुए हैं. 18 मई, 1974 को किए गए पोखरन विस्फोट के पश्चात 18 जुलाई, 1980 को रोहिणी–1 उपग्रह को सफलतापूर्वक अपने प्रक्षेपण स्थल से ही छोड़ कर हम ने अब प्रक्षेपास्त्र क्षमता भी प्राप्त कर ली है. उधर पाकिस्तान भी परमाणु कार्यक्रम को प्राथमिकता के आधार पर आगे बढ़ा रहा है. उस ने विवादास्पद फ्यूएल रिप्रोसेसिंग प्लांट के लिए सवा 31 अरब रुपए रखे हैं. इस के अतिरिक्त इंस्टीट्यूट आफ टैक्नोलाजी एंड साइंस के लिए

अलग से 30 लाख रुपए रखे गए हैं.

यह भी अफवाह है कि मध्य अफ्रीकी देश नाइजर से प्राप्त 285 टन यूरेनियम को पाकिस्तान पहुंचाया गया है. यूरेनियम की खोज के लिए ही 3¾ करोड़ रुपए खर्च किए जाने हैं. 600 मेगावाट का चैस्मा रिएक्टर चालू कर दिया गया है. यह रिएक्टर समृद्ध यूरेनियम पर भी कार्य कर सकता है.

पाकिस्तान की भावी योजनाएं

इस के अतिरिक्त सन 2000 तक वह लगभग 20 परमाणु बिजलीघर बनाने की योजना भी बना रहा है. कराची के निकट कोहटा रिएक्टर ने भी कार्य करना प्रारंभ कर दिया है. हालैंड से सैंट्रीफ्यूज प्लांट खरीदा गया है. एक अनुमान के अनुसार अकेला कोहटा रिएक्टर ही 30 बमों के लिए पर्याप्त प्लूटोनियम प्रदान कर सकता है. ये सब बातें बड़ी ही गंभीर लगती हैं, जब विशेषज्ञों की राय में भारतीय उपमहाद्वीप को भी हम परमाणु युद्ध के संदर्भ में संवेदनशील यानी खतरे वाला इलाका पाते हैं. इंस्टीट्यूट फार डिफेंस स्टडीज एंड एनैलिसिस द्वारा हाल में ही किए गए अध्ययन से पता चलता है कि पाकिस्तान छोटे परमाणु अस्त्रों का वाहक यान प्राप्त करते ही बिना परिणाम की चिंता किए भारत पर हमला कर सकता है.

परमाणु युद्ध का परिणाम

परमाणु युद्ध की विभीषिका इस बात से जानी जा सकती है कि आज उपलब्ध परमाणु अस्त्रों का एक प्रतिशत ही प्रयोग करने से पांच करोड़ लोग पहले ही दौर में मारे जाएंगे और करीबकरीब इतने ही लोगों को रेडियोधर्मिता के प्रकोप का सामना करना पड़ेगा जो कम से कम आंशिक रूप से विकलांग हो जाएंगे.

एक नवीनतम अनुमान के अनुसार यदि परमाणु युद्ध सोवियत संघ और अमरीका के मध्य छिड़ा तो इस से 10 करोड़ रूसी और 16.5 करोड़ अमरीकी मारे जाएंगे. इस के अतिरिक्त रेडियोधर्मिता का प्रकोप तो और भी भयावह होगा. यह सूचना अमरीका के भूतपूर्व कार्टर प्रशासन के रक्षा मंत्री श्री ब्राउन ने सेनेट को प्रेषित अपनी अंतिम रिपोर्ट में दी है. वैसे यह तो निर्विवाद ही है कि यदि परमाणु युद्ध इन दो महाशक्तियों के मध्य हुआ तो परिणाम बड़े ही गंभीर होंगे क्योंकि इन अस्त्रों का अधिकांश भंडार इन्हीं दो राष्ट्रों के पास है.

आज संसार में 4,000 खरब रुपए प्रति वर्ष परमाणु अस्त्रों पर खर्च किए जा रहे हैं. इस के अतिरिक्त विश्व में आज 130 खरब टन टी. एन. टी. विस्फोट पदार्थ मौजूद है. इस मात्रा से सारी मानव जाति को कई बार समाप्त किया जा सकता है. दुनिया भर में आज रिएक्टर काम कर रहे हैं. आज कुल परमाणु अस्त्रों की संख्या विश्व में 40,000 से 50,000 तक आंकी जाती है. परमाणु अस्त्रों का यह विशाल भंडार 1945 के बाद ही भरा गया जब अमरीका ने मैक्सिको रेगिस्तान में विश्व का पहला परमाणु विस्फोट किया था.

विनाश की ओर

परमाणु अस्त्रों को बनाने की होड़ जितनी तेजी से चल रही है उतनी ही तीव्रता से हम विनाश के कगार पर जा रहे हैं. 1955 में डा. होमी भाभा ने जेनीवा में बोलते हुए कहा था कि परमाणु ऊर्जा को फ्यूजन द्वारा पैदा कर के अपनी इच्छानुसार उपयोग में लाने में अभी 20 वर्ष और लगेंगे. वास्तविकता यह है कि आज 25 वर्ष बाद भी वैज्ञानिक इस क्षेत्र में कोई विशेष सफलता प्राप्त नहीं कर पाए हैं लेकिन विनाशकारी आणविक अस्त्रों की बाढ़ से तो यह प्रतीत होता है कि मानव हितकारी विज्ञान शायद मानव विनाशकारी विज्ञान से पराजित हो गया है. यह मानव जाति का दुर्भाग्य नहीं तो क्या है?

परमाणु अस्त्रों के बारे में यह कहना कि ये कभी पुराने नहीं पड़ते, इस बात का सूचक है कि प्रत्येक परमाणु अस्त्र कभी न कभी प्रयोग किया ही जाना है. इस से जानमाल की भारी क्षति के साथ-साथ वायुमंडल में पाई जाने वाली ओजोन नामक गैस की परत समाप्त हो जाएगी.

यह परत अनंत से आने वाले अल्ट्रावायलेट आदि हानिकारक विकिरणों को सोखती है और अदृश्य रूप से मानव के लिए जीवनदायक कही जाती है. ओजोन परत की अनुपस्थिति में कौनकौन से असाध्य एवं कठिन रोग भूमंडल पर फैलेंगे, इस की कल्पना करना भी कठिन है.

ध्वनि की गति से भी तीव्र चलने वाले कांकर्ड विमानों की उड़ान पर कुछ देशों ने इसलिए आपत्ति की है कि इन विमानों से निकलने वाली गैस ओजोन से क्रिया करती है, फलस्वरूप ओजोन कम होती है.

अब अमरीका का नया प्रशासन लेसर किरणों के सामरिक महत्त्व को पहचान कर विशाल ऊर्जा स्रोत (लाखों वाट) के रूप में प्रयोग करने विषयक अनुसंधान पर अधिक मनोयोग से कार्य करना चाहेगा. लेसर किरणों के मार्ग में आने वाली हर वस्तु इन की विपुल ऊर्जा के कारण पिघल जाएगी. यदि इन किरणों से परमाणु अस्त्र वाहकयानों को पिघला दिया गया तो स्थिति बड़ी ही भयंकर हो जाएगी. बाद को रेडियोधर्मिता का प्रकोप शेष बचे मानव जीवन को भी दूभर एवं नारकीय बना देगा.

एक और विनाशकारी अस्त्र

परमाणु बम के स्थान पर अब एक और विनाशकारी अस्त्र न्यूट्रान बम का विकास कर लिया गया है. इस के विस्फोट से धमाका नहीं होगा, बस ऊर्जा निकलेगी एवं न्यूट्रान की विशाल धारा बहुत तेजी से निकलेगी और जैव कोशिकाओं को नष्ट कर देगी. भूमि पर समस्त निर्माण ज्यों के त्यों रह जाएंगे—शायद पाषाण युग की प्रतीक्षा में. पाषाण युगीन सभ्यता हमारी तथाकथित सभ्यता पर हंसेगी. विज्ञान अभिशप्त हो जाएगा. करोड़ों न्यूट्रानों को अपने अंदर समेटे हुए भवन-अट्टालिकाओं, मीनारों आदि का क्या होगा, कोई नहीं जानता. कालांतर में ये सब खंडहर तो हो ही जाएंगे. ●

बिहार के शिक्षा संस्थान राजनीति से परेशान

लेख • राकेश रंजन

आजादी के बाद देश के इतिहास में शायद पहली बार सारे नैतिक सिद्धांतों को ताक पर रख कर मुजफ्फरपुर के एक कालिज के छात्रों को प्रवेशपत्र दिए जाने के बाद परीक्षाओं से वंचित करने का फैसला कर लिया गया. आज भी वे छात्र न्याय के लिए कानून और प्रशासन का मुंह निहार रहे हैं...

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन की मांग को ले कर सत्तारूढ़ या विपक्षी नेता जनता के सामने लाख डपोरशंखी राग अलापें, किंतु यह तथ्य है कि देश की और खासकर बिहार की शिक्षा संस्थाओं में गंदी राजनीति बुरी तरह हावी है और जब तक स्कूलों, कालिजों एवं विश्वविद्यालयों को राजनीति से मुक्त नहीं किया जाएगा, तब तक किसी भी प्रकार की शिक्षा

प्रणाली से छात्रों की मानसिकता में परिवर्तन आने की आशा करना निरर्थक है.

आजादी के बाद देश के इतिहास में शायद पहली बार सारे नैतिक सिद्धांतों को ताक पर रख कर मुजफ्फरपुर के राममनोहर लोहिया कालिज आफ मैने-

अंजनकुमार चक्रवर्ती : बिहार के कितने ही पत्रकारों को हमने अपना दुखड़ा सुनाया पर किसी ने हमारे साथ हो रहे अन्याय का प्रतिकार नहीं किया.
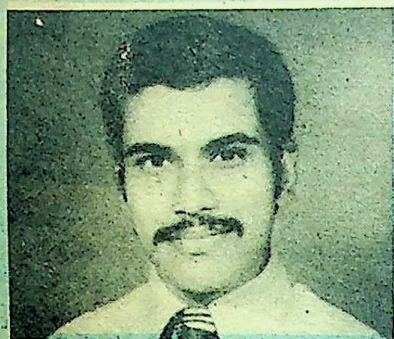
जमेंट एंड लेबर स्टडीज के छात्रों को बिहार विश्वविद्यालय द्वारा प्रवेशपत्र (एडमिट कार्ड) दे दिए जाने के बाद भी परीक्षा से वंचित कर दिया गया जिस के कारण सैकड़ों छात्रों का भविष्य अभी तक अधर में लटका हुआ है और वे न्याय के लिए बड़ी बेसब्री से कानून और प्रशासन का मुंह निहार रहे हैं.

मुजफ्फरपुर में राममनोहर लोहिया कालिज आफ मैनेजमेंट के एम. बी. ए. सेकंड सिमेस्टर के छात्र श्री शैलेंद्रकुमार ने बताया, "एक घृणित राजनीतिक साजिश के तहत हमारे भविष्य के साथ खिलवाड़ किया गया और इस सारे प्रकरण में कानून और न्याय का मजाक उड़ाया गया. अगर विश्वविद्यालय या बिहार के मुख्य मंत्री डा. जगन्नाथ मिश्र एक बार भी स्पष्ट संकेत कर देते कि हम लोगों की परीक्षा नहीं ली जाएगी तो भी हम संतोष रहता. किंतु हमें तो न घर का रहने दिया गया, न घाट का. जब भी छात्रों का शिष्टमंडल डा. मिश्र से मिला तो उन्होंने आश्वासन दिया कि परीक्षा जरूर ली जाएगी. उन के इस आश्वासन पर हम संतोष करते रहे और परदे की ओट में हमारे भविष्य पर कुठाराघात कर दिया गया. मुझ से एक जूनियर छात्र था—अरुण मल्लिक. उस ने तो जब सुना कि हमारी परीक्षाएं रद्द कर दी गई हैं तो बेचारे को दिल का दौरा पड़ गया और वह एम. बी. ए. (मास्टर आफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन) करने के ख्वाब लेते हुए ही चल बसा."

इस कहानी की शुरुआत सन 1978 से होती है, जब बिहार के औद्योगिक पिछड़ेपन को देखते हुए यहां मैनेजमेंट
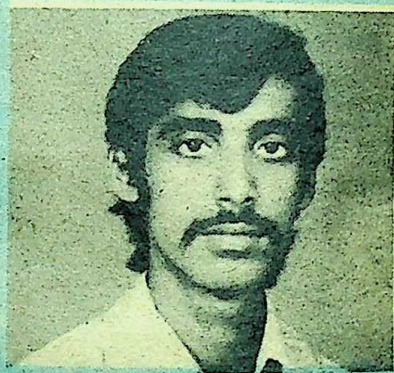
छात्र अरुण मल्लिक : परीक्षाओं का स्थगन जिस की मौत का कारण बना.

की शिक्षा के प्रसार के उद्देश्य से भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर व भूतपूर्व केंद्रीय उद्योग मंत्री जार्ज फर्नानडेज के प्रयास से समस्तीपुर के पटेल मैदान में 'कालिज आफ मैनेजमेंट स्टडी' की नींव पड़ी. इस के अंगीकरण के लिए अधिकारियों ने मिथिला विश्वविद्यालय में आवेदन दिया, जिसे इस आधार पर अस्वीकृत कर दिया गया कि वहां व्यवसाय विभाग नहीं है. अधिकारियों ने फिर

661

M. B. A. (Sem II ma)

SITY OF BIHAR

provisional

MISSION CARD

Admit 19 शैलेन्द्र कुमार

Roll A No 188 Registered No. 4668 of 1972 of B. U.

to the Master of Business Administration (Sem II ma) Examination to be held on 12 APR 1982 and subsequent dates.

Issuing Assistant | Sectional Officer | Controller of Examinations

The result of the examination of any candidate will be notified from the office of the Controller of Exams, as soon as the result of the Examinations are ready for publication, if either Rs. 4-00 for a telegram or Rs. 2-00 for a letter conveying the information be paid in advance.

Please read the rules carefully on the back

बिहार विश्वविद्यालय की ओर से प्रवेश पत्र (ऊपर) दे दिए जाने के बाद भी विद्यार्थियों को परीक्षा से वंचित क्यों कर दिया गया?

बिहार विश्वविद्यालय को आवेदन दिया किंतु बिहार विश्वविद्यालय ने भी यह कह कर उसे अपने से संबद्ध करने में असमर्थता जाहिर की कि "समस्तीपुर हमारे अधिकार क्षेत्र से बाहर है. अगर यह कालिज हमारे अधिकार क्षेत्र के तहत आ जाए तो इस पर विचार किया जा सकता है."

समस्तीपुर से मुजफ्फरपुर

बिहार विश्वविद्यालय के इस आश्वासन पर और छात्रों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए मई, 1979 में इस कालिज को मुजफ्फरपुर लाया गया जहां स्वर्गीय ललितनारायण मिश्र के नाम पर 'एल. एन. मिश्र कालिज आफ बिजनेस मैनेजमेंट' पहले से स्थापित था, जिस के निर्देशक वर्तमान मुख्य मंत्री डा. जगन्नाथ मिश्र थे. मुजफ्फरपुर में 'कालिज आफ मैनेजमेंट स्टडी' का नाम बदल कर 'आर. एम. एल.' (राममनोहर लोहिया) कालिज आफ मैनेजमेंट एंड लेबर स्टडीज' कर दिया गया और इस के अंगीकरण के लिए बिहार विश्वविद्यालय को आवेदन किया गया. उस समय बिहार विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा. शकीलुर्रहमान थे, जिन्होंने आवेदन को स्वीकार करते हुए कालिज का निरीक्षण करवाया. निरीक्षण के बाद उपकुलपति ने जमानत रूप में कालिज को विश्वविद्यालय में 50 हजार रुपए जमा करने का आदेश दिया.

दिसंबर, 1979 में जमानत जमा कर दिए जाने के बाद एम. बी. ए. सेकंड सिमेस्टर के छात्रों की परीक्षा के लिए विश्वविद्यालय से आदेश मांगा गया. विश्वविद्यालय ने अपनी अनुमति देते हुए परीक्षा के लिए 12 फरवरी, 1980 की तारीख की घोषणा कर दी. तब तक

विश्वविद्यालय कालिज को अंगीभूत करने के आदेश लेने के लिए कुलाधिपति श्री ए. आर. किदवई को सारे कागजात भेज चुका था.

राजनीति की शुरुआत

घोषित परीक्षा तिथि से चार रोज पहले 8 फरवरी, 1980 को छात्रों को पता चला कि श्री ए. आर. किदवई के एक खास दूत ने बिहार विश्वविद्यालय में पहुंच कर यह सूचना दी है कि राममनोहर लोहिया कालिज आफ मैनेजमेंट के छात्रों की परीक्षा नहीं होगी. इस से छात्रों को दिन में ही तारे दिखाई देने लगे. 9 फरवरी, 1980 को उन्होंने पटना के उच्च न्यायालय में श्री ए. आर. किदवई के इस आदेश के खिलाफ एक याचिका दाखिल की. उच्च न्यायालय ने कुलाधिपति श्री किदवई से जांच के बाद यह पाया कि इस कालिज का अंगीकरण नियम के अधीन है. इसलिए उच्च न्यायालय ने 11 फरवरी, 1980 को अपने एक विशेष दूत द्वारा इस आशय का एक आदेश भिजवाया कि "केस अदालत के विचाराधीन है, इसलिए इस कालिज के एम. बी. ए. के छात्रों की परीक्षा ली जाए." लेकिन इस पर भी बिना कोई कारण बताए विश्वविद्यालय ने 12 फरवरी, 1980 से शुरू होने वाली परीक्षा को स्थगित कर दिया.

उच्च न्यायालय में केस चलता रहा. परीक्षा रुकी रही. उपकुलपति श्री शकीलुर्रहमान छुट्टी में घर चले गए. इसी बीच बिहार विश्वविद्यालय ने छात्रों को प्रवेश पत्र (एडमिट कार्ड) दे दिया और 12 अप्रैल, 1980 से परीक्षा लेने की घोषणा कर दी. लेकिन इस घोषित तिथि को भी राजनीतिक दुष्चक्रों का शिकार होना पड़ा. परीक्षा फिर बिना किसी कारण के रद्द हो गई.

परीक्षाओं के स्थगन को राममनोहर लोहिया कालिज आफ मैनेजमेंट की संघर्ष समिति के संयोजक श्री कुमार अमिकर नें एक कुत्सित साजिश मानते हुए कहा, "यह सारा नाटक सिर्फ इसलिए खेला गया कि हमारे कालिज के छात्र किसी भी तरह परीक्षा में न बैठें और भीतर ही भीतर उच्च न्यायालय को प्रभावित करने की कुचेष्टा की गई. हमारे इस आरोप की सत्यता आप इसी बात से लगा सकते हैं कि 12 अप्रैल, 1980 वाली परीक्षा को रद्द कर देने के बाद अगस्त, 1980 में उच्च न्यायालय ने सारे मामले को फिर से कुलाधिपति श्री किदवई को सौंप दिया, जिन्होंने कालिज को पहले अंगीभूत करने से इनकार कर दिया था. दोबारा भी उन्होंने वही किया जब कि कालिज सारे कानूनी सत्यापन को पूरा कर रहा था."

न्यायालय का निर्णय

छात्रों ने 21 अगस्त, 1980 को उच्च न्यायालय में ही फिर एक याचिका दाखिल की. इस याचिका पर न्यायालय ने फिर आदेश दिया कि बिहार विश्वविद्यालय द्वारा एम. बी. ए. सेकंड सिमेस्टर की परीक्षा जब भी हों तो राममनोहर लोहिया कालिज के छात्रों की परीक्षा भी ली जाए. तब तक बिहार विश्वविद्यालय का कार्यभार श्री श्याम नंदन किशोर ने संभाल लिया था. इन्होंने परीक्षा संबंधी कोई तिथि निर्धारित नहीं की.

उच्च न्यायालय पटना द्वारा 6 जनवरी, 1980 को राममनोहर लोहिया कालिज आफ मैनेजमेंट एंड लेबर स्टडीज के छात्रों की याचिका नामंजूर कर दी, जब कि इसी उच्च न्यायायय ने दो बार विश्वविद्यालय को यह आदेश दिया था कि इस कालिज के छात्रों की परीक्षा ली जाए.

उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए इस फैसले को सुन कर कालिज के ही एक छात्र श्री अरुण मल्लिक को दिल का

दौरा पड़ गया और उन के प्राण पखेरू उड़ गए.

राजनीतिक विद्वेष

कालिज के डायरेक्टर इंचार्ज श्री ए. पी. सिंह के अनुसार, "अगर डा. जगन्नाथ मिश्र उत्तर बिहार में ललित नारायण मिश्र कालिज आफ बिजनेस मैनेजमेंट के समानांतर कोई और बिजनेस मैनेजमेंट कालिज को देखना नहीं चाहते और राममनोहर लोहिया कालिज की स्थापना में उन के राजनीतिक विरोधी श्री कर्पूरी ठाकुर और जार्ज फर्नानडेज का सहयोग है तो ये दो बातें तो समझ में आती हैं, किंतु सैकड़ों छात्रों के जीवन के बहुमूल्य तीन वर्ष नष्ट कर देने का उन को क्या अधिकार था? ऐसा अंधेर तो भारत के इतिहास में ढूंढ़ने से नहीं मिलेगा.

"पटना के गुरु गोविंदसिंह मेडिकल कालिज को भी तोड़ा गया था और जनता पार्टी के शासन में अमेठी (उत्तर प्रदेश) स्थित संजय गांधी इंजीनियरिंग कालिज को भी तोड़ दिया गया था. किंतु इन दोनों ही कालिजों के छात्रों को दूसरे कालिज में दाखिल करवा देने की व्यवस्था तुरंत कर दी गई थी. यहां तो नैतिक सिद्धांतों की हत्या कर दी गई. बिहार मंत्रिमंडल में अभी वित्त राज्य-मंत्री हैं श्री प्रभुनाथ सिंह. यही प्रभुनाथ सिंह राममनोहर लोहिया कालिज में क्लास लेने आते थे. किंतु इस कालिज के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ इन्होंने मुंह से चूं तक नहीं की."

अभी भी कालिज से सटे एम. बी. ए. मोनेस्ट्री होस्टल में छात्र इस आशा में बैठे हैं कि उन की परीक्षा होगी. मुक्ता का प्रतिनिधि जब छात्रावास में छात्र संघर्ष समिति के अधिकारियों सर्वश्री मुजफ्फरअली व विश्राम से मिलने गया तो पता चला कि दोनों ही घर गए हुए हैं. कुछ छात्र थे, जिन में से एक छात्र
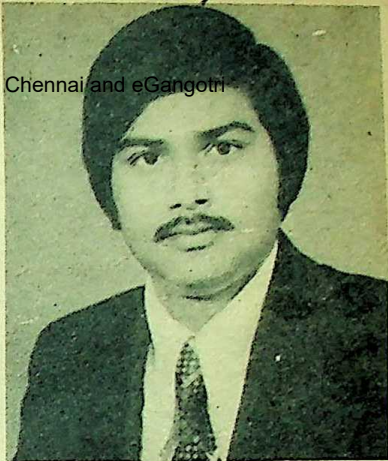
कुमार अमिकर : यह सारा नाटक हमारे कालिज के छात्रों को परीक्षा से वंचित रखने के लिए किया गया.

श्री अंजनकुमार चक्रवर्ती ने अविश्वास भरी दृष्टि से देखते हुए कहा, "बिहार के अखबारनवीसों को समाचार दबाने के एवज में शायद पैसे मिलते हैं. यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं कि न जाने कितने पत्रकारों को हम ने अपना दुखड़ा सुनाया किंतु किसी ने हमारे साथ हो रहे अन्याय का प्रतिकार नहीं किया."

छात्रों का अनुरोध

छात्रों के शिष्टमंडल ने कई बार मुख्य मंत्री डा. जगन्नाथ मिश्र से भेंट कर के यह अनुरोध किया कि उन के भविष्य की रक्षा की जाए. बिहार विश्वविद्यालय के सूत्रों से प्राप्त सूचना के अनुसार 11 मार्च, 1981 को राममनोहर लोहिया कालिज संबंधी सारे मामले पर पुनर्विचार करने के उद्देश्य से एक समिति गठित करने का निर्णय लिया गया, जिसे 12 मार्च, 1981 को ही वापस ले लिया गया.

बिहार सरकार व विश्वविद्यालय के सरकारी पदाधिकारियों के रवैए को देख कर यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि इन के द्वारा छात्रों के प्रति कितना न्याय किया जाएगा. ●
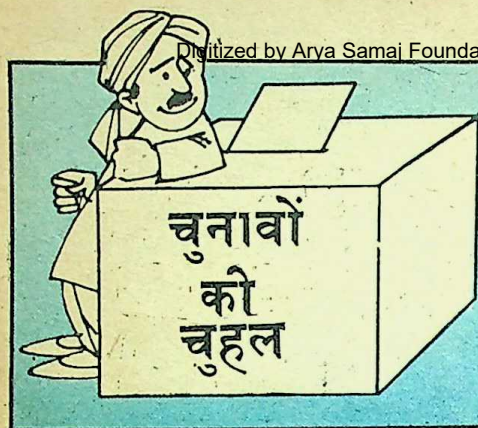
वोट और नोट का संबंध भारतीय राजनीति के लिए कोई अजूबे वाली बात नहीं है, पर इस का एक कड़वा अनुभव मुझे भी पिछले चुनाव में प्रत्यक्ष रूप से हो गया था.

मैं और मेरे कुछ साथी, एक दल के प्रचार के सिलसिले में एक गांव में गए. वहां हम एक चौधरी से मिले, जिस का अपनी जाति के मतदाताओं पर गहरा प्रभाव था.

औपचारिकता के बाद जैसे ही वोटों की बात चली तो उन्होंने कहा, "अभीअभी कुछ समय पहले ही एक दल के लोग आए थे. वे गांव के लिए एक प्याऊ और मुझे 501 रुपए देने का पक्का आश्वासन दे कर गए हैं."

उस का वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि हमारे चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं. स्थिति को देख कर अनुभवी चौधरी ने फिर कहा, "आप घबराइए नहीं, मैं ने पक्की हां नहीं भरी है. फिर भला आप के आने से पहले मैं मोलभाव करता भी तो कैसे?"

यह सुन कर हम वोटों की बात और प्रचार सामग्री ज्यों की त्यों समेट कर वापस जीप में बैठ गए और चौधरी पीछे आवाज देता ही रह गया. **—नेमीचंद्र टाक**

उस समय इंदिरा कांग्रेस का चुनाव चिह्न गायबछड़ा था. हेमवतीनंदन बहुगुणा इंदिरा कांग्रेस से अलग हो गए थे और उत्तर प्रदेश में दूसरे दल के चुनाव प्रचार का दौरा कर रहे थे.

उन्नाव में उन्होंने कहा, "मैं ने इंदिरा कांग्रेस इसलिए छोड़ दी क्योंकि बछड़ा बड़ा हो गया है, सींग मारता है."

इस से भी मजेदार बात तब हुई जब वह एक बार फिर इंदिरा कांग्रेस में शामिल हो गए और फिर उन्नाव में भाषण देने पहुंचे. वहां वह कहने लगे, "लोग मुझे दलबदलू कहते हैं. मैं दलबदलू कहां हूं? सुबह का भूला अगर शाम को अपने घर आ जाए तो उसे भूला नहीं कहा जाता."

इस पर सारे उपस्थित लोग खिलखिला कर हंस पड़े. **—ओमप्रकाश आजाद**

हमारे यहां कैंटोनमेंट बोर्ड के चुनाव होने वाले थे. हमारे वार्ड में नौ उम्मीदवार मैदान में थे. सारे वार्ड में इस चुनाव की विशेष चर्चा थी.

एक दिन एक उम्मीदवार का जलूस निकला, जिस का चुनाव चिह्न तराजू था. जलूस में आगेआगे एक लड़का कहता, "जो तराजू [illegible]एगा."

भीड़ में से आवाज आती, "किलो का बट्टा खाएगा." **—महावीर त्रिपाठी**

इसी वर्ष मेरे गांव में मुखिया के चुनाव में दो उम्मीदवारों के बीच कांटे का संघर्ष था. मतपेटियों की गिनती के दौरान जब सिर्फ एक बकसे की गिनती शेष रह गई तो संयोग से दोनों उम्मीदवारों के मतपत्रों की संख्या बराबर थी. दोनों उम्मीदवार अपनेअपने दिल को थामे हुए थे. जब अंतिम बकसे को खोला गया तो उस में सिर्फ एक पत्र मिला, जिस में लिखा था : हम दोनों उम्मीदवारों को नापसंद करते हैं.

—किशोरकुमार गुप्ता

जून 1980 में हुए विधान सभा के चुनाव के समय यह नारा जोरों से प्रचलित था :

"खा गई शक्कर, पी गई तेल,
देखो इंदिरा गांधी का खेल."

मेरा पांच वर्षीय भानजा इस नारे को महल्ले के बच्चों से सुन आया था. वह घर में यही नारा बराबर दोहरा रहा था. मैं ने उस से पूछा, "क्यों रे पप्पू, यह इंदिरा कौन है?"

उस ने बड़े ही भोलेपन से कहा, "मामाजी यह इंदिरा बड़ी चटोरी है. यह सारी शक्कर खा गई और सारा तेल पी गई है."

उस के मुंह से यह उत्तर सुन कर मैं आश्चर्यचकित रह गया.

—व. प. पटवा

पिछले लोकसभा चुनाव के दौरान हमारे यहां चुनाव प्रचार बड़े जोरशोर से चल रहा था. मतदान के दिन से तीन दिन पहले जनता पार्टी के नेता श्री अटलबिहारी वाजपेयी अपने उम्मीदवार के समर्थन में एक आम सभा को संबोधित करने वाले थे, उन के वहां पहुंचने से पहले एक फिल्मी गाने का रिकार्ड चल रहा था. गाने के बोल थे—'कसमेवादे निभाएंगे हम ..'

यह गाना समाप्त होने ही वाला था कि अकस्मात इंदिरा कांग्रेस की भी एक प्रचार गाड़ी वहां आ गई. जिस पर यह गाना बज रहा था—'कसमेवादे, प्यार, वफा सब, बातें हैं बातों का ..'

—हरीराम चौरसिया

एक चुनाव उम्मीदवार की जीप पेट्रोल पंप पर खड़ी थी. इतने में उन के चुनाव क्षेत्र का एक भोलाभाला मतदाता आया. उस ने भी साथ चलने का आग्रह किया. परंतु उम्मीदवार की इच्छा उसे साथ ले जाने की नहीं थी. उन्होंने अपने ड्राइवर से पूछा, "क्यों, भाई, कितने आदमियों का पेट्रोल डलवाया है?"

ड्राइवर इशारा समझ गया. बोला, "दो आदमियों का साहब."

"भाई, माफ करना, तुम और पहले आ गए होते तो एक आदमी का और पेट्रोल डलवा लेते."

यह कहते हुए उम्मीदवार ने ड्राइवर से जीप आगे बढ़ाने को कहा. बेचारा मतदाता सोचता ही रह गया.

—सुरेशचंद्र नखट 'सूर्य'

बरसों तेरी खुशबू से

शोला हूं अंधेरे में लपकता ही रहूंगा,
रातों की सियाही में चमकता ही रहूंगा.
साए में खड़े हो के मुझे देखने वालो,
मैं धूप में रह कर भी दमकता ही रहूंगा.
इक बार तेरे हाथ से छू जाए मेरा हाथ,
बरसों तेरी खुशबू से महकता ही रहूंगा.
सूरज हूं तेरी धूप का प्यासा हूं मगर मैं,
मिलने के लिए तुझ से भटकता ही रहूंगा.
आबाद है मुझ से तेरे एहसास की दुनिया,
हर वक्त तेरे दिल में धड़कता ही रहूंगा.
आवाज मेरी खुद ही बता देगी मेरा मोल,
सिक्का हूं खरा 'अश्क' खनकता ही रहूंगा.

—इब्राहीम 'अश्क'
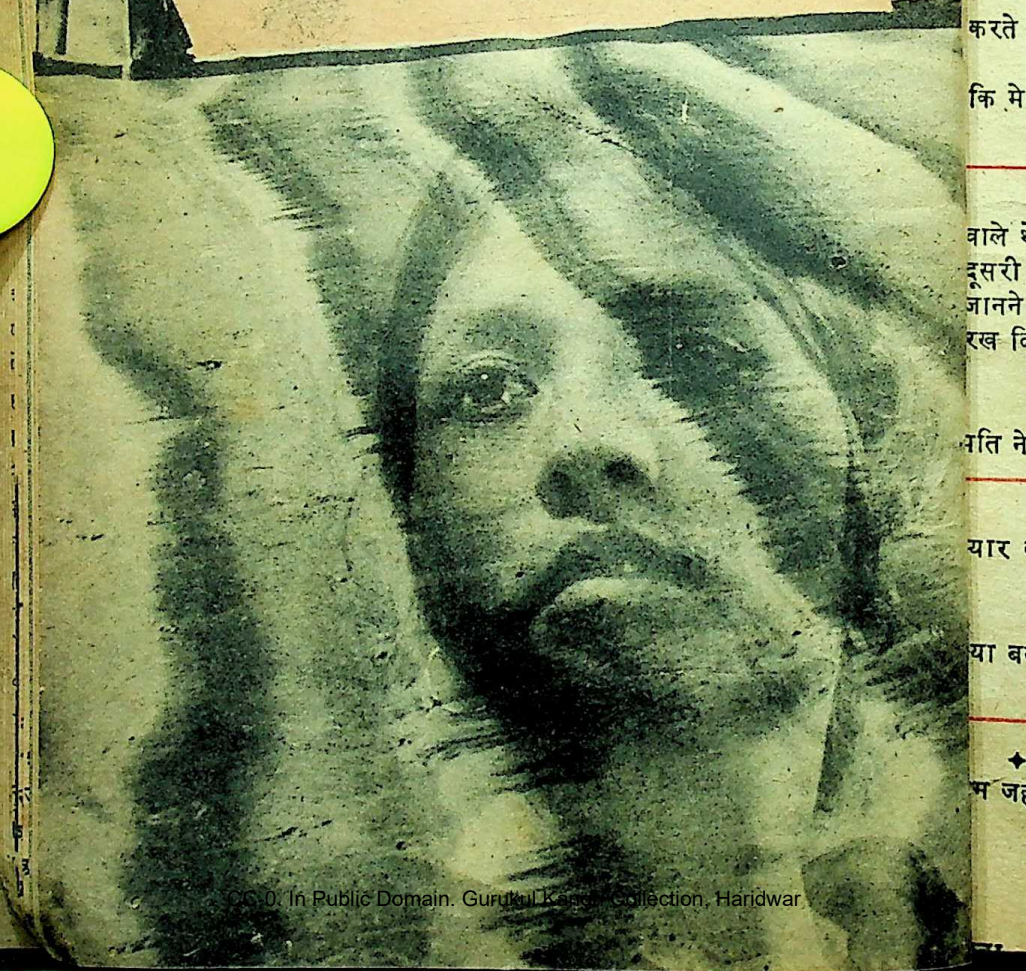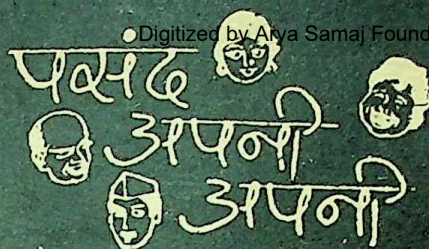
इस स्तंभ के लिए रोचक चुटकुले भेजिए. सर्वोत्तम चुटकुले पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : पसंद अपनीअपनी, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

एक बच्चे ने अपनी मां को किसी जानवर की खाल का कोट पहने देख कर पूछा, "मां, आप के इस कोट के लिए बेचारे जानवर को कितना कष्ट उठाना पड़ा होगा?"

मां ने उसे डांट कर कहा, "बेवकूफ, अपने पिताजी के बारे में ऐसे शब्द प्रयोग करते हुए तुम्हें शरम नहीं आती?"

—हरीश खानचंदानी

✦

जज (एक महिला से) : आप तलाक क्यों लेना चाहती हैं?

महिला : मेरे पति नेता हैं. वह हमेशा चुनाव, भाषण, पार्टी इत्यादि की ही बातें करते हैं. उन्हें इतना भी खयाल नहीं है कि हमारी शादी किस तिथि को हुई थी.

महिला का पति : कमाल है, यह तो मुझे याद है और अच्छी तरह से याद है कि मेरी शादी उसी दिन हुई थी, जिस दिन बिहार विधान सभा भंग की गई थी.

—हरीश

✦

अधेड़ आयु के पति महोदय लंबी यात्रा पर जाने के लिए घर से निकलने ही वाले थे कि सहसा टेलीफोन की घंटी बज उठी. उन्होंने रिसीवर उठाया और जब दूसरी तरफ से किसी ने कुछ पूछा तो वह बोले, "आप ने गलत नंबर मिलाया है. यह जानने के लिए आप नगर पालिका को फोन कीजिए." यह कहते हुए उन्होंने रिसीवर रख दिया.

"किस का फोन था?" उन की नईनवेली युवा पत्नी ने पूछा.

"था कोई सिरफिरा. पूछ रहा था कि अभी रास्ता साफ हुआ है या नहीं," पति ने कहा.

—कीर्ति देव

✦

प्रेमीप्रेमिका चुपचाप बैठे हुए थे. अचानक प्रेमिका बोली, "तुम मुझ से बहुत प्यार करते हो न?"

प्रेमी ने 'हां' में सिर हिला दिया.

प्रेमिका फिर बोली, "अगर हमारी शादी हो जाए तो तुम मुझे सब से पहले क्या बनवा कर दोगे?"

प्रेमी ने धीरे से उत्तर दिया, "राशन कार्ड."

—प्रेम सेठी

✦

✦ पति ने पत्नी को बताया, "जानती हो, आज बास ने गुस्से में मुझ से कहा कि तुम जहन्नुम में चले जाओ."

पत्नी ने पूछा, "फिर क्या हुआ?"

पति ने जवाब दिया, "अरे, होता क्या, फिर मैं सीधा घर चला आया."

—संजयकुमार (सर्वोत्तम)

सुधा कालिज से लौटी तो आंगन में पैर रखते ही उस की दृष्टि बाईं ओर की कोठरी की ओर गई, जिस का दरवाजा एक माह बाद खुला था. वह समझ गई कि कोई नया किराएदार आ गया है. मां दालान में बैठी गेहूं पछोर रही थी. वहीं से बाईं ओर उस का कमरा था—ठीक नए किराएदार वाली कोठरी के सामने. वह एक उचटती दृष्टि डाल कर अपने कमरे में घुस गई. मेज पर किताबें रख कर साड़ी बदलते हुए उस ने मां से पूछा, "आज क्या कोई नया किराएदार आया है, अम्मां?"

"हां, रघुनाथजी ने इंटर का ए
विद्यार्थी रखवाया है."

"चलो, अच्छा हुआ, रघुनाथ चाच
ने ही रखवाया है तो कम से कम चाच
से लड़ाई तो न होगी. उस बाबू से
रोज ही लड़ाई रहती थी."

"वह बाबू भी तो झक्की था. पू
घर पर अपना अधिकार समझने लग
था. अच्छा हुआ चला गया," अम्म
बोलीं.

"कहां से आया है यह लड़का?"

"कहीं पास के गांव का है."

पिछले ही वर्ष आंगन के उस ओ

सुधा की निगाहें प्रभाकर के चेहरे पर गड़ी होने से पानी की धार आधी लोटे में जा रही थी, और आधी किनारे से टकरा कर उस के कुरते पर.

कहानी • छाया श्रीवास्तव

का भ
से उस
पर रह
व्यक्ति
उस में
जाता
जिस
जाड़े
कमी
कमी ह
किराए
था.
म
सुधा के
हुआ थ
में सुप
एक रि
सुरेश
वाएं
नौकर
नाथ बा
दल्ली
ा. त
ह क
कता
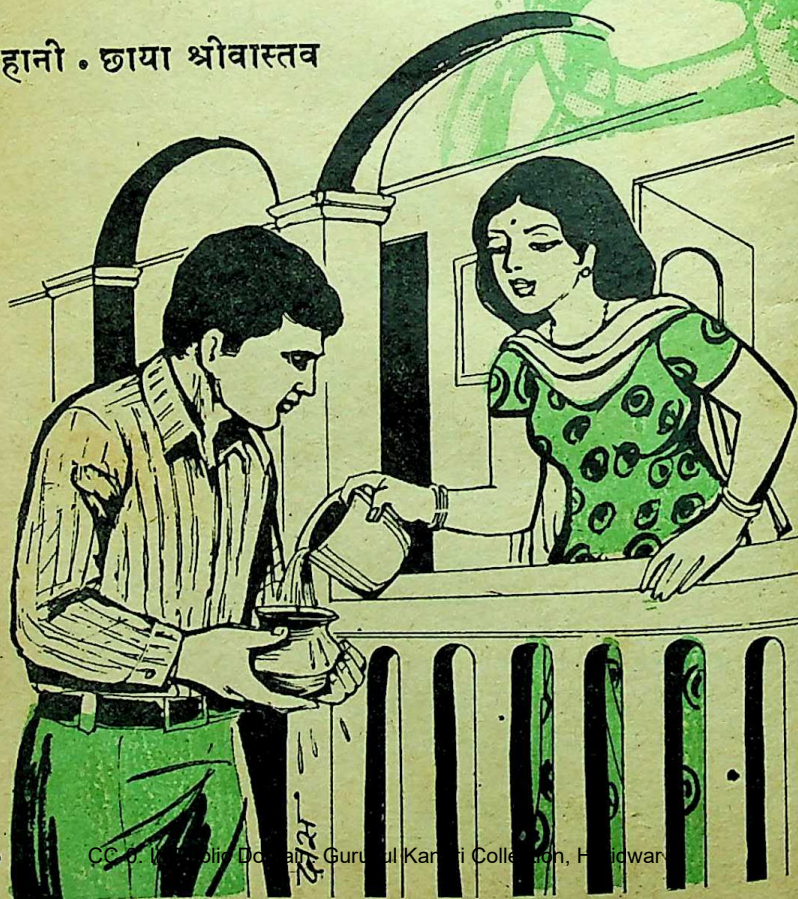
बेड़ियां टूट गईं

अम्मां से प्रभाकर के भोलेपन की बातें सुनसुन कर सुधा ने मन ही मन उसे परेशान करने की योजना बना ली थी. पर उस से भेंट होने के बाद सारी योजना इस तरह धरी रह जाएगी यह तो सुधा ने कभी स्वप्न में भी न सोचा था. . .

का भाग बन कर तैयार हुआ था. तभी से उस में रघुनाथ बाबू सपरिवार किराए पर रह रहे थे. उन के बाईं ओर एक व्यक्ति के रहने लायक एक कोठरी थी. उस में कोई अकेला व्यक्ति रख लिया जाता था. आंगन में एक ही नल था, जिस से सब को पानी भरना पड़ता था. जाड़े व बरसात में तो पानी की कोई कमी न थी, पर गरमियों में पानी की कमी हो जाने से मकान मालिक तथा किराएदारों में अकसर झगड़ा हो जाता था.

मकान के इस ओर का पूरा भाग सुधा के परिवार ने अपने पास ही रखा हुआ था. सुधा के पिता सरकारी दफ्तर में सुपरिंटेंडेंट थे और अगली गरमियों तक रिटायर होने वाले थे. बड़ा भाई सुरेश फार्मेसी का कोर्स कर के बंबई में दवाएं तैयार करने वाली एक फैक्टरी में नौकर हो गया था और अपनी पत्नी के साथ बंबई में ही रहता था. मझला महेश दिल्ली में टेलीविजन का काम सीख रहा था. तीसरा भाई रमेश पिता के पास रह कर ही एलएल. बी. कर रहा था. सुधा इंटर में पढ़ रही थी. शेष तीनों भाई-बहन अविवाहित थे.

सुधा की दृष्टि कई बार सामने वाली कोठरी की खिड़की की ओर गई. पर उसे वहां कोई दिखाई ही नहीं दिया. उसे लगा, वह बहुत शरमीला है, तभी तो कोठरी के किसी कोने में छिपा बैठा है. रात को खाना खाते समय सोचा, अम्मां से पूछे कि क्या नाम लिखाया है इस विद्यार्थी ने. पर संकोचवश चुप रही. रात में थोड़ी देर के लिए बिजली जली, फिर कोठरी में अंधकार छा गया. सुधा रात देर तक पढ़ती रही.

सुबह नल से पानी भरने की ड्यूटी सुधा की रहती थी, मां खाना बनाने में जुट जाती थी. पानी साढ़े आठनौ बजे तक ही आता था. पानी भरतेभरते उस के नेत्र कई बार कोठरी की ओर उठे, पर किवाड़ ज्यों के त्यों बंद थे. रघुनाथजी की पत्नी जब पानी भर चुकीं तो उन्होंने सुधा से पूछा, "प्रभाकर पानी भर कर ले गया है क्या?"

सुधा समझ गई, चाची का इशारा नए किराएदार की तरफ है. उस ने

इनकार में सिर हिला दिया. फिर बोली, "खाली बालटी तो वह रखी है. शायद सो कर नहीं उठे."

"प्रभाकर, पानी भर ले, भैया. बंद होने वाला है." रघुनाथजी की पत्नी ने बाहर से किवाड़ खटखटाया तो क्षण भर बाद एक युवक ने दरवाजा खोला. सुधा तब तक रसोई में कलसा रख कर लौट आई थी. प्रभाकर को बनियान के ऊपर कुरता पहनते देख कर वह क्षण भर को ठिठक गई ताकि पहले वह बालटी भर ले. पर जब उस ने देखा कि वह फिर भीतर चला गया है तो वह स्वयं नल पर पहुंच गई. वह बालटी भर कर रसोई में पानी डालने चली गई. लेकिन जब वह फिर लौटी तो उस ने देखा, प्रभाकर बालटी हाथ में लिए नल की ओर बढ़ रहा है. पर जैसे ही उस ने सुधा को देखा, वह वापस लौट गया. शायद झेंप कर या यह सोच कर कि पहले वह भर ले. सुधा के अधरों पर हंसी बिखर गई. 'कैसा बुद्धू है?' मन ही मन बोल कर वह फिर नल से बालटी भरने लगी.

सुधा उसे अच्छी तरह नहीं देख पाई थी, फिर भी उसे लगा वह छरहरे, लंबे कद का गौरवर्ण युवक है. पर उमर में 18-19 से अधिक नहीं है. लगभग उसी के बराबर है. वह भी तो इंटर में पढ़ता है. पता नहीं, कौन से विषय लिए हैं?

वह पानी ले कर लौटने लगी तो उस ने चाहा, पुकार कर कह दे कि पानी भर लो. पर फिर सोचा, उसे क्या पड़ी है, भरे चाहे न भरे. ऐसा झेंपू है तो फिर आया ही क्यों यहां? वह पानी की बालटी रसोई में रख कर अपने कमरे में चली गई. लेकिन तभी उस ने बाहर से आहट पा कर थोड़ा सा परदा हटा कर देखा, वह बालटी नीचे रख कर नल की टोंटी घुमा रहा था. जब उस ने देखा कि पानी आना बंद हो गया है तो शर्म से इधरउधर देखने लगा कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा है. फिर बालटी उठा कर उलटे पैर अपनी कोठरी की तरफ लौट गया. सुधा को हंसी आ गई. 'अब बच्चू को कल से चिंता होगी पानी की.' फिर वह अपनी पढ़ाई में लग गई.

दो घंटे पढ़ कर उठी तो कालिज जाने का समय हो आया था. वह जल्दी जल्दी नहाधो कर रसोई में पहुंची. अम्मां खाना बना रही थी. वह रसोई में बैठ जल्दीजल्दी खाना खाने लगी. इतने में किसी ने बहुत दबे तथा विनम्र स्वर में पुकारा, "अम्मां."

सुधा ने उधर देखा तो हाथ का कौर हाथ में रह गया. हाथ में लोटा लिए प्रभाकर खड़ा था. सुधा पर दृष्टि पड़ते ही वह शर्म से हड़बड़ा कर पीछे खिसक गया. अम्मां पहचान नहीं पाईं. उन्होंने सुधा से घूम कर पूछा, "कौन है बाहर?"

सुधा कुछ कहती, उस से पहले ही फिर स्वर गूंजा, "एक लोटा पानी चाहिए."

"कौन, प्रभाकर है क्या?"

"हां, अम्मां."

"सुबह पानी नहीं भर पाए क्या?"

"नहीं भर पाया. नल बंद हो गया था."

"तो फिर खाना नहीं बनाया क्या?"

"जी, नहीं. घर से पूरियां लाया था, वही खा लीं," वह आड़ से बोला.

"अरे, तो गरम दालचावल खा ले न."

अम्मां के ममत्व भरे स्वर को सुन कर वह विभोर हो उठा. बोला, "नहीं, अब भूख नहीं है, अम्मां. बस, पानी चाहिए."

"सुधा बेटी, प्रभाकर को पानी दे दे. मेरे हाथ तो आटे से सने हैं." फिर प्रभाकर से बोलीं, "कल से तड़के ही भर लिया करना. नहीं तो आज की

ऐसे ही परेशान होना पड़ेगा."

"अच्छा, अम्मां."

सुधा लोटा ले कर बाहर आई तो प्रभाकर ने दृष्टि झुकाए ही लोटा आगे बढ़ा दिया. सुधा ने उसे ध्यान से देखा तो उस के सौम्य मुख की लुनाई देख कर दंग रह गई. जितना वह सोच रही थी उस से कहीं अधिक कांतिवान था वह. दृष्टि उस के मुख पर गड़ी होने से जल की धार आधी लोटे में जा रही थी, आधी किनारे से टकरा कर उस के कुरते पर. जब आधा पानी नीचे गिर गया तो प्रभाकर ने नेत्र ऊपर उठाए. सुधा की चंचल दृष्टि अचानक उस के मादक नयनों से टकराई तो उसे अपनी मूर्खता का ज्ञान हुआ. इस बार मारे लज्जा के सुधा का मुख लाल हो उठा. साथ ही उस के अधरों पर एक हलकी सी मुस-

धीरेधीरे दिन बीतते जा रहे थे, प्रभाकर वैसे ही निर्विकार बना रहा. पर सुधा अपने चंचल नयनों को चाह कर भी उधर से हटा न पाई. वह अवश्य चोरीचोरी उसे देखती रहती थी.

कान तैर गई. प्रभाकर को भी सुधा की चंचलता देख कर कम पुलक नहीं हुई. लोटा भर कर सुधा रसोई में लौट गई और प्रभाकर मुसकराता हुआ अपने कमरे में.

"लड़का बहुत ही सीधा है," उस के लौटने पर अम्मां बोलीं.

"अम्मां, सीधा नहीं, बुद्धू है," सुधा कौर तोड़ती हुई बोली.

"तुझे तो सब बुद्धू ही दिखते हैं. बड़े घर का लड़का है...जमींदार घराने का."

"लगता है पहली बार शहर आया है," सुधा ने व्यंग्य कसा.

"हां, जैसे घर में बैठ कर ही सब जमातें पढ़ लीं. पगली कहीं की. अरी, पहले कहीं और रहता था किसी होस्टल में. वहां के लड़के इस का सारा नाश्ता चट कर जाते थे. इस की चीजें चुरा लेते थे. मांबाप ने किसी और के यहां प्रबंध किया. वहां भी यही हाल रहा. इस पर रघुनाथजी इसे यहां ले आए. उन की जानपहचान वालों का लड़का है. फिर रघुनाथजी भी तो इंटर कालिज ही में पढ़ाते हैं."

"और अगर यहां भी वही हाल होने लगा तो कहां जाएगा?" सुधा ने थाली सरका कर कहा तो मां झल्ला पड़ीं, "तेरे सिर में. यहां क्या तू चुराएगी या मैं या रमेश या वही रघुनाथजी, जो इसे लाए हैं?"

सुधा खिलखिलाती हुई बाहर निकल गई और कहती गई, "मैं चुराऊंगी उस की चीजें."

कपड़े पहन और किताबें ले कर वह बाहर निकली तो देखा, प्रभाकर भी कपड़े पहन कर शायद कालिज जाने की तैयारी कर रहा है. वह किताबें फर्श पर रख कर एक बालटी पानी ले आई. जैसे ही वह कोठरी के द्वार पर पहुंची, वह चौंक कर बोला, "अरे, आप ने क्यों तकलीफ की? मैं शाम को भर लेता." फिर उस ने लपक कर बालटी थाम ली.

"आते ही हाथमुंह धोने के लिए फिर मांगना पड़ता," वह बोली.

फिर मधुर स्वर गूंजा, "धन्यवाद."

सुधा की एक अंतरंग सखी थी—राधा. दोनों आगे की सीट पर दीवार की ओर बैठती थीं. वे अपनी हर बात एकदूसरे को बताती थीं. कक्षा में प्राध्यापिका कुसुमलता नहीं आई थीं पढ़ाने. अवसर देख कर सुधा मुसकरा कर बोली,

"एक नया किराएदार आया है हमारे सामने वाली कोठरी में."

"कौन आया है?" राधा ने डेस्क पर पुस्तकें जमाते हुए पूछा.

"इंटर का विद्यार्थी है."

"कैसा है?"

"बिलकुल बुद्धू."

"तो पढ़ता क्या होगा?"

"पढ़ता तो खूब है, पर है बड़ा शरमीला." फिर उस ने दोनों दिन की सारी बातें बता दीं. अम्मां से जो बात हुई थी वह भी.

सुनकर राधा को मजा आने लगा. अपनी रौ में वह यह भी भूल गई कि प्राध्यापिका अपनी कुरसी पर आ कर बैठ चुकी थीं.

"चीजों की चोरी से बच कर तो वह तुम्हारे यहां आया है. खैर, चीजें तो तुम नहीं चुराओगी, पर उस मासूम का दिल न चुरा लेना कहीं."

राधा हंस कर बोली तो सुधा का मुख लाल हो उठा.

"धत! क्या पता, वह मुझ से छोटा ही हो. अभी तो लगता है दाढ़ी भी नहीं आई है."

राधा उस की आंखों में शरारत से झांक कर बोली, "इस से क्या होता है, बहुत सी फिल्म तारिकाएं भी तो अपने पतियों से कई वर्ष बड़ी हैं. फिर क्या तुम ने उस के गालों पर हाथ फेर कर देखा है कि वह दाढ़ी बनाता है या नहीं?"

इस पर सुधा की हंसी फूट पड़ी. उस ने हंसते हुए राधा के गाल पर कस कर चुटकी काट ली, "उस के गालों पर तो हाथ नहीं फेरा पर तेरे गालों पर हाथ फेर कर जरूर देखना पड़ेगा."

इस पर दोनों खिलखिला कर हंस पड़ीं.

"सुधा, राधा, हंस क्यों रही हो? क्या घर समझ रखा है कक्षा को?"

प्राध्यापिका की अचानक डांट [से] दोनों घबरा कर सीधी बैठ गईं.

शाम को कालिज से लौटने [पर] सुधा की दृष्टि सब से पहले उस कोठ[री] की ओर गई. देखा तो ताला लगा [था.] 'हजरत अभी तक आए नहीं हैं,' मन [ही मन] कहती हुई वह अपने कमरे में जा पहुं[ची.] शाम को वह आया तो उस के साथ [एक] मजदूर भी था, जो मेज, कुरसी, लकड़ि[यां,] घड़ा और न जाने क्याक्या रख कर च[ला] गया. मेजकुरसी बिलकुल नई थी. [तो] क्या वह उस की नकल कर रहा [है?] अभी तक तो खाट पर ही बैठ कर पढ़[ता] होगा, नहीं तो पहले ही अपने सामान [के] साथ न लाता?

और ठीक सुधा की खिड़की के सा[मने] उस ने भी मेजकुरसी जमा [दी.] सुधा को मन ही मन क्रोध आ रहा [था.] वह ताकाझांकी में समय नहीं खो[ना] चाहती थी. रात को जब वह पढ़ने बै[ठी] तो उस ने पूरी खिड़की पर परदा फै[ला] लिया, पर जब भी वह उठती, ऊपर [की] आधी खिड़की से वह उधर झांक लेती. लेकिन वह तो निश्चल मूर्ति बन [कर] बैठा था...एकाग्रचित, आज्ञाकारी बा[लक] सा. उस ने एक बार भी दृष्टि उठा [कर] इधरउधर नहीं देखा. सुधा को अ[पनी] चंचलता पर खीझ आई. वह अपने [मन] को रोकने का जितना प्रयत्न करती, उतना ही बेबस हो जाती.

धीरेधीरे दिन बीतते जा रहे [थे.] प्रभाकर वैसे ही निर्विकार बना रहा. सुधा अपने चंचल नयनों को चाह [कर] भी उधर से हटा न पाई. उस के [पानी] भरते समय, बाथरूम से नहा कर नि[कलते] समय, बाल संवारते, कपड़े बदलते [और] खास कर चूल्हा फूंकफूंक कर खाना [बनाते] समय वह अवश्य चोरीचोरी उसे दे[खती.] धुएं से हुए लाल नेत्र तथा आग से [तमतमाए] तमाए मुख का सौंदर्य उस के अंतर [को] कचोट जाता. 'क्या बनाता होगा? [...]

सुधा और उस की सहेली राधा ने मिल कर ऐसा हुड़दंग मचाना शुरू किया कि उस दिन प्रभाकर के लिए एकाग्र हो कर पढ़ना मुशकिल हो गया.

नाता होगा? कैसे इस तरह उलटेसीधे ोजन से अपना पेट भरता होगा?' वह ोचती रहती.

कई बार मन में आता कि वह उसे पने यहां बनी दालसब्जी दे आए. पर म्मां क्या सोचेंगी, इस भय से उस की च्छा मन में ही रह जाती. वह तीनचार दन की छुट्टियां आने पर घर चला ाता. जब न जा पाता तो मोटे टिक्कड़ ना कर ही खा रहता. यह सब देख कर धा के गले से मिष्ठान्न न उतरते.

स दिन स्वतंत्रता दिवस की छुट्टी थी. एक दिन की छुट्टी होने के ारण उस के घर जाने का सवाल ही हीं उठता था. सुधा के घर में तरहतरह पकवान बने थे. सुबह से बनातेबनाते म्मा थक गई थीं. इस से खापी कर ह ऊपर बरसाती में आराम करने चली गई थीं. पिताजी भी ऊपर ही थे. रमेश कहीं मित्रों के यहां चला गया था. सुधा ने देखा, प्रभाकर अपने कमरे में पड़ा है. वह एक कागज में लड्डू, मंगोड़े, पुए आदि लपेट कर चुपके से इधरउधर देखती हुई कोठरी के सम्मुख जा खड़ी हुई. प्रभाकर लेटेलेटे अर्थशास्त्र की किताब पढ़ रहा था. सुधा को देख कर चौंक कर उठ बैठा.

"कहिए?" उस ने साश्चर्य उस की ओर देखा.

"ये लड्डू, मंगोड़े लाई हूं आप के लिए." सुधा ने संकोच से आगे हाथ बढ़ाया तो प्रभाकर ने उठ कर वह सामान ले लिया.

"आप ने व्यर्थ में क्यों कष्ट किया?"

"इस में कष्ट कैसा? बने थे, सो ले आई." फिर क्षण भर रुक कर बोली, "आप ने भी अर्थशास्त्र ले रखा है न?

तब तो आप के पास इस के नोट्स भी होंगे?"

"हां, हैं तो. आप को चाहिए?"

"हां, दे दीजिए. मैं कल तक दे दूंगी."

"आप जब तक चाहें रखें. जब मुझे जरूरत होगी, मैं मांग लूंगा."

प्रभाकर ने कापी उठा कर दे दी और वह 'धन्यवाद' कहती हुई वापस आ गई.

अब वह इसी प्रकार जबतब प्रभाकर को कुछ न कुछ दे आती. कई बार उस ने उसे होटल में खाना खाने की सलाह दी, पर वह हंस कर यह कहते हुए टाल देता, "चार रोटियां बनाने में मुझे कोई दिक्कत नहीं होती."

सुधा राधा को सब बातें बतलाती. फिर दोनों सखियां उस की चर्चा कर घंटों हंसतीं. राधा जब भी सुधा के घर आती तो कमरे में जैसे भूचाल आ जाता. एकदूसरे के हासपरिहास में वे दोनों यह भी भूल जातीं कि पुस्तकों में डूबे प्रभाकर को अध्ययन करने में विघ्न पड़ता होगा. संकोच में डूबा वह एक बार भी नेत्र उठा कर उन की ओर न देखता. कई बार उस के कानों में जो स्वर गूंजते, उस से लगता कि शायद उसी को लक्ष्य कर के कुछ कहा जा रहा है.

जब अधिक असह्य हो जाता तो वह खिड़की बंद कर के चारपाई पर जा पड़ता. उसे सुधा पर इतना क्रोध आता कि अभी जा कर उस के कान ऐंठ कर कहे कि उसे शर्म नहीं आती किसी की हंसी उड़ाते. वैसे तो यह दूध की धुली बनी रहती है, पर इस की सखी क्या आ जाती है कि सौजन्य की सीमा ही लांघ जाती है. वह इतना खीझ उठता कि कईकई दिन सुधा की ओर देखता तक न. यदि देखता तो नेत्रों से फूटते तिरस्कार को रोक न पाता. कालिज में जिन विषयों के नोट्स बनाता वे स्वयं सुधा को बुला कर दे देता था पर जब वह उस की खिल्ली उड़ाती तो मांग पर भी बहाना बना जाता कि कोई मि ले गया है.

फरवरी का महीना समाप्त हो चु था. मार्च में परीक्षा थी. अंतिम सप्ता से तो दोनों ने पढ़ाई में रातदिन एक क दिए थे. शाम को पढ़ने बैठते तो आध रात तक पढ़ते ही रहते. मुशकिल से ती चार घंटे सोते और फिर पढ़ने बैठ जा सारा घर सोता रहता और वे दो खिड़कियों के पास बैठे पढ़ते रहते.

उस दिन राधा आई तो फिर व होहल्ला आरंभ हो गया. पढ़ाईलिखा गोल. एकदूसरे से छेड़ और हुड़दंग. क इधर दौड़, कभी उधर, स्वर इतने ती कि प्रभाकर के लिए और बैठना दू हो गया. वह कई बार उठा, फिर बै पर निरंतर आने वाला शोर ध्यान लग दे तब न. खीझ कर वह उठा और किता ले दरवाजे पर ताला लगा कर बाह निकल गया.

उस के बाहर निकलते ही दो सखियों में चुहल भी समाप्त गई. वे खिड़की के पास खड़ीखड़ी ताला लगाते चुपचाप देख रही थीं, ही वह बाहर निकला, हास्य का तूफ उमड़ पड़ा. ऐसा कि बाहर जातेजाते

प्रभाकर के कानों से टकरा गया. फिर वे दोनों उन्मुक्त कंठ से उसी की बात कर के काफी देर तक हंसती रहीं.

रात्रि के करीब आठ बजे प्रभाकर लौटा तो सुधा को पढ़ते देख खिड़की के निकट जा कर खड़ा हो गया. आहट पा कर सुधा ने ऊपर सिर उठाया तो उस के लाललाल नेत्रों को देख कर सहम गई.

"सुधा, तुम्हारे लिए अंगरेजी के नोट्स लाया हूं. तुम्हें चाहिए?" वह स्वर को संयत कर के बोला.

"हांहां, चाहिए तो." सुधा प्रभाकर के स्वर से समझ गई कि वह मन से खिन्न है.

"लो, इस में नोट्स हैं." उस ने अपनी कापी खिड़की के सींकचों के भीतर बढ़ा दी और सुधा के धन्यवाद का इंतजार किए बिना ही लंबेलंबे डग भरता हुआ अपने कमरे में जा कर जोर से किवाड़ बंद कर के चारपाई पर बैठ गया. खिड़की उस ने पहले ही बंद कर रखी थी. सुधा कुछ पल तो प्रभाकर की कोठरी की ओर देखती रही, फिर हाथ में पकड़ी कापी का ध्यान आते ही उसे खोल कर नोट्स ढूंढ़ने लगी. उस ने देखा तो चौंक उठी. इतने बड़े कागज में केवल इतना ही लिखा है: "सुधा, यदि तुम्हें किसी की खिल्ली उड़ाने में ही आनंद आता है तो खूब उड़ाओ. मैं कल ही यहां से चला जाऊंगा."

इन पंक्तियों को पढ़ कर सुधा का चेहरा एकाएक विवर्ण पड़ गया. जैसे किसी ने उस के मुंह पर मुट्ठी भर राख मल दी हो. वह अन्यमनस्क सी हो कुरसी पर बैठी रह गई. फिर उस के लिए पढ़ना दूभर हो गया.

मां खाने को बुलाने आईं, पर वह भूख न होने की बात कह कर नहीं गई. उस के नयन बराबर उस बंद द्वार की ओर लगे रहे. रात के 11 बज गए. वह न तो एक अक्षर पढ़ सकी, न चैन से बैठ सकी. कुंठा की जिन फांसों में वह पलपल जकड़ती जा रही थी, उस से उबरने का उसे एक ही उपाय सूझ रहा था. यह कि वह उस से क्षमा याचना कर. पर कैसे? वह हठी अपनी कोठरी का दरवाजा या खिड़की खोले, तब न.

पर प्रभाकर तो जैसे कोप भवन में अखंड समाधि ले कर बैठ गया था. रात्रि की नीरवता चारों ओर व्याप्त हो गई थी. अम्मां और बाबूजी के कमरे का प्रकाश बुझ गया था. उस ने कांपते हाथ से कागज पर लिखा—"अब ऐसा नहीं होगा. क्षमा करें. बहुत लज्जित हूं."

फिर उस ने उस कागज को तह कर

के प्रभाकर की ही कापी में रख दिया और हौले से द्वार खोल कर बाहर आ गई. अम्मां के कमरे से खर्राटों की आवाज आ रही थी. दोनों सो गए थे. भैया भी शायद ऊपर सो रहा था. वह ऊपर दृष्टि डाल कर हौलेहौले आंगन में गुसलखाने के पास आई. फिर इधरउधर देखने लगी. उसे लगा जैसे कलेजा मुंह को आ जाएगा. फिर साहस कर के वह प्रभाकर की कोठरी की ओर बढ़ी और दरवाजे पर हलकी सी थाप दे कर दरवाजे की ओट में बढ़ गई.

थोड़ी देर में भीतर से चारपाई चरमराने का स्वर गूंजा. वह समझ गई अभी सोया नहीं है. कुछ पल बाद ही धीरे से किवाड़ खुला. अंधेरे में गरदन निकाल कर उस ने बाहर की ओर झांका तो वह आगे बढ़ कर उस के सामने जा पहुंची. फिर बिना कुछ बोले वह उस के हाथ में कापी थमा कर दौड़ती हुई अपने कमरे में घुस गई और बिस्तर पर चुपचाप लेट गई. सहसा उस के नेत्रों से जलधारा बह कर तकिए को भिगोने लगी.

प्रभाकर अंधेरे में पहले तो कुछ समझ नहीं पाया, पर जब उस के हाथ को कापी ने स्पर्श किया तो उस ने अंधेरे में ही उसे पकड़ लिया. थोड़ी देर वह जड़ सा बना खड़ा रहा. फिर धीरे से किवाड़ बंद कर के रोशनी कर के उस ने कापी खोली और उस परचे को निकाल कर पढ़ा. अपनी विजय पर मुसकराते हुए उस ने उस परचे को जेब में रख कर रोशनी बंद कर दी और लेट गया.

सुबह जब सुधा नल पर पानी भरने पहुंची तो प्रभाकर को खिड़की के निकट खड़े पा कर वह शर्म से मुंह को नीचे कर के ही पानी भरती रही. उसे लगा कि वह अपलक उसे ही निहार रहा है. ऐसे तो वह कभी खड़ा नहीं होता था. जैसे ही कलसा भरा, वह उसे उठा कर रसोई में जा घुसी. फिर वहां से झांक कर देखती रही. जब थोड़ी देर पश्चा[त] वह अपनी कोठरी में चला गया तो [...] झट से पानी भर लाई. उसे उस के सा[मने] जाने में अजीब सी घबराहट हो रही [थी.]

उस दिन से जो मौन साधा तो [...] भर नहीं टूटा. सुधा ने राधा [को] सब बता दिया और वह परचा भी दि[खा] दिया. परचा देख कर राधा ने सुधा [की] ओर कठोर दृष्टि से देखा और तु[नक] कर बोली, "क्यों, री, तू उस गधे [की] धमकी के आगे यों आसानी से झुक गई[?] तू क्यों लिख कर देने गई कि अब [ऐसा] नहीं होगा?"

"देख, राधा, उसे गाली देना [ठीक] नहीं है. वह एक भले घर का लड़का [है.] यदि मैं लिख कर न देती तो वह अ[गले] दूसरे दिन बोरिया बिस्तर उठा कर [चल] देता."

"चल देता तो क्या होता? [...] किराएदारों का अकाल पड़ गया है? [...] घर का बेटा होगा तो अपने लिए, [...] इस से क्या? तू क्यों उस का रोब माने[?]"

"वह चल देता और अम्मां पू[छतीं] कि क्यों जा रहे हो, तो फिर? यदि [वह] हम दोनों की शिकायत कर देता तो [...] जाती न आफत?"

"तो क्या उस के कारण कोई [...] बोले भी न?" राधा चिढ़ कर बोली.

"हंसनेबोलने की भी एक सीमा [होती] है, राधा. हमें क्या हक है कि [...] की हंसी उड़ाएं?" सुधा दूसरी ओर [मुंह] कर के बोली.

"क्यों, सुधा, लगता है बहुत [...] होने लगी है उस की व्यथा देख कर. [...] तो अब उस के लिए गाली भी सहन [नहीं] है. क्यों, बहुत दया आ गई है उस प[र?"] राधा व्यंग्य से बोली तो सुधा तिल[मिला] गई.

उस का मुख लाल हो उठा. [...] हौले से बोली, "किसी भी सभ्य व्य[क्ति] का किसी को गाली देना अच्छा [...]

होता, जानत[...] उच्छृं[...] का वि[...] नहीं [...] आऊंगी[...] बैठने[...] जाएगा[...] आंसुओं[...] गई. सु[...] थी. उ[...] रोक न[...] तू तो [...] ले रही[...] तू ने ठ[...] हंस दे.[...]

इस [...] करतीं [...]

होता, राधा. मैं पीड़ा व्यथा कुछ नहीं जानती. बस, इतना जानती हूं कि जो उच्छृंखलता हम कर रही थीं, उस का विरोध कर के प्रभाकर ने अनुचित नहीं किया."

"तो ठीक है, भई, अब मैं तो न आऊंगी उस सभ्य के सामने गूंगी बन कर बैठने. मुझ से तो बिना हंसे रहा नहीं जाएगा. न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी."

राधा जाने को मुड़ी तो सुधा के आंसुओं से भरे नयनों को देख कर ठिठक गई. सुधा उस की बहुत ही प्यारी सखी थी. उस की व्यथा देख कर वह अपने को रोक नहीं सकी. बोली, "अरे, लगता है तू तो रो पड़ेगी. मैं तो तेरे मन की थाह ले रही थी. अब ऐसा नहीं होना चाहिए. तू ने ठीक ही कहा है. अच्छा तो अब हंस दे."

इस के बाद राधा उस के घर कई बार आई, पर दोनों इतने धीमे बात करतीं कि प्रभाकर के पल्ले कुछ न पड़ता. वह मन ही मन अपनी विजय पर प्रसन्न था. पर सुधा का सदा प्रफुल्ल रहने वाला मुख गंभीर देख कर वह खीझ उठा. पहले उसे सदैव कुछ न कुछ गुनगुनाहट सुनाई पड़ती थी. सुधा अम्मां, बाबूजी और भैया से जब भी कुछ बोलती थी तो ऐसा लगता था जैसे वह खिलखिला रही हो. पर अब जैसे उस के मुंह पर ताला ही पड़ गया था. पंदरह दिन बीत गए तो एक दिन फिर प्रभाकर उसे हिंदी के नोट्स की कापी दे गया. सुधा का हृदय धड़क उठा. कांपते हाथों से कापी खोली तो एक चिट मेज पर गिर पड़ी. उठा कर पढ़ा. लिखा था :

"यों मुंह पर ताला लगाने को किस ने कह दिया? क्या किसी ने हंसनेबोलने को भी मना कर दिया है? हंसने का नाम ही तो जिंदगी है. तुम उदास मुख लिए फिरती हो, यह अच्छा नहीं लगता. यदि यों ही रहना है तो..

"तो मैं चला जाऊंगा. दुष्ट कहीं के. हंसो तो मुसीबत, न हंसो तो मुसीबत,

नहीं हंसूंगी मैं. बड़े आए हुक्म देने वाले." सुधा बड़बड़ा उठी. पर साथ ही उस के चेहरे पर सहसा मुसकान खिल उठी. उस ने नेत्र उठा कर उधर देखा तो वह खिड़की पर बैठा कुछ लिखने में मगन था.

परीक्षा के कुल आठ दिन शेष थे. सुधा पढ़ाई में व्यस्त रहती. रात को एकडेढ़ बज जाते. सुबह तीन बजे फिर उठ बैठती. दिन में सोने का अवकाश न मिलता. अम्मां बड़बड़ाती. दोनों समय खाना भी कम खाती. प्रभाकर बराबर देख रहा था कि वह दिन पर दिन मुरझाती जा रही है. सो फिर कापी के साथ एक चिट आ गई. लिखा था :

"रात में ज्यादा देर तक मत पढ़ा करो. तबीयत खराब हो जाएगी. रात में 11 से अधिक मत बजने दो. सुबह चार से पहले मत उठो. खाना दिन में भरपेट खाना चाहिए, रात में कम."

सुधा को हंसी आ गई, 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे. खुद तो रात दोदो बजे तक पढ़ता है. मुशकिल से एकदो घंटे ही सोता है. सुबह जब भी उठती हूं तो इसे पढ़ते ही पाती हूं. यदि खुद की तबीयत बिगड़ गई तो कुछ नहीं.'

और एक दिन प्रभाकर का कहना सच ही हुआ. सुधा के सिर में इतनी पीड़ा हुई कि दो बार पित्त की उलटी हो गई. प्रभाकर अपनी कुरसी पर बैठा-बैठा सब देख रहा था. पढ़ने में उस का चित्त नहीं लग रहा है. यह वह आंगन से लौटते देख चुकी थी. सिर में चक्कर इतने आ रहे थे कि वह जा कर चुपचाप अपनी खटिया पर आंखें बंद कर के पड़ी रही. अम्मां कई बार चाय के लिए पूछ गईं, पर मतली के कारण वह कुछ लेने को तैयार नहीं हुई. थोड़ी देर के पश्चात उसे नींद आ गई. पता नहीं कितनी देर तक वह सोती रही.

• संध्या घिर आई थी, पर नींद नहीं टूट रही थी. कई दिन की बोझिल पलकें खोलने पर भी नहीं खुल पा रही थीं. इसी समय चिर परिचित स्वर सुन कर उसे कुछ चेत आया.

"अम्मां, सुधा कहीं गई है क्या?" प्रभाकर आंगन में खड़ा पूछ रहा था.

"नहीं, भैया, उस के सिर में दर्द हो रहा है. दो बार उलटी आई है. लेटी पड़ी है."

"मैं अर्थशास्त्र के नोट्स लाया था उस के लिए. क्या सो रही है?"

"हां, पड़ी है. आवाज दे कर दे दो," मां कहती हुई रसोई में चली गई.

वह कापी लिए भीतर आया तो अंधेरे में कुछ देख नहीं पाया. ऊंचे स्वर में उस ने पुकारा. सुधा की चेतना टूटी पर वह बोली कुछ नहीं. प्रभाकर हौले से उस के सिरहाने खड़ा हो गया. फिर हौले से अपना शीतल हाथ उस के माथे पर रख कर बोला, "सुधा, तुम्हारे लिए नोट्स लाया हूं."

स्वर की अकुलाहट से सुधा के नेत्र खुल गए. "मैं ने कहा था न कि रातरात भर न पढ़ो."

"तुम भी तो पढ़ते हो." किसी प्रकार रोमांचित स्वर में वह बोली तो प्रभाकर हंस पड़ा.

"पढ़ता हूं, पर तुम्हारी तरह सुकुमार तो नहीं हूं. जैसे मैं ने कहा था वैसा ही करतीं तो बीमार न पड़तीं."

"बीमार कहां हूं? अब तो बिलकुल ठीक हूं. बैठो न. अच्छा पहले बिजली जला दूं." वह उठती हुई बोली.

"नहीं, बैठूंगा नहीं. घूमने जा रहा हूं. आज तुम बिलकुल न पढ़ना. चार दिन परीक्षा में रह गए हैं, बहुत संभल कर चलो." वह प्रकाश करता हुआ बाहर निकल गया. सुधा पसीने से तरबतर अविचल बैठी रह गई. उसे लग रहा था, प्रभाकर का स्नेहसिक्त हाथ अब भी उस के माथे पर रखा है.

—क्रमशः

रा

धरती
अपनी
रहते
केंचुल
घूमते
रेतीले
वाला
क्षेत्रों
नाग)
जाते
इस क्षे
राजस्थ
हो या
विशेष
गहरा
स
तरह
उस क
वर्णन

राजस्थान का हर वासी चाहे वह पढ़ा-लिखा हो या अनपढ़, पिवणा सांप से भयभीत रहता है. सारे प्रदेश में इस के बारे में तरहतरह की कहानियां प्रचलित हैं. पर आप को यह जान कर आश्चर्य होगा कि इस किस्म का कोई सांप होता ही नहीं. फिर इस अस्तित्वहीन सांप के बारे में किंवदंतियां कैसे फैलीं?

पिवणा

लेख • रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

राजस्थान में सांपों की बहुतायत है. शीत ऋतु में ये धरती के अंदर अपने बिलों में घुस कर अपनी दीर्घ निद्रा (हाइबरनेशन) में लीन रहते हैं. गरमी के आगमन के साथ ही ये केंचुल बदल कर जमीन की सतह पर घूमते नजर आने लगते हैं. प्रदेश के रेतीले मरुस्थलीय विस्तार में मिलने वाला 'वाइपर' तथा पथरीले, पहाड़ी क्षेत्रों में मिलने वाला 'कोबरा' (काला नाग) सांप सब से ज्यादा विषैले माने जाते हैं. पर इन से भी ज्यादा कोई सांप इस क्षेत्र में प्रसिद्ध है तो वह है पिवणा. राजस्थान का हर वासी चाहे पढ़ालिखा हो या अनपढ़, इस से भयभीत रहता है. विशेष तौर पर गांव वालों में इस का गहरा डर समाया हुआ है.

सारे प्रदेश में इस के बारे में तरह-तरह की कहानियां प्रचलित हैं. प्रत्येक उस कथा में, जिस में जहरीले सांपों का वर्णन होगा, जहरीला सांप पिवणा ही बतलाया जाएगा. चाहे वह राजा परीक्षित की पौराणिक कथा हो या ढोला-मारू की प्रेम कथा. पिवणा का जिक्र हर कथा में आना जरूरी है. प्रदेश के आधुनिक लेखक भी इस बीमारी से नहीं बचे हैं. मणि मधुकर ने नवलगढ़ के अपने यात्रा संस्मरण में पिवणा के बारे में खूब लिखा है. पर आप को यह सुन कर आश्चर्य होगा कि असल में इस किस्म का कोई सांप होता ही नहीं. एक सांप जिस का अस्तित्व ही न हो, उस के बारे में ऐसी किंवदंतियां कैसे फैलीं और हकीकत में यह क्या है, इसी के बारे में आगे कुछ लिख रहे हैं.

राजस्थान की विभिन्न बोलियों में 'काटने' को 'खा जाना' कहा जाता है. जैसे, 'मुझे मच्छर ने काट लिया' या 'सांप ने काट लिया' की जगह, राजस्थान में 'मुझे मच्छर खा गया' या 'सांप खा गया' कहा जाएगा. लेकिन इस लेख में जिस सांप का वर्णन है, वह काटता नहीं, बल्कि

पिवणा

पी जाता है. इस कारण ही इस का नाम पिवणा पड़ा है. उस के पीने की प्रक्रिया कुछ इस तरह है :

जब कोई आदमी रात में सो रहा होता है, उस समय पिवणा आ कर उस की छाती के ऊपर बैठ जाता है तथा उस आदमी के मुंह से अपना मुंह सटा कर उस की सांस पीने लगता है. जब वह

उन छालों में सांप का जहर भरा रहता है. पिवणा द्वारा पी लिए गए व्यक्ति के बारे में कई लक्षण प्रचलित हैं. जैसे, उस व्यक्ति को रोशनी नजर नहीं आती. हर ओर अंधेरा दिखलाई पड़ता है. उसे नमक व आक के पत्तों का स्वाद मीठा लगने लगता है.

जितना विचित्र इस सांप का जहर उगलने का तरीका व 'पी लिए' जाने के लक्षण हैं, उतने ही अनोखे इस के इलाज
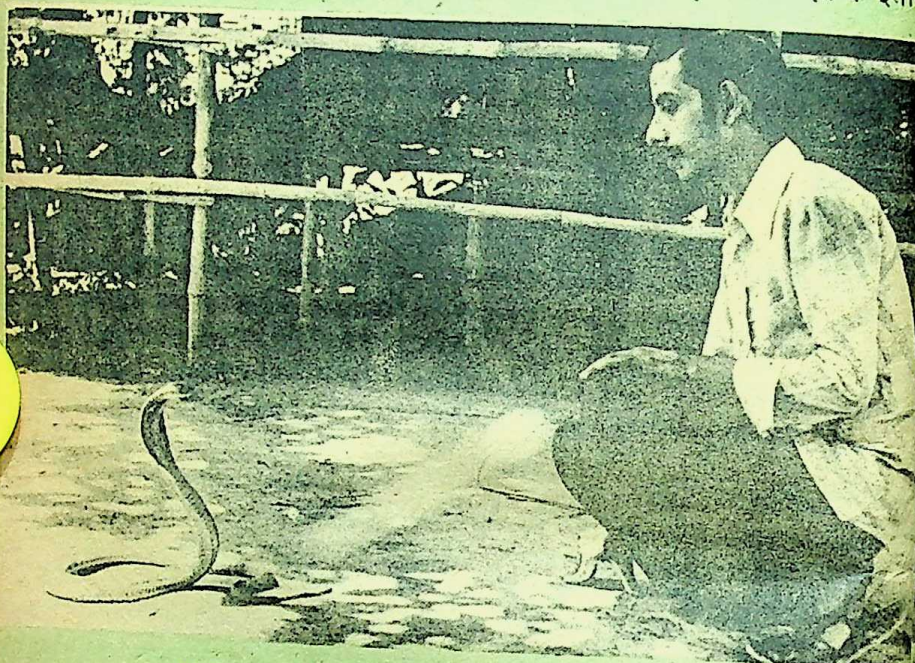
राजस्थान में ही पाया जाने वाला कोबरा (काला नाग) सब से ज्यादा विषैला माना जाता है. पर राजस्थान में इस से भी ज्यादा प्रसिद्ध सांप है पिवणा, जिस का वास्तव में कोई अस्तित्व है ही नहीं.

जी भर कर गर्म सांस पी लेता है, तब आदमी के मुंह में अपना विष उगल कर चला जाता है. जातेजाते वह अपनी पूंछ फटकार कर उस आदमी को जगा भी जाता है.

जागने पर उस व्यक्ति के मुंह व गले में तकलीफ होने लगती है. कहा जाता है कि उस के तालू या गले के भीतर छाले उभर आते हैं. लोगों का मानना है कि

प्रचलित हैं. पिवणा द्वारा 'पिए गए' रोगी को ऊंट का पेशाब पिलाया जाता है. कहींकहीं उसे खूब घी पिलाया जाता है, ताकि वह उल्टी कर जहर बाहर निकाल दे. उस के मुंह के अंदर उंगलियां डाल कर वे छाले फोड़ दिए जाते हैं तथा उन में भरा विष बाहर उगलवा दिया जाता है. कुछ जगह रोगी को उल्टा लटका कर [illegible] जाते हैं, ताकि विष पेट में न

पिवणा

जा पाए. इस के बाद एक स्थानीय देवता गोगाजी की पूजा तथा रोगी की झाड़फूंक करने वाले, कोई दवा भी खिलाते हैं, जिस का नाम वे नहीं बतलाना चाहते. इतना सब होने पर भी रोगी व्यक्ति चंगा हो ही जाएगा, निश्चित नहीं.

पिवणा के 'सांस पीने' के तरीके तथा उस के द्वारा 'पी लिए' जाने के

होता है. सामान्यत: यह पतला व भूरे मटमैले रंग का बतलाया जाता है. कुछ लोगों ने इस के चितकबरे व खूब लंबे होने पर भी जोर दिया है. उन की मान्यता है कि इस सांप को रोशनी में कुछ भी नजर नहीं आता एवं वह दिन में बाहर नहीं निकलता. रात्रि में भी टार्च या लालटेन के उजाले में वह अंधा सा हो एक ओर सिमट जाता है.

इसे मारना काफी कठिन है. अगर

पिवणा के बारे में बेसिरपैर की बातों को फैलाने में सांप दिखाने वाले सपेरों का भी हाथ है. ये मजमों में इस के बारे में मनगढ़ंत बातें कह कर लोगों के मन में डर बैठाते हैं और फिर कोई भी सांप दिखा कर या उस के काटे की अचूक दवा देने के नाम पर पैसे ऐंठते हैं.

लक्षण व इलाज तो लगभग सभी गांवों में, सभी व्यक्ति एक सा बतलाते हैं, लेकिन जब उस सांप के वर्णन का अवसर आता है तो सब के विवरणों में अंतर मिलता है. विभिन्न लोगों से बातचीत के दौरान पता चला कि प्रत्यक्षदर्शियों की संख्या बहुत कम है. उन के अनुसार यह सांप आधे मीटर से दो मीटर तक लंबा

सिर पूरा कुचल दिया जाए, तभी यह मरता है वरना हवा पी कर इस के फिर से जिंदा हो जाने का अंदेशा रहता है. किसी तरह अगर इस सांप को मार डाला गया तो मनुष्यों की तरह उसे कोरे कपड़े का कफन दे कर जलाया जाता है.

मैं ने राजस्थान के सीकर, झुंझुनूं, बीकानेर, जैसलमेर आदि जिलों के

पिवणा

दसियों गांवों के विभिन्न लोगों से इस के बारे में बात की. लगभग सभी लोग इस सांप के होने पर विश्वास करते हैं, लेकिन किसी सोते हुए व्यक्ति की छाती पर बैठ कर, उस के मुंह से सांस पीते हुए अपनी आंखों से इस सांप को देखने वाला मुझे कोई व्यक्ति नहीं मिला. यह पूछा जाए तो सब कहने लगते हैं कि उसे फलां ने देखा था. वह फलां व्यक्ति या तो मर चुका होता है या गांव छोड़ कर जा चुका होता है.

लोगों का अंधविश्वास

इस सांप के बारे में लोग इतने अंधविश्वासी हैं कि चाहे आप उन्हें लाख समझाएं कि इस तरह का कोई सांप नहीं होता, वे मानने को तैयार नहीं होते. कई बार मेरे समझानेबुझाने के बाद भी कुछ लोग ऐसे निकल आए जो अंत में मुझे ही नसीहत दे जाते कि मैं रात में प्याज या लहसुन खूब खा कर सोऊं. उन लोगों का विश्वास है कि खूब लहसुनप्याज खाने या शराब पी कर सोने से, मुंह से आती हुई दुर्गंध के कारण, पिवणा दूर रहता है. इस तरह उस के द्वारा 'पिए जाने' का खतरा कम हो जाता है.

पिवणा के बारे में बेसिरपैर की इन बातों को फैलाने में सांप दिखाने वाले सपेरों का भी हाथ है. वे मजमों में इस के बारे में कई मनगढ़ंत बातें बतलाने के बाद, किसी भी सांप को पिवणा कह कर दर्शकों को दिखलाते हैं. अंत में पिवणा द्वारा 'पिए गए' व्यक्ति को बचाने के लिए दवा के नाम पर कुछ भी बेच जाते हैं. इस तरह उन की दवा की खूब बिक्री हो जाती है.

पिवणा का अस्तित्व सिर्फ किवदंतियों व लोक कथाओं में ही है. प्राणीशास्त्रियों के अनुसार इस किस्म का कोई सांप धरती पर नहीं पाया जाता. अतएव उस के बारे में फैली तमाम भ्रामक बातों को दूर किया जाना आवश्यक है. इन बातों का आम आदमी पर गहरा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है. अचानक नींद टूटने पर अगर कहीं कोई सांप दिखलाई पड़ जाए, तो उसे पिवणा समझ कर वह घबरा जाता है. उसे शंका होने लगती है कि पिवणा उसे 'पी गया' है. वस्तुस्थिति कुछ भी हो, पर मानसिक रूप से बीमार पड़ने में उसे देर नहीं लगती.

सांपों की प्रकृति

सभी प्रकार के सर्प मनुष्यों से डरते व उन से दूर रहने का प्रयत्न करते हैं. जब तक उन्हें छेड़ा न जाए या धोखे से वे पांव आदि के नीचे न दब जाएं, वे अपनी ओर से आक्रमण नहीं करते. पिवणा का स्वयं सोते हुए मनुष्य के समीप आना, छाती पर बैठना, सांस पीना व पूंछ मार कर उस आदमी को जगा जाना, सांपों की इस प्रकृति से मेल नहीं खाता.

प्रत्येक मनुष्य सामान्यत: अपने मुंह के बजाए नाक से सांस लेता है. इस कारण पिवणा का आदमी के मुंह से मुंह मिला कर सांस पीना, फिर उस के मुंह के अंदर (जो सोते समय आमतौर पर बंद होना चाहिए) जहर उगल जाना, सरासर मनगढ़ंत प्रतीत होता है.

सांप के जहर का मनुष्य पर तब तक असर नहीं होता, जब तक जहर का संपर्क सीधे रक्त से न हो जाए. एक स्वस्थ मनुष्य, जिस के मुंह के अंदर कोई घाव न हो, अगर सांप का जहर पी ले, तो इस से उस की मृत्यु कदापि नहीं हो सकती. एक हलका सा नशा उसे जरूर आ सकता है.

इन सब तथ्यों को ध्यान में रख कर, राजस्थान के आम ग्रामवासियों को पिवणा का भय मन से निकाल देना चाहिए. जो चीज सिर्फ काल्पनिक हो, उस से डर कैसा? •

मासूम बच्चों पर निर्मम अत्याचार

ब्रिटेन की एक संस्था ने, जो बच्चों पर होने वाले अत्याचारों की रोकथाम करती है, कुछ समय पहले प्रकाशित की गई अपनी रिपोर्ट में अनेक अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों पर किए जाने वाले दिल दहला देने वाले मार्मिक अत्याचारों का ब्यौरा दिया है.

रिपोर्ट के अनुसार इस संस्था के निरीक्षकों ने केवल 1978 में ही 15,000 से अधिक ऐसे मामलों की छानबीन की, जहां बच्चों को मानसिक व शारीरिक यातनाएं दी गई थीं.

अपनी रिपोर्ट में इस संस्था ने ऐसे कई मामले गिनाए हैं, जिन में अभिभावकों ने रोने वाले बच्चों को घंटों अकेला कमरे में बंद कर दिया या इतना मारापीटा कि उन की हड्डीपसली टूट गई.

संस्था ने अपनी रिपोर्ट में प्रमाण के रूप में इन घटनाओं की भयंकरता चित्रित करने वाले फोटोग्राफ भी प्रकाशित किए हैं. एक चित्र में दिखाया गया है कि एक तीन वर्षीया बच्ची को काफी गर्म पानी में डुबोया गया. एक दूसरे चित्र में दिखाया गया है कि एक बच्ची की पिटाई की गई और फिर उसे बारबार स्वेटर बुनने वाली सलाइयां चुभोई गईं.

संस्था ने आशंका व्यक्त की है कि अगर नन्हें बच्चों पर इसी तरह अत्याचार जारी रहे तो लोगों पर फिर किसी तरह के आघात का कोई असर नहीं हो सकेगा, क्योंकि अत्याचार सहतेसहते वे उस को सहने के आदी हो जाएंगे.

चीन में पतियों को नई सहूलियत

चीन में पतियों को एक भारी सहूलियत मिलने वाली है कि वे अपनी पत्नियों को चाहे जितना मारेंपीटें, उन्हें तब तक सजा नहीं दी जा सकेगी, जब तक कि उन की पत्नी खुद इस बात की शिकायत अधिकारियों से न करे.

इस बात की व्यवस्था उस विधेयक में की गई है, जो इस समय चीन की संसद के समक्ष विचाराधीन है. इस विधेयक से कुछ लोग काफी नाराज भी हुए हैं, जब कि अन्य लोगों का यह कहना है कि यह ठीक है, क्योंकि घर के झगड़ों को अदालतों से दूर ही रखना चाहिए.

'नव चीन संवाद समिति' ने नेशनल पीपुल्स कांग्रेस के एक डिप्टी के हवाले से उक्त खबर दी है.

संसार का सब से बूढ़ा आदमी

विश्व कीर्तिमानों की पुस्तक 'गिनीज बुक आफ रिकार्ड्स' के अनुसार टोकियो से 1,200 किलोमीटर दूर दक्षिणपश्चिम में स्थित टोकुनोशिमा टापू पर रहने वाले इजुमी संसार के सब से बूढ़े आदमी हैं. उन्होंने हाल ही में टोकियो के एक स्कूल में अपना 114वां जन्म दिन मनाया.

एकदम सफेद दाढ़ी वाले इजुमी इस उम्र में भी काफी तंदुरुस्त हैं. वह विधुर हैं. उन के 80 वर्षीय भतीजे उमेजुमी इजुमी की 71 वर्षीय पत्नी श्रीमती चियो इजुमी के अनुसार बड़े मियां इजुमी को किसी तरह का कोई शारीरिक रोग नहीं है.

उन की इतनी लंबी उम्र के राज के बारे में बस इतना ही कहा जाता है कि वह हर रोज सुबह सात बजे उठ कर अपने कुत्ते के साथ घूमने जाते हैं और घर लौट कर मिलने आए नवविवाहितों से मिलते हैं, खूब खातेपीते हैं. हर रात को सोने से पहले आठ बजे आधा पिंट शराब पीते हैं.

बरसात में पानी के साथ मेंढक भी बरसे

आप ने वर्षा के दौरान ओले बरसते तो देखे होंगे, पर क्या कभी मेंढक बरसते भी देखे हैं? नहीं, पर ऐसा हुआ है. सोवियत संघ के तुर्कमनी राज्य में अमुदारया नदी के निकट बसे दारगनाता इलाके में पानी के साथ मेंढक बरसे.

सोवियत संवाद समिति 'तास' के अनुसार ऐसा अनुमान है कि ये मेंढक तेज हवाओं में उड़ कर बादलों तक जा पहुंचे होंगे और वहां से वे वर्षा के साथ फिर जमीन पर वापस आ गए.

कुख्यात डकैत सफल लेखक बना

आदमी का स्वभाव बदलते देर नहीं लगती है. इस का जीताजागता उदाहरण है रोजर कैरन जो किसी समय 'मैड डाग कैरन' नामक कुख्यात बैंक डकैत हुआ करता था, आज एक सफल लेखक बन गया है.

रोजर कैरन 13 बार जेल से फरार हुआ. उस के फरार होने की सब से स्तब्धकारी घटना 1972 में घटी जब वह तीन सुरक्षा सैनिकों को बैरक में बंद कर के जेल के ताले तोड़ कर भाग निकला और चोरी की एक कार में सीमा पार कर अमरीका में जा घुसा. इसी कैरन ने अब हाथों में बंदूक की जगह कलम पकड़ ली है. उस की पहली ही पुस्तक 'गो ब्वाय' को 1979 में कनाडा सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार (गवर्नर जनरल अवार्ड) प्राप्त हुआ है.

वायलिन नीलामी का नया विश्व रिकार्ड

प्रख्यात अमरीकी-आस्ट्रेलियाई वायलिन वादक फ्रिट्ज कैस्टर की वायलिन की लंदन में हुई नीलामी ने विश्व के सभी वायलिन नीलामी रिकार्ड तोड़ दिए.

लंदन के सोदेबी नीलामी केंद्र में इस वायलिन को एक यूरोपीय खरीदार ने 1,45,000 डालर में खरीदा. यह खरीदार अपना नाम नहीं बताना चाहता था. विश्व में किसी भी वायलिन की अभी तक इतनी कीमत नहीं लगाई गई.

अलबत्ता पिछले साल नवंबर में संगीत उपकरणों के एक विक्रेता ने एक दुर्लभ स्ट्राडिवारी सैलो के लिए इतना ही मूल्य अदा किया था.

पैदल चलने के नए कीर्तिमान

पैदल घूमने का अपना ही आनंद है. कुछ समय पहले एक फ्रांसीसी व्यक्ति गेरार्ड लेलीव्री ने पेरिस के एक उपनगर स्पेन सुरसीन में 20 किलोमीटर की चाल प्रतियोगिता एक घंटा 22 मिनट और 19.4 सैकेंड में जीत कर विश्व रिकार्ड स्थापित किया. उस ने एक घंटे में 14.654 किलोमीटर की दूरी तय करने का भी कीर्तिमान कायम किया.

तीस वर्षीय लेलीव्री कस्टम अधिकारी हैं. बीस किलोमीटरी चाल के उन के रिकार्ड के केवल एक सप्ताह पूर्व ही सोवियत संघ के अनातोली सोलमिन ने एक घंटे 22 मिनट व 53.4 सैकेंड का रिकार्ड कायम किया था. ●

तुर्की

सन 1923 में अतातुर्क और उसके साथियों ने तुर्की में धर्मनिरपेक्ष गणतंत्र विकसित किया था. मगर आज इतने वर्ष बाद भी यहां का लोकतांत्रिक ढांचा अधर में क्यों लटका हुआ है?

लेख • उग्रसेन गोस्वामी

सैकड़ों साल पुरानी राजशाही की परंपरा को तोड़ कर जब 1923 में तुर्की को एक गणराज्य घोषित किया गया था तो वहां के तत्कालीन नेता कमाल अतातुर्क की यही अभिलाषा थी कि इस देश को यूरोप की तरह आधुनिक बना दिया जाए. कमाल अतातुर्क ने न केवल अपने देशवासियों की वेशभूषा को यूरोपीय ढंग पर ढालने की कोशिश की बल्कि उन्होंने तुर्की भाषा के लिए भी अरबी लिपि को छोड़ कर यूरोप में इस्तेमाल की जाने वाली लातीनी लिपि को अपनाया. यूरोप के आर्थिक ढांचे की देखादेखी उन्होंने यह कोशिश भी की कि तुर्की का अधिक से अधिक उद्योगीकरण किया जाए.

यद्यपि तुर्की की 99 प्रतिशत जनसंख्या आज भी इसलाम धर्म में विश्वास रखती है, किंतु अतातुर्क और उस के साथियों ने तुर्की में एक धर्मनिरपेक्ष गणतंत्र को विकसित करने के लिए हर संभव प्रयास किए. वहां की राजनीतिक और प्रशासनिक पद्धति को भी यूरोपीय प्रतिमानों के अनुसार गढ़ने की कोशिश की गई. किंतु अब तक का अनुभव यही बतलाता है कि अन्य क्षेत्रों में तुर्की भले ही कुछ हद तक यूरोप की सार्थक नकल करने में सफल हुआ हो, पर राजनीति अभी भी वहां पुराने ढर्रे पर चल रही है.

कारगर लोकतांत्रिक शासन पद्धति को विकसित न कर पाने का ही यह कारण है कि सितंबर, 1980 में वहां की सेना को एक बार पुन: देश का शासन भार अपने हाथों में ले लेने के लिए आगे आना पड़ा. पिछले 20-21 वर्षों में तीसरी बार ऐसा हुआ है कि तुर्की की सशस्त्र

सेनाओं ने अपने राजनीतिबाजों का आपसी कलह के कारण बिगड़ती हुई देश की स्थिति को संवारने के लिए वहां हस्तक्षेप किया. 1960 में भी सेना को तत्कालीन राजनीतिबाजों को गद्दी से हटा कर देश का शासन भार अपने हाथों में लेना पड़ा था. तब करीब 17 महीनों तक वहां सैनिक शासन रहा था.

उस के बाद एक बार पुनः नागरिक शासन की शुरुआत उस देश में की गई. किंतु आपसी मनमुटाव के कारण जब तुर्की की राजनीतिक नैया पुनः डगमगाने लगी तो 1971 में एक बार फिर कुछ अरसे के लिए देश का शासन सेना के हाथ में आ गया. और करीब 10 वर्ष
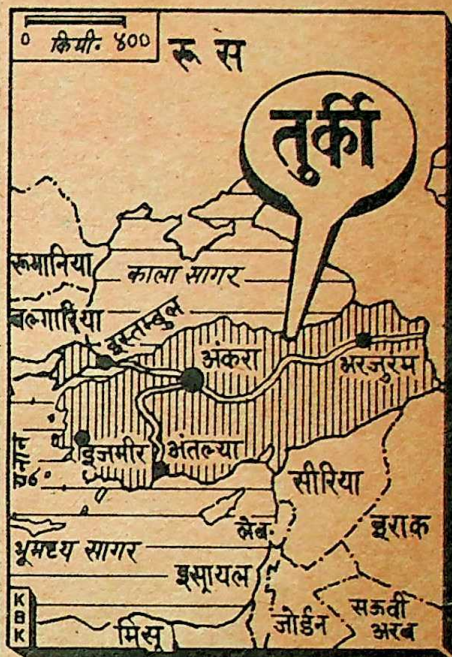
12 सितंबर, 1980 को बिगड़ी राजनीतिक स्थिति संभालने की जिम्मेदारी तुर्की की सेना ने ली. अंकरा की एक गली में गश्त लगाते तुर्की सैनिक (ऊपर) और तुर्की की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सदस्य (बाएं से दाएं) सादात सेलास्यून, नूरेद्दीन अरसीन, एवरीन, नासीन साइंकाया, नेजट टूमर (नीचे).

बाद 1980 में पुनः वहां यह बात दोहराई गई.

किसी शक्तिशाली राजनीतिक दल के विकसित न हो पाने के कारण छोटे-छोटे कई दल तुर्की की राजनीति में अपने गढ़ बनाने की कोशिश में सदा जुटे रहे हैं. राजनीतिक दलों में मतभेद विचारधारा के आधार पर जो भी रहा हो, किंतु प्रायः वहां यह भी कोशिश रही
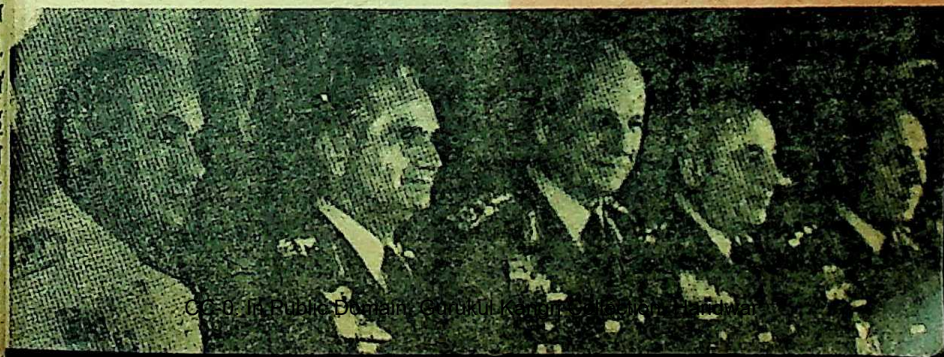
है कि अपने प्रतिद्वंद्वियों को हिंसा के बल पर हटाया जाए. 1978 से राजनीतिक हिंसा वहां काफी जोर पकड़ने लगी थी. 1979 के अंत तक लगभग 2,000 व्यक्ति राजनीतिक हिंसा का शिकार हो चुके थे.

1980 में स्थिति और भी बिगड़ती गई और विभिन्न राजनीतिक गुट हिंसा पर प्रवृत्त रहे. देश में आंतरिक सुरक्षा की स्थिति इस कदर बिगड़ गई कि सेना को यह कहने का मौका मिला कि राजनीतिबाज देश की स्थिति सुधारने में असमर्थ रहे हैं और इस कारण 11 सितंबर, 1980 को सेना ने देश का शासन स्वयं संभाल लिया और वहां के प्रमुख राजनीतिक नेताओं को उन के अपने घरों में बंदी बना दिया.

राष्ट्रपति का चुनाव न हो सका

1980 में देश में राजनीतिक अस्थिरता का यह आलम था कि वहां की संसद 100 से भी अधिक बार कोशिश करने पर अपने देश का राष्ट्रपति न चुन सकी. तुर्की के तत्कालीन संविधान के अनुसार वहां के संसद के सदस्यों में से ही एक सदस्य को सात वर्ष के लिए संसद के दोनों सदनों द्वारा देश का राष्ट्रपति चुना जाना था. 1973 से चले आ रहे देश के राष्ट्रपति फाहरि कोरूतुर्क का पदकाल 6 अप्रैल, 1980 को समाप्त हो गया. उस के बाद संसद की बैठकें 100 से अधिक बार केवल इस कारण हुईं कि मतदान द्वारा देश को नया राष्ट्रपति दिया जाए. किंतु इतने तरद्दुत के बाद भी किसी भी प्रत्याशी को आवश्यक मत नहीं मिल पाए और देश सेना के हस्तक्षेप करने तक बिना राष्ट्रपति के बना रहा.

इतना समय केवल राष्ट्रपति चुनने पर ही बेकार कर देने के कारण वहां की संसद न केवल आवश्यक विधान कार्य ही कर पाई बल्कि वहां की सरकार का देश के शासन पर भी नियंत्रण ढीला होता चला गया. यदि सैनिक सरकार ने आ कर संसद को भंग कर दिया या तत्कालीन संविधान को समाप्त कर दिया तो इस से वहां की आम जनता को कोई विशेष रोष नहीं हुआ. हां, देश का लोकतांत्रिक ढांचा एक बार पुनः अधर में लटक गया.

अनिश्चित राजनीतिक स्थिति की वजह

तुर्की के अनिश्चित राजनीतिक जीवन के पीछे मुख्यतः आर्थिक समस्याएं हैं. तुर्की का उद्योगीकरण तो इधर के दशकों में काफी हुआ है किंतु फिर भी देश की आर्थिक दशा सुधारने में इस का योगदान कोई विशेष नहीं रहा. देश की अर्थव्यवस्था आज भी मुख्यतः कृषि पर निर्भर है, जिस में यहां की कार्यशील जनता के 60 प्रतिशत से भी अधिक लोग लगे हुए हैं. देश में कीमतों के बढ़ने का यह आलम है कि पिछले एक वर्ष में यहां कीमतें दोगुनी से भी अधिक हो गई हैं और कीमतों के बढ़ने का यह सिलसिला 1974 से चला आ रहा है.

बेकारी की स्थिति भी यहां बड़ी शोचनीय है. ऐसा अनुमान है कि यहां की कार्यशील जनता के एक चौथाई हिस्से को कोई काम नहीं मिल पाता. देश की बेकारी की समस्या में कुछ राहत इस कारण मिल जाती है कि यहां से लाखों कामगार यूरोप के विभिन्न देशों में चले जाते हैं. इस समय करीब 10 लाख तुर्की कामगार यूरोप के कई देशों में अपनी रोजीरोटी कमाने का जुगाड़ कर रहे हैं.

तुर्की में आर्थिक तथा बेकारी की समस्या इस कारण भी उग्र हो उठी है, क्योंकि यहां की आबादी बड़ी तेजी से बढ़ रही है. देश की आबादी में हर साल 2·6 प्रतिशत की वृद्धि हो जाती है. 1927 में इस देश की आबादी 1,36,48,000 थी. 1975 तक यह बढ़ कर तीन गुना हो चुकी थी. आज इस देश की आबादी साढ़े चार करोड़ के आंकड़े को

भी पार कर गई है. तुर्की में खनिज संपदा की कमी तो नहीं है, किंतु देश के पास इतनी पूंजी ही नहीं कि वह इस संपदा का उपयुक्त उपयोग कर सके. कृषि में भी लोगों को खपाने की एक सीमा होती है. यही कारण है कि तुर्की की बढ़ती आबादी देश के आर्थिक ढांचे के लिए सिरदर्द ही पैदा कर रही है.

सैनिक शासन से पहले तक के प्रधान मंत्री सुलेमान द मिरेल.

के बीच एक ऐसे नाके पर स्थित है, जहां प्राचीन काल से विभिन्न प्रदेशों से अलगअलग परंपराओं तथा जीवन पद्धतियों वाले लोग आ कर रहते रहे हैं.

यहां की प्राचीनतम सभ्यता हित्तियों की थी जो करीब 4,000 वर्ष पूर्व यहां अस्तित्व में आई थी. यूनानियों के साथ इस प्रदेश के
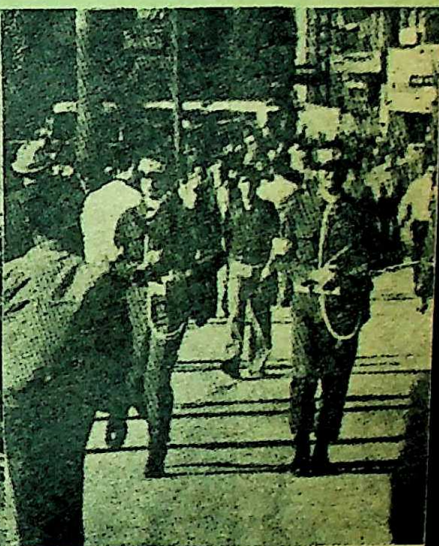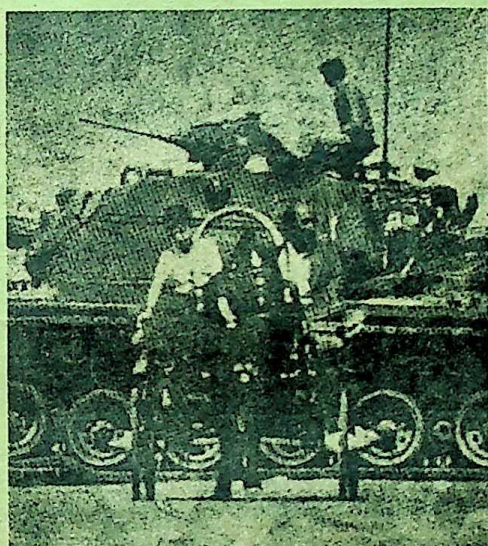
अंकरा में घोड़ागाड़ी और सैनिक टैंक साथसाथ कभी भी देखे जा सकते हैं: सतर्क सैनिक टुकड़ियां गश्त लगाते और राष्ट्रविरोधी गतिविधियों पर नजर रखे हुए.

आज तुर्की का नागरिक मजदूरी की तलाश में दूसरे देशों में भटक रहा है. किंतु एक समय था जब इस देश का दबदबा विश्व के काफी बड़े इलाके में छाया हुआ था. तुर्की यूरोप और एशिया

संबंध बहुत पुराने रहे हैं. ट्राय का नग भी इसी धरती पर स्थित था, जिस क यूनानी परंपराओं के साथ बहुत गहर संबंध रहा है. आज से करीब 2,000 व पूर्व यह क्षेत्र रोमन प्रभाव के अंतर्गत आ

चुका था. ईसवी सन की चौथी शताब्दी में जिस बिजेंटियम नगर में पूर्वी रोमन साम्राज्य की दागबेल डाली गई थी वही नगर आज इस्तंबूल के नाम से जाना जाता है.

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ग्यारहवीं शताब्दी तक यह समूचा प्रदेश बिजेंटियम साम्राज्य का ही अंग रहा, किंतु तुर्की का वर्तमान एशियाई हिस्सा उसी शताब्दी में बिजेंटियम साम्राज्य के हाथों से निकल कर तुर्कों के हाथ में जा चुका था.

आज जिस तुर्क जाति के नाम पर इस देश को तुर्की नाम मिला हुआ है, उस जाति के लोग मध्य एशिया से कोई एक हजार वर्ष पूर्व यहां आ कर बसने शुरू हुए थे. किंतु इस क्षेत्र में अपना एक भरापूरा साम्राज्य स्थापित करने में तुर्कों को करीब 500 वर्ष लग गए. सन 1300 के आसपास उसमान अली ने अनातोलिया के पूर्वोत्तर हिस्से में अपने छोटे से राज्य की स्थापना की थी जिस ने अगली शताब्दियों में एक विस्तृत तुर्क साम्राज्य का रूप ले लिया.

इस साम्राज्य के प्रवर्तक उसमान के नाम पर ही यह साम्राज्य यूरोप में आटोमन साम्राज्य के नाम से विख्यात हुआ. 1453 में बिजेंटियम साम्राज्य को पूर्णतः पददलित करने के बाद इस नवागंतुक साम्राज्य को न केवल इस्तंबूल (कुस्तुनतुनिया) जैसी भव्य राजधानी ही मिल गई, वरन इस का दबदबा भी तत्पश्चात दिनोंदिन बढ़ता गया.

16वीं और 17वीं शताब्दी में यह साम्राज्य अपने पूरे यौवन पर था और तब इस की सीमाएं एक ओर मध्य यूरोप तक फैली हुई थीं तो दूसरी ओर मिस्र समेत उत्तरी अफ्रीका का काफी बड़ा हिस्सा इस के अंतर्गत आ चुका था. एशिया में सीरिया, इराक और इजरायल जैसे वर्तमान देश इस साम्राज्य के अंग थे तो यूरोप के वर्तमान रूमानिया तथा हंगरी जैसे देशों तथा यूगोस्लाविया के अधिकांश क्षेत्र में भी इसी साम्राज्य का झंडा लहराता था.

तुर्कों का पतन

किंतु इस शताब्दी में प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की की हार हो जाने के बाद यह साम्राज्य ऐसा बिखरा कि मात्र 7,80,000 वर्ग किलोमीटर के वर्तमान तुर्की क्षेत्र में सिमट कर रह गया. रूस के बाद तुर्की ही एक ऐसा देश है जो आज भी दो महाद्वीपों पर अपनी सीमाएं बनाए हुए है. यूरोप में तो इस का क्षेत्र करीब 24,000 वर्ग किलोमीटर तक ही सीमित है, किंतु मुख्यतः यह एशिया के अनातोलिया नामक प्रदेश में ही पसरा पड़ा है. इस के यूरोपीय प्रदेश को थ्रेस कहा जाता है और जहां तक इस के एशियाई अंग अनातोलिया का संबंध है, उस का नाम भी यूरोप के लोगों द्वारा ही दिया गया है.

अनातोलिया (तुर्की में इसे अनादोलू कहते हैं) एक यूनानी शब्द पर आधारित है जिस का अर्थ है 'सूर्योदय' यानी 'पूर्वी भूमि.' काला सागर तथा भूमध्य सागर के किनारे स्थित इस देश की सीमाएं सोवियत संघ, ईरान, इराक और सीरिया को छूती हैं. इस के यूरोपीय क्षेत्र की सीमाएं यूनान तथा बलगारिया की सीमाओं से सटी हुई हैं. तुर्की के यूरोपीय तथा एशियाई अंगों के बीच बासपोरस जलसंधि, मरमरा सागर तथा डार्डेनेल्स जलसंधि की वह जलपट्टी पसरी पड़ी है जो काला सागर और भूमध्य सागर को मिलाती है.

यों तो वर्तमान तुर्की जनता के रक्त में बहुलता मध्य एशियाई तुर्क जाति की है, किंतु अन्य भी कितनी ही जातियों का रक्त तुर्की की वर्तमान जनता की धमनियों में बह रहा है. मध्य एशिया से इस क्षेत्र में आने से पहले ही मध्यकालीन

1980 में सत्ता परिवर्तन के बाद बने नए राष्ट्राध्यक्ष जनरल केनान एवरीन : देश को नई शासन व्यवस्था दिए जाने की शुरुआत.

तुर्क लोग इसलाम धर्म कबूल कर चुके थे और यही कारण है कि जब तुर्क साम्राज्य का विस्तार हुआ तो इसलाम धर्म के प्रचार और प्रसार में यहां के शासकों ने भरपूर योगदान दिया.

वस्तुत: भारत समेत विश्व की अधिकांश मुसलिम जनता इस साम्राज्य के अंतिम दौर में यहां के शासक को अपना खलीफा (सर्वोच्च धार्मिक नेता) मानने लग पड़ी थी और जब प्रथम विश्व युद्ध के बाद उस शासक का खिलाफत का दर्जा छिन गया तो लगभग समूचे मुसलिम जगत में उस का काफी विरोध हुआ. भारत में भी इस शताब्दी के तीसरे दशक में इसी मुद्दे पर खिलाफत आंदोलन चलाया गया था.

तुर्की का व्यापारिक केंद्र

यद्यपि आज इस देश की राजधानी तो एशियाई क्षेत्र में स्थित अंकरा नगर है, किंतु इस का प्रमुख व्यापारिक केंद्र अभी भी इस के यूरोपीय हिस्से में स्थित इस्तंबूल ही है. बासपोरस जलसंधि के किनारे स्थित इस्तंबूल नगर एशिया और यूरोप के मिलन स्थल पर स्थित है और तुर्की के इस सब से बड़े नगर के बाजारों में इन दो महाद्वीपों की सभ्यताओं की गंध रचीबसी हुई है. अपने समृद्ध इतिहास के बावजूद यदि आज यह देश इन दोनों महाद्वीपों की राजनीति में कोई विशेष भूमिका नहीं निभा पा रहा तो इस का कारण मुख्यत: इस की आर्थिक समस्याएं हैं, जिन के कारण इस देश को प्राय: दूसरे धनाढ्य देशों की ओर देखना पड़ता है. बेकारी की समस्या तो यहां भयावह रूप धारण कर ही चुकी है, ऊर्जा के साधनों की कमी के कारण वर्तमान उद्योगधंधे भी पूरी क्षमता से काम नहीं कर पा रहे हैं, जिस के कारण कामगार बहुत परेशान हैं.

छात्रों में भी असंतोष

यहां के छात्रों में असंतोष का विस्फोट होता रहा है तो विभिन्न कामधंधों में लगे कामगारों द्वारा हड़तालें भी होती रही हैं तथा हिंसक गतिविधियों का भी प्राय: प्रदर्शन हुआ है. पिछले वर्ष सेना द्वारा यहां के शासन पर काबिज होने से पहले आंतरिक शांति की स्थिति इतनी चिंताजनक हो चुकी थी कि तुर्की की 4,75,000 जवानों वाली सेना का एकचौथाई हिस्सा केवल अपने देश के

भीतर चल रहे दंगाफसादों को रोकने के लिए ही इस्तेमाल किया जा रहा था.

नई शासन व्यवस्था

11 सितंबर, 1980 को हुए सत्ता परिवर्तन के बाद जनरल केनान एवरीन के नेतृत्व में इस देश को नई शासन व्यवस्था दिए जाने की शुरुआत की गई है.

यों तो पुराना संविधान भंग किया जा चुका है, किंतु जनरल एवरीन ने इस बारे में स्पष्ट संकेत दिया था कि वह शीघ्र ही देश के लिए नए संविधान का निर्माण करके नए चुनाव करा कर नागरिकों को पुन: सत्ता सौंपने के लिए पहल करेंगे. आशा करनी चाहिए कि शीघ्र ही तुर्की को पुन: वास्तविक अर्थों में एक लोकतांत्रिक शासन मिल पाएगा.

पुराने संविधान के अनुसार जून, 1981 में देश की संसद के नए चुनाव होने थे. यदि तब तक जनरल एवरीन अपने वचन को अमलीजामा पहनाने के लिए कदम उठाते हैं तो संभवत: इस वर्ष के अंत तक यहां निर्वाचित सरकार स्थापित हो सकती है. ●

शाबाश

इस स्तंभ के लिए समाचार-पत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : शाबाश, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

लक्ष्य के समीप पहुंच कर दम तोड़ा

समुद्र में 15 मील की तैराकी स्पर्धा जीतने के प्रयास में सूरत के एक तैराक भरतकुमार को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा.

बताया जाता है कि इस स्पर्धा में कुल नौ प्रतियोगियों ने भाग लिया था जिन में से आठ तो बीच रास्ते में ही थक कर प्रतियोगिता से बाहर हो गए. लेकिन अपने लक्ष्य को छूने की धुन में भरतकुमार तैरता ही रहा.

तभी अचानक अत्यधिक थकान से हुए हृदयाघात ने उस का जीवन ले लिया. अंतिम लक्ष्य से मात्र 20 मीटर दूर उसे मृत अवस्था में पाया गया. भरत को मरणोपरांत स्पर्धा विजेता घोषित किया गया. —नवभारत, जबलपुर (प्रेषक : संतोष)

✦

खेतिहर मजदूर ने कुल्हाड़ी से शेर मारा

नानदेढ़ जिले के हदोली गांव के निकट एक खेतिहर मजदूर ने शेर से लड़ाई कर उसे मार डाला. इस शेर ने पूरे क्षेत्र में आतंक मचा रखा था. इस ने एक व्यक्ति को मार डाला था तथा कई अन्य लोगों को घायल किया था.

शेख फरीद नामक यह मजदूर एक दिन अपनी पत्नी के साथ घर लौट रहा था कि शेर ने उस पर हमला कर दिया. लेकिन फरीद ने हिम्मत नहीं खोई और अपनी कुल्हाड़ी से ऐसा अचूक वार किया कि शेर का सिर फट गया.

इस संघर्ष में फरीद भी गंभीर रूप से घायल हुआ. बाद में उसे हस्पताल में दाखिल कर दिया गया. —नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : नसीम बाई)

✦

✦ छात्रों की साहसिक समुद्री यात्रा

अभी हाल ही में दिल्ली के नौ छात्रों ने लक्ष्यद्वीप और मिनिकाय द्वीप तक 40 दिन की अपनी समुद्री यात्रा पूरी कर अपने साहस का परिचय दिया है.

बीस वर्ष से भी कम आयु के इन नौ छात्रों ने अपनी देशी नौकाओं में 700 मील की यात्रा के दौरान 11 द्वीपों की खोज की है.

इन्हें केवल नैनीताल की एक झील में नौकायन का अनुभव था. परंतु समुद्र में तूफान के कारण 15 फुट तक ऊंची उठती लहरों के बीच भी इन्होंने साहस नहीं छोड़ा और समुद्री यात्रा जारी रखी.

राष्ट्रीय अभियान संस्थान प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित इस यात्रा में गौतम बैनर्जी, अरुण राणा, रजनीश कायस्थ, पी. डी. शर्मा, नरेंद्र कोछड़, परितोष माथुर, राजीव बब्बर, मनीष दत्त और तोतहिन सरकार आदि छात्र शामिल थे.

—हिंदुस्तान, दिल्ली (प्रेषक : प्रदीपकुमार 'जख्मी') (सर्वोत्तम) •

सुखद वैवाहिक जीवन के लिए

विश्व सुलभ साहित्य

द्वारा प्रकाशित यौन विज्ञान व परिवार संबंधी प्रमाणिक पुस्तकें.

युवकों से
युवकों को योग्य पति और जिम्मेदार पिता बनने में सहायक पुस्तक.
रु. 3.50

युवतियों से
एक युवती समझदार बहू, प्रिय पत्नी, योग्य गृहिणी और आदर्श मां बन कर अपनी जिम्मेदारियों को सही ढंग से कैसे निभाए.
रु. 5.00

पति से
पति का पत्नी को समझने व अपना बनाए रखने में सहायक उपयोगी पुस्तक.
रु. 4.00

पत्नी से
परिवार को सुखमय बनाने के लिए विभिन्न समस्याओं का विवेचन. हर पत्नी के लिए अनिवार्य.
रु. 5.00

कामकला (दो भाग)
यौन जीवन सुखमय बनाने में सहायक पुस्तक. सेक्स के हर पहलू का वैज्ञानिक विश्लेषण.
प्रत्येक भाग रु. 5.00

स्त्री पुरुष
प्राचीन भारतीय काम विज्ञान तथा आधुनिक पश्चिमी खोज के ज्ञान का समावेश इस पुस्तक में मिलेगा रु 6.50

बच्चों की समस्याएं
बच्चों को शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ कैसे बनाएं ?
रु. 3.00

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें. या आदेश भेजें.

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

VSS 101

पूरा सेट केवल 25 रुपए में डाक खर्च सहित या कोई भी तीन पुस्तकें लेने पर डाक खर्च की छूट.रुपए अग्रिम आने पर

बेचारा काजी

व्यंग्य • इकराम राजस्थानी

कभी जमाना था जब काजी भी खासी अहमियत रखते थे. और सिवाए रजामंद मियांबीवी के, हर जगह उन की तूती बोलती थी. पर अब हालात कितने बदल गए हैं...

कितना पुराना, घिसापिटा और दकियानूसी मुहावरा इस्तेमाल किया जाता है—बेचारे काजी के लिए. वैसे यह और बात है कि वह खुद इस मुहावरे से भी पुराने, घिसेपिटे और दकियानूस लगते हैं. आप ने सुना होगा 'जब ..क्या करेगा काजी.' पर आज के जमाने में तो जिन लोगों ने अदालती शादी की है, उन का भी इस नाम की चीज से वास्ता नहीं पड़ता. हमें यह तो मालूम नहीं कि वे लोग खुश हैं या नहीं, पर यह जो कहा जाता है 'मियां बीवी राजी तो क्या करेगा काजी,' 'उसे मैं कतई मानने को तैयार नहीं हूं.

मुझे इस मुहावरे में बुनियादी तौर पर गलती दिखाई देती है. देखा जाए तो इस का पहला हिस्सा तो एकदम यकीन के लायक नहीं है. आप ही बताइए वे मियांबीवी ही क्या जो राजी हों? जब तक तूतू मैंमैं और धूमधड़ाका न हो, जिंदगी कितनी बेमजा होती है. पड़ोस वालों को भी पता नहीं लगता कि ये पतिपत्नी हैं.

आप बहुत दबाव डालें तो इतना माना जा सकता है कि कुछ प्रतिशत मामलों में मियां या बीवी में से कोई एक राजी होता है. पर जहां दोनों राजी हों, उन्हें देखने के लिए तो मैं कुछ भी खर्च करने को तैयार हूं. सरकार को भी ऐसे दर्शनीय जोड़े को राष्ट्रीय संपत्ति घोषित कर उन

की नसलों का संरक्षण करना चाहिए. उन के मरने के बाद उन की आदमकद प्रतिमाएं नगरों के प्रमुख चौराहों पर लगवानी ही चाहिए, ताकि शादी के प्रति और लोगों के विचारों में भी परिवर्तन आ सके. शादी के नाम पर जो तूफान खड़ा हो जाता है, वह रफादफा हो जाए.

माफ करें, मैं जरा विषय से अलग हट गया था, बात मियांबीवी के आसपास घूम रही थी, काजी तक पहुंचने में तो काफी समय लगेगा. मुझे तो मियांबीवी के राजी होने पर ही आपत्ति है और हमेशा रहेगी. भला शेरनी के साथ कभी बकरा राजी से रह सकता है?

मगर जब बात चल ही पड़ी है तो इस मुहावरे की बैसाखी पकड़ कर कुछ और तथ्यों पर भी विचार कर ही लें. सोचिए, अगर मियांबीवी राजी भी हैं तो इस में दालभात में मूसलचंद की तरह काजी क्यों टपकें? यह तो उन की शान में गुस्ताखी होगी.

जरा और गहराई से सोचें तो देखें कि अगर खुश मियांबीवी के बीच का[जी] जी जम जाएं तो उन की बांछें खि[ल] जाएंगी. उन्हीं ने तो उन्हें मियांबी[वी] बनने का गौरव दिया था. पर अगर क[हीं] वे राजी न हुए तो काजीजी का बीच [में] घुसना तो दूर उन की सूरत तक देखना वे लोग गवारा न करेंगे.

इसी मुहावरे में से एक और सवा[ल] उभरता है. ठीक वैसे ही जै[से] कभीकभी महबूबा के साथ उस का भा[ई] आ खड़ा होता है. आप जरा अप[ने] दिमाग पर जोर डाल कर देखिए, अग[र] मियांबीवी राजी हैं तो उस वक्त का[जी] सिवा दालभात में मूसलचंद बनने [के] करेगा क्या?

मगर सवाल यह भी जोरदार है [कि] यदि मियांबीवी राजी नहीं हैं तो [भी] काजी क्या कर लेगा. मेरा तो खयाल [है] काजी को ऐसी जगह जाना ही नहीं

चाहिए क्योंकि खतरा काफी ऐसे ज करेगा काजी राजी जाएं.

अ

वे लो काजी इस स की ब तो भ आएग आएग गया कुछ राजी
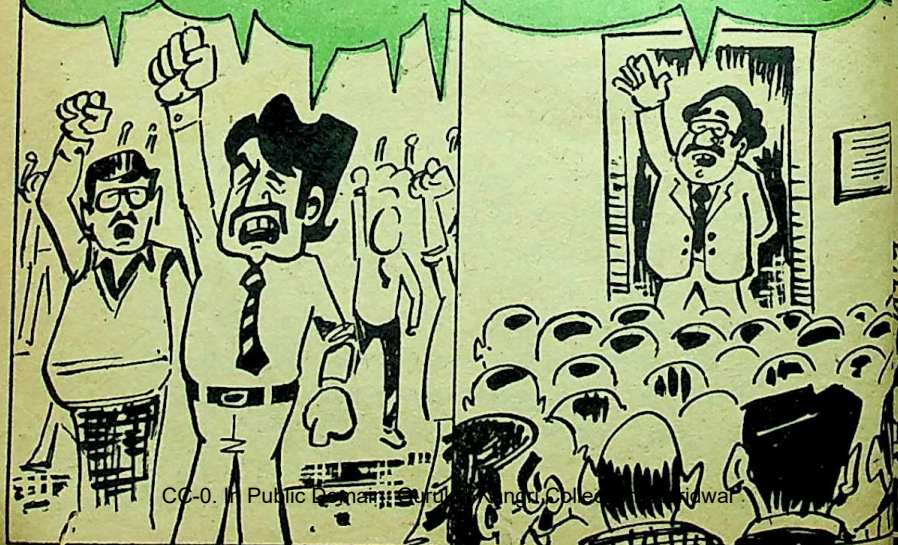
चाहिए, जहां मियांबीवी राजी नहीं हैं, क्योंकि वहां जाने पर तो खतरा ही खतरा है. समझदार को तो इशारा ही काफी है. अगर काजी समझदार है तो ऐसे जोड़े से भूल कर भी मुलाकात नहीं करेगा. नेक सलाह तो यही है कि अगर काजी साहब अपनी खुद की बीवी से भी राजी न हों तो भी किसी ऐसी जगह न जाएं.

अगर मियांबीवी के झगड़े में काजीजी कहीं सचमुच फंस गए तो वे लोग अपना झगड़ा बंद कर के पहले काजीजी पर ही टूट पड़ेंगे, क्योंकि आखिर इस सारे झगड़े की मूल जड़ वही हैं. दिल की बरबादी का मंजर नजर के सामने हो तो भला किस आदमी को गुस्सा नहीं आएगा? खास तौर से उसे बहुत ही आएगा जो बीवी के झगड़ों से तंग आ गया हो. इसी लिए काजीजी वहां पर कुछ भी नहीं करते जहां मियांबीवी राजी न हों.

कई बार काजीजी को दुबलेपन की बीमारी अवश्य हो जाती है. लेकिन यह उन का व्यक्तिगत मामला है. लोग समझते हैं कि शहर के अंदेशे से दुखी हैं, जब कि उन्हें शहर का रत्ती भर भी गम नहीं होता. इस मुहावरे में फिर भी सचाई का कुछ अंश जरूर नजर आता है. लगता है किसी नौजवान दिलजले पति ने अपनी पत्नी से तंग आ कर काजी साहब को परेशान किया होगा, उन की दाढ़ी नोचने को तैयार हो गया होगा. और जाहिर है कि दाढ़ी नुचवाना काफी तकलीफदेय होता है. इस चिंता में शायद काजीजी दुबले हुए होंगे.

इतना हम कह सकते हैं कि इन मुहावरों से काजी का संपूर्ण इतिहास साफ हो जाता है. कभीकभी सोचता हूं, अगर काजी नहीं होता तो क्या दुनिया में सब कुंआरे ही मर जाते? नहीं, साहब, नहीं. काजी तो मुफ्त में बदनाम हैं, लोग तो तब भी मियांबीवी बनने की कांटों भरी राह पर जरूर जाते. ●

कीमतें कम करने के लिए :

• सरकारी खर्च कम हो
• करों में कमी हो

बढ़ती हुई कीमतों की मूल वजह (और प्रायः एकमात्र) सरकार द्वारा आवश्यकता से ज्यादा खर्च किया जाना (करों व ऋणों से प्राप्त आय की तुलना में ज्यादा व्यय) और उस घाटे को पूरा करने के लिए नए करेंसी नोट छापना तथा माल व सेवाओं पर नएनए कर थोपना है.

हर नया नोट, हर नया कर माल व सेवाओं की कीमत में तुरंत वृद्धि कर देता है, जिस की वजह से सरकारी खर्च में और अधिक वृद्धि आवश्यक हो जाती है. इस वृद्धि की भरपाई के लिए फिर नए नोट छपते हैं, फिर नए कर लगते हैं और इस से कीमतें लगातार बढ़ती जाती हैं.

राजनीतिबाज बढ़ती हुई कीमतों का सारा दोष उत्पादकों व व्यापारियों के जिम्मे मढ़ कर आम लोगों को धोखा देने की कोशिश करता है, यह अच्छी तरह से जानते हुए भी कि करों द्वारा बढ़ी लागत उत्पादक और व्यापारी अपनी जेब से पूरी नहीं कर सकते. उन्हें चीजों के दाम बढ़ाने ही पड़ते हैं. आम लोगों के हाथ में अतिरिक्त धन आने से भी वस्तुओं की मांग ज्यादा बढ़ जाती है जिस से कीमतें भी और बढ़ जाती हैं.

इस के साथ ही राजनीतिबाजों की अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए, अपनी पार्टियों को चलाने के लिए और चुनाव लड़ने के लिए काले धन की मांग भी जुड़ जाती है. यह रकम सिर्फ माल व सेवाओं की कीमत से ही प्राप्त हो सकती है. इस प्रकार कीमतें और ज्यादा से ज्यादा बढ़ती जाती हैं.

कभीकभी यह कहा जाता है कि ज्यादा उत्पादन से कीमतें बढ़ना रोका जा सकता है. लेकिन अगर कहीं कोई ज्यादा उत्पादन होगा तो वह कच्चे माल और सेवाओं पर बढ़े हुए करों की वजह से ज्यादा कीमत पर ही होगा. और इसलिए बढ़े हुए उत्पादन से भी कीमतें कम नहीं होंगी.

कीमतें कम करने के लिए

• करों में कमी कीजिए.
• सरकारी खर्च कम कीजिए.

इस के अलावा और कोई रास्ता नहीं है.

शेष यादें...

खाली अनुबंध के
सागौन वन में,
एक पुरानी आहट के
अहाते पर,
कौन दस्तक दे गया?
देखते ही देखते
थमे हुए समय का
बज उठा
जलतरंग.
दूर हो तुम,
क्या इसलिए ही
आदिवासिन सी

घूम रही है शाम?
मेरे एकांत के कंधे पर
यादें अपनी भरपूर गंध लिए,
जुन्हाई क्षितिज से आ कर
टिक गई है.
आश्वासन देने को
मेरे पास भी, अब
शेष बचे हैं
मेरे निपट एकांत के
कुछ खाली क्षण,
और भयावह
दुर्दांत एहसास.

—सरस्वती माथुर

मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छायाकार : ल. र. ग्रोवर, रोहतक.

सवीर

क.
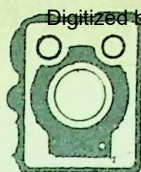
मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छायाकार : विमल सक्सेना, नई दिल्ली.

परिवर्तन समय की मांग है और यह मांग फिल्म जगत में हमेशा पूरी होती आई है. जैसेजैसे समय बदलता है, फिल्म जगत में भी बदलाव आता है. पुराने व स्थापित अभिनेताओं, अभिनेत्रियों, निर्देशकों, गायकों, संगीत आदि का स्थान लेने के लिए नए सामने आते हैं. हर नया वर्ष सितारों व प्रतिभाओं की संभावना [illegible] आने वाले

अनीता राज (ऊपर) फिल्मों के चुनाव में प्रारंभ से ही सतर्क. विजयता : (नीचे) 'लव स्टोरी' से शुरुआत अच्छी रही.

बहुत से नए अंकुर उभर कर सामने आएंगे. इन में से कुछ दर्शकों से परिचित हो चुके हैं, कुछ परिचय देने के लिए उपयुक्त अवसर की तलाश में हैं.

है. जिस में उस के अभिनय को काफी सराहा गया है. उस की आने वाली फिल्म हैं—'सवाल,' 'नरम गरम' आदि.

अभिनेत्री सुलक्षणा पंडित की छोटी बहन विजयता राजेंद्रकुमार की फिल्म 'लव स्टोरी' में राजेंद्रकुमार के पुत्र कुमार गौरव के साथ नायिका के रूप में आई है. अपने मधुर संगीत और दोनों नए किशोर कलाकारों के संयत किंतु सहज अभिनय के कारण यह फिल्म काफी पसंद की गई है.

ये सभी नए कलाकार अभिनय के क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं तो दूसरी ओर निर्देशन के क्षेत्र में भी कई प्रतिभाएं [illegible] नाम है—विनोद पांडे. लंदन में वर्षों बी. बी. सी. में कार्य करने के पश्चात 'एक बार फिर' जैसी साफसुथरी चौंका देने वाली फिल्म बना कर विनोद पांडे हिंदी फिल्मों के लिए जानेपहचाने बन गए हैं.

नए निर्देशकों में दूसरा नाम है—मेराज. नवीनता व उत्कृष्टता के दृष्टिकोण से मेराज ने फिल्म 'सितारा' बना कर अपनी निर्देशन प्रतिभा का परिचय दिया

रति अग्निहोत्री : दक्षिण भारतीय फिल्मों से हिंदी फिल्मों में प्रवेश और बिना कोई फिल्म प्रदर्शित हुए ही अधिकांश निर्माताओं से अनुबंधित.

है. इस से पहले मेराज फिल्म 'पलकों की छांव' का निर्देशन कर चुके हैं. गुलजार द्वारा निर्देशित अधिकांश फिल्मों में वह सहायक निर्देशक रहे हैं. इस समय वह फिल्म 'भरोसा' का निर्देशन कर रहे हैं.

उपर्युक्त दो नामों के अतिरिक्त गोविंद निहलानी ने भी निर्देशक के रूप में प्रवेश किया है. गोविंद निहलानी पहले छायाकार के रूप में श्याम बेनेगल के साथ वर्षों तक जुड़े रहे. हाल ही में बहुचर्चित व विवादास्पद फिल्म 'आक्रोश' बना कर गोविंद निहलानी ने निर्देशक के रूप में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है.

नए निर्देशकों में एक और नया नाम है—अमरीश सांगल. नए चेहरों के साथ अमरीश सांगल ने फिल्म 'आप तो ऐसे न थे' का निर्देशन किया है. इस समय वह कई फिल्में बना रहे हैं.

दक्षिण के निर्देशक विश्वनाथ ने भी पहली बार हिंदी में फिल्म 'सरगम' का निर्माण किया. इस फिल्म के बाद वह भी कई फिल्मों का निर्देशन कर रहे हैं.

नवोदित निर्देशकों में एक और नया नाम है—अमीन चौधरी. इस निर्देशक की फिल्म 'कशिश' हाल ही में प्रदर्शित हुई है.

निर्देशक विमल दत्त का नाम भी नए निर्देशकों के रूप में आता है. इन की फिल्म 'कस्तूरी' पिछले वर्ष प्रदर्शित हो चुकी है.

व्यावसायिक निर्देशकों के रूप में अभिनेता डैनी ने भी निर्देशन के क्षेत्र में फिल्म 'फिर वही रात' बना कर प्रवेश किया है. नए निर्देशकों में केवल शर्मा का नाम भी सामने आता है. उन्होंने हाल ही में फिल्म 'बदला और बलिदान' का निर्देशन किया है. नए निर्देशकों में अख्तर उल इमान 'लहू पुकारेगा' व कनक मिश्र 'सावन को आने दो' का नाम भी लिया जा सकता है.

राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित फिल्म 'स्पर्श' से नई महिला निर्देशक सई परांजपे ने प्रवेश किया. इस से पूर्व वह एक बाल फिल्म 'जादू का शंख' का निर्देशन कर चुकी हैं. इस समय वह 'चश्मे बद्दू नामक फिल्म का निर्देशन कर रही हैं.

उपर्युक्त नए नामों के अतिरिक्त ए और नया नाम है—श्यामलाल मधु श्यामलाल मधुप पहले एक लघु फि 'जहर' का निर्देशन कर चुके हैं. इस स वह दो फीचर फिल्मों—'अन्याय' व 'प्या और गुनाह' का निर्देशन कर रहे हैं.

योगेश सक्सेना—यह एक और न नाम है. 'प्लाट नं. 5' शीघ्र ही प्रदर्शि होने वाली उनकी पहली फिल्म है.

संगीत के क्षेत्र में

संगीत के क्षेत्र में जो नए अंकुर साम आए हैं, वे हैं—राम लक्ष्मण 'तराना' राजतिलक 'सावन को आने दो.'

नए संगीतकार के रूप में वेदपा नामक प्रतिभा भी सामने आई है. फि 'ओ बेवफा' में इन्होंने अच्छी धुनें दी एक और नया नाम है—के. बाबूज इन्होंने 'जाएं तो जाएं कहां' फिल्म में धु दी हैं. इन के अतिरिक्त सुलक्षणा पंडि का भाई जतिन व हेमलता का भाई संगीत के क्षेत्र में आ रहे हैं.

नए स्वरों में शिवांगी कोल्हापु अमितकुमार, सुरेश वाडेकर, चित्रा आ का नाम भी सामने आता है. अमितकुमा किशोरकुमार का लड़का है और अ पिता की शैली में ही गाता है. इस 'लव स्टोरी' के गीत काफी पसंद किए हैं. लेखकों के रूप में एक नया नाम आ है—शब्दकुमार. बहुचर्चित फिल्म 'इंसा का तराजू' की कथा, पटकथा व सं लिख कर इन्होंने अपनी प्रतिभा का सिक्क जमा लिया है.

ये सभी प्रतिभाएं फिल्मों को कौन दिशा देंगी, यह तो समय ही बताए लेकिन इन में से अधिकांश प्रतिभाएं आ वाले कल का प्रतिबिंब हैं, इस बात इनकार नहीं किया जा सकता. इन प्रवेश से फिल्मों में एक नया मोड़ आए यह निश्चित है.

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्त्वपूर्ण होती है, लेखक का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दिया जा रहा है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इस में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 50 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार	: 200 रुपए
द्वितीय पुरस्कार	: 100 रुपए
तृतीय पुरस्कार	: 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.

इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे.

इस के लिए 35 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,

नई दिल्ली-110055.

अवध की बेगम

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के प्रतीक्षालय में किस इंतजार में?
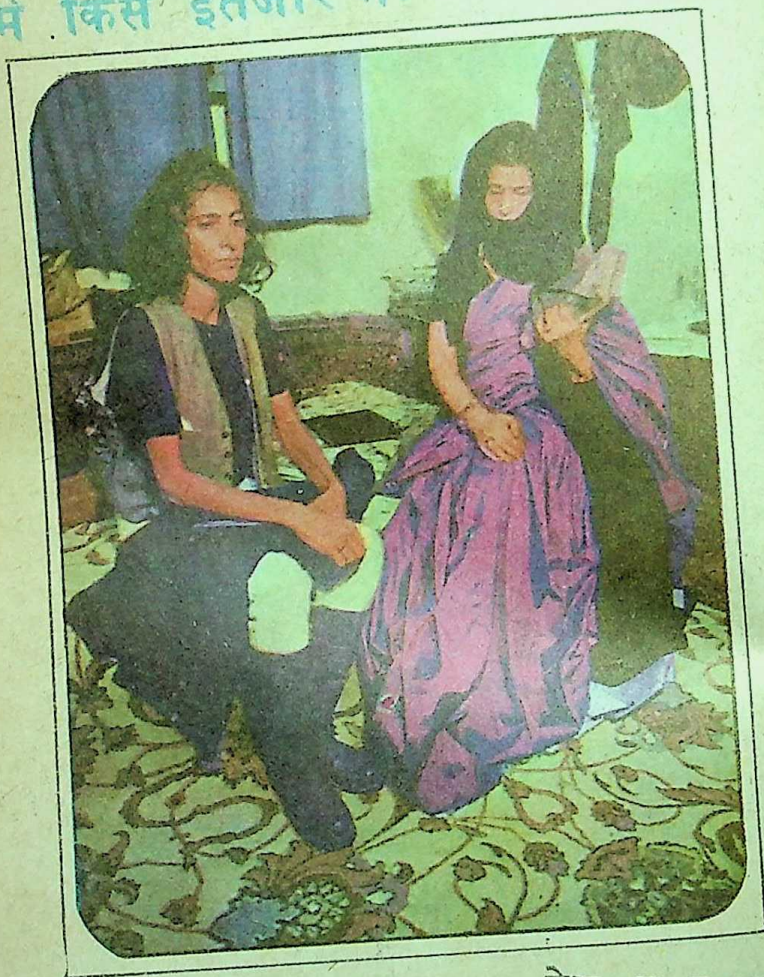
लेख ● च. व. कृष्णमूर्ति

"ऐसी यादों से मेरा दिल लंबे समय तक भरा रहे. ऐसे गुलदस्ते की तरह जिस में गुलाब का अर्क निकाला गया हो. तुम गुलदस्ते को चाहो तो तोड़ सकते हो. लेकिन गुलाब की खुशबू चारों ओर तैरती रहेगी."

ये पंक्तियां टामस मूर की 'फेयरवे बट ह्वेनएवर' शीर्षक कविता की [...] अपने को अवध के नवाब वाजिद अ[...] शाह की अंतिम उत्तराधिकारी सम[...] वाली बेगम ने कुछ इसी तरह से अ[...] गिलाशिकवे रखे. बेगम विलायत म[...]

अपने को अवध के नवाब वाजिद अली शाह की अंतिम उत्तराधिकारी बताने वाली बेगम विलायत महल पिछले कई वर्षों से नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के प्रतीक्षालय में डेरा डाले हुए हैं. आखिर सरकार उन की ओर ध्यान दे कर उन्हें इस खानाबदोस जिंदगी से निजात क्यों नहीं दिला रही?

बेगम विलायत महल, शहजादा अली रजा और शहजादी सकीना अपने नौकर-चाकरों के साथ : प्रतीक्षालय में बैठेबैठे सरकार के सही निर्णय की प्रतीक्षा.

(लखनऊ विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उप कुलपति इयायत हुसैन की विधवा) ने पिछले छः वर्षों से नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के द्वितीय श्रेणी के प्रतीक्षालय के दमघोंटू वातावरण में रहना ज्यादा अच्छा समझा है.

बेगम अपने को अवध के आखिरी नवाब वाजिद अली शाह की बेगम हजरत महल की परपोती बताती हैं. उन के साथ शहजादी सकीना और शहजादा अली रजा भी हैं तथा उन के चारों ओर दरजनों टूटीफूटी चीजें बिखरी पड़ी हैं. उन के 'शाही दरबार' में चार कंगले हैं जो शाही घराने की देखभाल करते हैं. ये नौकर बिहार के हैं.

"भारत हमारी मातृभूमि है. हम इसे नहीं छोड़ेंगे. हम क्यों छोड़ें?" शहजादी ने गर्व से कहा. यह पूछने पर कि वे अपने को शहजादी और शहजादा क्यों कहते हैं, जवाब मिला, "हम भारतीय हैं और हमेशा भारतीय पद्धति पर ही चलते रहे. क्या आप जानते हैं कि महान वाजिद अली शाह और बेगम हजरत महल में कोई भेदभाव नहीं था. नवाब ने अंगरेजों

अवध की बेगम के खिलाफ युद्ध किया और 1882 में कलकत्ता की जेल में ही उन की मृत्यु हुई."

उन्नीस वर्षीया शहजादी ने बेगम की बातों में हमेशा हिस्सा लिया और उन की व्याख्यां ही की. वे दक्षिण भारतीयों का सम्मान करते हैं. उस ने कहा, "हम आप पर आप की निष्पक्षता के कारण विश्वास करते हैं. हमें बहुत गलत समझा गया है तथा हमारे बारे में तरहतरह का प्रचार किया गया है कि हम लोग गलत किस्म का काम कर रहे हैं." इस में कोई शक नहीं कि उन्होंने इस प्रतिनिधि के साथ बहुत अच्छा सलूक किया.

पहले पाकिस्तान क्यों गए थे?

"आप लोग बंटवारे के बाद पाकिस्तान क्यों गए?" मैं ने पूछा. हालांकि यह स्पष्ट करना उस के लिए कठिन था, लेकिन उस ने जवाब दिया, "हमारे शाही घराने के कुछ जेवरात और सामान पाकिस्तान में भी है. हम उसे लेने गए थे, वहां रहने नहीं."

यह सच है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने विक्टोरिया पार्क का नाम बदल कर बेगम हजरत महल पार्क रख दिया है. अखिल भारतीय शिया सम्मेलन ने दिसंबर, 1977 में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल को एक पत्र लिख कर इस की सराहना की थी और लिखा था, "आप की जानकारी में यह लाने की जरूरत नहीं है कि बेगम हजरत महल की परपोती बेगम विलायत महल को उन के मानसम्मान के अनुकूल रहने का एक स्थान चाहिए."

उन्होंने मुझे बताया कि पाकिस्तान के वर्तमान विदेश मंत्री आगा शाही और हमारे देश के पंत (उन का इशारा शायद भूतपूर्व गृह मंत्री गोविंद वल्लभ पंत की ओर था) उन के जेवरात और अन्य सामान वापस दिलाने की कोशिश कर रहे थे. बाद में क्या हुआ यह स्पष्ट नहीं है और न ही शहजादी इस बारे में कुछ बता सकी.

रेलवे प्रतीक्षालय में आश्रय

लखनऊ और दिल्ली के बीच चक्कर काटने वाले 'शाही' व्यक्तियों के पास रहने के लिए नई दिल्ली के रेलवे प्लेटफार्म के अलावा और कोई चारा नहीं था, बाद में वे द्वितीय श्रेणी के प्रतीक्षालय में चले गए. आम लोगों के लिए यह परेशानी का कारण है लेकिन सरकार ने इस के लिए किया क्या है? प्रतीक्षालय में रहने वाली महिला के अनुसार पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उन की सहायता की और श्रीनगर में एक मकान दिलवाया.

उन का कहना था कि शायद अध्ययन और शाही लोगों के वास्ते कुछ करने के लिए श्री नेहरू कुछ ऐतिहासिक दस्तावेज भी ले गए. उन्हें इस बात का दुख है कि सरकार के नौकरशाहों ने भूतपूर्व प्रधान मंत्री की इच्छाओं के अनुसार काम नहीं किया.

उन्होंने 1976 के गृह मंत्रालय के एक अफसर का उल्लेख किया जिस ने कहा था, "हम मुगलकाल में हुए सीसगंज की घटना का बदला लेंगे." हम इस दुर्भाग्यपूर्ण और तथ्यहीन आरोप को भी खयाल नहीं करेंगे. हम यही चाहते हैं कि सरकार ने अलवर, जयपुर, जम्मू और कशमीर तथा अन्य राजघरानों के लिए जो किया वही हमारे लिए भी करे. उन्हें अच्छे महल और काफी ऊंचा मासिक भत्ता दिया गया है. क्या ऐसे परिवार के लिए, जिस की परदादी ने विदेशी शासन से निजात दिलाने के लिए संघर्ष किया हो, वही न्याय नहीं हो सकता है?" उन्होंने पूछा.

शहजादी ने सगर्व बताया कि बेगम विलायत महल की मां और अवध के आखिरी शासक वाजिद अली शाह की बेटी शहजादी अलमाउ महल ने नेपाल में निर्वासित जीवन बिताया. उन्होंने भी
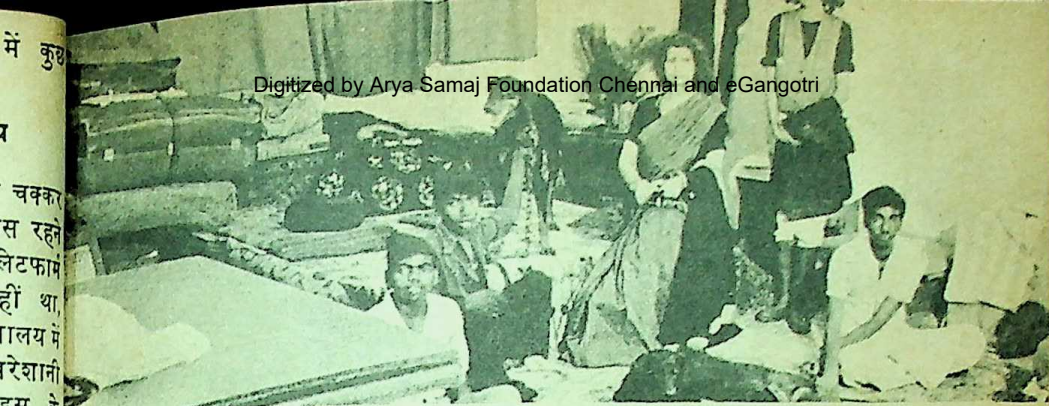
बेगम और उन के दरबारी : 'निर्वासित राज्य' की स्थापना का इंतजार है.

ब्रिटिश सरकार से कोई प्रिवी पर्स स्वीकार नहीं किया.

जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें श्रीनगर में जो घर दिलाया था वह 1951 में जल कर खाक हो गया और लाखों रुपए का नुकसान हो गया. उस समय जी. एम. सादिक की सरकार थी, जिस ने उन के लिए कुछ नहीं किया. महिला को जम्मू कशमीर सरकार के रवैए पर बहुत दुख है.

विषम परिस्थितियों के खिलाफ संघर्ष करने में अपने महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेजों को बेचने के बाद उन के पास 'काफी संपत्ति' बची थी. लेकिन उन्होंने रेलवे स्टेशन के 'दमघोंटू' वातावरण में रहने का फैसला किया जिस से आनेजाने वाले यात्रियों और रेलवे अधिकारियों को काफी कठिनाई होती है. पर वे स्टेशन से बाहर नहीं जाएंगी क्योंकि उन का विचार है कि और कहीं उन के जीवन को खतरा हो सकता है.

समझा जाता है कि भूतपूर्व गृह मंत्री ब्रह्मानंद रेड्डी ने अपने कार्यालय में 'हर हाइनेसों' के आने पर उन्हें मंत्रिमंडल के निर्णय से अवगत करा दिया था. निर्णय कुछ भत्ते के अलावा लखनऊ और दिल्ली में मकान और बच्चों को शिक्षा की सुविधा देने के बारे में था. यह निर्णय 1976 में कभी हुआ था लेकिन ऐसा लगता है कि उस से कुछ हुआ नहीं.

बेगम ने नेपाल में शरण ली

फिर उस महिला ने नेपाल में जा कर शरण ली. नेपाल के महाराजा को एक पत्र में उन्होंने लिखा, "प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी और अन्यों का यह असम्मान जनक प्रस्ताव...उन के पास अंतर आत्मा नहीं है..." प्रस्ताव से उन का मतलब छोटे घरों और कम भत्ते से था.

जनता सरकार ने उन के लिए लखनऊ में एक घर दिया लेकिन अवध घराने के 'स्तर और बलिदान' की तुलना में वह नहीं के बराबर था. इसलिए उसे अस्वीकार कर दिया गया. उन्हें इस बात का दुख है कि शाही इमाम और हेमवतीनंदन बहुगुणा भी, जो अल्पसंख्यकों के नेता बनते हैं, बेगम की मदद नहीं कर सके.

शहजादी ने कहा, "शाही इमाम चुनाव में बेगम की मदद चाहते थे. लेकिन उन्होंने नहीं की." शहजादी के अनुसार बहुगुणा केवल उन्हीं के पास जाते हैं जो उन्हें वोट दिला सकते हैं. शहजादी ने कहा, "बहुगुणा केवल महत्त्वाकांक्षा थे भाईबंद हैं, उन के नहीं जो अवधी घराने से ताल्लुक रखते हैं. हालांकि वह अकसर यह दावा और दिखावा करते हैं."

एक बार बेगम ने तो यहां तक कहा कि अंगरेजों को भारत छोड़ते वक्त अवध

अप्रैल (द्वितीय) एवं
मई (प्रथम) 1981

इस बार छुट्टियां बिताने की समस्या आप के सामने नहीं रहेगी. आप कहीं भी जाना चाहें---शिमला, मसूरी, कश्मीर, नैनीताल, डलहौजी जैसे पर्वतीय स्थलों पर या फिर दक्षिण भारत के भव्य मंदिर देखना चाहें, गोवा के मनोरम तटों का आनंद लूटना चाहें या कलकत्ता जैसे महानगर की सैर करना चाहें---सरिता के पर्यटन विशेषांकों में देश भर के पर्यटन स्थलों पर पहुंचने, वहां रहने, खानेपीने के साधनों और सुविधाओं की पूरी जानकारी अनेक बहुरंगी चित्रों के साथ मिलेगी. एक पूरी पत्रिका जितनी पर्यटन संबंधी अतिरिक्त सामग्री.

इस के अतिरिक्त पूरे परिवार का मनोरंजन करने वाली 8 कहानियां, अन्य कई विशेष लेख, मर्मस्पर्शी कविताएं तथा सभी स्थायी स्तंभ.

हो गया न दोहरा लाभ.

मूल्य वही 3.00 रु.

घराने की सारी संपत्ति लौटा देनी चाहिए थी. उन का दावा है कि महारानी विक्टोरिया को अवध के शाही घराने से सहानुभूति थी.

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अलावा बेगम ने दिल्ली के मजिस्ट्रेट की अदालत में, जहां रेलवे ने अनधिकृत रूप से प्रतीक्षालय पर कब्जा करने का मुकदमा बेगम के खिलाफ दायर कर रखा है, अवध की संपत्ति के दावों का उल्लेख किया. "इस बात के प्रमाण हैं कि अवध हाउस, रोशनुद्दौला (अदालत), बारादरी, छतर मंजिल, बेगम कोठी, शीश महल, मोती महल... आदि 12 स्थान अवध के हैं." अपना असंतोष व्यक्त करते हुए बेगम ने कहा, "यह बहुत ही गलत बात है कि शीश महल का एक भाग बहुगुणा हाल कहा जाता है."

रेलवे की काररवाई

रेलवे ने बेगम को वहां से हटाने के लिए जो कुछ किया उस की एक अलग कहानी है. रेलवे ने अपनी सार्वजनिक जिम्मेदारी का निर्वाह पूरी तरह से नहीं किया. रेलवे सूत्रों के अनुसार अधिकारी केवल मोटी फाइल बनाने में ही संतुष्ट हैं. रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष ने कई बार बेगम को बाहर निकालने का आदेश दिया. केवल फाइल ऊपर से नीचे तक आई और इस के अलावा कुछ नहीं हुआ. आखिर में बेगम के मुंह से भलाबुरा सुनने के लिए एक टिकट कलक्टर ही बचा. बहुत से यात्रियों ने शहजादी और बेगम के बारे में स्टेशन पर रेल अधिकारियों से शिकायत की है.

बेचारा स्टेशन अधीक्षक केवल उच्च अधिकारियों को ही इस मामले की सूचना दे सका. बताया जाता है कि रेलवे बोर्ड ने कांग्रेस, जनता और लोक दल सरकारों के शासन में गृह मंत्रालय को लगातार लिखा. लेकिन किसी भी सरकार के पास शासन के लिए समय नहीं था.

एक बार श्रीलंका से वापस लौटते वक्त तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई नई दिल्ली स्टेशन के ओवर ब्रिज से गुजरे और उन्होंने परिवार की स्थिति को देखा. जब उन्हें इस परिवार के बारे में बताया गया तो श्री देसाई ने कहा बताते हैं, "इस परिवार को कुछ जमीन दे कर बसाया क्यों नहीं जाता?" लेकिन रेल अधिकारियों को उस सुझाव पर स्वयं कुछ नहीं करना था. ऐसा समझा जाता है कि भूतपूर्व आवास व निर्माण मंत्री श्री सिकंदर बख्त ने उस परिवार से बातचीत की और उस की भावनाओं को समझने की कोशिश की.

जब श्री सिकंदर बख्त से फोन पर संपर्क किया गया तो उन्होंने इस बात पर दुख व्यक्त किया कि बेगम अपने शाही घराने का कोई ठोस 'सबूत' नहीं पेश कर सकीं. यह केवल एक बनावटी तर्क लगता है क्योंकि जनता सरकार ने बेगम को लखनऊ में अलीगंज में एक मकान दिया था जिसे बेगम ने बाद में किसी आधार पर अस्वीकार कर दिया.

क्या उन्हें पुलिस निकाल सकती है? नहीं, रेल अधिकारियों का कहना है कि पुलिस इसे एक 'नाजुक' मामला मानती है. यह एक अजीब किंतु उचित तर्क है. रेलवे मजिस्ट्रेट ने कहा बताते हैं, "मैं उन पर केवल 50 रुपए जुरमाना कर सकता हूं, इस से अधिक और कुछ नहीं."

ऐसा लगता है यह मामला किसी से भी संबंधित नहीं है. इस में पुलिस कुछ नहीं करेगी, रेल अधिकारी भी असहाय हैं और गृह मंत्रालय चुप्पी साधे हुए हैं. 1978 में रेलवे पुलिस ने अपने खर्चे पर पूरे परिवार को लखनऊ भेजा लेकिन अगले दिन वे लोग फिर नई दिल्ली वापस आ गए.

1978 के शुरू में बेगम को लखनऊ के हजरत महल का एक हिस्सा देने की पेशकश की गई जिसे उन्होंने यह कह कर अस्वीकार कर दिया कि उन्हें उन

के स्तर के अनुसार पूरा महल तथा भत्ता मिलना चाहिए तथा सरकार को महल की साजसज्जा भी करवानी चाहिए.

नई दिल्ली स्टेशन के खूबसूरत बगीचे में लोमडियों के बिल की तरह कुत्तों के घर बने हुए हैं तथा पहाड़गंज में यदाकदा आने वाले उसे रात में इस्तेमाल करते हैं. चारों ओर बदबू फैल जाती है लेकिन बेगम के लिए वह शालीमार गार्डन की तरह है.

इस प्रतिनिधि ने एक आदमी को एव खाकी वरदी वाले (मैं उसे पहचान नहीं सका) आदमी के साथ घास पर आराम से लेटे हुए औरतों के बारे में भद्दी बातें करते और रात की गतिविधियों के लिए 'भगवान की देन' बताते हुए सुना.

बगीचे के एक कर्मचारी ने मुझ से कहा कि इस की चारदीवारी बहुत नीची है तथा पहाड़गंज के शरारती लोग बड़ी आसानी से भाग जाते हैं. उन्हें ललकारने की वह जुर्रत नहीं करता क्योंकि इस से उस का जीवन खतरे में पड़ जाएगा.

एक रिक्शा वाले लड़के ने, जो बगीचे में आवारागर्दी कर रहा था, कहा, "पहले इन कुत्तों और आदमियों को बाहर निकालो. तुम मुझ से पूछने वाले कौन होते हो?" लेकिन जब मैं ने उसे धमकी दी तो वह बगीचे से खिसक गया. उसी समय रेलवे सुरक्षा बल के भी दो जवान, इस से पहले कि बगीचे में आने वालों पर नियंत्रण रखने के बारे में मैं पूछ पाता, बगीचे से खिसकते नजर आए. रेलवे सुरक्षा बल को कुछ नहीं कहा जा सकता क्योंकि वे लोग यार्ड और गाड़ियों में खूब ऐश करते हैं. अकसर इस बगीचे के इर्दगिर्द सुरक्षा बल के जवान नहीं दिखाई देते. ये बगीचे सार्वजनिक पार्क हैं, रेलवे की निजी संपत्ति नहीं. सुरक्षा बल के कुछ जवान बदमाशों के साथ मिल कर 'रात में आनंद' लूटते हैं.

कुछ दिनों पहले इस किस्से का दूसरा हिस्सा पता चला. रेलवे के वर्तमान क्षेत्रीय अधिकारी पुराने अधिकारि[illegible] की ही तरह दावा करते हैं कि उन्हों[illegible] शाही घुसपैठियों को निकालने के लि[illegible] गृह मंत्रालय का निर्देश प्राप्त किया [illegible] (आदेश नहीं, ऐसा लगता है). "[illegible] दिल्ली रेलवे पुलिस की मदद शाही घु[illegible]पैठियों को नई दिल्ली स्टेशन से निकाल[illegible] के लिए ले सकते हैं." किसी भी माम[illegible] में सार्वजनिक स्थान से भावनाओं [illegible] नहीं जोड़ना चाहिए. आवश्यकता [illegible] अक्लमंदी की और पुलिस को अपन[illegible] जिम्मेदारियों से बचना नहीं चाहिए.

बेगम के इरादे

बेगम के इरादों के बारे में पूछे जा[illegible] पर शहजादी ने बताया, "हम इस अमान[illegible]वीय और दमघोंटू वातावरण में न[illegible] रहना चाहते. हम यहां से जाना चाह[illegible] हैं. हमारी मांग है कि हमें लखनऊ [illegible] मोती महल और उचित भत्ते दिए जाएं."

सामंतवाद के खिलाफ भी कोई त[illegible] दे सकता है लेकिन इस परिवार को[illegible] जिस की देशभक्ति और बलिदान [illegible] उत्तर प्रदेश की सरकार ने भी स्वीकार[illegible] किया है, अन्य राजाओं की ही तर[illegible] ससम्मान उस का हिस्सा मिलना चाहिए. उत्तर प्रदेश के कुछ नवनिर्वाचित विधा[illegible]यकों ने भी ऐसे ही विचार व्यक्त कि[illegible] हैं. ऐसा लगता है कि बेगम और उ[illegible] के दरबारी 'निर्वासित राज्य' की स्थापना कर चुके हैं. कुछ रेल अधिकारियों [illegible] यह बात बढ़ाचढ़ा कर कही है कि उन्हों[illegible] याचिका दी है. आखिर उन के दावे [illegible] अनुसार उन की देशभक्ति को स्वीका[illegible] क्यों नहीं किया जाता? आवश्यकता [illegible] समझबूझ की है और कानून के हा[illegible] संवेदनशीलता का सहारा नहीं ले सकते. यात्रियों को रेलवे स्टेशन पर किसी अन्य चीज की तरह आराम की भी सुविधा मिलनी चाहिए. यही सार्वजनिक उत्त[illegible] दायित्व है.

अमरीश पुरी : खलनायकी में रुचि.

खलनायकी में रुचि

बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो खलनायक बनने के लिए अभिनय का रास्ता अपनाते हैं. ऐसा ही एक कलाकार है अमरीश पुरी, जो प्रसिद्ध अभिनेता मदन पुरी का छोटा भाई है और नाटकों में अच्छी खासी सफलता पाने के बाद फिल्मों में भी वह अपनी अच्छी मांग बना पाने में सफल हो गया है. उस का कहना है, "शुरू से ही मुझे शैतान का प्रतीक बनने में दिलचस्पी रही है. मैं हर रूप में शैतान को जी लेना चाहता हूं. मैं चाहता हूं कि लोग जानें कि शैतान क्या है, वह कैसे उभर सकता है, कैसे एक मुसकान के पीछे शैतान छिप जाता है."

दाढ़ी की सफलता

हिंदी फिल्मों में दाढ़ी वाला (असली दाढ़ी वाला) कोई कलाकार सफल हुआ हो, इस तरह की मिसाल देखने में नहीं आती. पिछले कुछ समय में कबीर बेदी असफलता से हताश हो कर हालीवुड चला गया और दिनेश ठाकुर ने अभिनय छोड़ कर कहानी लिखने का काम शुरू

कर दिया. अब लगता है कि मैकमोहन इस परिपाटी को जल्दी ही तोड़ देगा. छोटीछोटी भूमिकाएं निभाने के बाद अब मैकमोहन को ऐसी फिल्में मिलने लगी हैं जो उस की एक अलग पहचान बना सकती हैं. खलनायकी के क्षेत्र में ही सही, यदि मैकमोहन फिल्मों में सफल हो जाता है तो वह हिंदी फिल्मों का दाढ़ी वाला पहला सफल कलाकार होगा.

परीक्षित साहनी की मुसीबत

परीक्षित से अजय बने और फिर अजय से परीक्षित बनने वाले और मास्को से निर्देशन का डिप्लोमा लेने के बाद भी एक्टिंग में ही पांव जमाने की कोशिश करने वाले परीक्षित साहनी ने हाल ही में बताया, "मेरे साथ समस्या यह है कि लोग मेरे अभिनय की तुलना हमेशा मेरे पिता बलराज साहनी के अभिनय से करते हैं. सिर्फ इतना ही नहीं, इसी तुलना के आधार पर वे मेरी सफलताओं, असफलताओं की समीक्षा भी करते हैं."
लेकिन यह सारी मुसीबत तो परीक्षित ने खुद ही ओढ़ी हुई है. शुरू से ही अपने हावभाव में उस ने अपने पिता की नकल की है, इसलिए जाहिर है कि जब अभिनय की बात होगी तो परीक्षित की तुलना उस के पिता से ही की जाएगी.

पिता की छवि से अलग होने की कोशिश में परीक्षित लेखन के क्षेत्र में उतरा, लेकिन यहां भी पिता की उप[illegible] रोके हुए हैं बलराज साहनी अपने समय के जानेमाने लेखक रह चुके हैं.

परीक्षित साहनी : लोग मेरे अभिनय की तुलना मेरे पिता बलराज साहनी के अभिनय से करने लगे हैं.

हेमाधर्म जोड़ी कितनी सफल

'आसपास' की असफलता और धर्मेंद्र हेमा मालिनी की शादी की घटनाएं लगभग एक साथ हुईं. इस से यह धारणा बन गई है कि दोनों की शादी के बाद से दर्शकों में उन की छवि बिगड़ी है और एक दरजन सफल फिल्मों की यह जोड़ी दम तोड़ने लगी है. वैसे अभी भी आठदस फिल्में ऐसी बन रही हैं जिन में हेमा व धर्मेंद्र हैं. हाल ही में निर्माता सुदेश कुमार (पिछली फिल्में मन मंदिर
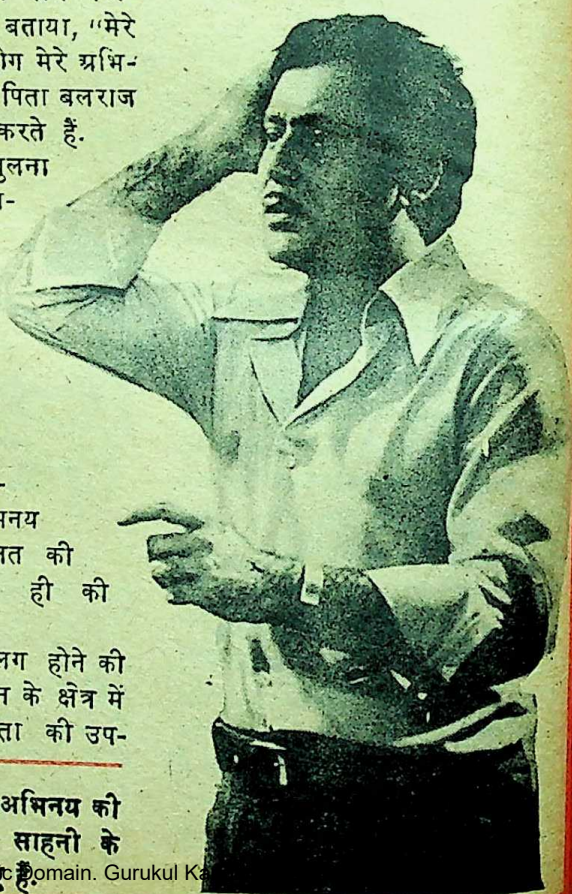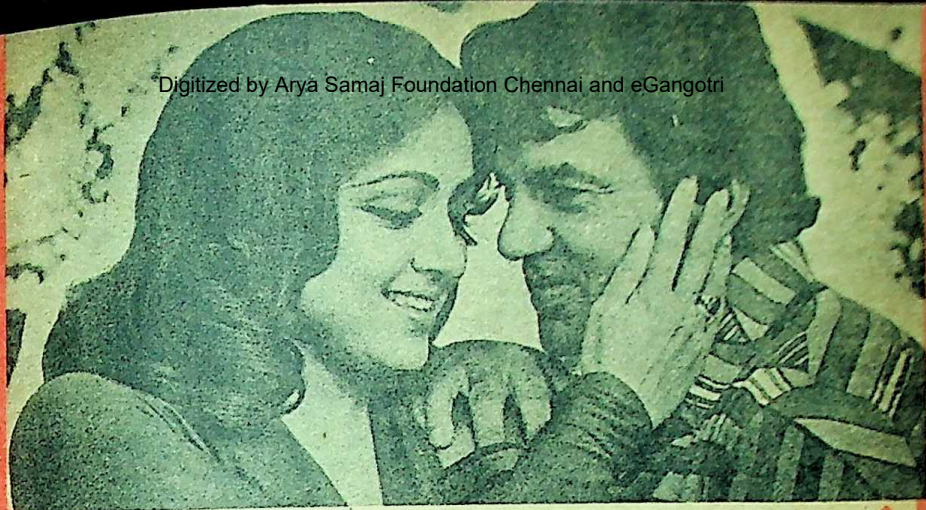
हेमा व धर्मेंद्र : अपनी घटती लोकप्रियता देख कर ही क्या दोनों ने अपना पारिश्रमिक कम कर दिया है?

उलझन, बदलते रिश्ते) ने दोनों को अपनी नई फिल्म 'जान हथेली पर' के लिए लिया है. उस का कहना है, "हेमा, धर्म जोड़ी अभी भी बाक्स आफिस पर टिकाऊ मानी जा रही है. लोग उन्हें पसंद करते हैं और मुझे विश्वास है कि जब तक मेरी फिल्म पूरी हो पाएगी, दोनों की लोकप्रियता यों ही बरकरार रहेगी."

कहा जाता है कि सुदेश ने दोनों को फिजूल ही अपनी फिल्म में नहीं लिया है और न ही बेवजह वह उन की तारीफ कर रहा है. अपनी घटती हुई लोकप्रियता को देख कर दोनों ने अपनी कीमत कम कर दी है और सुदेश को तो काफी छूट दे दी गई है.

भारतपाक सहयोग

मनोजकुमार की 'क्रांति' के प्रीमियर पर पाकिस्तान- का सर्वाधिक लोकप्रिय फिल्म कलाकार मुहम्मद अली भी भारत आया. उस ने कहा, "भारत और पाकिस्तान के बीच फिल्मों का आदान-प्रदान तो होना ही चाहिए. साथ ही दोनों देशों को मिल कर संयुक्त रूप से फिल्में भी बनानी चाहिए." ऐसा न हो पाने

पाकिस्तानी अभिनेता मुहम्मद अली : भारत और पाकिस्तान को मिल कर संयुक्त रूप से फिल्में बनानी चाहिए.

की कोई वजह तो वह साफसाफ नहीं बता सका, लेकिन उस की बातों से लगा कि पाकिस्तान का फिल्म उद्योग भारत के साथ इस तरह का सहयोग करने को तैयार है. लेकिन बाधा राजनीतिबाजों की तरफ से खड़ी होती है. ऐसे ही कुछ राजनीतिबाजों ने पिछले दिनों मुहम्मद अली को भारत का पिट्ठू घोषित कर दिया था.

वैसे अगर दोनों देशों के बीच में फिल्मी सहयोग कायम हुआ तो इस का सब से बड़ा फायदा पाकिस्तान को ही होगा. उसे अपनी फिल्मों के लिए एक बड़ा बाजार मिल जाएगा.

सफलता का नशा

'लव स्टोरी' की सफलता के बाद कुमार गौरव (फिल्म का नायक) ज्यादा बढ़चढ़ कर बोलने लगा है. उस ने कहा है, "अगर 'लव स्टोरी' में लोगों को कोई बात अच्छी लगी है तो इस की वजह सिर्फ यही हो सकती है कि हम ने फिल्म में कुछ न कुछ अच्छा किया होगा. सिर्फ इसलिए नहीं कि हम बड़ी फिल्मी हस्तियों से संबंधित हैं."

इसी कुमार गौरव ने फिल्म बनने के समय कहा था, "हमारी फिल्मी दुनिया में प्रतिभा की कद्र नहीं होती. यहां हर कलाकार किसी न किसी बैसाखी के सहारे टिका होता है."

'लव स्टोरी' के बाद वह अब जल्दी से निर्देशक बनने के सपने भी देखने लगा है.

कुमार गौरव : 'लव स्टोरी' की सफलता की वजह हमारा अभिनय है न कि हमारा फिल्मी हस्तियों का संबंधी होना.

सेंसर पर सेंसर

आम तौर पर यह माना जाता है कि एक बार फिल्म को सेंसर प्रमाणपत्र मिल जाने के बाद उसे दोबारा सेंसर नहीं किया जा सकता. लेकिन भारत में सब कुछ हो सकता है.

इधर हाल में 'प्यारा दुश्मन' के गाने 'हरी ओम हरी' व 'ज्वालामुखी' के गाने 'पान बीड़ी सिगरेट तंबाकू' पर सेंसर बोर्ड को कोई ऐतराज नहीं हुआ, लेकिन विविध भारती ने उन्हें अश्लील व धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ करने वाला बता कर उन पर प्रतिबंध लगा दिया है. ●

पिछले छः महीनों की फिल्में

निर्देशिका

उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए म. : मनोरंजक/देख लें नि. : निर्देशक
स. : समय काटिए/चलताऊ अ. : अपव्यय/समय की बरबादी मु. पा. : मुख्य पात्र

एग्रीमेंट : एक लड़की विदेश से उच्च शिक्षा प्राप्त कर के लौटती है और अपने पति को पत्नीव्रता के के रूप में घर पर रखती है, लेकिन बाद में अपनी शर्तों में उलझने लगती है. एक हास्य फिल्म. **नि. :** अनिल गांगुली, **मु. पा. :** रेखा, शैलेंद्रसिंह, उत्पल. **स.**

कुदरत : चौधरी जनकसिंह अपने माली की लड़की पारो को बलात्कार का शिकार बना कर हत्या कर देता है. उस लड़की का प्रेमी माधो भी पहाड़ से गिर कर मर जाता है. दूसरे जन्म में पारो अपने प्रेमी को पहचान लेती है और उस का प्रेमी माधो सबूत एकत्र कर के अपराधी को अदालत में पहुंचा देता है. **नि. :** चेतन आनंद, **मु. पा. :** राजकुमार, प्रिया, हेमा, राजेश खन्ना. **स.**

बुलंदी : एक प्रोफेसर को कुछ बदमाश अपने जाल में फंसाना चाहते हैं, लेकिन प्रोफेसर अंत में उन्हीं बदमाशों के लड़कों को सीधे रास्ते पर ला कर उन के खिलाफ खड़ा कर देता है. अधिक मारपीट, गोलीबारी और तस्करी के कारण फिल्म का उद्देश्य पक्ष कम हो जाता है. **नि. :** इस्माइल श्रोफ, **मु. पा. :** राजकुमार, किम, आशा पारिख. **स.**

मंगलसूत्र : मंगलसूत्र स्त्रियों के सुहाग का प्रतीक हो सकता है, लेकिन इस फिल्म में अंधविश्वास और अपशकुनों की घटनाएं भर कर एकदम अविश्वासनीय फिल्म बनाई है. फिल्म में गायत्री अपने पति को एक लड़की कामिनी की आत्मा के प्रकोप से बचाती है. **नि. :** बी. विजय. **मु. पा. :** रेखा, अनंत नाग, मदनपुरी, चांद उस्मानी. **अ.**

क्रोधी : क्रोध में मनुष्य अपना सब कुछ नष्ट कर बैठता है, लेकिन फिल्मों में क्रोधी सब से बड़ा तस्कर बन जाता है. अंत में यही तस्कर लाखों रुपए के कीमती मुकुट को बचाते हुए एक डाकू से मुठभेड़ में मारा जाता है. **नि. :** सुभाष घई, **मु. पा. :** धर्मेंद्र, शशि कपूर, जीनत, रंजीता, हेमा. **म.**

बरसात की एक रात : अंधेरी, बरसात की एक रात को खलनायक काली एक अंधी लड़की से बलात्कार की कोशिश करता है, लेकिन नायक उसे पकड़ लेता है. अचानक खलनायक अपने पिता की गोली का शिकार बन जाता है. **नि. :** शक्ति सामंत, **मु. पा. :** राखी, अमिताभ, अमजद. **अ.**

गहराई : एक सुखीसंपन्न परिवार की एक लड़की पर प्रेतात्मा का प्रकोप होता है. पहले डाक्टरों से चिकित्सा कराते हैं और फिर तांत्रिकों से झाड़फूंक करवाते हैं. भूतप्रेत और प्रेतात्माओं के प्रकोप के अंधविश्वासों से भरी फिल्म. **नि. :** अरुणा विकास, **मु. पा. :** पद्मिनी कोल्हापुरे, श्रीराम लागू, अनंत नाग. **अ.**

नाखुदा : एक मुसलिम व्यक्ति द्वारा एक हिंदू लड़के को पालपोस कर सुयोग्य बनाने तथा उसे बचाने के लिए अपने नालायक बेटे की हत्या कर देने की कहानी. सतही निर्देशन, कुछ कलाकारों के बेतुके अभिनय और घिसीपिटी कहानी की यह फिल्म निराश ही करती है. **नि. :** दिलीप नाइक, **मु. पा. :** कुलभूषण खरबंदा, राजकिरण, स्वरूप संपत. **अ.**

लव स्टोरी : विजय और राम की शत्रुता के कारण उन के बच्चे पिंकी और बंटी घर से भाग जाते हैं. बंटी और पिंकी एकदूसरे से प्रेम करते हैं और विवाह करना चाहते हैं. कुछ बदमाशों से मारपीट और दूसरी मुसीबतों के बाद राम को अपनी गलती अनुभव होती है और अंत में पिंकी और बंटी का विवाह हो जाता है. **नि. :** राहुल रवेल, **मु. पा. :** कुमार गौरव, विजयता, राजेंद्रकुमार, डैनी. **म.**

गेस्ट हाउस : गेस्ट हाउस में एक व्यक्ति की हत्या होती है. अपराधी लाश को एक जंगल में गाड़ देते हैं. एक अपराधी लाश का हाथ काट कर उस की अंगूठी उतार लेता है. बाद में वह कटा हुआ हाथ सब की हत्या करता है. **नि. :** श्याम व तुलसी रामसे, **मु. पा. :** पद्मिनी कपिला, विजयेंद्र, प्रेमनाथ. **अ.**

क्रांति : रामगढ़ रियासत पर अंगरेज अपनी चालों से अधिकार जमा कर गरीब जनता पर खूब अत्याचार करते हैं. उन के अत्याचार का शिकार सांगा और उस के बचपन में बिछुड़े दो बच्चे बड़े हो कर बदला लेते हैं. अंगरेज और रामगढ़ का राजा मारे जाते हैं. लोगों को मुक्ति मिलती है. **नि. :** मनोजकुमार, **मु. पा. :** हेमा, मनोज, दिलीपकुमार, परवीन बाबी. **स.**

आक्रोश : आदिवासी लोगों पर समाज के

ठेकेदार व कुछ राजनीतिबाजों के शोषण और अन्याय की क[illegible] की पत्नी की हत्या का मुकदमा चलता है. जब वह अपने पिता की चिता जलाने के लिए घर जाता है तो अपनी बहन की हत्या कर देता है. एक गरीब और असहाय व्यक्ति के आक्रोश की फिल्म. **नि. :** गोविंद निहलानी, **मु. पा. :** स्मिता, अमरीश पुरी, ओम पुरी, नसीरुद्दीन शाह. **स.**

ज्वालामुखी : एक अवैध बच्चे राजेश को उस की मां सविता से जन्म के तुरंत बाद अलग कर दिया जाता है. बड़े होने पर उसे पता चलता है तो वह मां को दोषी मान कर अपमानित करता है. लेकिन अंत में अपने दूसरे भाई विक्रम के लिए जान की बाजी लगा देता है. अधिक घटनाओं के कारण फिल्म किसी उद्देश्य में सफल नहीं हो पाती है. **नि. :** प्रकाश मेहरा, **मु. पा. :** शत्रु, रीना, प्राण, वहीदा, विनोद मेहरा. **अ.**

आसपास : एक धनी घर का लड़का और गरीब लड़की के प्यार की कहानी. लड़की अचानक उस लड़के के बहनोई की वासना का शिकार होती है और पहाड़ से कूद कर आत्महत्या कर लेती है. **नि. :** जे. ओमप्रकाश, **मु. पा. :** हेमा, धर्मेंद्र, प्रेम चोपड़ा. **स.**

हम पांच : जमींदार के अत्याचार से पीड़ित एक गांव की फिल्म, जिस में पांच नवयुवक मिल कर गांव वालों को जमींदार से मुक्ति दिलाते हैं. फिल्म में एक ऐसी नवयुवती भी है जो जमींदार की वासना का शिकार हो कर मानसिक संतुलन खो बैठी है. **नि. :** बापू, **मु. पा. :** मिथुन, शबाना, राज बब्बर. **म.**

नकसलवादी : नकसलवादी नवयुवकों द्वारा किए गए विद्रोह की फिल्म. कहानी के अभाव में निर्माता ने नकसलवाद के नाम पर किए गए हिंसात्मक आंदोलनों की घटनाएं जोड़ दी हैं. **नि. :** ख्वाजा अहमद अब्बास, **मु. पा. :** मिथुन चक्रवर्ती, स्मिता पाटिल, जलाल आगा. **अ.**

पतिता : एक गरीब लड़की जिसे अपने भाई को पालने के लिए वेश्यावृत्ति करनी पड़ती है. अंत में एक नवयुवक उसे अपना लेता है. पतिता को समाज में सम्मान दिलाने की फिल्म. **नि. :** एस. बी. ससि, **मु. पा. :** शोमा आनंद, मिथुन चक्रवर्ती, राजकिरण. **म.**

कन्हैया : एक अनाथ बच्चे के अनाथालय से भाग कर बंबई में चोर जेबकतरों के गिरोह में फंसने की फिल्म. अचानक पता चलता है कि लड़का किसी धनी व्यक्ति का धेवता है और मारपीट के बाद उसी घर में पहुंच जाता है. **नि. :** खालिद सामी, **मु. पा. :** अमजद, आशा सचदेव, नसीरुद्दीन. **अ.**

वक्त की दीवार : रणवीर गांव की लड़की से बलात्कार करता है और उस लड़की के दो [illegible] जाते हैं. बड़े होने पर दोनों भाई रणवीर से बदला लेते हैं. **नि. :** रवि टंडन, **मु. पा. :** अमजद, संजीव, जितेंद्र, सुलक्षणा, नीतू. **अ.**

जालिम : एक बदमाश द्वारा बड़े घर के नवयुवक व एक जज की लड़की को हत्या के षड्यंत्र में फंसा कर अपने जाल में फंसाने की कहानी. फिल्म देखने से लगता है कि निर्माता, निर्देशक जालिम का अर्थ भी नहीं जानते. **नि.:** बी. सुभाष, **मु. पा. :** लीना चंद्रावरकर, विनोद खन्ना, प्राण, मदन पुरी. **स.**

आप तो ऐसे न थे : अमीर और गरीब दो दोस्तों की कहानी. दोनों एक ही लड़की से प्रेम करते हैं. आपस में मारपीट होती है. तभी पता चलता है कि लड़की किसी तस्कर के इशारे पर अमीर लड़के से प्यार का नाटक कर रही है. तस्कर के अंत के साथ सब का मिलन. **नि. :** अंबरीष संगल, **मु. पा. :** राज बब्बर, दीपक पाराशर, रंजीता, ओम शिवपुरी. **स.**

कशिश : एक नवयुवक के विदेश जाने और वहां पर एक भारतीय लड़की के प्रेम में फंस जाने की कहानी. विदेश में रहने वाले एक बदमाश से मुठभेड़ और अंत में नायिका से विवाह कर के वापस आना. एक घिसीपिटी कहानी में हिंसा और मारपीट की पुरानी घटनाओं की फिल्म. **नि. :** अमीन चौधरी, **मु. पा. :** नवीन निश्चल, रीना राय, विनोद मेहरा, नरेंद्रनाथ. **अ.**

कस्तूरी : एक प्रोफेसर, एक वनस्पति विज्ञान की लेक्चरर युवती और जंगलों में रह कर अध्यापन करने वाले नवयुवक की आदिवासी लोगों के अंधविश्वास में घिर कर परेशान होने की कहानी. बीच में तीनों पात्रों में त्रिकोणात्मक प्रेम संघर्ष भी चलता है. **नि. :** विमल दत्त, **मु. पा. :** डा. श्रीराम लागू, नूतन, परीक्षित साहनी. **अ.**

शान : बड़े और अधिक कलाकारों की ऐसी फिल्म जिस की घटनाएं फिल्मों में अनेक बार दोहराई जा चुकी हैं. दो मनचले नवयुवकों द्वारा अपने भाई के हत्यारे तस्कर से बदला लेने की पुरानी कहानी. **नि. :** रमेश सिप्पी, **मु. पा. :** अमिताभ, शत्रुघ्न, बिंदिया, परवीन, शशि. **स.**

हम भी कुछ कम नहीं : तमिल से डब की गई मारधाड़ से भरपूर एक बेतुकी फिल्म जिस का कोई भी पक्ष आकर्षक नहीं है. **नि. :** म. च. गोपीनाथ, **मु. पा. :** कृष्ण, जय चित्रा, कविता. **अ.** ●

स्कूटर संस्कृति

लेख • दिलीप गुप्ते
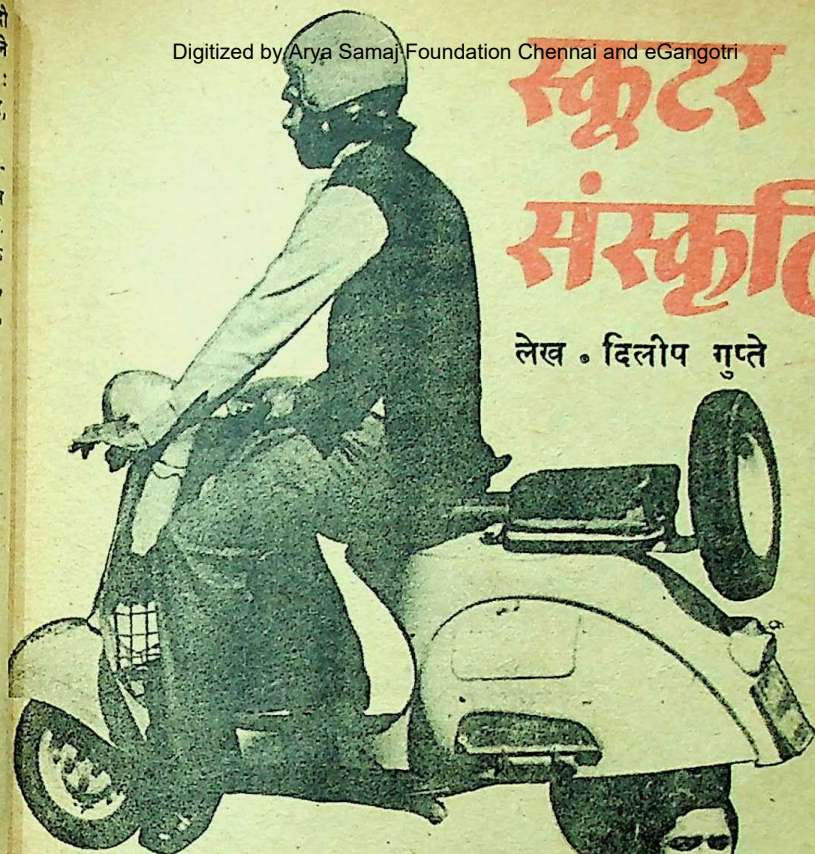
क्या आप भी आधुनिकता की होड़ में, मध्यम वर्ग की प्रतिष्ठा का प्रतीक यानी स्कूटर खरीदने की सोच रहे हैं? तो खरीदने से पहले इस के विषय में यहां दी गई पूरी जानकारी भी अवश्य हासिल कर लें...

पूर्व और पश्चिम का खिचड़ी संयोग हम लोगों की सभ्यता है. आधुनिकता के नाम पर हम स्कूटर तो खरीद लेते हैं लेकिन उस के आगमन पर हमारी संस्कृति हमें अंदर से [illegible] है. हम उस

निर्जीव लोहे की पूजा करते हैं. नारियल फोड़ते हैं. मिठाई बांटते हैं. हमें समय की बचत करनी है, इसलिए हम स्कूटर खरीदते हैं. खरीदने के बाद ज्यादातर समय पान या कचौड़ी खाने में बिताते हैं. स्कूटरहीन समाज हमारे लिए अछूत हो जाता है. हम इतने नाजुक हैं कि पैदल नहीं चल सकते, लेकिन स्कूटर पर बैठ कर पेट की बीमारियों के लिए डाक्टर की महंगी से महंगी दवाएं खा कर बलवान बनते हैं. प्रदूषण के डर से शहर से दूर कालोनियों में रहते हैं. सारा प्रदूषण शहर में पेट्रोल का धुआं उड़ा कर, साइलेंसर निकाल कर या बेमतलब हार्न बजा कर करते हैं.

स्कूटर बनाम संस्कृति

स्कूटर हमारी संस्कृति है. हमारी अभिव्यक्ति है. दहेज में यदि पेट्रोल फूंकने के लिए स्कूटर न मिले तो हम अपनी पत्नी को फूंक देते हैं. मतलब हम स्कूटर से विवाह कर दहेज में पत्नी चाहते हैं. पत्नी से अधिक हमें स्कूटर की चिंता है. क्लच वायर टूट गया तो दो घंटे मैकेनिक के यहां बैठे रहेंगे लेकिन पत्नी बीमार हो तो डाक्टर के यहां जाने का कष्ट नहीं

महिलाएं भी भला स्कूटर पर सवारी करने में पीछे क्यों रहें, भले ही उसे चलाने का उन के पास लाइसेंस हो या नहीं या छोटीमोटी खराबी सुधारना आता हो या नहीं.
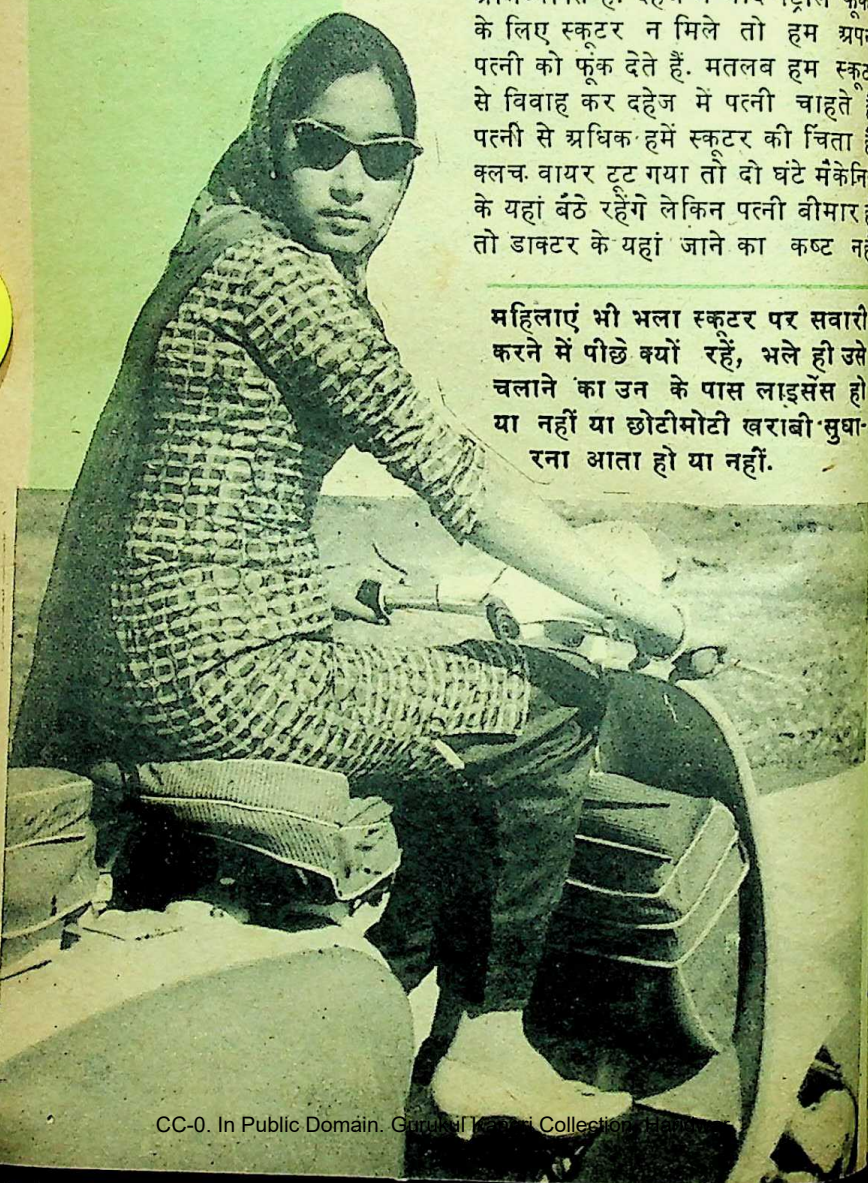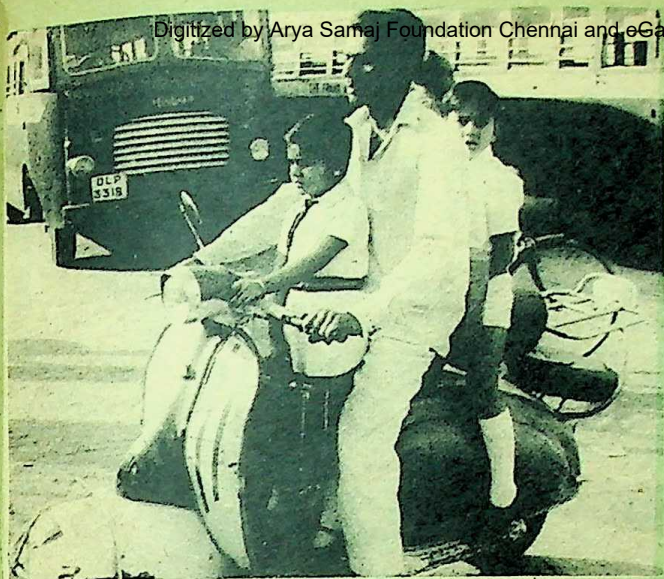
बस से जाना सरल और फायदेमंद हो फिर भी बच्चों को स्कूल ले जाने के लिए स्कूटर का इस्तेमाल अपव्ययता नहीं तो और क्या है?

करेंगे. हवा 20-30 से कमज्यादा हुई नहीं कि चेहरे पर चिंता की रेखाएं फैल जाती हैं, लेकिन पत्नी की फिगर 32-34-36 हो जाए तो भी फिक्र नहीं. घर में पानी नहीं है तो इस की फिक्र करना पत्नी का काम है और बाजार में पेट्रोल नहीं है तो यह हमारी चिंता का विषय है. उम्र बढ़ने के साथसाथ पत्नी की उपयोगिता कम हो जाती है, लेकिन स्कूटर की नहीं. बल्कि स्कूटर निकालने की सोचो तो बाहर खरीददारों की लाइन लग जाए.

स्कूटर का धंधा बड़ा चंगा

स्कूटर के धंधे में लोगों ने कारें खरीद ली हैं. बिना दुकान के धंधा चल रहा है. अपने नाम, अपनी पत्नी के नाम, बेटे, बेटी, पोते, पोती, परपोते, परपोती के नाम स्कूटर बुक करवा कर लोग निश्चित हैं. बेटा कमा कर खिलाए या नहीं, स्कूटर तो जरूर खिलाएगा.

मध्यम वर्ग के लिए तो स्कूटर 'स्टेटस सिंबल' यानी प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गया है. स्कूटर हो तभी आदमी की कोई हैसियत समझी जाती है. यह वह हाथी है जिसे हर चूहा पालना चाहता है. अपने बच्चों को भूखा रख कर इस का पेट भरने वालों की संख्या दिन ब दिन बढ़ती ही जा रही है. जैसेजैसे पेट्रोल की कीमतें ऊंची जा रही हैं, स्कूटर चाहने वालों की क्यू लंबी होती जा रही है. मैं सालों पहले क्यू में खड़ा था, अब नंबर आया है.

स्कूटर का परिधान

स्कूटर के परिधान में स्टेपनी भी एक होती है और स्टेपनी स्कूटरधारी की पहचान. इस पर लिखे नाम और शब्द ही उसे सामान्य से विशेष बनाते हैं. स्टेपनी पर लोग जाने क्याक्या लिखवाते हैं. अभिनेताअभिनेत्री का नाम, फिल्म का नाम. कभीकभी तो ऐसेऐसे नाम नजर आते हैं कि समझ में नहीं आता कि ये नाम आदमी के हैं या जानवर के. टीटू, चिंकी, मिंकी, पप्पी, मोती. कई बार भयंकर शब्द भी नजर आते हैं. जीजाजी, कुंवरजी, आशिक, प्यारा, हसीन. मेरे सामने समस्या है कि मैं अपने स्कूटर पर क्या लिखूं. कुछ सूझ ही नहीं रहा है. ●

पूरे परिवार के मनोरंजन के लिए

विश्व सुलभ साहित्य

आखिरी दिन
परमाणु युद्ध की रहस्य व दर्दभरी कहानी जिस का हर पात्र आप की सहानुभूति बटोर लेगा
रु. 5.00

हिम सुंदरी
द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका के बीच गंगा की घाटी में बर्फ में दबे हुए अनेक जीवित शवों की सनसनी खेज कहानी.
रु 5.00

नानावती का मुकदमा
अनैतिक प्रेम के दुष्परिणामों की सच्ची कहानी.
रु. 3.00

भगवान विष्णु की भारत यात्रा
एक तीखा व्यंग्यात्मक उपन्यास
रु. 4.00

नई सुबह
एक फौजी द्वारा फौजियों की जिंदगी की कहानी. केरल साहित्य एकादमी से पुरस्कृत
रु. 3.50

अंतरिक्ष के पार
कंप्यूटर हेरोकोल्ट-7, एक दिन दास से स्वामी बन बैठा, क्या मानव हार गया ?
रु. 3.00

प्रतिशोध
एक जर्मन सैनिक की रोंगटे खड़े कर देने वाली सच्ची कहानी जिस ने अपनी ही सेना के विरुद्ध जिहाद कर दिया था
रु 5.00

डाकुओं के घेरे में
डाकुओं की समस्या पर लिखा गया दिलचस्प उपन्यास.
रु. 5.00

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन, एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

मूल्य अग्रिम आने पर पूरा सैट 25 रुपए में, डाकखर्च नहीं, या कोई भी चार पुस्तकें केवल 15 रुपए में डाकखर्च 2 रुपए.

आरक्षण विरोध किस के लिए : गुजरात में मेडीकल कालिजों में आरक्षण हटा लेने की मांग ने दो गुट बना दिए हैं—एक आरक्षण का विरोधी है तो दूसरा समर्थक. दोनों ही गुट समस्या को सुलझाने के लिए कोई ठोस रास्ता तलाशने से परहेज कर रहे हैं. हाल ही में दोनों गुट दिल्ली आए. (ऊपर के चित्र में) आरक्षण समर्थक छात्र नेता अर्स कांग्रेस के श्री जगजीवनराम के साथ.

केंद्र सरकार ने समझौता कराने के लिए पंजाब के राज्यपाल जयसुखलाल हाथी को नियुक्त किया. दिल्ली में श्री हाथी और केंद्रीय गृह राज्य मंत्री योगेंद्र मकवाना आरक्षण विरोधी छात्र नेताओं के साथ. (नीचे के चित्र में)

चित्रावली

ल्ट-7,
स्वामी
व हार
3.00

क की
वाली
स ने
विरुद्ध
ा
5.00

पर
चस्प
5.00

दोस्ती बढ़ाने की सजा : [illegible] स्थानीय शराबघर में प्रवेश पर पाबंदी लगा दी गई है. शराबघर के मालिक फिट्जगिबन का कहना है, "वह अपने ग्राहकों से ज्यादा से ज्यादा दोस्ती बढ़ाने की कोशिश करती थी. उस की हरकतों की वजह से मेरे कई स्थायी ग्राहक भाग गए." उधर टेरीसा का कहना है, "मैं उसे (शराबघर के मालिक को) अदालत में घसीटूंगी और जज को वह सब कुछ बता दूंगी जो शराबघर की आड़ में होता है."

शराबघर
बन का
कोशिश
गए."
लत में
र जज
कुछ बता
घर की
है."
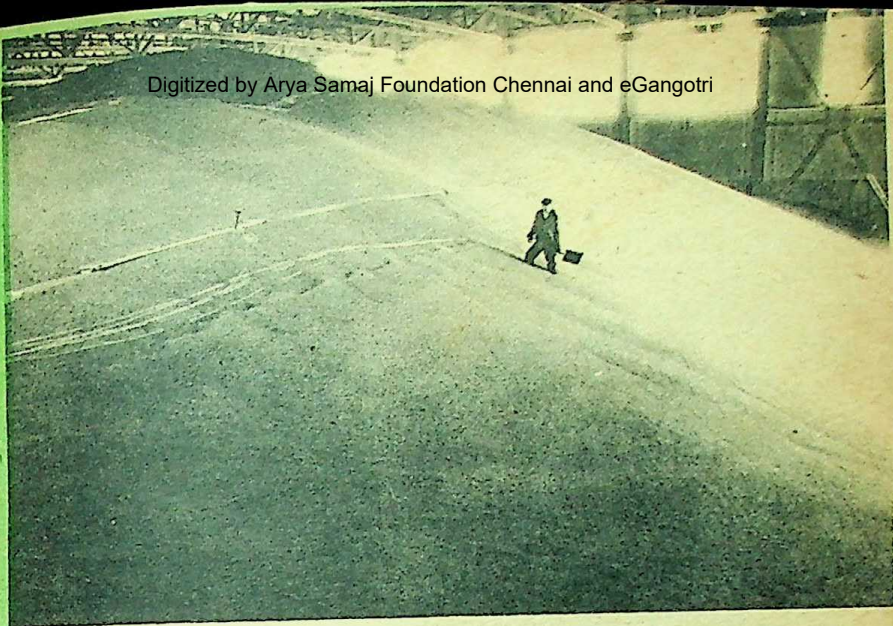
मुसीबतों का पहाड़ : जरूरत से ज्यादा अन्न यूरोप के लिए बड़ी समस्या पैदा कर रहा है. वहां इतना अन्न पड़ा है कि उस से छुटकारा पाने के लिए ही करदाताओं के छः अरब डालर खर्च होने होंगे.

एक दर्दनाक दुर्घटना : एक विज्ञापन कंपनी के निदेशक एंड्रयू न्यूटन अपनी कार से लंदन की ऐक बहुमंजिला इमारत की कार लिफ्ट में पहुंचे. लिफ्ट नीचे जा चुकी थी लेकिन दरवाजा खुला हुआ था. नतीजा यह हुआ कि वह कार समेत 70 फुट नीचे जा गिरे. मलबे से उन्हें बाहर निकालने में दमकल कर्मचारियों को एक घंटे का समय लग गया.

नफरत के हथियार : नाजी विचारों के समर्थक शेडेनिक राबर्ट को तब गिरफ्तार किया गया जब बर्मिघम के एक रोजगार कार्यालय के बाहर धुंए वाला बम फेंक कर वह नारे लगा रहा था : 'गोरों के लिए ही नौकरियां हों, उस के घर से कई किस्म के खतरनाक हथियार पुलिस ने बरामद किए. रंगभेद के आधार पर द्वेष फैलाने व हथियार जमा करने के लिए उसे सात साल की हवालात की सजा भोगनी होगी.

नग्नता या मनोरंजन : संगीतमय नाटक 'दि बेस्ट लिटल वोरहाउस इन टैक्सास' लंदन में काफी विवादास्पद रहा है. शहर के शेरिफ और वेश्याओं के बीच मुठभेड़ की कहानी वाले इस नाटक को अश्लील और नग्न माना जा रहा है. लेकिन उस में भाग लेने वाली महिला कलाकारों का कहना है, "इस में नग्नता नहीं है. यह तो संगीतमय नाटक है. अरुचि और अश्लीलता का तो इस में कोई सवाल ही नहीं है. यह पूरी तरह मनोरंजन से भरपूर है."

रहा
स में
तो
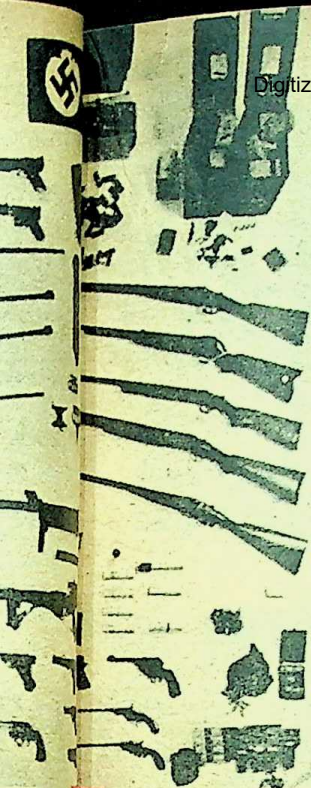
हत्यारा हिरासत में : इंगलैंड की पुलिस ने पिछले दिनों लंबी दूरी के लारी चालक पीटर विलियम सटक्लिफ को ब्रेडफोर्ड में लीड्स विश्वविद्यालय की छात्रा जैक्बेलिन हिल की हत्या के आरोप में गिरफ्तार कर लिया. हिल का शव शहर के बड़े कूड़ेघर में पड़ा मिला. पुलिस का आरोप है कि हिल की हत्या पिछले कई सालों में हुई क्रूर हत्याओं की अंतिम कड़ी है. (चित्र में) अभियुक्त सटक्लिफ का ससुर ड्यूसबरी कोर्ट में मामले की सुनवाई के लिए जाते हुए.

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं कि... फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी... भी हजारों वर्ग मील भारती... विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की... लिए बहुत बड़े पैमाने पर स... सहयोग और सद्भाव की आव... होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्था... पूंजीपति या राजनीतिक दल से स... नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्र... सहायता स्वीकार करती है. यह... एक ही वर्ग की सहायता और बल... निर्भर है. और वह हैं सरिता के... इन्हीं की प्रेरणा, सहाय्यता व प्रोत्स... सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ ते...

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी... सरकार का और देशी व वि...

जनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर स्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण ातंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा ही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल क ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र त्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी श्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को ह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप ना कुछ खर्च किए एक वर्ष में रितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी धिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा केंगे.

रितामुक्ता के प्रसारप्रचार की स योजना से लाभ उठाने के लिए ाप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए मा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के प में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का ोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. रिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने ा नोटिस दे कर आप की अमानत आप को ौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता ार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार

सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

चाचा ने शालिनी से मेरा विवाह करने का जो कुचक्र रचा था, उस से मैं बंटी की मदद से बच निकला. यही एक बात मेरी खुशी के लिए काफी थी. लेकिन जब यह समाचार मिला कि गठिया के आक्रमण ने फिलहाल चाचा का हिलनाडुलना बंद कर दिया है तथा निकट भविष्य में उन के शहर आने की कोई आशंका नहीं है तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा. बुढ़िया जया फिर से काम पर आ गई थी. लता को मुझ से

बंटी के मुताबिक उसे निशा से प्यार हो गया था. अपने प्यार को परवान चढ़ाने में वह मेरा सहयोग चाहता था, पर हमारी दौड़धूप क्या रंग लाएगी यह हम दोनों में से कोई भी न जानता था..

व्यंग्य • मथुरा कलौनी

छतरी की बरसात

कोई शिकायत नहीं थी. बस, और क्या चाहिए था मुझे? मन चंगा तो कठोती में गंगा. मन इतना खुश था कि अगर जया नाश्ते में करेला भी दे देती तो उसे खुशीखुशी खा लेता. खा ही नहीं लेता बल्कि उस की तारीफ भी कर देता. बेखटके नींद सो कर अभी थोड़ी देर पहले ही उठा था तथा चाय पी कर समाचारपत्र देख ही रहा था कि मेरे सिर के पीछे से आवाज आई.

"उठ गए तुम?"

मेरा ध्यान समाचारपत्र से हट गया और मैं सोचने लगा कि यह जानीपहचानी आवाज कहां से गूंजने लगी. "कल बहुत देर तक तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहा." —यह आवाज अब सिर के सामने से आ रही थी. डर के मारे हृदय की गति तेज हो गई. जिस खुशी का मैं अभीअभी जिक्र कर रहा था वह तो "उठ गए तुम" के साथ ही उठ कर चली गई थी. हड़बड़ा कर समाचारपत्र नीचे किया तो मेरा ही कुरता और पाजामा पहने बंटी को सामने खड़ा पाया. कुछ क्षण उस को पहचानने में लगे और उतना ही समय अपनी स्थिति संभालने में लग गया. इस के बाद अपने घर में असमय बंटी की उपस्थिति का ध्यान आते ही मैं चौंका.

"तुम! तुम यहां कैसे?"

"क्या मैं विश्वास कर लूं कि तुम्हारे घर में एक मेहमान ने सारी रात गुजार दी और तुम को पता ही नहीं?" प्रत्युत्तर में बंटी का प्रश्न था.

"तुम अपना कुरतापाजामा अपने साथ क्यों नहीं लाते?"

"क्या यही तुम्हारा अतिथि सत्कार है?"

"खैर, यह बताओ कैसे आए?"

"मनु, मेरे यार, तुम्हीं तो एक यार हो. तुम को ही सब से पहले बताऊंगा. इसी लिए दौड़ा चला आया."

मैं और निशा बातें कर रहे थे तभी एक आदमी बड़ी तेज रफ्तार से मोटर साइकिल पर आता नजर आया.

बंटी के हावभाव से पूरा विश्वास हो गया कि वह मेरे लिए एक मुसीबत ले कर आया है. मैं ने बुझे मन से कहा, "क्या बताओगे?"

"मनु, मुझे किसी से मुहब्बत हो गई है." बंटी ने घोषणा की.

"फिर?" मैं ने पूछा.

"क्या मतलब है तुम्हारा 'फिर' कहने का? तुम ने तो ऐसे पूछा मानो मैं हर साल प्रेम में पड़ता हूं," बुरा सा मुंह बनाते हुए बंटी ने कहा.

"हर साल नहीं. अगर औसत लिया जाए तो हर चौथे महीने एक नया प्रेम होता है. दर्जनों बार लड़कियों के चक्कर में मेरा भेजा खाया है तुम ने."

"अरे, वे सब तो क्षणिक आकर्षण भर थे. इस बार वास्तविक प्रेम है."

"हर बार तुम यही कह कर आरंभ करते हो."

"तुम अपनी ही बकते जाओगे या

"मेरी भी कुछ सुनोगे?"

"बिना सुने रिहाई कहां. बको."

आंखें बंद कर स्वप्निल चेहरा बना कर बंटी ने बोलना आरंभ किया, "बुआ से मिलने जब कनकपुर गया तो वहां मेरी भेंट निशा से हुई. तुम को तो मालूम है मुझे सुबह टहलने का शौक है."

"तुम और सवेरे टहलना! अरे बंधु, कभी सुबह देखी भी है?"

"कितने आश्चर्य की बात है, मनु, कि अपने अंतरंग मित्रों की दिनचर्या से तुम एकदम अनभिज्ञ हो. खैर, आगे सुनो. निशा का बुआ के पास आनाजाना था. बुआ ने ही मेरा परिचय निशा से कराया है. बातोंबातों में पता चला कि निशा सुबह टहलने की शौकीन है. उस की खुशी का तुम अंदाज नहीं लगा सकते जब उसे मालूम हुआ कि मेरी भी सुबह टहलने की आदत है. वाह, क्या दमकता चेहरा है निशा का. हंसती है तो लगता है कि मंदिर की घंटी बज रही है."

"किस मंदिर की?"

"क्यों? किसी भी मंदिर की."

"यहां वाले मंदिर की तो नहीं होनी चाहिए. यहां तो घंटा है, जब बजता है तो लगता है कि तोप दागी गई हो. आगे बढ़ो."

"अब टोकना मत. हम लोग रोज मिलते और दुनिया भर की बातें करते. करेला से ले कर केरल तक और केरल से ले कर करेला तक. हर विषय पर हम दोनों के मत मिलते हैं. बातों ही बातों में न जाने कब किस घड़ी हम दोनों के बीच प्यार प्रस्फुटित हो गया."

"तुम कनकपुर तो केवल चार दिन रहे. इस बीच ही इतना कुछ हो गया?"

"जब संयोग हो तो इन बातों में देर थोड़े ही लगती है. मनु, तुम उस लड़की को जानते हो?"

"मैं किसी लड़की को नहीं जानता. लता के सामने ऐसी बात मत करना. मेरा जीना हराम कर देगी."

"वह लता की सहेली है."

"क्या नाम बताया उस लड़की का?"

"निशा."

नाम सुन कर मुझे कुछ याद सा आ[या]. मैं ने बंटी से पूछा, "क्या [वह] चश्मा पहनती है...? हलके नीले रंग [के] बड़े गोल फ्रेम वाला?"

"हां, वही."

"उल्लू."

"मुझे उल्लू मत कहो."

"मैं तुम्हें नहीं, उस लड़की को [कह] रहा था. जब पहली बार मुझ से मि[ली] थी तो मुझे लगा था जैसे कोई उल्लू मु[झे] घूर कर देख रहा हो. तभी से मैं [उसे] निशाचर यानी उल्लू ही कहता हूं."

बंटी मुझे पिंजरे में बंद तोते की त[रह] आंखें तरेर कर देखने लगा. मैं ने बा[त] समाप्त करते हुए कहा, "देखो, बंटी, इस बार तुम्हारी कोई मदद नहीं क[र] सकता."

"मुझे तुम्हारी मदद की आवश्यक[ता] नहीं है और तुम से मदद मांग ही कौ[न] रहा है?" थोड़ी देर रुक कर वह फि[र] बोला, "आज की सुबह तो बेकार ग[ई]. कल सुबह तैयार रहना. हम लोग टहल[ने] निकलेंगे."

"असंभव," मैं ने कहा.

"मनु!"

"नहीं, एकदम नहीं. मुझे उस से ड[र] लगता है."

"चलो, ऐसे बनो मत. इतनी प्यारी प्यारी लड़की है और तुम्हें डर लगता है."

"नहीं, वह चश्मा...बाप रे! और फिर वह जीव विज्ञान पर अनुसंधान कर रही है."

"तो क्या हुआ?"

वह मेरी तरफ ऐसे देखती है जैसे [मैं] किसी आदिवासी जाति का अंतिम वंश[ज] हूं."

"अहमक हो तुम. कल सवेरे तैयार रहना."

बंटी से मिलने से पहले जिंदगी बहुत ही हसीन लग रही थी. लेकिन अब उस ने निशा रूपी हिडिंबा का रूप धारण कर लिया था. दूसरे दिन सवेरे बंटी ने मुझे झकझोर कर जगाया. वह चीखते हुए बोल रहा था, "उठो .. उठो. सूरज सिर पर चढ़ आया है. क्या सवेरे टहलने नहीं जाना?"

मैं ने आंखें खोल कर देखा तो बंटी नींद से कोसों दूर एकदम तरोताजा बना-ठना खड़ा था. मुझे बिस्तर से खींचते हुए बोला, "मैं जा रहा हूं. तुम को 20 मिनट का समय देता हूं...गांधी चौक पर मिलना. पता नहीं निशा किस तरफ टहलने निकले."

न जाने का प्रश्न ही नहीं उठता था. वह मेरा दोस्त है. उस को मेरी आवश्यकता थी. इसलिए जाना लाजिमी था. मेरी खातिर उस ने भी तो कठिनाइयां झेली थीं. तैयार हो कर निश्चित जगह पर जा पहुंचा. ठीक समय पर ही पहुंचा था. दूर से निशा और बंटी चले आ रहे थे. सुबह के झुटपुटे में भी निशा का गोल चश्मा चमक रहा था. हां, एक काला सा आदमी 60 किलोमीटर की गति से अभीअभी गुजरा था.

निशा ने मुझे देख लिया था. चमकता हुआ चश्मा मेरी तरफ ही फोकस था. उन के पास आने पर पता चला, साथ वाला बंटी न हो कर कोई 10-12 साल का एक लड़का था. लड़के के चेहरे की बनावट उल्लू से मिलतीजुलती थी. इस से अनुमान लगाया कि यह अवश्य ही निशा का भाई होगा.

मुझे लगा, कि मुझे ही पहले कुछ कहना चाहिए. इसलिए बोला, "हलो, हलो निशाच...मेरा मतलब है उल... नहींनहीं निशा और केवल निशा. कैसी हो तुम? और आज सुबह का समय भी कितना सुहावना है."

"हलो," निशा बोली, "आप यहां और इस समय?"

"हां, टहलने निकला हूं. आज ही से आरंभ किया है." थोड़ी दूर तक हम तीनों चुपचाप साथसाथ चलते रहे. काले आदमी ने 'यू टर्न' कर लिया था और उसी गति से वापस जा रहा था. बंटी का दूर तक कोई पता न था.

बंटी ने भी मुझे मुसीबत में सहारा दिया था. इसलिए उस के कहने पर मुझे भी उस की बताई जगह पर जाना लाजिमी था. मैं ठीक समय पर वहां जा पहुंचा, तभी सामने से बंटी और निशा भी आते दिखाई दिए...

लड़के ने चुप्पी तोड़ते हुए मुझ से पूछा, "आप कहां तक जा रहे हैं?"

"मैं...मैं...मैं बस यहीं तक आया था. अब लौटने ही वाला हूं."

"तो लौट जाइए न फिर."

लड़के का सुझाव मुझे बहुत उचित लगा, बोला, "अच्छा, चलता हूं, निशा."

"नमस्ते," दोनों ने समवेत कंठ से कहा. मैं बंटी को गालियां देता हुआ वापस लौट आया.

नाश्ते से निवृत्त हुआ ही था कि बंटी आ पहुंचा. मैं ने उसे आड़े हाथों लिया. उस ने भी आगबबूला हो कर कहा, "स्कूटर में पेट्रोल भर कर क्यों नहीं रखते? आधे रास्ते में ही गाड़ी बंद हो गई.

आसपास कोई पेट्रोल पंप भी नहीं था. सब चौपट हो गया."

"तो जनाब आप स्कूटर में टहलते हैं? आप मेरा स्कूटर ले ही क्यों गए थे?"

"तो और किस का ले जाता? अब बातें बाद में करना. बात करने को अब रखा ही क्या है? तुम्हारे कारण मुझे आजीवन कुंआरा ही रहना पड़ेगा." फिर वह अपना पेट सहलाते हुए बोला, "नाश्ता खिलाओ."

"इतनी गालियां दी हैं मैं ने, पेट नहीं भरा क्या?"

"बकवास बंद," कह कर उस ने जया को आवाज दी.

जया ने नाश्ता लगाया. बंटी नाश्ते पर सदा की तरह ऐसे टूट पड़ा जैसे वो बरसों का भूखा हो. कहते हैं प्यार में भूख लगती ही नहीं, लेकिन यहां तो लगता है उलटा ही असर होता है. कमबख्त की आशिकमिजाजी मेरे लिए कोई न कोई आफत खड़ी कर देती है. उसी के एक चक्कर में मेरी भेंट लता से हुई थी, जिस के साथ निकट भविष्य में मेरी शादी होने वाली है. जाने इस नए चक्कर में क्या होने वाला है? जहां तक मैं निशा को जानता हूं, विश्वास नहीं होता कि वह बंटी को घास भी डालेगी. लेकिन दिल के मामलों में कभीकभी अविश्वसनीय बातें ही घटती हैं.

दूसरे दिन बंटी की योजना के अनुसार मुझे निशा के घर के पास वाले चौराहे पर खड़ा होना था तथा उस के साथ टहलतेटहलते गांधी चौक तक आना था. चौराहे और गांधी चौक के बीच मुझे बंटी के गुणगान करने थे ताकि निशा उस से और अधिक प्रभावित हो जाए. और बंटी गांधी चौक पर 'अचानक' ही हम लोगों से मिलने वाला था. निशा का ध्यान आते ही दिल बैठा जा रहा था. आसमान में बादल देख कर मैं खुश हो गया. सोचा, कम से कम आज के लिए तो जान छूटी.

बोला, "बंटी, आज का प्रोग्राम कल परसों पर रख. कहीं बरसात आ गई भीग जाएंगे. भीगने से मुझे तो निमोनि ही होगा."

"वाह, बरसात आए तो बहुत अ हो. मजा आ जाएगा."

बंटी ने जब ऐसा कहा तो मुझे ब चिंता हुई. बंटी ऐसा तो नहीं था. मैं बो "बंटी, तुम आराम करो. लगता है तुम्हा तबीयत ठीक नहीं है. तुम्हारी बातों पागलपन झलक रहा है. तुम अभी बरसात में भीगने की योजना बनाने प्रयत्न कर रहे थे."

"भीगेंगे तो तब जब बरसा आएगी."

"लेकिन, मेरे भाई, भीगने की जरूर ही क्या? तुम आराम करो, सब ठीक जाएगा."

मुझे झिड़कते हुए वह बोला, "चुप करो, यार, नहीं भीगेंगे. छाते का आविष्कार बरसात से बचने के लिए हुआ है न? छाता ले कर चलेंगे."

"लेकिन छाता ले कर टहलना..."

"यार, तुम को तो हर बात समझा कर कहनी पड़ती है. मैं ने निशा से कह रखा है कि मैं बरसात में भी छाता ले कर सवेरे निकल जाता हूं. मुझे प्रत्यक्ष छाते के साथ देखेगी तो बहुत प्रभावित होगी, होगी कि नहीं?"

"तुम ठीक कहते हो. अवश्य होगी. अच्छा, तुम्हारी मनोकामना पूरी हो. तुम निशा के घर ही चले जाओ. एक ही छाता ले कर तुम लोग टहलने निकलना. छतरी के नीचे वातावरण रोमांटिक रहेगा."

"जी नहीं. योजना के अनुसार तुम निशा के घर जाओगे और तुम लोगों को मैं गांधी चौक में मिलूंगा."

"जी नहीं, मुझे बरसात में कहीं नहीं जाना है."

"छाता ले जाओ, बरसात आएगी तो खोल लेना. और बाद समय भी कम है

“यह रखो अपना छाता,” कहते हुए लता ने टूटा छाता बंटी की तरफ फेंक दिया.

सीधेसीधे चलो नहीं तो...”

“धमकी मत दो. नहीं तो क्या?”

मैं लता को बोल दूंगा कि तुम ने कलकत्ता में शहीद...”

“नहीं, बंटी, तुम ऐसा नहीं कर सकते.”

“और फिर कलकत्ता में ही बालीगंज वाली घटना भी है. लता सुन कर बहुत खुश होगी.”

“मेरा भी समय आएगा तब मैं देख लूंगा तुम को.” कह कर मैं ने छाता पकड़ा और निकल पड़ा. निशा के घर के सामने वाले चौराहे पर चाय की एक दुकान है. वहीं चाय पीतेपीते निशा का इंतजार करने लगा. एक ..दो...तीन...चार कप चाय पीने के बाद भी निशा कहीं दिखाई नहीं दी. शायद बादल देख कर उस ने टहलने जाने का विचार ही रद्द कर दिया या हो सकता है मेरे आने से पहले ही निकल गई हो. सुबह का झुटपुटा भी समाप्त हो चला था. बादल छंट गए थे और धूप तेज होती जा रही थी. थोड़ी देर इंतजार करने के बाद 'जान बची लाखों पाए' कहतेकहते घर वापस चला आया.

घर वापस आने पर देखा, बैठक में महफिल सजी है. लता और उस की सहेली रूपा आई हुई थीं. बंटी सोफे पर लेटा कराह रहा था. लता ने शेरनी की तरह

घूर कर मुझ से पूछा, "कहां गए थे इतने सवेरे?"

बंटी ने भी मुझे घूरते हुए कराह कर पूछा, "कहां से आ रहे हो?" लता का पूछना तो ठीक था लेकिन समझ में नहीं आया कि बंटी क्यों पूछ रहा है. बोला, "एक तो मेरी सुबह बरबाद की और ऊपर से पूछ रहे हो मैं कहां से आ रहा हूं? तुम कराह क्यों रहे हो?"

"बंटी की कमर में दर्द है," लता ने कहा. रूपा हंस पड़ी. लता ने फिर कहा, "मनु, तुम को शर्म नहीं आती एक भली लड़की को इस तरह तंग करते हुए?"

"ऐं!" मैं ने कहा.

"ऐं." बंटी ने प्रतिध्वनि की.

"बंटी तो खैर नहीं सुधरेगा, लेकिन तुम्हारे पास तो थोड़ी बुद्धि है." लता बोलती रही, "पंदरह दिनों के बाद निशा की शादी होने वाली है और बंटी जनाब अभी थोड़ी देर पहले गांधी चौक में उस से इश्क बघारने की कोशिश कर रहे थे. फल तो इन्हें ठीक ही मिला. निशा गुस्से से भरी मेरे पास आई थी और उस ने मुझे सब कुछ बता दिया है."

"ऐं." बंटी ने फिर आश्चर्य व्यक्त किया.

"यह ऐंऐं क्या लगा रखी है? फिर कभी मेरी सहेली को छेड़ने की कोशिश की तो मुझ से बुरा कोई न होगा. और मनु, जब तक बंटी क्षमा नहीं मां[गता] तुम मुझ से मिलने की कोशिश [न] करना."

"ऐं!" मैं ने कहा.

"यह रखो अपना छाता," यह[कह] कर लता ने एक टूटा छाता [मेरी] की तरफ फेंक दिया.

"यह टूटा कैसे?" मैं ने पूछा.

"निशा ने इस छाते को घुमाया बंटी की कमर तोड़ने के इरादे से, ले[किन] छाता कमजोर निकला. मैं होती तो [सिर] पर दे मारती बंटी के, चल रूपा," [कह] कर लता फुफकारती हुई अपनी सहे[ली के] साथ चली गई.

"बाप रे!" कह कर मैं धम्म से [सोफे] में धंस गया.

"मनु, गलती मेरी है," बंटी बो[ला,] "मैं लता को मना लूंगा. तुम चिंता [न] करो. आवश्यकता पड़ी तो मैं उस निशा से भी माफी मांग लूंगा." निशा का [नाम] लेते समय अब बंटी के स्वर में [...] झलक रही थी. इसी से मेरी आधी [चिंता] मिट गई. बंटी बोलता रहा, "माफी उसे मुझ से मांगनी चाहिए. खैर, छो[ड़ो] तुम मुझे यह बताओ कि तुम्हें रूपा [कैसी] लगी? तुम ने नोट किया वह कैसे [मेरी] ओर देख रही थी? मनु, लगता है [मुझे] रूपा से प्यार हो गया है."

"ऐं!"

नंबर कैसे याद रखें?

लेख • मदन गुप्ता 'सपाटू'

अपने परिचितों के टेलीफोन नंबर, अपना बैंक खाता नंबर, जीवन बीमा पालिसी नंबर, संबंधियों की जन्मतिथि आदि कुछ ऐसी संख्याएं हैं जिन को याद रखना तो पड़ता है, पर याद नहीं रहतीं. थोड़े से अभ्यास और सूझबूझ से आप उन्हें सदा याद रख सकते हैं...
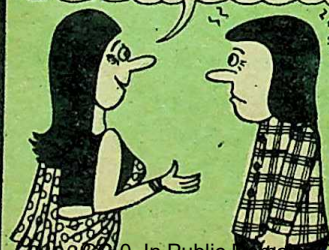
कमल सपत्नीक किसी के विवाह में जा रहा था. अचानक उस का स्कूटर किसी अन्य वाहन से टकरा गया और उसे हस्पताल में दाखिल होना पड़ा. घर दूर होने के कारण सूचना केवल फोन पर ही दी जा सकती थी. उस की पत्नी पड़ोसी के यहां सूचना देने के लिए कई बार फोन करने गई, पर हर बार फोन करने पर फोन कहीं दूसरी जगह मिल जाता. दरअसल उसे पड़ोसी के फोन का ठीकठीक नंबर ही याद नहीं आ रहा था.

याद आता कैसे? कभी याद रखने की चेष्टा की हो तब न? इस जरा सी बात के कारण वह परेशान हो उठी.

बच्चे के जन्मदिन पर मंजु सभी मित्रों, संबंधियों को बुलाना चाहती थी. पर सुनीता के घर का नंबर ही याद नहीं आ रहा था. किस जगह है, यह तो याद था, पर उस से डाकिया सुनीता का घर ढूंढ़ने से रहा. कितने वर्षों से मंजु व उस के पति का इस घर में आनाजाना है, पर अब बुलाने का समय आया तो पता ही याद नहीं आ रहा.

राजेश को पत्नी ने घर से चलते समय ही कह दिया था, "गैस दगा दे गई है, नंबर लिखवा देना." पर राजेश डायरी तो घर ही भूल आया. गैस उपभोक्ता नंबर जबानी याद नहीं था. बस, लटक गई न गैस एक दिन और.

अगर आप कोई कार्य शुरू करना चाहते हैं तो ऐसा दिन चुनिए, जो किसी महत्वपूर्ण दिन से मेल खाता हो ताकि वह दिन आने पर आप को अपने कार्य का भी स्मरण हो आए.

दोपहर को लंच के समय आप रोज बैंक के पास से गुजरते हैं, एक चैक बहुत दिनों से आया पड़ा है. सोचा, जमा करते चलें, पर खाता नंबर तो याद ही नहीं, नतीजा? आप उस ओर से गुजरने के अवसर का सदुपयोग करने से रह गए.

राम को उस के किसी घनिष्ठ मित्र ने अपने जन्मदिन का निमंत्रण भेज कर चौंका दिया। महीने के आखिरी दिन थे. राम ने मित्र के जन्मदिन की तारीख याद न रखने के कारण इस मौके पर उपहार देने के लिए पहले से बजट में कोई व्यवस्था नहीं की थी. अब वह परेशान था. न जाने का कोई अच्छा बहाना तलाशने में लगा था.

समाधान क्या?

हम झुंझला जाते हैं...क्या मुसीबत है? आजकल इनसान को सांस लेने की तो फुरसत है नहीं, हर चीज का नंबर कैसे याद रखें? जरूरी फोन नंबर, घनिष्ठ मित्रों व पत्नीबच्चों के जन्मदिन, मित्रों के मकान नंबर आदि पचासों ऐसी संख्याएं हैं जो हर समय जबान पर न रह कर भी हमारे मस्तिष्क में सदा मुसीबत बनी रहती हैं. हर समय डा[यरी] तो साथ होती नहीं. आप कहेंगे, क्या इनसान कंप्यूटर बन जाए? नहीं, उसे कंप्यूटर बनने की जरूरत नहीं है, पर दिमाग से थोड़ा काम जरूर लेना पड़ेगा.

जब से अंकों ने जन्म लिया है, मनुष्य के जीवन से चिपके चले आ रहे हैं. जन्म से मृत्यु तक इन से छुटकारा नहीं मिलता.

केवल 9 अंकों में ही संपूर्ण ब्रह्मांड का लेखाजोखा समाया हुआ है. समस्या यह है कि इन अनगिनत संख्याओं को बेचारा छोटा सा मस्तिष्क कैसे संजो कर रखे. हर कोई तो 'गणित का जादूगर' हो नहीं सकता. सब लाला हरदयाल या शकुंतला देवी कैसे बन सकते हैं?

पर सच पूछो तो यह असंभव नहीं है. आप भी थोड़े से अभ्यास से छोटे कंप्यूटर बन सकते हैं.

जरूरत है कुछ फेरबदल की

हमारी श्रीमतीजी अपनी एक सहेली के घर का नंबर अकसर भूल जाया करती थीं. अब वे दिन तो रहे नहीं कि लिख दिया लाला श्रीराम, महल्ला डालनवाला, देहरादून. और डाकिया न केवल उन्हें दे आएगा, अपितु वह कहेंगे तो सुना भी आएगा. उन के घर का नंबर 198[1] हम ने पूछा, "आजकल सन क्या चल रहा है? बस उस का अंतिम अंक ... दो, शेष तुम्हारी सहेली के घर का नंबर है." इसी प्रकार उन्हें 891, 1981, 1891 नंबर भी बखूबी याद हो गए. इसी तरह थोड़े से फेरबदल से आगे भी संख्याएं याद रखी जा सकती हैं.

कुछ अंक चाहे फोन के हों या पालिसी के, बहुत आसानी से याद किए जा सकते हैं. उदाहरणतया 12[345], 54321, 13579 या 9630. इन सब में एक क्रम है, जो इन्हें याद रखने में सहायक है.

मेरा जन्मदिन मेरे मित्र व संबंधी यहां तक कि छोटेछोटे बच्चे भी नहीं भूलते. कारण? मुझे सब परिचित कहते हैं श्रीमान दस पंजे पचास (10 × 5 = 50) हैं. आप ही कहिए, 10 मई, 1950 की जन्मतिथि को याद रखने का इस से सहज उपाय और क्या होगा?

हमारे मिलने वालों में एक निहायत शरीफ बुजुर्ग वकील भी हैं. हम सब उन्हें 'शराफत' से भी एक कदम आगे कहते हैं. बात यों है कि उन का मकान नंबर 421 है.

किसी विशिष्ट स्मृति से जोड़ना

कई प्रेमीप्रेमिकाएं एकदूसरे के फोन नंबर कोड में याद रखते हैं. कई बार तो प्रेमिका के महत्त्वपूर्ण नापतौल में और फोन नंबर में एक अजीब समन्वय सा होता है. जैसे – 36-32-34.

कुछ परिवारों में बच्चों के नाम उन के जन्मदिन के द्योतक होते हैं—जैसे रवि, सोमप्रकाश, मंगलप्रसाद, बुद्धराम, वीरसिंह इत्यादि. ऐसे व्यक्तियों तथा उन से संबद्ध लोगों को अपना जन्मदिन याद रखने में कोई कष्ट नहीं होता. कई को मजाक में भी शनिदेव या बुद्धू कह दिया जाता है.

विश्व की मुख्य घटनाओं से भी संख्याओं को जोड़ा जा सकता है. जैसे—आइजनहावर के भारत में आने वाले दिन हुए अपने बच्चे का नाम आइजनहावरसिंह रख देना. कभी किसी बढ़िया खिलाड़ी की विशेष उपलब्धि को भी ऐसे ही सम्मान दिया जाता है. जैसे—आस्ट्रेलिया के विरुद्ध टेस्ट रबर अपने ही पास रखने पर गावसकर के नाम पर बच्चे का नाम रख देना.

इसी प्रकार नव वर्ष, 26 जनवरी, 29 फरवरी, 15 अगस्त, 30 जनवरी आदि तिथियों वाले दिन जन्मे लोगों के जन्मदिन याद रखने कठिन नहीं. इतना तो आप ने बहुतों को कहते सुना होगा, "भई होली के तीन दिन बाद" या "दीवाली से चार दिन पहले" आदि.

यदि कोई व्यक्ति किसी शहर के सेक्टर, कालोनी या गली नंबर 25 में रहता है तो 25 से संबंधित संख्याएं उसे सरलता से याद रह सकती हैं. जैसे—रोल नंबर 25, मकान नंबर 2500, सवा पचीस सौ, साढ़े, पौने, पूरे, एक कम, एक अधिक इत्यादि नाम देने से वह शायद ही किसी को भूले. कहने का तात्पर्य यह है कि याद रखी जाने वाली संख्या को अपनी किसी विशिष्ट स्मृति से जोड़ लीजिए, आप उसे कभी नहीं भूलेंगे.

कई अंकों को अशुभ माना गया है, पर ऐसी संख्याओं के युग्म बखूबी याद

पत्र लिखना है पर पता याद नहीं आ रहा. यदि परिचित के घर के आसपास की किसी महत्वपूर्ण जगह से मेल बैठा कर पता याद किया जाए तो यह समस्या ही न रहे.

रहते हैं, जैसे 1313, 3131, 13013 इत्यादि.

हमारे देश में शगुन की राशि हमेशा सवाए में होती है. अतएव यदि आप का खाता नंबर या गैस नंबर 1001 या 501 है तो आप अपनी गैस या खाते को शगुन बोलिए. फिर देखिए आप ये नंबर कैसे फटाफट याद रखते हैं.

अकसर जीवन बीमा पालिसी के नंबर बहुत लंबे होते हैं और याद रखने कठिन होते हैं. वैसे प्रतिदिन यह नंबर काम नहीं आता. पर हो सकता है आप ने प्रीमियम भेजना है और उस समय डायरी आप के पास नहीं है तो आप कैसे याद रखेंगे? इस की कोशिश करिए, असंभव कुछ भी नहीं है.

संख्याओं में तारतम्य

248163264 संख्या देखने में चाहे बहुत लंबी है, पर जरा सा ध्यान दें तो याद रखनी कितनी आसान है. बस प्रत्येक अंक को दो से गुणा करते जाएं.

इसी तरह 815222936 में प्रथम अंक में सात और फिर इस के बाद हर संख्या में सात जोड़ते जाने पर संख्या याद रहेगी. अंकों में एक लय ताल भी होती है. यदि किसी संख्या तुक बैठा कर, गा कर याद किया तो आदमी कभी नहीं भूलता.

पुराने अध्यापक कितने ही फा गागा कर ही याद करवा देते थे. गणित व सांख्यिकी के विद्यार्थी लंबे सूत्र लय के कारण ही याद कर हैं.

प्रयत्न किया जाना चाहिए कि आप कोई नया खाता खोलें या पालिसी लें या कहीं कोई नई पूंजी ल तो वह दिन मत्त्हवपूर्ण हो—वह या आप का जन्मदिन हो या कोई खुशी मौका.

मैं ने अपनी जीवन बीमा पालि अपने जन्मदिन पर ली है. जन्मदिन ही वार्षिक प्रीमियम अदा करने की आ जाती है.

इसी प्रकार आप भी थोड़े से प्र से बहुत से नंबर याद रख सकते हैं.
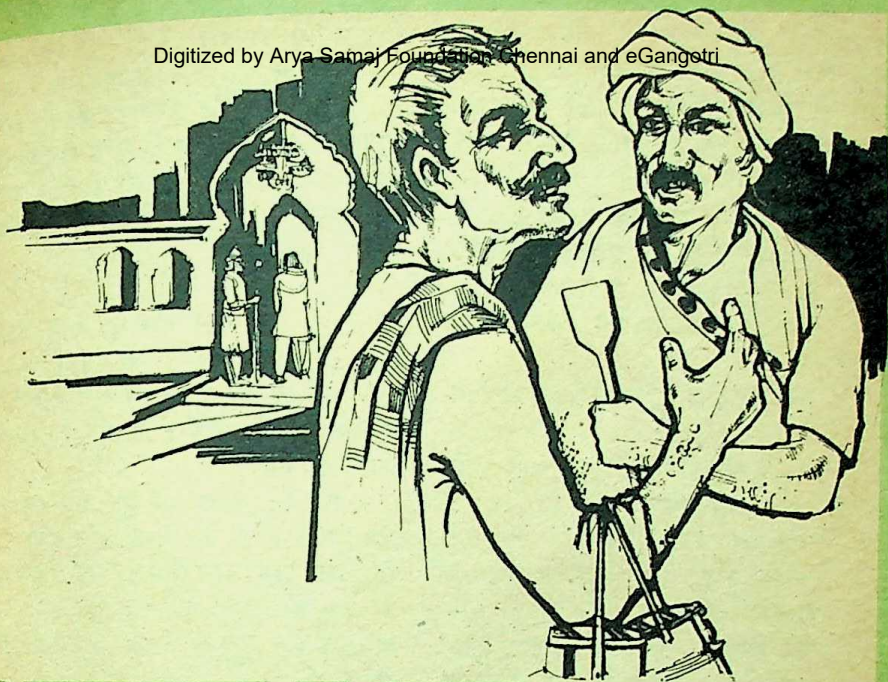
भ्रष्टाचार का जन्म

व्यंग्य • कुसुम गुप्ता

समय बदल जाता है, पर लोग नहीं बदलते. आज भी वही राजा हैं, वही रसोइए और वही दूध वाले.

बहुत समय पहले की बात है. एक राजा था—बड़ा गुणी, सुशील और ईमानदार, जनता के सुखदुख की चिंता करने वाला. उस के राज्य में प्रजा खूब सुखी थी और जनसेवक कर्त्तव्यपरायण और निष्ठावान थे.

राजा का रसोइया था तो बड़ा कुशल पाकशास्त्री, पर थोड़ा लालची और कंजूस था. उस के पड़ोस में रहता था महल में दूध सप्लाई करने वाला दूध वाला. एक दिन रसोइए ने दूध वाले से कहा, "भाई, हम महल में तुम्हारा इतना दूध लेते हैं, हमें अपने प्रयोग के लिए जो दूध देते हो, उस पर तुम्हें कुछ कमीशन देना चाहिए."

दूध वाला हतप्रभ रह गया. उस ने विनम्र स्वर में कहा, "महाराजजी, हम दूध में पानी नहीं मिलाते. इसी लिए क्या राजा और क्या रंक, सब के लिए हमारी दर एक जैसी है."

"अरे, यह सब बेकार की बात है. हमें तो तुम्हें कमीशन देना ही पड़ेगा."

"हम नुकसान कैसे बरदाश्त कर सकते हैं, महाराजजी?" दूध वाला बोला.

"महल में सप्लाई होने वाले दूध में थोड़ा पानी मिला दिया करो."

"रामराम...आप कैसी अनाचार और अधर्म की बात कर रहे हैं, महाराजजी? यह काम हम से नहीं होगा."

"नहीं कैसे होगा?" रसोइए ने आंखें तरेर कर कहा.

बस, थोड़ी सी तकरार हुई दोनों में, फिर बात खत्म. दूध वाला अपनी हठ पर अड़ा रहा. रसोइए ने उसे सीधा करने का अल्टीमेटम दे दिया.

और एक दिन रसोइए ने अपनी योजना को सफलतापूर्वक क्रियान्वित कर दिया. महल में आने वाले दूध में से काफी हिस्सा वह स्वयं पी जाता और

शेष दूध में उतना ही पानी मिला देता. एक दिन राजा को भोजन कराते हुए धीमे से कहा, "महाराज की जय हो. लगता है, आजकल दूध वाला पानी मिला दूध सप्लाई कर रहा है."

"हम को भी ऐसा ही लगता है. दूध में पहली. जैसी मलाई पड़ती ही नहीं." राजा ने स्वीकार किया.

"समझ में नहीं आता क्या किया जाए?"

"तुम ने दूध वाले से इस बारे में कहा?"

"कहा, महाराज, पर वह कहां स्वीकार करने लगा अपना अपराध?"

"वह क्या बोला?"

"कहने लगा, 'मैं तो एकदम शुद्ध दूध सप्लाई करता हूं.'"

"तो अब क्या किया जा सकता है?"

"महाराज, दूध वाले पर नियंत्रण रखने के लिए एक ऐसे अधिकारी की नियुक्ति कीजिए जो महल में दूध सप्लाई होने से पूर्व उस की जांच करे और शुद्ध व उचित दूध होने का प्रमाणपत्र

राजा को यह प्रस्ताव बेहद पसंद आया. उस ने रसोइए के बुद्धि चातुर्य की प्रशंसा की और रसोइए की पत्नी के भाई को राज्य का प्रथम 'दुग्ध स्तर नियंत्रक' नियुक्त कर दिया.

इस के बाद सब ठीक हो गया. रसोइए के घर मुफ्त दूध पहुंचने लगा. रसोइए की पत्नी भी खूब प्रसन्न थी क्योंकि उस के बेकार भाई को नौकरी मिल गई थी.

अब दूध वाला भी खुश था. वह एक सेर दूध रसोइए को मुफ्त देता और एक सेर देता दुग्ध स्तर नियंत्रक को, फिर उस में तीन सेर पानी मिलाता. इस तरह उसे भी एक सेर दूध का लाभ प्रतिदिन होने लगा.

राजा भी प्रसन्न थे. उन्हें पानी मिले दूध को पीने की आदत पड़ गई थी.

सावधान

इस स्तंभ के लिए समाचार-पत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें : सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : सावधान, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

सिपाही द्वारा महिला सिपाही से बलात्कार

पुलिस वालों की काम पिपासा का शिकार निरीह महिलाएं तो अकसर बनती ही हैं, किंतु रायपुर में एक सिपाही द्वारा एक महिला सिपाही के साथ बलात्कार करने की घटना भी प्रकाश में आई है.

बताया जाता है कि सिपाही नरेंद्रसिंह एवं महिला सिपाही शीला देवी स्थानीय पुलिस लाइंस में तैनात थे. तभी नरेंद्रसिंह ने अंधेरे और एकांत का फायदा उठा कर शीला देवी के साथ बलात्कार किया.

महिला सिपाही के शिकायत करने पर पुलिस अधीक्षक श्री विक्रम श्रीवास्तव ने नरेंद्रसिंह को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया. **—न्याय, अजमेर (प्रेषक: महेंद्र शर्मा)**

✦

नकली मेजर को सवा दो वर्ष की कैद

सेना का मेजर बता कर पुलिस विभाग के अधिकारियों पर भी असर डालने का असफल प्रयास करने वाले इलाहाबाद के 44 वर्षीय वशीम मुजफ्फर हसन खान को दो वर्ष तीन माह के सश्रम कारावास की सजा सुनाई गई है.

बताया जाता है कि वह बंबई से गोंदिया आया और रेलवे विश्रामगृह में रुक कर सब से पहले रेलवे थानेदार श्री वामनराव कुलकर्णी को अपने पास बुलाया और अपने को इंटेलिजेंस मेजर बता कर कहा कि वह यहां एक डाक्टर तथा एक वकील की, जिन पर पाकिस्तानी जासूस होने का शक है, जांच करने आया है.

उस ने पुलिस उप कप्तान श्री लानकर को भी फोन कर के यही बात कही. पुलिस उपकप्तान ने उस की बात पर विश्वास कर लिया और थानेदार श्री कुलकर्णी से कहा कि उस के ठहरने की अच्छी व्यवस्था कर दी जाए.

उस के पश्चात उस ने श्री कुलकर्णी व उन के सहयोगी पुलिस उपनिरीक्षकों के साथ फोन पर दबाव वाली भाषा में बातें कीं.

शक होने पर उसे थाने लाया गया, जहां सारी असलियत सामने आ गई और उसे गिरफ्तार कर लिया गया. बंबई पुलिस को उस की पहले से तलाश थी.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक: संध्या सहाय)

✦

डाकुओं ने धोखा दे कर तीन हरिजनों के हथियार छीने

हमीरपुर क्षेत्र में कुल पहाड़ पुलिस थाना से लगभग छः कि.मी. दूर हरिजनों के एक गांव में अपने आप को पुलिस के सिपाही बताने वाले सशस्त्र डाकुओं के एक गिरोह ने धावा बोला तथा तीन हरिजनों की तीन लाइसेंसशुदा बंदूकें तथा कारतूस छीन ले गए.

हथियारों को छीनने के बाद डाकुओं ने ग्रामीणों से कहा कि वे अपने बारे में पूछताछ के लिए थाने आएं.

डाकुओं द्वारा छीने गए हथियारों के मालिक जब थाने पहुंचे तो मालूम हुआ कि उन्हें ठगा गया है. —**भारत, इलाहाबाद (प्रेषक : सुबोध भारतीय)**

✦

बैरल में सोयाबीन के तेल की जगह पानी

क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि एक सरकारी संस्था खाद्य तेल के बैरल में पानी बेच रही है? मगर यह एकदम सच है.

अभी हाल ही में सराफा स्वर्णकार उपभोक्ता भंडार को मध्य प्रदेश राज्य वस्तु व्यापार निगम के गोदाम से परमिट पर एक बैरल सोयाबीन तेल सप्लाई किया गया.

पार्टी ने माल ला कर जब दुकान पर बैरल खोला तो यह देख कर उस के आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि बैरल में तेल के स्थान पर पानी भरा था. दुकानदार ने तुरंत जा कर निगम के संबंधित अधिकारी से शिकायत की.

उपभोक्ता भंडारों की यह भी शिकायत है कि तेल बैरल तौल कर नहीं दिए जाते एवं बैरल में प्रायः निर्धारित मात्रा से दोचार लीटर कम ही माल निकलता है. बैरलों में तेल की जगह पानी की शिकायत अन्य स्थानों से भी आ रही बताई जाती है. तेल का एक बैरल 1,915 रुपए का है.

—**युगधर्म, जबलपुर (प्रेषक : प्रह्लाद जसवानी)**

✦

✦ भाभी के नाम पर नौकरी

अपनी भाभी के नाम से उसी का मैट्रिक का प्रमाण पत्र दिखा कर दिल्ली राज्य उद्योग विकास निगम में एक महिला 1973 से कनिष्ठ सहायक के पद पर काम कर रही है.

पुलिस में इस सहायक तथा उस की शनाख्त करने वाले एक अवर सचिव के खिलाफ ठगी, जालसाजी और धोखादेही का मामला दर्ज किया गया है, जिस की जांच-पड़ताल पिछले चार महीनों से हो रही है.

इस महिला का प्रभाव कितना है, इस का अंदाजा केवल इस बात से लगाया जा सकता है कि गणतंत्र दिवस परेड में उसे अति विशिष्ट व्यक्तियों के बाड़े में बैठा देखा गया था.

विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि 1974 से 1977 तक वह अपने पति व पुत्र के नाम पर भी एल.टी.सी. (यात्राभत्ता) लेती रही है जब कि 1966 में ही उस का तलाक हो गया था और तब से ही उस का पति उस के साथ नहीं रहता है.

जालसाजी का मामला प्रकाश में आने पर निगम ने रजिस्ट्री से उस के घर निलंबन आदेश भेजे थे, जो वापस आ गए. उस ने वे आदेश लिए ही नहीं. उधर वह कार्यालय में उपस्थिति लगा कर बराबर वेतन ले रही है.

अपना नाम व अपने पति का नाम गलत लिखा कर और दूसरे का मैट्रिक का प्रमाण पत्र दिखा कर नौकरी ले लेने के बाद भी उस का प्रभाव इतना है कि सरकारी अधिकारी उस के खिलाफ कोई कारवाई नहीं कर पा रहे हैं.

उस के खिलाफ वजीरपुर में अपनी बहन के नाम एक शेड अलाट कराने तथा उस पर 25 हजार [illegible] है जब कि वहां कोई व्यवसाय शुरू नहीं किया गया.—**दैनिक हिंदुस्तान, दिल्ली (प्रेषक : सरोजिनी) (सर्वोत्तम)** ✦

राजस्थान का यह क्षेत्र संरक्षित प्रदेश घोषित किया गया है. फिर भी यहां पशुओं की सुरक्षा के साधन उपलब्ध कराने के प्रति सरकार का रवैया इतना उदासीन क्यों है?

राजस्थान के डोली धवा अभयारण्य में काले हिरण कितने सुरक्षित?

लेख • रमेश पारीक

राजस्थान की धरती न केवल शौर्य के लिए प्रसिद्ध है, अपितु जीवों के प्रति दया व पेड़पौधों तक की रक्षा के लिए मर मिट जाने का भी अपनेआप में गौरवशाली इतिहास समेटे हुए है.

भारत सरकार ने जिन 68 विभिन्न पशुपक्षियों को संरक्षित घोषित किया है उन में से 30 प्रकार के पशुपक्षी राजस्थान में और विशेषकर पश्चिमी क्षेत्र में उपलब्ध हैं. दुर्लभ पशुपक्षियों की दृष्टि से इस क्षेत्र में भारत में सर्वाधिक गोडावण, काले हिरण और चिंकारे हैं. काले हिरणों की रक्षा के लिए डोली धवा, खेजड़ली (जोधपुर) तालछापर, गजनेर (बीकानेर), डियरपार्क (चितौड़गढ़) सवाई माधोपुर आदि क्षेत्रों को अभयारण्य घोषित किया गया है जिन में डो

हिरणों की चौकसी करता हुआ गार्ड.

धवा अभयारण्य काले हिरणों की संख्या में शीर्ष पर है. सरकारी गणना के अनुसार यहां कुल 5,548 हिरण हैं.

जोधपुर से लगभग 40 किलोमीटर दूर बाड़मेर सीमा पर डोली धवा अभयारण्य मई, 1976 से आगामी 10 वर्षों के लिए संरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया है. इस क्षेत्र में 21 छोटेछोटे गांव शामिल हैं. राजस्थान सरकार की ओर से इन वन्य जीवों की रक्षा के लिए एक उड़नदस्ता, शिकारियों पर नजर रखने वाले दो चौकीदार तथा हैड गार्ड नियुक्त हैं जो अशिक्षित एवं अप्रशिक्षित भी हैं.

एक स्थानीय बिश्नोई : हिरणों की रक्षा करना हमारा धर्म है.
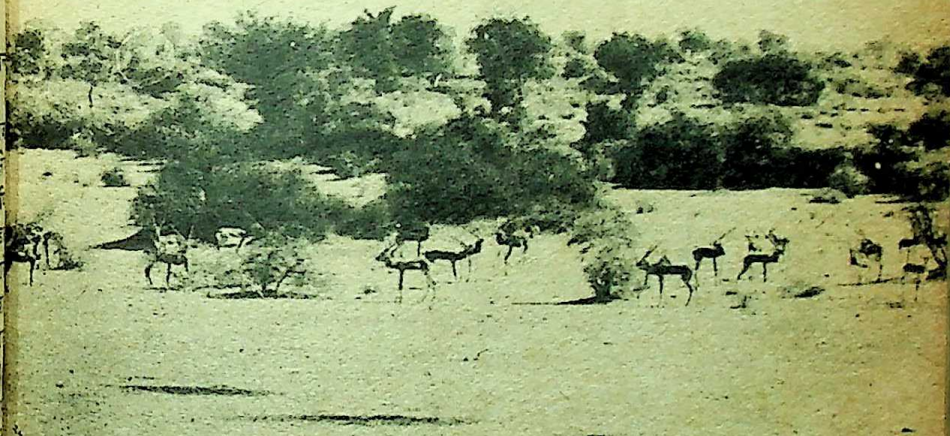
स्वछंद विचरण करता हुआ हिरणों का समूह.

यह चिंतनीय विषय है कि 424.76 वर्ग किलोमीटर में फैले इतने विशाल अभयारण्य में स्वतंत्र विचरण करने वाले हिरणों की रक्षा ये तीन व्यक्ति कैसे करते होंगे. सरकार की ओर से आत्मरक्षा के लिए इन लोगों के पास लाठी छोड़ कर कोई साधन उपलब्ध नहीं कराए गए हैं, जबकि शिकारियों के पास बंदूक, मोटर साइकिल, जीप आदि सक्षम साधन होते हैं. साधनों की कमी, उड़नदस्ते का जोधपुर में स्थायी पड़ाव और अकर्मण्यता के परिणामस्वरूप आए दिन हिरणों का अवैध शिकार होता रहता है. अगर शिकारी रंगे हाथों पकड़ा जाता है या कहीं शिकार होता है तो फिर जोधपुर वन विभाग को खबर की जाती है. तब

का जो स्वयं काश्त भी करते हैं, कहना है, "हिरण हमारे खेत में आकर फसल खाते हैं, नुकसान करते हैं. पर हम सोचते हैं कि वे अपने भाग्य का खा रहे हैं और हम अपने भाग्य का." इधर गार्ड कालू राम का मानना है, "हम तो सरकार के नौकर हैं. हमारे पास कोई साधन नहीं है, और तो और दूरबीन भी नहीं है. अगर विश्नोई न हों तो शिकारी हमें जान से मार दें." इस प्रकार एक तरफ धर्म और नैतिकता का दबाव और दूसरी तरफ लचरपचर ढांचे से जीव रक्षा की जा रही है. हिरण का शिकार करने वाले शौकीनों की अपेक्षा खाल का व्यापार करने वाले लोग अधिक हैं.

इसी प्रकार राजस्थान सरकार द्वारा डोली धवा अभयारण्य की सीमा से जुड़े खेजड़ली क्षेत्र को भी हाल ही में 3 दिसंबर, 1980 को अभयारण्य घोषित कर दिया गया है. यह क्षेत्र लगभग 91,927 वर्ग एकड़ है जो अपने में 18 गांवों को समेटे हुए है. यहां कुल 3,128 नरमादा काले हिरण तथा 3,587 चिंकारे हैं. इस क्षेत्र में भी विश्नोई लोगों का बाहुल्य है और वे अपने ही बलबूते पर अवैध शिकार रोकते रहे हैं.

एक व्यापक अनुमान के अनुसार संपूर्ण जोधपुर तहसील में दोनों अभयारण्यों को सम्मिलित कर लेने के पश्चात लगभग 40 हजार हिरण हैं. देखना यह है कि सरकार किस प्रकार, कितनी मुस्तैदी के साथ इतने विशाल भूभाग पर फैले हिरणों की रक्षा कर पाएगी.

गार्ड की झोपड़ी के निकट भोजन में व्यस्त हिरण,

राजस्थान सरकार ने मई, 1980 में अवैध शिकार की रोकथाम के लिए एक उच्चस्तरीय समिति भी गठित की थी, किंतु अभी तक तो उस की रिपोर्ट भी सामने नहीं आई. अगर समय रहते कारगर कदम नहीं उठाया गया तो हिरणों की संख्या दिन ब दिन कम होती जाएगी. ●

वाह रे तकिया कलाम!

मेरे मित्र को हर बात पर 'अच्छा मौका है' कहने की आदत है. एक दिन मैं बहुत परेशान था. मैं ने अपने उसी मित्र से कहा कि आज तो मैं इतना परेशान हूं कि आत्महत्या करने को जी चाहता है. मेरा मित्र तपाक से बोला, "अच्छा मौका है."

यह कहने के बाद वह बड़ा शर्मिंदा हुआ और फिर उस ने अपनी यह आदत भी छोड़ दी.

—वेद प्रकाश

✦

एक महाशय को हर बात में 'बड़ेबूढ़े ऐसा ही कह गए थे' कहने की आदत थी. उन की इस आदत से हम सब परेशान थे.

एक दिन उन के एक मित्र ने कहा, "यार, तुम भी पूरे गधे हो."

उस मित्र ने अभी इतना ही कहा था कि वह महाशय झट अपनी आदत के अनुसार बोल उठे, "हां, बड़ेबूढ़े ऐसा ही कह गए थे."

उन के इतना कहते ही सभी की हंसी छूट गई और मित्र महोदय की शक्ल देखने लायक हो गई.

—अनिलकुमार

✦

मेरा एक मित्र रहीम किसी भी बात के जवाब में कहता था, "आप की तमन्ना पूरी हो."

हमारा एक और मित्र बेरोजगार होने की वजह से काफी परेशान था. एक दिन मैं ने उस से पूछा, "क्यों, राकेश और क्या हाल है?"

इस पर वह निराश हो कर बोला, "यार, कहीं नौकरी नहीं मिल पाती. अब तो मर जाने को जी चाहता है."

उस के यह कहने पर रहीम अपनी आदत के मुताबिक जल्दी से बोला, "आप की तमन्ना पूरी हो."

—हनीभ म. छाया ●

क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति से परिचित हैं जिस का कोई तकिया कलाम हो? इस बारे में आप ने कभी कोई रोचक संस्मरण सुना हो तो उसे मुक्ता के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजिए : वाह रे तकिया कलाम! मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली- 110055.

अथ श्री चाटुकार व्रत कथा

व्यंग्य • प्रदीप मेहता

श्री पारब्रह्म परमात्मा के अवतार श्री भैयाजी कथा कह रहे हैं कि एक समय जनता का हित चाहने वाले नेताजी ने गांधी चौक नामक स्थान पर भाषण का आयोजन किया. निर्धारित समय से ठीक छः घंटे पश्चात नेताजी का फौज फाटे के साथ पदार्पण हुआ. नेताजी को आते देख कर पुलिस अधिकारी, अन्य शासकीय कर्मचारी, नगर के सेठसाहूकार आदि अपनी यथायोग्य सेवाएं अर्पित करने हेतु नेताजी के स्वागत में उठ कर खड़े हो गए. शास्त्रों में भी कहा गया है, "अतिथि देवो भव" अर्थात समागत अतिथि का देवता के समान सत्कार करना चाहिए.

तभी सभी तरह की उठापटक के मर्मज्ञ स्वागत समिति के अध्यक्ष ने नेताजी को साष्टांग प्रणाम किया और कहा, "प्रभो, दिनोंदिन जनता की परेशानी बढ़ती जा रही है. चीनी, अनाज, मिट्टी का तेल, पेट्रोल, वनस्पति घी कुछ भी नहीं मिल रहा है. उसे प्राप्त करने का उपाय बताइए. महाराज, सुना है व्रत और तपस्या से मनुष्य वांछित फल को प्राप्त करता है. सब कोई ऐसा कहते हैं. सो इस व्रत को करने की विधि हम आप के मुखारविंद से सुनना चाहते हैं."

सुन कर नेता जी बोले, "पूर्णतः अवसरवादी गुरुदेव ने कष्ट निवृत्ति का जो उपाय मुझे बताया था, वही आज मैं तुम्हें बता रहा हूं. तुम लोग मन को मुझ

में स्थिर कर के सुनो. एक समय पत्रकार महाराज परोपकार की भावना से कई राज्यों का दौरा करते हुए इस क्षेत्र में भी आए. यहां पर आ कर पत्रकार महाराज ने देखा कि लोक क्लेश पा रहे हैं. धनीमानी गरीबों का शोषण कर रहे हैं. अल्पसंख्यकों पर अत्याचार हो रहे हैं. तब पत्रकार महाराज दयार्द्र हो उठे. सोचने लगे 'इन का दुख कैसे दूर किया जाए.' ऐसा मन में सोच कर उन्होंने जनता जनार्दन से परिचर्चा करने की सोची. उन्होंने देखा जनसाधारण का पेट पीठ से चिपक गया है. आंखें आसमान में टिकी हुई हैं. मेहनती हाथ एकदम खुरदरे हो गए हैं. ज्यादातर बदन से नंगे हैं, कुछ ने जो कपड़े पहने हुए हैं, वे फटे हुए हैं.

"पत्रकार को देख कर लोग बोले, 'हे महाभाग, समाज के दर्पन, आज किस की कृपा से आप का यहां आगमन हुआ? आप के मन में जो भी हो, निस्संकोच कहो. हम आप के प्रश्न का उत्तर देंगे. आप के मन में परोपकार की भावना प्रतीत होती है.' सत्य कहा जाता है, 'सत्य हृदय नवनीत समाना, कहा कविन् पर कहन न जाना.'

इस चराचर पर मानवमात्र के कल्याण का एक ही रास्ता है—चाटुकारिता व्रत. इस व्रत को करने से सभी दुख दूर हो जाते हैं और सुखसमृद्धि बढ़ती है. सो हे पाठको, आप भी नेताजी के मुखारविंद से निकले इस दुखमोचन व्रत के शब्दरूप को पढ़ कर अपना जीवन सुखमय बना डालो...

"पत्रकार को लोगों ने घेरे कर बताया कि राशन की दुकान पर दिन भर खड़े रहने के बाद भी सौ ग्राम चीनी नहीं मिल पाती. अन्य जरूरी चीजें भी गधे के सिर के सींगों की तरह लापता हैं. वनस्पति घी तो छूमंतर ही है. कोयला भी ऐसे गायब है जैसे बादलों में छिप गया चांद. बिजली दिन में रहेगी, पर रात के समय विधवा की मांग की तरह गायब हो जाएगी. हर जगह सरकारी दफ्तरों की तरह बिना भेंट दिए काम नहीं होता. डाक व तार महीनों बाद मिलते हैं. हस्पताल मुर्दाघर होते जा रहे हैं. पुलिस वाले अपराधियों के साथ मिल कर बलात्कार करते हैं. सड़कें दुर्घटनास्थल हो गई हैं. सारांश यह कि चहुं ओर अब भ्रष्टाचार की गूंज है. हम लोग करें तो क्या करें?

"पत्रकार ने इन हृदय विदारक घटनाओं को अपने टेपरिकार्डर पर रिकार्ड कर लिया तथा समस्याओं का हल निकालने का आश्वासन दे कर अंतर्धान हो गए.

"**जनता** के दुखदर्द का समाचार देश के समाचारपत्र में सचित्र प्रकाशित हुआ तो सरकारी दल चौंका. इसे विरोधियों की काली करतूत बता कर इस से निबटने के लिए तत्काल दल की आपातकालीन बैठक बुलाई गई. खूब चर्चा हुई. चिंता व्यक्त की गई. प्रस्ताव पेश किए गए. योजनाएं बनीं पर कुछ न हो पाया. दुखी जनता ने सरकार बदल डाली."

नेताजी ने यह कहानी सुनाने के बाद कहा कि "गुरुदेव ने मुझे इस स्थिति से निबटने का जो उपाय बताया था वही हे जनप्रतिनिधियो, मैं आप को बता रहा हूं. ध्यान से सुनो. इस से मानव समाज का कल्याण होगा, यह एक ऐसा उत्तम व्रत है जो महापुण्य को प्रदान करने वाला है. यह व्रत है चाटुकारिता का व्रत. कैसी भी परिस्थिति हो उस में अपना काम निकालने का व्रत. जो मनुष्य इस व्रत को करेगा, वह सब दुखों से छूट जाएगा और सदा सुख को प्राप्त करेगा."

नेताजी बोले, "मैं ने गुरुदेव से कथा सुन कर पूछा, 'हे महाराज, इस व्रत का फल क्या है? इस की क्या विधि है? कब करना चाहिए. सब विस्तारपूर्वक कहिए.'

"गुरुदेव बोले, 'हे परम चाटुकार, यह समस्त दुख तथा शोक को नष्ट करने वाला व धनधान्य को बढ़ाने वाला व्रत है. इस व्रत के करने से परम शक्ति प्राप्त होती है. किसी भी दिन और किसी भी समय यह भक्ति व श्रद्धा के साथ किया जा सकता है. चाटुकार वही होता है, वत्स, जो अपने अंतःकरण को कमीज की जेब में बंद रखता हो. सदा बड़ों की हां में हां मिलाने की कला में पारंगत हो. थूक कर चाटने की भी कला जानता हो. यह कला अभ्यास से आती है, अतएव लाजशरम का परित्याग करने में किसी भी प्रकार का संकोच नहीं करना चाहिए.

"'जनप्रतिनिधि सर्वशक्तिमान का साक्षात अवतार होता है. चमचागीरी के माध्यम से जनप्रतिनिधि को प्रसन्न करना ही चाटुकारिता का परम व्रत है. जनप्रतिनिधि आत्म प्रशंसा से पुलकित होते हैं. जब वे प्रसन्न होते हैं तो भूमि, परमिट, कोटा का आबंटन और स्कूल, कालिज, सड़क व पुल निर्माण का आश्वासन दे डालते हैं. उन के स्वागत के समय जितने ही स्वागत द्वार लगाए जाते हैं, उतने ही उस इलाके में नलकूप या बिजली के खंभे लगाने का वचन दिया जाता है.'

"भक्तो, यह निश्चय जानो, फोटो खींचने से सड़क बनाने तक के कार्य का ठेका चाटुकारों के रिश्तेदारों को ही मिलता है. अतएव जनप्रतिनिधि अर्थात नेता का गुणगान जोरशोर से करना चाहिए. अपनी जयजयकार सुन कर वह

धन्य हो जाते हैं. जो कर्मचारी, ठेकेदार उन की सेवा में रुचि नहीं दिखाते, उन्हें निकट भविष्य में काफी दुख भोगना पड़ता है.

"अतएव, हे प्रबुद्ध भक्तो, पुराने शास्त्रों में लिखा है कि बुद्धिमान वही होता है जो नेता की अगाड़ी व घोड़े की पिछाड़ी जाते समय मस्का पुराण का नियमित पाठ करता हो. जनप्रतिनिधि की सेवा ही देश की सच्ची सेवा है. आवश्यक वस्तुएं प्राप्त करने से ले कर बच्चों को अच्छी नौकरी दिलाने तक के लिए मक्खनबाजी आवश्यक है. मक्खन की चिकनी सड़क पर जनप्रतिनिधि की आत्मा फिसल जाती है. जैसे ही उस की आत्मा फिसलती है, वैसे ही चाटुकार की मनोकामना पूरी हो जाती है.

"नेता के आशीर्वाद से सच्चे चाटुकार की कुटिया देखते ही देखते बड़े महल में बदल जाती है. इस के विपरीत जो जनप्रतिनिधि की भावनाओं की अवहेलना करता है, उसे भारी दुख भोगना पड़ता है. उस पर झूठे आरोप लगाए जाते हैं. नौकरी छूट जाने से बच्चों के साथ दरदर ठोकरें खानी पड़ती हैं. खाली पेट वालों को पुलिस भी नहीं छोड़ती. भक्तो, थाने के क्रियाकलाप से आप लोग भलीभांति परिचित ही हैं.

"**संक्षेप** में चाटुकारिता का व्रत सत्य व्रत का ही रूप है. भक्तों को आसानी से चमत्कारी रूप दिखाता है. देखते ही देखते संकट कट जाते हैं. घर में लक्ष्मी आती है. सम्मान मिलता है."

भैयाजी ने कथा समाप्त करते हुए कहा, "हे भक्तो, मैं इस व्रत का प्रचार परचे के माध्यम से कर रहा हूं. इस व्रत की महत्ता, गुण, वाणी, अनुवाद से नहीं दर्शाई जा सकती. जनसाधारण भूखे, निर्बल रह कर भूख जैसे तुच्छ, निम्नस्तरीय विषय से मुंह मोड़ कर इसे जान सकता है. सुखशांति प्राप्त करने की यही एक विधि जनसाधारण के पास शेष रह गई है." ●

एक सहायक इंजीनियर को अपने कार्यालय में काम करने वाले एक मीटर रीडर का निलंबन का आदेश निकालना था. नियमानुसार निलंबन का आदेश उसी व्यक्ति को संबोधित कर के लिखा जाता है, जिस को निलंबित करना हो तथा मूल कापी उस को दे कर उस की प्रतिलिपियां उच्चाधिकारियों को सूचना के लिए भेज दी जाती हैं.

किंतु व्यस्तता के कारण उक्त आदेश लिखने वाले क्लर्क ने पत्र अधिशासी अभियंता को संबोधित कर लिख दिया और प्रतिलिपि अन्य अधिकारियों को (मीटर रीडर सहित) भेज दी.

जब अधिशासी अभियंता ने सहायक इंजीनियर द्वारा अपने निलंबन का आदेश पढ़ा तो हंसते हुए कहा, "चलो, आज से अपनी तो छुट्टी हो गई."

—शंकरलाल मीणा

✦

मेरे दफ्तर में मेरा एक मित्र बहुत चंचल स्वभाव का है. वह अकसर अपनी सीट से उठ कर दूसरों की सीट पर जा कर कार्य करने वालों की पीठ थपथपा कर बड़े प्रेम से कहता है, "बहुत अच्छे, इसी प्रकार काम करते जाओ, फिर देखो मैं तुम्हें कहां से कहां पहुंचवा देता हूं."

एक दिन दफ्तर छूटने के बाद भी एक व्यक्ति बहुत देर तक मेज पर झुका कार्य करता रहा. मेरा वह मित्र भी इत्तफाक से किसी काम से दफ्तर में ही था. उस व्यक्ति को देख कर वह अपनी आदत के अनुसार उस के पास गया और प्यार से बोला, "शाबाश, बहुत अच्छे, इसी तरह काम करते जाओ, फिर देखो मैं तुम्हें कहां से कहां पहुंचवा देता हूं."

जब उस व्यक्ति ने अपना सिर उठाया तो मेरे मित्र की सिट्टीपिट्टी गुम हो गई. वह हमारे दफ्तर के बड़े साहब थे.

जब अगले दिन उन्होंने यह घटना दफ्तर में सुनाई तो सब बहुत हंसे, किंतु मेरा मित्र बहुत शर्मिंदा हुआ. इस के बाद मेरे मित्र ने कभी किसी को उक्त वाक्य नहीं कहा.

—परेशकुमार पंडित

✦

एक दिन हमारे दफ्तर के हैड क्लर्क ने चपरासी से कहा कि एक गिलास पानी तो देना. इस पर चपरासी ने पूछा, "गिलास कहां है?"

यह सुन कर हैड क्लर्क ने कहा, "आप बैठिए, मैं अभी ढूंढ़ कर देता हूं."

हैड क्लर्क का इतना कहना था कि सभी कर्मचारी जोर से हंस पड़े. बेचारा चपरासी शर्मिंदा हो कर गिलास तलाश कर के पानी लेने चला गया. **—सुभाष गर्ग**

उन दिनों मैं एक कंपनी में काम कर रही थी. कुछ ग्राहकों के लिए मशीनें जल्दी ही भेजनी थीं. किंतु किसी कारणवश मेरे विभाग में काम कुछ धीरे चल रहा था. काम तेज करवाने के लिए एक दिन मेरे बास ने मुझे तथा एक और इंजीनियर को बुलाया और काफी देर तक हमें समझाते रहे. अंत में उन्होंने कहा कि यदि काम दो दिन में न हुआ तो हमें यह समझना चाहिए कि सब की नौकरी खतरे में है.

जब दो दिन खत्म होने को आ गए और काम के समाप्त होने की कोई आशा नहीं थी तो मैं बास को यह बात बताने के लिए उस के कक्ष में गई. पर वहां उन का कहीं पता न चला. काफी ढूंढ़ने के बाद मैं ने अपने साथी से पूछा कि क्या उसे मालूम है कि बास कहां हैं.

तब उस ने बड़ी गंभीरता के साथ कहा, "हां, वह नौकरी ढूंढ़ने गए हैं."

—स. किशोर

✦

✦ हमारे दफ्तर में दो चपरासी हैं. एक चपरासी कार्यालय के बाहर के काम करता है और दूसरा कार्यालय में ही पानी पिलाने और फाइलें आदि निकालने का कार्य करता है.

एक दिन एक अफसर बहुत देर तक एक फाइल निकालने के लिए चपरासी को बुलाते रहे. किंतु चपरासी उस समय किसी दूसरे ही काम में उलझा हुआ था. इसलिए काफी देर तक वह अफसर के पास नहीं पहुंच सका. इस से क्षुब्ध हो कर वह अफसर प्रबंधक महोदय के पास पहुंचे और कहने लगे, "साहब, दो घंटे से एक फाइल की वजह से मेरा काम रुका हुआ है, लेकिन चपरासी है कि सुनता ही नहीं."

यह सुन कर प्रबंधक महोदय उस अफसर के साथ स्वयं बाहर आए और पूछने लगे, "फाइल किस अलमारी में है?"

उस अफसर ने सामने खड़ी एक अलमारी की ओर इशारा कर दिया.

तब प्रबंधक महोदय ने खुद अलमारी से वह फाइल निकाली और उसे अफसर की मेज पर रख कर बोले, "हमें अपना कार्य खुद करने में शर्म महसूस नहीं करनी चाहिए. अपना काम कर हम छोटे नहीं हो जाते. समय मूल्यवान है. अगर चपरासी नहीं आया था तो तुम्हें इस तरह समय बरबाद नहीं करना चाहिए था."

यह कह कर वह केबिन में चले गए. वह अफसर हतप्रभ हो कर प्रबंधक महोदय को जाते हुए देखते रहे.

—सुशील बत्रा (सर्वश्रेष्ठ)

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है. क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 और सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए:
दास्तानेदफ्तर, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

थोड़ा झुकना भी सीखिए

आप छोटे हों या बड़े, जहां तक हो छोटीछोटी बातों को तूल न दें. अगर किसी स्थिति में झुकना भी पड़े तो अपमान न समझें. वरना थोड़ी सी अकड़ आप के लिए खासी तकलीफदेह साबित हो सकती है...

लेख . अरुणेंद्र भारती

हमारे ससुरजी पिछले तीन वर्षों से परेशान हैं. उन के सौतेले भाई ने मुकदमा दायर कर रखा है. तीन वर्ष पूर्व ससुर का अच्छाखासा व्यापार चल रहा था. उस वक्त उन की और उन के सौतेले भाई की काफी पटती थी. कोई भी काम एकदूसरे से पूछे बिना नहीं किया करते थे. लेकिन बाद में भाइयों में बंटवारे का प्रश्न उठ खड़ा हुआ. मेरे ससुर के सौतेले भाई थोड़ी जमीन ज्यादा चाहते थे. पर मेरे ससुर मान नहीं रहे थे. नतीजा यह हुआ कि दोनों तरफ से मुकदमा दायर हो गया.

कई बार मैं ने अपने ससुर को समझाया भी, "आप थोड़ी जमीन दे क्यों नहीं देते, आखिर चाचाजी आप के भाई ही तो हैं." लेकिन ससुरजी मेरी बात नहीं माने. उन्होंने कहा, "मैं बड़ा भाई हूं. छोटे भाई ने पहले मुकदमा किया है. फिर भला मैं क्यों झुक जाऊं?"

नहीं झुकने का नतीजा यह हुआ कि आज तक मुकदमा चल रहा है. अच्छाखासा चल रहा व्यापार खत्म हो गया. दोनों भाई परेशान हैं. पहले जहां दुकान में बैठ कर हजारों रुपए कमाया करते थे, अब हर समय मुकदमे की फाइल बगल में दबाए कचहरी या वकील के चक्कर काटा करते हैं. हाकिमों को सलाम किया करते हैं. मेरी बात मान कर थोड़ा झुक गए होते तो आज इस तरह की

नौबत आने का अवसर ही नहीं था.

मेरे एक मित्र हैं शिवचंद प्रसाद. मैं उन्हें 'प्रसाद भाई' कह कर पुकारा करता हूं. प्रसाद भाई जब तक नौकरी करते रहे, उन के और उन की पत्नी के बीच मधुर संबंध बने रहे, लेकिन एक कारण विशेष से उन की नौकरी चली गई. पत्नी उन्हें ताने देने लगी, "मुझे मायके पहुंचा दीजिए. अपने बड़े भाई भाभी के ऊपर बोझ बन कर आप रहिए, मैं नहीं रहना चाहती." प्रसाद भाई ने उन्हें एक थप्पड़ जड़ दिया. प्रसाद भाई की पत्नी घर में रखी कीटनाशक दवा पी गई. संयोग था कि वह बच गई. पर फिर भी दोनों की अकड़ बनी रही. वह बिना प्रसाद भाई की अनुमति लिए अपने मायके चली गई. आज तीन साल से वह वहीं मायके में है. मैं बारबार प्रसाद भाई से कहता हूं कि, "आप भाभी को क्यों नहीं लाते?" हर बार प्रसाद भाई यही जवाब देते हैं, "मैं पति हूं. वह पत्नी है. फिर भला मैं क्यों झुकूं."

प्रसाद भाई यदि थोड़ा झुक भी जाएं तो उन का क्या नुकसान हो जाएगा? वर्षों से दांपत्य जीवन में आई दरार क्षण भर में पट जाएगी. पतिपत्नी के बीच आपसी संबंध फिर जुड़ सकेंगे लेकिन झुकना तो दूर अपनी पत्नी को एक पत्र तक लिखना उन्हें मंजूर नहीं.

नम्रता का द्योतक

किसी के आगे झुकना छोटेपन का बोध नहीं कराता. यह नम्रता का बोधक है. अहंकार आदमी को झुकने नहीं देता. अहंकार दूर हो जाए तो हर आदमी कठिन से कठिन समस्या को स्वयं ही सुलझा सकता है.

कंचन के पिताजी पिछले कई वर्षों से परेशान हैं. परेशानी का कारण यह है कि कंचन की शादी निर्धारित वर से नहीं हो पा रही है. लड़के वाले 25 हजार से कम दहेज लेने को तैयार नहीं. संयोग से कंचन के होने वाले पति से मेरी मुलाकात हो गई. मैं ने पूछा, "आप कंचन से ब्याह क्यों नहीं कर लेते?" इस पर तरुण कहने लगा, "कुछ भी है. हम

दांपत्य जीवन में दरारें आने का एक आम कारण पति-पत्नी के अहमों का टकराव भी देखा गया है. अगर उन में कोई भी थोड़ा नम्रता से काम ले तो पारिवारिक जीवन शांतिमय रह सकता है
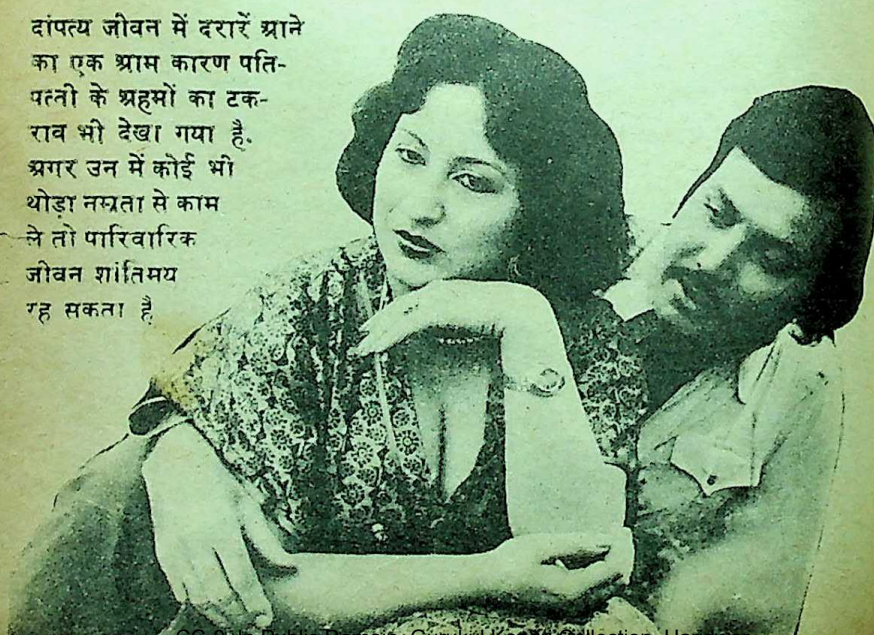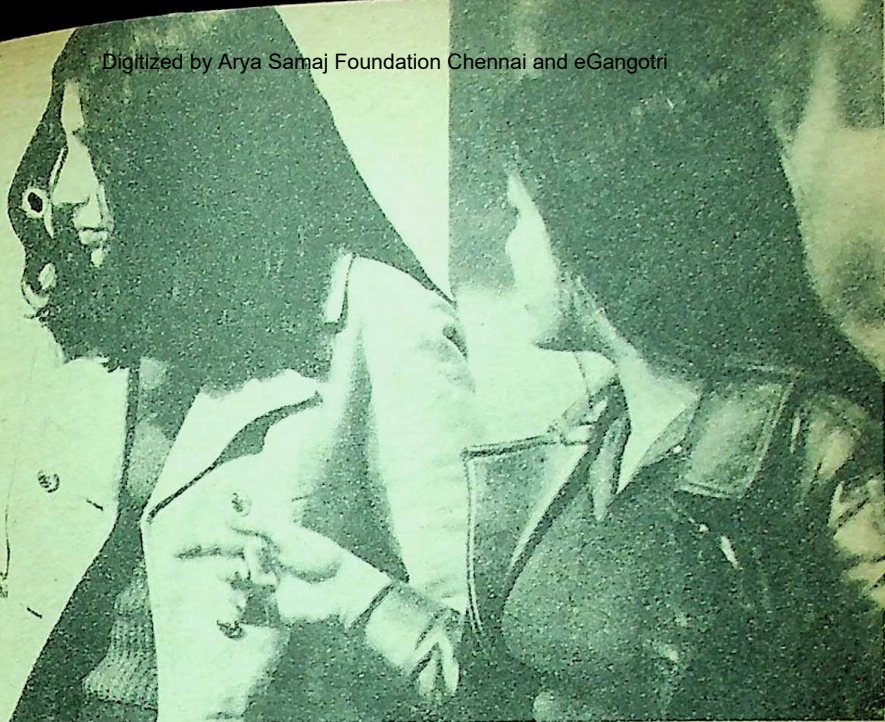
किसी भी तरह की अकड़ या जिद दोस्ती में रुकावट बन सकती है. जहां तक हो सके इस से बचने की कोशिश करें.

हैं तो लड़के वाले. किसी भी कीमत पर झुक नहीं सकते?"

थोथे अहंकार

कंचन के पिता लड़की वाले हैं. इसलिए उन्हीं का झुकना जरूरी है. तरुण के पिता लड़के वाले हैं, इसलिए उन का झुकना अपमान है. यह सब भ्रांत थोथे अहंकार की ही तो बात है. यदि तरुण के पिताजी थोड़ा झुक जाएं तो दो घर मिल जाएं. लेकिन समाज की रूढ़ियां हैं कि लड़के के पिता लड़की के पिता के समक्ष झुकना नहीं चाहते. यदि लड़के वाले यह झूठा अहं छोड़ दें, कुछ झुकना सीख जाएं तो न जाने कंचन जैसी कितनी लड़कियों का भला हो जाए.

एक बार मेरे पिताजी निगम के चुनाव में खड़े हुए. तगड़ा मुकाबला था. दोनों तरफ से पूरी तैयारियां थीं. हमारे और मारपिटाई की नौबत आ गई. लोगों ने दूसरे प्रत्याशी को समझाया लेकिन वह बैठने के लिए तैयार नहीं हुए. कहने लगे, "हम चुनाव जरूर लड़ेंगे, झुक नहीं सकते." बाद में मैं ने अपने पिता को समझाया और कहा, "आप ही झुक जाएं. नहीं तो कई आदमियों की जान जा सकती है. इस तरह के आपसी संघर्ष की जरूरत क्या है?" मेरी बात उन्हें भा गई. मतदान केंद्र पर जा कर घोषणा कर आए कि विपक्षी प्रत्याशी को ही अपना मत दें. इस तरह जहां स्थिति तनावपूर्ण थी, अब संभल गई. सब शांतिपूर्ण ढंग से हो गया. यह थोड़ा झुक जाने का ही चमत्कार था.

आप भी थोड़ा झुकना सीखिए और देखिए कि आप के जीवन में कितना बड़ा चमत्कार होता है. आप की बहुत सी समस्याएं पलक झपकते सहज ही सुलझ जाएंगी. ●

भवाई लोक नृत्य में पारंगत

नृत्यांगना अनुपमा

लेख • सैयद मीठेश

अनुपमा नृत्य और परिवार में से नृत्य को अधिक अहमियत देने का दावा करती हैं. मगर कला के प्रति इतनी आस्था रखने वाले कलाकारों के होते हुए भी भवाई नृत्य शैली धीरेधीरे खत्म क्यों होती जा रही है?

लोक नृत्यों का एक अपना ही आकर्षण है. राजस्थानी लोकनृत्यों की परंपरा तो काफी पुरानी है. विशेष रूप से भवाई लोगों के नृत्य अपनी जीवंत शैली के लिए बहुत ही प्रसिद्ध हैं.

सिर पर घड़े रख कर भवाई नृत्य प्रस्तुत करती अनुपमा.

भवाई लोक नृत्य में पारंगत अनुपमा पंजाबी ने इस क्षेत्र में काफी नाम कमाया है. अनुपमा पंजाबी दूरदर्शन की जानी-मानी कलाकार भी हैं. उन का कहना है कि वह इस लोक नृत्य को पैसा कमाने के उद्देश्य से नहीं करतीं, बल्कि उन्हें इसे प्रस्तुत करने में एक विशेष प्रकार का आनंद मिलता है. नृत्य देश की संस्कृति, रीतिरिवाजों व वहां के निवासियों के स्वभाव के प्रतीक होते हैं. यही कारण है

नृत्य की एक अन्य मुद्रा में मंच पर रखे नोट को उठाती हुई अनुपमा.

कि विदेशी लोग इस नृत्य से अत्यधिक प्रभावित होते हैं.

नृत्य प्रदर्शनों के पीछे बढ़ते व्यावसायिक दृष्टिकोण के बारे में अनुपमा पंजाबी का विचार है कि पुराने समय में राजामहाराजा कलाकारों को इनाम देते थे और इस तरह उन्हें आर्थिक अभाव का सामना नहीं करना पड़ता था. आज ऐसा कुछ भी नहीं है. कलाकार अपनी कला के प्रति कितना ईमानदार है, इस का पता इस बात से लगाया जा सकता है कि उस का उद्देश्य कला प्रदर्शित करना है या पैसा कमाना.

अनुपमा के प्रदर्शन

अनुपमा अपने प्रदर्शनों में नृत्य व नाटक दोनों ही प्रस्तुत करती हैं. वह मटकों को सिर पर रख कर नृत्य करती हैं.

अभी तक सिर पर सात मटके रख कर ही नृत्य किया जाता रहा है, पर उन्होंने इस क्षेत्र में नए प्रयोग किए हैं और नौ मटके रख कर काफी तेजी से नृत्य किया है.

नृत्य करतेकरते वह मटकों को सिर से उतार कर फिर सिर पर रख लेती हैं. दो बोतलों व गिलासों पर खड़े हो कर नृत्य करना, परातों पर खड़े हो कर घुमावदार नृत्य, हाथों में दीयों से सजी थालियां घुमाना व तलवार की धार पर नृत्य करना उन के प्रदर्शन के विशेष आकर्षण होते हैं.

वह अपने नृत्य प्रदर्शन के दौरान घड़ों को सिर पर रखे हुए ही मंच पर पड़े नोट को मुंह से उठा लेती हैं.

भवाई नृत्य में काफी परिश्रम करना पड़ता है. तलवार की धार पर चलना बहुत ही कठिन काम है. काफी मेहनत व अभ्यास के बाद ही इस में प्रवीणता हासिल होती है. हर अंग को लोचदार बनाने के लिए रोज कसरत करना जरूरी है.

नृत्य की एक और कठिन मुद्रा—तलवार की धार पर चल कर नृत्य करती अनुपमा.

अनुपमा ऐसा मानती हैं कि नृत्य शरीर व मस्तिष्क के लिए बहुत अच्छी दवा साबित होता है और इस से हर चिंता और तनाव खत्म हो जाता है.

भवाई नृत्य की उत्पत्ति

भवाई नृत्य की उत्पत्ति के बारे में कहा जाता है कि केकड़ी (कोटा) में नागाजी नामक एक जाट को बचपन से ही गाने व नाचने का शौक था. जाटों ने उसे अपनी जाति से बाहर निकाल दिया और कहा, "आज से तुम हमारे भवाई हो."

इसी तरह से मीणा, भील, कुम्हार, रैगर, बोले, 'चमार, गूजर आदि जातियों से भी भवाई निकले और इन की एक अलग जाति बन गई. अब यह जाति

लगभग समाप्त हो गई है. अब और सभी जातियों में से भी लोग आ रहे हैं.

चर्चित नृत्यांगनाएं

राजस्थान की चर्चित भवाई नृत्यांगनाओं में कृष्णा व्यास का भी नाम आता है. पुरुषों में तो पांचसात नर्तकों को ही शोहरत हासिल हुई है. इस नृत्य के विकास में उदयपुर स्थित भारतीय लोक कला मंडल के प्रसिद्ध कलाकार श्री देवीलाल सामर काफी योगदान दे रहे हैं.

शुरू में महिलाएं इस नृत्य में शामिल नहीं होती थीं. पहले नृत्य के साथ नगाड़े, सारंगी, नफीरी आदि बजाए जाते थे, पर आजकल मंजीरे व ढोलक का प्रयोग किया जाता है. गीत की धुनें लोक संगीत पर आधारित होती हैं और उन्हें बजाने के लिए हारमोनियम का प्रयोग किया जाता है.

भवाई नृत्यों में बोटाबोटी, सूरदास, लोड़ीवड़ी, डोकरी, शंकटिया, ढीकाजी, बाघाजी, ढोलामारू, कमल का फूल, बोतल व तलवार नृत्य आते हैं.

चूंकि यह व्यक्ति विशेष का नृत्य होता है, अतः विभिन्न मुद्राओं में संगीत के अनुरूप ही भाव प्रदर्शन तथा ताल व लय के साथ पद संचालन का खास ध्यान रखना पड़ता है.

'अनुपमा भवाई नृत्य के अलावा कत्थक व ठुमरी में भी रुचि लेती हैं. उन्होंने एक बंगला फिल्म में भी अभिनय किया है. वह नृत्य को ममता से भी बढ़ कर मानती है. शायद यही कारण है कि शादी को 15 साल बीत जाने पर भी संतान न होने का उन्हें कोई दुख नहीं है.

अनुपमा का कहना है, "मेरे पति से मेरे अच्छे संबंध हैं, फिर भी यदि मुझ से नृत्य व पति में से किसी एक को चुनने के लिए कहा जाए तो मैं नृत्य को ही चुनूंगी."

कला के प्रति इतनी आस्था रखने वाले कलाकारों के होते हुए भी यह नृत्य शैली धीरेधीरे खत्म होती जा रही है. ●

लेखकों के लिए सूचना

● सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.

● प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.

● प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.

● प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.

● स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.

● मुक्ता और सरिता में पूर्णविराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें :

संपादकीय विभाग

मुक्ता, दिल्ली प्रेस,
नई दिल्ली-110055.

ग्रामीण क्षेत्रों के प्राथमिक विद्यालय

लेख • बलवंत चौधरी

गांव में अकसर बच्चे को छः वर्ष का होने पर ही स्कूल में दाखिल किया जाता है. वहां प्राथमिक विद्यालय में ही बच्चा अपना पहला पाठ सीखता है. शिक्षा के प्रति रुचि पैदा करना तथा भविष्य में आगे बढ़ने की प्रेरणा देना उन्हीं प्राथमिक विद्यालयों का कार्य है. यहीं से बच्चों का मानसिक विकास शुरू होता है.

कहने का अर्थ यह है कि प्राथमिक शिक्षा ही बच्चों के भविष्य की आधारशिला है. प्राथमिक विद्यालयों द्वारा बच्चों को दिया जाने वाला ज्ञान, उन के पथ में

बच्चों में शिक्षा के प्रति रुचि पैदा करना तथा भविष्य में आगे बढ़ने की प्रेरणा देना प्राथमिक विद्यालयों का दायित्व समझा जाता है. पर क्या हमारे ग्रामीण क्षेत्रों के प्राथमिक विद्यालयों की शिक्षा का स्तर देख कर दृढ़ नींव की कल्पना करना महज एक सपना ही नहीं लगता?

दीपक जलाना है. परंतु खेद की बात यह है कि इसी प्राथमिक शिक्षा का स्तर आज इतना गिर गया है कि दृढ़ नींव की कल्पना करना महज एक सपना है.

ज्यादातर प्राथमिक विद्यालयों में प्रायः दो ही अध्यापक होते हैं, स्कूल के समय में दोनों अध्यापक या तो गप्पें मारते हैं या फिर कुर्सी पर बैठेबैठे झपकी लेते रहते हैं. उन का बस एक ही काम है, स्कूल लगते ही प्रार्थना करा देना तथा इस के बाद हिंदी की या अन्य कोई किताब खुलवा कर बच्चों को कोई भी पाठ जोरजोर से पढ़ने के लिए कह देना. आधी छुट्टी के बाद तख्ती पर सुलेख लिखने के लिए कह देना.

बस...यही दिनचर्या है आज के अधिकतर प्राथमिक स्कूलों की.

कमजोर नींव

बच्चा मात्रा की गलती करता है, उस को ठीक कर देना भर इन का कर्त्तव्य है. लेकिन इस गलती को वह सुधारें कैसे इस बात से इन्हें कोई मतलब नहीं.

इन छोटीछोटी कमजोरियों के कारण ही बच्चे को आगे चल कर भारी क्षति उठानी पड़ती है.

इस लेख के सिलसिले में जब मैं छात्रों से मिला तो बड़े अजीब तरह के किस्से सुनने में आए. बानगी पेश है.

अध्यापक का दायित्व केवल पाठ पढ़ा देना ही नहीं बच्चों की जिज्ञासा शांत करना भी होता है. मगर इस दायित्व को अध्यापक प्रायः नजरअंदाज कर जाते हैं.

गणित : एक सिरदर्द विषय
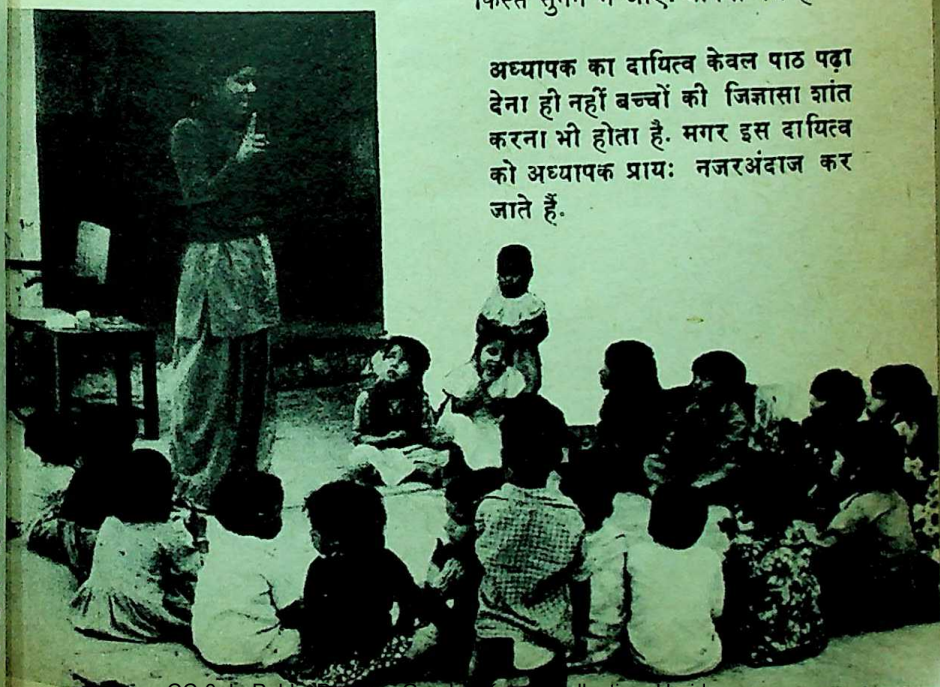
एक छात्र ने बताया, मास्टरजी गणित का सवाल समझा रहे थे. कुछ देर बाद ही वह कहीं अटक गए. अभी आधा सवाल ही हल हुआ था कि उन्होंने पूछा, "उत्तर कितना है?" एक छात्र ने उत्तर देखा और बता दिया, "दस" मास्टरजी का उत्तर आता था, बीस. उन्होंने झट से कहा, "हां अब दिक्कत क्या है? इसे 'दो' से भाग दे दो, उत्तर अपने आप आ जाएगा."

यह 'दो' कहां से आ गए बच्चों को पता नहीं चल पाया. अगर कोई छात्र यह पूछने की 'हिमाकत' करता तो वे पुस्तक का एक खूब कठिन सा प्रश्न उसे हल करने को कहते और उस के हल न कर पाने पर उस की अच्छीखासी मरम्मत कर देते.

जांच कार्य

पांचवीं कक्षा की अर्धवार्षिक परीक्षा हुई थी. यों ही एक बच्चे की हिंदी की उत्तर पुस्तिका देखने को मिली. पढ़ कर चौंक गया—प्रश्नपत्र में एक प्रश्न था, 'शेर से भिड़ंत' कहानी का सार एक पृष्ठ में लिखिए.

छात्र का उत्तर इस प्रकार से था—किसी जंगल में एक शेर और एक भिड़ंत रहते थे. शेर बड़ा शक्तिशाली था. तभी उसे जंगल का राजा कहा जाता था. भिड़ंत भी काफी शक्तिशाली होता है. एक दिन शेर और भिड़ंत में लड़ाई हो गई. काफी देर तक युद्ध होता रहा. अंत में शेर जीत गया और भिड़ंत हार गया.

शिक्षक ने अपनी आंखों को बंद कर के या बिना पढ़े ही (समय क्यों गंवाए) इस के लिए छात्र को पांच में से तीन अंक दे रखे थे. छात्र खुश था. उसे पता नहीं चला कि जो कुछ उस ने लिखा है, वह सही भी है या नहीं. उसे पता करने की जरूरत भी क्या है? उसे तो अंकों से मतलब है, जो उसे मिल ही गए. फिर उत्तर चाहे सही हो या गलत.

... को प्रश्न को समझने ... उत्तर देने की विधि के बारे में कुछ ज्ञान नहीं होता है और न ही ... उत्तर देने की विधि के बारे में सम... जाता है. पहली कक्षा से चौथी ... तक अपनी इच्छानुसार उत्तीर्ण ... अनुत्तीर्ण किया जाता है.

पांचवीं कक्षा की परीक्षा दूसरे ... में होती है. वहां भी मिलमिला कर ... परीक्षा परिणाम 90 प्रतिशत निक... लेते हैं. पांचवी कक्षा के बाद छात्र ... क्या होगा, इस बात से उन्हें कोई ले... देना नहीं होता. शायद आप भी जा... हों, हर साल कितने ही ऐसे छात्र ... मैट्रिक की प्राइवेट परीक्षा में बैठते हैं ... आठवीं भी उत्तीर्ण किए नहीं होते.

क्या तू प्रधान मंत्री बनेगा?

जब एक छात्र को कक्षा में चुप... बैठे देखा तो पूछ ही लिया, "आगे ... कर क्या बनोगे?"

छात्र कुछ देर मेरे चेहरे को नि... रता रहा, फिर उदास सा बोला, "कु... नहीं."

"क्यों?" तुरंत ही मैं ने दूसरा प्र... किया.

"मास्टरजी कहते हैं, खेती कर औ... मस्त रह, कौन सा तू प्रधान मंत्री ... जाएगा?" उस ने उत्तर दिया.

और ज्यादा कुरेदने पर छात्र ... बताया कि "मैं अपनी चौथी कक्षा में ... से होशियार लड़का हूं. कुछ समझ में ... आने पर मास्टरजी से पूछ लेता ... जब एक कठिन प्रश्न दोबारा पू... तो मास्टरजी झुंझला कर बोले, 'प्रधा... मंत्री तो बनने से रहा, करनी तो तु... खेती ही है, फिर क्यों मेरा मगज चा... रहा है?'"

अध्यापक द्वारा लट्ठमार भाषा ... कहे गए इन शब्दों ने बच्चे का हौसला ... पस्त कर दिया. उन्होंने सोचा भी ...

होगा कि बालमन इन शब्दों को किस रूप में ग्रहण करेगा और उस के विकास में यही शब्द कितने बाधक साबित होंगे.

बिना लक्ष्य के क्या औचित्य है जीवन का? यह सब समझनेसमझाने की शायद इन्हें न तो जरूरत है और न ही फुरसत. समझ में नहीं आता अगर कोई छात्र भविष्य के लिए कल्पना संजोए और उसे पूरा करने के लिए अध्यापक से मदद ले तो इस में बुराई क्या है? लेकिन छात्र के मार्ग को सरल बनाने के बजाए ऐसे अध्यापक एक ही शब्द द्वारा उसे धराशायी कर देते हैं.

इस दृष्टांत से स्पष्ट होता है कि बच्चों के प्रति अब अध्यापक में कोई आत्मीयता नाम की चीज नहीं रह गई है. इस बात का प्रमाण एक अध्यापक द्वारा कहे गए निम्नलिखित शब्द हैं, "हमें तो वेतन समय पर मिलता रहे, फिर चाहे सारे ही फेल हो जाएं."

समय के पाबंद

हमारे गांव के स्कूल में जो अध्यापक हैं, वह पास ही के गांव के हैं. अतएव स्कूल की छुट्टी के बाद रोजाना अपने गांव चले जाते हैं. उस समय स्कूल सात बजे लगते थे.

मैं ने अध्यापकजी को दस बजे स्कूल आते देखा तो पूछ बैठा, "क्या बजा है, मास्टरजी?"

"सात बजने वाले हैं!" मास्टरजी ने समय बताया.

जब भी कोई उक्त प्रश्न पूछता, मास्टरजी का सदैव यही जवाब होता. कितना अजीबोगरीब जवाब है यह—पर सत्य. मैं भी उन की इस बात पर आश्चर्यचकित रह गया और सोचने पर विवश हो गया कि ऐसे समय के पाबंद सभी अध्यापक हों तो देश उन्नति के शिखर पर पहुंच जाए.

ट्यूशन : एक और बीमारी

शहरों में तो ट्यूशन का प्रचलन था ही, अब यह 'रोग' गांवों में भी फैलने लगा है. गांव के अध्यापक स्कूल में ही (स्कूल समय के अलावा) छात्रों को बुला लेते हैं, 10 रुपए से ले कर 25 रुपए तक प्रति छात्र फीस निर्धारित कर देते हैं. जो छात्र ट्यूशन नहीं पढ़ता उसे कक्षा में तरहतरह के प्रश्न पूछ कर तंग करने लगते हैं. नहीं बता पाने पर खूब धुनाई की जाती है. यह फार्मूला बच्चों को जबरन ट्यूशन के लिए मजबूर करने को अकसर इस्तेमाल किया जाता है.

ट्यूशन के बाद फिर छात्र भी निश्चित हो जाते हैं. ट्यूशन पढ़ने वाले छात्रों को परीक्षा में आने वाले सभी

विद्यालय का समय होते ही विद्यार्थी आ पहुंचे. आदतवश प्रार्थना के लिए पंक्ति में भी खड़े हो गए मगर अध्यापक कब आएंगे कोई नहीं जानता.

प्रश्न पहले ही बता दिए जाते हैं. इन छात्रों को ऐसे प्रश्न महत्वपूर्ण प्रश्न कह कर बताए जाते हैं.

परीक्षा में आने वाले प्रश्नों का परीक्षा से पूर्व ही पता लगा लेने की बात छात्रों के मस्तक में चक्कर लगाती रहती है. वे आगे चल कर भी साल भर पढ़ाई न कर के इसी चक्कर में रहते हैं कि प्रश्नों का पता तो चल ही जाएगा.

ट्यूशन प्रथा जहां एक ओर अध्यापकों के लिए कमाई का जरिया है, वहीं दूसरी ओर गरीब अभिभावकों के लिए मुसीबत है. वे लोग जो बड़ी मुशकिल से किसी तरह किताबों और फीस के पैसे जुटा पाते हैं, वे ट्यूशन का भार कैसे सहन कर सकते हैं?

अध्यापक अकसर इसी लिए स्कूल में नहीं पढ़ाते कि अधिकतर छात्र ट्यूशन करेंगे, छात्र भी इसी लिए नहीं पढ़ना चाहते कि ट्यूशन तो करनी ही है.

खेलों के प्रति अरुचि

खेलों के प्रति रुचि उत्पन्न करने में प्राथमिक विद्यालयों का कोई हाथ नहीं होता. ग्रामीण खेल कबड्डी, खोखो, दौड़, तैराकी आदि हैं. गांवों में अब प्राथमिक स्कूलों द्वारा टूर्नामेंट का आयोजन भी नहीं किया जाता. पहले कई पड़ोसी गांवों के स्कूलों द्वारा आपस में मिल कर खेलों का आयोजन किया जाता था. विजेताओं को इनाम दिए जाते थे, जिस से बच्चों में खेलों की रुचि उत्पन्न होती थी और भविष्य में वे योग्य खिलाड़ी बनने का प्रयास करते थे.

लेकिन अब गांवों के प्राथमिक स्कूलों में खेल आयोजित नहीं किए जाते. इसी कारण बहुत से छात्र आगे चल कर भी खेलों के प्रति उदासीन ही रहते हैं. उन्हें खेल के लिए उत्साहित करने के बजाए अध्यापक अकसर ऐसा कहते सुने जाते हैं, "हाथपैर तुड़वाने की इच्छा है क्या? क्या धरा है खेलने में? चल आ कर अपनी किताबें पढ़ यही काम आएगा."

अध्यापकों की इस बात से खेलना छोड़ कर किताब खोल कर जाता है, चाहे पढ़े या न पढ़े.

पुस्तकालय की पुस्तकें : व्यर्थ का खर्च

प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों के पढ़ने के लिए मनोरंजक और शिक्षाप्रद पुस्तकें होती हैं. जैसे वीर शिवाजी, राणा प्रताप, दुर्गादास, रानी लक्ष्मीबाई, चाणक्य, चंद्रगुप्त आदि की जीवनियां. इन पुस्तकों के पढ़ने से बच्चों में साहस पैदा होता है. साथ ही पढ़ने में रुचि उत्पन्न होती है. लेकिन ये पुस्तकें बंद अलमारियों में सीलन और दीमक का भोजन बनती हैं. हर साल इन स्कूलों में कई सौ रुपयों की पुस्तकें आती हैं, अलमारियों में बंद हो जाती हैं. इस खर्च से क्या फायदा, जब छात्र इन का उपयोग ही नहीं कर पाते.

जब उन से पूछा जाता है कि आप छात्रों को ये पुस्तकें पढ़ने के लिए क्यों नहीं देते, तो सीधा सा उत्तर मिलता है, "इन छात्रों में पढ़ने की कोई रुचि ही नहीं है. कभी मांगते ही नहीं. क्या इन को जबरदस्ती पढ़ाएं?"

सांस्कृतिक कार्यक्रम

शनिवार के दिन प्राथमिक विद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं. लेकिन नाममात्र के लिए. अकसर पूछा जाता है कि, "कौन क्या सुनाएगा?"

इस प्रश्न पर सभी छात्र चुप्पी साध लेते हैं. एकदो बार पूछने पर जब कोई तैयार नहीं होता तो छुट्टी कर दी जाती है. छात्र खुशीखुशी बस्ता उठा कर घर दौड़ जाते हैं.

क्या यह सांस्कृतिक कार्यक्रम होता है. इस पर एक अध्यापक ने अपना मत प्रकट किया है, "जब कोई छात्र कुछ सुनाने को तैयार ही नहीं होता तो हम क्या करें?"

अध्यापक तो बच्चों को लिखने का आदेश दे कर बजाए निगरानी रखने के कहीं चले जाते हैं. नतीजा—बच्चे विद्यालय भी आए और ज्ञान हासिल भी न कर सके.

इन अध्यापकों को सभी छात्रों को कुछ न कुछ याद करने के लिए कहना चाहिए, जिस से बच्चे शनिवार के दिन तैयारी कर के आएं. उन पर थोड़ा दबाव भी डाला जाना चाहिए. एक बार झिझक खुल जाने पर फिर वे हमेशा सुना सकते हैं, मात्र एक बार पूछने पर तो कुछ सुनाने के लिए बड़े भी तैयार नहीं होते. यदि बच्चे नहीं सुनाते हैं तो इस की जिम्मेदारी किस पर है?

एक पहलू यह भी...

प्राथमिक विद्यालय आजकल लगभग हर गांव में है. अकसर बहुत से गांव पास-पास होते हैं. पड़ोसी गांवों के अध्यापक आपस में संबंध बनाए रखते हैं. अगर कभी अचानक 'स्कूल निरीक्षक' किसी स्कूल में निरीक्षण के लिए आता है तो उस स्कूल के अध्यापक तुरंत पड़ोस के स्कूल में इस बात की सूचना देने के लिए दौड़ा देते हैं. ताकि वे अपने सभी कार्यों को ठीक व दुरुस्त कर सकें. चाहे कुछ ही देर के लिए सही, सारी व्यवस्था इस प्रकार की जाती है कि कमी की कोई गुंजाइश ही नहीं नजर आती. निरीक्षक के चायनाश्ते का भी इंतजाम कर दिया जाता है. बाद में निरीक्षक सब तरह से आश्वस्त हो वापस लौट जाते हैं क्योंकि सभी कुछ तो ठीक है.

शिक्षा विभाग को चाहिए कि गांवों में शिक्षा की गिरती हालत की तरफ ध्यान दें. शिक्षा से विमुख होते छात्रों में शिक्षा के लिए रुचि पैदा करें. ट्यूशन की बीमारी पर, जो कोढ़ की तरह फैल रही है, रोक लगाई जाए. इसे जारी रखने वाले अध्यापकों से सख्ती की जाए. जब डाक्टरों की निजी प्रैक्टिस पर रोक लगाई जा सकती है तो इस पर रोक क्यों नहीं लगाई जा सकती?

बच्चे की नींव प्राथमिक विद्यालय ही है. अगर बच्चे की नींव ही कमजोर हुई तो वह जीवन में हर पग पर लड़खड़ाएगा. आश्चर्य नहीं, आठवीं दसवीं तक पहुंचते ही वह भरभरा कर गिर ही पड़े.●
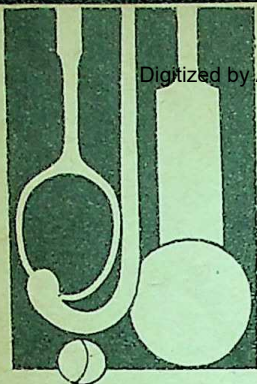
खेल समीक्षा

क्या एशियाई खेलों के लिए भीख मांगना जरूरी है?

जैसेजैसे नई दिल्ली में 1982 में होने वाले एशियाई खेलों का समय नजदीक आता जा रहा है, वैसे-वैसे आयोजन व्यवस्था, स्टेडियमों का निर्माण और इन तमाम मदों में होने वाले खर्च के ब्यौरे रहस्यपूर्ण होते जा रहे हैं. फिलहाल इन खेलों के आयोजन से जुड़ा हर व्यक्ति यही दावा कर रहा है कि एशियाई खेल सही समय पर होंगे

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी : कुछ देश हमारी आर्थिक मदद करने को तैयार हैं या भीख देने को?

और पूरी शान के साथ होंगे.

लेकिन इस शान के लिए भीख [illegible]कार करने की नौबत आ गई है. जन[illegible] 1980 में चुनाव जीतने के बाद इं[illegible] सरकार ने दावा किया था, "एशि[illegible] खेल आयोजित करना देश के [illegible] प्रतिष्ठा का सवाल है और इस के [illegible] कितना भी पैसा खर्च करना पड़े, सर[illegible] इसे सफल बनाने में कोई कोरकसर न[illegible] छोड़ेगी."

तब यह अनुमान था कि ए[illegible]याई खेलों पर 40 से 50 करोड़ [illegible] तक का खर्च आएगा. लेकिन जब [illegible] ब्यौरे जमा किए गए तो पता लगा कि [illegible] सप्ताह के आयोजन पर कुल खर्च बैठे[illegible] लगभग 250 करोड़ रुपया.

अब 30 मार्च को लोक सभा [illegible] केंद्रीय शिक्षा मंत्री शंकरराव भाऊ[illegible] चव्हाण ने सूचना दी है, "एशियाई [illegible] पर केंद्र सरकार का सिर्फ 54 करोड़ [illegible] लाख रुपया खर्च होगा और यह पैसा [illegible] सरकार को पूरा नहीं लगाना होगा. [illegible] देश हमारी आर्थिक मदद करने को तै[illegible] हैं. कुवैत के अमीर द्वारा दी गई [illegible] करोड़ रुपए की मदद को सरकार [illegible]कार कर चुकी है. जापान की दो [illegible] ने उपकरण व इलेक्ट्रोनिक साजोसा[illegible] देने की पेशकश की है."

दान की रकम के सहारे एशि[illegible] खेल करने का यह नया सिलसिला [illegible] है. 1970 व 1978 में बैंकाक में एशि[illegible] खेल दान की रकम के बल पर हुए [illegible]

तब भारत ने ही इस स्थिति की आलोचना की थी.

पिछले दो मौकों पर तो एशियाई खेलों में हिस्सा लेने वाले हर देश ने आयोजन व्यय का थोड़ाथोड़ा भार उठाया था लेकिन इस बार की मदद पूरी तरह राजनीतिक लगती है और अगर इसे भीख की संज्ञा दी जाए तो गलत नहीं होगा. कुवैत की मदद भारत को अरब देशों की जायजनाजायज मागें मानने के लिए निश्चित रूप से विवश करेगी.

अगर शुरू से ही योजनाबद्ध ढंग से काम किया जाता तो कम पैसों में बिना किसी से भीख लिए आसानी से एशियाई खेल किए जा सकते थे. लेकिन आज जो अनिश्चितता की स्थिति है, उस की जिम्मेदारी लेने को कोई तैयार नहीं है. एशियाई खेलों के आयोजन का जिम्मा भारत को मिलने के बाद चार बार नई सरकार बन चुकी है, चारों बार नई समितियां बनी हैं, नए चेहरे सामने आए हैं और इसी के साथ लोगों की जवाबदेही भी बदली है. ऐसे में बढ़िया तो यह होगा कि बजाए कुछ देशों की भीख स्वीकार करने के किसी एक देश को ही एशियाई खेल करने का ठेका दे दिया जाए. भारत की अरब चरण चुंबन की नीति को देखते हुए कोई भी अरब देश यह खर्च आसानी से उठाने को तैयार हो जाएगा.

रंगभेद अभी खत्म नहीं

एक बार फिर गोरे देशों ने स्पष्ट कर दिया है कि रंगभेद की नीति जब तक दक्षिण अफ्रीका से खत्म नहीं होगी तब तक उस के साथ किसी भी किस्म के खेल संबंध कायम नहीं किए जाएंगे. लेकिन जिस ढंग से इन सरकारों ने फैसला किया है उस से लगता है कि रंगभेद से उन्हें इतनी चिढ़ नहीं है जितना कि उन्हें इस बात का डर है कि अगर उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के साथ खेल संबंध कायम होने का समर्थन किया तो उन के देश में राजनीतिक विवाद छिड़ जाएगा. आज भी मानवीय आधार पर नहीं बल्कि राजनीतिक आधार पर ही दक्षिण अफ्रीका की रंगभेद की नीति को कोसा जा रहा है.

न्यूजीलैंड के प्रधान मंत्री राबर्ट मुल्डून ने हाल ही में एक रेडियो भेंट में कहा, "जुलाई में न्यूजीलैंड आने वाली दक्षिण अफ्रीका की रगबी टीम का मैं विरोध करूंगा क्योंकि इस से हमारे देश में समस्याएं पैदा हो सकती हैं और अन्य राष्ट्रमंडलीय देशों के साथ हमारे संबंध बिगड़ सकते हैं." आस्ट्रेलिया की सरकार ने भी लगभग इन्हीं वजहों से आस्ट्रेलिया की एक प्राइवेट क्रिकेट टीम का दक्षिण अफ्रीका का दौरा रद्द कर दिया है.

आस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री माइकल फ्रेजर : रंगभेद को बढ़ावा आखिर कब तक?
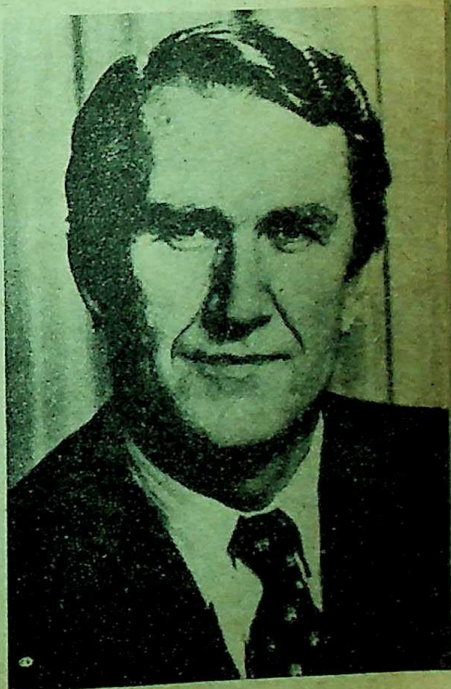
क्या पैकर ने सचमुच क्रिकेट का अहित किया है?

सिडनी (आस्ट्रेलिया) की अदालत में अंपायर लू रोअन ने कहा, "कैरी पैकर बेहद घमंडी व सनकी आदमी है. उस की मान्यता है कि वह पैसे से दुनिया के हर व्यक्ति को खरीद सकता है." रोअन उस मुकदमे की सुनवाई के दौरान गवाही दे रहे थे जिस में आस्ट्रेलियन क्रिकेट बोर्ड द्वारा पैकर के टी. वी. चैनल को टेस्ट मैचों के प्रसारण का तीन साल का अनुबंध दिए जाने के निर्णय को आस्ट्रेलियन ब्राडकास्टिंग कमीशन ने चुनौती दी थी.

कैरी पैकर का नाम आज विश्व क्रिकेट में अनजाना नहीं है, कुछ लोग उसे क्रिकेट का मसीहा मानते हैं तो कुछ क्रिकेट की हत्या करने वाला मक्कार व्यक्ति.

1977 में आस्ट्रेलिया के क्रिकेट बोर्ड ने उसे टेस्ट मैचों के प्रसारण का अधिकार नहीं दिया हालांकि इस के लिए वह सारी शर्तें पूरी कर चुका था. विरोधस्वरूप उस ने दुनिया के नामी क्रिकेट खिलाड़ियों को आकर्षक पारिश्रमिक दे कर विश्व क्रिकेट श्रृंखला की बुनियाद रखी. दो साल तक यह विवाद चला. 1979 में कहीं जा कर दोनों पक्षों में समझौता हुआ और पैकर के टी. वी. चैनल नं. नौ को तीन साल का अनुबंध मिल गया. इस पर आपत्ति की आस्ट्रेलियन ब्राडकास्टिंग कमीशन ने. मामला अदालत में है और लगता है कि जब तक कोई समझौता हो पाएगा, अनुबंध की अवधि भी खत्म हो चुकी होगी.

यह सारा ही मामला आस्ट्रेलियाई क्रिकेट का अंदरूनी विवाद रहा. लेकिन इसे पूरे विश्व क्रिकेट का विवाद बना दिया गया. हालांकि पैकर ने क्रिकेट का कुछ भी नहीं बिगाड़ा. उलटे उस ने एक दिन के निर्धारित ओवर वाले मैचों की लोकप्रियता बढ़ाई, रात्रि मैचों की शुरुआत कराई और क्रिकेट खिलाड़ियों को बढ़िया पारिश्रमिक दिलाने में मदद की. आज पूरे विश्व में क्रिकेट खिलाड़ियों को एक मैच खेलने का जितना पैसा मिल रहा है, पांचसात साल पहले उस का आधा भी नहीं मिलता था. और यह सब पैकर की बदौलत हुआ.

हाल ही में आस्ट्रेलिया में यह अफवाह उड़ी है कि अगर पैकर मुकदमा हार जाता है तो वह विश्व क्रिकेट श्रृंखला को दोबारा आयोजित करने लगेगा. पैकर ने इस बात से इनकार किया है. आस्ट्रेलियाई क्रिकेट बोर्ड से उलझने की वजह से वह पहले ही अपनी उंगलियां जला चुका है. दो साल तक विश्व श्रृंखला आयोजित कर के वह लाखों डालर का घाटा उठा चुका है और अब वह ... ही ऐसी हिमाकत करे.

कैरी पैकर : विश्व श्रृंखला आयोजित करने में लाखों डालर का घाटा उठाना पड़ा.

आप के पूरे परिवार के लिए

विश्व सुलभ साहित्य

द्वारा प्रस्तुत उत्कृष्ट पुस्तकें

मृच्छकटिकम्
शूद्रक का ईसापूर्व की पहली शताब्दी में लिखा गया वह नाटक जिस के पात्र राजारानी न हो कर जनसाधारण हैं.
रु. 12.00

भटकता राही
स्पेन अफ्रीका व अन्य कई देशों की यात्रा विवरण के साथ ही भारतीयों के प्रति विदेशियों के व्यवहार की झलक देखिए.
रु. 5.00

दीवान ए गालिब
गालिब की शायरी –का प्रत्येक शेर के साथसाथ भावार्थ अनुवाद संग्रह.
रु. 6.50

उद्यान की रूपरेखा
सरल सुबोध भाषा में उद्यान विषयक ज्ञान देने वाली अद्वितीय पुस्तक.
रु. 5.00

स्वर के दीप
मनमोहक चित्रों से सुसज्जित मन को छूने वाले गीतों का संग्रह.
रु. 5.00

हाकी
हाकी की रुचि रखने वालों के लिए संपूर्ण जानकारी देने वाली पुस्तक रु. 3.00

जय कश्मीर
भारतीय सेना के पराक्रम की अमर गाथा, इस महाकाव्य में पहली बार गीतों के रूप में. रु. 7.50

हिंदू समाज के पथभ्रष्टक तुलसीदास
हिंदू समाज के पथ दर्शक माने जाने वाले संत कवि की वास्तविकता क्या थी? इस पुस्तक में पढ़िए.
रु. 8.00

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

VSS 103

तीन या तीन से अधिक पुस्तक लेने पर 15 प्रतिशत तथा डाक खर्च की छूट या

अप्रैल (द्वितीय) 198
मुक्ता
राजस्थान का बीमार परमाणु बिजलीघर
मध्य प्रदेश में पुलिस असंतोष
मिजोरम समस्या का समाधान क्या है?
छात्र समस्याओं
का हल
14 APR 1981

नव वधू को नसीहत

पीएनबी में बचत करने वाली महिला द्वारा

विवाह के अवसर पर मुझे उपहार के रूप में काफी रकम मिली। मैंने इसे पंजाब नैशनल बैंक की **बहुलाभकारी तथा वृद्धावस्था जमा योजना** के अन्तर्गत जमा करा दिया। अब यह रकम बढ़ते-बढ़ते इतनी बड़ी हो गयी है कि उसे हम मकान खरीदने आदि जैसी किसी बड़ी जरूरत के लिये काम में ला सकते हैं।

क्यों नहीं तुम भी, इस योजना से लाभ उठातीं।

रकम 100/- रुपये के गुणितों में 12 महीनों से लेकर 120 महीनों तक की किसी भी अवधि के लिये, जो कि तीन महीनों की गुणितों में हो, जमा करा सकती हो।

अधिक जानकारी के लिए हमारी निकटतम शाखा से सम्पर्क करें।

पंजाब नैशनल बैं

(भारत सरकार का

...भरोसे का

GN.79-PR -HIN

मुक्ता

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ
अप्रैल (द्वितीय) 1981
अंक : 354

लेख

कथा साहित्य

कविताएं

स्तंभ

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स. प. प्रा. लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मुक्ता नाम रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा (केवल टिकट नहीं) आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

मूल्य : एक प्रति : 2.75 रुपए, एक वर्ष : 55.00 रुपए. विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 रुपए.

मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एम—12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

संपादक के नाम

मार्च (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'भाषायी विवाद में धधकता बिहार' (लेख: आनंद भारती) से लगता है कि इंदिरा कांग्रेस भाषायी विवाद बढ़ाना अपने लिए हितकर समझती है. एक तरफ तो वह इस बात से इनकार करती है कि उर्दू केवल मुसलमानों की भाषा है, दूसरी ओर मुसलमानों की संख्या को उर्दूभाषियों की संख्या मान कर बिहार में उसे द्वितीय भाषा का दर्जा प्रदान करती है. राज्य पुनर्गठन आयोग के अनुसार, "यदि किसी राज्य में द्वितीय भाषा के बोलने वालों की संख्या 30 प्रतिशत या उस से अधिक होगी तो वह द्विभाषी राज्य होगा." इस दृष्टि से भी राज्य सरकार का यह कदम अनुचित तथा निंदनीय है.

ऐसा प्रतीत होता है कि इंदिरा कांग्रेस ने हिंदी की प्रगति में रोड़ा अटकाने का निश्चय कर रखा है. एक ओर बिहार में 10 प्रतिशत लोगों की भाषा उर्दू को द्वितीय भाषा का दर्जा दे दिया गया, दूसरी ओर पंजाब के 40 प्रतिशत भाषियों की भाषा को इस दर्जे से वंचित कर दिया गया है. सत्ताधारियों की हिंदी विरोधी नीति का ही परिणाम है कि संविधान में 1965 तक के निर्धारित समय में हिंदी अंगरेजी के स्थान पर राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित नहीं हो पाई. उलटे संविधान में संशोधन कर उसे लंबे समय तक के लिए इस पद से दूर कर दिया गया है. —शकुनचंद गुप्त

फरवरी (द्वितीय) अंक में 'मुंह खोलते ही मौत' (लेख : सगीर किरमानी) दिल हिला देने वाला रिपोर्ताज है. यह लेख उन लोगों की आंखें खोल देने के लिए काफी है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से फौजी या राष्ट्रपति शासन प्रणाली की वकालत कर बैठते हैं. वर्तमान समय में राष्ट्रपति शासन प्रणाली की वकालत करने वालों को इयान स्मिथ, बोकासा, खुमैनी एवं जिया उल हक जैसों के कारनामे अवश्य ही पढ़ लेने चाहिए. —अमीर अहमद खान

फरवरी (द्वितीय) अंक में 'साक्षात्कार में जाने से पहले' (लेख : दयानंद अरोड़ा) में लेखक ने दो महत्वपूर्ण तथ्यों को नजरअंदाज कर दिया है. ये तथ्य हैं : अंगरेजी पोशाक व अंगरेजी में बातचीत करना.

अंगरेजी पोशाक को ले कर बंगला में 'इंटरव्यू' नाम से एक फिल्म भी बन चुकी है. इस में नायक को नौकरी इसलिए नहीं मिल पाती कि वह बजाए कोटपतलून के धोतीकुरता पहन कर गया था.

इसी तरह भारत जैसे देश में भारतीय भाषा न जानने वाला तो राष्ट्रपति भी हो सकता है, पर अंगरेजी न जानने वाले को चपरासी की नौकरी भी मुशकिल से मिलती है. —कस्तूरचंद जैन

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :
संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055

फरवरी (प्रथम) अंक में 'पटसन उत्पादक किसान' (लेख : विजय अग्रवाल रजनीश) ने मेरे अंतर्मन को छू लिया. यह जान कर बहुत दुख हुआ कि पटसन के उत्पादक किसानों को सुविधाएं प्रदान करने तथा उन को उन के श्रम का अधिकाधिक मूल्य दिलवाने के लिए सरकार की ओर से गठित सहकारी समिति के सरकारी कर्मचारी तथा समिति से संबंधित अन्य लोग न केवल उन को उन के श्रम का न्यूनतम मूल्य दे कर लूटते हैं बल्कि उन को अत्यधिक कष्ट भी पहुंचाते हैं. मूल्य के मामले में तो बेचारे सीधेसादे गरीब किसान ठगे ही जाते हैं लेकिन अपने स्वार्थ से मतांध इस प्रतिष्ठान के अधिकारी 'ढलता' के नाम पर भी पटसन काट कर हड़प जाते हैं और किसानों को लूटतेठगते हैं.

—अज्ञात

लेख 'पटसन उत्पादक किसान' में लेखक ने जो कुछ लिखा है वह बिलकुल सही है. सहकारी समितियों के जिन अधिकारियों को किसानों का रक्षक बनाया गया है, यदि वे ही भक्षक बन जाएं तो किसान किस के सहारे अपनी नैया पार लगाएगा? किसान तो लेते और देते समय दोनों ही बार मार खाता है. इसी लिए तो उस की गरीबी अभी तक उस के साथ है.

—अमरचंद रावण

जबवरी (द्वितीय) अंक में 'राष्ट्रभाषा के प्रति षड्यंत्र' (लेख : हनुमानसिंह राठौर) में लिखे इस अंतिम वाक्य से मैं बिलकुल सहमत हूं कि हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि हमारी कोई अपनी रष्ट्रभाषा नहीं है.

स्वतंत्रता के बाद हमारे समाज में एक ऐसा वर्ग पनपा है जो अंगरेजी ज्ञान को ही विश्व का सर्वोत्तम ज्ञान समझता है. व्यक्तिगत रूप से मैं इस वर्ग को 'अल्सेशियन वर्ग' कहता हूं. उन के अंगरेजी बोलने से हमें कोई कष्ट नहीं है. दुख तो यह

सोच कर होता है कि यह वर्ग अंगरेजी बोलने में गर्व महसूस करता है. साथ ही यह वर्ग बड़े गर्व के साथ स्वीकारता है कि "हम हिंदी नहीं समझबोल सकते," हालांकि यदि इन के पीछे पागल कुत्तों को दौड़ा दिया जाए तो यह हिंदी में ही कहेंगे, "बचाओ...बचाओ!"

किंतु लेख में एक कमी यह अखरी है कि लेखक ने इस विषय पर सरकारी नीतियों के संबंध में बहुत कम लिखा है. अंगरेजियत की हवा डेढ़ मिनट में उतर सकती है, यदि सरकार आज ही कानून पास कर दे कि हर स्तर पर शिक्षा का माध्यम हिंदी होगा और सरकारी तथा गैरसरकारी कार्यालयों में अनिवार्य रूप से सारा कार्य हिंदी में होगा.

संभवतः कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि हिंदी में पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं. किंतु जब पुस्तकों का महत्त्व ही नहीं है तो कोई पुस्तकें छपवा कर भला करेगा भी क्या? माध्यम हिंदी होते ही सारी पुस्... तुरंत उपलब्ध हो जाएंगी.

वैसे जिस देश का प्रथम नागरि... (राष्ट्रपति) ही वहां की राष्ट्रभाषा... जानता हो, वहां के अन्य नागरिकों ... दोष देना किसी भी दृष्टि से न्यायोचित... तर्कसंगत नहीं है. —प्रदीप ट...

मुक्ता—सरिता के स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता, सरिता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने रोचक अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजते समय स्पष्ट और सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. साथ ही यह भी लिख कर भेजें कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है. भेजी गई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में होनी चाहिए.

लेख 'राष्ट्रभाषा के प्रति षड्यंत्र' ... अंतिम पंक्तियां कि "अगर आप भी ... षड्यंत्र में शामिल हैं तो इस से बाह... निकलिए. यदि बाहर निकलने की ... में हिम्मत नहीं है तो फिर यह स्वीका... कर लीजिए कि हमारी कोई अपनी राष्ट्र... भाषा नहीं है," उन व्यक्तियों पर तीव... व्यंग्य है जो अंगरेजी बोलनेलिखने में अप... शान समझते हैं और यह कहने से भी न... झिझकते कि उन्हें हिंदी नहीं आती औ... हिंदी अपनाने में वे शर्म महसूस करते हैं...

यह एक निर्विवाद सत्य है कि अं... रेजी की वजह से कितने ही प्रतिभाशा... छात्रों को असफलता का मुंह देखना पड़... है. जिन छात्रों की शिक्षा का माध्यम हि... रहा होता है, उन को स्पर्धाओं में वि... प्राप्त करने में काफी कठिनाइयों ... सामना करना पड़ता है. इस से उन के ... में हिंदी के प्रति उपेक्षा का भाव बढ़ता ... और वे यह सोचने के लिए बाध्य हो ... हैं कि काश उन की शिक्षा का माध्यम ... अंगरेजी ही होती.

मेरे विचार में यदि स्पर्धाओं ... माध्यम अंगरेजी हो तो शिक्षा का माध्... भी अंगरेजी ही होना चाहिए, जिस... अनेक प्रतिभाशाली छात्रों को केवल हि... जानने के कारण बेकारी के दिन न दे... पड़ें. साथ ही हमें यह भी स्वीकार ... लेना चाहिए कि हमारी कोई अपनी रा... भाषा नहीं है. —रश्मि श्रीवा...

आजकल कवियों में भी नेताओं ... राजनीति आ गई है और उन में भी ... गुट बन गए हैं. जैसे नए कवि और पु...

कवि. पु... पहुंचने ... प्रवृत्ति प... है. उन ... छपती हैं... दिया जा... वस्तु उन... और हा...

अभ... अखिल ... यरा सु... संचालक... प्रतिष्ठि... माइक ... वश या ... एक कवि... सुनाए ...

'प्रति... कृष्ण... निव... जोगि... यन ... में ... का ... मि... का ...

कवि. पुराने कवि [illegible]
पहुंचने ही नहीं देते. ऐसी ही एकाधिकारी
प्रवृत्ति पत्र और पत्रिकाओं में भी व्याप्त
है. उन में जानेमाने कवियों की ही रचनाएं
छपती हैं. कवयित्रियों को बहुत प्रोत्साहन
दिया जाता है, चाहे कविता नाम की कोई
वस्तु उन के पास हो या न हो. बस रूप
और हावभाव होना चाहिए.

—मुकुंददास कडंक 'निर्भीक'

अभी पिछले दिनों मुझे रायसेन में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन और मुशायरा सुनने को मिला. उद्घोषक या संचालक महोदय ने जो स्वयं भी एक प्रतिष्ठित कवि की हैसियत से पधारे थे, माइक पर देर तक जमे रहने की लालसावश या फिर जनता के मनोरंजन के लिए एक कवि के बारे में ऐसेऐसे भद्दे चुटकुले सुनाए कि मन ग्लानि से भर उठा. [illegible] के लिए एक कवि के बारे में वह बोले, "यह देर तक खड़े रह कर नहीं पढ़ सकते क्योंकि इन की पैंट कमर पर देर तक नहीं रुक सकती."

—इसरार अहमद

बीमा निगम के कर्मचारियों की तनख्वाह के बारे में भारत सरकार का जो अध्यादेश निकला है, उस का यश आप की पत्रिका को मिलना चाहिए, जिस ने काफी अच्छे लेख लिख कर वहां हो रही लूट का ध्यान जनता तथा सरकार को दिलाया.

अब सरकार ने भी मान लिया है कि बीमा निगम के तृतीय श्रेणी के कर्मचारी को कुल 3,412 रुपए वेतन प्रति माह पड़ता है, जब कि सरकार के सहायक सचिव को केवल 3,200 रुपए ही मिलते हैं.

—मदनमोहन जैन

मुक्ता के लेखक

विनयकृष्ण सिन्हा

इस अंक में प्रकाशित लेख 'प्रतिदिन की भूलें' के लेखक विनयकृष्ण सिन्हा दरभंगा (बिहार) निवासी हैं. मानव मन की कमजोरियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन कर उन्हें सरल व सुबोध भाषा में लिपिबद्ध करना आप के लेखन का उद्देश्य है. इस के अलावा पत्र मित्रता व कला के प्रति भी आप का रुझान है.

युगलकिशोर शर्मा

प्रस्तुत अंक में प्रकाशित कहानी 'और फिर सुलह हो गई' के रचयिता युगलकिशोर शर्मा पश्चिमी बंगाल के रहने वाले हैं. सामाजिक व पारिवारिक समस्याओं का सजीव चित्रण ही आप के लेखन का उद्देश्य रहा है. लेखन के अतिरिक्त अध्ययन, पत्र लेखन व क्रिकेट के खेल में आप विशेष दिलचस्पी रखते हैं.

नवजागरण की पत्रिका
भूभारती
अप्रैल (प्रथम) अंक 1981 के मुख्य आकर्षण
महामस्तकाभिषेक या बाहुबली की खरीदारी?
श्रवणबेलगोल में क्या हुआ? धर्म और राजनीति के बल पर लोगों ने धन का कितना दुरुपयोग किया?
कहानी
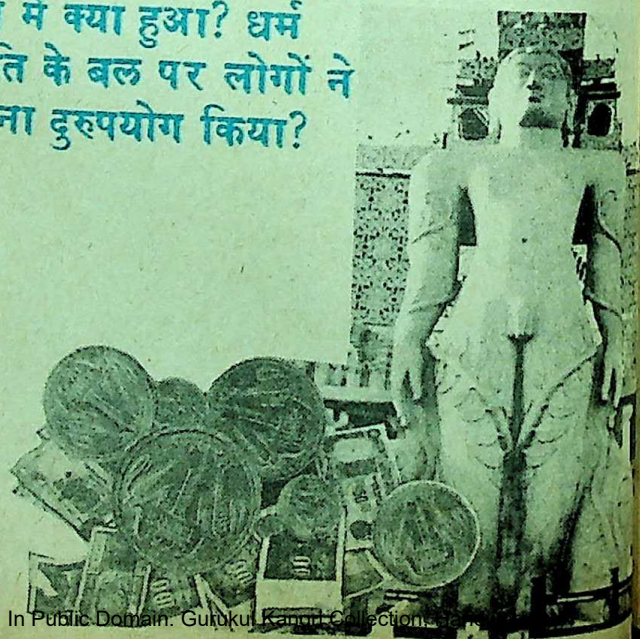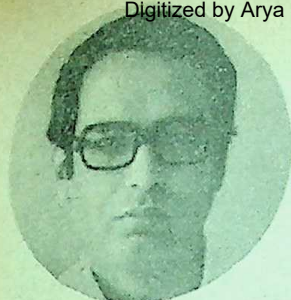
विद्याचरण शुक्ल के इस्तीफे की कहानी

प्रधान मंत्री ने अपने इमरजेंसी के खास साथी को अचानक क्यों निकाल दिया कुछ अंदरूनी बातों पर एक विशेष रिपोर्ट.

जनता पार्टी के सम्मेलन की झांकी

सम्मेलन में कितना हंगामा हुआ? कितने प्रस्ताव पास किए गए? पार्टी का अगला कदम क्या होगा?

लोक सभा में हंगामा

इंदिरा कांग्रेस के सांसद और मंत्री अपनी ही पार्टी के लोगों की जबान-पर तालेबंदी करने के लिए क्याक्या कर रहे हैं?
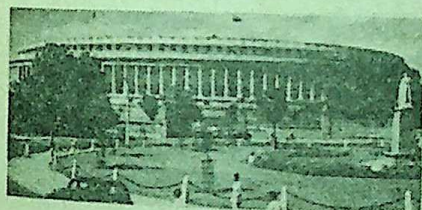
13 वर्षीय लड़के के साथ अमानुषिक अत्याचार :

दिल्ली पुलिस कितनी दोषी?

इस के अलावा

कहानी, कविता सभी रोचक स्तंभ और विशेष सामयिक लेख.

मुक्त विचार

विद्याचरण शुक्ल बर्खास्त

श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने मंत्रिमंडल से श्री विद्याचरण शुक्ल को उसी तरह बेमुरव्वत निकाल दिया है जिस तरह कुछ दिन पहले वयोवृद्ध नेता कमलापति त्रिपाठी को निकाला था.

श्री विद्याचरण शुक्ल पर दो आरोप लगाए गए हैं. एक तो यह कि वह मध्य प्रदेश की राजनीति में आवश्यकता से अधिक दखलअंदाजी कर रहे थे और मुख्य मंत्री अर्जुनसिंह को उन के पद से हटाना चाहते थे, और दूसरा यह कि उन के मंत्रालय—नागरिक आपूर्ति मंत्रालय का काम ठीकठाक नहीं था.

वैसे इन दोनों आरोपों के बारे में न तो पूछताछ की गई, न सफाई मांगी गई, न कारण बताया गया और न ही सबूत दिए गए. जैसे दिहाड़ी पर काम करने वाले मजदूरों को निकाला जाता है, ऐसा ही कुछ श्री शुक्ल के साथ हुआ.

श्रीमती इंदिरा गांधी केंद्रीय मंत्रिमंडल से किसी भी नेता को निकालने के अधिकार का प्रयोग कर के किस शक्ति की आजमाइश करना चाहती थीं, यह तो स्पष्ट नहीं पर इतना अवश्य स्पष्ट हो गया है कि इंदिरा कांग्रेस कोई राष्ट्रीय राजनीतिक दल नहीं है. वह जो कुछ भी है श्रीमती इंदिरा गांधी की व्यक्तिगत बपौती है. इस के मंत्री इस के सदस्यों की मर्जी से नहीं बल्कि श्रीमती गांधी की इच्छा से हैं. श्रीमती इंदिरा गांधी दल की अध्यक्ष नहीं, स्वयं दल हैं.

श्रीमती इंदिरा गांधी के लिए यह स्थिति चाहे जितनी अच्छी और सुरक्षा की भावना प्रदान करने वाली हो, इस में संदेह नहीं कि यह देश और लोकतंत्र के लिए बहुत ही खतरनाक है. यह स्थिति यदि तानाशाही से ज्यादा नहीं तो कम भी बुरी नहीं है.

राजनीतिक दल जनता और सरकार के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी होते हैं. वे ही सरकार के टेढ़ेसीधे फैसलों को जनता से मनवाते हैं और जनता की मांगों को सरल व स्पष्ट कर के सरकार तक पहुंचाते हैं. जनता का रोष गलियों, सड़कों और दफतरों में न निकले, इस के लिए राजनीतिक दल हिंसा का सब से बड़ा विकल्प होते हैं.

पर यह तभी संभव है जब दल अंदर से जीवित हो. दल के सदस्यों को विश्वास हो कि उन का नेता उन के बहुमत की बात मानेगा, अल्पमत को सुनेगा और कड़वी सच्चाई को स्वीकार करेगा. इस के लिए दल के नेतृत्व को खुले दिमाग वाला, सहनशील, दूरदर्शी व सर्वप्रिय होना जरूरी है.

श्रीमती इंदिरा गांधी लोकप्रिय हैं यह तो सही है पर वह अकेले सारा देश नहीं चला सकतीं. उन्हें ऐसे सहयो

गियों की जरूरत है जो देश को योग्यता से चला सकें. पर जब यह न तो किसी पर विश्वास रखें और न ही किसी का विश्वास जीतना चाहें तो ऐसा कैसे हो सकता है.

इस अस्थिरता के कारण ही आज इंदिरा कांग्रेस की सरकार भारी बहुमत के बावजूद देश के लिए कुछ भी कर सकने में असमर्थ है. कोई भी मंत्री, कोई भी अधिकारी, कोई भी मुख्य मंत्री निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि वह अगले दिन भी अपने पद पर होगा. यही वजह है कि न कोई निर्णय लेने को तैयार हैं और न ही कोई योजना बनाने को.

श्री शुक्ल का निकाला जाना इसी अस्थिरता की कड़ी है जिस का खमियाजा सारा देश भुगतेगा.

बेढंगा किराया कानून

दिल्ली में मकानों के मामले में एक मजेदार स्थिति पैदा हो गई है. यहां अब विदेशी दूतावासों को भी जगह नहीं मिलती. पहले विदेशी दूतावास सब से अच्छे किराएदार माने जाते थे क्योंकि एक तो वे पैसा अच्छा देते थे और समय पर देते थे. दूसरे वे किराया नियंत्रण कानूनों को मकानमालिकों पर नहीं लादते थे.

यदि जगह और मकान अच्छा हो तो वे बिना हीलहुज्जत किए किराया बढ़ा देते थे वरना करार के अनुसार मकान छोड़ देते थे. मकानदार को और क्या चाहिए?

लेकिन अब मुंहमांगा किराया देने पर भी इन दूतावासों को मकान नहीं मिल रहे. ऐसा इसलिए कि अब रुपए के अवमूल्यन के कारण किराए इतने अधिक हो गए हैं कि रसीद दे कर किराया लें तो सारा का सारा आयकर में चला जाता है. इसलिए मकानदार अब एकमुश्त भारी पगड़ी लेने को ही ठीक समझते हैं. यह राशि बिना रसीद के लिए दिए होती है. चूंकि दूतावास इस तरह की राशि नहीं दे सकते, इसलिए वे अब दिल्ली में मकान ही नहीं ले पा रहे हैं.

इस स्थिति का एक दूसरा कारण यह है कि दिल्ली में अब व्यक्ति उतना ही बड़ा मकान बनाता है, जितने में वह खुद रह सके. किराए पर देना और मकान को खो देना एक ही बात है. किराया कानूनों की जकड़न इतनी अधिक है कि अब मकानदार को किराए पर मकान देने पर पूंजी का लाभ तो दूर पूंजी भी नहीं मिलती.

यही वजह है कि दिल्ली में कई लाख ऐसे एक मंजिले मकान हैं जिन पर आसानी से दो या तीन मंजिलें बनाई जा सकती हैं. पर मकानदार इसलिए उन्हें नहीं बनाते कि उस का क्या करेंगे.

यदि किराया कानून को समाप्त कर दिया जाए तो इन सभी मकानों पर नई मंजिलें खड़ी हो जाएंगी. वास्तव में किराए कम ही तब हो सकते हैं जब मकान ज्यादा हों और किराएदार कम.

सरकार यदि पुराने किराएदारों को निकालने के पक्ष में नहीं है तो कम से कम नए मकानों पर सदा के लिए किराया नियंत्रण कानून समाप्त कर दे ताकि दिल्ली व अन्य सभी बड़े शहरों में आवास समस्या सुधर सके.

बंगला फिल्में—सरकारी संरक्षण

केंद्र सरकार ने पश्चिम बंगाल के सिनेमा संबंधी एक विधेयक को स्वीकृति देने से इनकार कर दिया है. इस प्रस्तावित कानून के अनुसार राज्य के सिनेमाघरों को वर्ष में कम से कम 12 सप्ताह पश्चिम बंगाल में बनी फिल्में ही दिखाना जरूरी हो जाता.

केंद्र सरकार का सूचना व प्रसारण मंत्रालय तो इस तरह के कानून के पक्ष में है पर विधि मंत्रालय के अनुसार यह

असंवैधानिक सिद्ध होता. अतः इसे सहमति देना ठीक नहीं है.

औचित्य की कसौटी पर इस तरह का कोई भी कानून ठीक नहीं होता. पश्चिम बंगाल सरकार ने यह कदम इसलिए उठाया क्योंकि पिछले कई वर्षों से कलकत्ता में बन रही बंगला फिल्में बाक्स आफिस पर बुरी तरह पिट रही हैं. पैसे की तंगी, विषयों के पुरानेपन और सब से अधिक टालीगंज के स्टूडियो में कर्मचारियों की बढ़ती अनुशासनहीनता ने फिल्मों का उत्पादन काफी कम कर दिया है.

इस तरह के माहौल में फिल्में रोपीट कर बनें भी तो वे बंबई की हिंदी फिल्मों से कैसे मुकाबला कर सकती हैं? इसलिए बंगाल के अधिक से अधिक सिनेमाघर हिंदी फिल्मों के लिए ही लालायित रहते हैं. बंगला फिल्मों से ज्यादा तो वहां तमिल और तेलुगू फिल्में चलने लगी हैं.

सरकार का तर्क है कि यदि सिनेमाघरों को 12 सप्ताह बंगला फिल्में दिखानी ही पड़ीं तो जबरदस्ती उन की मांग होगी और टालीगंज के स्टूडियो फिर आबाद हो जाएंगे.

यह बात न केवल गलत है, बल्कि अव्यावहारिक भी है. यदि सिनेमाघरों को 12 सप्ताह ये फिल्में दिखानी ही पड़ीं तो भी बंगाल के फिल्म उद्योग पर इस का कोई विशेष असर नहीं पड़ेगा. जब सिनेमाघर खाली हो रहेंगे तो उन में कटीफटी बेकार की पुरानी फिल्में ही दिखाई जाएंगी. वैसी नई फिल्मों पर कोई पैसा खर्च न करेगा.

पश्चिम बंगाल सरकार यदि वास्तव में कुछ करना चाहती है तो वह बंगला फिल्मों को मनोरंजन कर में भारी छूट दे सकती है, कर्मचारियों की अनुशासनहीनता पर (जो सत्तारूढ़ दल की यूनियनें ही पैदा करती हैं) नियंत्रण करा सकती है, नए सिनेमाघरों के निर्माण के लिए ऋण दे सकती है. पर कठिनाई यह है कि इन सब बातों से सस्ती लोकप्रियता नहीं मिल सकती और आजकल सरकारें या तो अपने खुद के हित के लिए कुछ करती हैं या सस्ती लोकप्रियता के लिए.

जिया उल हक की बेचैनी

पाकिस्तान के राष्ट्रपति जिया उल हक ने अपने देश पर एक नया संवैधानिक आदेश लागू किया है और सभी राजनीतिक दलों का कानूनी विघटन कर दिया है. 1973 का जो संविधान जुल्फिकार अली भुट्टो ने बनाया था, वह 1977 से ही स्थगित था.

यह काम श्री जिया उल हक को तब करना पड़ा जब उन्हें लगा कि राजनीतिक दल फिर एक बार मजबूत हो रहे हैं और वैसी ही स्थिति पैदा कर रहे हैं जैसी 1977 में श्री भुट्टो के अंतिम दिनों में थी.

2 मार्च को कुछ पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा पाकिस्तान एअरवेज के विमान का अपहरण करने और बदले में 54 कैदियों को छुड़ाने की सफलता ने श्री हक की स्थिति कमजोर कर दी थी और राजनीतिक दलों का मनोबल ऊंचा कर दिया था.

लेकिन इस से पहले कि वे इस घटना का पूरा लाभ उठा पाते, वहां सभी राजनीतिक दलों का ही विघटन कर दिया गया है.

वैसे सैनिक प्रशासकों और नागरिक राजनीतिक दलों की यह आंख मिचौनी पाकिस्तान में लगभग शुरू से ही खेली जा रही है और अब तक जनता इस की आदी हो गई है. इसी लिए न तो सैनिक शासन आने पर मुक्ति की बात होती है, न दलों पर पाबंदी लगाने को गुलामी कहा जाता है.

पाकिस्तान की सेना अब सरकारी खर्चे पर चलने वाली राजनीतिक पार्टी बन कर रह गई है और उसी तरह काम करती है जैसे यहां की सत्तारूढ़ पार्टी.

यह उथलपुथल एक बात अवश्य साबित करती है कि सेना का शासन किसी भी तरह से राजनीतिक शांति, आर्थिक उन्नति या सामाजिक व्यवस्था की गारंटी नहीं है. तभी तो सैनिक शासन होने के बावजूद राजनीतिक दल अपने पैर जमाए रख पाते हैं. वैसे भी सैनिक शासन को हर समय अपनी स्थिति कमजोर नाव की तरह नजर आती है. सेना का तथाकथित अनुशासन, कर्मठता और देशप्रेम इतने वर्षों में अभी तक लोगों का विश्वास नहीं जीत पाया है.

शाकाहारी ज्यादा स्वस्थ

शाकाहारियों को स्वास्थ्य के मामले में मांसाहारियों के मुकाबले में हमेशा कमजोर माना जाता रहा है. मांस में प्रोटीन की अधिकता के कारण यह समझा जाता रहा है कि मांसाहारी ज्यादा प्रोटीन प्राप्त कर लेते हैं.

अब वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि वास्तव में शाकाहारी मांसाहारियों से बहुत से रोगों में ज्यादा सुरक्षित हैं.

शाकाहारियों को हृदय रोग की बीमारियां कम होती हैं और बहुत किस्म के कैंसर भी उन में नहीं होते.

रही प्रोटीन की कमी की बात तो वैज्ञानिकों का कहना है कि यह भोजन में शाकसब्जियों के कारण नहीं, कम भोजन के कारण होता है. शाकाहारी भोजन में दूध,. दालों, अनाज, आलू और अन्य सब्जियों के सही मिश्रण लेने से प्रोटीन की कमी नहीं रहती.

मांस रहित खाद्य पैदा करना भी मांस से ज्यादा सस्ता और आसान है. जानवरों के रोगों से होने वाले नुकसान भी शाकाहारियों को नहीं होते.

अत: कोई कारण नहीं कि शाकाहारी अपने खाने में कमजोर होने के डर से कोई परिवर्तन करें.

परीक्षा में नकल की रोकथा

बंबई विश्वविद्यालय ने परीक्षा नकल के विरुद्ध कठोर काररवाई और उच्च न्यायालय ने इन कदमों संपुष्टि कर दी है. पिछले वर्ष खा कालिज केंद्र में बी. काम. की परीक्षा में कर नकल की गई. इस पर विश्वविद्या ने उन विद्यार्थियों को परीक्षाओं में से रोक दिया, और दो निरीक्षकों जिन्होंने नकल होने दी, हमेशा के लिए काम से वंचित कर दिया.

इस पर ये व्यक्ति बंबई उ न्यायालय में एक याचिका ले कर प और प्रार्थना की कि विश्वविद्यालय को प्रकार सजा देने का कोई अधिकार था. उन्होंने इस विषय में जांच की नीय रिपोर्ट को प्रस्तुत करने की भी की. उन्होंने यह भी कहा कि सहज न्या की दृष्टि से उन्हें 'कारण बताओ' नोटि दिया जाना आवश्यक था.

उच्च न्यायालय ने कहा कि मामला पूर्णत: विश्वविद्यालय के अनुशास का है और न तो जांच की रिपोर्ट प्रस्तु करना आवश्यक था न 'कारण बताओ' नोटिस देना.

हमारे विद्यार्थी आरक्षण के मामले ले कर यह मांग तो बड़े जोरशोर और मारपीट से करते हैं कि केवल विद्यार्थी योग्यता ही देखी जानी चाहिए. लेकि योग्यता नापने के साधन—या यों कहि योग्यता नापने को ही वे अपने मौलि अधिकारों का हनन समझते हैं.

जब कुछ विदेशी यह कहते हैं कि हि कहते कुछ करते कुछ हैं, वे बहुत ढों होते हैं तो क्या गलत कहते हैं? हमारे यह तो भगवान के अवतारों का भी यही हा है. बातें ऊंचेऊंचे सिद्धांतों की, काम सबं निचले दर्जे के, बेईमानी और धोखे के. तर्क तो हर चीज के लिए दिया जा सक है, पर कम से कम तर्क में कुछ आधार हो.

राष्ट्र के लिए गौरव का प्रतीक राजस्थान का परमाणु बिजलीघर पिछले आठ वर्षों से लगातार बीमार चल रहा है, उस की दोनों इकाइयों की नब्ज कभी चलती है तो कभी बंद हो जाती है.

कोटा से 48 किलोमीटर दूर चंबल नदी के दाएं तट पर जब भारत के इस दूसरे परमाणु बिजलीघर की पहली इकाई ने 1972 में कार्य प्रारंभ किया था. तब यह विश्वास हो गया था कि राजस्थान में अब तेजी से औद्योगिक विकास का नया युग शुरू होगा. लेकिन औद्योगिक संस्थानों को अब बिजली के अभाव में अरबों रुपए का घाटा हो रहा है और छोटे उद्योगों के मालिक सिर पीट रहे हैं.

लगभग 150 करोड़ रुपए की लागत से बने इस परमाणु बिजलीघर में दोदो सौ मेगावाट प्रति घंटा बिजली उत्पादन की क्षमता वाली दो इकाइयां हैं, जिन में 1972 से 1980 तक पहली इकाई 24 बार और दूसरी इकाई 16 बार बंद हो चुकी है. अब तक केवल एक बार ही 68 दिनों तक लगातार चलने का रिकार्ड है.

दिसंबर 1972 से प्रारंभ इस परमाणु बिजलीघर में निर्धारित उत्पादन मात्रा के विपरीत केवल 30 प्रतिशत बिजली का

लगभग 150 करोड़ रुपए की लागत से बना यह परमाणु बिजलीघर जिस के साथ राजस्थान में औद्योगिक विकास का नया युग शुरू हो जाने की संभावनाएं जुड़ी हुई थीं, आज वर्तमान औद्योगिक संस्थानों को अरबों रुपए का घाटा पहुंचाने वाला सिद्ध क्यों हो रहा है?

राजस्थान का बीमार परमाणु बिजलीघर

लेख • रमेशचंद्र शर्मा

राजस्थान के मुख्य मंत्री जगन्नाथ पहाड़िया : परमाणु बिजलीघर की अव्यवस्था क्या लचर प्रशासन व्यवस्था का ही प्रमाण नहीं है?

ही उत्पादन हो सका है. जाहिर है कि 200 मेगावाट अर्थात 48 लाख यूनिट प्रति घंटे बिजली उत्पादन की क्षमता वाली पहली आणविक भट्ठी द्वारा प्रति वर्ष 17,520 लाख यूनिट बिजली का उत्पादन होना चाहिए था, लेकिन 1979-80 में ही अधिकतम 10,452 लाख यूनिट बिजली तैयार हुई. अन्य वर्षों में इस ने अपनी क्षमता के आधे हिस्से के बराबर भी बिजली तैयार नहीं की.

रोशनी कम अंधेरा अधिक दिया

यहीं नहीं, यह बिजलीघर आठ वर्षों में जितने घंटे चला, उस से अधिक घंटों तक बंद रहा, जिसे देख कर यही कहा जा सकता है कि इस ने रोशनी कम और अंधेरा अधिक दिया है.

बिजली का उत्पादन न केवल निर्धारित क्षमता से कम हो रहा है, वरन उत्पादन की दर बिलकुल अनिश्चित एवं अनियमित है. बिजली की आपूर्ति का कोई भरोसा न होने के कारण नए उद्योगों की स्थापना का जोखिम उठाने को यहां कोई तैयार नहीं है. एक उदाहरण से सारी बात स्पष्ट हो सकेगी.

अप्रैल, 1977 में बिजलीघर में कुल 255 लाख यूनिट बिजली बनी थी, मई में एकदम बढ़ कर छः गुनी हो ग लेकिन अगले ही महीने जून, 1977 यह घट कर आधी रह गई.

उन तीन महीनों में बिजली ने इतना अव्यवस्थित तथा अनियमि उत्पादन किया कि समूची योजना गड़बड़ा गई. अगस्त, 1977 में यह बिजली घर बिलकुल बंद हो गया, जिसे फि से चालू होने में पूरे 13 महीने लग ग जब वह चालू हुआ तो कई दिनों त उस का उत्पादन नियमित नहीं हो सक

सब कुछ अनिश्चित

भारत के इस परमाणु बिजलीघ की कोई इकाई कब बंद होगी, इस जानकारी न तो इस बिजलीघर अधिकारियों को रहती है न राजस्था राज्य विद्युत मंडल को. ऐसी स्थिति विद्युत मंडल कहां से किन वैकल्पि स्रोतों से बिजली प्राप्त करे, यह प्र अच्छाखासा सिरदर्द बन जाता है. अ यदि इस परमाणु बिजलीघर के भरो रह कर कोई काम शुरू किया जाए क्या स्थिति रहेगी, उस का अंदाजा सह ही लगाया जा सकता है.

29 जनवरी, 1981 को इस परमा बिजलीघर की सर्विस बिल्डिंग में कु रेडियोधर्मिता फैलने का पता चला वर्कशाप और प्रयोगशालाओं के कर्मचारि में भगदड़ मच गई.

अधिकारियों ने तत्काल ही वर्कशा और प्रयोगशालाओं के कर्मचारियों को ए दिन के लिए रेडियोधर्मिता मुक्त स्था पर भेज दिया. परीक्षण करने पर प चला कि क्लीन अप प्लांट में एक वा की जगह से रेडियोधर्मी पानी रिस र था. जब रेडियोधर्मी पानी का रिस किसी तरह रोका गया, तब कहीं जा स्थिति सामान्य हुई. यदि थोड़ा विलंब जाता तो रेडियोधर्मिता न केवल बिजल घर के आसपास बल्कि कर्मचारियों

कालोनियों और [illegible] में ले लेती.

एक दैनिक पत्र के अनुसार रेडियोधर्मिता फैलने का खतरा बढ़ता देख कर वैज्ञानिक डा. सेठना को हवाई जहाज द्वारा तुरंत यहां आना पड़ा था, यदि वह स्थिति न संभालते तो गंभीर घटना हो सकती थी.

बेखबर अधिकारी

अब एक दूसरी घटना लीजिए. 18 अक्तूबर, 1980 को यंत्रों में गड़बड़ी हो जाने के कारण पहली इकाई के डाउसिंग टैंक में जमा लगभग चार लाख गैलन पानी संयंत्र के सब से नीचे तल वाले फर्श पर (माडरेटर रूम में) इकट्ठा हो गया. यह पानी टैंक से कैसे निकला, इस संबंध में कई तरह की बातें कही जा रही हैं. माडरेटर रूम में 15 फीट पानी भर जाने के परिणामस्वरूप वहां का सारा सामान व यंत्र पानी में डूब गए.

जैसे ही यह घटना घटी, अधिकारियों ने तुरंत बिजलीघर के क्षेत्र में आपातस्थिति की घोषणा कर दी और संयंत्र स्थल, कालोनियों तथा बंबई के कर्मचारियों को इस की सूचना दे दी गई.

दो घंटे बाद यह जानने पर कि संयंत्र के भीतर व बाहर कोई रेडियोधर्मिता नहीं है, आपातस्थिति खत्म करने की घोषणा की गई.

परमाणु बिजलीघर के स्टेशन इंचार्ज एम. एस. आर. शर्मा ने बताया कि जहां तक टैंक से पानी निकल जाने का प्रश्न है, इस प्रकार पानी तभी छोड़ा जाता है जब संयंत्र में कोई असुरक्षित स्थिति पैदा हो जाती है. इस घटना के तुरंत बाद ही पंपों से पानी बाहर निकाल दिया गया. क्षतिग्रस्त सामान और यंत्र हटा दिए गए. उन के कलपुर्जों को खोल कर सुखा कर उन का अच्छी तरह निरीक्षण कर के उन को फिर से फिट कर दिया गया. इस यूनिट को 28 जनवरी, 1981 को ग्रिड से मिला कर दिया गया.

[illegible] का कहना है कि उच्च दाब, उच्च तापमान वाले शीतलक पाइप अथवा वाष्प पाइप की दुर्घटनात्मक टूट-फूट होने पर ऐसी संभावना हो जाती है कि बिल्डिंग पर अधिक दाब पड़ने लगे तथा हो सकता है कि कुछ क्षणों के लिए इस के डिजाइन के दाब को भी पार कर जाए. इसी लिए 4,00,000 गैलन पानी इस बिल्डिंग में डाउसिंग-टैंक में इकट्ठा कर के रखा जाता है और बिल्डिंग का दाब यदि एक निश्चित अंक से आगे बढ़ जाता है तो पानी फुहार के रूप में तत्काल गिरने लगता है. बिल्डिंग पर क्षमता से अधिक दाब न पड़े, यह सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षात्मक उपाय किए गए हैं.

परमाणु बिजलीघर की बनावट

राजस्थान परमाणु बिजलीघर दाबानुकूलित भारी पानी किस्म के नाभिकीय रिएक्टर (आणविक भट्ठी) से बना है. बिजलीघर के प्रचालन के दौरान न्यूट्रोनों द्वारा भारी पानी पर बमबारी करने से रिएक्टर में रेडियो न्यूक्लाइड ट्रिटियम लगातार पैदा होता रहता है.

बिजलीघर के प्रचालन एवं नियंत्रण के लिए जिन सैकड़ों वाल्वों, पुर्जों एवं

परमाणु बिजलीघर किस वर्ष कितने घंटे बंद रहा

वर्ष	कुल घंटे बंद रहा
1973-74	4,174 घंटे
1974-75	4,297 घंटे
1975-76	5,644 घंटे
1976-77	2,077 घंटे
1977-78	6,956 घंटे
1978-79	5,472 घंटे
1979-80	2,272 घंटे
1980-81 (दिसंबर 80 तक)	1,325 घंटे

यंत्रों की आवश्यकता होती है उन के किन्हीं छिद्रों में से जब कहीं पानी रिसता है तो ट्रिट्रियम भारी पानी की वाष्प के साथ बिजलीघर के कार्यस्थलों के वातावरण में प्रवेश कर सकता है.

भारी पानी के संरक्षण और ट्रिट्रियम द्वारा संदूषण को न्यूनतम रखने के लिए भी व्यापक व्यवस्थाएं की गई हैं. इस में वातावरणीय संदूषण का समय-समय पर परीक्षण शामिल है. जब कोई असामान्यता दिखती है, तो तुरंत कारर-वाई आरंभ कर दी जाती है. जब संदूषण मुक्त क्षेत्रों में कार्य करना आवश्यक होता है तो कर्मचारियों को ऐसे आवश्यक साजसामान से लैस होना पड़ता है जिस से उन के ऊपर रेडियोधर्मिता का प्रभाव निर्धारित सीमाओं तक ही रहे.

इस बीमार परियोजना का माडरेटर हीट एक्सचेंजर्स लगभग बेकार हो चुका है जो 1982 तक बदला जा सकेगा. संयंत्र में जो भी हिस्सेपुर्जे बेकार होते जा रहे हैं उन की जगह स्वदेशी पुर्जे लगाए जा रहे हैं, साथ ही दोनों इकाइयों के संयंत्रों के लिए स्वदेशी पुर्जों का भंडार भी तैयार किया जा रहा है.

अधिकारियों का कहना है कि विदेशी पुर्जे 10 गुना अधिक मूल्यों पर मिलते हैं. अतः स्वदेशी पुर्जे लगाना स[illegible] तथा आर्थिक स्थितियों में फायदेमंद है.

परमाणु बिजलीघर की दूसरी इकाई में नवंबर, 1980 से बिजली उत्पादन परीक्षण के तौर पर शुरू किया गया था. इस से दो माह में विद्युत मंडल को 245 लाख यूनिट बिजली प्राप्त हुई और अपने प्रारंभिक तीन माह में यह यूनिट 16 बार बंद हो चुकी है. यह इकाई व्यावसायिक स्तर पर पूर्ण क्षमता के साथ बिजली का उत्पादन कब से शुरू कर सकेगी, इस का जवाब किसी के पास नहीं है.

आपसी विवाद

परमाणु बिजलीघर का सब से बड़ा उपभोक्ता राजस्थान राज्य विद्युत मंडल है और विद्युत वितरण के मामले में दोनों के बीच पटरी नहीं बैठ रही है. बिजलीघर वालों का कहना है कि हम जितनी बिजली विद्युत मंडल को देते हैं, उस [illegible]

परमाणु बिजलीघर में विभिन्न वर्षों में हुआ बिजली उत्पादन

वित्तीय वर्ष	बिजली उत्पादन लाख यूनिट	उत्पादन का प्रतिशत
(दिसंबर 72 से)		
1972-73	32.25	0.59
1973-74	4,211.29	24.03
1974-75	6,586.73	37.59
1975-76	4,698.63	26.82
1976-77	9,549.72	54.51
1977-78	2,613.88	14.91
1978-79	5,439.25	31.32
1979-80	10,452.24	59.06
1980-81 (दिसंबर 80 तक)	7,452.00	
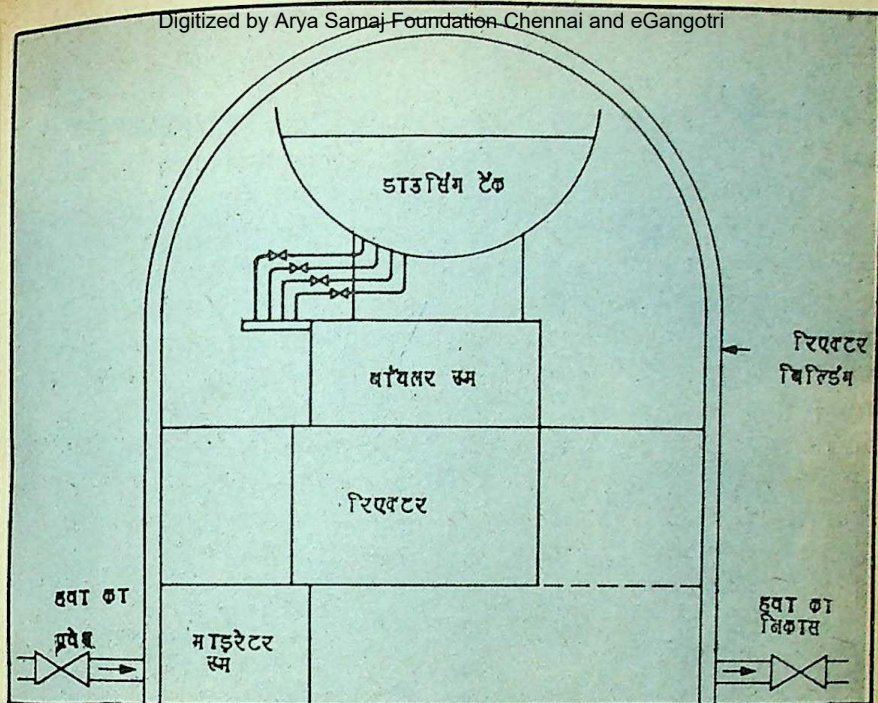
रिएक्टर भवन के खाके का सरलीकृत रेखाचित्र.

उपयोग वह अपनी अव्यवस्थाओं के कारण नहीं कर पा रहा है.

राजस्थान परमाणु विद्युत परियोजना के प्रभारी एवं मुख्य परियोजना अभियंता टी. एफ. पारडीवाला के अनुसार परमाणु बिजलीघर के रिएक्टर सिस्टम के व्यवस्थित संचालन के लिए यह जरूरी है कि ग्रिड का वाल्टेज तथा उस की फ्रीक्वेंसी पूरी तरह स्थायी और स्थिर बनी रहे. परमाणु बिजलीघर का डिजाइन तथा विद्युत नियंत्रण व्यवस्था इस ढंग से बनी हुई है कि ग्रिड में व्यवधान पैदा होने से रिएक्टर की सुरक्षा व्यवस्था को थोड़ा भी खतरा उत्पन्न होता है तो उस से बिजलीघर स्वत: ही कार्य करना बंद कर देगा.

राजस्थान विद्युत मंडल द्वारा ग्रिड सिस्टम (बिजली की लाइनों में व्यवस्था) में अव्यवस्था पैदा करने से परमाणु बिजलीघर से पैदा होने वाली बिजली के बाहर निकलने का रास्ता बंद हो जाता है तो उत्पादित बिजली पलट कर दबाव डालती है और झटकों के कारण बिजलीघर तुरंत बंद हो जाता है.

बिजलीघर के एक प्रवक्ता का कहना है कि जब तक बिजली की लाइनें आवश्यक भार उठाने के लिए सक्षम नहीं हो जातीं, परमाणु बिजली घर में बाधा आती रहेगी.

अब आइए, जरा राजस्थान राज्य विद्युत मंडल की लचर अव्यवस्था और अधिकारियों की अक्षम्य लापरवाही का जायजा लिया जाए.

अंतरराज्यीय समझौते

अंतरराज्यीय समझौतों के अनुसार राजस्थान व मध्य प्रदेश के बीच चार बिजली परियोजनाओं में साझेदारी है, गांधी सागर, राणा प्रताप सागर तथा जवाहर सागर बांधों पर तीन पनबिजली

घर बने हुए हैं. तीनों में दोनों राज्यों का बराबर हिस्सा है. गांधी सागर मध्य प्रदेश के अधीन है जिस में आठ लाख यूनिट बिजली प्रतिदिन तैयार होती है, जिस में से चार लाख यूनिट बिजली प्रतिदिन राजस्थान को मिलनी चाहिए. इसी तरह राजस्थान के अधीन राणा प्रताप सागर में 12 लाख यूनिट, जवाहर सागर में आठ लाख यूनिट बिजली बनती है. दोनों बिजलीघरों के दो हिस्से की बिजली दोनों राज्यों को देनी चाहिए. लेकिन न तो राजस्थान मध्य प्रदेश के हिस्से की बिजली दे रहा है न गांधी सागर से अपने हिस्से की चार लाख यूनिट बिजली ले रहा है.

अंतरराज्यीय विवाद

मध्य प्रदेश के सतपुड़ा के ताप बिजलीघर में दोनों प्रदेशों की भागीदारी है. 1964 में जब यह बिजलीघर बना था तो राजस्थान द्वारा इस के निर्माण में 40 करोड़ रुपया लगाया गया था. इस बिजलीघर में 62.5 मेगावा

1979 में परमाणु बिजली घर में उत्पादित बिजली

उत्पादित मात्रा			महीना
972	लाख	यूनिट	जनवरी 1979
885	"	"	फरवरी
979	"	"	मार्च
1,072	"	"	अप्रैल
1,280	"	"	मई
883	"	"	जून
1,218	"	"	जुलाई
644	"	"	अगस्त
556	"	"	सितंबर
966	"	"	अक्तूबर
1,209	"	"	नवंबर
871	"	"	दिसंबर

क्षमता की पांच इकाइयां [illegible] हुई हैं.

सतपुड़ा ताप बिजलीघर में 50 लाख यूनिट बिजली का उत्पादन प्रतिदिन हो रहा है. अतः समझौते के अनुसार 40 प्रतिशत यानी 20 लाख यूनिट बिजली प्रतिदिन राजस्थान को मिलनी चाहिए. किंतु मध्य प्रदेश एक भी यूनिट बिजली राजस्थान को नहीं दे रहा है. अगर चंबल के बिजलीघरों के हिस्से की छः लाख यूनिट बिजली राजस्थान मध्य प्रदेश को नहीं दे रहा है तो भी कुल मिला कर 14 लाख यूनिट बिजली प्रतिदिन राजस्थान को मध्य प्रदेश से लेनी रह जाती है. मध्य प्रदेश राजस्थान को अंगूठा दिखा कर अपनी बिजली महाराष्ट्र को बेच रहा है. किंतु राजस्थान के मुख्य मंत्री जगन्नाथ पहाड़िया और राजस्थान राज्य विद्युत मंडल के अधिकारी कुछ नहीं कर पा रहे हैं.
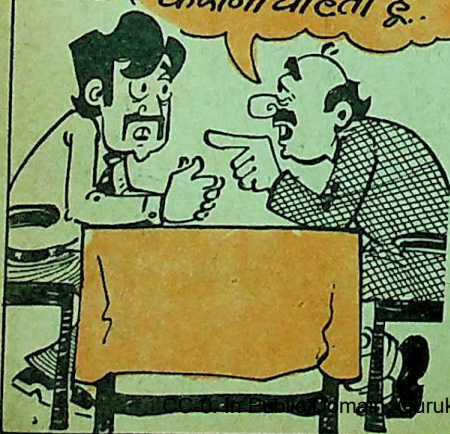
और तो और, सतपुड़ा से राजस्थान तक बिजली लाने के लिए कोटा-उज्जैन के बीच [illegible] की लागत से 220 के. वी. ए. की जो हाईटेंशन लाइन डाली गई थी, वह भी बेकार पड़ी है.

मध्य प्रदेश व राजस्थान के मुख्य मंत्री कितनी ही बार मिले हैं, लेकिन इस मामले में दोनों मौन रहते हैं. राजस्थान की जनता पिछले कई महीनों से बिजली के संकट से त्रस्त है. किंतु मंत्रियों, विद्युत बोर्ड के अधिकारियों के यहां बिजली का संकट नहीं है, इसलिए वे यह मानने को तैयार नहीं हैं कि जनता को बिजली के किसी तरह के संकट का सामना करना पड़ रहा है.

राजस्थान के छोटेबड़े लगभग 250 कारखाने प्रायः बंद पड़े हैं, हजारों मजदूर बेकार होते जा रहे हैं, जिस की चिंता न तो बीमार परमाणु बिजलीघर को है, न राज्य सरकार को और न विद्युत मंडल को है. पहाड़िया सरकार की लचर प्रशासन व्यवस्था का इस से अधिक और क्या उदाहरण हो सकता है? ●

मध्य प्रदेश में पुलिस असंतोष

लेख ● आलोक सक्सेना
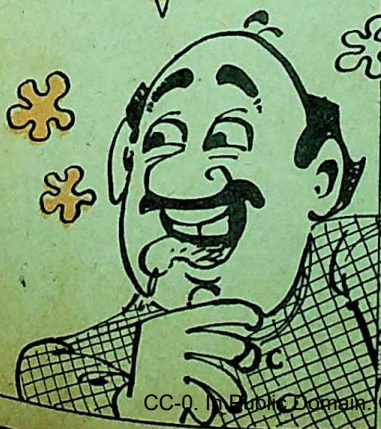
पिछले दिनों मध्य प्रदेश के ग्वालियर शहर में हुई घटनाओं ने प्रशासन की नींद हराम कर दी. ग्वालियर में हुई एक घटना चूंकि पुलिस वालों के असंतोष से संबंधित थी, अतः प्रशासन विशेष रूप से सतर्क एवं चिंतित था और इसी सतर्कता के परिणामस्वरूप अंत में प्रशासन को ग्वालियर में सेना बुलाने का निर्णय लेना पड़ा. ग्वालियर में लगभग 135 पुलिस कर्मचारियों को बरखास्त किए जाने के समाचार मिले हैं. वहां अधिकांश थानों पर सीमा सुरक्षा बल के जवान तैनात कर दिए गए और उन्होंने पुलिस शस्त्रागार पर भी क- कर लिया.

कहा जाता है कि ग्वालियर में तै- मध्य प्रदेश पुलिस के विशेष सशस्त्र की नवीं बटालियन में अधिक असंतोष और वह प्रशासन द्वारा उठाए गए कदमों का विरोध कर रही है. इधर फ- वरी के अंतिम सप्ताह में हड़बड़ी बुलाए गए एक पत्रकार सम्मेलन में मु- मंत्री श्री अर्जुनसिंह ने घोषणा की स्थिति पूर्णतः नियंत्रण में है और व-

मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री अर्जुनसिंह: पुलिस कर्मचारियों को डरने की आवश्यकता नहीं है.
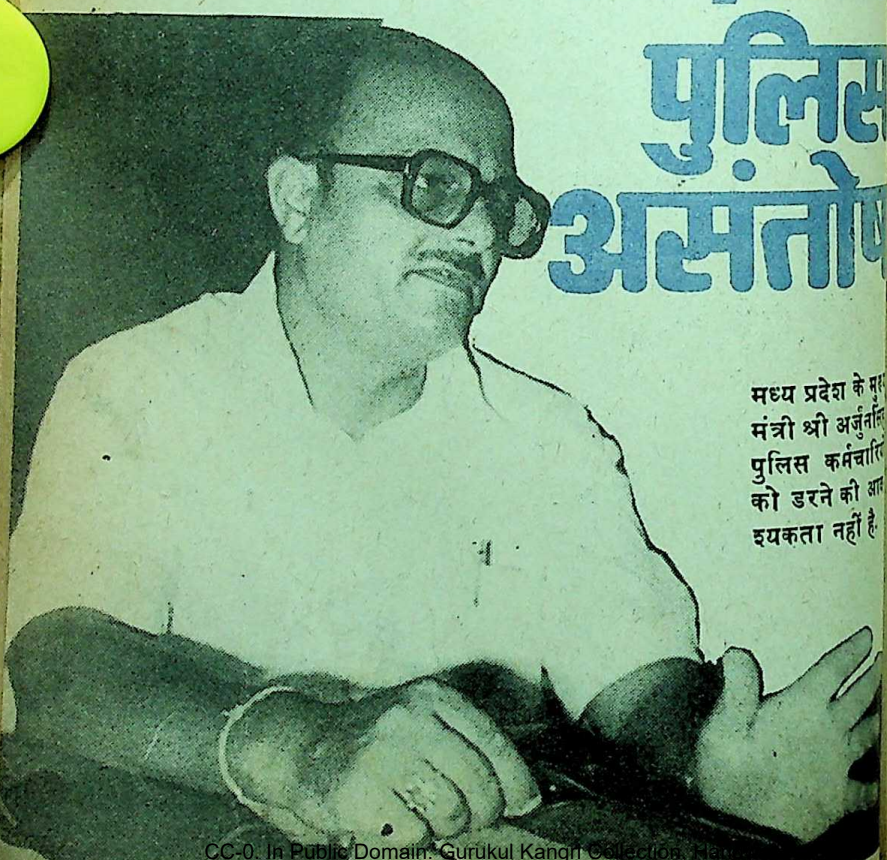
दार पुलिस कर्मचारियों को डरने की आवश्यकता नहीं है.

दरअसल मध्य प्रदेश पुलिस में असंतोष की चिनगारी दिसंबर में ही सुलगनी शुरू हो गई थी, जब इंदौर के पुलिस अधीक्षक ने वहां आंदोलन और प्रदर्शन का मार्ग अपनाने वाले 19 पुलिस कर्मचारियों को मुअत्तल कर दिया था. इन में से आठ को अब बरखास्त कर दिया गया है.

इस के बाद जनवरी में ग्वालियर में लगे विशाल मेले में हुई घटना ने आग में घी का काम किया. 18 जनवरी को मेले में मिठाई की एक विख्यात दुकान पर ड्यूटी पर तैनात होम गार्ड के एक जवान ने छक कर मिठाई खाई और फिर बिना पैसे चुकाए चल दिया. दुकानदार के पैसे मांगने पर कहा जाता है, उस ने न सिर्फ पैसे देने से इनकार किया बल्कि अपनी वर्दी का रोब भी दिखाया. दुकानदार के फिर भी पैसे मांगने पर झगड़ा बढ़ गया. मेले में ड्यूटी पर तैनात अन्य होम गार्ड भी वहां आ गए और उन्होंने पहले तो दुकान को लूटा और फिर वहां आग लगा दी.

इस झगड़े में दुकान के एक कर्मचारी की गरम तेल की कड़ाही में गिर जाने से मृत्यु हो गई. कहा जाता है कि

बारबार आंदोलन और हड़ताल की धमकियां देने और जोरजबरदस्ती से अपनी बात मनवाने वाले मध्य प्रदेश के पुलिस कर्मचारी कितने कर्त्तव्यपरायण, सक्षम और अनुशासित हैं—क्या यह पिछले कुछ महीनों में प्रदेश में घटी घटनाओं से ही पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो गया?

इस झगड़े में पुलिस और एस. ए. एफ. (विशेष सशस्त्र बल) ने भी होम गार्ड का साथ दिया. यही नहीं जब झगड़ा करने वाले होम गार्ड के छः जवानों को मुअत्तल कर गिरफ्तार कर लिया गया तो पुलिस और विशेष सशस्त्रबल के कर्मचारियों ने आंदोलन शुरू कर दिया और थाने पर धरना दे कर शासन को मजबूर कर दिया कि वह होम गार्ड के उन छः जवानों को जमानत पर रिहा कर दे.

इधर जनता ने भी मेले में हुई घटना के विरोध में ग्वालियर बंद का आह्वान कर 22 जनवरी को पूर्णतः हड़ताल रखी. अब प्रशासन स्थिति को नियंत्रण में बता रहा है.

बारबार आंदोलन और हड़ताल की धमकियां देने और जोरजबरदस्ती से अपनी बात मनवाने वाले मध्य प्रदेश के पुलिस कर्मचारी कितने कर्तव्यपरायण, सक्षम और अनुशासित हैं, यह प्रदेश में विभिन्न स्थानों पर पिछले डेढ़ माह के

प्रदेश में पुलिस की भरमार के बावजूद आएदिन सीमा सुरक्षा बल की टुकड़ियों को तैनात देखा जा सकता है.

पुलिस के आतंक का सबूत : पुलिस द्वारा ग्वालियर मेले की तहसनहस दुकानों का दृश्य (ऊपर) और (सामने) इस कांड के न्यायिक जांच अधिकारी सुदर्शन सिंघल : क्या पुलिस के अपराध को स्वीकार किया जाएगा?
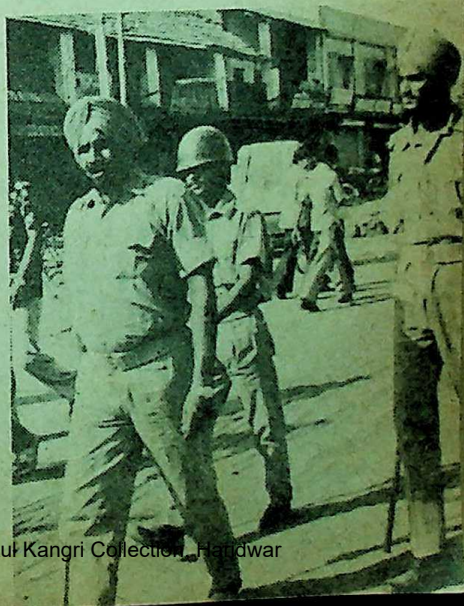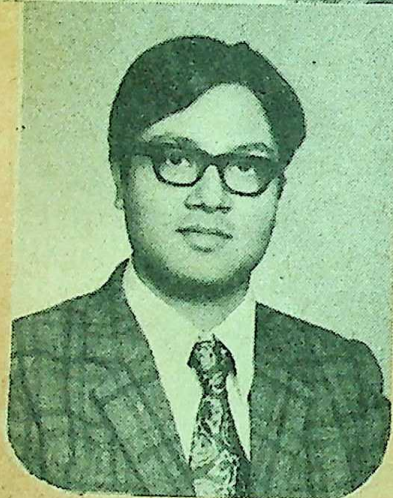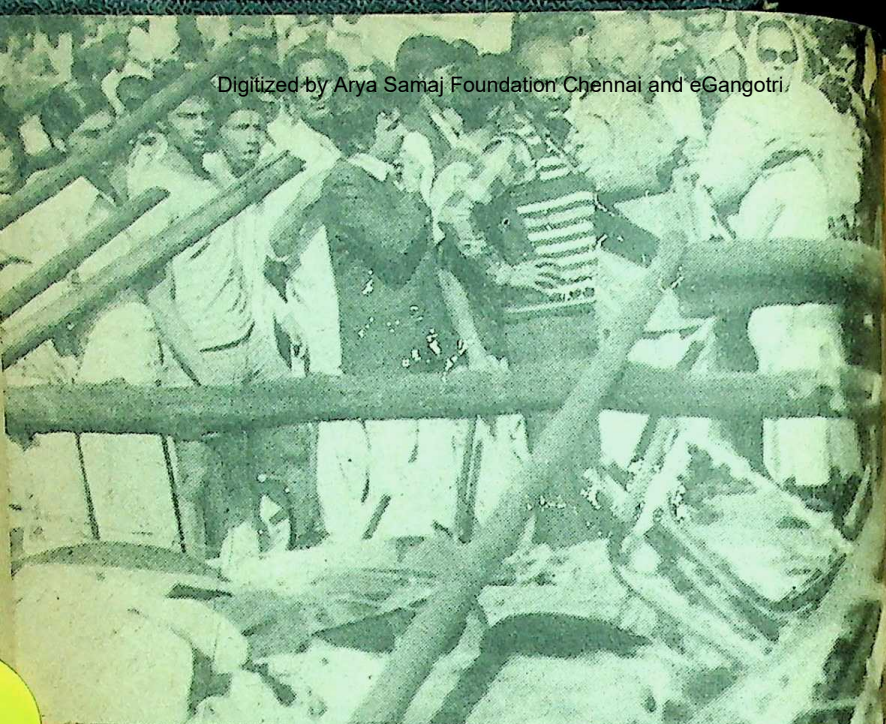
भीतर घटी घटनाओं से ही स्पष्ट हो जाता है.

शहडोल जिले में एक स्थान पर संक्रांति का मेला लगा हुआ था. इसी स्थान पर स्थानीय छात्रों और मेले में ड्यूटी पर तैनात सिपाहियों के बीच किसी बात पर झगड़ा हो गया. मेले में मध्य प्रदेश के वित्त मंत्री कृष्णपालसिंह भी मौजूद थे. उन के समझाने-बुझाने पर छात्र मान गए, किंतु दूसरे दिन 15 जनवरी को जब पुलिस का एक ट्रक वहां से गुजरा तो छात्रों और पुलिस वालों में फिर झगड़ा हो गया. छात्रों ने कोतवाली पर पहुंच कर पत्थर बरसाए. यहां तक तो छात्रों को भी अनुशासनहीनता का दोषी ठहराया जा सकता है, किंतु उस के बाद जो कुछ हुआ वह मध्य प्रदेश की सारी पुलिस के मुंह पर कालिख पोतने के लिए काफी है.

पुलिस कर्मचारियों ने छात्रों के खिलाफ बल प्रयोग करने की इजाजत चाही लेकिन स्थानीय पुलिस अधीक्षक उन्हें नरमी बरतने को कहते रहे. कहते हैं कि इस से पुलिस वाले भड़क उठे और

उन्होंने छात्रों पर गोली चलाने के लिए राइफलें मांगी. लेकिन जब पुलिस अधीक्षक ने संयम से काम लेने को कहा तो पुलिस कर्मचारियों ने पुलिस अधीक्षक को ही अपने आक्रोश का निशाना बना डाला. अशासकीय सूत्रों के अनुसार पुलिस वालों ने अपने अधीक्षक को बांध कर उस की खूब पिटाई की. यद्यपि सूत्रों ने इस की पुष्टि नहीं की किंतु उन्होंने यह स्वीकार किया कि पुलिस अधीक्षक के सिर में चोट आई है और राज्य सरकार ने समूचे कांड की न्यायिक जांच कराने का निश्चय किया है.

ग्वालियर स्टेशन की शर्मनाक घटना

ग्वालियर में ही बढ़ती हुई पुलिस निष्क्रियता का उदाहरण 25 जनवरी की रात को स्टेशन पर हुई एक लज्जाजनक घटना के समय देखने को मिला. उस रात कुछ उपद्रवी तत्व गणतंत्र दिवस देखने के लिए बिना टिकट यात्रा कर दिल्ली जाने वाले के रूप में 21 डाउन दक्षिण एक्सप्रेस के ग्वालियर पहुंचते ही इन तत्वों ने लगभग आधा घंटे तक ग्वालियर स्टेशन पर खूब तोड़फोड़ व मारपीट और आतंक फैलाए रखा. इन उपद्रवियों ने रेलवे स्टेशन पर लगे नियोन साइन बोर्ड तोड़ दिए. रेलवे गोदाम में आग लगा दी और दक्षिण एक्सप्रेस में बैठी लड़कियों और महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार किया. जब एक नवविवाहिता और उस के परिवार वालों ने इस व्यवहार का विरोध किया तो इन गुंडों ने उस नवविवाहिता के ही कपड़े फाड़ डाले.

ग्वालियर पुलिस संघ के अध्यक्ष कृष्णकुमार (सामने) और ग्वालियर मेले में आग की चपेट में जल कर मरा व्यक्ति (नीचे) : पुलिस की बर्बरता का इतना भयंकर रूप देख कर भी पुलिस की तरफदारी?

एक प्रत्यक्षदर्शी के ... कपड़े फाड़ देने के बाद उस निर्वस्त्र नवयुवती को एक गुंडे ने जलूस की शक्ल में पूरे प्लेटफार्म पर घुमाया. हजारों यात्री, रेलवे कर्मचारी और अन्य व्यक्ति यह नजारा खामोश खड़े देखते रहे. इस घटना के समय पुलिस का कहीं पता नहीं था. बाद में सूचना पा कर पुलिस अधीक्षक स्टेशन पहुंचे और उन्होंने किसी तरह 16 उपद्रवियों को गिरफ्तार कर

पिछले वर्ष छतरपुर बलात्कार कांड में दोषी पुलिस वालों को सजा देने का काम जब जनता ने अपने हाथों में लिया—तब यह हाल हुआ एक पुलिस दरोगा की पीठ का.

लिया. किंतु मजे की बात यह है कि गुंडों को छोड़ने के लिए तुरंत ही ... आ गए और घटना वाली रात को उन सब को छोड़ दिया गया.

सब से अधिक शर्मनाक बात तो है कि न तो मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री और न ही पुलिस महानिरीक्षक ने घटना पर कोई क्षोभ व्यक्त किया. ... में विपक्षी दलों के बहुत हल्ला म... पर सरकार ने इस घटना की एक महि... अधिकारी कुमारी रहमान द्वारा ... कराए जाने की घोषणा की.

लाश छोड़ कर भागे

मध्य प्रदेश पुलिस की 'हिम्मत' ... परिचय भी पिछले महीने जिला राज... में हुई एक घटना में मिला. प्राप्त विव... के अनुसार इस जिले के पचोर नाम... स्थान पर पुलिस के मंडल निरीक्ष... (सर्किल इंस्पेक्टर) को 25 जनवरी ... सूचना मिली कि कुछ कंजर रात ... देवलीचारण नामक गांव में डाका डाल... जा रहे हैं. अतः वह पचोर के थानाध्य... को ले कर उस गांव में पहुंचे. उधर चूं... उस गांव में कुछ दिनों से राहजनी ... बराबर घटनाएं हो रही थीं, इसलि... रात के अंधेरे में ग्रामीणों ने सश... पुलिस को डाकू समझा और गांव ... पटेल ने चेतावनी देने के बाद गोलि... चलानी शुरू कर दीं. गोली एक सिपा... को लगी और अपने एक साथी को गि... देख पुलिस वाले भाग खड़े हुए.

पुलिस की इस टुकड़ी के साथ ... मंडल निरीक्षक धराशायी सिपाही ... राइफिल ले कर और उस को वहीं मर... छोड़ कर फौरन ही भाग गए. न ... उन्होंने उसे कोई डाक्टरी सहायता पहुं... चाने का प्रयत्न किया और न ही गा... वालों के भ्रम को दूर करने की को... कोशिश की. घटना के दूसरे दिन पुलि... भारी संख्या में उस गांव में जा पहुं... और फिर शुरू हो गया पुलिस का दम...

चक्र. ... पहले ही ... पुलिस ... बांध क... को हुई ... रात को ... भाग ज... पर अत्य... चरित्र.

इस ... अनुशास... पुलिस ... यज मा... आए त... पड़ा अ... ही प्रदे... रही थी

चक्र. यद्यपि गोली चलाने वाला [illegible] पहले ही गांव से भाग गया था, पर पुलिस ने निरीह ग्रामीणों को पेड़ों से बांध कर घंटों पीटा और इस तरह रात को हुई सिपाही की मृत्यु का बदला लिया. रात को सिपाही को छोड़ कर डर के मारे भाग जाना और दिन में आ कर ग्रामीणों पर अत्याचार करना—यह है पुलिस का चरित्र.

इस प्रकार की कार्यक्षमता और अनुशासन रखने वाले मध्य प्रदेश के पुलिस कर्मचारी अचानक ही एक नाजायज मांग को ले कर आंदोलन पर उतर आए तो सरकार को कड़ा रुख अपनाना पड़ा और यह उचित भी था. 1979 से ही प्रदेश पुलिस में अनुशासनहीनता बढ़ रही थी.

[illegible] पुलिस कर्मचारी संघ के कुछ पदाधिकारी पुलिस वालों को लगातार गलत रास्ते अपनाने के लिए भड़काते रहे हैं. मध्य प्रदेश शासन ने 1979 तथा 1980 में पुलिस वालों की वेतनवृद्धि करने के अलावा अन्य सुविधाएं भी दीं. इस पर भी पुलिस कर्मचारी संघ ने अनुशासनहीनता का रवैया अपनाया तो शासन ने संघ के अध्यक्ष सुरेंद्रसिंह परिहार सहित 135 पुलिस कर्मचारियों को संविधान के अनुच्छेद 311(2) ग के अंतर्गत कारवाई कर बरखास्त कर दिया है.

आशा है सरकार के कड़े रुख को देख कर राज्य के पुलिस कर्मचारी अब आंदोलन का रास्ता छोड़ने पर बाध्य हो जाएंगे. ●

"आज सारे दिन घूमा, किसी महिला ने मुझ से सुई नहीं खरीदी. सोच कर आया हूं, यहां तो बिक ही जाएगी."

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए एवं सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : ये शिक्षक, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

हमारे रसायन शास्त्र के प्रोफेसर बहुत ही कठोर स्वभाव के थे. पीरियड शु होने के सिर्फ एकदो मिनट बाद भी कोई छात्र आता तो वह उसे कक्षा में नहीं आ देते थे.

एक दिन मेरा एक दोस्त जो हमेशा नियमित रूप से आता था, किसी वज से थोड़ी देर से पहुंचा. उसे भी प्रोफेसर साहब ने अंदर नहीं आने दिया. पीरियड आखिर में प्रोफेसर साहब ने हाजिरी लेनी शुरू कर दी. जब मेरे दोस्त का ना आया तो वह कक्षा से बाहर से ही बोल पड़ा, "हां, श्रीमानजी."

इस पर कक्षा में हंसी का ठहाका गूंज गया. प्रोफेसर साहब ने उस को अंद बुलाया तो उस ने कहा कि वह बाहर दरवाजे के निकट बैठ कर पढ़ रहा था.

जब प्रोफेसर साहब ने उस की नोट बुक देखी तो वह हैरान रह गए कि उन्होंने उस दिन जो कुछ भी पढ़ाया था वह सब उस ने कापी में नोट किया हुआ था

उस दिन के बाद हमारे प्रोफेसर साहब का स्वभाव भी नरम पड़ गया औ थोड़ी देर से आने वाले छात्र को भी वह कक्षा में आने देने लगे.

—सत्यवानसिंह मुक्

✦

जब मैं 12वीं कक्षा में था तब मेरी उम्र केवल 16 साल थी. अपनी कक्षा मैं सब से छोटा था. हमारा स्कूल शहर की सीमा पर था. इसी कारण गांव के अधिकतर लड़के वहां पढ़ने आते थे. आगे की सीटों पर हम छोटेछोटे लड़के बैठते हमारे कक्षा अध्यापक व भूगोल के शिक्षक बातबात पर हमें ही मारते रहते थे, ज कि अन्य छात्रों को जिन्हें भारत का मानचित्र बनाना भी नहीं आता था, नहीं मार थे. इस पर हम सभी छोटेछोटे छात्रों ने प्रिंसिपल से शिकायत कर दी.

बाद में एक दिन उन्होंने हमें समझाते हुए कहा, "बच्चो, मेरी तुम से को दुश्मनी नहीं है. मैं बड़े लड़कों को इसलिए नहीं मारता क्योंकि वे कई साल से इ कक्षा में पड़े हैं और पड़े रहेंगे. मैं उन्हें मारूंगा तो वे प्रतिरोध करेंगे. वे पढ़ने उद्देश्य से यहां नहीं आते. मैं चाहता हूं तुम एक ही साल में अच्छे नंबरों से पास हो जाओ. इसी लिए मैं तुम पर कठोर अनुशासन रखता हूं."

आज भी हमें जब उन की बात याद आती है तो उन की तसवीर आंखों आगे तैर जाती है.

—भगवानदास सं

✦

हमारे एक शिक्षक अकसर पीरियड शुरू होने के काफी समय बाद आते थे. ए बार प्रधानाचार्य निरीक्षण कर रहे थे. वह हमारी कक्षा में आए और सब से पिछ बेंच पर जा कर बैठ गए. ... के अनुसार शिक्षक महोदय देर से कक्षा में आए

सभी छात्र अभिवादन के लिए उठ खड़े हुए.

तभी शिक्षक महोदय बोले, "आप सब बडी कक्षा में पढ़ते हैं और शिष्टाचार की बातें बखूबी जानते हैं, फिर भी एक छात्र ऐसा है जो खड़ा नहीं हुआ है. आप सब बैठ जाएं और अंत में बैठा छात्र खड़ा हो जाए."

हम बैठ गए और तब जैसे ही वह छात्र यानी कि प्रधानाचार्य खड़े हुए तो शिक्षक महोदय अचानक उन्हें देख कर भौचक्के रह गए. उस के पश्चात कभी भी वह कक्षा में देर से नहीं आए.

—फ. च. धवन

✦

हमारे एक शिक्षक एक दिन शाम को किसी काम से मुख्याध्यापक के घर गए. जब वह उन के घर से लौटने लगे तो अचानक बिजली गुल हो गई. तब मुख्याध्यापक अपने हाथ में लालटेन ले कर मुख्य द्वार तक आए, जहां वह शिक्षक जूते उतार कर अंदर गए थे.

शिक्षक महोदय बोले, "साहब, आप ने यहां तक आने का कष्ट क्यों किया? मैं अपना जूता आप पहन लेता."

मुख्याध्यापक ने जवाब दिया, "दरअसल मैं आप को रोशनी दिखाने के लिए यहां तक नहीं आया हूं, बल्कि यह देखने आया हूं कि आप कहीं मेरा जूता पहन कर न चल दें."

—सफीरुद्दीन

✦

घटना उस समय की है जब मैं प्रथम वर्ष का विद्यार्थी था. हमारे कालिज में परंपरा चली आ रही थी कि लड़कियां आगे बैठेंगी व लड़के पीछे.

एक दिन हमारे कुछ शैतान मित्र सुबह आ कर आगे वाली सीटों पर बैठ गए. कुछ ही देर में प्राध्यापक महोदय आए तो लड़कियों ने छात्रों को उठाने के लिए उन से प्रार्थना की. इस पर प्राध्यापक महोदय ने दो टूक जवाब दिया, "जो कक्षा में पहले आएगा वह स्वेच्छा से कहीं भी बैठ सकता है. अतः आप लोग पीछे बैठिए."

बेचारी छात्राएं पीछे जा बैठीं.

उपस्थिति लेने के बाद प्राध्यापक महोदय ने अपना लेक्चर देना शुरू कर दिया. मगर कुछ ही देर में वह आगे बैठे हमारे दोस्तों की ओर रुख कर के बोले, "आप लोगों को बारबार पीछे घूम कर देखने में बड़ी तकलीफ हो रही है. इस से तो यही अच्छा होता कि आप लोग छात्राओं को ही आगे बैठने देते, क्योंकि वे चाहती हैं कि इन के सौंदर्य प्रसाधनों की अधिकतम खुशबू मैं ही ले सकूं."

कक्षा में जोरदार ठहाका गूंज गया. आगे बैठे छात्रों तथा समस्त छात्राओं की हालत देखने लायक थी.

—अरुणकुमार शर्मा

✦

हमारी एक अध्यापिका बजाए पढ़ाने के स्वेटर बुनने में मगन रहती थीं. प्रधानाध्यापिका ने कई बार उन्हें मना भी किया लेकिन उन पर कोई असर नहीं होता था.

एक दिन अचानक प्रधानाध्यापिका कक्षा में आईं. हमारी अध्यापिका को स्वेटर बुनते देख कर उन का क्रोध चरम सीमा पर जा पहुंचा. उन्होंने झपट कर उन के हाथों से स्वेटर छीन लिया और उसे उधेड़ने लगीं. कुछ ही क्षणों में उन्होंने स्वेटर उधेड़ कर ऊन का एक गोला बना कर अध्यापिका की मेज पर रख दिया और एक भी शब्द बोले बिना अपने कार्यालय की तरफ चली गईं.

इस के बाद हम ने उन्हें कभी कक्षा में स्वेटर बुनते नहीं देखा.

—सावित्री चौधरी (सर्वश्रेष्ठ) ●
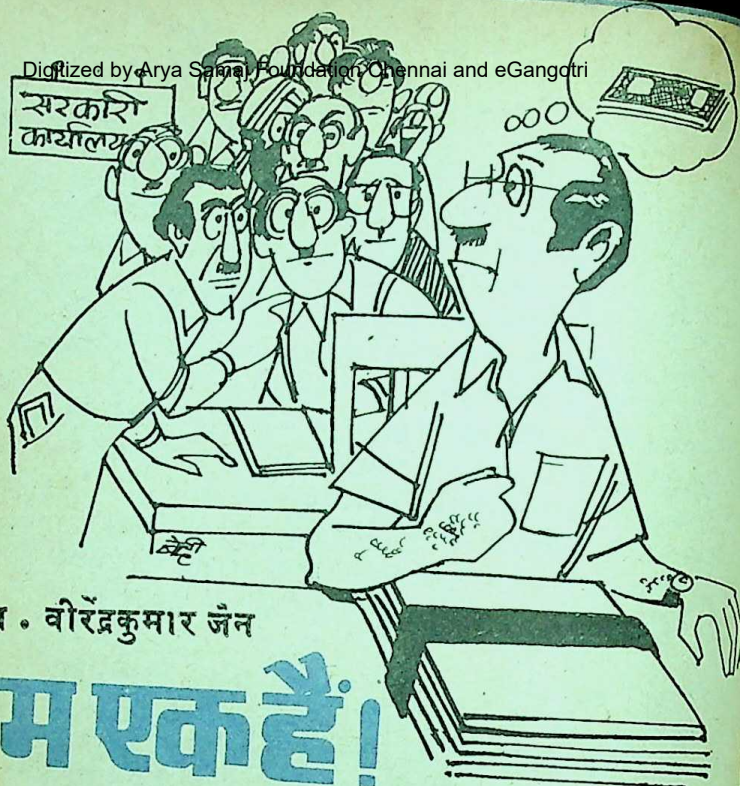
व्यंग्य • वीरेंद्रकुमार जैन

हम एक हैं!

सत्यव्रत का स्थानांतरण होना तय हो गया था. वह घूस लेते हुए रंगे हाथों पकड़े गए थे. विभागीय कारवाई के बाद यही तय हुआ कि उन्हें दूसरे विभाग में स्थानांतरित कर दिया जाए. लाचारी थी सो उन्होंने चुपचाप निर्णय स्वीकार कर लिया.

सत्यव्रत जिस नए विभाग में आए वह भी सरकार का एक ऐसा ही विभाग था जिस के हर कर्मचारी से किसी न किसी बाहरी व्यक्ति का साबका पड़ता था. इस विभाग में सत्यव्रत से पहले बारह व्यक्ति काम कर रहे थे. सत्यव्रत का पिछला इतिहास जान कर इन सब कर्मचारियों ने उन का सामूहिक बहिष्कार करने का पहले से फैसला कर लिया.

सत्यव्रत को शुरू के कुछ दिनों में बड़ा अटपटा लगा: उन में अनचाहे ही हीनभावना घर करने लगी. पर अचानक एक दिन उन्होंने एक कर्मचारी को घूस लेते देख लिया. [illegible] उस व्यक्ति और सत्यव्रत में दोस्ती गई.

अगली शाम तक उसी कर्मचारी माध्यम से पांच और कर्मचारियों सत्यव्रत की बोलचाल शुरू हो गई.

शेष लोग अभी भी न बोलने फैसला किए रहे.

और महीना समाप्त होतेहोते सत्यव्रत बारहों का कच्चा चिट्ठा जान गए और तब उन सभी कर्मचारियों को उ जैसा शरीफ, ईमानदार और रईसदि व्यक्ति एक भी नजर न आता.

अगले महीने के पहले ही दिन सब ने एक मत से अपनी राय दी, "सत्यव्र भी हम सब की तरह निहायत ईमानदा आदमी हैं. पिछले विभाग ने उन पर घूस खोरी का जो आरोप प्रमाणित किया वह जरूर किसी का षड्यंत्र था न सत्यव्रत की करतूत." इस के बाद सत्यव्र भी दूध के धुले बन कर बारहों की तरह सब काम करने लगे.

मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों ज्यों दवा की

एडिलेड (आस्ट्रेलिया) में एक मां अपने 15 महीने के शिशु को एक 'बाथ टब' में नहला रही थी. इसी दौरान बच्चे की तीन उंगलियां बाथ टब के अंदर की नाली में फंस गईं. बच्चे की उंगलियां निकालने की मां ने बहुत कोशिश की पर उसे सफलता नहीं मिली. परेशान हो कर उस ने फायर ब्रिगेड वालों को बुलाया पर वे भी बच्चे की उंगलियां नहीं निकाल सके. इस के बाद एंबुलैंस बुलाई गई, डाक्टर भी आया पर बच्चे की उंगलियां नहीं निकल सकीं.

आखिर बच्चे को बाथ टब सहित एक एंबुलैंस द्वारा रायल एडिलेड हस्पताल ले जाया गया. वहां आपातकालीन विभाग में तैनात डाक्टरों ने विशेषज्ञ की सहायता लेने का फैसला किया और नलों की मरम्मत करने वाले कारीगर को बुलाया गया. उस ने थोड़ी ही देर में नाली की फिटिंग खोल कर उस में फंसी बच्चे की उंगलियां निकाल दीं. बच्चे की उंगलियां काफी सूज गई थीं और उसे इसी हालत में सारी रात हस्पताल में गुजारनी पड़ी.

चीन में आबादी की बढ़वार रोकने के लिए नया कानून

चीन की सरकार ने बढ़ती हुई आबादी को रोकने के लिए एक नया कानून बनाया है. यदि किसी के यहां दो बच्चों के बाद तीसरा बच्चा होगा पतिपत्नी दोनों के वेतनों में से प्रतिमास 10 प्रतिशत कटौती कर ली जाएगी और यह कटौती उस समय तक होती रहेगी जब तक बच्चा 14 वर्ष का नहीं हो जाता. चौथा बच्चा होने पर 15 प्रतिशत की और पांचवां बच्चा होने पर 20 प्रतिशत की कटौती होगी.

...और उन्हें तलाक मिल गया

एक जरमन चिकित्सक का कहना है कि उस के एक मरीज के मुंहासे इसलिए निकल आते थे क्योंकि उसे अपनी पत्नी के लाल रंग के बालों से एलर्जी थी.

बेचारी पत्नी ने बहुत बार अपने बाल कटवा दिए पर जैसे ही बाल बढ़ने लगते, उस के पति को फिर एलर्जी का शिकार हो जाना पड़ता.

अंत में चार सालों तक एक साथ रहने के बाद उन दोनों ने डाक्टरों की सलाह पर तलाक ले लिया.

गिरफ्तारी भी और बिना आरोप रिहाई भी

सिर्फ दो पौंड की शर्त के लिए इंगलैंड की महारानी एलिजाबेथ के निवास स्थान बकिंघम पैलेस में जैसे ही एक युवक ने प्रवेश किया, चेतावनी का अलार्म बज उठा. पुलिस ने उस युवक को फौरन पकड़ किया. वह खोजी कुत्तों से बचता हुआ पैलेस की चारदीवारी वाली दीवार से पार होने की कोशिश कर रहा था. मैदान के बाहर खड़े उस के दो दोस्तों को भी गिरफ्तार कर लिया गया जिन के साथ उस ने शर्त लगाई थी. बाद में तीनों को बिना कोई आरोप लगाए रिहा कर दिया गया.

छात्र समस्याओं क[...]

उत्तर प्रदेश में सरकारी औ[...]
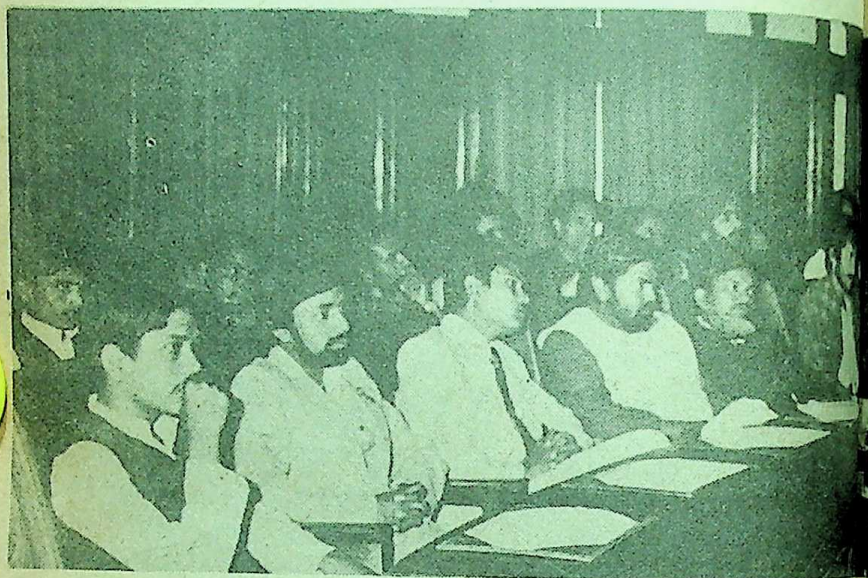
सिर्फ उत्तर प्रदेश में ही नहीं, बल्कि पूरे देश में छात्रों की समस्याएं दिन पर दिन उग्र होती जा रही हैं. प्रदेश के हर विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय में छात्र समस्याओं के सिलसिले में जम कर व्यवस्था विरोधी नारे उठ रहे हैं और विद्रोह की आग का धुआं गहराता जा रहा है. इसी लिए छात्र समस्याओं का समाधान एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है. उत्तर प्रदेश सरकार ने पिछले दिनों इन समस्याओं पर विस्तृत विचार करने के लिए छात्रों और उपकुलपतियों का एक सम्मेलन भी आयोजित किया.

ठीक इस के विपरीत जिन छात्र नेताओं ने इसे 'सरकारी छात्र सम्मेलन' कह कर इस का बहिष्कार किया था, उन्होंने कुछ ही दिनों बाद छात्र समस्याओं को ले कर कानपुर में एक [...] से छात्र सम्मेलन आयोजित कर मन [...] भंड़ास निकाली. फिर भी छात्र समस्[...] के नाम पर आयोजित ये दोनों ही [...] सम्मेलन समस्या को हल करने के [...] पर कितने कामयाब रहे, यह स्पष्ट [...] हो सका. न ही उन के आयोजनों [...] सार्थकता ही स्पष्ट हो पाई.

लखनऊ का सरकारी छात्र सम्मेल[न]

राज्य सरकार द्वारा बुलाया [...] छात्र सम्मेलन दो बार टलने के बाद [...] संपन्न हो सका. उत्तर प्रदेश वि[...] भवन के तिलक हाल में मुख्य मंत्री [...] अध्यक्षता में संपन्न हुए इस सम्मेलन [...] शुरुआत से ही बहिष्कार और वि[...] का जो सिलसिला प्रारंभ हुआ, वह [...]

अ[...]
छ[...]
है.[...]
वि[...]
स[...]
ए[...]

लन के [...] लन में [...] संबंधी [...] की.

उ[...] वाले [...] छात्र [...] उपकुल[...] मता [...]

हल क्या है?

लेख • बसंत श्रीवास्तव
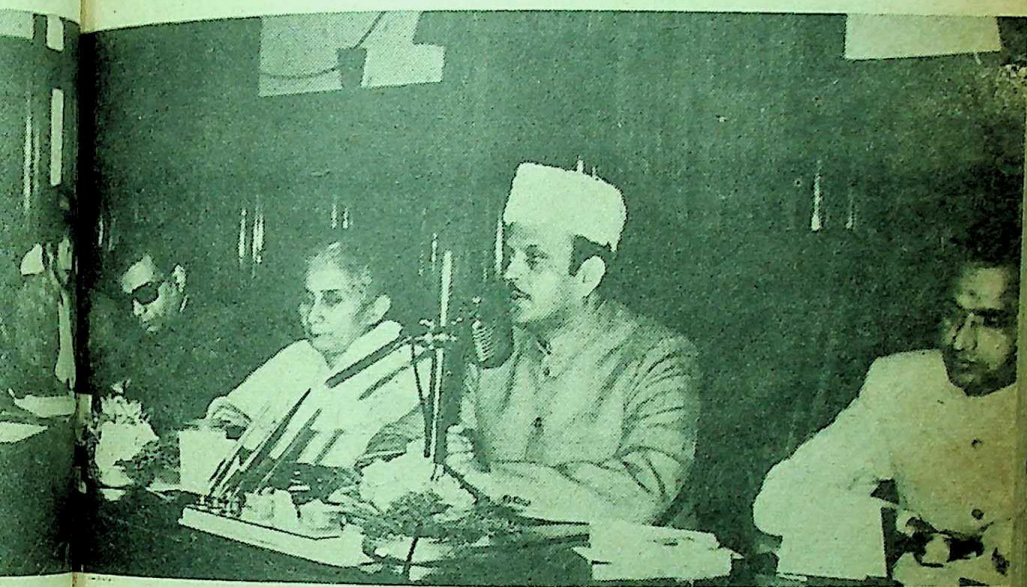
गैर सरकारी छात्र सम्मेलन

आज पूरे देश में छात्र असंतोष बढ़ता जा रहा है. इसी लिए छात्र समस्याओं का समाधान एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है. उत्तर प्रदेश सरकार ने पिछले दिनों इन समस्याओं पर विस्तृत विचार करने के लिए छात्रों और उपकुलपतियों का सम्मेलन भी आयोजित किया. इस के अलावा कानपुर में भी एक गैर सरकारी सम्मेलन हुआ. मगर इन का परिणाम?

लन के समापन तक कायम रहा. सम्मेलन में ग्रामंत्रित छात्र नेताओं ने शिक्षा संबंधी नीतियों की जम कर आलोचना की.

उधर सम्मेलन का बहिष्कार करने वाले छात्र नेताओं का आरोप था कि छात्र हितों के नाम पर छात्र नेताओं, उपकुलपतियों तथा अभिभावकों के इस सम्मेलन में छात्र नेताओं को बुलाने का कोई मापदंड ही नहीं निर्धारित किया गया. सरकार ने इस सम्मेलन में सिर्फ उन छात्र नेताओं को बुलाया जो सरकार के समर्थक हैं और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष में सत्तारूढ़ दल के युवा छात्र संगठनों से संबद्ध हैं. इन का कहना था कि इस सम्मेलन में सभी वर्गों के छात्र नेताओं

को आमंत्रित नहीं किया गया और इस तरह यह छात्र सम्मेलन एक पक्षीय है और उस में सिर्फ उन बातों पर ही बहस हो सकेगी, जिन पर सरकार चाहती है.

सम्मेलन का बहिष्कार

विरोध की इस प्रक्रिया में लखनऊ विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष श्री अतुलकुमार अंजान तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय छात्र संघ अध्यक्ष राधेश्याम सिंह सम्मेलन की काररवाई प्रारंभ होने से पहले ही आरोप लगा कर उस का बहिष्कार कर गए. इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्र संघ तथा काशी हिंदू विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष इन्हीं कारणों से सम्मेलन में आए ही नहीं थे. सरकार द्वारा आमंत्रित 80 छात्र नेताओं में से 55 नेताओं तथा आमंत्रित 11 अभिभावकों में से नौ अभिभावकों ने सम्मेलन में भाग लिया. सम्मेलन में मुख्य मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह, शिक्षा मंत्री स्वरूप बख्शी तथा गृह राज्य मंत्री राजेंद्र त्रिपाठी सहित शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी तथा प्रदेश के आमंत्रित विश्वविद्यालयों के उपकुलपति भी उपस्थित थे. परंतु इन उपकुलपतियों ने छात्र समस्याओं को ले कर एक भी ठोस सुझाव नहीं दिया, न ही वे उन कारणों को स्पष्ट कर सके.

सम्मेलन की संपूर्ण उपलब्धि के तौर पर वे तीन घोषणाएं थीं, जो मुख्य मंत्री ने सम्मेलन के प्रारंभ होने से पहले ही की थीं. मुख्य मंत्री का कहना था कि सरकार ने छात्रों की समस्याएं हल करने के लिए पांच करोड़ रुपए की राशि से 'छात्र कल्याण कोष' स्थापित करने का फैसला किया है. इस कोष के ब्याज से सालाना एक निश्चित धनराशि छात्र कल्याण कार्यक्रमों में लगाई जाएगी.

छात्रों तथा सरकार के बीच वैचारिक आदानप्रदान की प्रक्रिया को बनाए रखने की आवश्यकता स्वीकारते हुए मुख्य मंत्री ने अपनी दूसरी घोषणा में 'राज्य छात्र परिषद' के गठन की बात कही.

तीसरी घोषणा में उन्होंने कहा कि सरकार प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों एवं संबद्ध महाविद्यालयों में सहकारी समितियां खुलवाएगी ताकि छात्रों, खासकर छात्रावास में रहने वाले छात्रों को उचित मूल्य पर आवश्यक वस्तुएं सुलभ कराई जा सकें.

सम्मेलन से पूर्व मुख्य मंत्री द्वारा की गई इन घोषणाओं के अनंतर पूरे दिन की बहस के बाद भी कोई नया निर्णय या कार्यक्रम तय नहीं किया जा सका. फिर छात्र नेताओं, उपकुलपतियों तथा अभिभावकों के इस सम्मेलन का निष्कर्ष क्या ये तीन सरकारी घोषणाएं ही थीं? इन्हें तो सरकार जब भी चाहती, कर सकती थी. फिर इस सम्मेलन का औचित्य ही क्या रहा?

सम्मेलन में आलोचना का दौर

सम्मेलन में उपस्थित अधिकांश छात्र नेताओं ने सरकारी नीतियों की खुल कर आलोचना की. इन का आरोप था कि राजनीतिक स्वार्थ के कारण प्रदेश की शिक्षा संस्थाओं का दूषित किया जा रहा शैक्षिक वातावरण भी छात्र असंतोष का प्रमुख कारण है. और यदि इस स्थिति को शीघ्र ही न सुधारा गया तो छात्र असंतोष और अधिक उग्र रूप ले लेगा. छात्र नेताओं ने यह भी आरोप लगाया था कि सरकार द्वारा नियुक्त किए गए उपकुलपति भी राजनीति से प्रेरित हो यहां का माहौल दूषित कर रहे हैं. और उन्हें छात्रों की समस्याओं के समाधान में कोई दिलचस्पी नहीं है.

सम्मेलन में उपस्थित छात्र नेताओं ने बेरोजगारी समाप्त करने, बेरोजगारी भत्ता देने तथा रोजगार दिलाने वाली शिक्षा देने की मांग उठाने के साथ

ही शैक्षिक स्तर में सुधार लाने के लिए शिक्षा प्रणाली तथा परीक्षा प्रक्रिया में अपेक्षित परिवर्तनों की बात भी दोहराई. छात्रों ने सरकार से शिक्षा सत्र को नियमित करने, प्रवेश पर नियंत्रण रखने, छात्रावासों की उचित व्यवस्था करने तथा शिक्षा संस्थाओं से शिक्षकों की राजनीतिक अखाड़ेबाजी समाप्त करने की बात पर भी बल दिया. छात्र नेताओं ने पुलिस के बल पर विश्वविद्यालय चलाने की भी निंदा की.

छात्र नेताओं के आरोप

छात्र नेताओं का यह भी आरोप था कि पुलिस के बल पर विश्वविद्यालयों के उपकुलपति इतने तानाशाह हो गए हैं कि वे छात्रों से मिलना तथा उन की समस्याएं सुनना तक गवारा नहीं करते. सम्मेलन में एक स्वर से विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों को दूषित राजनीतिक प्रभाव से मुक्त करने की मांग की गई, ताकि उन में स्वच्छ व शांत शैक्षिक वातावरण पनप सके.

सम्मेलन में उपस्थित उपकुलपतियों ने शिक्षा संस्थाओं में मौजूदा अशांतिपूर्ण स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए वार्ता के माध्यम से समस्या को हल करने की सलाह दी.

सम्मेलन में उपस्थित अभिभावकों का मत था कि शिक्षा का स्तर ऊंचा उठाने तथा उसे रोजगार दिलाने में सहायक बनाने से ही बेरोजगारी की स्थिति को समाप्त किया जा सकता है. अभिभावकों का मत था कि रोजगार का अभाव ही छात्रों के अनुशासनहीन हो जाने का कारण है.

सम्मेलन में मुख्य मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह एवं शिक्षा मंत्री श्रीमती स्वरूप कुमारी बक्शी ने छात्र समस्याओं के हल के लिए सरकार के कृत संकल्प होने की बात दोहराई और कहा कि छात्र हितों की रक्षा के लिए भविष्य में भी ऐसे
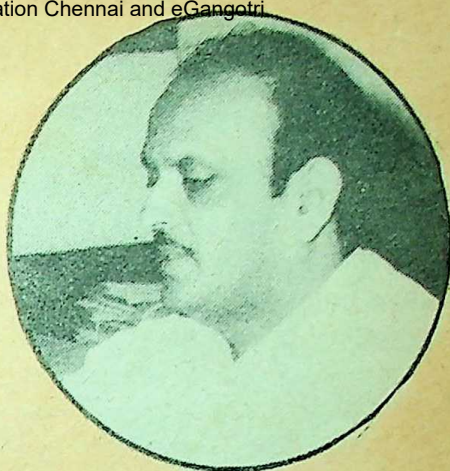
उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : क्या छात्र सम्मेलन की उपलब्धि शून्य ही नहीं रही?

सम्मेलन आयोजित किए जाते रहेंगे.

छात्र नेताओं के नाम पर सिर्फ चंद लोगों के साथ कुछ घंटों की बातचीत से ही उग्रतर हो रही समस्याओं को सरकार क्रियात्मक रूप से कैसे हल कर सकेगी, यह सोचने की बात है. किसी दायरे में बंधे ऐसे सम्मेलनों के जरिए छात्र समस्याओं पर सर्वांगपूर्ण बहस नहीं हो सकती. हर क्षेत्र एवं वर्ग के प्रतिनिधियों के विचारों एवं सुझावों को सुने बिना छात्र समस्याएं हल नहीं की जा सकतीं. हां, इस सम्मेलन की एक खास बात यह अवश्य थी कि उस में विश्वविद्यालयों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कुछ छात्रों को आमंत्रित किया गया था.

सम्मेलन बुलाने के पीछे कुछ भी दृष्टिकोण रहा हो, अगर मुख्य मंत्री की तीनों घोषणाओं पर ईमानदारी के साथ अमल किया जाए तो स्थिति में काफी सुधार आ सकता है और छात्रों के असंतोष को एक सीमा तक समाप्त भी किया जा सकता है.

दरअसल किसी भी समस्या के उग्र रूप धारण करने के पीछे कहीं न कहीं

कानपुर सम्मेलन में एक स्वर में शिक्षा संस्थाओं में पुलिस के प्रवेश पर पाबंदी लगाने तथा भ्रष्ट उपकुलपतियों को बरखास्त करने की मांग की गई है.

सरकारी नीतियों की असफलता जुड़ी रहती है. इस से पहले भी सरकारी स्तर पर छात्रों एवं युवा लोगों की समस्याओं एवं बेरोजगारी उन्मूलन के नाम पर नाना प्रकार की घोषणाएं की जा चुकी हैं. पर उन के क्रियान्वयन में ईमानदारी के अभाव से गुड़ गोबर होता चला आया है.

यह उल्लेखनीय है कि सन 1978 में भी प्रदेश की छात्र समस्याओं पर विचार करने व उन्हें हल करने के लिए तत्कालीन रामनरेश यादव सरकार ने विधानभवन के तिलक हाल में एक छात्र सम्मेलन आयोजित किया था.

उस सम्मेलन में भी छात्रों के असंतोष एवं उन की समस्याओं के लिए सरकारी नीतियों को ही दोषी ठहराया गया था और सरकार से बेरोजगारी दूर करने तथा रोजगारपरक शिक्षा की व्यवस्था करने की मांग की गई थी. पर उस सम्मेलन के बाद सरकार ने ऐसा कोई कदम नहीं उठाया जिस से स्थिति में सुधार होता.

कानपुर का गैर सरकारी छात्र सम्मेलन

राज्य सरकार की ओर से लखनऊ में किए गए इस सम्मेलन से असंतुष्ट छात्र नेताओं का एकदिवसीय छात्र सम्मेलन कानपुर में आयोजित किया गया. आयोजकों के अनुसार इस में प्रदेश के लगभग 200 छात्र नेता उपस्थित थे. इन छात्र नेताओं का कहना था कि सरकार द्वारा आयोजित सम्मेलन में उन अधिकांश छात्र नेताओं को आमंत्रित ही नहीं किया गया था जो सही अर्थों में छात्रों का प्रतिनिधित्व करते थे. कानपुर सम्मेलन में इंदिरा कांग्रेस से संबंधित छात्र संगठनों एवं विद्यार्थी परिषद ने भाग नहीं लिया.

इस सम्मेलन में एक स्वर में शिक्षा संस्थाओं में पुलिस के प्रवेश पर पाबंदी लगाने तथा भ्रष्ट उपकुलपतियों को बरखास्त करने की मांग की गई. पिछले दिनों इलाहाबाद तथा वाराणसी में छात्रों पर हुई पुलिस की लाठी वर्षा की निंदा करते हुए गिरफ्तार छात्रों की रिहाई की भी मांग की गई. सम्मेलन की आम राय थी कि जब तक विश्वविद्यालयों में राजनीति से प्रेरित हो कर काम करने वाले उपकुलपतियों को वहां से हटाया नहीं जाएगा, स्थिति में सुधार लाने की आशा करना व्यर्थ है. यह आरोप लगाया गया कि पुलिस के भारी जमाव के बीच उपकुलपति बजाए छात्रों की समस्याएं हल करने के उन्हें उलझाते जा रहे हैं और यह सब कुछ सरकार के निर्देश पर हो रहा है.

सम्मेलन में शिक्षा तथा परीक्षा प्रणाली में परिवर्तन करने, बेरोजगारी समाप्त करने व शिक्षा को रोजगारपरक बनाने, भ्रष्ट एवं आई. ए. एस. उपकुलपतियों को हटाने तथा छात्र नेताओं के प्रवेश पर लगे प्रतिबंध को समाप्त करने की मांग की गई.

इस सम्मेलन में सरकार और उस की नीतियों की तो जरूर जम कर निंदा की गई पर परिवर्तन एवं सुधार के नाम पर ऐसे कोई रचनात्मक सुझाव पेश नहीं किए गए जिन से छात्र समस्याओं का समाधान हो सके. किन्हीं मुद्दों पर इन छात्र नेताओं में आपस में ही अच्छीखासी खींचतान रही. इस सम्मेलन में जिन छात्र नेताओं ने भाग लिया, उन में लखनऊ, वाराणसी, अलीगढ़ और कानपुर विश्वविद्यालयों के छात्र संघों के अध्यक्ष भी थे.

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्वपूर्ण होती है, लेखक का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दिया जा रहा है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इस में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 50 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार	: 200 रुपए
द्वितीय पुरस्कार	: 100 रुपए
तृतीय पुरस्कार	: 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.

इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे. इस के लिए 35 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

और फिर सुलह हो गई

कहानी • युगलकिशोर श

और सचमुच नीरा चली गई. उस के साथ ही चला गया मेरा वह विश्वास, जिस पर मुझे नीरा से भी अधिक भरोसा था. जिंदगी में ऐसा भी हो सकता है, इस की मैं ने कभी सपने में भी कल्पना नहीं की थी. इतना प्रेम करने के बावजूद नीरा मुझे अकेला छोड़ कर चली गई, सहसा विश्वास नहीं होता था. पर सच यह है कि इनसान उस सत्य को कभी स्वीकारना नहीं चाहता, जो उसे पसंद न हो. वह घोर निराशा में भी आशा की कि[illegible] चाहता है. यही मेरे साथ हो रहा था.

मैं ने सिगरेट सुलगाई. कश लि[illegible] और धुआं छोड़ते हुए यह जानने [illegible] कोशिश की कि आखिर इस में दोष कि[illegible] का है. अभी तक तो दोष नीरा का [illegible] नजर आता था. मैं नीरा के दकियानू[illegible] विचारों को ही सारे झगड़े की जड़ मान[illegible] था. जिन छोटीछोटी बातों को मैं नज[illegible] अंदाज कर जाना चाहता था, उन्हीं [illegible] पकड़ कर उस ने राई का पहाड़ बना डा[illegible] था. क्या ये बातें उस जैसी पढ़ीलि[illegible] लड़की को शोभा देती हैं? पर...

अपर्णा मुसकरा कर बोली, "नीराजी, साहब को जरा संभाल कर रखिएगा. यह खुद जितने सुंदर हैं, कविता के माध्यम से बातें उस से भी खूबसूरत करते हैं."

सवाल उठता, यह जरूरी तो नहीं कि जिस ढंग से मैं सोचता हूं, उसी ढंग से वह भी सोचे.

मैं ने दो वर्ष के संक्षिप्त वैवाहिक जीवन में पचासों बार उसे समझाने की कोशिश की, पर वह नहीं मानी. परिणाम सामने था—उसे गए दो महीने से ऊपर हो गए थे. ये दो महीने ऐसे बीते थे जैसे कई युग बीत गए हों. न दफतर में दिल लगता था, न घर में. हर वक्त मस्तिष्क में यही सवाल चक्कर काटता रहता, 'आखिर यह हुआ कैसे?' यही सब सोचते-सोचते मैं अतीत में खो गया.

वह हमारी सुहागरात थी. दरअसल सुहागरात तो बीत चुकी थी. विवाह के बाद की पहली भोर कहना ज्यादा उचित होगा. सुबह का उजाला धीरेधीरे फैल रहा था. पर हमारे कमरे में अभी भी मदहोशी का ही वातावरण था. नीरा मेरे आगोस में थी और मैं दीनदुनिया से बेखबर उस के लंबे मुलायम बालों में अपनी उंगलियां घुमा रहा था.

अचानक वह खामोशी को भंग करते हुए बोली, "एक बात पूछूं?"

"पूछो, पर क्या रात भर हुए सवाल-जवाब के बाद भी कुछ बाकी रह गया है?" मैं ने उसे छेड़ते हुए कहा.

उस ने अपना चेहरा मेरे सीने में छिपा लिया. मैं ने उस का चेहरा ऊपर

नीरा मुझ से नाराज हो कर घर से चली गई थी और अब वापस आने को तैयार भी हो गई. मैं स्वयं उसे लिवाने भी जा रहा हूं. पर उसे घर क्यों छोड़ना पड़ा—मेरी वजह से या अपनी—इस का समाधान क्या हम दोनों में से कोई भी खोज सका?

उठाया. उस के चेहरे की लाली और कांपते होंठ उस की खुशी अपने आप व्यक्त कर रहे थे.

"नीरू," मैं ने धीरे से कहा.

जवाब में उस ने अपनी बड़ीबड़ी पलकों को उठा कर मेरी ओर देखा.

"क्या कह रही थीं तुम?"

"कुछ भी तो नहीं."

"कुछ तो जरूर कह रही थीं." मैं ने जिद की.

उस की आंखों में हलचल हुई. होंठ कुछ कहने को कांपे, पर वह मुसकरा कर रह गई. मुझे लगा जैसे मेरी सांस ही रुक गई हो. फिर भी मैं बोला, "नीरू, तुम्हें बताना पड़ेगा. तुम बोलो, क्या कहना चाहती थीं?, वरना..." कहते हुए मैं ने दोनों हाथ उस की ओर बढ़ाने का का उपक्रम किया.

"अरे...नहीं, नहीं, बताती हूं." वह मेरा अभिप्राय जान कर घबरा गई. दूसरे ही क्षण लज्जा मिश्रित मुसकान उस के अधरों पर तैर गई.

"मैं कान में बताऊंगी," उस ने हौले से कहा.

मैं ने तुरंत अपना कान उस के होंठों की ओर बढ़ा दिया.

मेरे कान में उस की खनकती हुई आवाज हौले से गूंजी, "विवेक, तुम इतने अच्छे क्यों हो?"

मुझे लगा जैसे मैं सातवें आसमान के भी ऊपर पहुंच गया हूं.

पूरे एक महीने की छुट्टी ली थी मैं ने. कशमीर, शिमला, दिल्ली इत्यादि जगहों की खूब सैर की थी हम ने. एक महीना एक पल में समाप्त हो गया. जब मनुष्य को खुशियां ही खुशियां मिलती हैं तो जीवन काफी छोटा मालूम पड़ता है.

दफतर का खयाल आते ही मैं धरती पर उतर आया था. दफतर का बहुत सा काम मेरी अनुपस्थिति में रुक गया था, अतएव लौटते ही मैं उस में व्यस्त हो गया था. मेरा काम ही तो था, जिस के बदौलत अपनी कंपनी के मालिक का विश्वासपात्र बन कर एक साधारण क्लर्क से पांच वर्ष में मैं कंपनी का प्रबंधक बन गया था.

अकसर घर लौटने में मुझे देर होने लगी. पर नीरा ने कोई शिकायत न की. हमारा प्रेम उसी तरह कायम था.

एक दिन दफतर पहुंचने के कोई एक घंटे बाद फोन की घंटी बजी.

"हैलो, विकी," उधर से नीरा की आवाज आई.

"नीरू, कहो कैसे याद किया?"

"क्या तुम्हें याद करने के लिए भी किसी कारण का होना जरूरी है?" नीरा के स्वर में प्रेमपूर्ण उलाहना था.

"ओह, नहीं, मेरा यह मतलब नहीं था. अच्छा क्या कर रही हो?" मैं ने हंसते हुए बात टाल दी थी.

"तुम्हारा इंतजार...और तुम ने मुझे कौन सा काम दे रखा है?"

"लेकिन तुम अपनी यह ड्यूटी ठीक से नहीं निभा रही हो". मैं ने उसे छेड़ा था.

"अच्छा, वह कैसे?"

"भई, इंतजार करने की अपनी ड्यूटी बीच में छोड़ कर मेल जो कर बैठी हो." मैं जोर से हंस पड़ा था.

उधर नीरा भी हंस पड़ी थी.

"अच्छा, विकी, आज दफतर से सीधे घर आ रहे हो न?"

"हांहां, मगर बात क्या है?"

"यह अभी नहीं बताऊंगी, तुम ठीक 5.30 बजे घर पहुंच रहे हो न? क्यों ठीक है न?"

"वह तो ठीक है, मगर बात क्या है?" मैं ने फिर पूछना चाहा था.

"मैं ने कहा न, अभी नहीं बताऊंगी. बस तुम 5.30 बजे घर आ जाना, अच्छा." कहते हुए उस ने फोन रख दिया था.

लंच के बाद मेरी स्टेनो अपर्णा ने आ
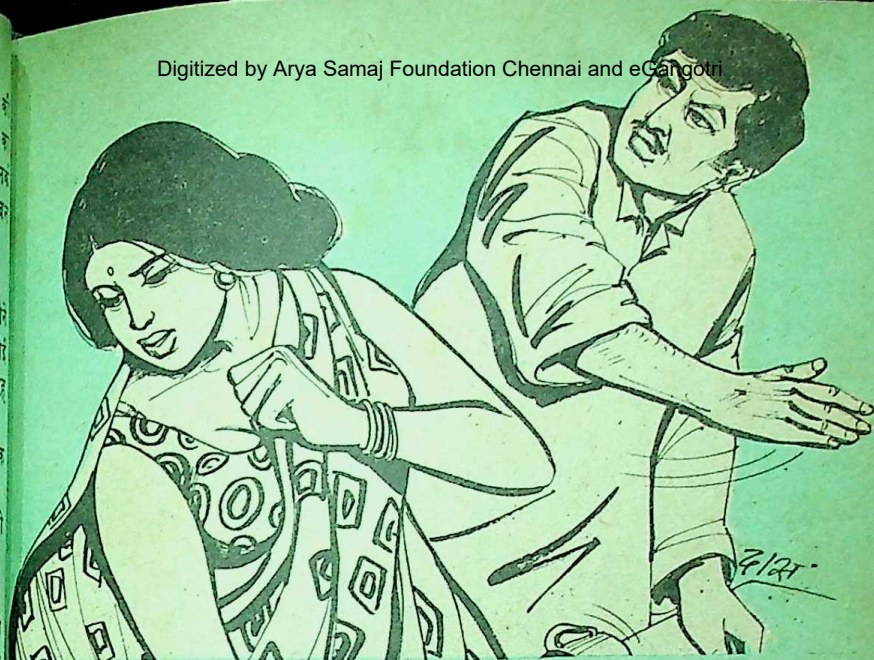
नीरा की बात सुनते ही मैं अपना विवेक खो बैठा. तड़ाक...जाने कब मेरा हाथ उठा और नीरा के गाल पर पूरी शक्ति से जा लगा.

कर कहा था कि बास मुझे याद कर रहे हैं. बास के पास जाने से पता चला कि शाम को बंबई से हमारी एक बहुत बड़ी पार्टी आ रही है, जिस से एक बहुत बड़े आर्डर की आशा है. बास ने कहा कि पांच बजे के बाद मैं उन के घर पर आ जाऊं. मैं उस पार्टी के आर्डर के चक्कर में इस कदर उलझ गया कि मुझे याद ही नहीं रहा कि नीरा का कोई फोन भी आया था.

रात के 10 बजे जब हम व्यापारिक सौदेबाजी खत्म कर काफी की चुसकियां ले रहे थे तो अचानक मुझे नीरा के फोन का खयाल आया. मैं तुरंत क्षमा मांगते हुए घर की तरफ चल पड़ा था.

घर पहुंच कर बड़ी व्यग्रता से घंटी बजाई. थोड़ी देर बाद नीरा ने दरवाजा खोला. उदास सा चेहरा, आंखें लाल और सूजी हुईं. उस ने सुंदर सा मेकअप कर रखा था, पर शायद रोने से मेकअप कुछ घुल सा गया था. उस के कपड़े वगैरा देख कर लग रहा था, वह कहीं बाहर जाने वाली थी. उस ने मेरी ओर केवल एक बार देखा और मुड़ गई. पहली बार उस के चेहरे पर वह मुसकराहट नहीं आई, जो मुझे देखते ही अनायास उस के चेहरे पर आ जाया करती थी. मुझे कुछ समझ में नहीं आया कि मैं क्या करूं. मैं ने लपक कर उस की बांह पकड़ कर उसे रोका, "नीरू, मुझे माफ करो. क्या करूं एक इतना जरूरी काम आ पड़ा था कि तुम्हारे फोन का खयाल ही नहीं रहा."

नीरा की बड़ीबड़ी आंखें मेरी ओर उठीं, पर उन आंखों में एक अजीब सूनापन सा था. मैं उस से निगाहें नहीं मिला पाया. मैं ने उसे बांहों में बांधते हुए कहा था, "भई, अगर कोई बहुत जरूरी बात थी तो फोन पर ही कह देतीं."

"इस का मतलब यह है कि तुम्हारे सामने मेरा अपना कोई महत्त्व नहीं. सिर्फ मेरी बात ही कुछ महत्त्व रखती है." नीरा ने पहली बार खामोशी तोड़ी थी.

"ओ नीरू, तुम तो बात को पकड़

लेती तो मेरा यह मतलब नहीं था. दरअसल मैं तो..."

"चलो, खाना खा लो," उस ने मेरी बात बीच में ही काट कर कहा था.

मैं खिसिया गया था. उस के बाद खाना खा कर पलंग पर आने तक कोई बात नहीं हुई थी. हम ऐसे ही करवटें बदलबदल कर न जाने कब सो गए.

सुबह हम सामान्य थे. कंघा खोजते वक्त अचानक शृंगार मेज की दराज में पिछली शाम के शो की दो टिकटें देख कर मेरी समझ में आया कि नीरा ने क्या प्रोग्राम बनाया था. मुझे बड़ा अफसोस हुआ. कारण—पहली दफा नीरा ने खुद किसी फिल्म के टिकट मंगाए थे. बात बढ़ने के डर से मैं टिकट चुपचाप वहीं छोड़ दफतर चला गया था.

उस दिन की बात को मैं ने उतना महत्त्व नहीं दिया था. पर कुछ दिन बाद जब मैं ने नीरा को खुद फोन पर फिल्म जाने को तैयार रहने को कहा और खुद रात को 10 बजे तक प्रवीण के साथ ब्रिज खेलता रहा तो लौटने पर पहली बार नीरा का गुस्सा देखने को मिला.

"विकी, जब तुम्हें फिल्म देखने नहीं जाना था तो मुझे तैयार रहने को क्यों कहा था? मैं खुद तो तुम्हारे गले नहीं पड़ रही थी?"

तर्क सही था. उस का कोई जवाब मेरे पास नही था. पर पुरुष होने के कारण मैं अपनी गलती स्वीकार नहीं कर पा रहा था. अतएव मैं ने पहली बार झूठ का सहारा लिया.

"नीरू, दरअसल, फिल्म का प्रोग्राम तो था, पर ऐन वक्त पर बास ने बहुत जरूरी काम से घर बुलवा लिया."

"इन दिनों मैं देख रही हूं घर से ज्यादा तुम्हें दफतर का खयाल रहने लगा है." नीरा का स्वर तीखा था. "विकी, मैं इतनी मूर्ख नहीं हूं, जो हफ्ते में पांच दिन देर से आने का कारण न समझ सकूं."

नीरा का स्वर और तेज हो गया. मानो वह अपने क्रोध को दबाने की असफल कोशिश कर रही हो.

"क्या बकती हो? मैं घर देर से आता हूं, इस का कारण ज्यादा काम नहीं और क्या है?" मैं ने जरा जोर से कहा था.

"लेकिन तुम दफतर में कहां रहते हो? फोन पर चपरासी रोज यही कहता है, 'साहब तो कभी के चले गए.'"

"वह तो मुझे बास के घर जाना पड़ता है," मैं ने सफाई दी थी.

"और साथ में उस खूबसूरत सेक्रेटरी को भी ले जाना पड़ता है?" नीरा ने सीधे अपर्णा की ओर इशारा किया था.

मैं जैसे आसमान से गिर पड़ा था. जिस की तरफ आज तक मैं ने कभी गलत नजरों से देखा तक नहीं था, उस के बारे में नीरा के इस खयाल को सुन कर मुझे सचमुच नीरा पर बेहद क्रोध आया था.

पर मैं ने अपने क्रोध को रोक कर स्वर को संयत करते हुए पूछा था, "नीरा, तुम कहना क्या चाहती हो?"

"कहने को अब रह ही क्या गया है? पुरुष जाति ही ऐसी होती है. वह किसी एक से बंध कर रह ही नहीं सकता. तुम तो वैसे भी कवि हो, सौंदर्य प्रेमी हो. एक फूल को सूंघ कर सारी जिंदगी कैसे काट सकते हो? फिर दो साल पुराने बासी फूल की अपेक्षा नए और ताजा फूल की सुगंध अगर तुम्हें आकृष्ट कर ले तो इस में आश्चर्य की क्या बात है?"

"यह क्या बकवास लगा रखी है, जो कहना है साफसाफ कहो?" मेरे संयम का बांध टूटने लगा था.

"तो सुनो, तुम बहाने बनावना कर उस डायन के साथ गुलछर्रे उड़ाते हो और यहां दफतर में ज्यादा काम का बहाना कर के मुझे बेवकूफ बनाने की चेष्टा करते हो," नीरा आवेश में कांपते हुए बोली थी.

मेरे अंदर की कोई [illegible] उछल कर बाहर आने की कोशिश कर रही थी. मेरी सहनशक्ति जवाब देने लगी थी. इतना बड़ा आरोप! मैं ने रहीसही शक्ति बटोर कर कहा था, "नीरा, यह क्या बेवकूफी है? तुम पढ़ीलिखी हो कर भी..."

"हांहां, मुझे समझदार और पढ़ीलिखी का दर्जा दे कर तुम चाहते हो कि मैं यह मूक दर्शक बनी देखती रहूं? मुझे तो उस दिन तुम्हारे बास के यहां उस पार्टी में ही पता चल गया था. बोलो, क्या यह सब झूठ है?"

मेरे सब्र का बांध आखिर टूट गया. घायल सिंह की तरह मैं बिफर पड़ा था, "नीरा, तुम इतनी गिरी हुई बातें कह सकती हो और वह भी मेरे बारे में. मेरे लिए इस से बढ़ कर शर्मनाक बात और क्या हो सकती है? मैं तो तुम्हें नए विचारों की समझता था. पर औरत चाहे कितनी पढ़लिख जाए, अपने दकियानूसी विचारों को कभी नहीं छोड़ सकती."

मैं एक सांस में इतना सब कह कर अपने कमरे में आ गया था. घृणा, क्रोध और अपमान से सिर फटा जा रहा था. शादी करने की गलती का मुझे पहली बार एहसास हुआ था. मेरा ध्यान अचानक अपर्णा की ओर चला गया था. अपर्णा काफी शोख और तेज लड़की है, मगर दिल की एकदम साफ. वह मुझे हमेशा ही अच्छी लगी है. पर नीरा ने उस से मेरा जो संबंध जोड़ा था, उस के बारे में कम से कम मैं ने तो कभी सपने में भी नहीं सोचा था.

मुझे कविता लिखने का शौक कालिज के जमाने से ही रहा है. संयोग से अपर्णा भी कविता की बेहद शौकीन है. दफतर में मेरी कविताओं की सब से बड़ी प्रशंसक अपर्णा ही है. उस दिन बास के लड़के के जन्मदिन की पार्टी पर मैं ने एक
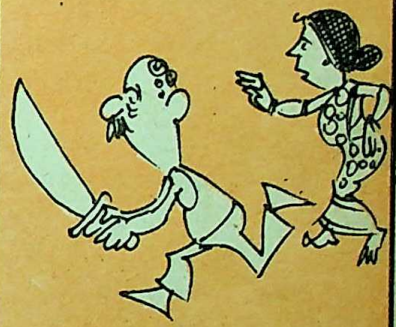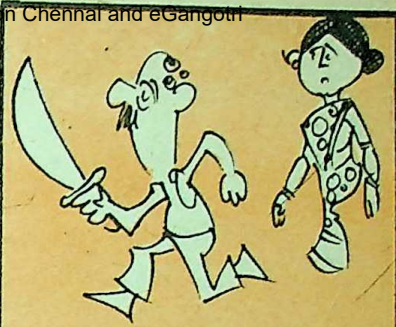
कविता सुनाई थी. कविता सभी को पसंद आई थी, पर अपर्णा को वह सब से अधिक पसंद आई थी. उस ने अनुरोध किया था, मैं यह कविता उसे नोट करा दूं. और मैं ने उस के इस अनुरोध को सहर्ष ही स्वीकार कर लिया था. मेरे जेहन में यह बात दूरदूर तक नहीं थी कि मेरी बीवी यह सब बड़ी गंभीरता से देख रही थी. बाद में जब मैं ने अपर्णा से नीरा का परिचय कराया था तो नीरा ने सीधे मुंह उस से बात भी नहीं की थी. पर अपर्णा ने सहज भाव से नीरा को कहा था, "नीराजी, साहब को जरा संभाल कर रखिएगा. यह खुद जितने सुंदर हैं, कविता के माध्यम से बातें उस से भी खूबसूरत करते हैं." जवाब में नीरा खाली 'उंह' कर के रह गई थी.

उन्हीं दिनों पाकिस्तान की क्रिकेट टीम भारत आई हुई थी. हमारे शहर में भी एक टैस्ट मैच था. मैं और नीरा दोनों ही क्रिकेट के दीवाने रहे हैं. मेरे मन में खयाल आया क्यों न इसी बहाने नीरा की नाराजगी दूर करने की कोशिश करूं. रात को सोते वक्त जब मैं ने नीरा को यह खबर दी कि पांच दिनों की छुट्टी ले कर मैं उस के साथ टेस्ट मैच देखूंगा तो अचानक ही उस की आंखों में प्यार का समुंदर लहरें मारने लगा था.

परंतु ठीक टेस्ट मैच के एक दिन पहले बास ने मुझे बुला कर दूसरे दिन के विमान से कलकत्ता जाने को कहा था. काम बहुत जरूरी था. मैं उन को न नहीं कर सका और टेस्ट मैच के दिन फिर नीरा को अकेला छोड़ कर मैं कलकत्ता चला गया था.

कलकत्ता में हफ्ते भर का काम था. पर दिल नहीं लग पा रहा था. नीरा का उदास चेहरा बारबार आंखों के सामने आ रहा था. हर शाम मैं निरुद्देश्य सा वहां घूमा करता था.

एक शाम मैं ऐसे ही निरुद्देश्य मैं टहल [illegible] दिन के खेल में [illegible] गावसकर ने शतक बनाया था. मैं [illegible] रहा था, नीरा कितनी खुश होगी. [illegible] सकर उस का प्रिय खिलाड़ी था. [illegible] एक झलक देखने के लिए वह बच्चे [illegible] तरह मचल उठती थी. इन्हीं विचारों [illegible] डूबा मैं चला जा रहा था कि अचानक [illegible] पीछे से किसी ने आवाज दी, [illegible] विवेक साहब." चौंक कर देखा तो अ[illegible] खड़ी थी.

"अरे, अपर्णा, तुम और यहां?" [illegible] स्वर में आश्चर्य मिश्रित खुशी थी.

"आप क्या भूल गए, मैं 15 [illegible] की छुट्टी पर हूं. यहीं मेरे मातापिता [illegible] हैं. पर मुझे आप को यहां देख [illegible] आश्चर्य हो रहा है," अपर्णा ने कहा [illegible]

"ओह, मैं तो भूल ही गया था [illegible] तुम इसी नगर की हो. मैं भी कंपनी [illegible] काम से आया हूं. चलो, कहीं बैठ [illegible] काफी पीते हैं."

एक रेस्तोरां में हम दोनों ने काफी [illegible] थी. उस ने अपने घर चलने [illegible] बड़ी जिद की थी. पर मैं नहीं गया [illegible] उस को विदा कर जब मैं अपने हो[illegible] लौट रहा था तो अपर्णा के बारे में [illegible] की धारणा याद कर मुझे खेद हुआ [illegible]

कलकत्ता का काम पूरा हो गया [illegible] मैं ने नीरा के लिए ढेरों सामान [illegible] था और टेलीफोन से नीरा को अपने [illegible] की सूचना दे दी थी.

सारे रास्ते मैं नीरा के बारे में [illegible] सोचता रहा था. जब विमान उतरा [illegible] मुझे बड़ी निराशा हुई. नीरा मुझे [illegible] नहीं आई थी. जल्दी से घर पहुंचा [illegible] देखा नीरा घर पर ही थी, परंतु उस [illegible] मेरा स्वागत उस ढंग से नहीं किया [illegible] जिस के लिए मैं पिछले एक हफ्ते [illegible] तड़प रहा था. उस का चेहरा उतरा हु[illegible] था. मेरी सारी बातों का 'हां,' 'हूं' [illegible] उत्तर दे उस ने मेरे हृदय को खिन्न [illegible] दिया था.

धीरेधीरे नीरा मेरे लिए एक पहेली बनती गई थी. और एक दिन सुबह-सुबह—मुझे याद है वह रविवार का दिन था—मैं अखबार लिए बाहर बालकनी में बैठा चाय पी रहा था कि अचानक नीरा ने आ कर कहा था, "विवेक मुझे तुम से एक बात कहनी है."

मैं चेहरे से अखबार हटा कर उस के चेहरे की ओर देखने लगा था. मुझे उस के मुंह से अपने लिए पहली बार 'विवेक' संबोधन सुन कर हैरानी हुई थी.

"मैं ने बहुत गंभीरता से सोच कर यह निर्णय लिया है कि मैं दिल्ली चली जाऊं," वह बोली थी.

मेरे हाथ में चाय का प्याला कांप कर रह गया था. मेरे मुंह से यही निकला था, "यह तुम क्या कह रही हो?"

"हां, विवेक, मैं ठीक कह रही हूं. पागलों की तरह झगड़ना मुझे खुद अच्छा नहीं लगता. वैसे भी तुम्हारा मन मुझ से भर चुका है और मैं कुछ कहती हूं तो मुझे समझने की जगह मुझे गंवार कहने लगते हो. प्रेम करने का नाटक अच्छा कर लेते हो. मैं नहीं चाहती कि मैं तुम दोनों के बीच दीवार बन कर खड़ी रहूं." नीरा ने 'तुम दोनों' शब्द पर विशेष जोर दिया था.

" 'तुम दोनों' से तुम्हारा क्या मतलब है?" मेरे स्वर में क्रोध और आश्चर्य दोनों का समावेश था.

"इस का अर्थ भी क्या साफसाफ समझाना पड़ेगा? तुम दोनों का अर्थ हम दोनों कभी नहीं हो सकता. तुम दोनों यानी तुम और अपर्णा." नीरा ने इतने दिनों की खामोशी में जैसे तूफान ला दिया था.

मैं ने अपना माथा पकड़ लिया था. फिर अपर्णा? आखिर नीरा को यह क्या हो गया है? कहीं यह पागल तो नहीं हो गई. एक क्षण के लिए मुझे लगा, जैसे मेरे सामने नीरा नहीं कोई विषधर नागिन बैठी जहर उगल रही हो. मैं जोर से चिल्लाया था, "अब क्या किया अपर्णा ने?"

"अपर्णा ने वही किया, जो तुम ने उसे करने को कहा था. पर मुझे समझ में नहीं आता है कि तुम्हें मुझ से यह सब नाटक खेलने की क्या जरूरत थी."

"नाटक!" मैं ने क्षोभ और हैरानी से पूछा था.

"हांहां, नाटक. और नहीं तो क्या? अगर साफसाफ ही सुनना चाहते हो तो सुनो, दस दिन पहले अपर्णा दफतर से छुट्टी ले कर कलकत्ता गई. इधर तुम ने मुझ पर विश्वास जमाने के लिए टेस्ट मैच देखने का काल्पनिक प्रोग्राम बनाया और ऐन वक्त पर दफतर के जरूरी काम का बहाना बना कर कलकत्ता पहुंच गए. यह तो भला हो सरोज बहन का कि वहां से आ कर उन्होंने मुझे बताया कि तुम उस चुड़ैल के साथ होटलों में रंग रेलियां मनाते रहे हो. वरना मैं तो..."

'तड़ाक.' मुझे नहीं मालूम कब मेरा हाथ उठा और पूरी शक्ति से उस के

नासमझी

बस एक कूचे को
दुनिया समझ लिया तूने,
हरेक कुंज में
तनहाइयां नहीं मिलतीं.
—परवीन शाकिर

गाल पर छड़ा. मैं पूरी तरह से अपना विवेक खो चुका था. पर चांटा लगते ही दूसरे क्षण मुझे अपनी मूर्खता का एहसास हुआ था.

"यही तो एक कसर बाकी थी. अच्छा हुआ तुम ने यह भी कर दिखाया वरना तुम्हें अफसोस रह जाता. विवेक, सचाई हमेशा कड़वी लगती है. मैं आज ही की ट्रेन से दिल्ली जा रही हूं."

मैं पत्थर सा बना कभी नीरा को और कभी उस अपने हाथ को देखता रहा जो नीरा पर उठा था. सोच रहा था, 'क्या सच्चाई सचमुच कड़वी होती है?'

और उसी दिन शाम की गाड़ी से नीरा सचमुच चली गई थी. न जाने क्यों मैं ने उसे रोकने की कोई कोशिश नहीं की थी. उस वक्त मैं यही चाह रहा था कि मुझे अकेला छोड़ दिया जाए.

अकेलापन कितना भयंकर होता है, इस का एहसास मुझे अब हुआ है. केवल दिल की गहराइयों से प्रेम होना ही काफी नहीं है. एकदूसरे का ध्यान रखना भी जरूरी है. मैं ने दफतर के आगे नीरा को कोई महत्त्व नहीं दिया. वक्तबेवक्त घर लौटता रहा. घर आ कर उस से प्रेम और सहानुभूति के दो शब्द बोल कर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ ली. मैं ने इस बात पर कभी गौर नहीं किया कि पुरुष के पास तो घर से निकलते ही व्यस्त रहने के लिए कई साधन हैं जिन में डूब कर उसे पता ही नहीं चलता कि इंतजार क्या होता है, पर घर में बैठी पत्नी का समय कैसे कट रहा है, यह नहीं सोचा. मुझे विश्वास होता जा रहा था कि नीरा निष्ठुर नहीं हो सकती. वह मुझे यह एहसास कराने के लिए गई है कि इंतजार कितनी पीड़ा देता है.

'मेरा ही दोष है. मैं दोषी हूं,' मेरे होंठ बुदबुदाने लगे, 'मैं तुम्हारे बगैर नहीं रह सकता, नीरू,' और मेरे हाथ अनायास पेन पर गए और मेरे पैर मेज की ओर बढ़ गए.

मेरी नीरू,

बहुत नाराज हो मुझ से. तुम्हारा नाराज होना सही भी है. मैं ने बजाय तुम्हारी भावनाओं को समझने के तुम्हें दोषी माना. पर तुम इतनी निष्ठुर कैसे हो गई? मैं हर सजा भुगतने को तैयार हूं, पर मुझ से दूर मत रहो, नीरू, वरना मैं पागल हो जाऊंगा. पत्र में मैं इतना ही लिख सकता हूं कि मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता. इंतजार की भयावहता को मैं अब समझा हूं.

तुम्हारा,
विकी.

पत्र लिख कर मैं उसे लेटर बक्स में डाल आया. वापस घर आया तो नौकर ने बताया कि मेरा कोई पत्र आया हुआ है. आश्चर्य हुआ. सोचा, किस का हो सकता है? लिफाफे के ऊपर के पते की लिखाई देखी तो चौंक उठा. कांपते हाथों से पत्र निकाला तो लगा, कलेजा बाहर निकल पड़ेगा. पत्र नीरा का था.

मेरे विकी,

तुम से लड़ कर चली तो आई पर यहां आ कर उतनी ही पछता रही हूं. न जाने यह सब कैसे हो गया. यहां आने के बाद एक पल भी तुम्हारी ओर से ध्यान नहीं हटा पाई हूं. आज अपर्णा का पत्र आया है. न जाने उसे मेरी भावनाओं का कैसे पता चल गया. वह तुम्हें अपना बड़ा भाई मान रही है. मुझे अपने पर ग्लानि होने लगी है. मुझे ले जाओ, विकी. अगर तुम नहीं आए तो मैं समझूंगी, तुम ने मुझे माफ नहीं किया.

तुम्हारी ही,
नीरू.

न जाने मेरी आंखों से दो बूंद आंसू कब पत्र के अंत में लिखे, 'तुम्हारी नीरू' पर गिर पड़े. शाम के विमान से दिल्ली जाते हुए रास्ते में मैं बारबार घड़ी की ओर देखते हुए यही सोच रहा था, 'कौन कहता है हवाई जहाज तेज चलते हैं?'

सावधान

इस स्तंभ के लिए समाचार-पत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें : सर्वोत्तम पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : सावधान, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

नकली इंस्पेक्टर व नकली चपरासी

अपने को बिक्री कर इंस्पेक्टर बताने वाले एक व्यक्ति और उस के नकली चपरासी को गाजियाबाद की पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया.

इस नकली इंस्पेक्टर की फाइलों से दुकानदारों के लाइसेंस तथा बड़ी संख्या में फार्म मिले हैं. उस का कहना था कि वह दुकानदारों का काम कमीशन एजेंट के तौर पर करता है. नकली इंस्पेक्टर और चपरासी की तलाशी लेने पर बैंकों की पास बुकें भी बरामद की गईं. इस के अतिरिक्त यह व्यक्ति बीमा कराने की भी जालसाज़ी किया करता था.

—दैनिक भास्कर, भोपाल (प्रेषक : सुरेश अरोड़ा)

फर्जी मैनेजर गिरफ्तार

इटावा की पुलिस ने ए. के. गुप्ता उर्फ मुन्नालाल को अपने को स्टेट बैंक शाखा का प्रबंधक बताने के आरोप में बंदी बना लिया है.

बताया जाता है कि नखासा निवासी श्री अशोककुमार दीक्षित की मां, चाची व परिवार के अन्य सदस्य हाल में ही चित्रकूट की यात्रा पर गए थे. वहां पर बांदा व झांसी के बीच उक्त फर्जी प्रबंधक से उन की भेंट हो गई और उस ने इन का पता ले लिया तथा कहा कि वह उन के लड़के को नौकरी दिला देगा.

पते के आधार पर ही वह फर्जी प्रबंधक नखासा में अशोक के घर आया. इस से पहले उस ने एक पत्र भी लिखा था जिस में उस ने बैंक का फार्म खरीदने व भर कर तैयार रखने की हिदायत दी थी. उस ने यह भी कहा था कि उस का ढेर सारा रुपया बैंक में है, उस की नौकरी पर जितना खर्च होगा वह स्वयं करेगा.

उस के इटावा आने के बाद अशोक ने इटावा स्टेट बैंक के प्रबंधक से पूछताछ की कि क्या शिकोहाबाद में इस नाम का कोई बैंक प्रबंधक है? उन के द्वारा नकारात्मक उत्तर दिए जाने पर इस की सूचना पुलिस को दी गई और पुलिस ने उस व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया. पूछताछ करने पर फर्जी प्रबंधक ने बताया कि वह यह धंधा कई वर्षों से कर रहा है.

—नवभारत टाइम्स, दिल्ली (प्रेषक : ललित चोरसिया)

जिंदा व्यक्ति को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया

अभी हाल ही में पटना के बोकारो स्टेडियम में पुलिस की गोली लगने से एक व्यक्ति को मरा हुआ समझ कर उस की लाश पोस्टमार्टम के लिए भेज दी गई, जब कि वह अभी जिंदा था. डाक्टर ने इस गलती के लिए जब पुलिस को लताड़ा तो उस व्यक्ति को चिकित्सा के लिए मुर्दाघर से बाहर निकाला गया. किंतु रास्ते में ही उस ने दम तोड़ दिया.

—आर्यावर्त, पटना (प्रेषक : शशिधर चौधरी) (सर्वोत्तम)

पूरे परिवार के मनोरंजन के लिए
विश्व सुलभ साहित्य

आखिरी दिन
परमाणु युद्ध की रहस्य व दर्दभरी कहानी जिस का हर पात्र आप की सहानुभूति बटोर लेगा
रु. 5.00

हिम सुंदरी
द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका के बीच गंगा की घाटी में बर्फ में दबे हुए अनेक जीवित शवों की सनसनी खेज कहानी.
रु 5.00

नानावती का मुकदमा
'अनैतिक प्रेम के दुष्परिणामों की सच्ची कहानी. रु. 3.00

भगवान विष्णु की भारत यात्रा
एक तीखा व्यंग्यात्मक उपन्यास. रु. 4.00

नई सुबह
एक फौजी द्वारा फौजियों की जिंदगी की कहानी. केरल साहित्य एकादमी से पुरस्कृत रु. 3.50

अंतरिक्ष के पार
कंप्यूटर हेरोकोल्ट-7, एक दिन दास से स्वामी बन बैठा, क्या मानव हार गया ? रु. 3.00

प्रतिशोध
एक जर्मन सैनिक की रोंगटे खड़े कर देने वाली सच्ची कहानी जिस ने अपनी ही सेना के विरुद्ध जिहाद कर दिया था
रु 5.00

डाकुओं के घेरे में
डाकुओं की समस्या पर लिखा गया दिलचस्प उपन्यास. रु. 5.00

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन, एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

मूल्य अग्रिम आने पर [illegible] 25 रुपए में, डाकखर्च नहीं, या कोई भी चार पुस्तकें केवल 15 रुपए में डाकखर्च 2 रुपए.

लेख . त्रिलोकचंद्र गोयल

प्रत्येक पांच स्त्रीपुरुषों में से एक को अपने जीवन में किसी न किसी समय इस रोग का सामना करना पड़ता है. यह रोग शरीर को हानि तो पहुंचाता ही है जानलेवा भी है...

हरनिया
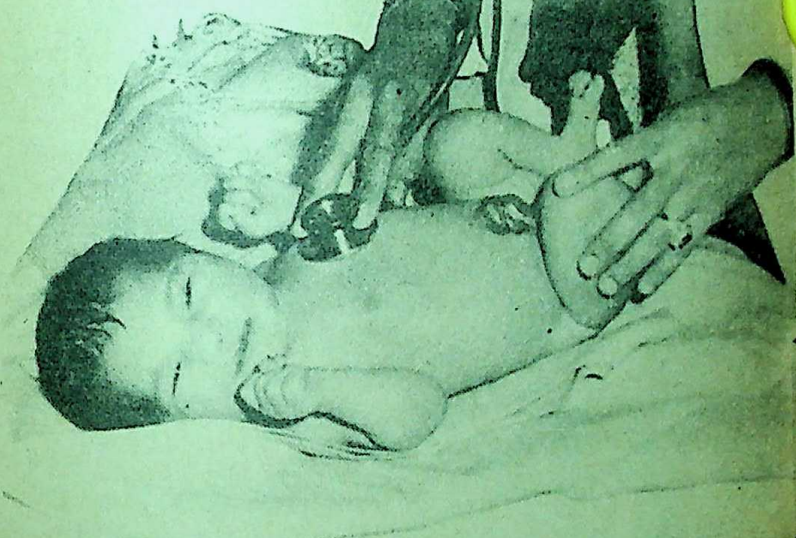
हरनिया उतना ही प्राचीन रोग है जितना कि स्वयं मनुष्य. यह रोग बहुतायत में पाया जाता है. कहते हैं कि हर पांच पुरुषों या स्त्रियों में से एक को अपने जीवन के किसी न किसी समय इस समस्या का सामना करना पड़ता है. हरनिया इतना साधारण

हरनिया जन्मजात भी होता है.

हो सकता है कि रोगी को कोई विशेष हानि न पहुंचाए, पर प्रायः यह शरीर की कार्यक्षमता घटाता है और इसी कारण सरकारी नौकरी में लेने से पहले अगर किसी उम्मीदवार को हरनिया है तो वह

स्वास्थ्य परीक्षा में अयोग्य घोषित कर दिया जाता है. कभीकभी हरनिया में इतने भयंकर उपद्रव हो जाते हैं कि जान पर ही आ बनती है.

सब से पहले यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि हरनिया रोग है क्या.

किसी भाग या तंतु के अपने प्राकृतिक स्थान पर सीमा से किसी सामान्य या असामान्य छिद्र द्वारा निकल आने या खिसक जाने को हरनिया कहते हैं. ऐसा प्राय: बाहर की ओर होता है और शरीर की सतह पर दिखाई देता है. इस को बाह्य हरनिया कहते हैं. इसी प्रकार यह शरीर के भीतर भी हो सकता है और इस को अंदरूनी हरनिया कहते हैं. यहां पर बाह्य हरनिया के विषय में
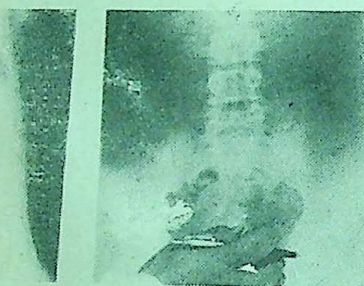
हरनिया की चिकित्सा जितनी शीघ्र करा ली जाए फिर से स्वस्थ हो पाने की उतनी ही अधिक संभावना रहती है.

प्रकाश डाला जाएगा, क्योंकि लोगों में प्राय: यही हरनिया पाया जाता है.

हरनिया के मुख्यत: दो भाग होते हैं.

1. हरनिया का थैला : यह एक गुब्बारे जैसा थैला होता है, जिस में अंग या भाग खिसक कर आता है.

2. थैले के भीतर के अंग : थैले के अंदर आतें, चरबी की झिल्ली, अपैंडिक्स, जिगर, फेफड़ा, मस्तिष्क आदि कुछ भी हो सकता है.

हरनिया के प्रकार :—भिन्नभिन्न बातों की वजह से हरनिया का [illegible] से नामकरण किया जाता है :

कारणनुसार :—1. जन्मजा[त]
2. जन्मोपरांत

स्थानानुसार :—1. उदर अं[...]
2. उदरीय
3. नाभिकीय
4. वक्षकीय, आदि.

अवयवों की अवस्थानुसार :
1. घट जाने वाला
2. न घटने वाला
3. फंसी आंत (अवयव) वाला
4. सड़ी आंत वाला, आदि.

इसी प्रकार अवयवों के [...] अनुसार पूर्ण और अपूर्ण हरनिया हो[...]

हरनिया क्यों होता है?

जिस प्रकार गाड़ी का टायर [...] स्थान पर कमजोर होने पर हवा [...] से ट्यूब बाहर निकल आती है, [...] प्रकार हरनिया बाहर निकल आता [...] हरनिया प्राय: दो कारणों से होता है[...]

हरनिया के होने का सब से [...] कारण शरीर की दीवार की दुर्बलता [...] यह दुर्बलता बहुत से कारणों से होती [...]

शरीर के विकास के दौरान प्र[...] कुछ दरवाजों को बंद कर देती है. [...] इस बंद करने की प्रक्रिया में कोई [...] रह गई तो उस स्थान पर जन्म[...] दुर्बलता (जैसे नाभि पर) रह जाती [...] जहां से कभी भी हरनिया हो सकता [...]

अनुचित खानपान तथा गलत [...] सहन के कारण भी शरीर की दी[वार] दुर्बल हो सकती है. जैसे अच्छा [...] नाई युक्त भोजन करने तथा कसर[त न] करने से मोटापा आ जाता है और [...] की दीवारों की मांसपेशियां दुर्बल [हो] जाती हैं.

चोट या आपरेशन के कारण [...] शरीर की दीवार दुर्बल हो सकती [...] यहां हरनिया दाग के स्थान से होता [...]

शारीरिक गुहाओं का भीतरी [...]

अगर सामान्य से अधिक हो तो हरनिया होने की अधिक संभावना होती है. इस के साथ अगर शरीर की दीवार की दुर्बलता भी हो तो हरनिया होने में बहुत कम संदेह है. पुरानी खांसी या कब्ज तथा मोटापे के रोगी में हरनिया प्रायः इसी कारण से हुआ करता है.

हरनिया के लक्षण

हरनिया किसी भी देश, किसी भी जाति, किसी भी उम्र के स्त्री या पुरुष को हो सकता है तथा शरीर के किसी भी भाग में हो सकता है. उदर से संबंधित हरनिया बहुतायत से होते हैं. जिस स्थान पर हरनिया होता है, वहां सूजन हो जाती है जो खांसने, चिल्लाने, रोने या चलने पर उतरती, निकलती या बढ़ती है और आराम से लेटने पर समाप्त हो जाती है. इस को हाथ से भी दबा कर समाप्त किया जा सकता है और अगर हरनिया में आंत है तो 'गड़-गड़' की आवाज होती है. हरनिया में प्रायः खिचाव या तनाव सा महसूस होता है जो देर तक खड़े रहने या चलने से बढ़ जाता है.

स्वास्थ्य पर हरनिया के बुरे प्रभाव

हरनिया की तीव्रता, हरनिया के स्थान, उस के अंदर पाए जाने वाले अवयव तथा उन की अवस्था पर निर्भर करते हैं. सब से बड़ा खतरा तब उत्पन्न होता है जब इस के अंदर वाले अवयव थैले में फंस जाएं और उन का रक्त संचालन बंद हो जाए, तब गंभीर स्थिति उत्पन्न हो जाती है और अगर तुरंत चिकित्सा न की जाए तो जीवन को खतरा हो सकता है.

हरनिया की चिकित्सा में जितनी देरी की जाएगी, उतनी ही अधिक हानि होगी, क्योंकि हरनिया का छिद्र बढ़ता जाएगा और हरनिया का आकार भी बढ़ता जाएगा. अतः चिकित्सा जितनी शीघ्र करा ली जाए उतना ही अधिक लाभकारी है.

हरनिया की चिकित्सा

शल्य क्रिया ही हरनिया की सब से अच्छी, सब से भरोसे की तथा सब से जल्दी ठीक करने वाली चिकित्सा है.

पेटी या कमानी का प्रयोग प्रायः हानिकारक माना जाता है, क्योंकि इस के पैड के दबाव से स्थानीय तंतुओं का ह्रास

शल्य क्रिया ही हरनिया की सब से अच्छी, भरोसे की तथा जल्दी ठीक करने वाली चिकित्सा है.

हो जाता है जिस से स्थानीय दुर्बलता बढ़ती है और हरनिया का छिद्र तथा हरनिया बड़ा हो जाता है. पैंड के दबाव के कारण हरनिया के भीतर के अवयव आपस में चिपक जाते हैं, जिस से शरीर को हानि होती है. और अगर कमानी जरा भी ढीली हुई या हो गई तो कमानी के लगे रहने पर भी हरनिया बाहर निकल आता है और कमानी के पैंड से दब कर इस का रक्त संचालन बंद हो सकता है. अतः आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में प्रायः पेटी लगाना मना किया जाता है. हां, अगर रोगी की हालत इतनी खस्ता है कि वह आपरेशन नहीं बरदाश्त कर सके तो मजबूरी में पेटी लगाई जा सकती है. ऐसे रोगी प्रायः कम ही मिलते हैं.

हरनिया का आपरेशन

हरनिया का आपरेशन वास्तव में कुशलता का काम है. कहा जाता है कि अगर किसी शल्य चिकित्सक की कुशलता की परीक्षा लेनी है तो उसे हरनिया की शल्य क्रिया करते हुए देखना चाहिए.

हरनिया के आपरेशन में दो मुख्य चरण हैं :

1. हरनिया की थैली का निष्कासन : इस चरण में थैली को पहचान कर, अलग कर के खोल लिया जाता है और इस के अवयवों को अपने स्थान पर पहुंचा कर मुख बंद कर के (बांध कर या सी कर) थैली को निकाल दिया जाता है.

2. दुर्बलता की मरम्मत : थैली निकालने के उपरांत हरनिया के छिद्र को बंद या सामान्य कर दिया जाता है. दुर्बलता को ठीक करने के लिए तरहतरह के विशेष टांके तथा थेगली लगाई जाती है. अगर चीरा बड़ा हुआ तो चीरे को टांकों से रफू किया जाता है या उस में शरीर के किसी अन्य स्थान से तंतु काट कर लगा दिया जाता है या कृत्रिम थेगली जैसे मारलेक्स मेश—से बंद किया जाता है. अलगअलग हरनिया में अलगअलग शल्य चिकित्सकों द्वारा अलगअलग विधियां अपनाई जाती हैं.

आपरेशन की सफलता के लि जरूरी है कि भोजन में कमी कर के कसरत से मोटापा कम किया जाए. लोगों को चिकित्सा के बाद भी ह के दोबारा होने का डर रहता है.

हरनिया से पीड़ित लोगों को पान बंद कर देना चाहिए, क्योंकि पान से खांसी हो जाती है.

ऐसे रोगियों को कब्ज नहीं चाहिए. कब्ज न होने देने के लिए समेत मोटे आटे की रोटी, सब्जियां, तथा अधिक पानी का प्रयोग चाहिए.

आपरेशन के बाद कुछ समय लिए भारी सामान नहीं उठाना चा जीना नहीं चढ़ना चाहिए, साइकिल नहीं चलानी चाहिए तथा स्कूटर मोटर साइकिल में किक नहीं मा चाहिए. तीन महीने बाद आपरेशन क वाला व्यक्ति सामान्य स्थिति में जाता है. अतः फिर धीरेधीरे सा जीवन पर आ जाना चाहिए. एक गंभीर स्थिति उत्पन्न हो जाने पर ह निया का आपरेशन प्रायः उतना अ नहीं होता, जितना सामान्य अवस्था होता है, क्योंकि भीतरी तंतुओं में सू हो जाती है. अतः अच्छे टांके नहीं ल जा सकते और वे मजबूती से नहीं जु इस से हरनिया के दोबारा होने की आशंका बनी रहती है. जिन को भी रोग है वह स्थिति के गंभीर होने प्रतीक्षा न करें.

हरनिया के दोबारा होने की समस्या वास्तव में बड़ी विकट है. अगर हरनि की मरम्मत ठीक से न हो पाई हो आपरेशन के उपरांत सावधानियां बरती गई हों तो हरनिया दोबारा हो सकता है. अच्छे शल्य चिकित्सक आपरेशन करने में यह खतरा कम हो है.

शाबाश

इस स्तंभ के लिए समाचार-पत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : शाबाश, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

चालक ने अपनी टांग गंवा कर यात्रियों को बचाया

फैजाबाद में एक बस चालक ने स्वयं को खतरे में डाल कर यात्रियों को मरने से बालबाल बचा लिया.

प्राप्त सूचना के अनुसार फैजाबाद बस्ती रोड पर हरैया के निकट एक रात एक बस के स्टेयरिंग में खराबी आ जाने के कारण चालक असंतुलित बस को करीब 15 मिनट तक संभालता रहा, किंतु अंत में बस एक पेड़ से जा टकराई. बस का अगला भाग बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया तथा चालक उसी में फंस गया. तीन घंटे के प्रयास के बाद किसी प्रकार चालक को बाहर निकाला जा सका. लेकिन यात्रियों को बचाने में वह अपनी एक टांग खो बैठा. —**नवभारत टाइम्स, दिल्ली (प्रेषक : हेमराज)**

सिपाही पर चाकू के नौ वार

अपने शरीर पर चाकू के नौ वार खाने के बाद भी एक सिपाही शंकरदयाल ने एक जेबकतरे को अपनी मजबूत गिरफ्त से नहीं छोड़ा. बाद में सिपाही हस्पताल तथा जेबकतरा हवालात में पहुंच गया.

घटना भोपाल के अल्पना सिनेमा के पास के बस स्टाप की है, जहां दो जेबकतरे शिकार की तलाश में थे. जैसे ही आजाद नामक जेबकतरे को सिपाही शंकरदयाल ने पकड़ा, उस के दूसरे साथी ने चाकू से उस पर हमला कर दिया. एक के बाद एक चाकू के नौ वार खाने पर भी सिपाही ने साहस के साथ अपने कर्तव्य का पालन किया.

—**नवभारत, भोपाल (प्रेषक : जयकिशन 'कुहाड़')**

लड़की देखने आए व्यक्ति की कन्या द्वारा पिटाई

बिहार के एक इलाके में लोगों को उस समय स्तब्ध रह जाना पड़ा जब लड़की देखने के लिए आए दहेज के एक लोभी व्यक्ति की कन्या ने पिटाई कर दी.

वर पक्ष वालों को जब कन्या पसंद आ गई तो दहेज की राशि पर बातचीत होने लगी. इस पर कन्या ने अपनी चप्पल उतारी और लड़के के पिता पर फेंक कर मारी. इस घटना के बाद उपस्थित लोगों में स्तब्धता छा गई और वर पक्ष वाले जीप पर चढ़ कर भाग खड़े हुए. —**प्रदीप, पटना (प्रेषक : अनुजकुमार)**

छात्रों द्वारा अखबार बेचने की मशीन का आविष्कार

दिल्ली के दो स्कूली छात्रों ने अखबार बेचने की एक ऐसी मशीन का आविष्कार किया है जो 1982 के एशियाई खेलों के दौरान विदेशियों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी.

विवेक विहार के राजकीय सहशिक्षा उच्च माध्यमिक विद्यालय में 12वीं कक्षा के दो छात्रों—युद्धवीरसिंह और राघवेंद्र ने यह मशीन 175 रुपए में तैयार की है.

इस मशीन के ऊपरी सिरे पर एक चौकोर बोर्ड पर हिंदी व अंगरेजी अखबार के लिए दो अलगअलग बल्ब होंगे जो यह इंगित करेंगे कि मशीन में अखबार उपलब्ध हैं. अखबार लेने के लिए मशीन के बाईं ओर बने एक छेद में 50 पैसे का एक सिक्का डाल कर हिंदी या अंगरेजी अखबार में से जो भी चाहिए उस के लिए एक बटन दबाना होगा.

इस मशीन का राष्ट्रीय बाल विज्ञान प्रदर्शनी में प्रदर्शन भी किया गया है. युद्धवीर और राघवेंद्र इस मशीन में और भी सुधार कर इसे ऐसा बनाना चाहते हैं जिस से कई भाषाओं के अखबार इस के जरिए प्राप्त किए जा सकें.

—दैनिक हिंदुस्तान, दिल्ली (प्रेषक : अजीतकुमार कोठिया)

बच्चों ने यातायात संभाला

इलाहाबाद में फैशनेबल बाजार सिविल लाइन के शांत वातावरण में उस समय तमाशा खड़ा हो गया, जब पुलिस की सहायता से स्कूली लड़केलड़कियों ने यातायात की व्यवस्था अपने हाथ में ले कर चालान करना शुरू कर दिया.

करीब पौन घंटे के इस तमाशों में बच्चों ने लगभग 50 वाहनों को पकड़ कर उन का चालान किया. इस में अधिकारियों के भी कुछ वाहन पकड़े गए, लेकिन उन का चालान नहीं किया जा सका.

बताया जाता है कि वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक हरिदास राव ने पिछले दिनों स्कूली बच्चों को यातायात का प्रशिक्षण दिए जाने का एक अभियान चलाया था, जिस के तहत हाई स्कूल के लड़केलड़कियों को प्रशिक्षण दिया गया था. ये बच्चे प्रशिक्षण का प्रदर्शन कर रहे थे. इन में 28 लड़कियां और इतने ही लड़के थे.

बाद में श्रीमती राव ने इन बच्चों को प्रमाणपत्र दिए. प्रथम आए तीन लड़के, तीन लड़कियों को उन्होंने पुस्तकें भेंट कीं.

—अमृत प्रभात, लखनऊ (प्रेषक : राकेश बनर्जी)

✦ महिला डाक्टरों को छेड़ने पर दो छात्रों का मुंह काला

पटियाला के राजेंद्र हस्पताल में थापर कालिज के दो छात्रों का मुंह काला कर के उन्हें सारे हस्पताल में घुमाया गया. इस के बाद उन्हें मेडिकल कालिज के छात्रों की एक रैली में पेश किया गया. इन में से एक छात्र एक थानेदार का और दूसरा एक एस. डी. ओ. का पुत्र है.

बताया जाता है कि घटना से एक रात पहले ये दोनों लड़के अपने कुछ अन्य साथियों के साथ राजेंद्र हस्पताल की लेडी हाउस सर्जनों के क्वार्टरों में गए और वहां दरवाजे खुलवाने के लिए धमकियां देते रहे. इस दौरान हस्पताल के स्टाफ के कुछ सदस्य और मेडिकल कालिज के लड़कों ने आ कर उन में से दो को दबोच लिया. दोनों लड़कों को सारी रात हस्पताल में कैद रखा गया. उन के अन्य साथी भाग निकलने में सफल हो गए.

यह भी ज्ञात हुआ है कि ये छात्र पिछले 15 दिनों से हर रात को हस्पताल में आ कर लेडी हाउस सर्जनों के क्वार्टरों में घुसने की कोशिश कर रहे थे. रैली में जब पकड़े छात्रों ने बाकायदा माफी मांगी तो उन्हें छोड़ दिया गया.

—पंजाब केसरी, जलंधर (प्रेषक : [illegible] लाल) (सर्वोत्तम) •

आज जब सदियों पुराने सघन वन तेजी से कटते जा रहे हैं और उन के साथसाथ वन्य जंतु भी लुप्त होते जा रहे हैं, राजस्थान की मरु-भूमि में कुलाचें भरते हुए हिरनों के झुंड के झुंड खेजड़ी के झुरमुटों के बीच देख कर किसे आश्चर्य न होगा? हम ने यह दृश्य जोधपुर से 20 किलोमीटर दूर इसी

पुरानी है प्रायः इस क्षेत्र में सूखा अकाल पड़ता था. लोग अपने घर छोड़ कर पशुओं को ले कर दूसरे क्षेत्र चले जाते थे. पर एक युवा कृषक गोप जंभोजी इस परिस्थिति पर चिंतन करने लगा और वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि सूखा और अकाल मात्र दैवी विपत्ति नहीं बल्कि प्रकृति के साथ मानव के दुर्व्यवहार

वनों की रक्षार्थ प्राणों की आहुति देने वालों की अमर गाथा

लेख • सुंदरलाल बहुगुणा

राजस्थान में एक कहावत है जिस का अर्थ है—अगर अपना सिर कटवा कर भी पेड़ों की कटाई रोकी जा सके तो उसे सस्ता सौदा समझो. और ऐसा ही सौदा किया था सन 1730 में अमृता देवी के नेतृत्व में सैकड़ों विश्नोइयों ने जिन की स्मृति आज भी यहां के लोगों में ताजा है...

जिले के गुड़ा विश्नोई गांव में देखा. इस क्षेत्र में छः हजार तक हिरन बताए जाते हैं. वे इस अभयारण्य में निर्भय हो कर विचरण करते हैं क्योंकि ग्रामवासी उन के मित्र और रक्षक हैं. वे उन्हें केवल अपने खेतों में चरने की ही छूट नहीं देते बल्कि किसी बाहरी व्यक्ति का आक्रमण होने पर उस से उन की रक्षा भी करते हैं.

इस दृश्य की कहानी पांच सौ वर्ष

का परिणाम है. उस ने आचरण के नियम बनाए. इन में दो नियम थे—जीव दया पालणी, वृक्ष नदीं घालणी' यानी जीवजंतुओं के साथ दया का व्यवहार करना और वृक्ष नहीं काटना.

जंभोजी के उपदेशों को सुन कर लोग उन के पंथ को, जिस का नाम ... और नौ नियमों के कारण 'विश्नोई' पंथ मानने वाले हो गए. जिन गावों में विश्नोई

रहते थे, वहां खेजड़ी के वृक्ष पनपने लगे और वन्य जंतु निर्भय हो कर रहने लगे. विश्नोई अपने प्राण दे कर भी इन की रक्षा करते थे.

विश्नोई संतों की साखियों में इस प्रकार के अनेक बलिदानों का वर्णन है. बूचा एचरा मेड़ता परगने के पोलावास गांव का रहने वाला था. इस गांव से तीन कोस दक्षिण की ओर स्थित राजोद गांव के मेड़तिया ठाकुर ने पोलावास के

अमृता देवी की स्मृति में लगाया गया पीपल का पेड़.
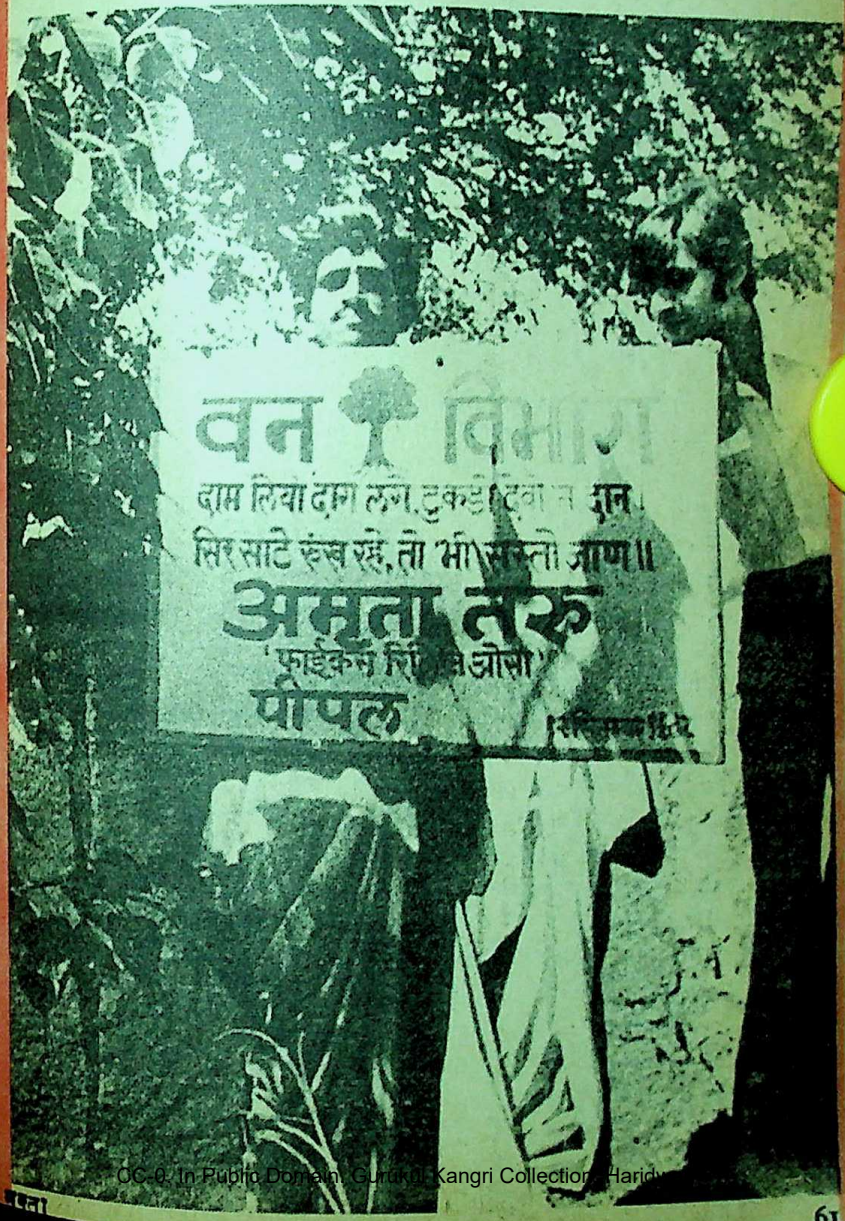
जंगल से होली जलाने के लिए खेजड़ी वृक्ष कटवा लिए. इस की खबर होने पर आसपास के विश्नोई राजौद में एकत्र हुए. प्रतिवाद स्वरूप बूचोजी ने अपने प्राण देने का संकल्प किया और रतनोजी के कह कर तलवार से अपना सिर कटवाया. यह घटना संवत 1700 के चैत बदि तीज को हुई थी.

पेड़ों की रक्षार्थ सब से बड़ा बलिदान

परंतु पेड़ों की रक्षा के लिए विश्व से इतिहास में जो सब से बड़ा बलिदान हुआ है, वह जोधपुर जिले के खेजड़ली गांव में सन 1730 में भाद्रपद शुक्ला दशमी के दिन हुआ था. जोधपुर के महाराजा को राजमहल बनवाने के लिए चूने की आवश्यकता थी, परंतु प्रश्न था कि भट्ठा जलाने के लिए रेगिस्तान में लकड़ी कहां से आए. किसी ने कहा, विश्नोइयों के खेजड़ली गांव में खेजड़ी के खूब मोटे-मोटे पेड़ हैं. महाराजा के कारिंदे कुल्हाड़ी वालों को ले कर पेड़ काटने के लिए खेजड़ली पहुंच गए.

वे सब से पहले जिस घर के सामने पहुंचे, वहां की गृहिणी विश्नोई रामखोड़ की पत्नी अमृता देवी ने उन का मंतव्य समझ कर उन्हें रोका. परंतु राजा के कारिंदे ने कहा, "अगर पेड़ बचाना चाहती हो तो डांड दो."

परंतु उस का उत्तर था, "दाम लगै जो दाम छां, पौणों होय." यानि अगर धर्म की रक्षा के लिए डांड देती हूं तो यह पंथ का अपमान है. परंतु वृक्ष के लिए सिर भी देना पड़ा तो यह सस्ता है. (सिर सांटे रूख रहे तो भी सस्तो जाण) उस ने अपना सिर आगे बढ़ा दिया. शाही कुल्हाड़ियों ने सिर धड़ से अलग कर दिया. अमृता देवी के बाद उस की तीन बेटियों ने भी मां का अनुसरण किया. यह खबर बिजली की तरह चारों ओर फैल गई और गांवगांव से बलिदान देने के लिए विश्नोई वहां जमा हो गए. इस प्रकार 363 जानें गईं.

नव दंपती भी शहीद हो गए

पंथ की रक्षा के लिए प्राण देने वालों में कितना उत्साह था, इस का प्रमाण एक घटना से मिलता है. उस रास्ते से एक दूल्हा ऊंट पर अपनी नवविवाहिता 16 वर्षीया पत्नी के साथ गुजर रहा था. युवक ऊंट से यह कहते हुए उतर गया कि इसी दिन के लिए गुरु ने उसे विश्नोई बनाया था. उस ने हंसतेहंसते अपना बलिदान दे दिया और उस के पश्चात उस की पत्नी ने भी उस का अनुसरण किया.

जब यह समाचार महाराजा के पास पहुंचा तो स्वयं खेजड़ी आए. अपने कर्मचारियों के जघन्य अपराध के लिए उन्हें पश्चात्ताप हुआ और उन्होंने ताम्रपत्र दे कर विश्नोइयों की इस मांग को मान्य किया कि उन के गांवों में न तो हरे वृक्ष काटे जाएं और न जीव हत्या हो.

हमारी भौतिकवादी सभ्यता ने मनुष्य को प्रकृति का लुटेरा बना दिया है. उस ने अपने भोग के लिए प्रकृति के सारे भंडारों को खाली कर दिया. सब से अधिक प्रहार अचल वृक्षों और मूक वन्य जंतुओं पर हुआ है. जहां से हरियाली लुप्त हुई, वहां से खुशहाली भी गई. हरियाली के साथ खुशहाली का कितना घनिष्ठ संबंध है, इस का दर्शन विश्नोइयों के गांवों में होता है. वे अपेक्षाकृत संपन्न हैं. आज उन का उत्साह अनुकरणीय है. जब कोई चोर, शिकारी इस क्षेत्र में घुसता है तो गोली की आवाज सुनते ही चारों ओर से विश्नोई इकट्ठे हो कर उस का पीछा करते हैं.

इस प्रकार की मुठभेडों में आज भी जानें जाती हैं. इधर पुरुष तो बाघ का पीछा करते हैं और महिलाएं आसपास की झाड़ियों में घायल मादा हिरन के बच्चे को ढूंढती हैं. यदि ऐसा बच्चा मिल गया तो उसे घर ले जा कर स्तनपान

शहीदी मेले का एक दृश्य : सफेद पगड़ी पहने विश्नोई.

कराती हैं और बड़ा होने तक उस का पालनपोषण करती हैं. बाद में उसे झुंड के साथ शामिल होने के लिए छोड़ दिया जाता है.

बलिदान का नया रूप

अमृता देवी के अमर बलिदान को पुनर्जीवित किया है उत्तराखंड की महिलाओं द्वारा चलाए गए 'चिपको' आंदोलन ने. यद्यपि 'चिपको' आंदोलनकारियों को इस की जानकारी नहीं थी, फिर भी महिलाओं ने कहा, "यह जंगल हमारा मायका है, हम इसे कटने नहीं देंगी." सन 1978 में भाद्रपद शुक्ला दशमी के दिन खेजड़ली के शहीदों की स्मृति में पहला मेला लगा. बलिदान स्थल पर स्मारक बनाया गया और 363 पेड़ लगाए गए. अमृता देवी की स्मृति में पीपल का पेड़ लगाया गया.

20 सितंबर, 1980 के दिन यहां पर एक दिन विशाल मेला लगा. यह अमृता देवी और उन के साथियों के बलिदान का 250 वां वर्ष था. पर्यावरण के प्रदूषण की समस्या ने प्रकृति संरक्षण को नया महत्त्व प्रदान किया है. लोग समझने लगे हैं कि पेड़पौधे ही हमारे अस्तित्व के आधार हैं. 'चिपको' आंदोलनकारी महिलाओं ने इस विचार को प्रकट करते हुए नारा बुलंद किया है : क्या हैं जंगल के उपकार? मिट्टी, पानी और बयार. मिट्टी, पानी और बयार, जिंदा रहने के आधार.

विश्वविख्यात वृक्षमानव रिचर्ड सेंट बार्ब बेकर ने अमृता देवी के बलिदान और 'चिपको' आंदोलन के इस नारे को सारे विश्व में प्रसारित करते हुए अपील की है कि इस आंदोलन को तीव्र किया जाए.

पेड़पौधों का मूल्य आज भोगवादी सभ्यता ने उन से मिलने वाली लकड़ी और उद्योगों के लिए कच्चे माल के आधार पर आंका है. परंतु वास्तविकता यह है कि यह मूल्य केवल 0.3 (दशमलव तीन) प्रतिशत है. कलकत्ता विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक शोधकर्ता डा. तारकमोहन

दास ने हाल ही में भारतीय विज्ञान कांग्रेस के समक्ष प्रस्तुत किए गए अपने शोधपत्र में कहा है : एक पेड़ अपने 50 वर्ष के जीवनकाल में 45 लाख 70 हजार रुपए का उत्पादन करता है.

1. 50 टन का मध्य आकार का पेड़ प्रतिवर्ष एक टन आक्सीजन पैदा करता है, जिस का बाजार भाव पांच रुपए किलो के हिसाब से 5,000 रुपए होता है और 50 वर्ष में इस का मूल्य 2,50,000 रुपए होता है. यदि हमें आक्सीजन भी खरीदनी पड़ती तो भोजन और वस्त्र के लिए तो पैसा बचता ही नहीं.

2. पेड़ की पत्तियां खा कर पशु प्रोटीन का मूल्य 20,000 रुपए है.

3. भूक्षरण रोकने और मिट्टी का उपजाऊपन बनाने के लिए पेड़ 900 वर्ग फीट का भूक्षरण रोकने और पत्तियों के द्वारा खाद तैयार करने का कार्य करता है. 50 वर्षों के लिए इस का मूल्य 2,50,000 रुपए.

4. भूमिगत जल को ऊपर खींच कर उसे बरसाने के पेड़ के कार्य का मूल्य 3,00,000 रुपए.

5. पशुपक्षियों को आश्रय देने का मूल्य 2,50,000 रुपए.

6. वायुप्रदूषण को रोकने का मूल्य 5,00,000 रुपए.

इस प्रकार कुल योग 15,70,000 रुपए बनता है.

वैज्ञानिकों का यह ज्ञान भी हमारी आंखें खोलने के लिए पर्याप्त नहीं है. पेड़पौधों की निरंतर निर्मम हत्या हो रही है. बाढ़, भूस्खलन, भूक्षरण, रेगिस्तानों का विस्तार, जलस्रोतों के सूखने तथा जल और वायुप्रदूषण के रूप में होने वाली तबाही जारी है. इसे रोकने के लिए निरंतर होने वाली घोषणाएं थोथी साबित हुई हैं. शायद मानव जाति के अस्तित्व के लिए किसी अमृता देवी को अपना बलिदान दे कर यह दिखाना पड़े :

'सिर सांटे रूख रहे, तो भी सस्तो जाण.'
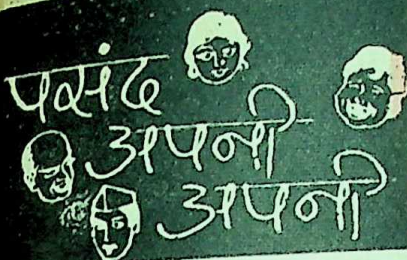
इस स्तंभ के लिए रोचक चुटकुले भेजिए. सर्वोत्तम चुटकुले पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : पसंद अपनीअपनी, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

एक आदमी पर खून का मुकदमा चल रहा था. उसे डर था कि कहीं फांसी न हो जाए. इसलिए उस ने अपने वकील से कहा कि किसी तरह से उम्र कैद ही दिलवा दे तो उस की बड़ी कृपा होगी.

वकील ऐसा करने में सफल हो गया तो अपराधी ने उस से कहा, "वकील साहब, आप ने खूब मेहनत की. इस के लिए शुक्रिया."

वकील ने गंभीरता से कहा, "हां, बड़ी मुशकिल से तुम्हें उम्र कैद दिलवाई है. जज साहब तो तुम्हें बरी करने के पक्ष में थे."

—रमेशकुमार आर्य

एक बार एक पुलिस वाला एक छोटे से चौराहे पर खड़ा बोर हो रहा था. तभी सामने से एक टैक्सी आई. पुलिस वाले ने उसे रोका और कहा, "इस क्षेत्र में हार्न बजाना मना है और तुम ने हार्न बजाया है. मैं तुम्हारा चालान करूंगा."

टैक्सी वाला घबरा कर बोला, "हजूर, मेरी टैक्सी में तो हार्न है ही नहीं."

पुलिस वाले की आंखों में चमक आ गई और वह बोला, "हार्न नहीं है! और तुम बिना हार्न की गाड़ी चला रहे हो? अब तो चालान पक्का."

—विनोद जुयाल

एक व्यक्ति गाड़ी में सफर कर रहा था. वह हर स्टेशन पर उतर कर अगले स्टेशन का टिकट खरीद लेता था. इस पर उस के पास बैठे व्यक्ति ने पूछा, "आप अपना टिकट पूरे सफर का क्यों नहीं ले लेते?"

उस व्यक्ति ने जवाब दिया, "मुझे डाक्टर ने लंबा सफर करने के लिए मना किया है."

—वीरेंद्र खुराना

दो नेता आपस में मिले तो दोनों ने एकदूसरे को बताया कि पिछले दिन उन्होंने अपनेअपने भाषण से काफी पैसे कमाए थे.

पहले नेता ने कहा, "कल मैं ने एक सभा में भाषण दिया, जिस से जनता ने प्रभावित हो कर मुझे खूब हार पहनाए. उन्हें बेच कर मैं ने 50 रुपए कमा लिए."

तब दूसरे नेता ने कहा, "मैं ने भी कल एक सभा में भाषण दिया था, जिस से लोग क्रोधित हो उठे और उन्होंने मेरे ऊपर जूतों की बौछार कर दी. उन जूतों को बेच कर मैं ने 500 रुपए कमाए."

—जसपालसिंह

"जब मैं गीत गाती हूं तो तुम लगातार खिड़की की तरफ क्यों देखते रहते हो?" पत्नी ने पति से शिकायत भरे स्वर में कहा.

"पड़ोसियों को यह विश्वास दिलाने के लिए कि मैं तुम्हें पीट नहीं रहा हूं." पति ने सहज भाव से जवाब दिया.

—[illegible] चौधरी (सर्वोत्तम)

कीमतें कम करने के लिए:

• सरकारी खर्च कम हो
• करों में कमी हो

बढ़ती हुई कीमतों की मूल वजह (ग्रौर प्रायः एकमात्र) सरकार द्वारा ग्रावश्यकता से ज्यादा खर्च किया जाना (करों व ऋणों से प्राप्त ग्राय की तुलना में ज्यादा व्यय) ग्रौर उस घाटे को पूरा करने के लिए नए करेंसी नोट छापना तथा माल व सेवाग्रों पर नएनए कर थोपना है.

हर नया नोट, हर नया कर माल व सेवाग्रों की कीमत में तुरंत वृद्धि कर देता है, जिस की वजह से सरकारी खर्च में ग्रौर ग्रधिक वृद्धि ग्रावश्यक हो जाती है. इस वृद्धि की भरपाई के लिए फिर नए नोट छपते हैं, फिर नए कर लगते हैं ग्रौर इस से कीमतें लगातार बढ़ती जाती हैं.

राजनीतिबाज बढ़ती हुई कीमतों का सारा दोष उत्पादकों व व्यापारियों के जिम्मे मढ़ कर ग्राम लोगों को धोखा देने की कोशिश करता है, यह ग्रच्छी तरह से जानते हुए भी कि करों द्वारा बढ़ी लागत उत्पादक ग्रौर व्यापारी ग्रपनी जेब से पूरी नहीं कर सकते. उन्हें चीजों के दाम ब[ढ़ाने] ही पड़ते हैं. ग्राम लोगों के हाथ में ग्रतिरि[क्त] धन ग्राने से भी वस्तुग्रों की मांग ज्या[दा] बढ़ जाती है जिस से कीमतें भी ग्रौर [बढ़] जाती हैं.

इस के साथ ही राजनीतिबाजों [की] ग्रपने ग्रस्तित्व को बनाए रखने के लि[ए] ग्रपनी पार्टियों को चलाने के लिए [व] चुनाव लड़ने के लिए काले धन की मांग [भी] जुड़ जाती है. यह रकम सिर्फ माल [व] सेवाग्रों की कीमत से ही प्राप्त हो सक[ती] है. इस प्रकार कीमतें ग्रौर ज्यादा से ज्या[दा] बढ़ती जाती हैं.

कभीकभी यह कहा जाता है कि ज्याद[ा] उत्पादन से कीमतें बढ़ना रोका जा सक[ता] है. लेकिन ग्रगर कहीं कोई ज्यादा उत्पाद[न] होगा तो वह कच्चे माल ग्रौर सेवाग्रों प[र] बढ़े हुए करों की वजह से ज्यादा कीमत प[र] ही होगा. ग्रौर इसलिए बढ़े हुए उत्पादन [से] भी कीमतें कम नहीं होंगी.

कीमतें कम करने के लिए

• करों में कमी कीजिए
• सरकारी खर्च कम कीजिए

इस के अलावा और कोई रास्ता नहीं है.

इतना भी शरमाना ठीक नहीं

कुछ कहतेकहते रुक जाना ठीक नहीं,
दिल में कोई राज छिपाना ठीक नहीं.
माना लाज रूप का गहना होती है,
लेकिन, इतना भी शरमाना ठीक नहीं.
नजर मिलाते हो तो आंखें चार करो,
नजर मिला कर नजर चुराना ठीक नहीं.

रातों में हम से कतरा जाने वाले,
रोजरोज सपनों में आना ठीक नहीं.
अपने मुंह से भी तो कोई बात कहो,
सखियों से ताने कसवाना ठीक नहीं.
गुत्थी उलझा दी है तो सुलझाओ भी,
बस, उलझाना ही उलझाना ठीक नहीं.

—जहीर कुरेशी
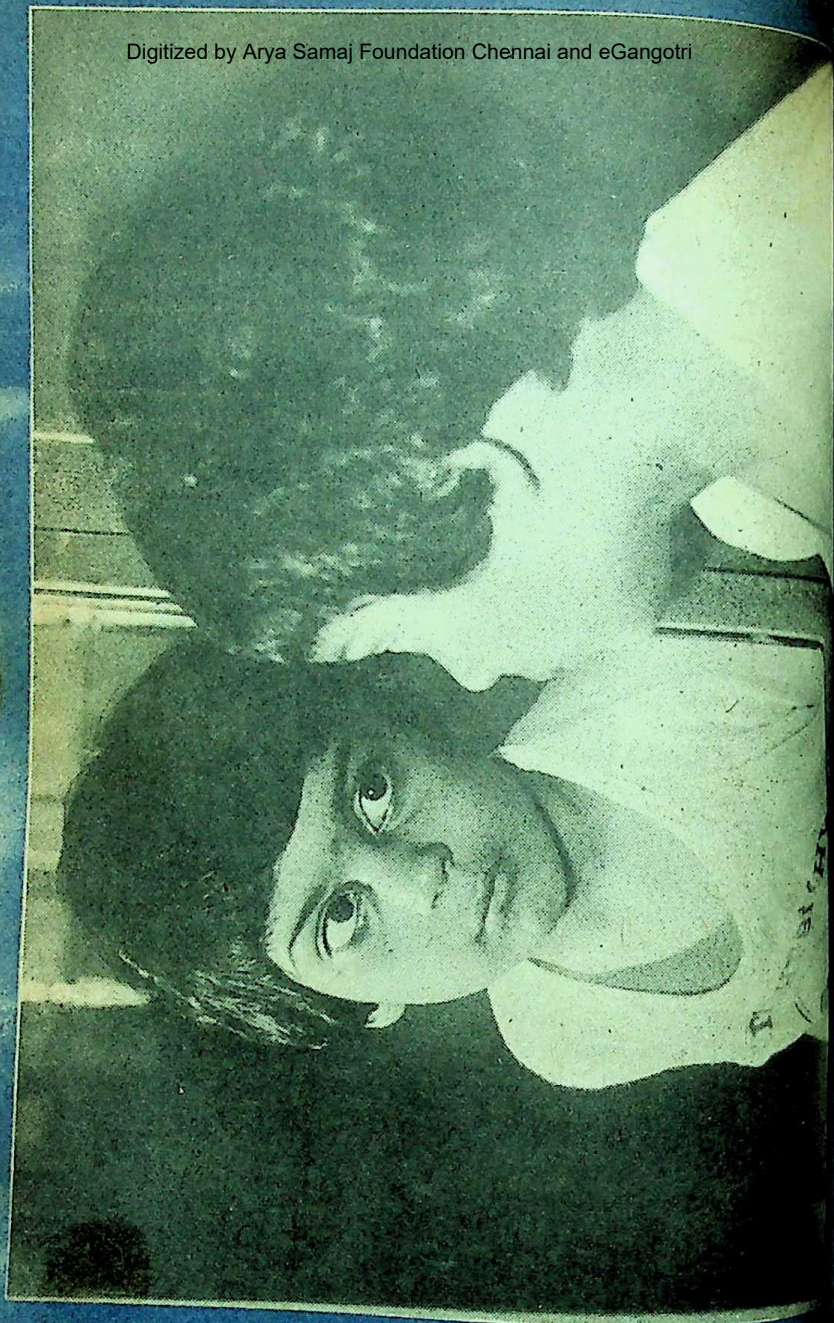
मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छायाकार :
प्रताप सचदेव,
ग्वालियर.

मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छायाकार :
न. शिवनारायण
मद्रास.

विशेष सजधज के साथ अब ला रहा है बच्चों के लिए 30 से अधिक नवीनतम डिजाइनों की सुबह, शाम, घर, बाहर पार्टी, त्योहार व रात को पहनी जाने वाली एक से बढ़ कर एक पोशाकें---आप स्वयं सिएं या अपने दरजी से सिलवाएं. गृहशोभा का यह विशेषांक आप के बच्चों को ध्यान में रख कर विशेष रूप से तैयार किया गया है.
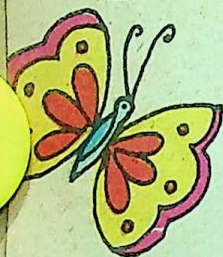
पोशाक विशेषांक
स्मोकिंग, फ्रिल, मोटिफ, कढ़ाई व दो रंगों के तालमेल वाली ऐसी अनूठी पोशाकें जिन को देखते ही आप के लाडलेलाडलियां पहनने के लिए मचल उठेंगे.
साथ ही साजसज्जा, स्वास्थ्य व सौंदर्य, बुनाईकढ़ाई, बागबानी, दांपत्य, बच्चों व फिल्मों संबंधी सचित्र सामग्री, घरगृहस्थी की समस्याओं पर कहानियां व सभी स्थायी स्तंभ.
अपनी प्रति खरीदना न भूलें

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : धूपछांव, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

पांच पति बदल कर छठी शादी

वारसा की एक 27 वर्षीया युवती ने तीन वर्ष में पांच पति बदल कर छठी शादी की है. पर यह भी उतना आश्चर्यजनक नहीं है जितना यह तथ्य है कि उस के पांचों पति उस के परिवार के ही हैं.

उस ने अपना पहला विवाह अपने मामा के साथ 24 वर्ष की आयु में किया था. चार माह बाद मामा से तलाक ले कर उस ने अपने ताऊ से विवाह रचाया. ताऊ के साथ छ: माह बिता कर उस ने अपने ताऊ के पिता यानी अपने ससुर और दादा का हाथ थाम लिया.

यहां भी वह ऊब गई तो सात माह बाद वह अपने चाचा की पत्नी हो गई. चाचा के साथ उस का दिल कुछ अधिक रमा और वह लगभग डेढ़ वर्ष तक वहां टिकी रही.

उस के बाद उस ने अपनी चाची के भाई से विवाह रचाया और अब उस से तलाक लेने के बाद वह अपने ही भाई के साथ वैवाहिक जीवन व्यतीत कर रही है.

—जय राजस्थान, उदयपुर (प्रेषक : डा. कोकिला जि...

आत्महत्या का अंतरराष्ट्रीय केंद्र

कुतबुद्दीन ऐबक द्वारा अपनी मलिका के साथ जलबिहार के लिए सन 14.. में अहमदाबाद नगर में बनवाया गया कांकरिया तालाब अब दिन प्रति दिन मौत की झील बनता जा रहा है.

सिर्फ भारतीय पर्यटकों के लिए ही नहीं अपितु विदेशी पर्यटकों के लिए भी यह आत्महत्या का केंद्र बन गया है.

इस झील में 1 जनवरी से 31 दिसंबर, 1980 के दौरान कुल 73 व्यक्तियों ने आत्महत्या की.

इन में 50 पुरुष व 23 महिलाएं थीं. सितंबर में सर्वाधिक 11 व्यक्तियों ने तथा जनवरी में सब से कम तीन लोगों ने आत्महत्या की.

इस झील में अधिकांश लोग प्रेम और परीक्षा में असफलता, बेरोजगारी, घरेलू झगड़ों तथा जिंदगी से तंग आ कर ही आत्महत्या करते हैं.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : कर्मसिंह बाह...

फांसी का तख्त रोटी सेंकने के लिए

खेरागढ़ उपजेल में फांसीघर के टूट जाने पर फांसी के जिस लोहे के तख्ते पर खड़े कर के कभी मृत्यु की सजा पाए व्यक्ति का जीवन लिया जाता था, वही तख्ता

आज इ...
इस पर...

रिकार्ड...

कारण...

व्यंग्यात...
जा रहा...

और व...
नहीं दि...
उन्होंने...
करने क...

लौट ग...

अब ता...

अब ता...

की देख...
ने बताय...
उसे सुध...
करते अ...

माध्यम...
जाता है...

जनता...
की है,...

मर...

साल ब...
तक पेंश...

चारी...

आज इस जेल के बावर्ची घर में बंदियों के लिए रोटी सेंकने [illegible] बना हुआ है. इस पर सेंकी गईं रोटियां जेल में बंद कैदी खा रहे हैं.

—दैनिक युगधर्म, रायपुर (प्रेषक : द्वारिका अग्रवाल)

रिकार्ड बजाने पर शादी रुकी

भुवनेश्वर में आई किसी बारात में वर पक्ष को एक गाना पसंद न आने के कारण बारात के बिना शादी किए लौट जाने का समाचार मिला है.

बताया जाता है कि बारात जब लड़की वालों के यहां पहुंची तो वहां एक व्यंग्यात्मक रिकार्ड बज रहा था. उस गाने में दूल्हे को लक्ष्य कर के व्यंग्य किया जा रहा था.

वधू पक्ष वालों द्वारा बारबार वही रिकार्ड बजाने पर वर पक्ष ने आपत्ति की और वह रिकार्ड न बजाने का अनुरोध किया. लेकिन लड़की वालों ने इस पर ध्यान नहीं दिया और रिकार्ड बजता रहा. लड़के वाले इस पर इतने नाराज हो गए कि उन्होंने वह रिकार्ड अपने कब्जे में ले लिया. इस पर लड़की वालों ने रिकार्ड वापस करने को कहा.

इसी से बात इतनी बढ़ गई कि लड़के वाले बिना शादी किए वापस लौट गए.

—विश्वमित्र, कलकत्ता (प्रेषक : बल्लभदास बिन्नानी)

अब तार भी डाक से भेजे जाते हैं

जबलपुर के तार विभाग की अक्षमता का उदाहरण इस बात से मिलता है कि अब तार भी साधारण डाक से भेजे जाने लगे हैं.

ज्ञात हुआ है कि इस तार घर के अधिकांश चैनल खराब रहते हैं और इन की देखभाल इंजीनियरिंग विभाग ठीक से नहीं करता. तार विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि चैनल की खराबी की शिकायत इंजीनियरिंग विभाग से की जाती है तो उसे सुधारने में अनावश्यक विलंब किया जाता है. कई जूनियर इंजीनियर काम नहीं करते और पान या चाय की दुकानों पर मंडराते देखे जाते हैं.

चैनल की खराबी से कई छोटेमोटे शहरों के तार एक विशेष व्यक्ति के माध्यम से भेजने की व्यवस्था है परंतु ज्ञात हुआ है कि वह तार ले कर रेलगाड़ी से जाता है और स्टेशनों पर आर. एम. एस. के डब्बों में छोड़ता जाता है.

बाद में संबंधित शहरों के डाकिए डाक के साथ ही ये तार भी बांट देते हैं. जनता के पैसे का इस प्रकार दुरुपयोग किए जाने की अनेक नागरिकों ने शिकायत भी की है, किंतु उन पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है.

—नवीन दुनिया, जबलपुर (प्रेषक : प्रहलाद जसवानी)

मरने के बाद पेंशन

जम्मू कशमीर के वन विभाग के एक कर्मचारी की पेंशन सेवा निवृत्ति के 24 साल बाद मंजूर की गई है. यह कर्मचारी 1956 में सेवा निवृत्त हुआ था और 20 साल तक पेंशन का इंतजार करने के बाद चार साल पूर्व ही चल बसा था.

अधिकृत सूत्रों ने बताया कि अनंतनाम डिवीजन के वन विभाग के इस कर्मचारी खुशामदसिंह की पेंशन पिछले साल अक्तूबर में मंजूर की गई.

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : [illegible]) (सर्वोत्तम)

नेताजी

अपने प्रदेश में दिन ब दिन अराजकता बढ़ रही है. महंगाई और अभाव बढ़ रहे हैं. क्या आपको प्रदेश की जरा भी चिंता नहीं?

क्या बात करते हैं आप? मैं तो प्रदेश की चिंता में चौबीसों घंटे डूबा रहता हूं!

क्या आपने मुझे चिंता करने के सिवा कुछ करते देखा?

जी नहीं, आपको स्थिति में सुधार लाने के लिए विधायकों से विचारविमर्श करना चाहिए.
मैंने सब विधायकों से बात की है. विरोधी दलों के विधायकों के पास स्थिति में सुधार लाने का एक ही हल है कि मुझे अपना पद छोड़ देना चाहिए.
इस सुझाव के बारे में आपका क्या ख्याल है?
मेरे सामने आज तक जितने भी सुझाव आए उनमें यह सबसे ज्यादा बेवकूफी वाला लगा.
मैंने अपनी पार्टी के हरेक विधायक को बुलाकर इन समस्याओं का हल पूछा. उनमें से हरेक ने एक ही सुझाव दिया.
वाह! फिर तो आपके दल में जबरदस्त एकता है. क्या सुझाव दिया उन्होंने?
हरेक ने यही कहा कि स्थिति में सुधार तभी हो सकता है, जब मैं उसे मंत्रीपद दे दूं.
चित्र-जसवंत.
कथा-गोविंद शर्मा

सरिता मुक्ता विस्तार योजना में भाग लीजिए

मुक्ता
सरिता

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं ... फिर गुलाम होते देर नहीं ... भी हजारों वर्ग मील भार... विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य ... लिए बहुत बड़े पैमाने पर ... सहयोग और सद्‌भाव की ... होती है.

सरिता किसी सरकारी ... पूंजीपति या राजनीतिक दल ... नहीं है, न ही यह किसी से किसी ... सहायता स्वीकार करती है. ... एक ही वर्ग की सहायता और ... निर्भर है. और वह हैं सरिता ... इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रो... सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई ल...

हिंदू समाज के नवनि... में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी ... सरकार का और देशी व ...

जनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण तंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा री है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल क ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी श्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप ना कुछ खर्च किए एक वर्ष में रितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी धिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा गे.

रितामुक्ता के प्रसारप्रचार की योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

चल दिए...

रेशमी अंदाज में वह मुसकरा कर चल दिए,
नजर तिरछी की, झुकाई, गुनगुना कर चल दिए.

उड़ता रहा उन का दुपट्टा कुछ अजब अंदाज में,
खुशबुओं के काफिले, डेरे उठा कर चल दिए.

गुलमुहर के फूल गालों पर सजा कर लाए थे,
लाजवंती की तरह सिमटे, लजा कर चल दिए.

जुल्फ, जैसे चांद के आगोश में काली घटा,
जान लेने आए थे, बिजली गिरा कर चल दिए.

आते हुए देखा उन्हें, तो हम ठगे से रह गए,
शायद हमें लगता है वह हम को बुला कर चल दिए.

अब्दुल मलिक खान

"अभिनय सिर्फ रुचि ही नहीं आजीविका भी है."

दीप्ति नवल

'एक बार फिर' की नायिका की चुनौती पूर्ण भूमिका को बखूबी निभाने वाली दीप्ति से क्या भविष्य में भी ऐसी ही भूमिकाएं अभिनीत करने की उम्मीद की जा सकती है?

भेंटवार्ता

पिछले तीनचार वर्षों से हिंदी फिल्मों में नई अभिनेत्रियों की बाढ़ सी आ गई है. व्यावसायिक फिल्मों के

दीप्ति नवल निर्माता, निर्देशक भी अब लगातार नई अभिनेत्रियों को अवसर दे रहे हैं. लेकिन अभिनेत्रियों की इस भीड़ में कुछ चेहरे ही संवेदन व भावप्रवण कलाकार बनने की क्षमता रखते हैं. दक्षिण भारतीय अभिनेत्रियां—जयप्रदा, श्री देवी, रति अग्निहोत्री आदि इसी श्रेणी की अभिनेत्रियां हैं.

फिल्मों में दीप्ति का आगमन

पिछले दो वर्षों से एक नाम, जो प्रमुख रूप से उभर कर सामने आया है, वह है—दीप्ति नवल. दीप्ति नवल की अब तक केवल तीन फिल्में ही प्रदर्शित हुई हैं, लेकिन हिंदी फिल्मों के दर्शकों में उस का नाम अजाना नहीं कहा जा सकता. श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित फिल्म 'जुनून' में सर्वप्रथम दीप्ति ने एक नवोदित कलाकार की हैसियत से अभिनय किया. इस फिल्म में दीप्ति की एक संक्षिप्त भूमिका थी, किंतु इस छोटी सी भूमिका को दीप्ति ने कुशल व संवेदनशील अभिनय द्वारा अद्वितीय व स्मरणीय बना दिया. इस के पश्चात दीप्ति की नायिका के रूप में आई फिल्म 'एक बार फिर' ने बाक्स आफिस पर अच्छी सफलता प्राप्त की.

फिल्म 'एक बार फिर' के पश्चात दीप्ति की एक और फिल्म 'हम पांच' प्रदर्शित हुई है. इस फिल्म में दीप्ति कहने को तो नायिका है, लेकिन उसे अभिनय का अवसर एक सीमा तक ही मिला है, जिस के कारण उस की भूमिका कुछ कमजोर पड़ गई है, लेकिन इस कमजोर भूमिका में भी दीप्ति का अभिनय लोगों को अखरता नहीं.

पिछले दिनों राजधानी में फिल्म 'चश्मे बद्दूर' की शूटिंग के दौरान दीप्ति से भेंट हुई. दीप्ति में कुछ भी असाधारण नहीं है, लेकिन उसे साधारण भी नहीं कहा जा सकता.

दीप्ति से सवालजवाब

प्रश्न : आप का फिल्मोद्योग[...] प्रवेश किस प्रकार हुआ?

उत्तर : मैं सन 1977 में घूमने[...] उद्देश्य से भारत आई थी. हमारा [...]वार बहुत समय से न्यूयार्क में ही रह[...] है. मेरी अभिनय में बचपन से ही [...] थी, लेकिन अभिनय को किसी दिन आ[...]विका भी बनाऊंगी, यह कभी सपने[...] भी नहीं सोचा था. भारतीय दूरदर्शन[...] कार्यविधि देखने के उद्देश्य से मैं टी.[...] सेंटर जा पहुंची. वहां फिल्म व ना[...] अभिनेता टी. पी. जैन से मुलाकात हु[...] उन्होंने मुझे अपने एक नाटक में [...] करने को कहा. मैं ने पहली बार [...] नाटक में अभिनय किया और पहली [...] ही अभिनय को आजीविका बनाने [...] सोची. उसी समय राजश्री पिक्चर्स[...] मुझे दो फिल्में पेश कीं. इस के पश्[...] मैं वापस न्यूयार्क चली गई. वहां मैं[...] जब अपने मातापिता को अपनी इ[...] बताई तो उन्होंने इस पर आपत्ति [...] राजश्री वालों को पत्र लिख दिया [...] उन की इन दोनों फिल्मों में काम [...] कर सकूंगी. साथ ही मैं ने उन्हें पे[...] दिया गया रुपया भी लौटा दिया.

लेकिन अभिनय में मेरी रुचि[...] देखते हुए कुछ दिनों पश्चात मेरे मा[...] पिता फिल्मों में मेरे काम करने पर [...] हो गए. तब मैं भारत चली आई [...] सीधे श्याम बेनेगल से मिली. उन दि[...] वे 'जुनून' बना रहे थे. इस फिल्म में [...] मुझे पहली बार अभिनय करने का अव[...] मिला.

प्रश्न : इस के पश्चात आप को [...] दिनों तक किसी अन्य फिल्म में कार्य [...] नहीं मिला?

उत्तर : चूंकि मैं भारत नईनई [...] थी, इसलिए मेरी किसी से जानपह[...] ही नहीं थी. तब भी मैं ऋषीकेश मुख[...] यश चोपड़ा, मानिक चटर्जी [...]

व्यक्तियों से बराबर मिलती रही. लेकिन कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आया. तभी विनोद पांडेय लंदन से बंबई आए थे. उन्हें एक नई अभिनेत्री की तलाश थी. वह काफी लड़कियों से मिल चुके थे लेकिन उन की नजरों में अभी ऐसी लड़की नहीं आई थी जो उन की नायिका की भूमिका को साकार कर सके. बड़ी नायिकाओं को वह लेना नहीं चाहते थे, क्योंकि वह नए कलाकारों को ले कर छोटे बजट की फिल्म बनाना चाहते थे. मैं जब उन से मिली तो उन्होंने अपनी फिल्म 'एक बार फिर' की भूमिका मुझे सौंप दी. यह भूमिका उन्होंने मुझे 'जुनून' वाली भूमिका को देख कर दी थी.

प्रश्न : श्याम बेनेगल के संबंध में यह धारणा है कि वह जिस अभिनेत्री को अपनी फिल्म में अवसर देते हैं, उसे अपनी आगामी फिल्मों में भी दोहराते हैं. आप के साथ तो ऐसा नहीं हुआ?

उत्तर : इस संबंध में मैं कुछ नहीं कह सकती हूं. हो सकता है वह मेरी भूमिका से संतुष्ट न हों या उन्हें मेरी प्रतिभा का उपयोग करने के लिए कोई उपयुक्त अवसर ही न मिला हो.

प्रश्न : न्यूयार्क में रहते हुए भी आप हिंदी फिलमों की ओर कैसे आकृष्ट हुईं? क्या अमरीकी फिल्मों में आप को कोई आकर्षण नहीं लगा?

उत्तर : अभिनय सिर्फ रुचि ही नहीं, आजीविका भी है. हिंदी फिल्मों ने मुझे प्रारंभ से ही प्रभावित किया है. जब मैं अमृतसर में पढ़ती थी, तब हिंदी फिल्मों की दीवानी थी. अमरीकी फिल्मों में भारतीय भूमिकाएं बहुत कम निकलती हैं, और मेरे जैसी साधारण रंगरूप व उच्चारण वाली लड़की भारतीय भूमिकाओं के अतिरिक्त अन्य भूमिकाएं नहीं निभा सकती थीं.

प्रश्न : किनकिन फिल्मकारों के साथ आप भविष्य में कार्य करना चाहती हैं?

उत्तर : श्याम बेनेगल के साथ कार्य

दीप्ति नवल व फारूख शेख—सई परांजपे द्वारा निर्देशित फिल्म 'चश्मे बद्दूर' के एक दृश्य में.

सरिता

अप्रैल (द्वितीय) एवं
मई (प्रथम) 1981

इस बार छुट्टियां बिताने की समस्या आप के सामने नहीं रहेगी. आप कहीं भी जाना चाहें—शिमला, मसूरी, कश्मीर, नैनीताल, डलहौज़ी जैसे पर्वतीय स्थलों पर या फिर दक्षिण भारत के भव्य मंदिर देखना चाहें, गोवा के मनोरम तटों का आनंद लूटना चाहें या कलकत्ता जैसे महानगर की सैर करना चाहें—सरिता के पर्यटन विशेषांकों में देश भर के पर्यटन स्थलों पर पहुंचने, वहां रहने, खानेपीने के साधनों और सुविधाओं की पूरी जानकारी अनेक बहुरंगी चित्रों के साथ मिलेगी. एक पूरी पत्रिका जितनी पर्यटन संबंधी अतिरिक्त सामग्री.

इस के अतिरिक्त पूरे परिवार का मनोरंजन करने वाली 8 कहानियां, अन्य कई विशेष लेख, मर्मस्पर्शी कविताएं तथा सभी स्थायी स्तंभ.

हो गया न दोहरा लाभ.

मूल्य वही 3.00 रु.

करने की मेरी तीव्र इच्छा है. मैं ऐसे निर्देशक के साथ कार्य करना चाहती हूं जो सही अर्थों में मुझ से अभिनय करवाए, मेरी प्रतिभा को उभार कर सामने लाए. मैं इमेज से नहीं डरती. अमरीका से मैं यहां पेड़ों के इर्दगिर्द दौड़ने नहीं आई. मैं हिंदी फिल्मों में गहराई वाले व उलझे हुए चरित्र निभाना चाहती हूं. हमारे आसपास के प्रत्येक इंसान के इर्दगिर्द कितने गहरे मनोवैज्ञानिक रहस्य छिपे हैं, उन्हें परदे पर उतारने वाले निर्देशक कितने हैं? वैसे इन दिनों मैं सभी अच्छे निर्देशकों के साथ ही कार्य कर रही हूं.

दीप्ति की रुचियां

विदेशी वातावरण में पली होने के बावजूद दीप्ति का हिंदी पर पूरी तरह से अधिकार है. पुस्तकें पढ़ना व पेंटिंग्स बनाना उस की रुचि है. तड़कभड़क से वह दूर रहना पसंद करती है.

दीप्ति एक अच्छी कवयित्री भी है. हाल ही में उस का एक काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ है.

गुलजार के संबंध में पूछने पर दीप्ति ने बताया कि वह गुलजार से न्यूयार्क में भी मिली थी. उन दिनों वह रेडियो व दूरदर्शन के लिए कार्यक्रम करती थी. गुलजार से इंटरव्यू करने के सिलसिले में ही वह उन से मिली थी और उन के व्यक्तित्व से प्रभावित हुई थी. साहिर के पश्चात गुलजार को ही दीप्ति श्रेष्ठ शायर मानती है.

किस अभिनेता ने आप को सर्वाधिक प्रभावित किया है? इस प्रश्न के उत्तर में दीप्ति ने नसीरुद्दीन शाह का नाम लिया. उस ने बताया कि नसीरुद्दीन के कार्य करने के ढंग से वह 'जुनून' के समय ही प्रभावित हो गई थी. नसीरुद्दीन को वह एक बहुत अच्छा कलाकार मानती है.

प्रश्न : पिछले दिनों यह सुना गया कि आप ने सहभूमिकाएं करना अस्वीकार कर दिया है?

उत्तर : मैं सहभूमिकाएं कर सकती हूं, बशर्ते कि वे जानदार हों, या किसी बड़ी अभिनेत्री के साथ हों. नई या मेरे साथ आई लड़कियों के साथ मैं सहायक भूमिकाएं नहीं करूंगी.

दीप्ति इस समय कई अच्छी फिल्मों में काम कर रही है— हृषीकेश मुखर्जी की फिल्म 'लकीर' व तनवीर अहमद की फिल्म 'चिरुथा' में दीप्ति की अच्छी भूमिकाएं हैं. फिल्म 'पहला प्यार' में भी दीप्ति खास भूमिका में है. अरविंद सेन की 'अमर मिलन' में वह अमोल पालेकर के साथ प्रमुख भूमिका निभा रही है. ऋषि कपूर के साथ वह टीनू आनंद की फिल्म में है. अभिनेता विजयेंद्र के साथ फिल्म 'छाया' में वह अभिनय कर रही है. रघुनाथ झालानी की नई फिल्म में भी दीप्ति की विशेष भूमिका है. इन के अतिरिक्त दीप्ति सई परांजपे के निर्देशन में फिल्म 'चश्मे बद्दूर' में भी अभिनय कर रही है. इन के अतिरिक्त अन्य कई फिल्में भी दीप्ति के पास हैं. ●

"जब भी मैं अकेली यहां आती हूं तो बिल चुकाते समय तुम्हारी मुझे बहुत याद आती है."

दास्ताने दफ्तर

हमारे कार्यालय में नए अधिकारी के आने के बाद से चौकीदार की ड्यू उन के बंगले पर ही रहती थी, जब कि नियमानुसार चौकीदार की ड्यूटी कार्यालय में होनी चाहिए थी. यह बात हमारे बड़े बाबू को बिलकुल पसंद नहीं थी. उन्हों एक तरकीब सोची. एक दिन वह दफ्तर की सभी अलमारियां खुली छोड़ कर घ चले गए और चाबियां अपने साथ ले गए. अधिकारी ने जब अलमारियां खुली दे तो फौरन बंगले पर आए और चौकीदार को कार्यालय में ड्यूटी देने का आदे दिया.

उस रात अधिकारी को नींद नहीं आई. सुबह 10 बजे कार्यालय में आते ही उन्होंने बड़े बाबू को बुलवाया और डांटते हुए कहा, "तुम बहुत लापरवाह हो. क तुम अलमारियां ही खुली छोड़ कर घर चले गए. तुम अपने घर जा कर आराम से सोते रहे और हमें रात भर नींद नहीं आई."

इस पर बड़े बाबू हिम्मत कर के बोले, "हां साहब, आप को नींद कैसे आती चौकीदार की ड्यूटी जो कार्यालय में लग गई थी."

तब अधिकारी बहुत शर्मिंदा हुए. उस के बाद उन्होंने कभी चौकीदार को अपने बंगले पर ड्यूटी देने के लिए नहीं कहा.

—मोहम्मद

✦

मेरे दफ्तर में हाल ही में एक नए साहब आए हैं. वह वक्त के बहुत पाबंद हैं. एक बार इत्तफाक से मैं तीनचार दिन लगातार देर से दफ्तर पहुंचा. आखिर में मुझे उन के सामने पेश होने का हुक्म मिला. उन के कमरे में दाखिल होते ही मेरी घबराहट बढ़ गई. उन्होंने मुझे ऊपर से नीचे तक देखा और सख्त लहजे में बोले, "आप हमेशा देर से क्यों आते हैं?"

उस समय मुझे चूंकि कोई बहाना नहीं मिला इसलिए जल्दी में मेरे मुंह से निकल गया, "हजूर, आजकल नींद जल्दी नहीं खुल पाती."

"शादी हो गई?" उन्होंने फिर पूछा.

मैं ने कहा, "जी हां, दो बच्चे भी हैं."

अचानक वह खुश हो कर बोले, "बड़े खुशनसीब हो, बीवीबच्चों के होते हुए भी तुम्हें आराम से सोने को मिल जाता है."

इस पर मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा.

—पुन्नू

✦

उस समय मैं एक ट्रांसपोर्ट कंपनी में काम करता था. गरमियों के दिन थे, इसलिए दफ्तर के लिए एक कूलर की व्यवस्था की गई. सभी कर्मचारी खुश थे कि अब भीषण गरमी से उन्हें छुटकारा मिल जाएगा. सभी कर्मचारियों का मत था कि कूलर कोने वाली दीवार में लगाया जाए, ताकि सभी कर्मचारी कूलर की हवा का आनंद ले सकें.

तभी प्रबंधक आए. अपनी रोबदार आवाज में वह बोले, "कूलर यहां नहीं बल्कि मेरे कैबिन में लगेगा. मैं नहीं चाहता कूलर की ठंडी हवा से हमारे कर्मचारियों का दिमाग सुस्त हो और उन के कार्य करने की क्षमता कम हो."

सभी कर्मचारी खामोश रह गए. कूलर प्रबंधक के कैबिन में लग गया. उन का कैबिन हमारे सामने ही था. सिर्फ शीशे की दीवार का ही अंतर था.

एक दिन प्रबंधक छुट्टी पर थे. एक कर्मचारी बोला, "आज प्रबंधक नहीं हैं. शीशे का दरवाजा खोल दिया जाए ताकि हम लोग कम से कम एक दिन तो ठंडी हवा प्राप्त कर सकें."

तभी दफ्तर का एक उच्च कर्मचारी जिस का पद प्रबंधक से छोटा था, गुस्से में बोला, "खबरदार जो किसी ने दरवाजा खोला. प्रबंधक नहीं हैं तो क्या हुआ, उन की कुरसी तो यथास्थान विद्यमान है."

यह कह कर वह प्रबंधक के कैबिन में जा कर आराम से बैठ गए. सभी कर्मचारी उन का मुंह ताकते रह गए.

—अयोध्यानाथ जोशी

✦

✦ हमारे संस्थान में एक ऐसे सज्जन काम करते हैं, जो शरीर से तो एकदम मरियल से हैं पर स्वयं को काफी बलवान व अच्छाखासा धावक मानते हैं. लोग अकसर उन की बातों का मजाक उड़ाया करते हैं. ऐसे ही एक बार किसी ने उन से कहा कि वह अमुक व्यक्ति से, जो अपने महाविद्यालय का अच्छा धावक रह चुका था, तीन किलोमीटर की दौड़ में आगे निकल जाएंगे तो उन्हें 51 रुपए नकद दिए जाएंगे.

उन्होंने शर्त मंजूर कर ली और तुरंत कार्यालय में ही तेल मालिश प्रारंभ कर के तैयार हो गए. शाम को संस्थान के बाहर आ कर हम 25-30 आदमी एकत्र हो गए तथा दोनों प्रतियोगियों ने दौड़ प्रारंभ की. हम लोग भी अपनीअपनी साइकिलों व स्कूटरों पर उन के साथसाथ हो लिए. दूसरे धावक ने बीच में ही दौड़ समाप्त कर दी तथा एक व्यक्ति की साइकिल पर बैठ गया. इधर वह सज्जन जैसेतैसे नियत स्थान तक पहुंचे कि अचानक बेदम हो कर गिर पड़े और बेहोश हो गए.

उस स्थान के ठीक सामने पुलिस का थाना था. हमें उन के ऊपर झुके देख आसपास भीड़ जमा हो गई और थाने से भी कुछ सिपाही निकल आए. अब हम लोगों के होश उड़ने लगे. जैसेतैसे लोगों को समझाबुझा कर भीड़ छांटी और धावक महोदय को होश में लाया गया. उन्हें तुरंत ही 51 रुपए दिए गए. उस के बाद हम ने किसी से ऐसा मजाक न करने की कसम खा ली. **—ओम वर्मा (सर्वश्रेष्ठ)** •

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है. क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 और सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए :

दास्तानेदफ्तर, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

बीरबल की सूझबूझ
एक विनोदप्रिय बादशाह और एक पैनी बुद्धि वाले वजीर की तीखी नोकझोंक का चटपटा संग्रह.
रु. 4.00

पूरे परिवार के लिए हास्य–व्यंग्य से भरपूर पुस्तकें

विश्व सुलभ साहित्य

बच्चों के मुख से
आप के अपने बच्चों की सहज निश्छल भोली बातें जिन्हें पढ़ कर आप एक मीठी गुदगुदी महसूस करेंगे.
रु. 4.00

हंसने की बारी
रंगीन चुटकुलों का एक अभूतपूर्व संकलन जिसे पढ़ कर आप हंसतेहंसते लोटपोट हो जाएंगे.
रु. 4.00

ये पति
पूरे परिवार का मनोरंजन करने वाली घरेलू वातावरण में पति के चारों ओर घटी घटनाओं का संग्रह.
रु. 2.50

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

पूरा सैट केवल 11 रुपए में डाक खर्च सहित ...

व्यंग्य • विष्णुकांत शुक्ल

ट्रेजेडी सुबह सैर की

लोग कहते हैं सुबहसुबह सैर करना सभी के लिए जरूरी और फायदेमंद है. इस से पहले कि हम भी औरों की देखादेखी यह आदत डालते, सुबह की सैर के शौकीनों का यह हाल देख कर हम अजमंजस में पड़ गए...

आखिर अपने मोटापे से परेशान हो कर बहन ज्ञान सुंदरी ने टहलना शुरू कर ही दिया. मजबूरन उन के पति रंगीलाल को भी उन के साथ जाना पड़ा. सड़क पर सुबहसुबह ज्ञान बहन भरपूर कोशिश कर के 'द्रुत' के डिजायन पर अपनी 'विलंबित' ताल की चाल चलतीं. कुछ फासले से उन के पति पीछा करते. यह सिलसिला ऐसा बैठा कि दोनों को ही धीरेधीरे आनंद आने लगा.

आप मानें या न मानें, यह बात सोलह आने सही है कि मर्द सड़क पर घरवाली के साथ रोज पैदल नहीं चल सकता. उसे हजार काम होते हैं. कभी बाहर का प्रोग्राम रहता है, कभी किसी रोज 'मूड' नहीं बनता. ऐसे ही एक दिन रंगीलालजी को मजबूरी ने घेर लिया और उस दिन ज्ञान बहन को अकेले ही सैर पर जाना पड़ा.

ज्ञान सुंदरीजी सैर को जाने के लिए उतावली थीं, पर मोजे कहीं नहीं मिल रहे थे. उन का पारा चढ़ गया और उन्होंने छोटे लड़के के बारहः चांटे लगा दिए.

लोग कहते हैं, सुबहसुबह सड़क की अपनी अलग ही शोभा रहती है. टहलने के शौकीन तो मिलते ही हैं, उन की अनोखी अदा भी दीखती है. कोई दौड़ता है, कोई कूदता है, कोई अफसर टाइप छड़ी ले कर लपक कर चलता है, कोई छड़ी को ही मुगदर की तरह घुमाता है, कोई कुत्ते के साथ चलता है, कुछ लोग दूध भी ले आते हैं और सैर भी कर लेते हैं. इन सब में ज्ञान सुंदरी सिर्फ टहलने में विश्वास रखती हैं. उस दिन चूंकि उन्हें ही स्वयं सैर की तैयारी करनी थी इसलिए सुबह घड़ी के अलार्म के साथ ही उन्होंने हंगामा खड़ा कर दिया.

हुआ यह कि रंगीलालजी ने उन के मोजे सर्फ में भिगो दिए थे, और उन का एकदम बाहर जाने का प्रोग्राम बन गया. इसी इमरजेंसी में उन्हें श्रीमतीजी के मोजे धो कर सुखाने का ध्यान नहीं रहा. इधर ज्ञान सुंदरी खाट से उठ कर पहला काम जूता पहनने का ही करती हैं. लिहाजा, जूतों में मोजे न देख कर उन्होंने सोते बच्चों को जगा दिया. मोजों की छानबीन में पूरी बटालियन लगी हुई थी. पूछताछ अलग चल रही थी. सारा घर छान मारा पर कहीं मोजों के दर्शन नहीं हो सके. अब तो ज्ञान बहन का पारा चढ़ गया और उन्होंने छोटे लड़के को चारछः चांटे लगा दिए. वह बेचारा अपनी निकर भिगोता हुआ भागा गुसलखाने में. वहां वाशबेसिन पर शीशे के सामने मग में भीगते हुए मोजों की खबर उस ने ऐसे दी जैसे मछुओं ने सरोवर में छिपे हुए दुर्योधन की खबर युधिष्ठिर को दी थी. देख कर ज्ञान बहन को मजबूरी में चप्पलों में ही सैर करने का निश्चय करना पड़ा.

सड़क पर निकलते ही वह सरपट चलने की कोशिश करने लगीं. पर कंबख्त चप्पलें चलने ही नहीं दे रही थीं. उधर सड़क पर गुजरने वाले लोग उन्हें कुछ कमीज सी नजरों से देख रहे थे. ज्योंत्यों कर के वह आधी दूरी से लौट कर वापस आ गईं. घर आ कर उन्हें पता चला कि चप्पलों ने दोनों पैरों में ही काट लिया है. कुछ दिन उन्हें बिस्तर पर ही आराम करना पड़ा. बेचारे रंगीलालजी ने सेवा भी की और नखरों के साथ मेवा का भी स्वाद लिया.

आप को ध्यान होगा कि एकलव्य बाण विद्या का अभ्यास अकेले किया करता था. उस ने मन से द्रोणाचार्य को गुरु मान लिया था. शायद उस का इरादा रहा होगा पांडवों से कंपीटीशन यानी होड़ करने का. गरज यह कि वह अकेला ही साधना करता था. इसी तरह मुहल्ले की पड़ोसिन राजो रानी ने जब ज्ञान सुंदरी को इस तरह सैर करते देखा तो उन के ज्ञान नेत्र खुले. ठीक उसी तरह जैसे विराट पुरुष के दर्शन करते हुए अर्जुन के ज्ञान नेत्र खुल गए थे.

वैसे भी राजो दीदी के सैकड़ों मानसिक गुरु हैं. मसलन घोड़े के खुर में नाल ठुकती देख कर उन्होंने अपने सैंडिलों में संतरे की कीलें ठुकवाई हैं (मेंढकी उन की गुरु नहीं है), कितनी ही सिने तारिकाओं से प्रेरणा ले कर समय समय पर बालों की शेप बदलवा डाली है. कपड़ों के डिजायन बदलवा दिए हैं. एक खास किस्म की चाल का अभ्यास किया है. 'शोले' में डाकिए का चक्कर लगाती हुई हेमा मालिनी से प्रेरणा ले कर सुनहरी फ्रेम का चश्मा भी आंखों पर फिट कराया है. श्रीमती कुसुम से प्रेरणा ले कर पढ़ाई शुरू की है. कईकई बार फेल होने वाले कितने ही अनुभवी लोगों की प्रेरणा से तीनचार बार फेल भी हो चुकी हैं. नकलचियों से प्रभावित हो कर नकल भी कर चुकी हैं और जांचपड़ताल के समय आंखों में गंगाजमना बहा कर रो भी गई हैं.

खैर, छोड़िए इन बातों को.

ट्रेजेडी सुबह सैर की

रानी ने मन ही मन ज्ञान सुंदरी से प्रेरणा ली और वह भी टहलने के लिए तैयार हो गईं. कुछ दिन अपने कमरे में घूमीं, फिर लान में, फिर बाहर सड़क पर. और गुप्त साधना के लिहाज से एक दूसरी ही सड़क उन्होंने चुन ली ताकि उन्हें सर्वसाधारण न देख सकें और वह एक दिन लोगों को चौंका सकें.

राजो रानी की गुप्त साधना कुछ दिनों तक चली. एक दिन उन्होंने पड़ोस में खड़े हो कर सुबह सैर के गुणों पर प्रकाश डाला. यों लोगों को उन की साधना की भनक तो पड़ गई थी, पर आज तो उन का प्रभाव कुछ अधिक ही पड़ गया. होतेहोते एक 'सैर क्लब' का गठन हुआ और सर्वसम्मति से राजो रानी को उस की अध्यक्ष बना दिया गया.

बहन रामदुलारी नारदजी के नाम से मशहूर हैं. उन्हें पड़ोस की शांति से नफरत है. पति के दफ्तर चले जाने के

राजो रानी ने कालौनी में 'सैर क्लब' का गठन कर डाला और स्वयं उस की अध्यक्ष बन गईं.

बाद उन्हें खुली आजादी है. बच्चे दो हैं, दोनों ही होस्टल में रह कर पढ़ रहे हैं. सो रामदुलारीजी को जैसे ही इस क्लब की सूचना मिली, वह सीधी ज्ञान सुंदरीजी के घर जा पहुंची. चूंकि कालोनी में सब से अधिक सैर का अनुभव ज्ञान सुंदरीजी का ही था. इसलिए रामदुलारीजी ने उन से कहा, "क्यों ज्ञान बहन, यह कौन सा तरीका हुआ कि क्लब बना कर बैठ गए? अरे, किसी ने सोचा ही नहीं कि क्या गलती करने जा रहे हैं. चार दिन राजो रानी चार कदम चल दीं और फतह कर आईं एवरेस्ट. अध्यक्ष का कौन सा गुण है उन में? हम से कोई पूछता तो हम आप का ही नाम सुझाते."

गुड्डू के जन्म दिन की पार्टी में कालोनी की महिलाएं इकट्ठा हुईं. बाला मौसी ने राजो रानी को देख कर टोका, "अरे, राजो, तुम तो पहचानी भी नहीं जातीं. क्या करती हो आजकल? वाकई तुम तो अब 16 साल की छोकरी लगती हो."

अभी राजो रानी लजा कर जवाब देने की सोच ही रही थीं कि ज्ञान सुंदरी बोल पड़ीं, "मौसी, हम से तो चोरी होती नहीं. सबेरे सैर को जाते हैं, ठाठ से अपने मरद के साथ जाते हैं. अरे, जब हम टहलते हैं तो चोरी कैसी? यह हम से नहीं होता कि गुड़ खाएं और गुलगुलों की आन करें."

यह तीर राजो रानी का निशाना लगा कर फेंका गया था और संयोग से निशाना ठीक लगा. दशरथ के तीर से घायल हो कर श्रवणकुमार ने 'हाय' की थी पर यहां तीर की चोट कलेजे पर खा कर राजो रानी के मुंह से फुंकार निकली और वह यह भूल गईं कि वे

ट्रेजेडी सुबह सैर की

राजो रानी के मिजाज भी ज्ञान सुंदरीजी की बात सुनते ही ... गए और बिना किसी की परवा किए वह बड़बड़ाने लगीं.
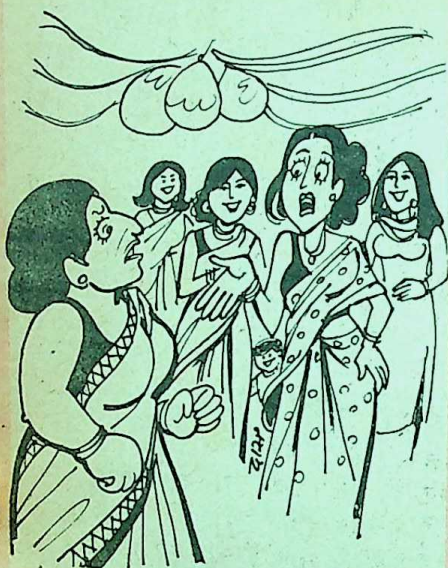
लोग किसी गैर के घर में खुशी में शरीक हुए हैं. बोलीं, "अरे, चोरी करे छिनाल और लुच्ची. बड़ी बनी मरद वाली. औरों के तो जैसे मरद किराए के आ गए हैं. हमें यों मरद के ढूंगे से लग कर सड़कों पर तमाशा दिखाना नहीं आता. टहलते हैं तो किसी के बाप का क्या लेते हैं? हां, इतना जरूर है कि हमारे मोजे हमारा आदमी नहीं धोता, न हमें वह जूता पहनाता है. कुसुमजी बैठी हैं, पूछ लो इन से."

यह आफत कुसुमजी पर गोकुल में तृणावर्त की तरह आई. अच्छीखासी पत्रिका के पन्ने पलट रही थीं, पर अब तो निगाहें ऊपर उठाना जरूरी हो गया. उधर ज्ञान सुंदरीजी ने हार नहीं मानी थी. बोलीं, "कुसुमजी को बीच में घसीटने की जरूरत नहीं है, उन बेचारी का क्या कसूर है?"

यह 'बेचारी' शब्द ही बवंडर का कारण बन गया. तुनक कर बोलीं कुसु... "बेचारी होंगी आप. हमें क्या अपने ... में खाने की कमी है? ओढ़नेपहनने में ... किसी से कम हैं क्या? साड़ियां ... की हमें आदत नहीं है. (एक बार ... जलसे में ज्ञान सुंदरीजी ने पड़ोस... शीला की साड़ी मांग कर पहनी ...) पराई चाय की प्याली पर हमारी नि... नहीं पड़ती, समझीं? अपने घर में ... हैं. पता नहीं दुनिया को क्यों आग ... जाती है? हम न किसी को सुबह ट... के लिए कहें, न फालतू घूमने में ... रखें. थोड़ा खाते हैं और मेहनत ... खाते हैं." मामला बढ़ता देख कर मैं... ने 'वीटो' किया. किसी तरह पार्टी ... रंग में भंग कर के ये सब विदा हुईं.

संस्कृत के एक कवि हुए हैं मयू... वह सुबह टहलने के चक्कर ... कोढ़ी हो गए थे. हुआ यह था कि बेच... मयूर को रात में एक कविता सूझी. ... लिख कर सुबह चार बजे ही वह ... पड़े अपने बहनोई बाणभट्ट के घर. ... बाण के घर में सारी रात झगड़ा च... रहा था. वह पत्नी की खुशामद ... हुए श्लोक बोल रहे थे. उस का भाव ... था, "रात करीबकरीब बीत रही है, ... फीका पड़ता जा रहा है. यह दि... मानो सारी रात जागने के कारण ... इस समय ऊंघ सा रहा है. नाराजगी ... तो समाप्त हो जानी चाहिए, पर तुम ... अब भी गुस्सा नहीं थूक रही हो..."

आगे की बात उन से पूरी नहीं ... पा रही थी. उसी समय मयूर बाण ... के द्वार पर पहुंचे और बहनोई की ... में बोले, "चंडि, कठोर स्तनों के स... होने से तेरा हृदय भी कठोर हो गया है

वकील साहब को एक सुबह चोरों ने घेर लिया. वे उन का सब सामान छीन ले गए. '

बाणभट्ट के कविहृदय ने साधुवाद किया. घरवाली का गुस्सा हिरण हो गया.

बाण ने बाहर आ कर दरवाजे पर देखा, मयूर खड़ा है. बोले, "अजी सुनती हो, तुम्हारे भाई आए हैं." और उस पतिव्रता ने भाई के कवित्व को ताक पर फेंक कर उस की बदतमीजी और अमर्यादापूर्ण भाव पर 'फोकस' करते हुए उसे कोढ़ी हो जाने का शाप दे दिया. मयूर कवि कोढ़ी हो गए.

लाला मंटूरीमल सुबह सैर के आदी हैं. साफ कहूं तो सनकी हैं, और साफ कहूं तो पागल हैं. सुबह चार बजे से ही 'हरेरामा हरेरामा' की ध्वनि से नल की आवाज से महल्ले भर की नींद खराब करते हैं और खुद चले जाते हैं सैर के लिए. एक दिन पता नहीं किस तरह उन की आंखें तीन बजे खुल गईं. बदस्तूर अपने सारे कामों से फारिग हो कर फिर चले सैर को. उस दिन कहीं से चार चोर कमाई कर के आ रहे थे. लालाजी को राजीखुशी पूछने की आदत है. बोले, "कौन हो भाई?" चोर चूंकि माल लाद कर लाए थे इसलिए उन्होंने बड़ी सजा न दे कर दो डंडे लाला की कमर पर जड़ दिए. कहते हैं चोर को यदि कोई चोरी करने से पहले ही टोक देता है तो वे टोकने वाले को ठोकने से बाज नहीं आते.

हरगोविंद शहर के धनी वकील थे. उन की तकदीर में सुबह की हवाखोरी तो लिखी थी, पर पैदल चलने का सुख नहीं लिखा था. वकील साहब काफी मोटेताजे आदमी थे. अपनी बग्घी में उन्होंने एक कुरसी फिट कराई हुई थी. बग्घी बंद थी, शायद किसी पर्दानशीन रईस से उन्होंने खरीदी थी.

एक बार वह अपनी उस कुरसी में फंस गए. बड़ी मुशकिल से उन्हें निकाला गया. उस के बाद दूसरी बड़ी कुरसी लगवाई गई.

उन दिनों जंक्शन रोड पर राहजनी के इक्कादुक्का केस हो जाते थे. एक दिन शहर में खबर फैल गई कि वकील साहब को चोरों ने लूट लिया. लूटने का ढंग बड़ा हृदयविदारक था. कोचवान को डपट कर पहले बग्घी रुकवाई गई. फिर भीतर से वकील साहब से दरवाजा खुलवाया गया. उन्हें नीचे उतारा गया. आराम से गले से सोने की चेन, घड़ी, कुरते के सोने के बटन, जेब के कागजात, कुरता बनियान और पाजामा तक ले लिया गया. घोड़ा, बग्घी चोरों के मतलब की नहीं थी, इसलिए उसे नहीं लिया गया.

इतना करने के बाद चोरों ने वकील साहब को विदाई दी. बेचारे कच्छे में ही वापस हुए. हवेली के दरवाजे के सामने

बग्घी का दरवाजा खुला और अपने मोटापे की परवाह न करते हुए वह कूद कर भीतर दाखिल हुए. इस दुर्घटना के बाद उन्होंने सुबह की सैर को हमेशा के लिए सलाम कर दी.

प्रोफेसर साहब सपत्नीक सुबह घूमने जाने लगे. उन्होंने कालोनी में इस का प्रचार भी किया. एकदो से जोर दे कर कहा. धीरेधीरे तीनचार जोड़े उन की बात को आदर देते हुए सड़क पर निकल पड़े.

यह प्रोफेसरों की कौम बोलती बहुत है. इन की घरवालियां अगर पढ़ी-लिखी हुईं तो और भी आफत, अगर कहीं वे भी पढ़ाती हैं तब तो कड़वी और नीम चढ़ी वाली स्थिति. उन की पत्नी सरस्वती ने एक दिन सड़क पर ही तीर छोड़ दिया, "हरदेवजी औरों के टहलने पर तो हजार टिप्पणियां करते हैं अब बीवी को साथ ले कर खुद क्यों सुबहसुबह सड़कों की धूल फांकने लगे?"

इस प्रश्न का उत्तर तो उन्हें किसी ने दिया नहीं. हां, अगले दिन हरदेवजी ने प्रोफेसर साहब को टोक दिया, "क्यों, भई. सुना है आप की श्रीमतीजी को हमारे सुबह के घूमने पर आपत्ति है?" और फिर होतेहोते यह चर्चा 'गृह युद्ध' में बदल गई. एक ओर से सरस्वती बाण छोड़ रही थीं दूसरी ओर से हरदेवजी की पत्नी. यह लड़ाई दावानल की तरह फैलती गई और पूरी कालोनी के गड़े मुर्दे उखाड़े जाने लगे.

अब फिर तूफान उठा और ... की तरह निकाल कर लाए गए ... लड़ाई की जड़ प्रोफेसर साहब. न ... लने जाते, न किसी और को कहते, ... लड़ाई होती. बड़ी मुशकिल से युद्ध ... हुआ, अब उस कालोनी का कोई ... आदमी टहलने की गलती नहीं ... जीवनलाल कुछ दिन जरूर जाते ... पिछले दिनों डाक्टर ने उन्हें लो ... प्रैशर बता दिया है. तब से उन का ... घूमना बंद है.

ऐसीऐसी घटनाओं से सबक ले ... हम ने कभी यह सैर का फालतू ... किया ही नहीं. लोग नींद की गोलि... खाते हैं, हमें वह बिना गोलियों के ... आती है और भरपूर आती है. आ... धरा क्या है सुबह सड़कों पर? स... में पाला और ठंड. गरमी में गरमी ... धूल. बरसात में बारिश का पानी, ... हुए सांप और मेढक. कभीकभी ट्र... बस से टकरा कर मरा हुआ कुत्ता. ... में सैकड़ों किस्म के डर. रोशनी में ... पर लोगों के बलगम. सड़क के एक ... बैठे कितने ही लोगों की विविध शौच... व्यक्तिगत पुट देती हुई निराली ध्वनि... शौचशुद्धि के अनेक प्रकार. यही ... सड़कों पर. न हमें ऐसी नुमाइश देखने ... लालसा है, न सनक. इसी लिए हम ... हैं सुबह के समय घर में. मेरी आ... लिए भी बिना मांगी सलाह है—... फालतू सड़कों की धूल न फांकें. ... आदमियों के लिए घर होता है, ... नहीं.

जरूरत

डूबने के वास्ते काफी
है इक हलकी सी मौज,
हां, उभरने के लिए
मौजों में तूफां चाहिए.

—अज्ञात

चित्रावली

चित्र देखने के लिए शीर्षासन : कला प्रदर्शनियों के आयोजकों का यही प्रयास रहता है कि ज्यादा से ज्यादा लोग उन्हें ध्यान से देखें. पिछले दिनों लंदन की रायल अकादमी में ऐसी ही एक चित्र-प्रदर्शनी में 38 चित्रकारों के 200 चित्र प्रदर्शित किए गए.

इस प्रदर्शनी में भाग लेने वाले पश्चिम जरमनी के चित्रकार जार्ज बेसलिट्स ने अपने सभी चित्रों को उलटा लटका दिया, जिस से लोगों का ध्यान उन की ओर आकर्षित किया जा सके. और वह इस में सफल भी हुआ. एसेक्स के 19 वर्षीय पाल क्रेमिस को ये चित्र इतने भाए कि वह उन्हें शीर्षासन लगा कर देखने लगा.

घर जो पानी पर तैर सकता है : आप को देखने में यह एक जहाज सा नज़र आ रहा होगा पर असल में यह एक घर है, जिसे कुछ समय पहले टोकियो में प्रदर्शित किया गया. इस घर का निर्माण कुछ समय पहले किया गया है और यह हर तरह की सुविधा से युक्त है. 2.7 टन भार वाले इस घर की कीमत 40 लाख येन है. इस की लंबाई 7.5 मीटर है. अगर इस में 10 अश्व शक्ति का इंजन लगा दिया जाए तो यह जहाज की तरह पानी पर तैर भी सकता है.
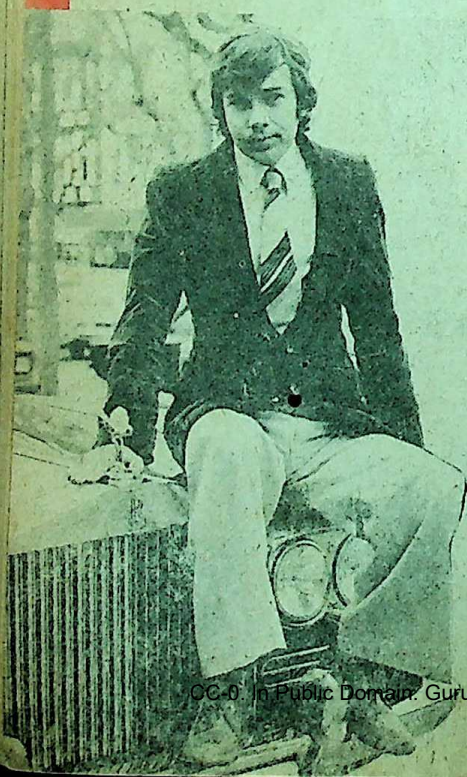
अनोखे नंबर वाली कार : 'मैड' इस अनोखे नंबरप्लेट वाली राल्स रा[illegible] गाड़ी का मालिक एक शादी में भाग ले[ने] जा रहा था, पर थाने पहुंचा दिया गया.

पुलिस का कहना था कि वह अप[नी] गाड़ी को, सेलिसबरी की 30 मील प्रति घंटे की निर्धारित रफ्तार [से] 13 कि. मी. अधिक यानी [illegible] कि. मी. प्रति घंटे की रफ्तार मे चला रहा था. उन्होंने इस की रफ्तार का राडार की सहायता से पता लगाया और उसे मजिस्ट्रेट के सामने पेश कर दिया.

26 वर्षीय कार चालक टोनी हि[ल] का कहना था कि पुलिस वालों ने उस [को] विचित्र नंबर प्लेट से चिढ़ कर [ही] पकड़ा है. अदालत ने हिल को दोषी पा[या] और उस पर 25 पौंड का जुरमाना [कर] दिया. पर उस समय उस की जेब [में] इतनी रकम भी न थी और उस ने [उसे] चुकाने के लिए समय मांगा.

नर कंकाल प्रदर्शन का प्रतीक बना : प्रदर्शन करने के भी अपने अलग तरीके होते हैं. कुछ दिनों पहले दिल्ली के यूनिवर्सिटी कालिज आफ मेडिकल साइंसेज के हड़ताली छात्रों ने स्वास्थ्य मंत्रालय नीतियों के विरोध में एक नर कंकाल को लटका कर प्रदर्शन किया.
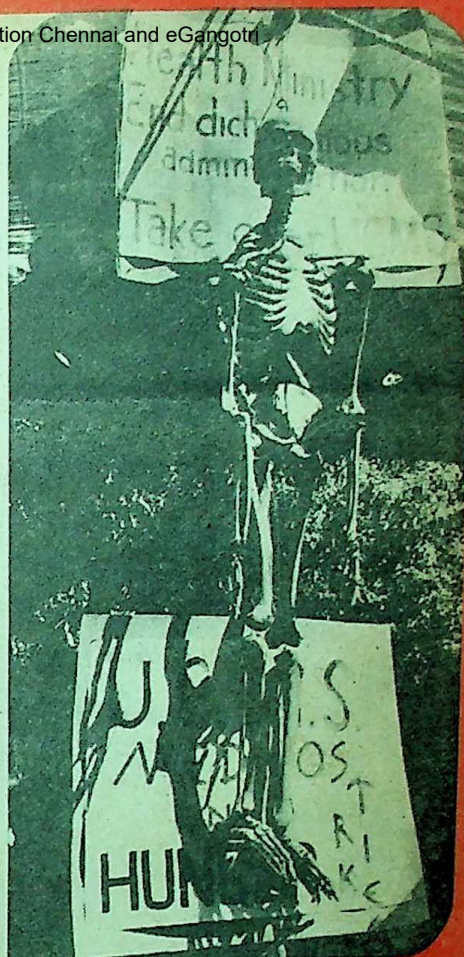
एक कला प्रदर्शनी यह भी : म्यूनिख की 'डाइ इंसेल' कला दीर्घा में 27 ब्रिटिश कलाकारों की कलाकृतियों की प्रदर्शनी 'वूमन 80 ऐक्जीविशन' का आयोजन किया गया. यह आयोजन लंदन की निकोलस ट्रेडवेल गैलरी ने 'प्ले व्वाय' पत्रिका के सहयोग से किया. इस प्रदर्शनी में आज की महिलाओं को प्रदर्शित करने वाली कलाकृतियां दिखाई गईं. प्रस्तुत चित्र में 'एडोलसेंस' किशोरावस्था शीर्षक से प्रदर्शित फाइबर ग्लास की बनी एक कृति.
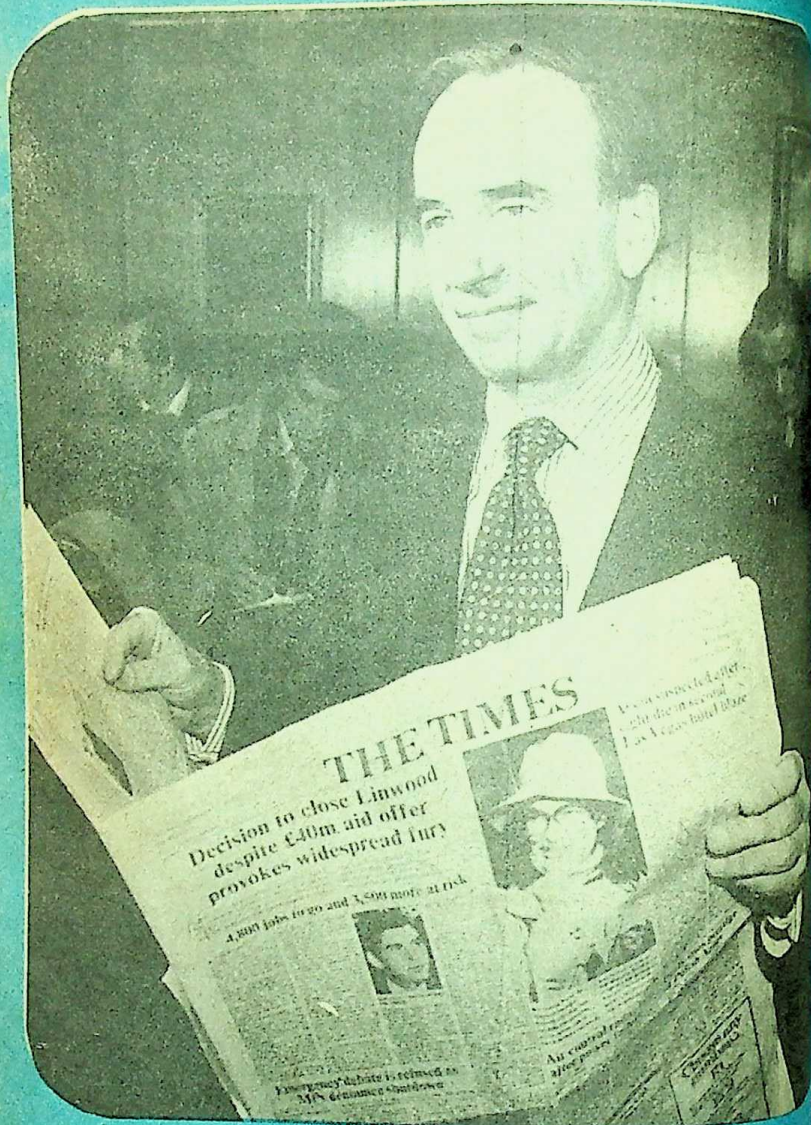
टाइम्स समाचारपत्र समूह के नए मालिक : लंदन के प्रसिद्ध टाइम्स समाचारपत्र समूह को श्री रुपर्ट मरडोक ने खरीद लिया. उन्होंने इस बात की घोषणा लंदन के पोर्टमैन होटल में आयोजित एक पत्रकार सम्मेलन में की. वह 'न्यूज आफ द वर्ल्ड' तथा 'सन' समाचारपत्र के भी मालिक हैं.

चित्र में श्री रुपर्ट 'संडे टाइम्स' के संपादक श्री हेरल्ड ईवांस द्वारा संपादित अखबार को देख रहे हैं.

बच्चे भी प्रदर्शन पर उतारू : अभी तक बड़ी उम्र के लोग ही प्रदर्शन किया करते थे. पर अब बच्चे भी इस काम में पीछे नहीं रहना चाहते. लंदन
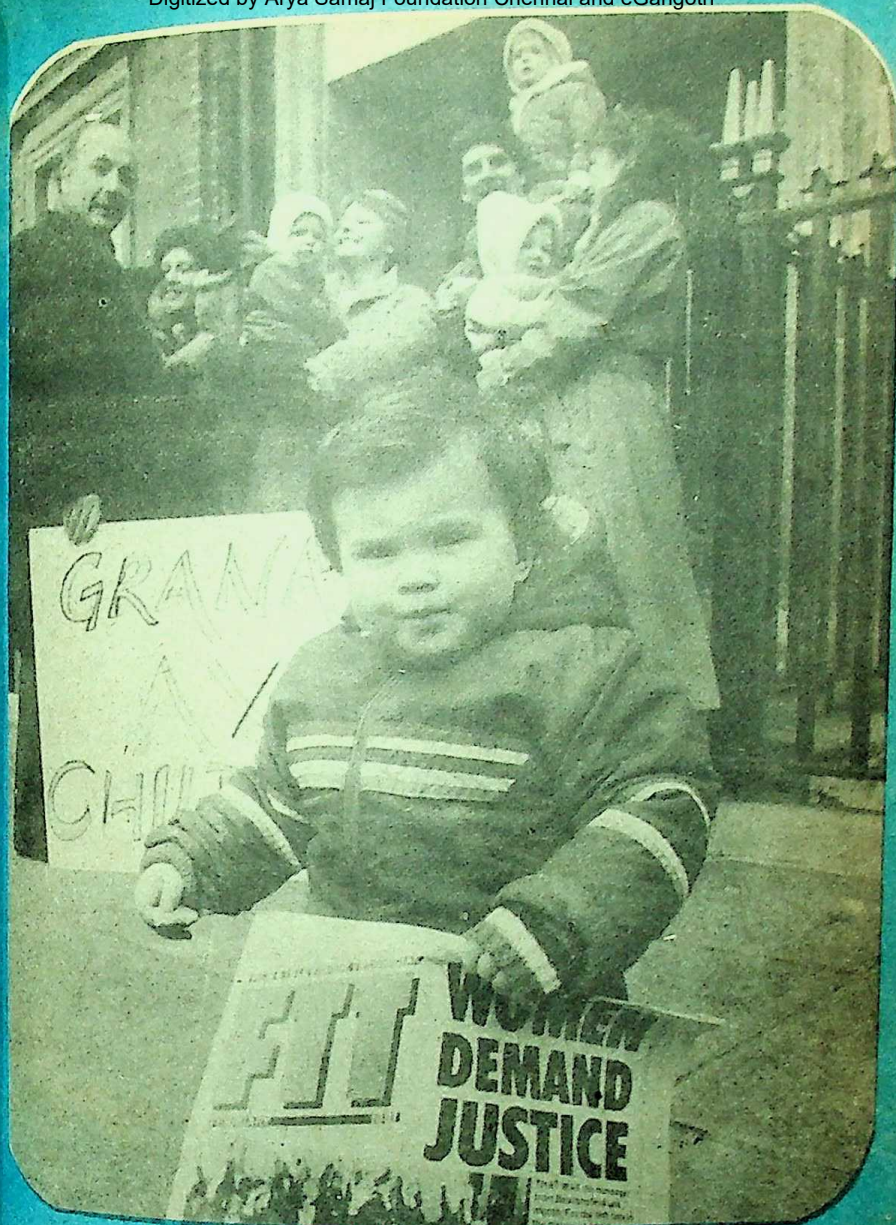
ग्रैनेडा टेलीविजन कंपनी ने कुछ समय पहले बच्चों के लिए चलाई जाने वाली शिशुशाला को बंद कर दिया. इस के विरोध में 16 महीने के नन्हें रैंचेल ने अपने प्रोड्यूसर पिता जान ब्लैक व अन्य 70 बच्चों और बड़ी उम्र के आदमियों के साथ टेलीविजन कंपनी के बाहर प्रदर्शन किया.

इस प्रदर्शन से कुछ कार्यक्रमों की रिकार्डिंग नहीं हो सकी हालांकि टेलीविजन के प्रसारण पर कोई असर नहीं पड़ा.

शिशुशाला बंद किए जाने के बारे में इस कंपनी का कहना है कि इस का

लेख • विवेक सक्सेना

मोटापा न केवल देखने में ही बुरा लगता है, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी बहुत हारिकारक होता है. किंतु इस संबंध में सब से बड़ी समस्या यह है कि इस बात का कैसे पता लगाया जाए कि कोई व्यक्ति तंदुरुस्त न रह कर मोटापे का शिकार हो गया है. दरअसल देखा जाए तो यह कोई समस्या नहीं है. स्वास्थ्य संबंधी पुस्तकों में अकसर एक तालिका दी गई होती है, जिस में यह लिखा रहता है कि अगर किसी व्यक्ति की लंबाई इतनी है तो उस का सामान्य वजन कितना होना चाहिए.

एक सरल तरीका और भी है जिस से खासतौर पर महिलाएं इस बात का पता लगा सकती हैं कि वे मोटापे का शिकार हो रही हैं या नहीं. जब आप नहाने जाएं तो स्नान घर में सब कपड़ें उतार कर खड़ी हो जाएं. कूल्हे के दोनों ओर की हड्डियों को उंगली से दबाएं. अगर आप की उंगली एक इंच से अधिक धंस जाती है तो इस का अर्थ यह हुआ कि आप मोटापे का शिकार हो चुकी हैं.

अब एक सवाल यह भी उठता है कि मोटापा पैदा कैसे होता है. जिस तरह से कार को चलाने के लिए पेट्रोल की जरूरत पड़ती है, उसी तरह से हमारे

> मोटापा न केवल देखने मे बुरा लगता है बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है. इसी लिए हर कोई इस से तुरंत छुटकारा चाहता है. पर ऐसा करते समय प्रायः लोग वे तरीके अपना लेते हैं जिन के परिणाम बहुत घातक होते हैं...
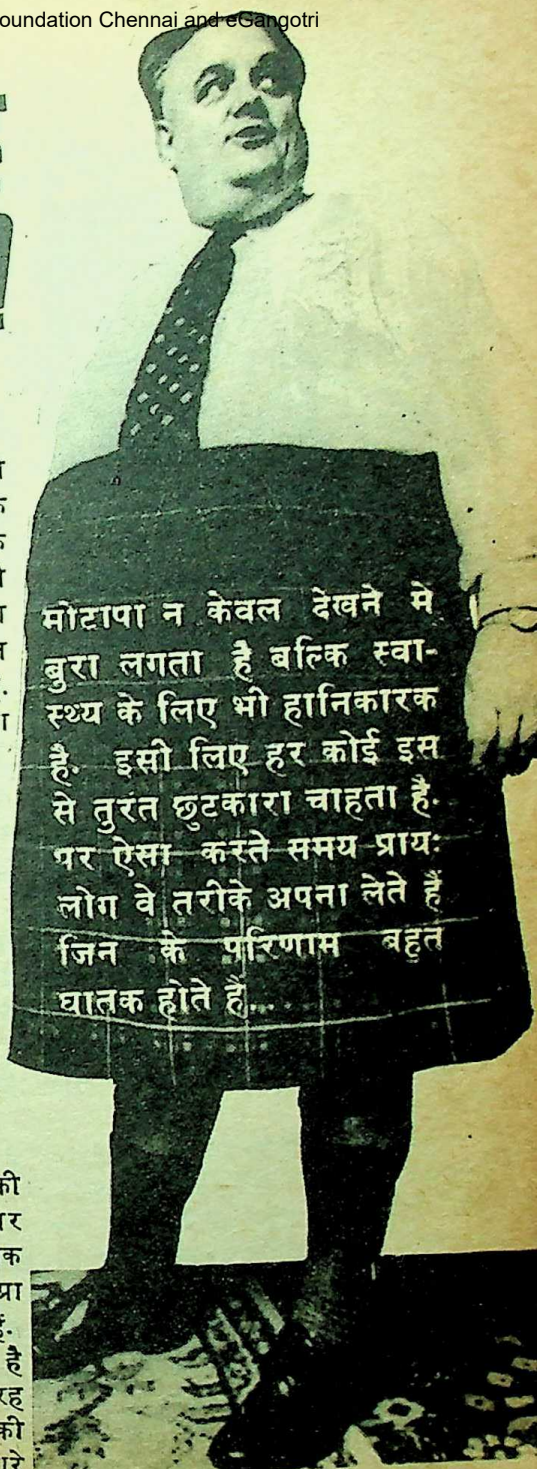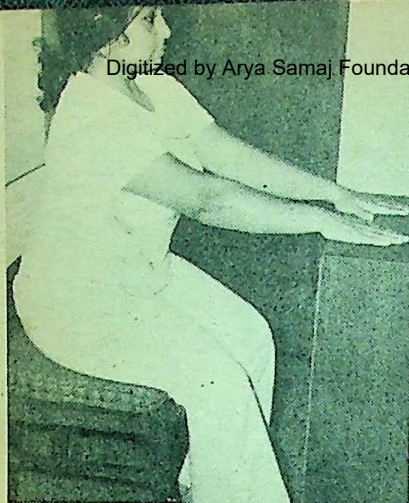
व्यायाम मोटापा घटाने का एक सरल उपाय तो है, पर इस के लिए जरूरी है कि ये क्रियाएं सही ढंग से की जाएं.

शरीर को भी बोलने, चलने, दौड़ने आदि विभिन्न कामों के लिए ईंधन की जरूरत पड़ती है. इस के अलावा शरीर को एक निश्चित तापक्रम भी बनाए रखना होता है. यह ईंधन हमारा भोजन होता है जिसे शरीर ऊर्जा में परिवर्तित कर देता है.

इस भोजन में बहुत से पदार्थ ऐसे होते हैं जिन्हें अगर हम जरूरत से ज्यादा ग्रहण कर लें तो उन्हें शरीर खुद ब खुद बाहर निकाल देता है. जैसे जरूरत से ज्यादा लिया गया पानी व नमक पसीने के जरिए शरीर से बाहर निकल जाता है.

कुछ पदार्थ ऐसे भी होते हैं जो शरीर से बाहर नहीं निकल पाते और वहीं इकट्ठे होने लगते हैं. अगर हम अपने भोजन में जरूरत से ज्यादा प्रोटीन, स्टार्च, चिकनाई आदि लें तो ये चीजें बजाए शरीर से बाहर निकलने के शरीर के अंदर ही इकट्ठी होने लगती हैं और हमारा वजन बढ़ने लगता है.

मस्तिष्क में एक 'भूख नियंत्रक केंद्र' होता है जो शरीर को जरूरत पड़ने वाली ऊर्जा की मात्रा के अनुसार पैदा करता है. सामान्य आदमियों में (केंद्र) ठीक तरह से काम करता है, मोटे आदमियों में यह केंद्र काम करना बंद कर देता है, ठीक उसी तरह से जैसे पेट्रोल या बैटरी की वोल्टेज बताने वाला मीटर खराब हो जाए.

ऐसी हालत में मोटे लोगों की भूख बढ़ जाती है या वे बिना भूख लगे खाते रहते हैं. यह 'मीटर' तभी फिर से काम करना शुरू करता है जब उन का मोटापा खतम हो जाता है.

मोटापे का लक्षण

जब हमारे शरीर में चरबी की मात्रा बढ़ने लगती है तो हम मोटे होने लगते हैं. यह चरबी पेट्रोल की तरह काम करती है. इस से प्राप्त होने वाली ऊर्जा को कैलोरी में नापा जाता है.

जब हम ज्यादा ऊर्जा खर्च करते हैं तो यह चरबी घटने लगती है जिस से हमारा भार कम हो जाता है. और जब हम इसे कम खर्च करते हैं तो यह शरीर में इकट्ठी होने लगती है और हम मोटे हो जाते हैं.

हम मोटे न होने पाएं, इस के लिए यह जरूरी है कि या तो हम भोजन द्वारा प्राप्त होने वाली कैलोरी की मात्रा में कमी करें अथवा ऐसे काम ज्यादा करें जिन में अधिक कैलोरी खर्च होती हो.

चार सौ ग्राम वजन घटाने के लिए 3,700 कैलोरी खर्च करनी पड़ती है. इस के लिए जरूरी है कि आप ऐसा काम करें जिस में उतनी ही कैलोरी खर्च हो जितनी 100 किलोमीटर तक घूमने जाने या 45 किलोमीटर दौड़ लगाने या 14 घंटे तक साइकिल चलाने में खर्च होती है.

पर यह सब करने से आप को भूख भी ज्यादा लगेगी और आप का वजन बजाए घटने के बढ़ जाएगा. अगर वजन

तन मन की इच्छाएं व्यक्त होती हैं.

पहचान में होने वाली भूल दो तरह की होती हैं—किसी चीज को कोई दूसरी ही चीज समझ लेना. और किसी व्यक्ति के मौजूद रहने पर भी उसे न देख पाना. ऐसा इसलिए होता है कि हम उस व्यक्ति को देखना नहीं चाहते.

एक बार दफ्तर के बड़े बाबू से एक कर्मचारी का झगड़ा हो गया. कर्मचारी ने बड़े बाबू को बहुत कुछ भलाबुरा कहा. बड़े बाबू की काफी बेइज्जती हुई. वह कर्मचारी से बदला लेने की ताक में रहे. एक दिन बड़े बाबू उस कर्मचारी के कमरे में आए और उस कर्मचारी के मौजूद होने पर भी अन्य कर्मचारियों से कहा कि वह गैरहाजिर क्यों है. और उन्होंने उसे दंड दिए जाने की भी धमकी दी. बाद में असलियत जानने से बड़े बाबू बहुत शर्मिंदा हुए.

अनजाने में की गई भूलें

जब कभी हम किसी वस्तु को इधर-उधर रख देते हैं तो बाद में सफाई देते हैं कि संयोगवश ऐसा हो गया, पर वास्तव में ऐसा करने में हमारे अचेतन मन का हाथ रहता है.

एक व्यक्ति की एक पार्टी में जाने की इच्छा नहीं थी, पर अपनी पत्नी के बहुत कहने पर वह वहां जाने के लिए राजी हो गया. जब वह दाढ़ी बना कर बक्स से अपने कपड़े निकालने लगा तो उसे बक्स की कुंजी ही न मिली और अंततः पतिपत्नी को पार्टी में जाने का विचार छोड़ना पड़ा. दूसरे दिन ताला तोड़ कर बक्स खोला गया तो कुंजी बक्से के भीतर मिली. पति ने लापरवाही से कुंजी को बक्से में रख कर ताला दबा कर बंद कर दिया था. उस व्यक्ति ने बतलाया कि ऐसा अनजाने में हो गया था. पर वास्तविकता यही थी कि यह सब उस के अचेतन मन ने किया था.

अनजाने में की गई गलतियां प्रायः होती हैं. लोग यह कह कर संतोष कर लेते हैं कि "भई, हम बहुत भुलक्कड़ आदमी हैं." पर वास्तव में दमित इच्छाओं के कारण ही ये गलतियां होती हैं. एक बार एक व्यक्ति ने सिगरेट का एक नया पैकेट खरीदा. पर पहले वाले पैकेट में भी कुछ सिगरेट बचे हुए थे. उसे नई सिगरेट पीने की इच्छा थी, पर मितव्ययिता को ध्यान में रख कर वह पुराने पैकेट की सिगरेट पीने का निर्णय कर किताब पढ़ने में व्यस्त हो गया. पढ़ते समय उस ने नए पैकेट से सिगरेट निकाल कर पी ली, जिस का ज्ञान उसे बाद में हुआ.

इसी प्रकार ताले को गलत कुंजी से खोलना जैसी भूलें भी संयोगवश नहीं होतीं, बल्कि इस के पीछे अचेतन मन का हाथ रहता है.

बारबार बटन लगाना और खोलना, मूंछें ऐंठना, चाबी के छल्ले को हाथ में घुमाते रहना आदि क्रियाएं हमारे अचेतन मन की इच्छाओं को ही अभिव्यक्त करती हैं.

यदि कोई विवाहित स्त्री अपने पति द्वारा दी गई अंगूठी को बारबार उंगली से निकालती और पहनती है तो इस का मतलब यह है कि वह अपने पति से संतुष्ट नहीं है और उस से छुटकारा पाना चाहती है.

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रतिदिन के जीवन की भूलें आकस्मिक अथवा अर्थहीन नहीं हैं, इन के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य रहता है.

> ### भूल
>
> यदि तुम भूलों को रोकने के लिए सभी द्वार बंद कर दोगे तो सत्य भी बाहर रह जाएगा.
>
> —रवींद्रनाथ ठाकुर

व्यंग्य • कृष्णकुमार
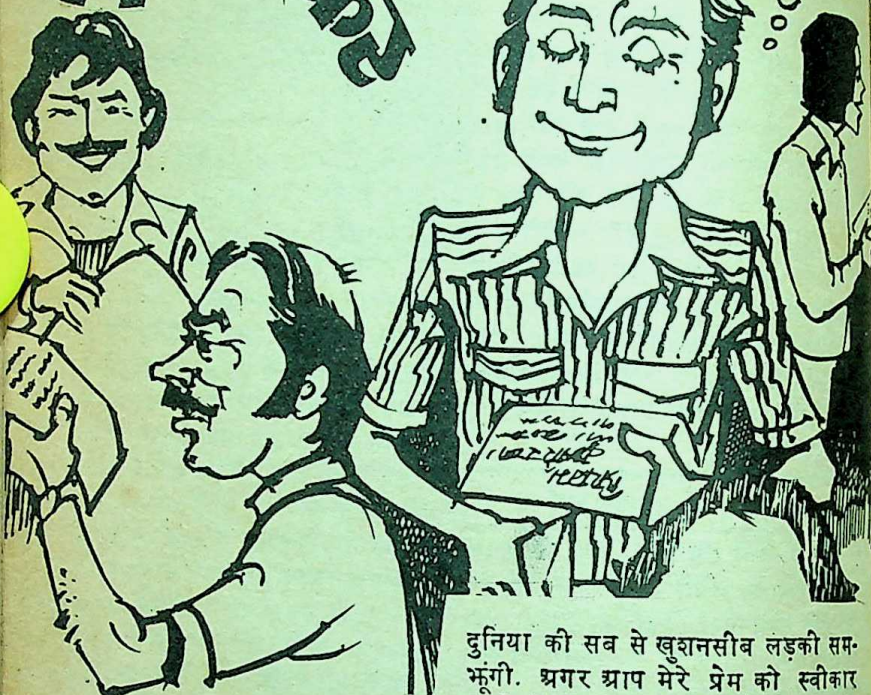
प्रेमपत्र का चक्कर

आज जब दफ्तर से घर लौटा तो दरवाजा खोलते ही एक लिफाफा मिला. उत्सुकतावश जब उसे खोल कर पढ़ा तो आंखें चौंधिया गईं. यह एक प्रेम पत्र था, जिस में लिखा था :

प्रिय, जब से आप की नियुक्ति मेरे सेक्शन में हुई है और मैं ने आप को देखा है, मैं आप से बेइंतहा प्रेम करने लगी हूं. किंतु संकोच के कारण आप के सम्मुख अपने प्रेम का इजहार नहीं कर पाती हूं. इसी कारण इस पत्र का सहारा ले कर आप को अपनी भावनाओं से परिचित करा रही हूं.

अगर आप ने मेरे प्रणय निवेदन को स्वीकार कर लिया तो मैं अपने आप को दुनिया की सब से खुशनसीब लड़की समझूंगी. अगर आप मेरे प्रेम को स्वीकार करते हैं तो कल गोमती के पुल पर शाम सात बजे अकेले मिलिएगा. मैं वहां आप का बड़ी बेसब्री से इंतजार करूंगी.

और देखिए, आप सफेद पैंट और सफेद कमीज पहन कर आइएगा. आप इस पोशाक में आएंगे तो मैं आप को दूर से ही देख कर समझ जाऊंगी कि आप को मेरा प्रणय निवेदन स्वीकार है. और अगर आप किसी अन्य पोशाक में होंगे तो मैं अपने कलेजे पर पत्थर रख कर वापस चली जाऊंगी. मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप मेरी भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाएंगे.

इस पत्र को पढ़ कर तो अपना दिमाग ही घूम गया. सोचने लगा, आखिर दफ्तर की कौन लड़की है जिस ने मुझे

प्रेम पत्र लिख कर मेरे [illegible] में प्रेम रस का संचार कर दिया है.

मेरे छात्र जीवन में कालिज के प्रांगण में एक से एक सुंदर युवतियां घूमा करती थीं, जिन के शानदार व्यक्तित्व के सामने अपने राम सिकुड़ कर छुहारा हो जाया करते थे.

उन दिनों मुझे किसी युवती ने इश्क रूपी घास चरने को नहीं डाली. अगर कोई युवती मेरे इस चौखटे को देख कर एक बार मुसकरा देती थी तो मैं अपने आप को धन्य मानने लगता था कि चलो, किसी कन्या ने मुझे स्नेह का पात्र तो समझा.

बड़ा चाहा कि इश्क की परीक्षा में बैठूं, पर किस्मत ने साथ ही नहीं दिया. आखिर किताबी पढ़ाई पास कर मैं जल्द ही एक प्रतिष्ठान में पंच आपरेटर के पद पर नियुक्त हो गया. मेरे साथ ही चार लड़कियां और पांच लड़कों की भी नियुक्तियां हुई थीं.

औरों की तरह मुझे भी किसी कन्या ने प्रेम पत्र लिखा था जिसे पढ़ कर मैं आश्चर्य में पड़ गया. आखिर कौन हो सकती है वह? मगर जब उस के बताए प्रथम मिलन स्थल पर पहुंचा तो सारे उत्साह पर पानी फिर गया...

खैर पत्र पा कर ऐसा लगा, जैसे कोई मुझे इश्क के अखाड़े में लड़ने के लिए चुनौती देते हुए कह रहा हो, "बड़े प्रेमिका के खोजी बनते थे. अब मेरे मजनूं बनो तो जानूं."

मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि दफ्तर की किस लड़की का यह पत्र हो सकता है. तभी मन में आया कि यह पत्र शायद सरोज का हो. लेकिन वह तो बड़ी गंभीर, साहित्यिक अभिरुचि वाली लड़की है. सब उसे बहुत ही भली कहते हैं. नहीं...नहीं...यह पत्र उस का कदापि नहीं हो सकता.

अभी हम दोनों बातें कर ही रहे थे कि तभी हमारा ही एक और साथी आता दिखाई दिया.

तो हो सकता है यह पत्र शरारती रेणु का हो. वह है भी बहुत स्मार्ट, आधुनिक और मुंहफुट. उसे सच बात कहने में जरा भी संकोच नहीं होता. लक्ष्मीकांत कितने दिनों से रेणु के पीछे पड़ा हुआ है, जबजब उस ने रेणु को चाय के लिए दावत दी, उस ने स्पष्ट इनकार कर दिया. एक बार तो वह मुंहफट पूछ ही बैठी, "लक्ष्मीजी, क्या बात है, दफ्तर में मेरे अलावा तीन लड़कियां और भी हैं, फिर भी आप हमेशा मुझे ही क्यों चायनाश्ते के लिए आमंत्रित करते हैं?"

"अरे, आप तो बुरा मान गईं. बस, जरा चाय पीने का मूड हो आया था. आप को बुरा लगा तो मैं अपना प्रस्ताव वापस ले लेता हूं," लक्ष्मीकांत ने खिसियाई आवाज़ में कहा.

"बुरा मानने की बात नहीं. लेकिन आप अपने आप को जो समझते हैं वह हैं नहीं."

इतना सुनते ही लक्ष्मीकांत की सिट्टीपिट्टी गुम हो गई और वह उस से फिर कभी बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया.

तभी ध्यान आया कि यह पत्र रोजी का हो सकता है. लेकिन रोजी मुझे क्यों पत्र लिखने लगी? उस का तो घनश्याम के साथ पहले से चक्कर चल रहा है और अगले महीने उन की शादी भी होने वाली है.

इन लड़कियों के बारे में सोचतेसोचते पता नहीं कब नींद आ गई और जब आंख खुली तो सवेरा हो चुका था.

नित्य कर्म से निबट कर रमाशंकर के घर गया और उस से एक दिन के लिए सफेद पैंट उधार मांगी. पैंट ले कर सीधे लांड्री के पास गया. जहां उसे अरजेंट धुलाई के लिए डाल दिया तथा नहाधो कर दफ्तर पहुंच गया.

दफ्तर में हर लड़की का चेहरा पढ़ कर यह जानने का प्रयत्न करने लगा कि आखिर वह पत्र किस का हो सकता... लेकिन उन के सपाट चेहरे देख कर किसी नतीजे पर पहुंचने में असफल रहा. ... यह सोच कर तसल्ली कर ली कि ... शाम को सात बजे तो मुलाकात होगी ...

किसी लड़की का प्यार पाने ... खुशी में दफ्तर में मन नहीं लगा. ... कारण दोपहर के खाने के समय छुट्टी ... कर घर चला आया और करवटें बदलते हुए शाम का इंतजार करने लगा.

पांच बजते ही लांड्री से सफेद पैंट ... कर तैयार हुआ और रिक्शा ... बैठ कर गोमती के पुल पर जा पहुं... अभी केवल छः बजे थे, इसलिए खड़े... सात बजने का इंतजार करने लगा. त... देखा कि हमारे दफ्तर के सहयोगी प्रे... कुमारजी झूमतेझामते पैदल चले आ ... हैं. उन्हें देखते ही मैं पुल के पीछे ... गया. सोचा, वह शायद कहीं काम से ... रहे होंगे. लेकिन वह तो पुल पर आ ... खड़े हो गए. मैं पुल के पीछे रूमाल ... कर चुपचाप बैठ गया और उन के ... का इंतजार करने लगा.

एक बार उचक कर देखा कि ... खिसके हैं या नहीं. पर वह तो वहां ... विराजमान थे जैसे वहीं किसी काम ... आए हैं. मैं चुपके से उठा और उन ... सामने जा पहुंचा. वह ऐसे चौंके ... किसी दुकान से मिट्टी का तेल चुरा ... हों. हड़बड़ा कर नमस्तेनमस्ते करने ...

आखिर मैं पूछ ही बैठा, "... यहां कैसे?"

वह हकलाते हुए बोले, "कुछ नहीं ... कुछ नहीं...यहां सब्जी लेने आया था..."

"लेकिन रहते तो तुम यहां से ... मील दूर हो और फिर तुम्हारे घर ... पास भी सब्जी मंडी है. यहां सब्जी ... की कैसी सूझी?"

"आज ऐसे ही जरा गोमती तट ... घूमने चला आया."

अभी हम लोग बातचीत कर ही ...

हम सब बातें कर ही रहे थे तभी एक लड़का आया और बोला, "बाबूजी, एक मेमसाहब ने पुल के उस पार से आप को यह चिट्ठी भेजी है."

थे कि हमारे दफ्तर का एक अन्य सहयोगी लक्ष्मीकांत भी दिखाई पड़ गया. हम लोगों को देख कर बेचारा कन्नी काटने की कोशिश करने लगा.

बुलाने पर उस ने सकुचाते हुए बताया कि वह अपने एक मित्र से मिलने आया है.

"कौन मित्र?" मैं ने पूछा.

"अरे, वही जो हमारे दफ्तर में डिस्पेचर है."

"लेकिन वह तो सिगार नगर में रहता है."

"हांहां, ठीक कहते हो. मैं ने सोचा, चलो आज थोड़ा गोमती घूम आऊं."

हम तीनों बातचीत करने लगे. तभी हमारे दफ्तर के दो और सहयोगी सत्यसागर और मदन मोहन भी एक साथ अलगअलग रिक्शों से उतरे. हम लोगों ने उन्हें आवाज दे कर अपने पास बुला लिया.

लगता था हम सभी पिकनिक के खयाल से सजधज कर गोमती के किनारे एकत्र हुए हैं. तभी मेरा ध्यान उन के कपड़ों की ओर गया. सभी मेरी तरह सफेद पैंट और कमीज पहने हुए थे. एकाएक दिमाग में कौंधा, 'आखिर यह माजरा क्या है?'

मैं ने प्रदीपकुमारजी से पूछा, "क्या तुम्हें किसी लड़की का इंतजार है? "क्या तुम सब को प्रेम पत्र मिला है?"

"हां." सभी समवेत स्वर में बोले.

अब हम लोगों को पूरा विश्वास हो गया कि हमें बेवकूफ बनाया गया है और यह दफ्तर की ही लड़कियों की चाल है, जिन्होंने अलगअलग प्रेम पत्र लिख कर हम सब को एक ही जगह बुलाया है.

हम सब बातें कर ही रहे थे कि तभी एक लड़का दौड़ता हुआ आया और बोला, "बाबूजी...बाबूजी, एक मेम साहब ने पुल के उस पार से आप को यह चिट्ठी भेजी है."

चिट्ठी खोल कर पढ़ा. लिखा था :

"आप सब पांचों मूर्ख महानुभावों को दफ्तर की लड़कियों की तरफ से 'फर्स्ट अप्रैल फूल' बनने पर बधाई." ●

कांग्रेस सरकार की देखरेख में धार्मिक अनुष्ठानों के नाम पर एक और नर बलि

अक्तूबर 1980 में गोरखपुर में वेदांत और रामायण सम्मेलन का आयोजन किया गया था. यहां प्रस्तुत है इसी सम्मेलन की रोंगटे खड़े कर देने वाली रिपोर्ट--कि किस तरह राजनीतिबाजों और धर्मगुरुओं ने अपने पाखंड निर्वाह के लिए गूंगेबहरे व्यक्ति खंडेश्वरी बाबा को जबरन भूमिगत समाधि दिला कर मौत के घाट उतार दिया...

लेख • विशेष प्रतिनिधि

तंत्र, मंत्र एवं योग के चमत्कारों पर कुछ लोगों का विश्वास इस कदर बढ़ गया है कि सत्ता पक्ष के बड़ेबड़े नेता पूरे देश के भाग्य का निर्णय अब इन्हीं चमत्कारों के बल पर करने पर तुल गए हैं. सरकारी तंत्र के सहारे देश भर में किए जाने वाले यज्ञ आदि अपने देश को धर्मनिरपेक्ष देश कहने वाले शासकों के उसी प्रकार के अंधविश्वास के परिचायक हैं जो 1024 ईसवी में महमूद गजनवी के आक्रमण के समय गुजरात के शास[...] और लोगों में देखने में आया था.

पिछली विजयादशमी तक सत्ता [...] द्वारा सरकारी तंत्र के सहारे पूरे देश [...] 108 यज्ञ कराए गए. यह सिलसि[...] दीपावली तक चलता रहा. नक्षत्रों त[...] ज्योतिषियों के आधार पर चलने वा[...] हमारी प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गां[...] के कृपापात्र बनने के लिए सरका[...] अधिकारी इस तरह के आयोजनों के [...]

दिल खोल कर चंदा उगाहने के कार्य में लगे रहे तथा पैसा कमाने के तरहतरह के साधनों के मर्मज्ञ भी ऐसे मौकों का भरपूर फायदा उठाते रहे.

गोरखपुर में पायलट बाबा द्वारा खंडेश्वरी बाबा को जीवित ही जमीन में उतारने की घटना इसी प्रकार की है, जिस में सरकारी अधिकारियों ने भी भाग लिया. गड्ढे में उतार देने और ऊपर से बंद कर दिए जाने के कारण खंडेश्वरी बाबा का दम घुट गया और 10 दिन बाद उस का शव ही निकाला जा सका.

खंडेश्वरी बाबा को जीवित समाधि देने का षडयंत्र 20 से 30 अक्टूबर, 1980

खंडेश्वरी बाबा समाधि के गड्ढे में प्रवेश के बाद मृगछाल पर खड़ा हुआ.

तक गोरखपुर में हुए वेदांत एवं रामायण सम्मेलन का ही एक अंग था. इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए सरकारी तंत्र तथा अन्य प्रचार साधनों द्वारा जोरशोर से प्रचार किया गया. परचे बांट कर यह घोषणा की गई कि इस अवसर पर खंडेश्वरी बाबा की 10 दिन की भूमिगत समाधि के साथ ही वेदांत एवं रामायण सम्मेलन होगा और अंत में पंचकुंडी गायत्री महायज्ञ किया जाएगा.

इस पूरे आयोजन में खंडेश्वरी बाबा की 'योग साधना' के अतिरिक्त गोरखपुर के प्रसिद्ध गोरखनाथ मंदिर के महंत श्री अवैद्यनाथ के संरक्षण में 11 दिवसीय वेदांत एवं रामायण सम्मेलन का भी आयोजन किया गया था. इस सम्मेलन की अध्यक्षता कथित पिंडारी ग्लेशियर के महर्षि 'अद्वैत के नाम से प्रसिद्ध पायलट बाबा ने की. वास्तव में वही इन तमाम कार्यक्रमों का संचालक था.

इस आडंबर को पूरी तरह सरकारी संरक्षण प्राप्त था. सिटी मजिस्ट्रेट श्री दशरथनारायण शुक्ल भी इस कार्यक्रम के प्रमुख संयोजकों में से थे. वह पूरे कार्यक्रम में गेरुआ वस्त्र धारण किए रहे. यही नहीं, आयोजकों में जिले के कुछ अन्य प्रमुख अधिकारियों एवं गोरखपुर सहकारी सोसाइटी के अध्यक्ष सुदामासिंह, वाणिज्य मंडल के अध्यक्ष रामकृष्ण टेकरीवाल तथा सचिव सीताराम जालान के नाम भी थे. प्रचार कार्य के लिए संयोजन समिति में दो दैनिक पत्रों के प्रतिनिधियों को लिया गया था.

जानकार सूत्रों का कहना है कि 65 वर्षीय खंडेश्वरी बाबा गोरखपुर जिले के बड़हलगंज कसबे के पास खंडेश्वरी गांव के नहरपुर पुरवे में रहता था. उस ने कभी समाधि नहीं ली थी.

बताया जाता है कि वह जन्म से अंधा, गूंगा, बहरा एवं लंगड़ा था और आसपास के क्षेत्रों में घूमघूम कर एकएक जगह 10—15 दिन एक पैर पर खड़े रह कर अपना चमत्कार दिखाता था.

कुछ प्रतिष्ठित लोगों ने यह आ[रोप] लगाया है कि पायलट बाबा ने खंडेश्व[री] बाबा को यह भुलावा दिया था कि यदि [उस] की समाधि में मृत्यु हो गई तो तंत्रमंत्र के [बल] पर उस को जीवित कर दिया जाएगा. इन सभी भुलावों पर भी जब वह तैयार [न] हुआ तो उस बेचारे को कोई नशीला पदा[र्थ] खिला दिया गया.

प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है [कि] 20अक्तूबर की रात को खंडेश्वरी बाबा [को] मंच से समाधि स्थल तक एक व्यक्ति [के] कंधे पर बैठा कर लाया गया [था.] फूलमालाओं से लाद कर जब उसे समाधि [में] प्रवेश कराया जा रहा था, उस समय [वह] बहुत डरा हुआ था. रास्ते में एक जगह [वह] कंधे से उतर कर खड़ा हो गया था, लेकिन तुरंत ही लड़खड़ा गया था. वह तुतला [कर] कुछ बोला भी था. उस को गड्ढे में उतारते समय पायलट बाबा ने कई धार्मिक अनुष्ठान किए और बाद में उसे विशाल भीड़ की उपस्थिति में गड्ढे में जिंदा दफना दिया गया.

चंदे के रुपए कहां गए?

बताया जाता है कि इस आडंबर [को] सरकारी संरक्षण प्राप्त होने के कारण सरकारी साधनों द्वारा भरपूर चंदा इकट्ठा किया गया. यही नहीं, बल्कि दूरदराज [से] आए धार्मिक प्रवृत्ति के लोगों ने समाधि एवं कीर्तनभजन वाले स्थान पर वस्तुओं तथा नकदी के रूप में लाखों का चढ़ावा चढ़ाया. इस पूरे धनसंग्रह का कोई लेखाजोखा नहीं रखा गया. इस सारे धन का संग्रह पायलट बाबा की देखरेख में हो रहा था जिसे ले कर वह चंपत हो गया.

सरकारी अनुमान के अनुसार यह धनराशि आठ से 10 लाख के लगभग बताई जाती है, परंतु अन्य जानकार सूत्रों का कहना है कि इस पूरे सम्मेलन में 15 से 20 लाख रुपया इकट्ठा हुआ, जिस का कोई भी लेखाजोखा नहीं है.

बताया जाता है कि घोषित कार्यक्रम के अनुसार खंडेश्वरी बाबा 30 अक्तूबर

खंडेश्वरी बाबा को मंच से समाधि स्थल पर एक व्यक्ति द्वारा कंधे पर चढ़ा कर लाया गया. साथ में धार्मिक अनुष्ठान करता हुआ पायलट बाबा (माला पहने हुए).

रात को समाधि से निकलने वाला था. पहले से ही वहां बड़े जोरों से प्रवचन तथा हरिकीर्तन चल रहा था. पायलट बाबा टाउन हाल के मैदान में जुटी एक लाख के करीब श्रद्धालु जनता को बारबार यह अश्वासन दे रहा था कि "अभी बाबा की आत्मा हिमालय से नहीं लौटी है. कुछ देर बाद आएगी, अतः आप लोग जाएं. कल सुबह दर्शन के लिए आएं."

इस अपील के बावजूद टाउन हाल के मैदान में जमा भीड़ ने वहां से हटने से इनकार कर दिया, क्योंकि लोग समझ गए थे कि आत्मा को शरीर में फिर से प्रवेश कराने का आयोजकों का दावा सिर्फ एक झांसा है. इस का परिणाम यह निकला कि अविश्वासी लोगों के साथसाथ श्रद्धालु लोगों को भी पुलिस की लाठियां खानी पड़ीं. यही नहीं, पायलट बाबा ने भीड़ को चेतावनी दी कि यदि वे लोग वहां से नहीं हटे तो उन्हें इस का परिणाम भुगतना पड़ेगा. पर टाउन हाल को आधी रात तक पुलिस ने जबरन खाली करा दिया.

प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि 30 अक्तूबर की रात को जब भीड़ को जबरन हटाने का प्रयत्न किया जा रहा था, उस समय वहां बिजली भी बंद कर दी गई. मुख्य मंच (समाधि स्थल) पर तो बिजली जलती रही, पर पंडाल की बिजली दोतीन बार आधेआधे घंटे के लिए गुल कर दी गई. इसी बीच खंडेश्वरी बाबा को देखने के लिए देहातों एवं शहरों से आई हजारों महिलाओं की इज्जत के साथ असामाजिक तत्वों ने जम कर खेला.

उस समय तो लोगों को जैसेतैसे भगा दिया गया. इसी बीच पायलट बाबा ने स्थिति को संभालने और अपने बचने की तरकीब ढूंढ़ निकाली. इस तरकीब में उस ने धार्मिक मान्यताओं का सहारा लिया.

सरकारी संरक्षण

जब पायलट बाबा ने समाधि पर से कुछ मिट्टी हटाई और गड्ढे को ढकने के

लिए रखे टीन को कुछ उठाया तो अंदर से भयंकर दुर्गंध आई, जिस से आयोजकों को तुरंत ही यह आभास हो गया कि खंडेश्वरी बाबा का समाधि के अंदर ही देहांत हो गया है. इस की घोषणा करने से भीड़ के बेकाबू हो जाने का खतरा था, इसलिए आपस में परामर्श के बाद आयोजकों ने यह घोषणा की कि "समाधिस्थ खंडेश्वरी बाबा अभी अपनी काया में वापस नहीं लौटे हैं, रात्रि में लौटेंगे. इसलिए आप लोग दूसरे दिन सवेरे आठ बजे दर्शनार्थ आएं."

अधिकारियों की अपील के बावजूद भीड़ वहां से हट नहीं रही थी. वह बाबा का दर्शन कर के ही जाना चाहती थी. अतः भीड़ को पुलिस ने बलपूर्वक हटा दिया. अंततः रात को करीब 12 बजे पूरी तरह मैदान साफ हो गया. पुलिस का घेरा और कड़ा कर दिया गया.

खंडेश्वरी बाबा को मरा पा कर पायलट बाबा ने ऐलान किया कि वह खंडेश्वरी बाबा की आत्मा को पुनः उस के शरीर में प्रवेश कराने की कोशिश कर रहा है. पर उस का यह दावा झूठा साबित हुआ. बाद में उस ने यह कह कर छुट्टी पा ली कि खंडेश्वरी बाबा का शरीर सड़ गया है, इसलिए उस की आत्मा अपने उस शरीर में पुनः वापस नहीं आना चाहती. पायलट बाबा इस का कोई प्रमाण नहीं दे सका कि इस तथाकथित आत्मा से उस की कैसे बात हु[ई] क्योंकि एक दिन पहले तक वेदांत सम्मे[लन] में यह कहा जा रहा था कि खंडेश्वरी बा[बा] समाधि में है और उस की आत्मा अ[पना] शरीर छोड़कर तीर्थों तथा हिमालय की [सैर] कर रही है. यदि बाबा की आत्मा से उस [की] बात हुई तो उसे यह क्यों नहीं पता चला [कि] बाबा की कुछ दिन पूर्व ही मृत्यु हो चुकी है?

घटनास्थल पर जिले के कई प्रमु[ख] अधिकारियों के साथ पुलि[स] उपमहानिरीक्षक श्री सिन्हा भी मौजूद थे. श्री सिन्हा ने समाधि खोलने से पूर्व लगभग आधे घंटे तक पूजा भी की थी. रात को करीब दो बजे पेट्रोमैक्स के मंद प्रकाश में समाधि पर से टीन हटाया गया. उस समय जिला हस्पताल के दो वरिष्ठ डाक्टर भी वहां मौजूद थे. गड्ढे में से भयंकर दुर्गंध आ रही थी, जो तुरंत पूरे मैदान में फैल गई.

खंडेश्वरी बाबा का सिर दीवार से टिका हुआ था, आंखें मुंदी हुई थीं, जीभ बाहर निकली हुई थी, दोनों पैर फैले हुए थे. शरीर पूरी तरह सड़ चुका था. नाखून गल कर अलग हो गए थे. पूरे शरीर में दीमक लग गई थी. पुलिस के दो जवानों को नीचे उतरवा कर कुरसी के सहारे बाबा का शरीर बाहर निकाला गया. ऐसा लगता था कि बाबा की मृत्यु दम घुटने से हुई है. वहां उपस्थित डाक्टरों ने बताया कि बाबा की

खंडेश्वरी बाबा की समाधि खोलते समय पायलट बाबा साथ में खड़े हैं नगर अधिकारी दशरथनारायण शुक्ल एवं आयोजकों में से एक नगर के प्रमुख व्यापारी रामकृष्ण टेकरीवाल.

मृत्यु पांचछः दिन पर्व ही हो गई थी.

गोरखपुर के अ... व्यापारी की सफेद रंग की एंबेसेडर कार की डिग्गी में बाबा के शव को रख कर शहर के बाहर ले जाया गया. उस कार के पीछेपीछे शहर कोतवाल की गाड़ी भी सुरक्षा के लिए गई. ऐसा समझा जाता है कि शव को कहीं निर्जन स्थान पर गायब कर दिया गया और यह प्रचार कर दिया गया कि बाबा के शिष्य शव को प्रयाग ले कर चले गए हैं.

जिलाधिकारी की अनुमति नहीं

जब जिलाधिकारी डा. सूर्यप्रसाद से पत्रकारों ने पूछा कि कचहरी क्लब का यह मैदान समाधि के लिए बिना उन की अनुमति के कैसे दिया गया तो उन्होंने कहा कि इस बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं है और इस आयोजन के बारे में उन से कोई अनुमति नहीं ली गई. जिन लोगों ने ऐसा किया उन के खिलाफ आवश्यक काररवाई की जाएगी.

सेंट एंड्रूज महाविद्यालय के विधि विभाग के छात्रों ने मांग की है कि खंडेश्वरी बाबा की हत्या के अभियोग में आयोजकों के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के अंतर्गत मुकदमा चलाया जाए. जनवादी नवजवान सभा, उत्तर प्रदेश युवक कांग्रेस के मंडलीय सचिव श्री खोखासिंह, जिला अर्स कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री त्रियुगीनारायण सिंह, आर्यनगर स्थित योग प्रशिक्षण केंद्र के निदेशक श्री नागेंद्र सिंह ने खंडेश्वरी बाबा की मृत्यु को सुनियोजित षड्यंत्र बताया है तथा इस संबंध में जिम्मेदार अधिकारियों को मुअत्तल कर के घटना की जांच कराने की मांग की है.

बताया जाता है कि इस मामले को रफादफा करने के लिए भी कई स्थानीय और क्षेत्रीय नेता अपने प्रभाव का उपयोग कर रहे हैं. संभव है वे इस में सफल भी हो जाएं. पर इस घटना से यह तो साबित हो ही जाता है कि योग और तंत्र के नाम पर निरीह व्यक्तियों की जान से किस प्रकार खिलवाड़ किया जाता है.

योग और तंत्र के समर्थक इस दुर्घटना को आकस्मिक भी कह सकते हैं और समाधि लेने तथा बाद में सुरक्षित निकल आने की दूसरी अन्य घटनाएं प्रमाण के रूप में दे सकते हैं. परंतु यह प्रश्न तो अपने स्थान पर यथावत ही है कि आखिर इस तरह के प्रदर्शनों का क्या औचित्य है. समाधि लेने और वापस निकल आने के प्रदर्शन में एक खास तरह की चतुराई या चालाकी बरती जाती है और इन प्रदर्शनों का एक ही उद्देश्य होता है — लोगों की धार्मिक श्रद्धा उभाड़ना तथा उन से दानदक्षिणा और भेंटचढ़ावे के रूप में मोटी रकम ऐंठना. इन्हें एक तरह के षडयंत्र और ठगी ही कहा जा सकता है. इन साजिशों में राजनीतिबाज और अन्य प्रभावशाली व्यक्ति या तो अंधविश्वास से प्रेरित हो कर सहयोगी बनते हैं अथवा यह भी हो सकता है कि दान और चढ़ावे के रूप में प्राप्त होने वाली रकम में उन का भी हिस्सा हो.

इन आयोजनों का प्रयोजन

ऐसे आयोजनों में नेताओं तथा प्रभावशाली व्यक्तियों के सम्मिलित होने का कारण कुछ भी हो, एक बात तो स्पष्ट है कि धर्म, अध्यात्म, योग एवं तंत्र के नाम पर धर्मगुरु जनसाधारण को उल्लू बनाने और सवारी गांठने का काम ही करते हैं. प्रायः सभी धर्माचार्य और साधुमहात्मा इसी काम में लगे हुए हैं. उन के तरीके भिन्न हो सकते हैं, परंतु उद्देश्य एक ही है. अपने देश में वैसे भी धर्मगुरु हमेशा से लोगों को बहकाते रहे हैं. अब कोढ़ में खाज की तरह एक यह रोग भी पैदा हो गया है कि तथाकथित शिक्षित व्यक्ति, राजनीतिबाज और अधिकारी वर्ग भी पूरी तरह उन के साथ हो गया है. इस प्रवृत्ति को समय रहते नहीं रोका गया तो कोई आश्चर्य नहीं कि हम फिर से एक नई तरह की गुलामी और पंगुपन के शिकार हो जाएं. ●
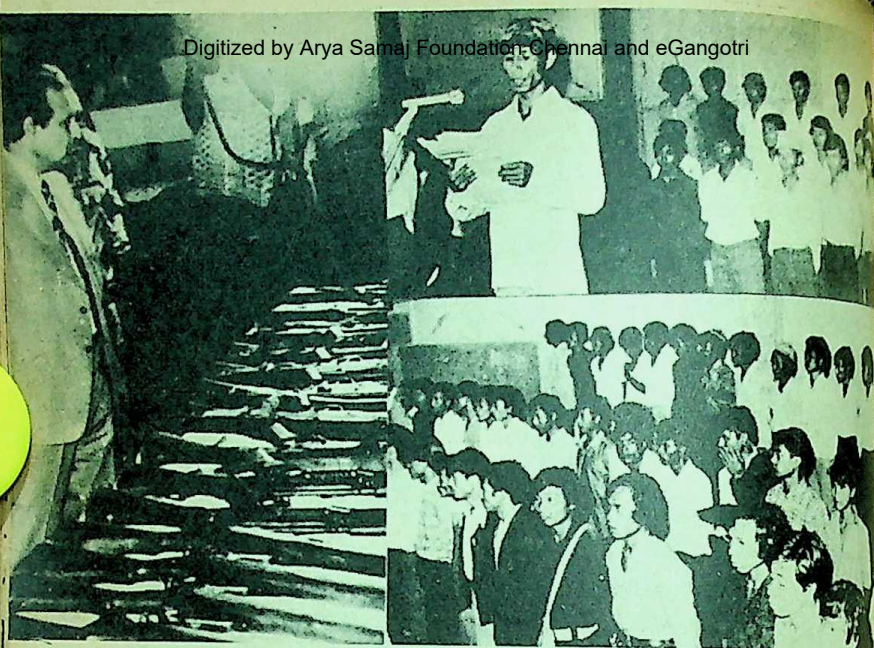
मिजोरम समस्या का समाधान क्या है?
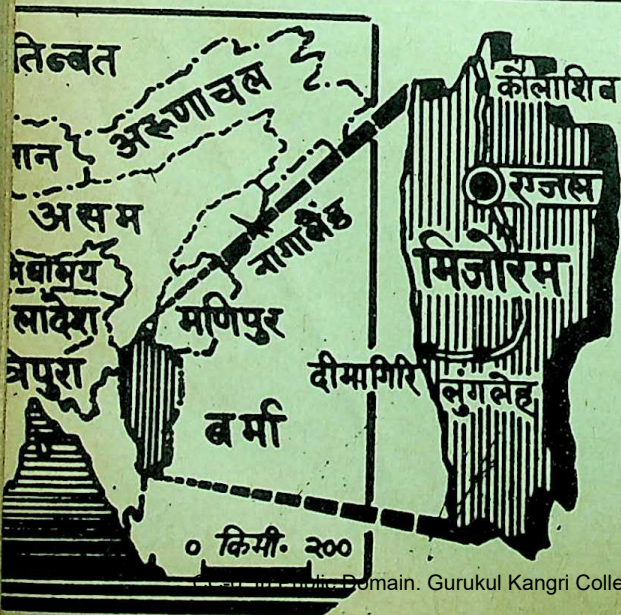
लेख ◦ योगेशचंद्र शर्मा

मिजोरम भारत की पूर्वोत्तर सीमा पर स्थित लगभग 21 हजार किलोमीटर का केंद्र प्रशासित क्षेत्र है. इस की जनसंख्या लगभग साढ़े तीन लाख है. देश के शेष भाग द्वारा उपेक्षित रहने और विदेशी मिशनरियों के प्रभाव के कारण यहां के लोग राष्ट्र की मुख्य धारा से अलगथलग ही बने रहे. शिक्षा की दृष्टि से इस क्षेत्र को पिछड़ा हुआ नहीं कहा

जा सकता. शिक्षितों की संख्या यहां 54 प्रतिशत है जो हमारे राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक है. अवश्य ही इस का श्रेय विदेशी ईसाई मिशनरियों को है. मिजोरम के निवासियों की अपनी भाषा मिजो है. मिजो भाषा की अपनी कोई लिपी न होने के कारण अंगरेजों ने उन्हें रोमन लिपि प्रदान की, जिस के परिणामस्वरूप मिजो लोग अब प्रायः अंगरेजी को ही अपनी मातृभाषा समझ बैठे हैं.

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत इस क्षेत्र को असम राज्य के एक जिले के रूप में मान्यता दी गई. 1958-59 में जब यहां भीषण अकाल पड़ा तो यह क्षेत्र

मिजोरम में आज भी भारत विरोधी गुट सक्रिय हैं और जबतब मिजो विद्रोहियों की हिंसक गतिविधियां या इन के आत्मसमर्पण की खबरें अखबारों की सुर्खियां बन जाती हैं. क्या देश के इस महत्त्वपूर्ण सीमावर्ती क्षेत्र की समस्यायों का सरकार के पास कोई कारगर समाधान नहीं है?

मिलोरम की सामान्य जनता : इन्हें भारतीय होने पर नाज है.
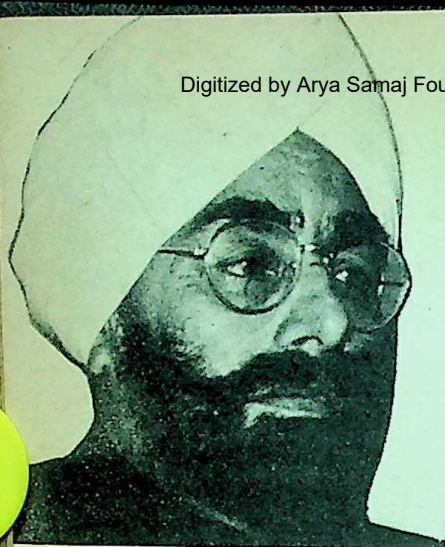
केंद्रीय गृह मंत्री जैलसिंह : "मिजो नेशनल फ्रंट तथा सरकार के बीच समझौता हो गया है."

राजनीतिक और प्रशासनिक अधिकारियों की उपेक्षा का निरंतर शिकार रहा. उपेक्षा की यह स्थिति इस से पहले भी बनी हुई थी. कारण के रूप में सामान्य लापरवाही के अतिरिक्त कोई विशेष बात नहीं कही जा सकती. संभवत: तत्कालीन अधिकारी इस क्षेत्र के राजनीतिक और भौगोलिक महत्त्व का ठीक तरह मूल्यांकन नहीं कर सके.

लालडेंगा की महत्त्वाकांक्षाएं

ऐसी स्थिति में भारतीय सेना के एक भूतपूर्व हवलदार श्री लालडेंगा ने अकाल पीड़ितों की सहायता के लिए 'मिजो फैमिन फ्रंट' के नाम से एक संस्था बना ली. इस संस्था ने अकाल पीड़ितों की सहायता की भी. इस से श्री लालडेंगा काफी लोकप्रिय होने लगे. वह महत्वाकांक्षी तो पहले से थे ही. अब उस महत्वकांक्षा में और अधिक वृद्धि हुई. उन्होंने अपने 'फैमिन फ्रंट' का नाम बदल कर 'मिजो नेशनल फ्रंट' कर दिया, ताकि वह क्षेत्र की राजनीति में स्थायी रूप से घुसपैठ कर सकें.

1962 में चीन ने भारत पर अपने आक्रमण के बाद हमारे इस सीमावर्ती क्षेत्र में फैले असंतोष का भरपूर लाभ उठाया. उस ने असंतुष्ट मिजो लोगों को छापामार युद्ध का प्रशिक्षण और उस के लिए आवश्यक हथियार देना शुरू कर दिया. कुछ समय बाद इस कार्य में पाकिस्तान ने भी चीन की सहायता की. श्री लालडेंगा की गतिविधियों को देख कर असम सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और यह आश्वासन मिलने के बाद ही उन्हें छोड़ा कि वह भविष्य में किसी भी राष्ट्रविरोधी कार्य में भाग नहीं लेंगे.

चीन और पाकिस्तान की शह

मगर श्री लालडेंगा ने अपना वादा पूरा नहीं किया. मुक्त हो कर उन्होंने अपने सहयोगियों की मदद से तथा चीन और पाकिस्तान की शह पर 1966 में मिजोरम को भारत से अलग करने की मांग को ले कर भारत सरकार के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी. यह कारखाई इतनी अप्रत्याशित और भयानक रही कि मिजोरम की वर्तमान राजधानी ऐजल तथा उस के निकटवर्ती क्षेत्रों पर लगभग एक सप्ताह तक भारत सरकार का कोई नियंत्रण नहीं रहा. ये स्थान विद्रोही 'मिजो नेशनल फ्रंट' के ही नियंत्रण में आ गए. बाद में भारतीय सेना ने इस क्षेत्र पर बाकायदा आक्रमण कर के और युद्ध कर के ही उस पर पुन: कब्जा किया. इस घटना के बाद श्री लालडेंगा विदेश चले गए और विभिन्न देशों में भ्रमण कर के अपने लिए राजनीतिक समर्थन जुटाने का प्रयत्न करते रहे.

मिजोरम की जन भावनाओं को संतुष्ट करने तथा सीमावर्ती इलाके के रूप में उस के महत्त्व को स्वीकारते हुए भारत सरकार ने सन 1972 में मेघालय और अरुणाचल प्रदेश के साथ मिजोरम को भी केंद्र शासित प्रदेश बना दिया. मगर इस से भी वस्तुस्थिति में कोई विशेष

अंतर नहीं आया. श्री लालडेंगा के विदेश चले जाने के बाद भी उन के अन्य साथियों का भारतीय सेना से छापामार युद्ध चलता रहा. श्री लालडेंगा भी बाहर से अपने साथियों को आवश्यक निर्देश देते रहे.

श्री लालडेंगा विदेशों में इधरउधर घूमते रहने के बावजूद अपने लिए कोई विशेष राजनीतिक सहायता प्राप्त नहीं कर सके. तब वापस मिजोरम लौटने के विचार से उन्होंने भारत सरकार से समझौता वार्ता चलाने का प्रयत्न किया. इधर भारत सरकार भी समस्या के शांतिपूर्ण समाधान के लिए उत्सुक थी. मिजोरम का अधिकांश क्षेत्र बीहड़ जंगलों और ऊंचेनीचे स्थानों से ढका हुआ है. इसलिए वहां मिजो विद्रोहियों द्वारा चलाया जा रहा छापामार युद्ध भी समाप्त नहीं हो पा रहा था. फिर इस क्षेत्र की लगभग एक हजार किलोमीटर सीमा पश्चिम में बंगला देश (पहले पूर्वी पाकिस्तान) तथा पूर्व व दक्षिण में बर्मा से मिली हुई है, जिस से आवश्यकता पड़ने पर विद्रोही सहज ही उन देशों की सीमा में प्रवेश कर जाते हैं.

उधर भारत सरकार विद्रोही मिजो लोगों के विरुद्ध कोई बहुत कठोर काररवाई नहीं करना चाहती थी. फलस्वरूप 1975 में भारत सरकार ने श्री लालडेंगा को इस आश्वासन के साथ भारत बुलाया कि अगर समझौता वार्ता असफल रही तो उन्हें सुरक्षित भारत से बाहर भेज दिया जाएगा.

1976 का समझौता

लंबी बातचीत के बाद 1 जुलाई, 1976 को भारत सरकार तथा श्री लालडेंगा और उन के साथियों के बीच एक समझौता संपन्न हुआ, जिस के अंतर्गत मिजोरम को भारतीय संघ का अभिन्न अंग स्वीकार कर लिया गया और श्री लालडेंगा ने यह आश्वासन दिया कि मिजोरम में सभी अवैधानिक गतिविधियां

भूतपूर्व प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई और मिजोरम के उपराज्यपाल एन. पी. माथुर : सरकार शांतिपूर्ण समाधान के लिए सदा उत्सुक रही है.
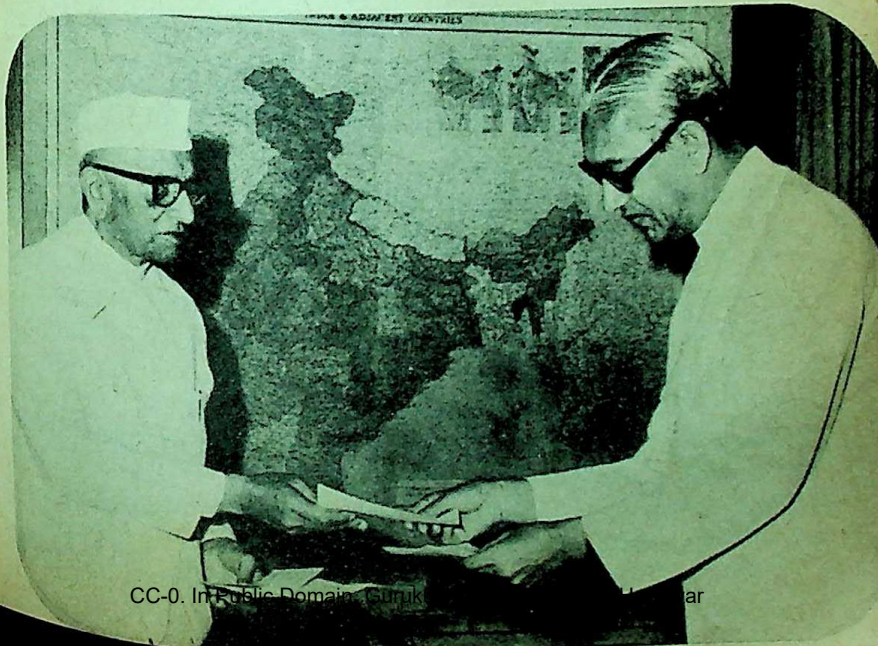
बंद कर दी जाएंगी और अवैध भूमिगत हथियार भारत सरकार को सौंप दिए जाएंगे.

विद्रोहियों की अवैध सरकार

इस समझौते के बाद कुछ समय तक ऊपरी तौर से मिजोरम में कुछ शांति रही. लेकिन श्री लालडेंगा ने हथियार सौंपने के अपने आश्वासन को पूरा नहीं किया. इस के विपरीत वह अंदर ही अंदर अपनी शक्ति को बढ़ाते रहे. मिजो विद्रोहियों ने अपनी एक अवैध सरकार बनाई हुई थी जो अपने प्रभाव वाले क्षेत्रों के निवासियों से जबरन टैक्स वगैरह वसूल करती थी. इन अवैधानिक कार्यों को भी समझौते के बावजूद श्री लालडेंगा ने बंद नहीं किया.

इस बीच 1977 के चुनावों के बाद केंद्र में सत्ता परिवर्तन हुआ और तब श्री लालडेंगा ने अपने समझौते से साफ मुकरते हुए जनता सरकार के सामने शांति स्थापना के लिए नई शर्त यह रखी कि असम, मणिपुर तथा त्रिपुरा के मिजो क्षेत्रों को भी मिजोरम में शामिल कर के उस का पुनर्गठन किया जाए और वहां एक अंतरिम सरकार बनाई जाए, जिस के मुख्य मंत्री पद पर बिना किसी चुनावी औपचारिकता के, उन्हें (श्री लालडेंगा को) नियुक्त किया जाए.

स्पष्टतया यह सब संभव नहीं था. तब श्री लालडेंगा ने अपने समर्थकों को पूर्ण स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए तैयार रहने का निर्देश दिया तथा इस के साथ ही मिजोरम में हिंसक घटनाएं पुन: तेजी से उभर पड़ीं. इस का स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि श्री लालडेंगा को गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर मुकदमा चला. मई, 1979 में मिजो विद्रोहियों ने मिजोरम के बाहर के व्यक्तियों को वहां से चले जाने के लिए कहा और इस के साथ ही उन का रक्तपात भी प्रारंभ हो गया. इस से मिजोरम में अव्यवस्था की नई हलचल शुरू हो गई. जनता सरकार ने शांतिपूर्ण समझौते के लिए प्रयत्न भी किए, मगर कोई सफलता नहीं मिली.

1980 में केंद्र में हुए सत्ता परिवर्तन के बाद समझौता वार्ता पुन: नए सिरे से चली. श्री लालडेंगा के दृष्टिकोण में भी कुछ उदारता आई और तब 30 जुलाई, 1980 को केंद्रीय गृह मंत्री जैलसिंह ने संसद में घोषणा की कि मिजो नेशनल फ्रंट तथा सरकार के बीच समझौता हो गया है, जिस के परिणामस्वरूप मिजोरम में छापामार तथा सैनिक कारवाइयां रोक दी जाएंगी. इस समझौते का मिजोरम की जनता ने दिल खोल कर स्वागत किया और वहां बड़ी संख्या में लोगों ने नाचगा कर खुशियां मनाईं. कुछ देर के लिए ऐसा लगने लगा जैसे मिजोरम की समस्या अब अतीत की बात बन गई है.

जुलाई, 1980 के इस समझौते में मुख्यत: तीन बातें थीं : 1. मिजो नेशनल फ्रंट ने मिजोरम को भारत का अभिन्न अंग स्वीकारा; 2. यह भी स्वीकार किया कि समस्या का समाधान केवल भारतीय संविधान के अंतर्गत ही हो सकता है; 3. मिजो नेशनल फ्रंट ने सभी हिंसक और भूमिगत कारवाइयां बंद कर देने का वादा किया.

जुलाई 1980 के समझौते के बाद

इस समझौते के बाद, मिजोरम में हिंसक तथा छापामार गतिविधियां लगभग स्थगित सी हैं, लेकिन अन्य भूमिगत कारवाइयां बदस्तूर जारी हैं. मिजो नेशनल फ्रंट आज भी नए स्वयंसेवकों की भरती कर रहा है, उन्हें संगठित और प्रशिक्षित कर रहा है तथा जनता से अनुदान के रूप में जबरदस्ती पांच हजार से लेकर 10 हजार रुपए तक कर वसूल किया जा रहा है. एक व्यापारी से तो 50 हजार रुपए की रकम एक साथ वसूल की गई है. सरकार को हथियार देने की बात को भी श्री लालडेंगा ने यह कह

मिजो समस्या पर एक बार फिर समझौता वार्ता होने जा रही है. लालडेंगा की पिछली गतिविधियों को देखते हुए समझौता वार्ता में हमारी नीति काफी कठोर होनी चाहिए. उन के किसी भी वादे पर हमें उस समय तक विश्वास नहीं करना चाहिए, जब तक वह क्रियान्वित न हो जाए.

कर साफ अस्वीकार कर दिया है कि ऐसा करना नेशनल फ्रंट की पराजय का प्रतीक होगा.

अन्य भूमिगत गतिविधियों को रोकने के बारे में उन का कहना है कि ऐसा केवल नेशनल फ्रंट की कार्यकारिणी की बैठक के बाद ही हो सकता है. श्री लालडेंगा के विचारों के अनुसार कार्यकारिणी की यह बैठक इसलिए नहीं हो पा रही है, क्योंकि कार्यकारिणी के सदस्यों को मिजोरम के मुख्य मंत्री श्री सैलो पर विश्वास नहीं है. इसलिए श्री लालडेंगा ने अपनी पुरानी मांग को तनिक संशोधित कर के पुनः कहा है कि श्री सैलो की सरकार को भंग कर के मिजोरम में राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया जाए.

इस संदर्भ में एक सुझाव यह भी दिया जा रहा है कि मिजोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा प्रदान कर दिया जाए. इस से स्वभावतः नए चुनाव होंगे. इस में श्री लालडेंगा को अपनी शक्ति आजमाने का पूरा अवसर मिल जाएगा. श्री सैलो इस से सहमत हैं. वह अपनी विजय के प्रति आश्वस्त हैं. मगर श्री लालडेंगा के विचारों के बारे में कुछ कहना कठिन है. यदि वह इस उपाय को स्वीकार कर भी लें और चुनाव में यदि उन का पक्ष पराजित हो जाए तो भी इस बात की क्या गारंटी है कि वह वस्तुस्थिति को शांति से स्वीकार कर लेगा.

वास्तविकता यह है कि श्री लालडेंगा पहले के समान ही इस शांतिकालीन अवधि का उपयोग अपनी शक्ति को बढ़ाने में कर रहे हैं तथा पहले के समान ही अपने वादों से मुकरने के लिए नए-नए बहाने ढूंढ रहे हैं. दूसरी बात यह भी है कि श्री लालडेंगा की लोकप्रियता तेजी से घटती जा रही है. उन की पार्टी के सदस्यों की संख्या भी घट कर स्वयं उन के अनुसार छः सौ और वास्तव में तीन-चार सौ के आसपास रह गई है. फिर इन सदस्यों में भी आपसी मतभेद और स्वयं श्री लालडेंगा का विरोध भी कम नहीं है. ऐसी स्थिति में मिजो विद्रोहियों का यह हिंसक आंदोलन धीरेधीरे स्वयं अपनी मौत मरता जा रहा है.

समस्या के समाधान की दृष्टि से ये बातें कही जा सकती हैं :

श्री लालडेंगा के साथ समझौता वार्ता में हमारी नीति काफी कठोर हो तथा उन के किसी भी वादे पर हम उस समय तक विश्वास न करें, जब तक वह क्रियान्वित न हो जाए.

बर्मा तथा बंगलादेश से लगने वाली सीमा पर गहरी निगरानी हो.

विद्रोही मिजो लोगों को आत्मसमर्पण के लिए निश्चित अवधि दे दी जाए. उस के बाद उन की सख्ती से धरपकड़ हो.
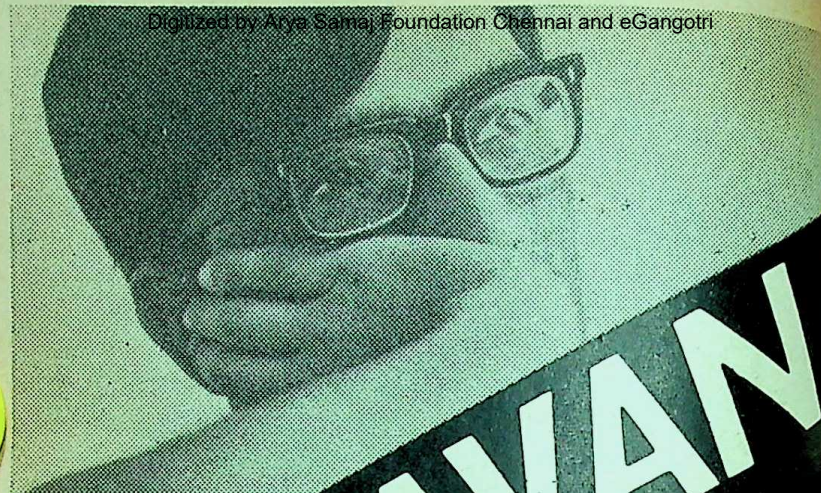
विदेशी मिशनरियों पर कठोर नियंत्रण लगे.

मिजोरम में बड़े पैमाने पर उद्योगधंधे खोल कर उस का विकास किया जाए.

मिजोरम के लोगों को शेष भारत के निकट लाने के प्रयत्न हों.

बर्मा, बंगलादेश तथा चीन की सरकारों से संपर्क स्थापित कर के यथासंभव यह प्रयत्न किया जाए कि विद्रोहियों को उधर से सहायता न मिले. ●

खेल समीक्षा

कलई खुल गई

आस्ट्रेलिया के विरुद्ध मैलबर्न का अंतिम टेस्ट जीत कर तीन टेस्टों की शृंखला 1-1 से बराबर कर लेने के बाद जब भारतीय क्रिकेट टीम न्यूजीलैंड पहुंची तो उस की जीत का गुमान भले ही न रहा हो लेकिन इतनी उम्मीद जरूर थी कि टेस्ट स्तर पर विश्व में सब से कमजोर समझी जाने वाली टीम के विरुद्ध भारत अच्छा मुकाबला कर सकने की स्थिति में होगा. लेकिन दोनों देशों के बीच क्रिकेट संबंध कायम होने के 26 साल बाद न्यूजीलैंड ने 1-0 से शृंखला जीत ली. इस हार से लोगों के मन में समाया यह विश्वास मिट्टी में मिल गया कि गावसकर कभी शृंखला नहीं हार सकता.

इस हार की सब के पास अलगअलग

गावस्कर : दरअसल हमारी बल्लेबाजी कमजोर थी.

वजह है. गावसकर कहता है, हमारी बल्लेबाजी कमजोर थी." खुद वह भी पूरी श्रृंखला में उखड़ाउखड़ा सा रहा. न्यूजीलैंड के अंपायरों द्वारा पक्षपात किए जाने को भी इस हार की सब से बड़ी वजह बताया गया. वैसे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में यह तो आम फैशन बन गया है कि हर यात्री टीम मेजबान देश के अंपायरिंग स्तर की आलोचना करती है. वैसे दिलचस्प बात यह है कि श्रृंखला के काइस्टचर्च टेस्ट में अंपायरों की मेहरबानी की वजह से ही गावसकर 53 रन जुटा सका. 14 के स्कोर पर विकेटकीपर ने हैडली की गेंद पर उस का कैच ले लिया था. यह बाद में स्लो मोशन से भी स्पष्ट हो गया. लेकिन अंपायर ने गावसकर को आउट नहीं दिया. ऐसे में अंपायरिंग की आलोचना का गावसकर को क्या नैतिक अधिकार है, यह उस के सोचने की बात है.

गावसकर ने बाद में माना, "अपने बल्लेबाजों के सही दृष्टिकोण, अच्छे क्षेत्ररक्षण व बेहतर गेंदबाजी की वजह से न्यूजीलैंड की टीम जीती." लेकिन इस बात का उस के पास कोई जवाब नहीं था कि ये तमाम खूबियां भारतीय टीम अपने आप में पैदा क्यों नहीं कर सकी जब कि भारत और न्यूजीलैंड दोनों का क्रिकेट इतिहास एक जैसा ही पुराना है और पिछले मुकाबलों में भारत ने न्यूजीलैंड पर काफी अच्छे ढंग से अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है.

इस तर्क में कोई दम नहीं लगता कि चारपांच महीने तक लगातार क्रिकेट खेलने से थक जाने की वजह से भारतीय खिलाड़ी अच्छा खेल नहीं दिखा पाए. विश्व के प्राय: सभी देशों के खिलाड़ी पूरे साल क्रिकेट खेलते हैं लेकिन उन के खेल स्तर पर इस का कोई दुष्प्रभाव पड़ने की शिकायत तो कभी नहीं सुनाई देती. फिर जब लगभग अन्य देशों जितना ही पैसा भारतीय खिलाड़ियों को भी मिलता है तब ज्यादा क्रिकेट खेलने की शिकायत करने का उन्हें भी कोई अधिकार नहीं है.

आस्ट्रेलिया के भूतपूर्व कप्तान इयान चैपल ने ठीक ही कहा है, "क्रिकेट के आयोजन में काफी पैसा लगता है. क्रिकेट खिलाड़ियों को भी भरपूर पैसा दिया जाता है और दर्शक भी ज्यादा पैसे खर्च कर के इसी लिए मैदान में जाते हैं ताकि दिलचस्प खेल देख कर अपने पैसे की वसूली कर सकें. ऐसे में अगर कोई खिलाड़ी गैरजिम्मेदारी से खेले तो वह पूरे क्रिकेट का ही अहित करता है. आज के पेशेवर क्रिकेट में सिर्फ खेल में शामिल होने पर भी अच्छी खासी रकम मिल जाती है. होना तो यह चाहिए कि जो खिलाड़ी रद्दी खेलें उन्हें कम पैसा दिया जाए. जहां तक भारतीय टीम का सवाल है वह जब तक जिम्मेदारी से खेलने का वादा न करे तब तक उसे अगली बार बुलाने की कोई जरूरत नहीं है."

फुटबाल : एक विवाद यह भी

भारत में फुटबाल दो हिस्सों में बंटा हुआ है—एक कलकत्ता का फुटबाल है तो दूसरा बाकी देश का. और ज्यादा पैसा खिलाड़ियों को दे सकने की क्षमता पैदा कर लेने की वजह से कलकत्ता का फुटबाल पिछले कुछ समय से नई समस्याओं व नए विवादों को जन्म दे रहा है.

मोटे तौर पर यह कोई नया विवाद नहीं है. खेलों की दुनिया में पेशेवर और गैरपेशेवर के सवाल को ले कर इस तरह के मतभेद उभरते ही रहे हैं.

1982 के एशियाई खेलों को ध्यान में रखते हुए फुटबाल टीम के चयन के लिए देश के चुनिंदा 62 फुटबाल खिलाड़ियों को चुना गया ताकि उन्हें लगातार प्रशिक्षण दिया जाए और बाद में इन खिलाड़ियों में से ऐसी मजबूत टीम चुनी जा सके जो एशियाई खेलों में भारत की

गौतम सरकार : सवाल भविष्य का है.

चुनौती को कायम रख सके.

पूरे योजनाबद्ध ढंग से शुरू की गई इस योजना से किसी को शिकायत नहीं हो सकती थी. लेकिन बंगाल के कुछ जानेमाने खिलाड़ियों ने योजना शुरू होने के एक सप्ताह बाद ही अपने रंग दिखाने शुरू कर दिए. उन का तर्क था कि उन्हें प्रशिक्षण शिविर में लगातार शामिल होने के नियम से छूट दी जाए और उन्हें अन्य प्रतियोगिताओं में भी शामिल होने

प्रसन्न बैनर्जी : समय से कटना कतई गवारा नहीं.

...न की एक प्रमुख शिकायत यह भी थी कि वह वर्षों से फुटबाल खेल रहे हैं, फुटबाल खेलने का उन का अच्छा खासा अनुभव भी है. तब फिर उन्हें अन्य युवा खिलाड़ियों की तरह प्रशिक्षण के पहले चरण में ही क्यों शामिल किया जा रहा है?

प्रशिक्षण शिविर का प्रथम चरण शुरू होने के एक सप्ताह के कुछ अधिक समय के बाद खिलाड़ियों ने शिविर से हटना शुरू कर दिया और एक महीना खत्म होतेहोते 19 नामी खिलाड़ी शिविर से हट गए थे. फुटबाल जीवन बरबाद किए जाने की भारतीय फुटबाल संघ की

मनोरंजन भट्टाचार्य : केवल कागजी प्रमाण पत्र और कपों से क्या होगा?

धमकी भी उन के कदम नहीं रोक सकी

लेकिन यह समूचा घटनाक्रम यकायक सामने नहीं आया.

6 फरवरी को शिविर शुरू हुआ और एक सप्ताह बीततेबीतते कलकत्ता के तीन नामी फुटबाल क्लबों...ईस्ट बंगाल, मोहन बागान व मोहमडन स्पोर्टिंग के बड़े अधिकारियों ने प्रशिक्षण केंद्र से तीन किलोमीटर दूर करुणामयी में खिलाड़ियों के ठहरने के लिए बनाए गए

विशनसिंह बेदी : हार की जिम्मेदारी से बचना मुशकिल है.

शिविर के चक्कर लगाने शुरू कर दिए.

कलकत्ता में होने वाले फुटबाल के लीग मैचों के लिए ये तीनों टीमें देश के बढ़िया खिलाड़ियों को खरीदने की कोशिश करती हैं और इस के लिए खिलाड़ियों को कुछ हजार रुपए से लाख रुपए तक—उन की प्रतिभा व लोकप्रियता के हिसाब से—दे दिए जाते हैं. शिविर के लिए चुने गए 62 खिलाड़ियों में कुछ क्योंकि काफी प्रतिभाशाली व लोकप्रिय थे, इसलिए पैसा दे कर उन्हें फोड़ लिया गया और भारतीय फुटबाल संघ पैसे के मोर्चे पर एक बार फिर हार गया. प्रतिभावान खिलाड़ी सिर्फ एक प्रमाण पत्र या वाहवाही (वह भी जीत जाने पर) के लिए एशियाई खेलों में शामिल होने को उत्सुक नजर नहीं आए. कागज के प्रमाण पत्रों और खोखले कपों की उपलब्धि के बाद फुटबाल जीवन खत्म हो जाने के बाद एड़ियां रगड़रगड़ कर गुमनामी की मौत उन्होंने पसंद नहीं की.

शिविर छोड़ने की शुरुआत की—सुब्रत भट्टाचार्य, गौतम सरकार, प्रसून बनर्जी, मोइदुल इसलाम व श्यामल बनर्जी ने. इन में से पहले तीन को सिर्फ एक साल के अनुबंध के लिए 75-75 हजार रुपए के आसपास दिए गए. मोइदुल को 30 और 40 हजार के बीच और श्यामल को 60 और 65 हजार के बीच रकम मिली. ये खिलाड़ी इस समय चोटी पर हैं. अगर इस साल कलकत्ता लीग में उन का खेल बढ़िया होता है तो अगले साल उन की कीमत और भी बढ़ सकती है. इधर अगर ये खिलाड़ी प्रशिक्षण शिविरों में शामिल होते तो दो साल वे कलकत्ता लीग में शामिल नहीं हो पाते. कलकत्ता लीग में लगातार मैच होते हैं और जाहिर है कि एक खिलाड़ी एक ही समय में न तो प्रशिक्षण शिविर में शामिल हो सकता है और न ही लीग मैच खेल सकता है.

फुटबाल खेलने में इतनी शक्ति व फुरती की जरूरत पड़ती है कि कोई भी खिलाड़ी ज्यादा समय तक पहले नंबर का खिलाड़ी नहीं रह सकता. खुद खिलाड़ी जानता है कि दो साल में उस का खेल स्तर घटने से उस की कीमत कम हो सकती है. इसी लिए प्रशिक्षण शिविर में शामिल वरिष्ठ खिलाड़ी दो साल का खतरा उठाने को तैयार नहीं हुए. प्रशिक्षण शिविर की शुरुआत में उन्होंने सूची में अपना नाम लिखे जाने पर शायद इसलिए आपत्ति नहीं की क्योंकि इस से उन का भाव चढ़ जाने की गुंजाइश थी.

उन्नीस विद्रोही खिलाड़ियों में से तीन को 75-75 हजार रुपए, तीन को 60 से 65 हजार रुपए, छः को 50 से 60 हजार रुपए, तीन को 40 से 45 हजार रुपए और चार को 30 से 40 हजार रुपए तक मिले.

इन कथित 'विद्रोही' खिलाड़ियों पर भारतीय फुटबाल संघ क्या कारवाई करता है, यह बाद की बात है. लेकिन

किसी भी किस्म का कदम उठाने से पहले संघ को सोचना होगा कि जब एक खिलाड़ी अपने युवा जीवन के कुछ बेहतरीन साल देश की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए देता है तो क्या देश या संघ को उस के बेहतर भविष्य की गारंटी नहीं देनी चाहिए?

क्रिकेट में रंगभेद

रंगभेद का समर्थन कोई भी समझदार व्यक्ति नहीं करेगा लेकिन जब इस सवाल को ले कर खेलों की दुनिया में यदाकदा हलचल मचती है तो लगता है कि इस के मूल में रंगभेद को खत्म करने की कोशिश कम है और इस समस्या का राजनीतिक फायदा उठाने की बात ज्यादा है.

पिछले दिनों रंगभेद पर ही कैरेबियन द्वीप समूह के गयाना द्वीप में ऐसा राजनीतिक बवंडर मचा कि वेस्ट इंडीज व इंगलैंड के बीच क्रिकेट संबंध टूटने तक की नौबत आ गई. गयाना सरकार ने कहा कि वह अपने यहां इंगलैंड के राबर्ट जैकमैन को प्रवेश नहीं करने देगी क्योंकि 11 साल वह न सिर्फ दक्षिण अफ्रीका में क्रिकेट खेला बल्कि वहां उस ने क्रिकेट का प्रशिक्षण भी दिया.

लंबेचौड़े वादविवादों में सिर्फ एक टेस्ट की ही बलि चढ़ पाई और शृंखला के बाकी मैच निर्विरोध हो गए. इस विवाद में कोई दम इसलिए नहीं था क्योंकि वेस्ट इंडीज के खिलाड़ी इंगलिश काउंटी में दक्षिणी अफ्रीका के खिलाड़ियों के साथ खेलते हैं. और तो और, दक्षिण अफ्रीका से खेल संबंध रखने वाली आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड की टीमों के साथ भी वेस्ट इंडीज के क्रिकेट संबंध कायम हैं. दरअसल इस तरह का विरोध सैद्धांतिक नहीं है, सिर्फ बुलबुले के साथ उभरता है और उसी के साथ खत्म हो जाता है.

दिल्ली की हार या बेदी की हार

दिल्ली के क्रिकेट संघ में राजनीतिक मतभेदों का जो सिलसिला शुरू हुआ था, वह रणजी ट्राफी फाइनल में दिल्ली की हार के साथ ही ठंडा पड़ गया है. बेदी ने दिल्ली की पिछली दो जीतों का सेहरा अपने सिर बांधा था. इसलिए इस बार की हार की जिम्मेदारी से भी वह बच नहीं सकता. चोटग्रस्त होते हुए भी वह टीम में क्यों शामिल हुआ, यह एक अजीब पहेली है. अगर गुटबाजी की वजह से सुरेंदर जैसे कुछ अच्छे खिलाड़ी टीम से अलग न कर दिए जाते तो रणजी फाइनल में निश्चित रूप से दिल्ली की स्थिति इतनी कमजोर न होती. ●

पिछले अंक में आप ने प्रतियोगिता वर्ग की कुछ फिल्मों के कथा सार पढ़े. प्रस्तुत है इस अंक में भी सूचना वर्ग की कुछ अन्य फिल्मों के कथा सार.

लेख ● हमारा फिल्म समीक्षक

आठवां भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह

आस्ट्रेलिया की फिल्म 'कोस्टास' का एक दृश्य (बाएं) व फ्रांस की फिल्म 'लोलो' का एक दृश्य (ऊपर).

कोस्टास

आस्ट्रेलिया की तरफ से प्रतियोगिता वर्ग के लिए दो फिल्में भेजी गई थीं,—'मैंगनिनी' और 'कोस्टास.' जहां 'मैंगनिनी' आस्ट्रेलिया के आदिवासी जीवन पर आधारित थी, वहां 'कोस्टास' में वहां का पश्चिमी रूप देखने को मिलता है.

कोस्टास 35-40 वर्ष का हृष्टपुष्ट लंबातड़ंगा व्यक्ति है. वह ग्रीक का रहने वाला है और अपने देश में चल रहे दमन चक्र से बचने के लिए आस्ट्रेलिया में आ जाता है. वह पेशे से पत्रकार है, पर आस्ट्रेलिया में आ कर वह टैक्सी ड्राइवर का धंधा शुरू कर लेता है. आस्ट्रेलिया में रहते हुए वह हर समय अपने देश की याद में खोया रहता है.

एक दिन वह अपने एक मित्र को छोड़ने हवाई अड्डे पर जाता है. वहां कैरोल नाम की एक स्त्री से उस की मुलाकात होती है. कैरोल भी वहां किसी को विदा करने आई है. कोस्टास कैरोल को घर छोड़ने आता है. कैरोल तलाकशुदा है और दो बच्चों की मां है.

कोस्टास कैरोल से प्रेम करने लगता है और उस के घर में अकसर आनेजाने लगता है.

पर अचानक कैरोल न जाने क्यों कोस्टास से खिचीखिची रहने लगती है. वह समझने लगती है कि अगर वह कोस्टास से मिलतीजुलती रही तो उस का पारिवारिक जीवन तबाह हो जाएगा. धीरेधीरे कैरोल कोस्टास से मिलने से भी इनकार कर देती है. वह कोस्टास की अत्यधिक कामुक हरकतों को भी पसंद नहीं करती.

कोस्टास कैरोल के इनकार को बरदाश्त नहीं कर पाता. वह अंदर और [illegible] से टूट जाता है. वह एक बार फिर

कैरोल से मिलने की कोशिश करता है, पर वह मिलने से इनकार कर देती है. कोस्टास आस्ट्रेलिया छोड़ने का निर्णय कर लेता है. उधर कैरोल को कोस्टास के निर्णय का पता चलता है तो वह परेशान हो जाती है. वह अनुभव करती है कि वह कोस्टास के बिना न रह सकेगी. वह एकदम हवाई अड्डे की ओर चल पड़ती है जहां दोनों का मिलन होता है.

मिस्र की फिल्म 'अल अकमर' का एक दृश्य.

अल अकमर

मिस्र की इस फिल्म का संबंध काहिरा की प्रसिद्ध मसजिद अल अकमर से है. मसजिद के पास एक बस्ती है. इस बस्ती के लोग इस मसजिद को बड़े आदर की दृष्टि से देखते हैं.

इस बस्ती में बासिमा नाम की एक युवती रहती है जो संतरे बेच कर अपना गुजारा करती है. बासिमा का कमाल नाम के एक युवक से प्रेम हो जाता है. बासिमा गरीब है और कमाल एक धनी व्यक्ति का बेटा है. इसी बस्ती में खलील नाम का चोर भी रहता है.

बासिमा और कमाल प्रेम करते हैं और विवाह करना चाहते हैं, पर कमाल का पिता रास्ते में रुकावट बन जाता है. इसी बीच अफवाह फैलती है कि अल अकमर मसजिद को गिरा दिया जाएगा. बस्ती और आसपास के लोगों में असंतोष फैल जाता है. लोग बासिमा के नेतृत्व में विद्रोह कर देते हैं. बासिमा का बलिदान हो जाता है.

फिल्म को देख कर लगता है कि मिस्र में भी भारत की तरह धार्मिक विषयों पर फिल्में बनाई जाती हैं.

लोलो

फ्रांस की यह फिल्म शायद समारोह की सब से अधिक सेक्सी फिल्म थी. फिल्म का नायक एक हट्टाकट्टा, लंबा-तड़ंगा तीस वर्षीय नौजवान है, मगर

ग्रय्याश और ग्रावारा है. इसी लिए परदे पर ज्यादातर वह संभोग के ही दृश्यों में दिखाई देता है.

लड़कियां बरबस उस की ओर आकृष्ट हो जाती हैं. जो लड़की एक बार उस के पास आ जाती है, उस का बांकापन देख कर उस की दीवानी हो जाती है. लोलो भी ग्रावारगी की जिंदगी जीता है और लड़कियों को खुश कर के उन्हीं के

है. लोलो जम कर उस की मरम्मत करता है. पतिपत्नी में संबंध विच्छेद हो जाता है.

लड़की के मातापिता ग्रमीर हैं. लड़की का भाई उस से मिलने ग्राता है तो ग्रावारा लोलो के चंगुल में फंसी ग्रपनी बहन को देख कर बहुत निराश हो जाता है. वह ग्रपनी बहन को बहुत समझाता है पर लड़की लोलो से शादी करने

धार्मिक विषय पर बनी फिल्म 'अल अकमर' का एक और दृश्य.

सहारे जीवन काटता है. वह कुछ भी कामधंधा नहीं करता. जबतब इधरउधर लड़ाईझगड़ा करता रहता है.

लोलो की एक लड़की से भेंट होती है. लड़की विवाहित है. उस का पति ग्रमीर है, पर उस का ग्रपने पति से ग्रामतौर पर झगड़ा होता रहता है. लड़की की लोलो से मुलाकात होती है तो वह उसी की हो कर रह जाती है. वह ग्रपना रुपयापैसा भी उस पर न्योछावर कर देती है. उस का पति उसे लेने ग्राता है तो उस का लोलो से झगड़ा हो जाता

पर ग्रड़ी रहती है. इस पर उस का भाई लोलो की सहायता करना चाहता है और कुछ रुपया दे कर उसे छोटामोटा धंधा करने को कहता है. पर लोलो ने तो कभी कोई काम किया ही नहीं. हमेशा लड़कियों के सहारे जीता रहा है. वह इस बार भी काम करने से इनकार कर देता है. भाई निराश हो कर चला जाता है.

तभी लड़की गर्भवती हो जाती है. लोलो को पता चलता है कि वह पिता बनने वाला है तो वह बहुत खुश होता है पर लड़की मां नहीं बनना चाहती.
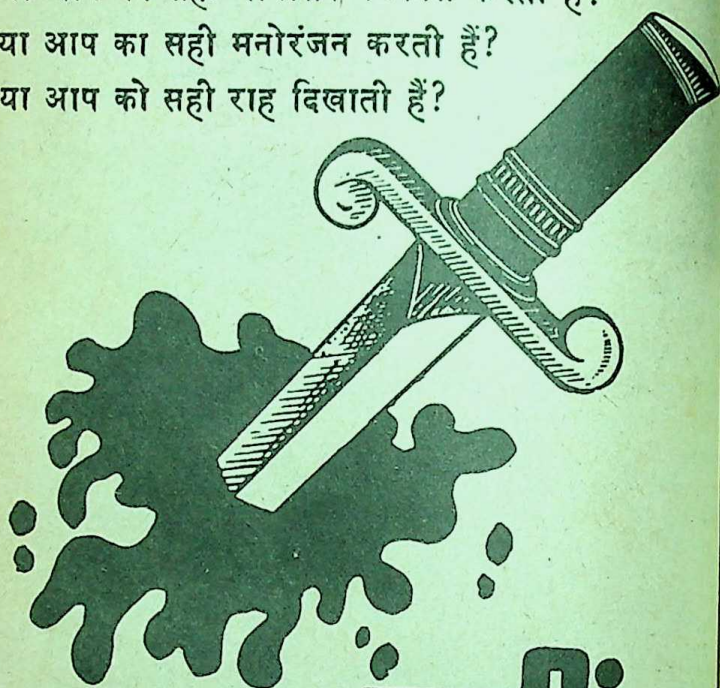
अमरीका की हास्य प्रधान फिल्म 'बींग देअर' के एक दृश्य में फिल्म के प्रमुख तीन पात्र.

वह गर्भपात करवाना चाहती है. इसी बात को ले कर दोनों में झगड़ा रहने लगता है. लड़की चुपचाप गर्भपात करवा लेती है. लोलो बहुत नाराज होता है. लगता है कि अब लड़की को त्याग देगा, पर वह उसे क्षमा कर देता है और उसे अपने घर ले जाता है.

बींग देअर

अमरीका की यह एक हास्य फिल्म है जो अमरीकी जीवन पद्धति और वहां के सरकारी तंत्र पर एक करारी चोट करती है. फिल्म का हास्य अत्यंत शिष्ट है और दर्शक आरंभ से अंत तक हंसता रहता है. फिल्म मनोरंजन से भरपूर है.

फिल्म की कहानी चांस नामक एक अधेड़ व्यक्ति के चरित्र पर बुनी गई है. चांस एक भोलाभाला, सीधासाधा अनपढ़ व्यक्ति है. वह देश की राजधानी में एक मकान में रहता है. मकान मालकिन ने उसे बचपन से पाला है. वह कभी घर से बाहर नहीं निकला. हमेशा मकान के छोटे से बाग में बागवानी करता है. इसी लिए वह अपने आप को चांस गार्डनर कहने लगता है. आज के वैज्ञानिक युग में रहते हुए भी उसे बाहर के संसार का कोई ज्ञान नहीं है. वह हर वक्त टेलीविजन देखता रहता है. उस का सारा ज्ञान टेलीविजन द्वारा दिए गए ज्ञान तक सीमित है.

अचानक बुढ़िया मर जाती है तो चांस को मकान छोड़ना पड़ता है. वह बाहर के संसार में आता है तो भौंचक्का रह जाता है. उसे पता नहीं कि वह कहां जाए. वह सड़क पार कर रहा होता है तो एक कार से टकरा जाता है. यह कार ईव रैंड की होती है जो अमरीका के धनी व्यक्ति की पत्नी है. ईव उसे अपने घर ले जाती है ताकि वहां उस का इलाज हो सके.

ईव चांस को अपने पति से मिलाती है. चांस बेवकूफी की बातें करता है तो उस का पति उस के दूसरे ही अर्थ समझता है. वह चांस को बहुत विद्वान व बुद्धिमान व्यक्ति समझने लगता है. ईव के बूढ़े पति की बीमारी में अमरीका का राष्ट्रपति उस से मिलने आता है. इस भेंट के दौरान चांस भी उपस्थित रहता है. परिचय के दौरान बूढ़ा अमीर चांस की तारीफ करता है तो राष्ट्रपति भी उसे आदर की दृष्टि से देखने लगता है. वह भी चांस की बेवकूफी की बातों का दूसरा ही अर्थ समझता है. इस के बाद चांस के विचारों के आधार पर देश की उन्नति की योजनाएं बनने लगती हैं

राष्ट्रपति टेलिविजन पर अपने एक भाषण में चांस की योजनाओं का जिक्र करता है. देश का प्रेस चांस के पीछे पड़ जाता है, सी, आई. ए. को निर्देश दिया जाता है कि वह पता लगाए कि वह व्यक्ति कौन है. पर उस का कोई सुराग नहीं मिलता. उस का सूट जिस दर्जी ने सिया था वह तीस साल पहले ही दुकान बंद कर चुका है. ऐसा कोई भी सूत्र सी. आई. ए. के हाथ नहीं आता जिस से चांस का परिचय मिल सके. सरकार को यह भी शक होने लगता है कि कहीं वह किसी देश का गुप्तचर तो नहीं है.

पूरे देश में चांस की धाक जम जाती है. उधर रूस भी चांस की योजनाओं से लाभ उठाने की सोचता है. क्योंकि ऐसी अटकलें लगाई जाती हैं कि अगर चांस की योजनाओं से अमरीका बहुत आगे निकल गया तो रूस बहुत पीछे रह जाएगा.

ऐसी ही मनोरंजक घटनाओं से फिल्म भरी पड़ी है. फिल्म की विषशेता यह है कि कहानी हर दृष्टि से सीढ़ी दर सीढ़ी ऊपर ही चढ़ती चली जाती है. ईव चांस से प्रेम करने लगती है, पर चांस तो यह भी नहीं जानता कि प्रेम क्या होता है. बूढ़ा अमीर मर जाता है. चांस एक बार फिर घर छोड़ने को मजबूर हो जाता है. चांस की भूमिका प्रसिद्ध अभिनेता पीटर सेलर्स ने निभाई है, जिस की मृत्यु लगभग छः महीने पहले हुई है. यह उस की आखिरी फिल्म थी.

आस्या

यह रूसी फिल्म प्रसिद्ध उपन्यासकार तुर्गनेव के इसी शीर्षक के उपन्यास पर आधारित है. एक नौजवान अमीर व्यक्ति रूस से जर्मनी की सैर पर निकलता है. जरमनी में घूमते हुए वह एक पहाड़ी कसबे में पहुंचता है. वहां टहलटे हुए उसे रूसी वार्तालाप सुनाई देता है. वह देखता है कि एक लड़का और एक लड़की बाग में बैठे बातचीत कर रहे हैं. लड़की की आयु 15-16 वर्ष होगी और वह बहुत खूबसूरत है.

वह उस की ओर आकृष्ट होता है. उसे पता चलता है कि लड़के का नाम गागिन और लड़की का नाम आस्या है. नवयुवक उस पर मुग्ध हो जाता है. उस की बहनभाई से घनिष्ठता बढ़ती जाती है. वह पाता है कि लड़की बड़ी स्वाभिमानी है. वह बहनभाई के संबंधों में भी कुछ विचित्रता महसूस करता है.

वह गागिन पर अपना संदेह व्यक्त करता है तो गागिन उसे आस्या की पूरी
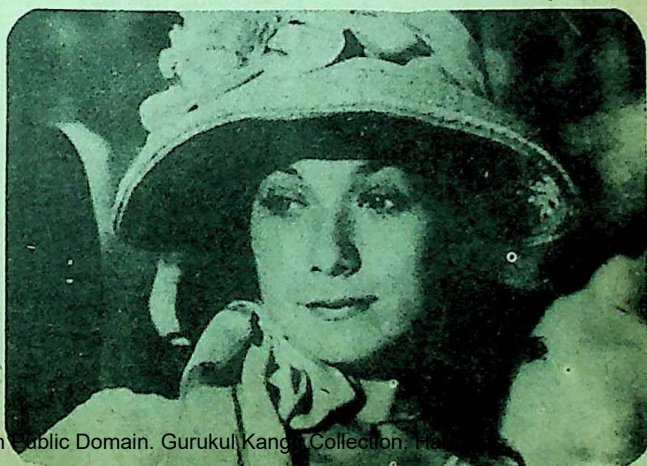
रूसी उपन्यासकार तुर्गनेव के उपन्यास पर आधारित रूसी फिल्म 'आस्या' का एक दृश्य.

कहानी सुनाता है. गागिन एक अमीर रूसी जमींदार का बेटा है. उस के जमींदार पिता के एक नौकरानी से संबंध थे. आस्या उसी से पैदा हुई थी. जमींदार अपनी बेटी को बहुत चाहता था पर अपनी पत्नी के भय से चाह कर भी आस्या को पिता का प्यार न दे सका. मरते समय उस ने आस्या के पालनपोषण की जिम्मेदारी गागिन को सौंप दी. गागिन आस्या को बहुत चाहता था और उसे भाई का पूरा स्नेह देता था.

विचित्र परिस्थितियों में पलने के कारण आस्या एक उच्छृंखल किस्म की स्वाभिमानी लड़की बन गई थी. आस्या के कहने पर ही गागिन रूस छोड़ कर जरमनी में आ बसा था. आस्या ऐसे देश में नहीं रहना चाहती थी, जहां उस के साथ अन्याय हुआ था.

आस्या की कहानी का युवक पर गहरा असर पड़ता है. वह उसे और भी प्यार व सम्मान देने लगता है. धीरेधीरे आस्या भी उस से प्रेम करने लगती है. एक दिन आस्या के कहने पर दोनों एक स्थान पर मिलते हैं और आस्या उसे अपनाने के लिए कहती है. पर भावुकता में बहता हुआ युवक कोई निर्णय नहीं कर पाता.

आस्या पर इस का विपरीत प्रभाव पड़ता है. वह अपने भाई को जरमनी छोड़ कर अन्यत्र चलने को कहती है. गागिन जरमनी छोड़ते हुए युवक के नाम एक पत्र छोड़ जाता है. पत्र में उसे लिखता है कि वह उन्हें खोजने की कोशिश न करे.

युवक के पैरों तले की जमीन खिसक जाती है. अब वह पहली बार महसूस करता है कि वह आस्या के बिना नहीं रह सकता. वह सब कुछ छोड़ कर आस्या की खोज में निकल पड़ता है, पर निराशा ही हाथ लगती है.

अंत में युवक अब बूढ़ा हो चुका है. वह पश्चाताप की आग और आस्या की याद में अब भी जल रहा है. वह केवल आस्या की स्मृतियां संजोए हुए शेष जीवन काट रहा है.

आस्या का निर्माण व निर्देशन इतना प्रभावपूर्ण है कि लगता है तुर्गनेव के सभी पात्र साकार हो उठे हैं. ●

ये लड़के ये लड़कियां

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर सर्वश्रेष्ठ संस्मरण पर 50 रुपए व अन्य संस्मरणों पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : ये लड़के, ये लड़कियां, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

मेरी एक सहेली के पैर में बहुत बड़ा जख्म हो गया था. मैं ने उसे डाक्टर को दिखाने की सलाह दी. इस पर वह बोली कि उसे डर लगता है. तभी उस की छोटी बहन उसे धीरज बंधाते हुए बोली, "दीदी, इस में डरने की क्या बात है? चलो, मैं तुम्हारे साथ डाक्टर के पास चलती हूं."

बाद में जब डाक्टर ने मेरी सहेली के जख्म को चीर कर उसे इंजेक्शन लगाया तो सहेली को तो कुछ न हुआ पर यह सब देखने वाली उस की छोटी बहन बेहोश हो गई.

—रघुबीरकौर छाबड़ा

मेरी प्राध्यापिका के पद पर नईनई नियुक्ति हुई थी. कालिज में मेरा पहला दिन था. मैं ने सलवार कमीज पहन रखी थी तथा लंबी चोटी कर रखी थी. अंतिम वर्ष की एक लड़की मुझे नई छात्रा समझ कर मेरे चारों ओर घूमघूम कर कहने लगी, "वाह री, तेरे लंबे बाल, तेरी सुंदर कमीजसलवार."

वह शायद और भी कुछ कहती कि एक और लड़की जिसे शायद पता था कि मैं प्राध्यापिका हूं, वहां से गुजरी. उस ने उसे आंख के इशारे से पास बुलाया और कहा, "यह तो नई प्राध्यापिका हैं."

बस, फिर क्या था, वह लड़की एकदम से गायब हो गई.

—कृष्णा बंसल

बात उस समय की है जब मैं छठी कक्षा में पढ़ता था. अध्यापक महोदय पाठ पढ़ा रहे थे. पहला विषय समाप्त कर उन्होंने दूसरा विषय पढ़ाना शुरू ही किया था कि एक लड़का बीच में बोल पड़ा, "मास्टरजी, पिछले पाठ का अर्थ मेरी समझ में नहीं आया."

इस पर अध्यापक महोदय को गुस्सा आ गया. वह उसे डांटने लगे, "पहले तो तुम ऊंघते रहते हो, फिर पूछते हो इस का क्या अर्थ हुआ, यह कैसे हुआ, क्यों हुआ. बेवकूफ, उस वक्त क्या कर रहा था?"

उसे डांटफटकार कर उन्होंने आगे पढ़ाने के लिए पाठ निकाला तो भूल गए कि कहां से से पढ़ाना शुरू करना है और छात्रों से पूछा, "हां, तो मैं क्या पढ़ा रहा था?"

...रहता नहीं..."
उस का इतना कहना था कि कक्षा में एक जोरदार ठहाका गूंज उठा.

—हिसारिया देवी...

एक दिन हमारे घर कुछ मेहमान आए. मेहमानों में एक लड़की भी थी, ... कुछ ही देर में मेरे साथ काफी घुलमिल गई.

थोड़ी देर उस से बातें करने के बाद मैं उस के लिए चाय बनाने अंदर ... गई. मेरा साथ देने के लिए वह लड़की भी रसोई में आ गई. वहां उस ने बताया ... उसी साल उस ने हाई स्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है. अपने ... के बारे में भी वह बहुत बढ़ाचढ़ा कर डींगे हांकने लगी. कुछ देर में चाय ले कर ... लोग बाहर बैठक में आ गए.

चाय पीतेपीते अचानक पढ़ाई का प्रसंग आया तो उस के पिताजी बोले, "... बार इस की पूरक परीक्षा है, पता नहीं क्या होगा."

उस के पिताजी का इतना कहना था कि मेरी नजरें खुदबखुद उस लड़की की ओर उठ गईं. इस के बाद वह मुझ से आंखें मिलाने का साहस नहीं कर सकी.

—कमला ...

✦ मेरे मौसेरे भाई रामरतन पेशे से कंपाउंडर हैं, मगर क्रिकेट के इतने मतवाले हैं कि इस के लिए वह कंपाउंडरी भी छोड़ सकते हैं. भाई साहब को क्रिकेट से संबंधित कोई भी हिंदी, अंगरेजी, उर्दू की पुस्तक या पत्रिका मिले तो वह मुंहमांगे दाम दे कर तुरंत खरीद लेते हैं.

उन के छोटे भाई ने एक दिन अपने बड़े भाई से कहा, "मैं क्रिकेट की दुर्लभ पुस्तकें आप को ला कर दूंगा."

फिर सचमुच हर चौथे दिन एक पुस्तक रामरतन के पास पहुंचने लगी. वह भी धड़ाधड़ पैसे देते रहे. तब एक दिन मेरा माथा ठनका. मैं ने उस से पूछा कि वह इतनी पुस्तकें ला कहां से रहा है.

इस पर उस ने मुझे भी अपना राजदार बनाते हुए कहा, "अब आप से क्या छिपाना, भैया, मैं बड़े भैया की किताबों वाली बड़ी अलमारी में से ही पुरानी किताबें निकालनिकाल कर बेंच रहा हूं."

—शिव रैना (सर्वश्रेष्ठ) ●

आप के पूरे परिवार के लिए

विश्व सुलभ साहित्य

द्वारा प्रस्तुत उत्कृष्ट पुस्तकें

मृच्छकटिकम्
शूद्रक का ईसापूर्व की पहली शताब्दी में लिखा गया वह नाटक जिस के पात्र राजारानी न हो कर जनसाधारण हैं.
रु. 12.00

भटकता राही
स्पेन अफ्रीका व अन्य कई देशों की यात्रा विवरण के साथ ही भारतीयों के प्रति विदेशियों के व्यवहार की झलक देखिए.
रु. 5.00

दीवान ए गालिब
गालिब की शायरी का प्रत्येक शेर के साथसाथ भावार्थ अनुवाद संग्रह.
रु. 6.50

उद्यान की रूपरेखा
सरल सुबोध भाषा में उद्यान विषयक ज्ञान देने वाली अद्वितीय पुस्तक.
रु. 5.00

स्वर के दीप
मनमोहक चित्रों से सुसज्जित मन को छूने वाले गीतों का संग्रह.
रु. 5.00

हाकी
हाकी की रुचि रखने वालों के लिए संपूर्ण जानकारी देने वाली पुस्तक
रु. 3.00

जय कश्मीर
भारतीय सेना के पराक्रम की अमर गाथा, इस महाकाव्य में पहली बार गीतों के रूप में.
रु. 7.50

हिंदू समाज के पथभ्रष्टक तुलसीदास
हिंदू समाज के पथ दर्शक माने जाने वाले संत कवि की वास्तविकता क्या थी? इस पुस्तक में पढ़िए.
रु. 8.00

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

VSS 103

तीन या तीन से अधिक पुस्तक लेने पर 15 प्रतिशत तथा डाक खर्च की छूट या ... पुस्तकें लेने पर डाक खर्च की छूट. रुपए अग्रिम आने पर.

फिर से हँसने हँसाने के दिन आ गए...
मिलकर
खुशियां मनाने के दिन
आ गए!
Thums Up
Thums Up
थम्स अप

सुमन
लघु उद्योग
प्रबंध विशेषांक
TRADE—INDIA
IN THE WORLD MARKET
16 MAR 19
उद्योग की प्रगति और प्रबंध
व्यवस्था के अचूक तरीके
होली पर विशेष सामग्री
2.75 रुपए

विश्व सुलभ साहित्य

बेतवा की कसम :

ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित बदलते हुए परिवेश, व मान्यताओं का दस्तावेज.

प्रमोद भटनागर मूल्य : 3.00

कार में हत्या :

कार में लाश मिलने पर देशपांडे उस हत्या को सुलझाने में और अधिक उलझता गया. असली अपराधी को पकड़ने में कैसे सफल हुआ ?

जनमित्र मूल्य : 3.00

ईर्ष्या का ज्वालामुखी :

देशपांडे रहस्यपूर्ण हत्याओं को सुलझाने में कैसे उलझता गया. रहस्यरोमांच से भरपूर उपन्यास.

कुसुम गुप्ता मूल्य : 3.00

इंसानों का व्यापार :

इंसानों के व्यापार के रहस्य का परदा जब देशपांडे ने उठाया तब सभी आश्चर्यचकित रह गए.

जनमित्र मूल्य : 3.00

पूरा सेट लेने तथा धन अग्रिम भेजने पर डाक खर्च 50 पैसे वी.पी.पी द्वारा.

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

प्राचीन औषधियों का नुसखा होना एक बात है, उसे वैज्ञानिक रूप देना दूसरी बात।

हमदर्द का विश्वास है कि च्यवनप्राश के निर्माण के लिये नुसखे के अतिरिक्त और भी कई बातें आवश्यक हैं। इसीलिये हमदर्द में च्यवनप्राश को अधिक गुणकारी बनाने के लिये तीन बातों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस्तेमाल से पहले आंवले और जड़ी-बूटियों की कड़ी जांच, जिससे कि केवल सर्वोत्तम वस्तुएं ही काम में लाई जायें। वैज्ञानिक विधि से निर्माण यानी पूरी तौर पर मशीनों के द्वारा। हमदर्द दवाखाने के द्वारा रोगियों पर परीक्षण।

च्यवनप्राश

प्राकृतिक बलवर्द्धक टानिक
वैज्ञानिक विधि से निर्मित

ASP HM/203-81-CH 4

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ
मार्च (द्वितीय) 1981
अंक : 352

लघु उद्योग प्रबंध विशेषांक

लेख

लघु उद्योग प्रबंध परिशिष्ट

कथा साहित्य

कविताएं

स्तंभ

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस म. प. प्रा. लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा (केवल टिकट नहीं) आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

मूल्य : एक प्रति : 2.75 रुपए, एक वर्ष : 55.00 रुपए. विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 रुपए.

मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान :
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग :
एम—12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

A BIG CENTRE OF INDUSTRIAL BOOKS

- Hand Book of Adhesives 50.00
- Hand Book of Pesticides 50.00
- Dye Intermediates and processing of Textiles 100.00
- Chemical Buyers Guide and Textile Directory 50.00
- Project Schemes on Selected Chemi. Inds. 45.00
- Industrial Machines 20.00
- Facilities and Buyers Guide for Chemical Industries 50.00
- Illust. Catalog of Machines 60.00
- Small Scale Paints, Plastics & Rubber Goods Industries 100.00
- Facilities and Procedures for Small Industries 30.00
- Hand Book of Food Inds. 60.00
- Modern Bakery Industries 30.00
- Small Scale Manufacture of Soaps and Detergents 30.00
- Hand Book of Soap Inds. 40.00
- Hand Book of Rubber Chemical & Rubber Goods Inds 125.00
- Small Scale Manuf. of Rubber Goods & Chem. 30.0
- Manual of Petro-Chem. Greases and Lubricants 80.0
- Hand Book of Greases, Lubrica[nts] & Refining of Petro-Chemi 45.0
- Modern Plastic Industries 30.0
- Small Scale Manuf. of Paints, Varnishes and Lacquers 40.0

NEW DIRECTORIES

- Industries in India 200.0
- Chemical Buyers Guide with Importers & Exporters 100.0

- Canning & Preservation of Fruits & Vegetables 30.00
- Plastic Processing Industries 50.00
- Food Processing Industries 50.00

10% Discount on books worth Rs 150/- or more.

अपना छोटा सा उद्योग लगा कर परिवार की आय में बढ़ोतरी करें !

लघु उद्योगों पर प्रामाणिक नया सातवाँ संस्करण

स्मॉल स्केल इण्डस्ट्रीज़

ले. कालीचरण गुप्ता इन्डस्ट्रियल कन्सलटेन्ट (चालीस वर्षीय तजुर्बेकार)

लघु उद्योग को अपने व्यवसाय के रूप में चुनना आसान है। उसमें फ़ायदा भी काफ़ी होता है। पूंजी भी थोड़ी लगानी पड़ती है। कुछ उद्योग तो ऐसे हैं जिनमें मशीनरी की ज़रूरत भी नहीं पड़ती और पार्ट टाइम में भी शुरू किये जा सकते हैं।

इस पुस्तक के विशेष आकर्षण

- बहुत थोडी पूंजी से लेकर एक लाख या अधिक रुपयो से शुरू हो सकने वाले लगभग २०० से अधिक उद्योगों की स्कीम व विस्तृत टैक्निकल जानकारी। जैसे कम्पलीट फ़ार्मूले बनाने की विधि, मशीनो की सचित्र जानकारी तथा लागत व मुनाफ़े का ब्योरा। जैसे कैमीकल, मैकेनिकल, प्लास्टिक, रबड़, पेन्ट, साबुन, डिटरजेन्ट, ब्यूटी प्रोडक्टस, माचिस, फ़ूड, बेकरी, कन्फ़ेक्शनरी, स्टेशनरी, इलैक्ट्रिकल, फ़ार्मेसी, पेपर, इंक, सर्फ, नील, पालिश, टिनोपाल, विम, फ़िनायल, मोमबत्ती, ग्रीस एडेसिव, आफिस गम, परफ़्यमरी, वगैरा।

पृष्ठ 600
चित्र 600
मू० 36/- रु०
डाक खर्च माफ़

ASK YOUR BOOK SELLER OR SEND YOUR ORDER BY V.P.P. TO:

SiRi

SMALL INDUSTRY RESEARCH INSTITUTE

P.O. Box-2106, (M) 4/43, Roop Nagar Delhi-7, Ph. 220885

BRANCH OFFICE 4449, Nai Sarak, DELHI-110006, Ph. 266804

जनवरी (द्वितीय) अंक के 'मुक्त विचार' में ईसाई मिशनरियों के संबंध में प्रकाशित आप के इस विचार से मैं पूरी तरह सहमत हूं कि उन्होंने आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित वर्ग के उत्थान के लिए सराहनीय कार्य किया है.

ईसाई मिशनरियों के कार्यों को सिर्फ इस आधार पर नहीं रोका जा सकता कि उन्हें विदेशों से आर्थिक मदद प्राप्त होती है.

इस देश में अनेक ऐसे राजनीतिक एवं सांस्कृतिक संगठन हैं, जिन्हें विदेशी धन प्राप्त होता है.

धर्म के नाम पर ही अगर मिशनरी भूखे को रोटी तथा रोगी को दवा देने का कार्य करते हैं तो इस में क्या बुराई है?

—श्री प्रकाश

✦

जनवरी (प्रथम) अंक के 'मुक्त विचार' में 'शराब पीने की खुली छूट' शीर्षक टिप्पणी में प्रस्तुत आप के विचारों से मैं बहुत हद तक सहमत हूं, क्योंकि 1977 के चुनाव से पहले जब देश में इंदिरा गांधी की सरकार थी तब हमारे गांव में लगभग 15 प्रतिशत व्यक्ति शराब बनाने के धंधे में लगे हुए थे. और उस समय शराबी खुले आम शराब पीते थे. किंतु ज्यों ही जनता सरकार आई, लगभग सारे व्यक्तियों ने इस धंधे को छोड़ दिया. लेकिन पुनः इंदिरा सरकार आने पर इन लोगों ने धीरेधीरे अपना धंधा फिर शुरू कर दिया है. —मु. इम्तियाज अंसारी

✦

दिसंबर (प्रथम) अंक के 'मुक्त विचार' में 'पिछड़ी जातियों को आरक्षण' शीर्षक टिप्पणी में बहुत ही सही विचार पढ़ने को मिले. बहुत दिनों बाद ऐसे साहसिक और व्यावहारिक विचार पढ़ कर खुशी हुई. इस बात का वही लोग विरोध कर सकते हैं जो पिछड़ी जातियों को आगे नहीं बढ़ने देना चाहते तथा उन से घृणा करते हैं.

मैं ने खुद कई आदिवासी पिछड़े इलाकों में कार्य किया है. वहां के पैसे वालों के बच्चे भी प्राथमिक शिक्षा तक नहीं ले पाते क्योंकि वहां पर प्राथमिक विद्यालय भी ठीक से नहीं चलाए जाते. आजादी के 33 साल बाद भी हमारे देश के गांवों की दशा बहुत शोचनीय है. दूसरी तरफ शहरों के स्कूल तथा कालिजों में सभी सुविधाएं प्राप्त हैं, जहां इन आदिवासियों तथा पिछड़ी जातियों के बच्चों का पहुंचना व्यावहारिक रूप से बहुत मुशकिल है.

जो लोग आरक्षण के विरोध में बोलते हैं वे जरा आदिवासी तथा पिछड़े इलाकों में अपना परिवार बसा कर तो देखें. ऐसे लोग सुविधायुक्त शहरों में रह कर अपने

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

रंगीन च
भी देखते
आज
दोनों पत्रि
रचनात्म
प्रकार के

फरव
'कार्तिकेय
गुप्ता)
राजेश ज
में उस के
हो जाने
परंतु उस
और उस
रहने की
की जा स
एक
की दूरी
एक प्रका

रंगीन चश्मे से ही उन पिछड़ लोगों को भी देखते हैं.

आशा है आप 'सरिता' तथा 'मुक्ता' दोनों पत्रिकाओं में उन की दशा पर एक रचनात्मक आंदोलन चलाएंगे तथा इसी प्रकार के विचार साहसपूर्वक लिखते रहेंगे.

—अमरनाथ गुप्ता

✦

फरवरी (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'कार्तिकेय की यात्रा' (कहानी : प्रदीप गुप्ता) कुछ बचकाना लगी. कथानायक राजेश जब ब्लैक होल में फंसता है तो बाद में उस के यान के संप्रेषण यंत्र के त्रुटिपूर्ण हो जाने का कारण तो समझ में आता है, परंतु उस के ब्लैक होल से निकल आने और उस के पश्चात यान के नियंत्रण में रहने की बात आसानी से स्वीकार नहीं की जा सकती.

एक बात और भी है कि कार्तिकेय की दूरी 1507 प्रकाश वर्ष बताई गई है. एक प्रकाश वर्ष वह दूरी होती है, जिसे प्रकाश एक वर्ष में पूरी करता है. राजेश के यान की गति प्रकाश के बराबर रखी गई है. अतः यदि कोई भी व्यवधान नहीं उत्पन्न होता है, तब राजेश को पृथ्वी पर 3014 वर्षों के पश्चात ही लौटना चाहिए था. परंतु वह समस्त विपदाओं के पश्चात कार्तिकेय से 30 वर्ष में ही वापस आ जाता है. कथानायिका रश्मि भी उस की ऐसे प्रतीक्षा करती है जैसे वह चंद वर्षों में ही लौट आएगा. राजेश की तो उम्र ही स्थिर हो गई थी. लेकिन रश्मि के साथ तो ऐसा नहीं था. अगर दोनों विवाह ही करना चाहते थे तो साथ जा सकते थे.

तर्कप्रधान पत्रिका से ऐसी तर्कहीन कहानी की आशा नहीं थी. इस कहानी से मात्र प्रकाशन की खानापूरी कर के पाठकों को निराश किया गया है.

—आलोक सिन्हा

✦

जनवरी (द्वितीय) अंक में 'राष्ट्र-भाषा के प्रति षड्यंत्र' (लेख : हनुमानसिंह

स्वादिष्ट खाने का एक राज़!
बी एम सी
मसाले
MEAT MASALA
CHANA MASALA
ROGHNI MIRCH
TASTE
BAWA MASALA CO

ec
GC

राठौर) पढ़ा. राष्ट्रभाषा के प्रति निष्ठा को जिस निर्भीकता के साथ लेखक ने उजागर किया है, उस के लिए बधाई.

हमारा हिंदी के प्रति उपेक्षापूर्ण दृष्टिकोण आरंभ से ही रहा है, क्योंकि भारत के तथाकथित कर्णधार पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति के पुजारी रहे हैं. फलस्वरूप भाषा का ह्रास होना स्वाभाविक ही है.

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय राजनीति में भाषावाद की राजनीति को प्रश्रय दिया गया. दक्षिण भारत में हिंदी विरोधी आंदोलन इसी का दुखद परिणाम है.

हिंदी की ऐसी स्थिति हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत ही दुखपूर्ण और शर्मनाक है. हम अंगरेजी भाषा के प्रति विशेष सम्मान प्रदर्शित करने के लिए हिंदी की उपेक्षा तक कर देते हैं.

अभी का एक ताजा उदाहरण है. जब सोवियत राष्ट्रपति भारत पधारे और उन का नागरिक अभिनंदन विज्ञान भवन में किया गया, तब हमारी प्रधान मंत्री ने बजाए हिंदी के अंगरेजी में स्वागत भाषण दे कर अपने आप को गौरवान्वित महसूस किया, जब कि सोवियत राष्ट्रपति ने अपना भाषण अपनी मातृभाषा रूसी में ही दिया. यह कितना लज्जास्पद है? इस का दर्द हिंदी प्रेमी ही समझ सकता है. इस तरह अप्रत्यक्ष रूप से अंगरेजी भाषा को राजाश्रय प्राप्त है.

यह दर्द की सीमा तब और भी बढ़ जाती है जब हिंदी के नाम पर विदेश यात्राएं की जाती हैं एवं हिंदी के नाम पर दंगे करवाए जाते हैं.

वैसे मैं लेखक के इस निष्कर्ष से सहमत नहीं हूं कि हिंदी का भविष्य निराशापूर्ण है. कारण यह कि हिंदी भाषा में जितनी सरलता, सरसता एवं बोधगम्यता है, उतनी किसी दूसरी भाषा में नहीं. अतः हिंदी के यही गुण इस की श्रेष्ठता सिद्ध करेंगे.

—गजेंद्र आचार्य

न्यू बैंक की परिवार के प्रत्येक सदस्य हेतु स्वर्णिम योजना

बचत खाता
अपने मासिक बजट से बचायें और जब जरूरत हो तो चेक द्वारा निकालें. 5% का ब्याज कमायें

पुनः विनियोजन निवेश योजना
आपकी जमा 87 माह में दुगनी हो जाती है आपकी बचत विवाह, शिक्षा, भवन निर्माण अथवा यात्रा के काम आ सकती है

जनता निवेश योजना
वेतनभोगियों के लिए आदर्श कोई नियमित बचत रु. 5/- के गुणकों में 12 माह से 120 माह हेतु 7% से 10% तक का ब्याज अर्जित करती हैं.

लोकप्रिय निवेश योजना
63 से 120 की निवेश पर मासिक ब्याज मिलता है
रु. 10,000/- के निवेश पर आपको रु. 82.64 प्रति माह मिलेगा.

सावधि निवेश
उन लोगों के लिए आदर्श जिन पर बचाने को एकमुश्त राशि है 10% प्रति वर्ष तक ब्याज कमायें

न्यू बैंक आफ इण्डिया
(भारत सरकार का संस्थान)

FAREX

मुक्त विचार

नया बजट : मुंह में राम...

सरकार का वार्षिक बजट प्रस्तुत करने का दिन व्यापार व उद्योग के लिए सब से अधिक भयावह होता है. हफ्तों पहले ही हर व्यापारी को भय सताने लगता है कि वित्त मंत्री की नजर न जाने उस के द्वारा खरीदी या बेची जाने वाली किस वस्तु पर पड़ जाए और उस पर कर बढ़ जाए.

इस वर्ष के बजट में यद्यपि इस प्रकार किसी वस्तु विशेष पर करों की वृद्धि नहीं की गई है पर फिर भी 1,539 करोड़ रुपए का घाटा दिखाया गया है. यह घाटा नए नोट छाप कर अथवा बैंकों से उधार ले कर पूरा किया जाएगा जो अंततः आम जनता की ही जेब से जाएगा.

इस बार सब से अधिक कर वृद्धि हुई है, आयातित वस्तुओं में. उत्पादन में काम में आने वाली मशीनों या खुदरा माल के आयात पर सरकार ने वैसे ही भारी नियंत्रण लगा रखे हैं. पहले से ही उन पर सौ प्रतिशत तक के कर हैं. अब 10 से 14 प्रतिशत तक की कर वृद्धि और कर दी गई है. केवल इसी कर से हजारों वस्तुओं के उत्पादन की कीमत में वृद्धि हो जाएगी. बस, मजे की बात यह है कि इस मूल्य वृद्धि का दोष हमारे वित्त मंत्री व्यापारियों की मुनाफाखोरी पर डाल देंगे और जिस तरह का धुंआधार प्रचार सरकारी तंत्र कर सकता है, उस से जनता को बहकाना आसान है कि सारा दोष तो नुक्कड़ वाले लाला का है जो कीमतें बढ़ाबढ़ा कर लोगों को लूट रहा है.

असली दोषी असल में केंद्र व राज्य सरकारें हैं जो निरंतर अपना खर्चा बढ़ाए जा रही हैं जिस का लाभ केवल राजनीतिबाज को या सरकारी कर्मचारी को मिलता है. जनता को तो भगवान पर चढ़ाए टोकरे भर फलमिठाई के बदले मुट्ठी भर प्रसाद के रूप में ही वापस मिल रहा है.

सरकार ने रक्षा के नाम पर 600 करोड़ रुपए अधिक खर्च करना मंजूर किया है. राज्य सरकारों को 310 करोड़ रुपए की अधिक सहायता दी जाएगी. उत्तरपूर्वी राज्यों पर 76 करोड़ रुपए अधिक खर्च किए जाएंगे. योजना से संबंधित कार्यों पर 14,593 करोड़ रुपयों के स्थान पर 17,479 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे.

180 करोड़ कपास का नया खर्चा गांवों में नौकरियां जुटाने के नाम बांध लिया गया है. मरुस्थल का विकास रोकने जैसे आयोजनों के लिए 198 करोड़ रुपए बेकार करने की मंजूरी दी गई है. इस प्रकार के खर्चों की सूची इतनी लंबी है कि आश्चर्य होता है कि सरकार इतने सारे काम क्यों और कैसे चलाती है.

सरकार अपना खर्च तो हर वर्ष बढ़ाती जाती है. महंगाई की पूर्ति तो की ही जाती है, सैकड़ों नए खर्च भी शुरू कर दिए जाते हैं. पर जनता के हाथ में हर वर्ष कम पैसा छोड़ने के लिए कर बढ़ाए जाते रहते हैं. जब सरकार अपने खर्चों

पर नियंत्रण नहीं कर सकती तो जनता कैसे करे? क्या जनता अपना पेट काट कर, भूखे रह कर सरकार का खजाना भरे?

यदि ऐसा ही करना है तो राजा के कारिंदों या गोरों की सरकार और इस लोकतांत्रिक सरकार में अंतर क्या रहा? दोनों को ही अपने खर्चों, अपनी योजनाओं की चिंता होती है, जनता की नहीं.

अखबारी कागज पर भारी कर

इस बार सरकार ने नए बजट में सब से बड़ा काम किया है अखबारी कागज पर 15 प्रतिशत का आयात कर लगाने का. समाचारपत्र व पत्रिकाएं आयातित न्यूजप्रिंट पर छपती हैं क्योंकि देश में कागज के उत्पादन की मात्रा काफी कम है.

आयातित कागज का मूल्य बढ़ने से सभी समाचारपत्रों व पत्रिकाओं को अपने दाम बढ़ाने पड़ेंगे जिस का एकदम असर उन की प्रसार संख्या पर पड़ेगा. पिछले नवंबरदिसंबर में लगभग सभी समाचारपत्रों व पत्रिकाओं को 15 से 20 प्रतिशत दाम वेतनों, बिजली, कागज आदि के मूल्यों में वृद्धि के कारण बढ़ाने पड़े थे. इस का सभी पाठकों पर बुरी तरह असर हुआ था और सभी पत्रपत्रिकाओं की प्रसार संख्या में गिरावट आई थी. अब यह वृद्धि तो पत्रकारिता की पीठ ही तोड़ देगी. लगता है यह काम कांग्रेस सरकार ने जानबूझ कर किया है. वह चाहती है कि पत्रपत्रिकाओं की प्रसार संख्या कम हो जाए ताकि रेडियो, टेलीविजन जैसे सरकारी माध्यमों का प्रभाव और बढ़ जाए. 1977 के बाद से पत्रपत्रिकाओं ने जिस तरह सरकारों की आलोचना करना शुरू किया है, उस से सरकार का भयभीत होना कोई बड़ी बात नहीं है.

इस कर से सरकार को मुशकिल से 21 करोड़ रुपए की आमदनी होने की आशा है. इस से कई गुना हानियां तो कितने ही सरकारी उद्योग हर वर्ष कर रहे हैं जिन के उत्पादन से न जनता को लाभ हो रहा है, न सरकार को. इतनी कम राशि के लिए जनता के सेवा निष्ठ उद्योग को तंग करने के पीछे यदि राजनीतिक कारण नहीं तो क्या है?

हड़तालियों को जेल

सरकारी क्षेत्रों में हड़तालों की बीमारी अब नागरिक क्षेत्र के उद्योगों की तुलना में कहीं अधिक बढ़ गई है. नागरिक क्षेत्र के उद्योगपतियों को तो शोषक, मुनाफाखोर, सरमायादार आदि गालियां दे कर संतोष कर लिया जाता था कि मजदूर अपने 'हक' के लिए हड़ताल कर रहे हैं. पर जैसेजैसे सरकारी क्षेत्र बढ़ता गया, यह बीमारी वहां और तेजी से फैल गई.

अच्छे वेतनों, सुविधाओं और तथाकथित मानवीय व्यवहार के बावजूद सरकारी उद्योगों के मजदूर बजाए अपनी अच्छी उत्पादकता का प्रदर्शन करने के हड़ताल की शक्ति का ही प्रदर्शन करने लगे हैं. हड़ताल से आज की सरकार को कोई लंबाचौड़ा असर तो पड़ता नहीं है क्योंकि उत्पादन कम हो या अधिक, नुकसान हो या लाभ, भुगतना तो आम जनता को ही पड़ता है. इसी लिए सरकारी क्षेत्र की हड़तालें आर्थिक समस्या नहीं, प्रशासनिक समस्याएं ही समझी जा रही हैं.

शायद यही वजह है कि केंद्र व राज्य सरकारें अब हड़तालों को कुचलने के लिए डंडे का इस्तेमाल करने लगी हैं. कई राज्य सरकारों ने हड़तालियों के विरुद्ध काररवाई के लिए कानून बना लिए हैं. तमिलनाडु सरकार ने हाल ही में आवश्यक सेवाओं में हड़ताल करने वालों को दंड देने की व्यवस्था की है.

यह दंड है एक वर्ष तक की कैद [illegible] तक का जुरमाना.

इस प्रकार का दंड हड़तालियों, हड़ताल के लिए उत्तेजित करने वालों तथा उन की आर्थिक सहायता करने वालों को दिया जा सकता है. ऐसे लोगों को बिना वारंट के गिरफ्तार किया जा सकता है.

हड़तालों के विरुद्ध सरकार का रुख तो ठीक है, पर हड़ताल रोकने का यह तरीका बिलकुल गलत है. हड़ताल एक आर्थिक अपराध है. अगर कोई व्यक्ति किसी नियत वेतन पर काम नहीं करना चाहता और स्वयं व अन्य साथियों को रोक कर मेहनताना बढ़वाना चाहता है तो उस से यह कहा जा सकता है कि चूंकि उसे दी जाने वाली तनखाह व सुविधाएं स्वीकार नहीं हैं, इसलिए वह नौकरी छोड़ दे. यदि वह नहीं मानता तो नियोजकों को अधिकार है कि वे उसे नौकरी से निकाल दें और अन्य ऐसे व्यक्ति को रख लें जो उसी वेतन और सुविधा पर काम करने को तैयार हो.

लेकिन उस के कम वेतन पर आपत्ति करने पर उसे जेल में बंद कर देना बिलकुल गलत है. गलत से भी ज्यादा यह अव्यावहारिक है क्योंकि इस के लिए सरकार को अदालतों के दरवाजे खटखटाने पड़ेंगे और जब तक अदालत सजा देगी, कई वर्ष बीत जाएंगे.

सब से अच्छा दंड नौकरी से निकाला जाना है. हमारे कानूनों, अदालतों व सरकारों ने कर्मचारियों को नौकरी की सुरक्षा दे कर ही सब से अधिक अनुशासनहीनता पैदा की है. यदि सरकारें इस अनुशासनहीनता पर नियंत्रण कर सकें तो जेलों में मजदूरों को ठूंसने की नौबत ही नहीं आएगी.

बढ़ती जनसंख्या कैसा बोझ?

आपातकाल के दौरान जिस जोरशोर और जोरजबरदस्ती से परिवार नियोजन के लिए नसबंदी आपरेशन किए गए थे, आज इस के प्रति उतनी ही उदासीनता छा गई है. यह उदासीनता देश के संपन्न लोगों को बहुत खलने लगी है और वे जनसंख्या के प्रकोप की चिंता में घुलने लगे हैं.

देश की समस्याओं के लिए उन के पास एक ही उत्तर है—सब की नसबंदी कर डालो. डाक्टर, अधिकारी, व्यापारी, संपन्न सभी इसी दिशा में सोचते हैं, जब कि यह सिद्ध हो चुका है कि एक वर्ष जबरन नसबंदी करने के बावजूद देश की जनसंख्या वृद्धि में एक प्रतिशत के दसवें अंश का भी फर्क नहीं पड़ा है.

कठिनाई यह है कि हमारे देश के आयोजक हर व्यक्ति को सुविधाएं हजम करने वाला दैत्य समझते हैं. वे यह नहीं सोच पा रहे कि हर व्यक्ति उत्पादन करने की मशीन भी बन सकता है.

मशीनी युग से पहले अधिक जनसंख्या वाले इलाके यूरोप के ठंडे इलाकों के मुकाबले बहुत संपन्न थे. जितने अधिक व्यक्ति, उतना अधिक उत्पादन. इसी लिए यूरोप के नाविक व व्यापारी भारत की ओर ललचाई दृष्टि से देखते थे.

यूरोप के लोगों ने जब आदमी का स्थान लेने के लिए मशीनों की ईजाद कर ली, तब कहीं जा कर वे एशिया के देशों को पछाड़ सके. लेकिन इस का यह मतलब नहीं कि एशिया के देशों के लिए आदमी बोझ हो जाएं.

अफ्रीका या दक्षिणी अमरीका में जनसंख्या कम है पर वहां भी देश अमीर नहीं हैं. उस के मुकाबले जापान, इंगलैंड और पश्चिमी यूरोप का घनत्व भारत के बराबर ही है, फिर भी वे अमीर हैं.

अमीरी या संपन्नता प्रति व्यक्ति उत्पादकता पर निर्भर करती है, संख्या पर नहीं. यदि किसी देश का प्रति व्यक्ति उत्पादन अधिक है तो अधिक संख्या होने पर भी वहां पैसा ही पैसा होगा. दूसरी ओर यदि जनसंख्या कम होने के साथसाथ उत्पादकता भी कम होगी तो वहां केवल गरीबी ही होगी.

हमारे देश के साथ खराबी यह है कि यहां प्रति व्यक्ति उत्पादकता बहुत ही कम है. यहां का व्यक्ति काम करना हराम समझता है. यहां कम से कम काम करने की होड़ लगी रहती है. जब काम ही नहीं किया जाएगा, जब उत्पादन ही नहीं होगा तो पैसा कहां से आएगा?

हमारे गांवों में लोग प्यासे हैं, पर कुएं नहीं खोद सकते. सड़कों से दूर हैं पर गांव को जोड़ने के लिए सड़क नहीं बना सकते. मकान गंदे हैं पर सफाई नहीं कर सकते. हमारे देश का आम व्यक्ति मुश्किल से औसतन दो या तीन घंटे काम करता है.

यदि वह काम के घंटे बढ़ा दे तो कोई कारण नहीं कि जिस तरह की गरीबी में हम रह रहे हैं, वह दसबीस सालों में ही दूर न की जा सके. पर इसे समझाए कौन? गांधी के बाद के सभी राजनीतिबाज तो यही कहते रहते हैं कि वोट का चढ़ावा चढ़ाओ, हम तुम्हें भगवान से धन ला कर दे देंगे.

ऐसी स्थिति में जनसंख्या बोझ नहीं होगी तो क्या होगी?

सरकारी सोना – नागरिक सोना

जनता पार्टी की सरकार ने सोने के दामों में कमी लाने के लिए सोने की नीलामी की योजना शुरू की थी. चौदह बार की गई नीलामी में 86.33 करोड़ रुपए मूल्य का 1,28,90,900 ग्राम सोना आम जनता को बेचा गया था.

बाद में इस बिक्री की आलोचना होने पर इसे बंद कर दिया गया था. श्रीमती इंदिरा गांधी ने इस बिक्री का चुनावों के दौरान बहुत मखौल उड़ाया था और इसे राष्ट्रविरोधी काम बताया था.

सत्ता में आने पर रिजर्व बैंक के एक भूतपूर्व गवर्नर को इस नीलामी की रिपोर्ट देने के लिए नियुक्त किया गया था. उन्होंने अब अपनी रिपोर्ट दे दी है. इस रिपोर्ट में कहा गया है कि नीलामी की प्रक्रिया जटिल होने के कारण आम व्यक्ति तो क्या आम जौहरी भी इस में सीधे भाग नहीं ले सका. जिन्होंने भारी जोखिम उठा कर ऊंची बोली बोल कर नीलामी जीती, उन के वारेन्यारे हो गए. फिर भी इस रिपोर्ट में यह कहीं नहीं कहा गया कि इस से देश को क्या नुकसान हुआ और कुछ राजनीतिबाजों को क्या लाभ पहुंचा (जैसा कि आरोप लगाया जाता है).

लगता है हमारे राजनीतिबाज देश की जनता को देश से अलग समझते हैं. उन की दृष्टि में यदि कोई काम या उपलब्धि जनता की है तो सरकार यानी राष्ट्र को उस से कोई मतलब नहीं. यदि वह उपलब्धि सरकार या सरकारी विभाग की है तो ही वह राष्ट्र की उपलब्धि मानी जा सकती है.

उन के विचारों से लगता है कि जो सोना सरकार के खजानों में बंद पड़ा है, वह ही राष्ट्र का सोना है, जो देश की महिलाओं के पास है वह तो शत्रुओं के हाथ में है. यदि कोई सरकार खजाने का सोना देश की जनता को बेच दे तो उस का यह कृत्य राष्ट्रविरोधी हो गया. लेकिन जो सरकार बंदूक, तोप और पुलिस की सहायता से निहत्थे नागरिकों की मेहनत से कमाए सोने को वसूल कर सके, वही सच्ची राष्ट्रवादी है.

सोने की नीलामी एक सही कदम था. एक आम व्यक्ति के लिए सोना रखना आज सब से अच्छा बीमा है. महिलाओं के लिए तो सोना सब से जरूरी चीज है क्योंकि वे इसे घरवालों की निगाहों से बचा कर आड़े दिनों के लिए आसानी से रख सकती हैं. सरकार के पास रखा सोना यदि आम जनता के पास चला भी जाए तो इस से कोई हानि नहीं है क्योंकि वह रहता तो देश में ही है. •

अन्य भारतीय त्योहारों की तरह होली का रूप भी अपनी गरिमा खो कर मात्र अश्लील छेड़छाड़ व गंदगी से भरा त्योहार बन कर रह गया है. आखिर इस के स्वरूप को बिगाड़ने के लिए जिम्मेदार कौन है?

होली रंगों का त्योहार है. इसी लिए यह हंसीखुशी व प्रेम का भी प्रतीक है. यह त्योहार हमें प्रति वर्ष यह याद दिलाने आता है कि पूरे वर्ष हम मेलमिलाप व प्रेम से एक दूसरे को अभिभूत करते रहें. होली का प्राचीन रूप यही था. होली के त्योहार की शुरुआत ही हर्षोल्लास के त्योहार के रूप में हुई. भारत के गांवों में आज भी होली को बजाए रंगगुलाल के नाचगान के त्योहार के रूप में जाना जाता है.
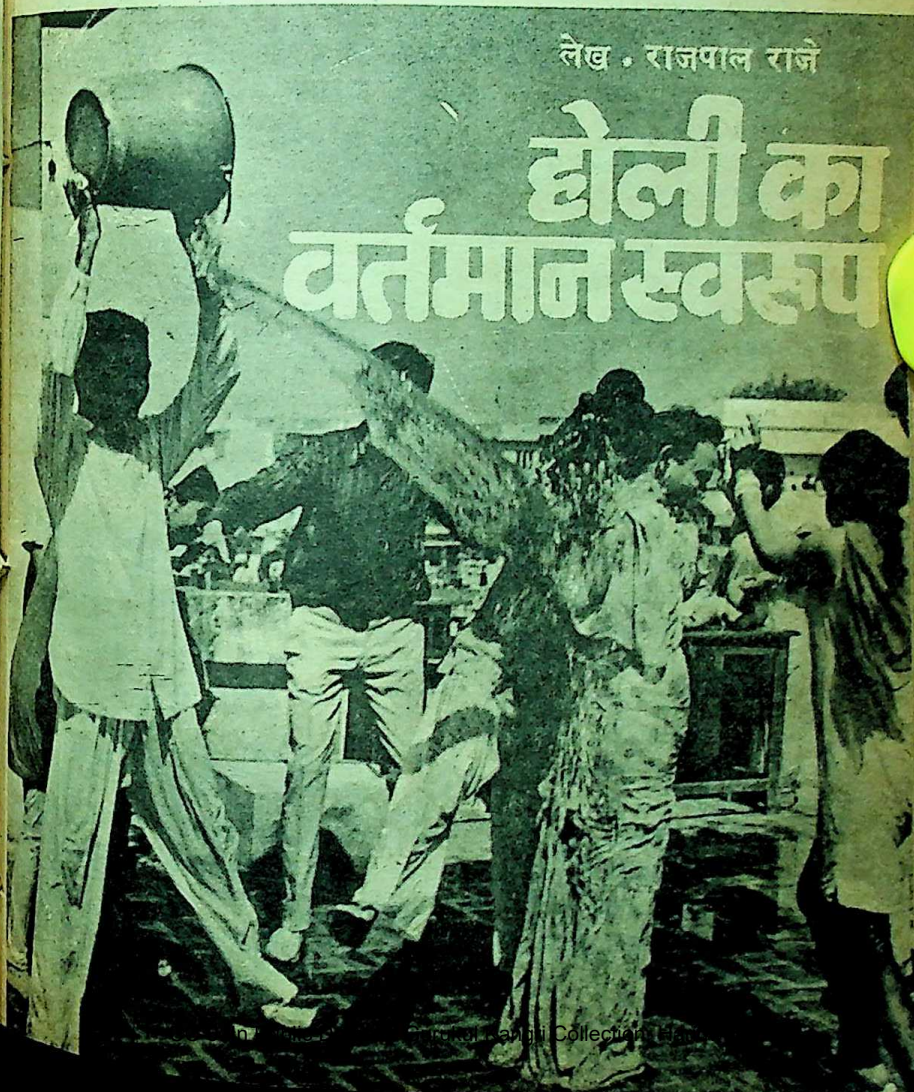
अन्य भारतीय त्योहारों की तरह होली का रूप भी अपनी वास्तविक गरिमा को खो चुका है. आज होली मुख्यतः अश्लील छेड़छाड़ व गंदगी से भरा त्योहार बन कर रह गया है. कहींकहीं तो यह गुलाल से शुरू हो कर खून के रंग तक जा पहुंचता है.

होली के वर्तमान रूप को देख कर होली से घृणा होना स्वाभाविक है. होली के अवसर पर युवतियों से छेड़छाड़ व बेहूदी हरकतें करते हुए उन के वस्त्र फाड़ना व रंग लगाने के बहाने गंदी हरकतों पर उतर आना आज साधारण बात बन चुकी है. यही कारण है कि होली का स्वरूप दिन प्रतिदिन विकृत होता जा रहा है.

होली का दिन दहशत का दिन

बड़े शहरों में, नगरों व छोटे कसबों में होली के दिन एक दहशत भरा वातावरण देखने को मिलता है. एक आम नागरिक को इस दिन यही भय सताता रहता है कि कहीं युवकों की कोई टोली आ कर उस की बहूबेटियों के साथ छेड़छाड़ न करने लगे. दूसरी ओर स्वस्थ ढंग से होली मनाने वाले लोगों को यह चिंता सताती रहती है कि कहीं उन का कोई मित्र आ कर गोबर, कीचड़ या पेंट से उन के साथ होली न खेलने लगे. होली के इस विकृत रूप के लिए कौन जिम्मेदार है?

इस के लिए जिम्मेदार हम स्वयं हैं. हम ने ही होली को यह विकृत रूप दिया है. हम ने ही असामाजिक तत्वों को होली के अवसर पर अश्लील हरकतें करने के लिए उत्साहित किया है. खुद हमारे घर का कोई युवक किसी दूसरे घर की बहूबेटियों से छेड़छाड़ करता है या भद्दे ढंग से होली खेलता है तो हम यह कह कर संतोष कर लेते हैं कि साल में एक ही दिन तो होली खेलने के लिए आता है. यह कभी नहीं सोचते कि यह एक दिन ही पूरे साल के लिए पड़ोसी से हमारे संबंध खराब कर सकता है. यह भी कभी नहीं सोचते कि आज हमारे घर का कोई सदस्य भद्दे ढंग की होली खेल रहा है तो कल उस की देखादेखी कोई दूसरा भी यही काम करेगा.

होली रंग और उमंग के नाम पर भले लोगों को तंग करने का एक साधन बनती जा रही है. होली खेलने के पीछे लोगों की दूषित भावनाएं व मनोवृत्तियां छिपी रहती हैं. अनेक कसबों में होली के दिन खून की होली खेलना आम बात बन गई है. होली के दिन अपनी पुरानी दुश्मनी या भड़ास निकालना भी साधारण सी बात है.

वैसे होली के साथ अश्लीलता व फूहड़ता पुराने समय से ही जुड़ी हुई है. होली के नाम पर अनावश्यक हुड़दंग मचाना भी इसी का एक अंग बन चुका है. युवकों में होली के दिन शराब का प्रयोग आवश्यक बन गया है. शराब के नशे में गली मुहल्ले की युवतियों व उन के परिवार के लोगों को परेशान करना आज के नवयुवक अपना परम ध्येय समझने लगे हैं. शराब के नशे
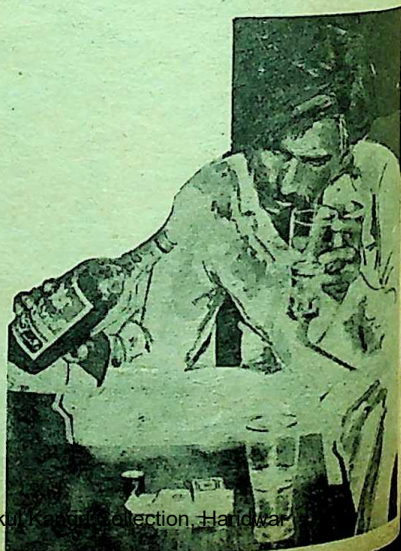
होली के दिन शराब पीने से क्या त्योहार की गरिमा बढ़ जाती है?
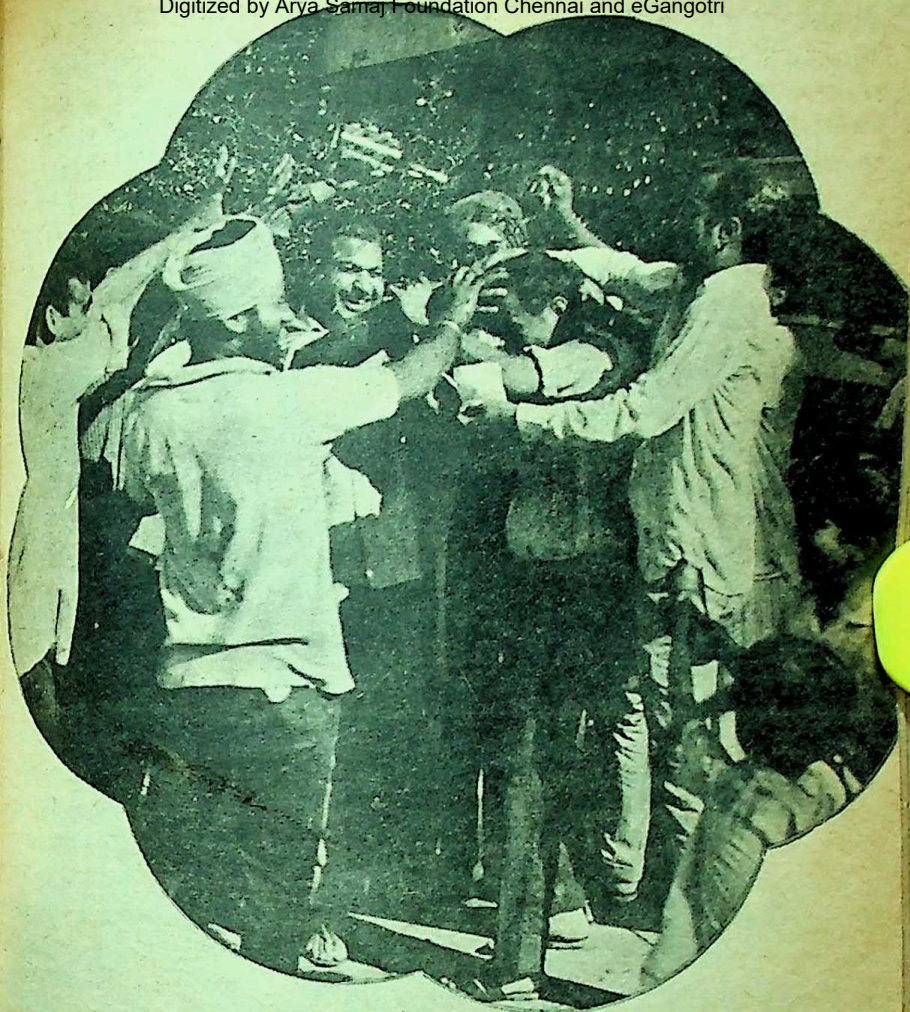
क्या अब यह त्योहार रंग और उमंग के नाम पर भले लोगों को तंग करने का साधन ही नहीं बनता जा रहा है?

में वस्त्र फाड़ना व तोड़फोड़ करना भी आम बात है.

सवाल उठता है कि क्या यही हमारी संस्कृति है कि त्योहार के नाम पर बेवजह अश्लील हरकतें करें या नशे में बहकें?

भारत में लगभग सभी त्योहारों का रूप विकृत हो चुका है. होली, दीवाली व दशहरा हिंदुओं के प्रमुख त्योहार हैं. इन त्योहारों में हिंदुओं की जो फूहड़ता दिखाई देती है, वह हमारी मूर्खता व दूषित मानसिकता की परिचायक है.

होली उमंग व हलके मनोरंजन का त्योहार है, इसलिए हमें इस को सही ढंग से ही मनाना चाहिए. यदि हम होली को स्वस्थ ढंग से नहीं मना सकते तो हमें इस का त्याग ही कर देना चाहिए, क्योंकि जो त्योहार उल्लास के स्थान पर आतंक पैदा करे, उसे त्यागना ही उचित है. ●

"बाकर."

"जी, सरकार."

"कुसुंबा बड़ा रंगीन होता है न?"

"हजूर, राजस्थान की इस शराब में ही रंगीनी नहीं हुआ करती, शबाब और भी रंगीन होता है. वैसा ही आबदार और मदमस्त बनाने वाला."

"तुम ने यहां के उस अफीमची राजा की रानी को देखा है?"

"देखा तो नहीं, बंदापरवर. हां, सुना जरूर है. मोती जैसा आबदार रंग, सुराही सरीखी गरदन. बोलती है तो रस घोलती है, जैसे सागर में शराब छलछल छलक रही हो. बड़ीबड़ी कजरारी, नशीली आंखें. नुकीली नाक के नीचे पतले गुलाबी होंठ. क्या कहें, हजूर, दुनिया की नायाब चीजों में से एक है वह परी."
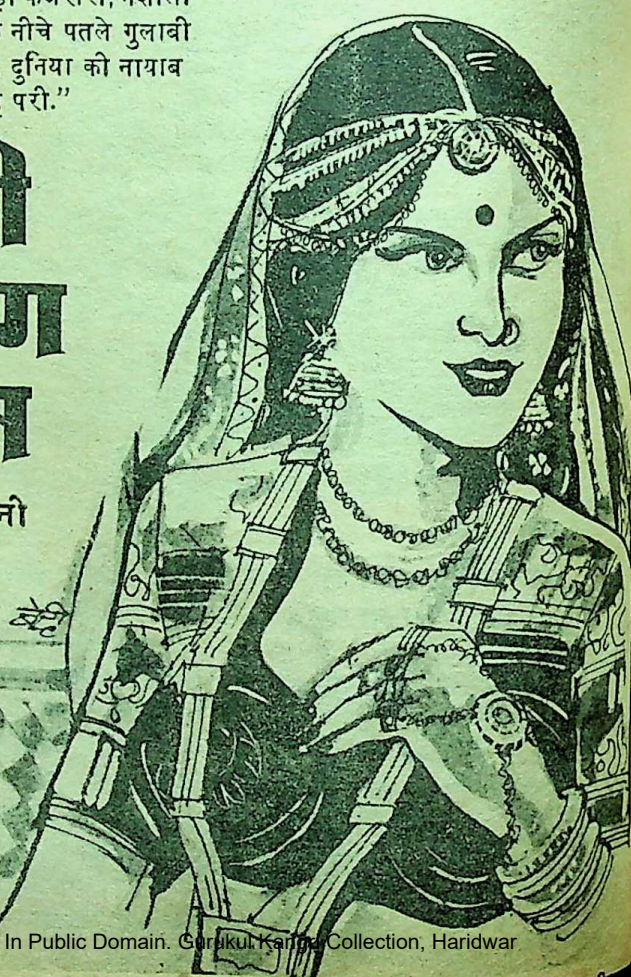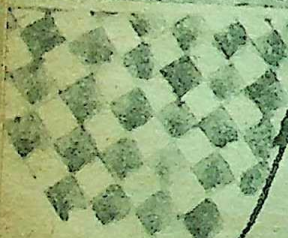
"किसी तरह उसे मेरी हमबिस्तर नहीं बना सकते? वह मिल जाए तो जीने का मजा आ जाए. पैसों की फिक्र मत करो. मैं उसे पाने के लिए अपना सब कुछ लुटा दूंगा."

"हजूर, पैसों की बात नहीं. आप का काम करने के लिए तो बंदा वैसे ही सर के बल हाजिर रहता है. यों ही जान की बाजी लगाने को तैयार हूं. मगर, सरकार, इन राजपूत औरतों को काबू में कर पाना नामुमकिन सा ही है. इन्हें हासिल कर

होली का रंग लाल

ऐतिहासिक कहानी

•

मीनाक्षी

बाकर से कोटा की रानी के हुस्न की तारीफ सुनसुन कर केसर खां के मुंह में पानी आ गया.

पाना वैसे ही है, जैसे चांद को मुट्ठी में दबाना. वे जहरीली नागिनों से कम नहीं होतीं. फिर वह इस वक्त केतून शहर में है. हाड़ा राजपूत उस के एक इशारे पर कट जाएंगे."

"सुना है, उस का खाविंद भौंनंगसा बूंदी से निकाल दिया गया था. खाविंद से अलग रहने वाली औरत भी अपने जाल में नहीं फंसेगी? बाकर, तुम भी कैसी बातें करते हो? फिर हम पठान राजपूतों से कौन कम जवांमर्द हैं?" कहते हुए उस का हाथ मूंछों पर जा पड़ा.

"हजूर, आप ने ठीक ही सुना है. भौंनंगसा को बेहद अफीमखोरी की वजह से बूंदी से निकाल दिया गया था. पर इधर वह भी केतून शहर में ही दाखिल हो गया है."

हम ने तो सुना था कि राजपूतानियां जवांमर्द को ही पसंद करती हैं. इस तरह पीछेपीछे घूमने वाले मर्द की गिड़गिड़ाहट से उन्हें सख्त नफरत हुआ करती है. वे उसे हरम में दाखिल भी नहीं होने देतीं.

केसर खां ने कोटा की रानी के साथ होली खेलने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया था ताकि रानी के हुस्न से खिलवाड़ कर सके. मगर रानी ने उस होली पर जो लाल रंग बिखेरा उस की चमक आज भी इतिहास के पन्नों पर बरकरार है...

फिर वह औरत अपने खाविंद को कैसे चाहती होगी?"

"सरकार, ये राजपूतानियां अजब होती हैं. एक ओर तो उन की पाकदामनी बेमिसाल होती है, दूसरी ओर अपने सुहाग को खुद ही सजा कर लड़ाई के मैदान में भेज दिया करती हैं. पीठ दिखा कर लड़ाई से भाग आने वाले के लिए वे किले के दरवाजे बंद करा देती हैं. भले ही वह उन के लिए ही जान बचा कर आया हो."

"गजब खुदा का. फिर भी, बाकर, वह औरत मुझे पसंद है. लाल मिर्च का मजा जानते हो? सुर्ख, शोख और जलाने वाली होती है. बस, वैसी ही बात औरत के मामले में भी समझो. अगर औरत इशारा करते ही आगोश में आ गिरे तो मजा ही क्या? हम तो शेर हैं. हमें तो मुकाबला करने वाली, नाखून से खून निकाल लेने वाली जोरदार शेरनी को ही काबू में करने में लुत्फ आएगा."

"सरकार तो हर तरह के नरमनरम गोश्त की लज्जत से वाकिफ हैं. मैं क्या तारीफ करूं?" कहते हुए बाकर ने दांत निपोर दिए.

"अच्छा, अब तू बाहर बैठ. किसी हसीन साकी को भेज, जो आंखों में मस्ती ला दे. रक्कासाओं को भी बुला ले. जब तक वह हसीना पहलू में नहीं आती, शराब और खूबसूरती में गम गलत करना चाहूंगा. बस जा."

हुक्म की देर थी. लमहे में रक्कासाओं के साथ साजिदों ने रूबरू पेश हो कर फर्शी सलाम बजाया. एक नाजनीन मय और सागर लिए करीब पहुंच गई. केसर खां के इशारे पर वह एकदम नजदीक बैठ गई. केसर खां ने उसे पहलू में समेट लिया. प्याला भर कर उस हसीना ने बड़े अंदाज से उसे केसर खां के होंठों से लगा दिया.

साजिदों ने साज छेड़. गोरे, नाजुक मेंहदी रचे पांव थिरक उठे. उन पांवों को चूम कर, घुंघरू भी मस्त अंदाज से झूम उठे. शराब का नशा आंखों में नशीला रंग लाने लगा था. सामने एक से एक खूबसूरत परियां थिरक रही थीं. उस ने साकी की ओर देखा.

"इन हसीन परियों को देख रही हो, हसीना?"

"देख रही हूं, हजूर."

"मगर ये सब तुम्हारे नाजुक पांवों की खाक बराबर भी नहीं."

"आप की इनायत है, सरकार, वरना यह नाचीज किस काबिल है."

"सुना है, कोटा की रानी भी बहुत खूबसूरत कही जाती है. क्या वह तुम से से भी ज्यादा हसीन होगी? एतबार नहीं होता."

"हजूर, अपनी तारीफ किसे अच्छी नहीं लगती? पर हकीकत यह है कि माटी की मूरत और चांद सी सूरत का क्या मुकाबला? वह इस जहां की नहीं, जन्नत की जबीं है. बनाने वाले ने उसे फुरसत से बनाया होगा. अगर हजूर गुस्ताखी माफ करें तो यह बांदी कुछ अर्ज करना चाहेगी."

"बोलो, मैं सुनना पसंद करूंगा."

"हजूर, आप ने तारीफ कर इस कनीज को आसमान पर बिठा दिया. यह सरकार की जर्रानवाजी है. वैसे रानी से मेरा मुकाबला चांद को रोशनी दिखाना होगा."

"हूं, रानी को मेरे आगोश में लाने की कोशिश कर सकती हो? मैं तुम्हें सर से पांव तक हीरेमोतियों के अनमोल गहनों से लाद दूंगा."

"सरकार, राजपूत औरत सदाचारी होती है. वह अपने पाकदामन की सजावट कटार से करती है. उस पर आंच आते ही वह आंख उठाने वाले की या अपनी ही जान खत्म करने की कोशिश करती आई है."

"उपदेशक मत बन. [illegible] से मुझे सख्त नफरत है. जरा सा काम भी तुझ से नहीं हो सकता. जा, दूर हट मेरी नजरों से."

बेचारी नाजनीन निगाहें नीची किए, बिना मुड़े अदब से बाहर हो गई. नाच रोक दिया गया. रक्कासाओं के थिरकते पैर सहम कर थम गए. छमछम की जगह अजीब सन्नाटा छा गया. सभी पर एक खौफ छाया हुआ था. साजिंदों के साज खामोश थे. हजूर, तैश में हैं. जाने क्या गजब ढाएं.

"तुम सब लोग यहां से चले जाओ," कड़वाहट के साथ गरज कर केसर खां ने कहा.

सब बाहर चले गए. सभी के सर

दूसरे ही क्षण रानी के हाथों में एक चमकती कटार दमकी, नागिन सी लपलपाती वह छुरी उड़ी और केसर खां की छाती में जा धंसी.

[illegible] हुए केसर खां की वह रात बड़ी बेचैनी से कटी. दिल में यही खयाल उमड़ता रहा कि कैसे उस दिलफरेब हसीना को काबू में किया जाए. मुसाहब भरोसा दिलाते रहे. तसल्ली देते रहे पर उसे चैन न मिला.

होली का त्योहार नजदीक था. केसर खां ने सोचा, 'काश, इस रंगदार त्योहार पर वह काफिर हसीना मेरी रातों को रंगीन बना जाती. एक बार उस ने यह भी सोचा, 'क्यों न होली के मौके पर केतून शहर पर हमला बोल दिया जाए? सभी राजपूत उस वक्त होली के रंग में डूबे होंगे. उन के हाथों में तलवारों की जगह पिचकारियां होंगी. सुनते हैं, वे इस मौके पर कुछ नशा वगैरह भी पीते हैं. किसी को लड़ने का होश ही कहां रहेगा? मुझे रानी मिल जाएगी. साथ ही मेरे सिपाहियों को भी मोहरें और खूबसूरत औरतें हासिल हो

जाएंगी. दुश्मनों का सिर हमेशा के लिए कुचला जा सकेगा. यही ठीक रहेगा.' सोचता हुआ केसर खां खुशी से फूल उठा.

मगर दूसरे ही दिन उसे अपना विचार बदलना पड़ा. रानी का खत ले कर एक घुड़सवार केतून शहर से आया था. रानी ने हाथोंहाथ खत का जवाब भी मंगाया था. क्या लिखा होगा रानी ने? वह अपने को रोक न सका. बेसब्र हो कर खत ले कर खुद ही पढ़ने लगा. मोती जैसे अक्षरों से उस खूबसूरत रानी ने खत में बड़े प्यार से लिखा था :

खां साहब,

राजपूतानियां बहादुरी की कद्र करना जानती हैं. मैं आप की जवांमर्दी की दिलोजान से तारीफ करती हूं. बहुत दिनों से तमन्ना थी कि हजूर के दर्शन हों. आखिर होली का त्योहार ही मुझे इस के लिए उचित लगा. आप ने सुना होगा, होली पर हम दुश्मनों को भी गले लगाते हैं. फिर मैं तो आप को सच्चा सूरमा समझती रही हूं. तभी तो आप ने मेरे अफीमची खाविंद को पलक झपकते हटा कर कोटा पर कब्जा कर लिया था. मेरी ख्वाहिश है कि इस बार होली आप के साथ मनाऊं. उम्मीद है, आप मेरी होली की दावत कबूल फरमाएंगे. मेरे साथ मेरी दोतीन सौ खूबसूरत सहेलियां और बांदियां भी रहेंगी. वे आप के सरदारों और चुनिंदा मुसाहबों व सिपाहियों को रंगीनी से सराबोर कर देंगी. इत्र और गुलाल के साथ कुसुंबा रंग लाएगा. मुझे उम्मीद है, इस होली के बाद हम एकदूसरे के ज्यादा करीब आ सकेंगे.

कोटा की रानी.

खत पढ़ कर केसर खां की खुशी का ठिकाना न रहा. जिसे जाल में फंसाने के लिए वह करवटें बदलता तरकीबें सोचता रहा था, वह खुद ही आ कर उस के दामन में उलझने की तैयारियां कर रहे हैं. जिस बुलबुल को पकड़ने के लिए वह गुलशन में आग लगाने जा रहा था, वह खुशी से उस के हाथ पर आ कर नगमा गाएगी. उस ने बिना देर किए अपनी मंजूरी का खत हरकारे के हाथ भेज दिया.

उस ने जवाब में लिखा था :

रानी साहिबा,

मैं तो आप का पुराना प्रशंसक हूं. आप की होली की दावत कबूल करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है. अच्छा है, इस खुशी के मौके पर हम एकदूसरे के और करीब आ जाएं. यह जान कर और खुशी हुई कि आप की सहेलियां भी आप की ही तरह दरियादिल और खुशमिजाज हैं. बखुशी यहीं तशरीफ लाइए. आप का स्वागत कर आप के साथ होली खेल कर हम अपने को भाग्यवान मानेंगे.

केसर खां.

अफीम और शराब का बेहद सेवन करने के कारण बूंदी के राजकुमार भौनंगसा को बूंदी से निकाल दिया गया था. नशे की वजह से उस पर पागलपन छा जाता था. उस की पत्नी अपने परिवार और सरदारों के साथ केतून नगर चली आई थी. वहां पर हाड़ावंशी राजपूतों के कई घर थे. बाद में भौनंगसा को अपनी इस बुरी आदत पर बहुत पछतावा हुआ. उस के राज्य पर पठानों ने अधिकार कर लिया था. पश्चात्ताप की स्थिति में वह अपनी पत्नी से मिला. उस ने पत्नी की प्रेरणा से अफीम छोड़ दी. शराब का प्याला तोड़ दिया. इन दोनों से मुंह मोड़ कर उस ने कोटा पर फिर प्रभुत्व स्थापित करने की सौगंध भी खाई.

उस की रानी बड़ी बुद्धिमती थी. उस में सौंदर्य और बुद्धि का अनोखा संगम हुआ था. वह जानती थी, केवल शक्ति के बल पर पठानों पर काबू पाने की कोशिश करना आग में कूद कर जल जाने के समान होगा. बलवान शत्रु को

तो बस युक्ति द्वारा ही मार कर मुक्ति पाई जा सकती है. चतुराई से काम लेते हुए उस ने हाड़ा सरदारों से भी राय ली. उन्हें अपनी योजना बताई. फिर विचार कर उपर्युक्त पत्र केसर खां को भिजवा दिया. उसे पता चल गया था कि केसर खां उसे पाने के लिए दीवाना हो रहा है. उस ने रानी का प्रस्ताव झट स्वीकार कर लिया.

केतून नगर में केसर खां के जासूस गुप्त रूप से घूम रहे थे. वे जिधर गए, उन्हें बस होली की तैयारी की धूम लगी. रानी ने नगर की सब बालाओं को पठानों के साथ होली खेलने का निमंत्रण दिया था. गीतनृत्य का अभ्यास चल रहा था.

कुछ लोग इस निमंत्रण को ले कर रानी की निंदा भी कर रहे थे. रानी के समर्थक कह रहे थे कि होली पर दुश्मन को दोस्त बनाने की हमारी परंपरा है. हम क्यों न पठानों की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाएं. खून की होली तो बहुत खेल चुके. क्यों न प्रेम से, मुहब्बत से मित्रता का रंग बिखेरें. विरोधियों को कन्याओं को सम्मिलित करने की बात नहीं भा रही थी.

गुप्तचरों ने देखा, चारों ओर तलवारों की जगह पिचकारियां चमकाई जा रही हैं. नृत्य का सामूहिक अभ्यास किया जा रहा है. एक से एक सुंदरियां होली को रंगीन बनाने की तैयारी में हैं. कड़ाहों में रंग तैयार किए जा रहे हैं. ये सारी खबरें जासूसों ने केसर खां को लिख कर भेज दीं.

इस सूचना से केसर खां को ही नहीं, सरदारों को भी खुशी हुई थी. सिपाहियों में भी मस्ती आ गई थी. उन्हें भी सुंदरियों के साथ रंगरंगलियां मनाने का मौका मिल रहा था. कटार सी ही तीखी धार वाली राजपूत नारी पिचकारी की मार के साथ नयनों के वार करने उस त्योहार पर आ रही थीं.

कोटा में भी होली खेलने की तैयारियां चलने लगीं. स्वागत द्वार खड़े कर के उन पर बंदनवार बांधे जा रहे थे. मद की बोतलें इकट्ठी की जा रही थीं. नगर के चारों ओर सफाई चल रही थी.

हर जगह एक ही चर्चा थी. कल हसीनों का हजूम हजूर के साथ होली खेलने आएगा. सड़कों पर सुबह से ही गुलाबजल छिड़काए जाने का हुक्म हो चुका था. गुलाल के थाल सजा कर रख लिए गए थे.

दूसरे दिन कोटा दुर्ग के द्वार प्रभात बेला में ही खुल गए थे. पठान सरदार केसर खां उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था.

निश्चित समय पर बाजों की आवाजें सुनाई देने लगीं. सभी उत्सुक हो उठे. केतून नगर की ओर से सुंदर नारियां सजधज कर चली आ रही थीं. जहां तक दृष्टि जाती थी, सुंदरियां ही सुंदरियां दिखाई देती थीं. सलमेसितारों की जगमगाहट, सूरज की किरनों से आंखमिचौनी खेलती हुई आंखों में चकाचौंध उत्पन्न कर रही थीं. सुंदरियों के आगेआगे बाजे वालों का समूह था. ढोल बजाते, तुरहा से आकाश कंपाते नौजवान वादक चले आ रहे थे. बिना बाजों के उत्सव का रंग कैसा? वे युवक भी पगड़ी पहने लंबे रंगीन अंगरखों से सजे थे.

युवतियों के हाथों में गुलाल भरी थालियां थीं. गुलाल जैसा ही उन के बदन का रंग भी लाल था. हंसिनी सी चाल. माथे पर दमकती शोख सुर्ख बिंदिया. गालों पर लाज का रंग. हाथों में चूड़ियों का झीना सा जलतरंग बज रहा था. पठानों ने आज होली का पूरा मजा उठाने के लिए गहरी छान रखी थी. वे अपलक उन गोरियों के मतवाले नयनों के कटाव में और तन के कसाव में घाव खाए से खो गए. उन्हें होश ही न रहा.

हजूम पास आ गया. उधर से पठानों का दल भी बढ़ा. गुलाल के लाल बादल उठ कर आकाश को और भी रंगीन बनाने लगे.

सुंदरियों के साथ आए हुए सेवक पठानों को केसरकस्तूरी पड़ा स्वादिष्ट माजून पेश कर रहे थे. कुछ के हाथों में पान की तश्तरियां थीं. सुंदरियां सब से बारबार माजून खाने का अनुरोध कर रही थीं. वे उन की मुसकराहट पर दिलोजान से लुटते, उन की बात न टाल पाते. शराब के ऊपर माजून का नशा और गहरा हो कर छाता जा रहा था. माजून में पड़ी भांग, धतूरे और तांबे के पैसों से और भी जहरीली और नशीली बनाई गई थी. सिपाहियों के पैर लड़खड़ाने लगे थे.

गुलाल और सूखे रंगों की मूठें मारी जाने लगीं. पठान मतवाले हो कर उन युवतियों को भुजाओं में भर लेने के लिए बढ़ते. पर वे बिजली सी उन की पकड़ से बाहर हो जातीं. वे फिर दौड़ते तो तरुणियां मुट्ठियां भरभर कर उन पर गुलाल छोड़ देतीं. इस से उन के कामातुर कदम थम जाते. सुंदरियां कुछ दूर जा कर खिलखिलाने लगतीं.

अनेक नगरवासी यह होली देखने आ जुटे थे. आज पठान पूरी मस्ती में थे. एक साथ इतनी सुंदरियों को देख कर वे होश गंवा चुके थे. नशे ने उन्हें और मत्त कर दिया था.

केसर खां ने खुद रानी को कई बार दबोचना चाहा. पर रानी हर बार उस की पकड़ से निकल जाती. हर ओर युवतियां गुलाल उड़ाने के साथ थिरक रही थीं. अपने प्रयास में हर बार असफल हो कर केसर खां खीझता जा रहा था. उस ने दुर्ग के द्वारपाल को संकेत किया. उस ने उस से पहले ही कह रखा था कि इशारा करते ही दुर्ग के द्वार बंद कर देना, जिस से रानी और उस की सखियां वापस केतून नगर न जा सकें. शिकार को हाथ में पा कर छोड़ना उस ने न जाना था.

किंतु उस की इच्छा मन ही में रह गई. रानी ने उसे संकेत करते देख लिया. पल भर में बाजों की आवाज और तेज हो गई. चूंकि रानी ने उन्हें इंगित किया था.

दूसरे क्षण रानी के हाथों में एक चमकती कटार दमकी. नागिन सी लपलपाती वह छुरी उड़ी और केसर खां की छाती में जा धंसी. इस के साथ ही सभी सुंदरियों के घाघरों में छिपी तलवारें बाहर आ गईं.

(शेष पृष्ठ 146 पर)

मन की खिड़की

मन की खिड़की को
खुली ही रहने दो
बंद मत करो.

आने दो भीतर
ऊषा की किरणों को,
विहंगों के कलरव को,
हवा की लहरों को,
फूलों की सुगंधों को.

आने दो भीतर जलती दोपहर,
आने दो धूल भरे अंधड़,
आने दो तूफानी बौछारें,
घोर नैश अंधकार,
किंचित मत डरो.

आश्वस्त रहो
फिर झांकेगी
इसी खिड़की में से भोर,
पंछी फिर चहकेंगे,
फूल फिर महकेंगे.

मन की खिड़की को
बंद मत करो.

—तेजनारायण काक

गृहशोभा
बाल पोशाक विशेषांक
अप्रैल अंक
विशेष सजधज के साथ अब ला रहा है बच्चों के लिए 30 से अधिक नवीनतम डिजाइनों की सुबह, शाम, घर, बाहर, पार्टी, त्योहार व रात को पहनी जाने वाली एक से बढ़ कर एक पोशाकें--आप स्वयं सिएं या अपने दरजी से सिलवाएं. गृहशोभा का यह विशेषांक आप के बच्चों को ध्यान में रख कर विशेष रूप से तैयार किया गया है.
स्मोकिंग, फ्रिल, मोटिफ, कढ़ाई व दो रंगों के तालमेल वाली ऐसी अनूठी पोशाकें जिन को देखते ही आप के लाडलेलाडलियां पहनने के लिए मचल उठेंगे.
साथ ही साजसज्जा, स्वास्थ्य व सौंदर्य, बुनाईकढ़ाई, बागबानी, दांपत्य, बच्चों व फिल्मों संबंधी सचित्र सामग्री घरगृहस्थी की समस्याओं पर कहानियां व सभी स्थायी स्तंभ.
अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करा लें.
K

आप का भाषा ज्ञान

निम्नलिखित परिभाषाओं के लिए उपयुक्त शब्द बताइए—अपने उत्तर का मिलान पृष्ठ 160 पर दिए गए शब्दों से करें.

1. कर्मचारियों के असहयोगी रवैये के कारण मालिकों को कारखाने के फाटक पर ताला लगा कर उन्हें बाहर रखने का कार्य.

2. किसी मंत्रिमंडल में या किसी संस्था के अध्यक्ष आदि में विश्वास प्रकट करने के लिए उपस्थित किया जाने वाला प्रस्ताव.

3. केंद्र में स्थापित सत्ता, अधिकार आदि को आसपास के अंगों, अधीन राज्यों आदि में बांटना.

4. किसी विधान, अधिनियम आदि का वह मसौदा जो पास होने के लिए लोक सभा, विधान सभा में रखा जाए.

5. कारखाने आदि में लगी हुई पूंजी पर मिलने वाले ब्याज या लाभ की रकम का वह हिस्सा जो वितरित किए जाने पर हिस्सेदार को मिले.

6. किसी राज्य में कागजी मुद्रा का चलन असाधारण रूप से बढ़ जाना, जिन से वस्तुओं के दाम बहुत चढ़ जाते हैं.

7. किसी सरकार द्वारा अन्य देश या देशों की मुद्राओं की तुलना में अपने देश की मुद्रा का मूल्य घटा देना.

8. किसी सरकारी, अर्द्धसरकारी या व्यापारिक संस्था आदि में काम करने वाले कर्मचारी को कार्य से अवकाश ग्रहण कर लेने पर भरणपोषण में सहायक होने की दृष्टि से दी जाने वाली वह सहायता जो उस के वेतन में से कटने वाले उस के अपने अंश के साथसाथ नियोजकों द्वारा निधि के रूप में जमा की जाती है.

9. नौकरी, आर्थिक सहायता आदि दिलाने में अपने भाई, भतीजे या किसी अन्य संबंधी के साथ विशेष पक्षपात करना.

10. वह रासायनिक खाद जो भूमि की उर्वरता यानी उत्पादन शक्ति बढ़ाने में सहायक हो.

11. कुछ निश्चित बातों, सुझाव आदि की सूचना देने के लिए चारों तरफ विभिन्न संस्थाओं, व्यक्तियों आदि के पास भेजा जाने वाला पत्र. ●

मनुष्य और अन्य जीवधारियों में सब से बड़ा अंतर यही है कि मनुष्य बोल सकता है, अपनी बात दूसरे मनुष्य तक पहुंचा सकता है और दूसरे की सुनसमझ सकता है. आप अपनी अधिक से अधिक बात थोड़े से थोड़े शब्दों में कह सकें, यही मानवीय ज्ञान का रहस्य है.

आप को जो कहना होता है उस के लिए उपयुक्त शब्द नहीं मिलता. यह स्तंभ आप की इसी कठिनाई को हल करने का एक प्रयत्न है. इस से आप का भाषा ज्ञान बढ़ेगा और दैनिक जीवन में सुविधा मिलेगी.

—संपादक

बिजली चली गई

कहानी • मंजु दिनेश

कारखाने की बिजली बारबार चली जाने से मुझे काफी नुकसान उठाना पड़ता था. उधर बिजली दफ्तर वाले हर बार यही कहते कि उस के यहां से सप्लाई सही हो रही है. आखिर मैं ने इस का कारण जानने के लिए सतर्कता दिखाई और तब सही मगर आश्चर्यजनक कारण मेरे हाथ लग गया.

सुबह की पाली प्रारंभ हुए अभी एक घंटा भी न हुआ था कि पूरे कारखाने की बिजली चली गई. सारे मजदूर अपनीअपनी मशीनों पर हाथ पर हाथ धर कर बैठ गए. सारा काम रुक गया.

मैं ने सोचा, शायद बिजलीघर से ही बिजली आनी बंद हो गई होगी, थोड़ी देर में आ जाएगी. ऐसा अकसर होता रहता था, इसलिए मैं भी चुपचाप बैठा रहा.

पर जब आधा घंटा इंतजार करने के बाद भी बिजली नहीं आई तो मैं परेशान हो उठा. मैं ने बिजली वालों को फोन किया तो पता चला कि बिजली की सप्लाई तो एकदम ठीक है. हमारे अपने क्षेत्र से भी और कोई शिकायत उन्हें प्राप्त नहीं हुई है. बिजली वालों ने आशंका व्यक्त की कि हो सकता है या तो हमारे यहां गड़बड़ है अथवा बीच में वितरण केंद्र में कुछ गड़बड़ है.

मैं ने शिकायत लिखवा दी तथा उन्होंने तुरंत मैकेनिक भेज देने का यकीन दिलाया.

दफ्तर के बाहर तब तक मजदूरों का जमघट लग गया था. काफी होहल्ला होते देख मैं भी बाहर आ गया.

उस भीड़ में सब से आगे रामलखन था, जो मजदूरों की यूनियन का नेता था.

रामलखन मेरे पास आ कर बोला, "साहब, बिजली तो आने से रही."

"क्या मतलब?" मैं चौंक पड़ा.

रामलखन बोला, "हजूर, बिजली के तार से चिपक कर एक बंदर मर गया है. जब तक बंदर के क्रियाकर्म का उचित प्रबंध न होगा, बिजली नहीं आएगी."

मेरा माथा ठनका. हो न हो यह इसी ब्राह्मण की नई चाल होगी. पहले भी कई बार मेरे पिताजी को वह बेवकूफ बना चुका था. वह हर बार कोई नया तरीका अपनाता था. वह ये सब हरकतें मेरे पिताजी से पैसे ऐंठने के लिए किया करता था. पिताजी सीधे थे. उन्हें वह ठग लेता था. साथ ही वह इस तरह अपने मजदूर साथियों पर भी अपनी धाक जमा लेता था कि मालिक उस की बात कभी नहीं टाल सकते. इस प्रकार वह हमारे मजदूरों का नेता बना हुआ था.

मैं रामलखन की बात अनसुनी करते हुए पावर रूम की

इलेक्ट्रिशियन कई बार फ्यूज लगा चुका था, पर फ्यूज लगाते ही फिर जल जाता था. इस से वह बहुत परेशान था. कटग्राउट लगाते ही फ्यूज उड़ जाता था.

मजदूर भी पावर रूम के बाहर आ गए थे. रामलखन सब से आगे खड़ा नारे लगवा रहा था. सभी मजदूर उस का साथ दे रहे थे.

"मालिक के हित में काम करेंगे, काम के लेंगे पूरे दाम."

"बिजली रहे या चली जाए, हम तो लगे पूरे दाम."

भी बढ़ाई गई. फिर धूपबत्ती जलाई गई. सब काररवाई रामलखन करवा रहा था.

मैं ने डिस्ट्रीब्यूशन बोर्ड का बटन बंद करवा दिया. इस से शार्ट कहां हो रहा था, इस का पता लगाया जा सकता था. अब फ्यूज फिर लगाया गया. लेकिन फ्यूज फिर उड़ गया. इस का मतलब था शार्ट मेन पावर डिस्ट्रीब्यूशन व सब डिस्ट्रीब्यूशन के बीच कहीं था. इन दोनों जगहों को खुले तारों द्वारा खंभों पर ले जा कर जोड़ा गया था.

रामलखन काफी बेचैन दिखाई पड़
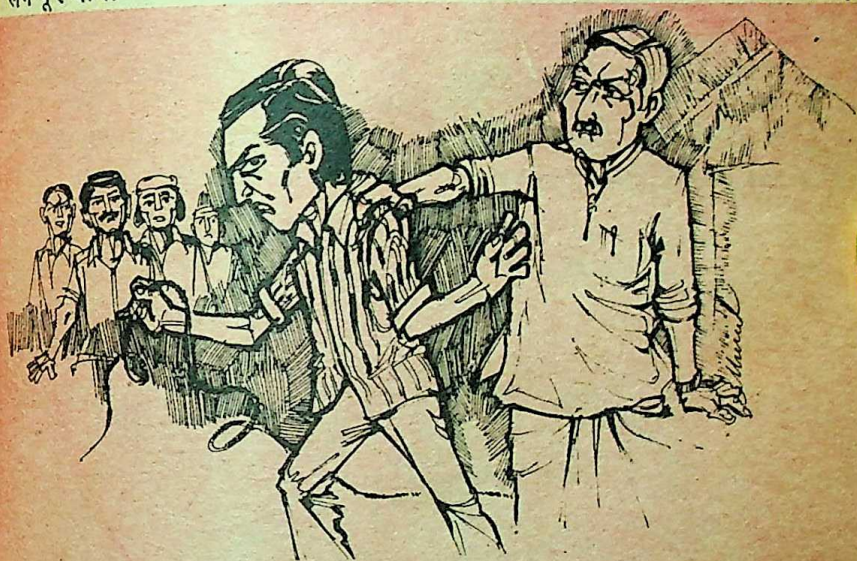
रामलखन बीचबीच में मुझे संबोधित कर के कहता भी जा रहा था, "जब तक बंदर के क्रियाकर्म का समुचित प्रबंध न होगा, बिजली नहीं आ सकेगी. सब रामदूत हनुमान की माया है. आप सब लोग खुल कर दान दें. धर्म के नाम पर पीछे न हटें."

देखतेदेखते वहां एक ठेला आ गया. ठेले पर सफेद चादर बिछा कर बंदर को लिटा दिया गया. उस के सिर को छोड़ कर सारा शरीर ढक दिया गया. उस पर फूलमालाएं

रहा था. पर मैं भी पूरी स्थिति का पता लगा लेना चाहता था. मैं ने सब मजदूरों के समक्ष रामलखन को पूरे 200 रुपए बंदर के क्रियाकर्म के लिए दे दिए थे. मजदूर मेरी धर्मपरायणता पर वाहवाह करने लगे थे.

फ्यूज एक बार पुनः लगाने पर उड़ गया. इस पर रामलखन मुझ से बोला, "साहब, बड़े मालिक की तरह आप खुद फ्यूज लगाएं. इस बार फ्यूज नहीं उड़ेगा. मैं हनुमान का भक्त हूं, और हनुमान मुझ से कह रहे हैं कि फ्यूज तुम्हारा मालिक लगाए तो नहीं उड़ेगा.

रामलखन को पीछे हटते देख मैं सचेत हो गया. मैं उस के पीछे लग गया. वह एक तरफ कुछ इशारा करने लगा. सामने पेड़ की टहनी पर हरकत हुई. एक बांस बाहर आया. बांस से बिजली के तारों पर पड़ा एक लंबा तार खींच लिया गया.

मैं ने दौड़ कर रामलखन की गरदन पकड़ ली. वह हक्काबक्का रह गया. उस की जबान बंद हो गई.

तभी सब मजदूर भी वहां आ गए थे. रामलखन की करतूत को मैं ने उसी के मुंह से कहलवाना बेहतर समझा. उस ने बताया :

"मैं मजदूरों की नासमझी व धर्मभीरुता का फायदा उठाया करता था. मृत बंदर को मैं ही पावर रूम में डाल गया था.

"मैं बंदर की वजह से बिजली गई कह कर आप से व सब से पैसे बटोरना चाहता था. इस से मजदूर समझते कि मैं हनुमान का भक्त हूं. वे मुझे पंडित के साथसाथ अपना हितैषी भी समझने लगते. साथ ही आप पर मेरी भक्ति व नेतृत्व का सिक्का जम जाता."

रामलखन का क्या किया जाए, इस का निर्णय मैं ने मजदूरों पर छोड़ दिया. सभी का एक स्वर में निर्णय था, "ऐसे दगाबाज, पैसे के लालची, मजदूरों के तथाकथित नेता को तुरंत कारखाने से निकाल दिया जाए."

मैं ने तीन माह की तनख्वाह के साथ रामलखन को कारखाने से निकाल दिया.●

"जिस दिन मैं मैनेजर से लड़ता नहीं मुझे लगता है मैं ने उस दिन कोई काम ही नहीं किया."

लघु उद्योग प्रबंध

स्वस्थ आलोचना से उत्पादन बढ़ाइए

लेख • कि. स. भटनागर

श्याम एक संस्थान में मैनेजर हैं. सुबह डाक देख रहे थे कि एक पत्र ने उन का संतुलन बिगाड़ दिया. आव देखा न ताव मारे गुस्से के अपने कमरे से निकल कर सीधे उस मातहत की मेज पर गए और उस से कुछ पूछे बिना डांटफटकार आरंभ कर दी. सारे कर्मचारी तमाशा देखते रहे. वह कर्मचारी तो मारे शर्म के जमीन में ही गड़ गया. उन के जाने के बाद भी बेचारा बहुत देर तक सिर न उठा सका.

किसी भी मातहत कर्मचारी से भूल हो जाना स्वाभाविक है. मगर उसे उस की भूल का एहसास कुछ इस तरह कराइए कि किसी का अहित न हो यानी आपसी सद्भाव भी बना रहे और उत्पादन में वृद्धि भी हो...

मोहन एक फैक्टरी में सुपरवाइजर है. दोपहर के भोजन अवकाश पर जा रहा था कि फोरमैन ने बुलवा भेजा. कमरे में घुसते ही किसी गलती के लिए बुरी तरह डांट पड़नी शुरू हो गई. उस का मन इतना खराब हो गया कि साथियों से हंसनाबोलना तो दूर खाना भी न खा सका. उस का मन बुझ सा गया.

शाम के चार बज रहे थे. दिन भर का काम निबटा कर सोहन घर जाने की तैयारी कर रहा था कि उस के बास का बुलावा आया. वह भरे बैठे थे. दिन में किसी ने उस की शिकायत कर दी थी. बास ने उसे कहने और न कहने योग्य सब कह दिया. यहां तक कि काम से छुट्टी करने तक की धमकी भी दे डाली. रोनी सी सूरत बनाए पिटापिटा सा वह कमरे से बाहर निकल आया. किसी तरह काम समेट कर घर चला आया.

सिलसिला यहीं समाप्त नहीं हुआ

पत्नी ने सुबह चलते समय कुछ सामान लाने को कहा था, पर वह भूल गया. घर पहुंचने पर जब पत्नी ने उस से सामान न लाने के लिए जवाबतलब किया तो सोहन ने अपनी भड़ास पत्नी पर निकाल दी. बेचारी मुंह लटकाए चली गई. उस ने बच्चों को भी अपने पास नहीं आने दिया. रात को ठीक से नींद नहीं आई. सवेरे उठा तो बदन टूट रहा था, मन खराब था. घर वाले परेशान कि क्या हो गया. उसी मूड में दफ्तर गया. तबीयत ठीक न होने से फिर गलती हुई और डांट पड़ी. यह सिलसिला फिर चलता ही गया. अंत में वह टूट गया. दफ्तर ने नाहक एक कर्मठ कर्मचारी खो दिया, पत्नी ने एक पति और बच्चों ने एक अच्छा पिता खो दिया.

ये तो चंद उदाहरण हैं उन अनावश्यक आलोचनाओं और उन के परिणामों के जो हर दफ्तर, हर फैक्टरी और हर परिवार में हर दिन घटते रहते हैं. इस के कारण हर जगह घोर असंतोष पलता है. ये सब ध्वंसात्मक आलोचना के नमूने हैं. यदि आलोचना स्वस्थ हो तो न आपसी संबंध बिगड़ें और अपेक्षित परिणाम भी प्राप्त होते रहें.

अधिकारियों का दायित्व

हर प्रबंधक की यह जिम्मेदारी होती है कि वह दिए गए या निर्धारित काम को एक निश्चित अवधि में और एक बंधी रकम में पूरा कराए. इसे संपन्न करने के लिए उसे कुछ मातहत कर्मचारी और आर्थिक व प्रशासनिक अधिकार दिए जाते हैं. इस में ध्यान रखने की बात यह है कि काम तो मातहतों के द्वारा ही पूरे किए जा सकते हैं. वे मातहत दफ्तर में हो सकते हैं, घर में हो सकते हैं या दूर कार्यक्षेत्र में. जो कार्य प्रबंधक दफ्तर में व अपनी फैक्टरी में कराता है वही कार्य पति व पत्नी अपने परिवार में करते हैं.

गलती करना एक मानवीय कमजोरी है. कहावत है—"गलती इनसान से ही होती है." जब सैकड़ों व्यक्ति किसी कार्य को करेंगे तो गलतियां होंगी ही. पलपल पर निर्णय लेने पड़ते हैं. कभी वे निर्णय गलत भी हो सकते हैं. कभी कोई मेहनत से काम करता है, पर अपेक्षित परिणाम नहीं मिलता. कोई काम ही नहीं करता और कोई गलत तरीके से काम करता है. प्रबंधक को तो इन तमाम परिस्थितियों में निर्धारित अवधि में काम करवा कर देना होता है. काम पूरा होना उस की सफलता तथा अधूरा रहना या बिगड़ जाना विफलता है.

अतः उसे अपने कर्मचारियों को लगातार अच्छा, और अच्छा काम करने की प्रेरणा देनी होती है. यह आवश्यक हो जाता है कि वह कर्मचारियों को उन की समस्त गतिविधियों से व उन की कार्यक्षमता से समयसमय पर अवगत करवाता रहे ताकि वे यह जानें कि वे क्या रहे हैं व उस में कहां सुधार की आवश्यकता है.

उसे अपने संस्थान में अनुशासन रख कर कर्मचारियों को उपलब्धि के प्रति जागरूक रख कर उन से उचित मात्रा में कार्य लेना होता है.

यह उस समय तक संभव नहीं है, जब तक समय पर प्रबंधक अपने मातहतों को उन की गलतियां और त्रुटियां न बताएं. सामान्य भाषा में इसे ही आलोचना करना कहते हैं.

किसी की भी आलोचना करना कोई सुखद कार्य नहीं है, चाहे वह कर्मचारी की हो या परिवार के सदस्यों की या मित्रों की. इसी लिए ज्यादातर प्रयास यही रहता है कि इस प्रमुख पर अप्रिय कर्त्तव्य से जहां तक बचा जा सके, बचा जाए. मानव स्वभाव है कि वह अपने काम की प्रशंसा चाहता है. यह एक ऐसी भूख होती है, जिस के पूरा न होने पर आपसी सद्भाव कम होता है. आलोचना इस के विरुद्ध है. जिस व्यक्ति की आलोचना हुई है, वह कभी भी आलोचना को सही अर्थों में नहीं लेता, क्योंकि आम तौर पर कोई भी अपनी गलती को मानने को तैयार नहीं होता.

प्रबंधक सोचता है कि कहीं तीखी आलोचना उसी को न ले डूबे. पिता सोचता है कि क्यों आलोचना कर के परिवार की शांति भंग की जाए. पति व पत्नी भी कई बार इसी कारण उपेक्षा कर जाते हैं. हर कोई जानता है कि आलोचना किसी को भी पसंद नहीं होती. आशंका रहती है कि कोई तमाशा न खड़ा हो जाए. कभीकभी सहयोगियों व निकट बंधुओं की भावनाओं को ठेस न पहुंचाने की भावना के कारण भी आलोचना से बचा जाता है.

पर इस सब के बावजूद यह अप्रिय कर्त्तव्य भी निभाना ही होता है. यदि हम गलती करने वाले कर्मचारियों को उन की गलती का एहसास करवा कर या गलत रास्ते पर जाते परिवार के सदस्यों को समय रहते नहीं रोकते तो स्वयं को गढ़े में डालते हैं. ऐसे में नौकरी से हाथ धोना पड़ सकता है, परिवार बिखर सकता है. जब यह कर्त्तव्य अनिच्छा से अथवा मजबूरी में निभाया जाता है तो परिणाम भी अपेक्षित नहीं प्राप्त होते.

प्रत्येक व्यक्ति को सफाई देने का अवसर दीजिए. हो सकता है उस से भूल न हुई हो और इस तरह एक सही कर्मचारी हतोत्साह होने से बच जाए.

अधिकतर आलोचना निम्न लिखित तरीकों से की जाती हैं:

कुछ अधिकारी दोषी को बुला कर सीधे बोलना आरंभ कर देते हैं, उसे बोलने का अवसर ही नहीं देते.

कुछ अधिकारी दोषी के कमरे में आते ही डांटफटकार आरंभ कर देते हैं और बरसते रहते हैं जब तक कि वह चला नहीं जाता.

ऊपर दिए गए उदाहरण इसी कोटि के थे. इन में कर्मचारी सुधरता नहीं और बिगड़ता है.

इस के विपरीत कुछ अधिकारी संबद्ध कर्मचारी को चाय पर बुलाएंगे और धीरे से कहेंगे, "देखो, राम, जिस तरह तुम ने काम किया है उस तरह मैं नहीं करूंगा." फिर वह बातों का रुख पलट देंगे.

ऐसे भी हैं जो गलती करने वाले व्यक्ति से बात ही करना बंद कर देते हैं, यह सब से खराब दृष्टिकोण है.

इन सब तरीकों से मतलब हल नहीं होता. न तो कर्मचारी और न दूसरे व्यक्ति प्रेरणा पाते हैं. आलोचना का सही प्रयोजन होता है कि आलोच्य व्यक्ति अपनी गलती समझे और फिर उत्साह से अपना कार्य करे. साथ ही उस में कोई दुर्भाव भी पैदा न हो.

आलोचना करने के कई तरीके हैं

कुछ ऐसे तरीके हैं जिन्हें अपनाने से ये दोनों अपेक्षित परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं. इस से दोनों का लाभ होता है. आपसी सद्भाव भी बना रहता है, जिस से उत्पादन की वृद्धि होती है.

किसी की भी आलोचना करने से पहले चाहे वह आप का कर्मचारी हो, पति हो या मित्र, यह निश्चय कर लेना चाहिए कि आलोचना क्यों आवश्यक हो गई है.

क्या हम उसे उस के कार्यों के परिणामों से अवगत कराना चाहते हैं?

क्या हम अपेक्षा करते हैं कि वह दोबारा ऐसी गलती न करे?

क्या हम उसे एक अवसर और देना चाहते हैं?

क्या आलोचना इसलिए कर रहे हैं कि हम स्वयं उस से अच्छा काम कर सकते हैं या सिर्फ इसलिए कि हम अपनी व्यक्तिगत नापसंद उसे डांट कर बतलाना चाहते हैं?

आलोचना करने का उद्देश्य

इन प्रश्नों का स्वत: ही उत्तर दे कर आप किसी की आलोचना करने के सही कारण को समझ लें और तब ही उस व्यक्ति को अपने पास बुलाएं या उस के पास जाएं. गलती तो हो गई है, आप को देखना यह है या यह पता लगाना है कि वह किस कारण हुई, कैसे हुई, कब हुई और क्यों हुई. यह मान कर कभी नहीं चलना चाहिए कि गलती जानबूझ कर की गई है. ऐसा शायद ही कभी होता हो. काम करने के पहले हर कोई आगापीछा सोच लेता है. यह सोचना अपनी बुद्धि के ही अनुसार होता है. अत: जैसा आप सोचते हैं या जैसा आप कर सकते हैं, वैसा हर दूसरा आदमी करे यह संभव नहीं. ऐसे में आलोच्य व्यक्ति से बात कर ली जाए तो परिणाम सुखद होंगे.

किसी को बुला कर मात्र यह कहना कि आप का काम करने का ढंग सामान्य ढंग से अलग है, कोई अर्थ नहीं रखता. इस बारे में खासखास बातें व तथ्य जो आप की बात की पुष्टि करते हैं, आप की उंगलियों पर होने चाहिए. तथ्यों पर आधारित होने से आप की आलोचना प्रभावशाली हो जाती है. किसी के भी कार्य करने के ढंग व विचार प्रणाली को बदलना आसान नहीं होता. अत: ध्यान व्यक्ति पर केंद्रित न कर के तथ्यों पर करना उचित होता है.

आलोचना सही समय और

जगह पर होनी चाहिए. यदि पेट्रोल की टंकी के पास कोई सिगरेट पी रहा है तो तत्काल ही उसे रोकना होगा. पर यदि ऐसी स्थिति नहीं है तो आलोचना सब के सामने नहीं होनी चाहिए. वह बंद कमरे में अकेले की जाए ताकि दोषी का सिर अपने साथियों के सामने नाहक नीचा न हो. उद्देश्य तो उसे सुधारना होता है, न कि उसे दूसरों के सामने जलील करना. मेरे एक मित्र का कमरा ऊपर से खुला हुआ था. वह गलत काम करने वाले कर्मचारियों को बुला कर बुरी तरह डांटते तो सारे दफ्तर के लोग सुनते. नतीजा यह होता कि दफ्तर में किसी को भी उन से कोई सहानुभूति नहीं रही. बाद में कर्मचारियों का असहयोग बढ़ जाने से उन का तबादला हो गया.

इस का विशेष ध्यान रखा जाए कि किसी को भी दोपहर के भोजन के समय न डांटा जाए. ऐसा होने से उस का व उस के साथियों के भोजन का मजा बिगड़ जाता है. आदमी तो आदमी, आप के पालतू कुत्ते को भी यह बर्दाश्त नहीं होता कि आप उसे उस के खाने के समय छेड़ें.

आलोचना करने का समय

आलोचना करने का समय ऐसा चुनना चाहिए कि संबद्ध व्यक्ति को उसी दिन आप से मिल कर अपने कार्य या व्यवहार का स्पष्टीकरण देने का अवसर मिल सके. साथ ही आप इस मूड में आ सकें कि उस की बातें सुन सकें. यदि उस ने ये तथ्य उसी समय बताने की कोशिश की होती तो हो सकता है आप अपने बिगड़े मूड में उस की बात सुनते ही न. उलटा जबानदराजी का आरोप उस पर और लगा देते. अपने स्वयं के अनुभव से मैं जानता हूं कि अनेक बार दूसरी बैठक में ही अपने बास को समझा सका कि मेरा कथन ठीक था. तब उन्होंने उसे मान कर अपना निर्णय भी बदल दिया था. इस दूसरी बैठक में संबद्ध व्यक्ति अपनेअपने अधिकारी पर यह छाप भी डाल सकता है कि व्यक्तिगत रूप से

"यह क्या पत्र लिखा है? जरा और कठिन सरकारी भाषा लिखो. यह तो आसानी से समझ आ जाता है."

वह उस का आदर करता है. और इस आलोचना का उस के व्यक्तिगत संबंधों पर कोई असर नहीं पड़ा है.

इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि जब कर्मचारी घर जाने की तैयारी में हो तब अपने को संयत रखा जाए. इस बेवक्त की आलोचना या डांट से उस की या उस के परिवार की शाम नष्ट हो जाती है. वह अपनी बात आप से तो कह नहीं सकेगा, इस से उस का मन और बेचैन हो जाएगा. यह किसी के भी हित में नहीं होता. उस की रात आराम से नहीं बीतती तो सवेरे वह थका सा उठता है, उस का मूड उखड़ा होता है. वह उसी मूड में दफ्तर आता है तो पुनः गलतियां करता है.

आलोचना कितनी और कैसे करें

आलोचना करने से पहले आप को यह स्पष्ट ज्ञात होना चाहिए कि आप चाहते क्या हैं? यह एक मूल बात है. इस बात को ध्यान में रख कर ही बातचीत के दौरान आप दोषी व्यक्ति को प्रभावशाली ढंग से समझा सकते हैं कि आप की इच्छा ठीक काम के अलावा उसे लाभ पहुंचाने की भी है.

जब यह बातचीत हो रही हो तो दोषी व्यक्ति के चेहरे के उतारचढ़ाव देखते रहना अच्छा रहता है. यदि वह बात नहीं समझ रहा है तो और कहिए. पर यदि वह अपनी गलती समझ रहा है तो फिर अधिक न कहा जाए. वहीं बात खत्म कर दी जाए.

गलती बतला कर यह भी देखना चाहिए कि वह गलती फिर तो नहीं हो रही है. पर इस का मतलब यह नहीं कि आप उस के पीछे ही पड़ जाएं. ऐसा करने से बात और बिगड़ जाती है, बनती नहीं. किसी भी कमी को दूर करने में थोड़ा समय लगता है. यह तो आप को देना ही होगा. आलोचना करने से संबद्ध व्यक्ति का आत्मविश्वास डगमगा जाता है, उसे इतना समय तो देना ही होगा कि वह उसे समझ पा सके. अतः समझदारी इसी में है कि डांटने के बाद उसे समय दे कर सामान्य होने तथा सुधरने दिया जाए. आलोचना करना मन में एक चोट पहुंचाने जैसा है.

शरीर का घाव भरने में जितना समय लगता है, बात या मन का घाव भरने में उस से कहीं अधिक समय लगता है. डांट कर, चोट पहुंचा कर, उस पर मरहम भी आप को ही रखना होगा.

आलोचना करने में व्यंग्य का सहारा नहीं लेना चाहिए और न किसी दूसरे से तुलना करनी चाहिए. इस तरीके से उस में हीन भावना भर जाती है, जिस के परिणामस्वरूप उस के आत्मविश्वास में कमी आती है.

यह भी ध्यान रखना चाहिए कि एक ही बार की आलोचना या डांट का सही असर हो जाए. बारबार उसी बात को न दोहराना पड़े. अतः आप के सामने यह स्पष्ट होना चाहिए कि आप क्या चाहते हैं.

आलोचना करने से पहले

क्या आप आदमी के काम का स्तर सुधारना चाहते हैं?

क्या आप उस के काम करने की गति बढ़ाना चाहते हैं? या

क्या आप उस द्वारा किए उत्पादन की लागत कम करना चाहते हैं?

इस विषय में कर्मचारियों को जितना अधिक ज्ञान होगा, उतना ही संस्थान के लिए अच्छा होगा. इस जानकारी से वे आगे कम गलती करेंगे और आलोचना के अवसर कम आएंगे.

जब आप की आलोचना करने की इच्छा न हो, तब जानबूझ कर या अनजाने में ऐसी बात न कहें जो आलोचना प्रतीत हो. अकसर बास की मामूली सी डांट को भी लोग आलोचना के रूप में ले लेते हैं और यदि ऐसा बारबार होता

है तो बाद में की गई आलोचना का कोई असर नहीं होता. अधिक आलोचना कर्मचारियों को उस के प्रति उदासीन बना देती है.

आलोचना ही नहीं करें सराहें भी

ये सब तो आलोचना के नकारात्मक पहलू हैं. इस का दूसरा सकारात्मक पहलू भी है. आलोचना का मतलब है कि आप अच्छे और बुरे दोनों को आंकें. उस में परस्पर समन्वय स्थापित करें. यदि दोष बताना आवश्यक है तो बताएं और कर्मचारी को अच्छाई की ओर प्रेरित करें. यदि कोई अच्छा काम करता है जैसे दिन भर में किसी ने उत्पादन अधिक किया है या किसी ने अधिक उत्पादन का कोई नया तरीका खोजा है तो उसे उस का उचित श्रेय दे कर सराहना चाहिए.

जहां अच्छी बातों को उचित महत्त्व दिया जाता है वहां संबद्ध व्यक्ति आलोचना को भी सही परिप्रेक्ष्य में लेते हैं. अच्छे कामों के लिए प्रशंसा मिलने पर हर कोई अपनी तीखी आलोचना भी बिना किसी कटु भावना के सह सकता है. इस से क्या दफ्तर, क्या फैक्टरी और क्या परिवार, सब जगह सुखद वातावरण बनता है. परिणामस्वरूप हर काम बेहतर ढंग से होने लगता है. ●

सावधान

इस स्तंभ के लिए समाचार-पत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें : सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : सावधान, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

वे अंगरेजी बोलती हैं और चोरी करती हैं

कानपुर में नए प्रकार के चोरों के कारण अपराधों की संख्या बढ़ रही है. अब बढ़िया कपड़ों में सजीसंवरी औरतें भी यह धंधा करने लगी हैं. ये अंगरेजी बोलती हैं, इसलिए आसानी से कोई यह शक नहीं कर पाता कि ये चोरी का धंधा करती होंगी.

दोपहर को जब पुरुष काम पर चले जाते हैं तब ये स्त्रियां शिकार के लिए निकलती हैं. इन के पास मास्टर कुंजियां होती हैं, जिन से ये हर प्रकार के ताले खोल लेती हैं.

यदि किसी ने इन्हें घर में घुसते या निकलते देख लिया तो ये बहाना करती हैं कि वे तो मिलने आई थीं और जिस घर में घुस रही हैं वह उन के रिश्तेदार का है.

मोती झील चौराहे के पास स्टेट बैंक के एक अधिकारी के यहां इसी प्रकार की एक चोरी में 20,000 रुपए के आभूषण गायब हो गए थे.

इसी तरह एक घर में दोपहर को जब लोग खाना खा कर झपकी ले रहे थे कि एक स्त्री घर में घुस आई. लेकिन वह कुरसी से टकरा गई, लोग जाग गए और उसे पुलिस को सौंप दिया गया. पकड़े जाने पर वह कहती रही कि मुझे घर के मुखिया ने बुलाया था, हालांकि घर वाले इस से इनकार करते रहे.

—**सांध्य टाइम्स, दिल्ली** (**प्रेषक :** कपूरसिंह)

बिना टिकट यात्रियों की चांदी

श्रीगंगानगर में व्याप्त भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी की महामारी से रेलवे के टिकट चेकर व गार्ड भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहे हैं. गंगानगर से आनेजाने वाली विभिन्न रेलगाड़ियों में टिकट चेकर यात्रियों से अनुचित रूप से कुछ रुपए ले कर उन्हें बिना टिकट यात्रा करवा कर रेलवे को हजारों रुपए प्रतिदिन की हानि पहुंचा रहे हैं.

रिश्वत दे कर बिना टिकट यात्रा करने के संबंध में एक पत्रकार द्वारा किए गए सर्वेक्षण के दौरान अनेक दिलचस्प तथ्य सामने आए.

गंगानगर फीरोजपुर लाइन पर एक रेल में एक दिन दो यात्री एक डब्बे में घुसे तो उन्हें दो पुलिस वालों ने रोक कर पूछा, "टिकट है?"

यात्रियों के 'हां' करने पर पुलिस वालों ने कहा, "टिकट है तो किसी और डब्बे में चढ़ो, यह डब्बा बिना टिकट वाले यात्रियों के लिए है."

इस प्रकार टिकट चेकर पैसे देने वाले यात्रियों को न केवल रेल में सुरक्षित ले

जाते हैं वरन उन्हें गंतव्य रेलवे स्टेशन के फाटक से बाहर तक छोड़ आते हैं.

गंगानगर से गर्जसिंहपुर का किराया तीन रुपए 14 पैसे है परंतु टिकट चेकर यात्रियों से मात्र एक रुपया ले कर उन्हें गंगानगर से गर्जसिंहपुर पहुंचा देते हैं.

कई रेलवे स्टेशनों पर तो टिकट चेकर, गार्ड व रेलवे पुलिस के सिपाही खुले आम बिना टिकट यात्रियों से पैसे लेते देखे जाते हैं. कहा जाता है कि गंगानगर के अधिकांश टिकट चेकर सौ से दो सौ रुपए प्रतिदिन कमा लेते हैं.

—दैनिक प्रताप केसरी, श्रीगंगानगर (प्रेषक : अशोक मोदी)

चलती गाड़ी में बलात्कार

खबर है कि पुलिस के कुछ सिपाहियों ने चंद्रावती नामक एक हरिजन महिला से यात्री गाड़ी के डब्बे में बलात्कार करने के बाद उसे बेहोश हालत में गाड़ी से बाहर फेंक दिया.

पूर्वी रेलवे के किऊल गया सेक्शन में करजरा स्टेशन के निकट इस महिला को बेहोशी की हालत में पाया गया. स्थानीय चिकित्सालय में परीक्षण के बाद डाक्टरों ने महिला के साथ सामूहिक बलात्कार किए जाने की पुष्टि की. महिला वाराणसी से हावड़ा जा रही थी.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक : महेंद्र मखीजा)

हत्या के आरोप में साधु को कारावास

पुणे में दिनदहाड़े एक सामाजिक कार्यकर्ता की हत्या करने के अपराध में एक साधु को सेशन कोर्ट ने आजीवन कारावास की सजा दी है.

यह स्वीकार करते हुए भी कि अपराध बर्बरतापूर्ण है, अतिरिक्त सेशन जज श्री डी. वाई. शेलर ने वादी पक्ष की इस दलील को अस्वीकार कर दिया कि अपराधी को प्राणदंड दिया जाए.

45 वर्षीय अपराधी महादेव गिरी पिछले 10 वर्षों से पुणे जिले के भोलागिरी गांव के कोटेश्वर मंदिर में औरतों की उपस्थिति में भी नंगा ही रहता था. जब उस सामाजिक कार्यकर्ता ने उस से सार्वजनिक स्थानों में नंगा रहने से मना किया तो इस से नाराज हो कर साधु ने उस का सिर धड़ से अलग कर दिया.

—सन्मार्ग, कलकत्ता (प्रेषक : बल्लभदास बिन्नानी) (सर्वोत्तम)

आजकल जब यह नारा चल रहा है कि 'जितना पैसा उतना कांम' या 'जितना पैसा उस से कम काम' तो ऐसे समय यह कहना कि किसी तरीके से उत्पादन बढ़ाया जा सकता है, एक ऐसी बात है जिस पर जितने लोग उतनी हीं भिन्न सम्मतियां होंगी. मातहत जरा भी काम कर के नहीं देते, यह भावना इतनी अधिक घर कर गई है कि अधिक आदमी रखना एक सामान्य बात हो गई है. यही वजह है कि हर दफ्तर में चाहे वह सरकारी हो या गैरसरकारी अधिक कर्मचारियों की समस्या बनी रहती है.

आवश्यकता से अधिक कर्मचारियों पर देखरेख रखना अपने आप में एक समस्या है. काम कम होने से वे आपस में गप्पें मारते हैं जिस से काम करने वाले भी परेशान होते हैं. अधिकारी अपना सिर पकड़ कर बैठे रहते हैं कि वे अपनी जिम्मेदारी को कैसे पूरा कर सकेंगे. ऊपर वाले काम चाहते हैं, नीचे वाले कर के नहीं देते, फलस्वरूप तनाव की स्थिति पैदा हो जाती है जो हर हाल में हर किसी

चाहे खेल का मैदान हो या कोई कारखाना, प्रतिस्पर्धा जगा कर निश्चित रूप से कार्यक्षमता बढ़ाई जा सकती है. पर इस अचूक तरीके का प्रयोग करते समय सावधानी रखने की भी जरूरत है...

स्वस्थ प्रतिस्पर्धा जगाइए

व्यक्ति के लिए नुकसानदायक होता है.

पर यह समस्या इतनी भयावह नहीं है जितनी कि समझी या कही जाती है. इस में जितनी जिम्मेदारी कर्मचारियों की है उस से कम अधिकारियों की नहीं है, वरन अधिक ही है. जो अधिकारी अपने मातहतों की बुराई करते नहीं थकते, उन्होंने कभी अपने गरेबान में मुंह डाल कर देखा है कि वे स्वयं कितना काम करते हैं? उन्हें अधिक वेतन व कम शारीरिक श्रम इसलिए दिया जाता है कि वे काम के दबाव से मुक्त रह कर दिमाग से समस्याओं का समाधान सोचें और कार्यपद्धति में कुछ इस प्रकार का सुधार करें कि सारा काम अधिक सरलता से हो सके. वे यह तो करते नहीं, दस-पांच फाइलों पर दस्तखत कर, दोचार मुलाकातियों से मिल कर, एकाध बार दौरे पर जा कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं.

अधिकारियों को अधिक वेतन इसलिए भी मिलता है कि जिम्मेदारियों के

पड़ती हैं उन पर उन्हें घर पर भी सोचने-विचारने के लिए समय देना पड़ता है. पर यदि वे भी मातहतों के समान समस्याएं दफ्तर में ही रख आएं और दिन के शोरशराबे में उन पर गौर करने की कोशिश करें, तो उन का उचित हल निकल ही नहीं सकता. घटते उत्पादन को बढ़ाने का एक मात्र उपाय है कि अधिकारी अपने काम और जिम्मेदारी को समझें और कुछ ऐसा प्रयत्न करें जिस से मातहतों में काम के प्रति उत्साह पैदा हो. उत्पादन बढ़ाने का अचूक तरीका है कर्मचारियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा पैदा करना.

प्रतिस्पर्धा और प्रतिद्वंद्विता में अंतर

प्रतिस्पर्धा और प्रतिद्वंद्विता में बड़ा अंतर है. प्रतिस्पर्धा एक स्वस्थ भावना है जब कि प्रतिद्वंद्विता में मन में दूषित विचार भी पैदा हो जाते हैं. स्कूल में पढ़ाई में बालकों में आपस में प्रतिस्पर्धा होती है. अपने साथी को प्रथम आते देख दूसरा छात्र भी ऊपर उठने की कोशिश करता है. जब हर विद्यार्थी आपस में एकदूसरे से आगे बढ़ने का प्रयास करता है तो कक्षा का स्तर अनायास ही उठ जाता है. अतः शिक्षक का कर्त्तव्य है कि वह ऐसे तरीके अपनाए जिस से उन में यह भावना जाग्रत हो. लेकिन यदि दो छात्रों में प्रतिद्वंद्विता हो जाए, तो हो सकता है कि वे अध्ययन द्वारा पढ़ाई में एकदूसरे से आगे निकलने का प्रयत्न करने के बजाए एकदूसरे की पुस्तकें व नोट्स ही गायब कर दें या करवा दें.

खेलों में प्रतिस्पर्धा होती है जह हार व जीत को खेल की भावना से लिया जाता है. धीरेधीरे स्तर बढ़त जाता है. जब एक खिलाड़ी एक मी की दौड़ मात्र चार मिनट में दौड़ा कहा गया कि यह मानव की सर्वाधि चाल है और कोई इस रिकार्ड को न
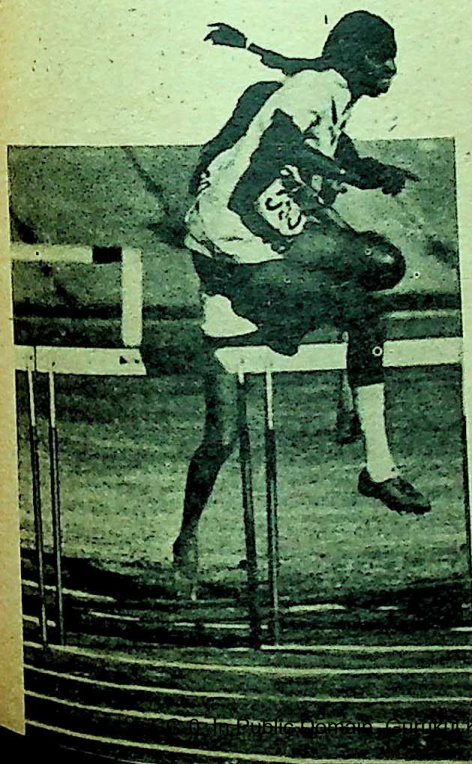
... पर यह आपसी प्रतिस्पर्धा का ही फल है कि आज तीन मिनट 40 सेकंड से कम में ही यह दौड़ पूरी कर ली जाती है.

कृषि प्रतियोगिताएं अखिल भारतीय स्तर पर होती हैं. प्रति एकड़ सब से अधिक गेहूं व चावल पैदा करने वाले को अच्छा इनाम मिलता है, फलस्वरूप प्रति एकड़ पैदावार बढ़ रही है. वैसे भी देखें तो यदि एक हजार किसान प्रतियोगिता में भाग लेते हैं तो इनाम तो एक को ही मिलता है, पर पैदावार हजार बढ़ाते हैं. जीतता एक है, हर अगले वर्ष के लिए प्रेरणा हजारों को मिलती है. फलस्वरूप हमारा उत्पादन बढ़ता गया और आज हम इस क्षेत्र में प्रायः आत्मनिर्भर हो गए हैं. इस सफलता में इन प्रतियोगिताओं का महत्वपूर्ण हाथ है.

प्रतिस्पर्धा की भावना जन्मजात

अन्य कार्यक्षेत्रों में भी इस भावना का उपयोग किया जा सकता है. एकदूसरे से आगे बढ़ने की भावना तो जन्मजात होती है. यह स्वस्थ हो या अस्वस्थ, यह परिवार वालों, शिक्षकों व अधिकारियों पर निर्भर करता है. इस भावना के पीछे एक और मूलभूत भावना काम करती है. इसे मनोवैज्ञानिक सराहना की भूख कहते हैं. यह मात्र भूख नहीं है. हर व्यक्ति इस के लिए तरसता है, लालायित रहता है. हर कोई चाहता है कि उस के किए का उचित आकलन कर उसे सराहा जाए. प्रतियोगिताओं में विजेताओं को इनाम आदि की व्यवस्था इसी भूख के शमन के लिए की जाती है. ये दोनों भावनाएं एकदूसरे पर निर्भर करती हैं.

अतः इस बात को समझ कर हम अपनेअपने क्षेत्र में इन दोनों मूल भावनाओं का लाभ उठा कर उत्पादन बढ़ा सकते हैं. इस से अधिकारियों के मानसिक तनाव में कमी होगी. कर्मचारियों की कार्यदक्षता व क्षमता बढ़ेगी. इस से दोहरा लाभ होगा—अपने को भी और देश को भी. जब देश के हजारों लाखों अधिकारी देश के हर कार्यक्षेत्र में लाखों कर्मचारियों में प्रतिस्पर्धा की भावना भर कर काम करने की प्रेरणा देंगे तो परिणाम भी आश्चर्यजनक होंगे. देश का नक्शा देखतेदेखते बदल जाएगा. जो काम प्रशासन पिछले 33 सालों में भाषण दे कर नहीं कर सका, वह महज दोतीन सालों में हो जाएगा. उत्पादन बढ़ने के साथ उत्पादित वस्तुओं का उपयोग भी बढ़ेगा, नए कार्यक्षेत्र खुलेंगे जहां लोगों को और काम मिलेगा.

प्रतिस्पर्धा कैसे जगाएं

कुछ साल पहले मैं टेलीफोन विभाग में काम करता था. मेरे जिम्मे टेलीफोन के बिलों की वसूली का काम था. टेलीफोन विभाग सेवा पहले करता है और पैसा बाद में वसूल करता है. इस से बकाया रकम की समस्या हमेशा मुंह बाए खड़ी रहती है. टेलीफोन रखने वालों पर बकाया बढ़ता जा रहा था. ऊपर से दबाव पड़ रहा था कि वसूली सख्ती से कर के बकाया रकम को कम किया जाए. मेरी मुसीबत यह थी कि मातहत कर्मचारी जरा भी अधिक काम करने को तैयार नहीं थे. वे सोचते कि यदि अधिक काम कर के दिया तो भरती कम हो जाएगी. साथ ही पदोन्नति की संभावनाएं भी कम हो जाएंगी. ऊपरनीचे दोनों ओर से मार खातेखाते परेशान हो उठा. अपनी तरफ से अनेक प्रयास कर लिए थे, पर परिणाम उलटे ही आ रहे थे.

इन्हीं दिनों मैं ने एक किस्सा पढ़ा. एक मैनेजर अपनी फैक्टरी में उत्पादन गिरने से बहुत परेशान थे. वह साम, दाम, दंड, भेद सब नीतियां अपना चुके थे, पर कुछ हो नहीं पाया. केवल मानसिक तनाव ही बढ़ा. एक दिन पाली समाप्त होने के पांच मिनट पहले वह कारखाने में गए और पूछा कि उस दिन

कितने उपकरण बने हैं. कर्मचारियों ने कहा छ:. उन्होंने फलस्वरूप एक चाक ली और फर्श पर आदमकद अंक में छ: का अंक लिख दिया. लिख कर वह वापस हो लिए.

उसी समय दूसरी पाली वाले आए. उन्हें छ: का अंक लिखा देख कर कुतूहल हुआ. उन्होंने चौकीदार से पूछा कि 6 का क्या मतलब है. उसे क्या मालूम था. बोला, "साहब आए थे और यह लिख गए हैं." वहां छ: उपकरण बने पड़े थे. उन की समझ में बात आ गई. इस पाली में 15 आदमी थे. उन्होंने एकदूसरे को आंखों ही आंखों में देखा और काम में जुट गए. पाली समाप्त होने पर उन में से एक व्यक्ति ने चाक का लिखा 6 मिटा दिया और उस की जगह 7 लिख दिया. जब पहले वाली पाली ने देखा कि पिछली पाली सात उपकरण बना गई है तो उन्होंने जाते समय 7 मिटा कर 8 कर दिया. इस प्रकार कुछ ही समय बाद हर पाली अपनी सामान्य क्षमता पर आ गई. मैनेजर ने उन्हें अतिरिक्त उत्पादन पर उचित पारितोषिक दिया.

इस उदाहरण ने मुझे कुछ सोचने की प्रेरणा दी. मेरे दिमाग में एक तरीका आया. मेरे जिम्मे 20,000 लाइन के बिलों की वसूली थी. इस काम में 20 सहायक लगे हुए थे. वे ही बिल बनाते थे और वे ही उन की वसूली के लिए जिम्मेदार थे. मैं ने एक तालिका बनवाई, जिस से यह मालूम हुआ कि पिछले छ: माह में हर व्यक्ति ने अपने जारी किए हुए बिलों की कितनी वसूली की है. ये आंकड़े चौंकाने वाले सिद्ध हुए. किसी ने 30 प्रतिशत, तो किसी ने 40 प्रतिशत, किसी ने 50 प्रतिशत, कुछ ने 70 व 80 प्रतिशत वसूली की थी पर दफ्तर का औसत मात्र 35 प्रतिशत बैठ रहा था.

मतलब यह कि अधिकतर कर्मचारी 30 और 35 प्रतिशत ही वसूली कर पाते थे. बात साफ हो गई कि बिल भेज देने के बाद वे आराम से बैठ जाते थे. जो कुछ आ गया उस से संतोष, जिन का नहीं आया, उन की परवाह नहीं. वेतन माह के अंत में बंधा हुआ था ही. फिर चिंता किस बात की.

कम भूमि में सर्वाधिक फसल उगाने वाले कृषक का सम्मान : कृषि के क्षेत्र में भी प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है. यही वजह है कि आज हम इस क्षेत्र में प्रायः आत्मनिर्भर हैं.

इस तालिका की अनेक प्रतिलिपियां करवा कर एक सूचनापट पर लगवा दीं और एकएक सुपरवाइजर को दे दी. जिस ने सब से अच्छा काम किया था उसे एक प्रशस्तिपत्र दे दिया. दूसरे दिन देखा कि कर्मचारी सूचनापट के पास खड़े कुछ कानाफूसी कर रहे हैं. कुछ ने आ कर शिकायत भी की कि उन का काम सही नहीं दर्शाया गया है.

अगले तीन माह में मैं ने देखा कि सामान्य कार्यक्षमता बढ़ गई है. औसत वसूली 45 प्रतिशत हो गई थी. स्पष्ट था कि 30 प्रतिशत श्रेणी वाले अब 40 व

50 के गुट में आ गए थे. 60 वाले 65 की ओर 70 वाले 75 की इस नई तालिका में जो भी 75 प्रतिशत के ऊपर आ गए थे उन्हें नकद पुरस्कार दिए गए.

इस के साथ ही तालिका में थोड़ा परिवर्तन कर दिया गया. 20 आदमियों का काम चार सुपरवाइजर देखते थे. जब मैं ने चार गुटों की नई तालिका बनवाई तो नए तथ्य सामने आए. एक ग्रुप का औसत 50 था तो दूसरे का 40 और तीसरे व चौथे का 50 व 60 के बीच. अब तो सुपरवाइजरों में स्पर्धा शुरू हो गई.

मात्र छः मास के बाद औसत वसूली 60 प्रतिशत हो गई, बिना किसी को कुछ कहे, बिना किसी को ताड़े. बकाया 65 प्रतिशत से गिर कर 40 प्रतिशत रह गया. एक आम सभा कर जनरल मैनेजर से कुछ नकद पुरस्कार बंटवा दिए. इस की सूचना विभागीय पत्रिका में भी छपवा दी, जिस से तमाम कार्यालय में स्पर्धा का वातावरण पैदा हो जाने से अपने आप कार्य और अच्छा होने लगा. हर किसी को चिंता थी कि अगली तालिका में कहीं नाम नीचे न हो जाए. जो नीचे थे वे अपना नाम ऊपर देखना चाहते थे. अगले तीन माह में प्रतिशत वसूली बढ़ कर 70 हो गई. परिणाम-स्वरूप मेरा अपना काम कम हो गया. मुलाकातियों की भी संख्या कम हो गई.

प्रतिस्पर्धा को विस्तृत रूप

इसी सिलसिले को मैं ने प्रादेशिक मंडलों में भी लागू किया. सहायक मंडल प्रधानों को लिख दिया कि अपने कर्मचारियों का मार्गदर्शन इसी प्रकार करें. फिर तमाम सहायक मंडलों की वसूली की तालिका बना कर सब जगह भेज दी. अब तो सहायक मंडलों में भी स्पर्धा आरंभ हो गई और कुछ ही समय में सहायक मंडलों का औसत 40 से 60 पर आ गया. मुख्य कार्यालय में आ कर मैं ने यही स्पर्धा प्रादेशिक मंडलों के बीच आरंभ कर दी. थोड़े ही समय में विभागीय स्तर पर 60 प्रतिशत की वसूली होने लगी. एक बार जो सिलसिला चला तो चलता ही गया. जो काम अनेक नाना प्रकार के प्रशासनिक आदेश नहीं कर पाए थे वह मात्र कागज के कुछ टुकड़ों ने, जिन पर प्रशस्ति पत्र लिखे गए थे और कुछ हजार रुपयों ने जो इनाम के रूप में बांटे गए, करवा दिया.

जैसा काम वैसी सुविधाएं

मेरे जेहन में एक और उदाहरण है. एक उपभोक्ता वस्तु की बिक्री कम हो रही थी. विक्रेता हतोत्साहित हो रहे थे. प्रबंधकों ने अपने सेल्समेन को तीन गुटों में बांट दिया. एक लाख की बिक्री करने वाले, 50 हजार की बिक्री करने वाले और 50 हजार से कम बिक्री करने वाले. उन के क्लब अलग बना कर उन के बैठने का प्रबंध भी अलगअलग कमरों में कर दिया गया. बिक्री के अनुसार ही तीनों क्लबों को सुविधाएं प्रदान की गईं. इस से अपने आप स्पर्धा आरंभ हो गई. हर कोई अपनी बिक्री बढ़ा कर पहले और दूसरे क्लब की सदस्यता पाने का प्रयास करने लगा. बिक्री अपने आप बढ़ने लगी.

अकसर सरकारी दुकानों पर विक्रेता ग्राहकों को सामान देने व दिखाने में चुस्ती नहीं बरतते. उन्हें मालूम रहता है कि काम करें या न करें, बिक्री हो या न हो, वेतन तो पहली तारीख को मिलेगा ही. पर यदि इन विक्रेताओं की कार्यक्षमता की तालिका हर हफ्ते सूचनापट पर लगा दी जाए तो मामला सुधर जाए. बात यह है कि कोई कितनी भी डींग हांके कि उसे कोई परवाह नहीं है, पर वह सार्वजनिक रूप से यह तौहीन नहीं सह सकता कि उस का नाम तालिका में सब से नीचे रहे.

स्पर्धा की भावना व सराहना की भूख ये दो आधारभूत भावनाएं हैं. इन

का उचित तरीके से इस्तेमाल कर आसानी से उत्पादन बढ़ाया जा सकता है. हर व्यवसायी, हर मैनेजर, हर अधिकारी को कुछ ऐसा करना होगा जिस से कर्मचारियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना जागृत हो. जब अच्छे परिणाम निकलें तो उन्हें सराहा जाए. इस से कर्मचारियों का समय व्यर्थ के कामों में नहीं लगेगा, अधिकारी का समय व्यक्तिगत मामले सुलझाने में व्यय नहीं होगा, किसी को सजा देने की भी आवश्यकता नहीं रह जाएगी. इस से जो मानसिक शांति मिलेगी, जो समय बचेगा, उस का उपयोग नएनए तरीके सोचने में, पेचीदा मामलों को निपटाने में होगा. हां, यह अवश्य है कि किस प्रकार स्पर्धा पैदा की जाए. यह सोचनेविचारने में आरंभ में श्रम लगेगा पर एक बार स्पर्धा चालू हो जाने पर समय ही समय रहेगा.

प्रतिस्पर्धा से सभी को लाभ

अतः कर्मचारियों की काम न करने की व्यर्थ की आलोचना बंद कर जरा प्रयास कीजिए और उन में सोई स्पर्धा की भावना को जगा कर व उन के अच्छे काम की सराहना कर के उत्पादन को बढ़ाइए और अपनी पदोन्नति का रास्ता प्रशस्त कीजिए. यदि आप उत्पादन बढ़ाएंगे तो मालिक भी अवश्य ध्यान रखेगा.

यदि वह नहीं रखेगा, तो आप की कार्यकुशलता दूसरों को आकर्षित करेगी जो हो सकता है आप को अधिक वेतन पर ले जाए. ●

"...कैंटीन नहीं साहब, यह तो हमारे कार्यालय का सब से प्रमुख विभाग है."

जलन से सताती, खुजलाती घमौरियों की बेचैनी भूल जाइये।
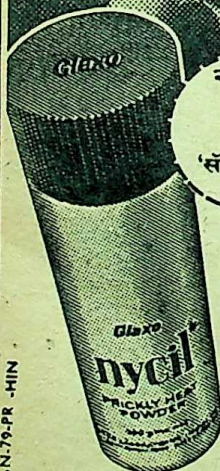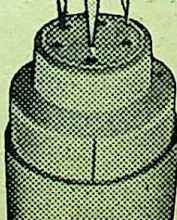
इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए एवं सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : ये शिक्षक, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

हमारे एक अध्यापक की आदत थी कि वह अपनी गलती का इलजाम किसी दूसरे पर थोप देते थे. एक दिन वह कक्षा में बोर्ड साफ करने वाला कपड़ा लाना भूल गए. पूरा बोर्ड लिखावट से भरा हुआ था.

इस पर अपनी आदत के अनुसार वह बोले, "ये भी कैसे शिक्षक हैं, पीरियड समाप्त होने पर जातेजाते बोर्ड भी साफ कर के नहीं जाते."

हम सब मंदमंद हंसी हंसने लगे क्योंकि हुआ यह था कि बोर्ड पर उन्हीं के द्वारा लिखाए गए प्रश्न लिखे हुए थे जो उन्होंने तीसरे पीरियड में लिखवाए थे. बीच केपीरियडों में शिक्षकों ने बोर्ड का उपयोग ही नहीं किया था.

जब शिक्षक महोदय को बात समझ में आई तो वह शर्म से कक्षा ही छोड कर चले गए.

—विवेक इसराणी

✦

हमारे स्कूल में एक अध्यापक बड़े चतुर थे. परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाएं जांचते समय छात्रों को ठगने का उन्होंने अजीब तरीका निकाल रखा था. उत्तर पुस्तिका जांच कर उस के मुख पृष्ठ पर प्राप्तांक की जगह लाल पेंसिल से वह अंडाकार घेरा बना देते और संबंधित छात्र से कहते कि तुम्हारा तो जीरो नंबर आया है.

छात्र बेचारा उदास हो जाता. फिर मौका पा कर वह उस छात्र से कुछ भेंटपूजा की बात करते. छात्र मजबूर हो कर कुछ भेंटपूजा कर देते और अध्यापक उस अंडाकार घेरे में कुल प्राप्तांक (अंदर के प्राप्तांक का कुल योग) अंकित कर देते थे.

—म. ल. भटनागर

✦

✦ पिछले वर्ष हमारे महाविद्यालय के छात्रों के दो गुटों में किसी कारणवश तूतू, मैंमैं हो गई. बात थोड़ी देर में गाली गलौज से हाथापाई पर पहुंच गई. छात्र उत्तेजित हो उठे और एकदूसरे पर वार करने लगे. पर किसी भी व्यक्ति ने बीचबचाव कराने का प्रयास नहीं किया. कई छात्रों को गंभीर चोटें भी आईं.

चूंकि वह महाविद्यालय में पहुंचने का समय था, अतः हमारे विद्यालय के तीन प्राध्यापक वहां जा रहे थे. उन्होंने यह दृश्य देखा तो वे द्रवित हो कर निर्बल छात्रों के पिट रहे गुट के सामने अड़ गए. उत्तेजना में अंधे छात्रों ने जब तक उन्हें पहचाना तब तक बहुत देर हो चुकी थी.

यह वही प्राध्यापक थे जिन की सारे विद्यालय में सभी छात्र इज्जत करते थे तथा इन के लिए मरने को भी तत्पर रहते थे. उन पर चोटें पड़ने के बाद छात्रों की भीड़ सिटापिटा गई. सभी सहम कर नीचे देखने लगे. पर दयावान प्राध्यापकों ने सभी छात्रों को आपस में गले मिलवा कर क्षमा कर दिया. — [illegible] ●

गगनचुंबी इमारतों में क्या आप आग से सुरक्षित हैं?

लेख • अजयकुमार सिन्हा
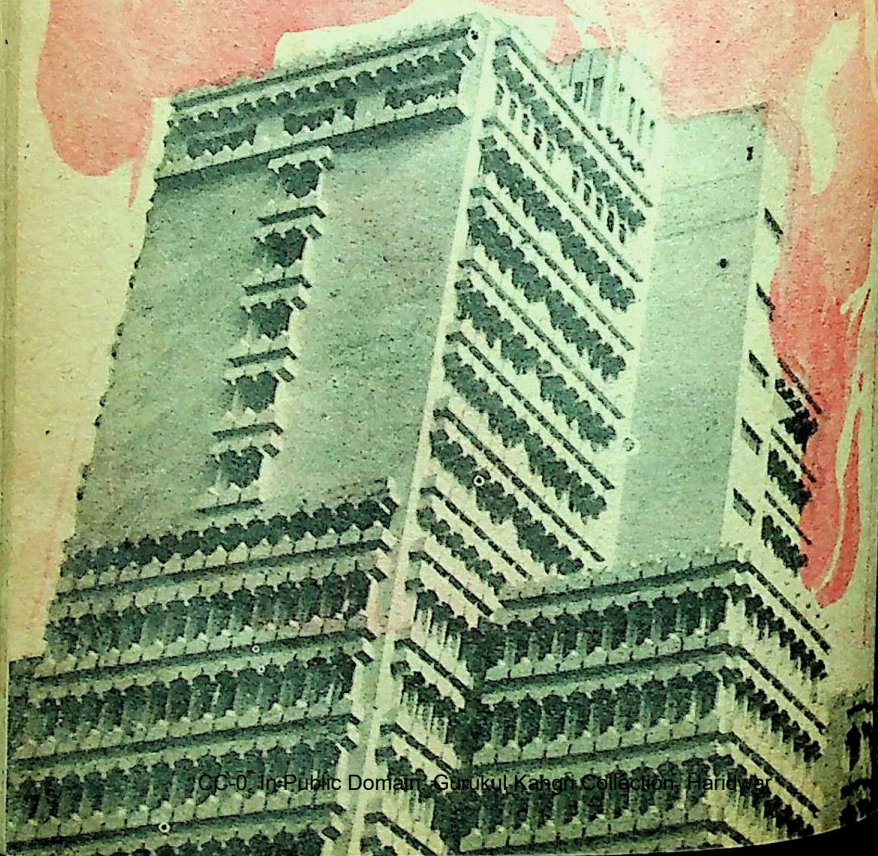
नई दिल्ली की बहुमंजिली इमारतों में हिंदुस्तान [illegible] हाउस काफी सुंदर और आधुनिक है. इस के अंदर की लाबी में घूमना बड़ा अच्छा लगता है. वहां यह सोचा भी नहीं जा सकता कि इस जैसी सुंदर इमारत में आग भी लग सकती है और उस समय यह भवन कितना खौफनाक दिखलाई पड़ सकता है. इस में 18 मंजिलें हैं. पूरा भवन वातानुकूलित है. पिछले वर्ष इस की आठवीं मंजिल में आग लगी तो सब हक्काबक्का रह गए. यह तो तब हुआ जब इस भवन में आग बुझाने वाले आधुनिक उपकरणों की व्यवस्था है. दमकलें व आग बुझाने वाले आए पर उन की समझ में ही नहीं आ रहा था कि कैसे और किधर से आग लगी मंजिल में घुसा जाए.

खैर रही कि आग रात नौ बजे के आसपास लगी और उस समय कोई भी कर्मचारी उस मंजिल पर नहीं था, इसलिए जान का नुकसान नहीं हुआ. चौकीदार को बचा लिया गया. फिर भी एक आध लोग धुएं में फंस गए थे और मुशकिल से निकल पाए. जिस मंजिल में आग लगी

पिछले 20 वर्षों में विश्व में बुहुमंजिली इमारतों में कई जगह आग लगी है और भारी क्षति हुई है. भविष्य में ऐसी भयंकर दुर्घटनाएं न हों इस के लिए जरूरी है इन में आवश्यक सुधार और परिवर्तन. तभी ये इमारतें आग की चपेट में आने से बच सकती हैं.

थी, उस में स्थित दफ्तर जल कर राख हो गया था, धुआं आसपास की मंजिलों में भी भर गया था.

कितना वीभत्स दृश्य

पिछले 20 वर्षों में विश्व में बहुमंजिला भवनों में कई जगह आग लगी है और भारी क्षति हुई है. अमरीका जैसे देश में जहां हर क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रगति हुई है, इस समस्या का पूरा समाधान नहीं निकल पाया है. वहां भी गगनचुंबी इमारतें, जिन्हें स्काईस्क्रैपर कहते हैं, आग के भय से मुक्त नहीं हैं.

ब्राजिल की एक गगनचुंबी इमारत में भयानक आग लगी थी, जिस में सैकड़ों लोग जल गए थे और बड़ी क्षति हुई थी. उसी दुर्घटना पर अमरीकी फिल्म 'टावरिंग इनफर्नो' बनी, जो कुछ साल पहले भारत में भी दिखलाई गई थी. वह फिल्म देखने के बाद यह एहसास होता है कि आग लग जाए तो ये गगनचुंबी इमारतें वीभत्स सा दृश्य उत्पन्न कर देती हैं.

इन ऊंची इमारतों के सभी डिजाइनों में आग लगने का खतरा है. आग लगने पर लोग इन में फंस जाते हैं. लिफ्ट फंस जाती है, क्योंकि बिजली व्यवस्था तार जल जाने से खत्म हो जाती है. पत्थर और सीमेंट की ये इमारतें जल्दी गरम हो जाती हैं. इन भवनों का वातानुकूलित होना धुएं को भवन के सभी भागों में फैला देता है. धुएं में फंसे व्यक्तियों का दम घुटने लगता है. इन के निर्माण में इस्तेमाल की गई धातु, लोहा, इस्पात, अल्युमिनियम आदि पिघलने लगते हैं. लोहे के गर्डर व सरिए आदि गरम हो कर टेढ़े होने लगते हैं. लोग बचने के विचार से ऊपर से कूद कर मर जाते हैं.

इन आधुनिक बहुमंजिली इमारतों में खिड़कियां एक तरह से सीलबंद होती हैं, जिन्हें आग बुझाने वाले फौरन नहीं खोल सकते, जब कि पुराने ढंग की खिड़की के पल्लों को आसानी से खोला या तोड़ा जा सकता है. पुराने ढंग की ईंट की दीवारें आग की गरमी को सोख लें, जब कि आज की दीवारें गरमी को चारों ओर फैला देती हैं.

इन इमारतों में अंदर की दीवारें लकड़ी या प्लाइवुड की होती हैं जो आग को फौरन पकड़ लेती हैं. जो फर्नीचर होता है उस में फोम प्लास्टिक लगा होता है जो गरम होने पर विषैले धुएं का बादल छोड़ता है, उस के छत तक पहुंचने पर लपटों का विस्फोट हो उठता है.

जब आग लगती है तो हम दर्शक की भांति देखने लगते हैं और यह भूल जाते हैं कि अगर आग लगे तो उसे फौरन बुझाने के लिए पहले से क्या तैयारी करनी चाहिए.

इन भवनों में कई कमियां

इन इमारतों में अनेक कमियां हैं, जैसे आग लगते ही फायर ब्रिगेड को तुरंत अपने आप सूचित करने वाले यंत्र और ऐसे लाउडस्पीकरों का न होना जिन से आग लगते ही इमारत में मौजूद सभी व्यक्तियों को फौरन सूचना, चेतावनी व बचने का निर्देश दिया जा सकता है. अमरीका में तो छोटेछोटे कसबों के मकानों में भी ऐसी व्यवस्था होती है कि अगर मकान के किसी कमरे में धुआं भर जाए तो फौरन उस मकान में लगा साइरन बजने लगता है, जिस की आवाज सुनते ही आसपास के लोग सतर्क हो जाते हैं और दमकल उस ओर दौड़ पड़ते हैं.

बहुमंजिली इमारतों के डिजाइनों में तेजी से परिवर्तन हुआ है किंतु आग से सुरक्षा के उपायों में उतनी तेजी से प्रगति नहीं हुई है.

आग लगने से उस से होने वाले नुकसान की रोकथाम के लिए यह जरूरी है कि तारों, केबलों व पाइपों को एक मंजिल से दूसरी मंजिल में जाने का रास्ता देने वाले सभी छेदों को आग न पकड़ने

वाली सामग्री से भर दिया जाए.

सील की हुई खिड़कियों में भी कुछ परिवर्तन करना आवश्यक है, इन में चूल-छल्ले पर घूमने वाले शीशे तथा कब्जेदार पैनल लगाने चाहिए.

फर्नीचर, परदे व इंसूलेशन में ऐसी सामग्री का प्रयोग होना चाहिए जो जल्दी आग न पकड़ सके और जलने में ज्यादा जहरीला धुआं न छोड़ती हो. आटोमैटिक स्प्रिंकलर सिस्टम (आग लगने पर अपने आप पानी की धार छोड़ने वाला यंत्र) उपलब्ध होना चाहिए.

इमारतों में कैसी सामग्री लगाएं?

इन इमारतों के लोहे के ढांचे को और ज्यादा सुरक्षित बनाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए. उन पर ज्यादा मजबूत व प्रभावपूर्ण इंसूलेसन लगाना चाहिए. इमारतें इस्पात के खोखले खंभों से बननी चाहिए और इन में पानी भरा होना चाहिए ताकि आग लगने पर वे गरम न हो सकें.

आग लगने पर लोगों के निकलने के लिए अलग स्टेयर टावर होनी चाहिए. ऐसी स्थिति में बहुत ज्यादा लोगों को निकालना संभव नहीं होता. अतः हर बहुमंजिली इमारत में आश्रय के लिए एक सुरक्षित स्थान बना होना चाहिए.

आग लगने पर जो अव्यवस्था, गड़बड़ व भगदड़ होती है उसे दूर करने के लिए हर इमारत में एक निर्देश कक्ष (कमांड सेंटर) होना चाहिए. इस कक्ष को सूचना भेजने तथा वातानुकूल यंत्र को बंद कर देने के लिए अपने आप आग व धुएं का पता लगाने वाले यंत्र लगाने चाहिए. निर्देश कक्ष से इमारत के सभी भागों में आग की सूचना व बचाव संबंधी निर्देश भेजे जाने चाहिए.

आग लगने पर जो घबराहट, दहशत व भगदड़ होती है उस का पूर्वानुमान लगाने तथा उस का मुकाबला करने के लिए इमारत में बैठने वाले सभी व्यक्तियों

आग की चपेट में आई नई दिल्ली की एक प्रेस का भीतरी दृश्य : इस इमारत में लगी आग ने लकड़ी से बनी भीतरी मंजिलों की वजह से भयंकर रूप ले लिया था.

के लिए समयसमय पर नियमित रूप से अभ्यास की व्यवस्था होनी चाहिए जिस में सब का हिस्सा लेना अनिवार्य होना चाहिए. आग बुझाने का पूर्वाभ्यास करने के लिए किसी को नेता चुन लेना चाहिए और एक योजना बनानी चाहिए. हर मंजिल के लिए आग बुझाने से संबंधित एक कमेटी होनी चाहिए जो प्रशिक्षित हो. इमारत में बैठने वाले सभी व्यक्तियों के लिए ड्रिल करने की जिम्मेदारी उस की हो.

सभी इमारतों में आग लगने पर प्राथमिक उपचार की विशेष व्यवस्था होनी चाहिए जिस में हाल ही में खोज की हुई सिलवर नाइट्रेट भी अवश्य होनी चाहिए और लोगों को इस के प्रयोग

का ढंग बताया जाना चाहिए. यह दवा जले शरीर को जल्दी से ठीक कर देती है ग्रौर मृत्यु से भी बचाती है. यह सूडोमोनास ऐरुजीनोसा नाम के कीटाणु को मारती है. यह कीटाणु शरीर के जले हुए हिस्से में विष उत्पन्न करता है जिस से जलने वाले व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है.

इमारतों के किराएदार का दायित्व

साथ ही इन बहुमंजिली इमारतों में किराए पर जगह लेने वाली कंपनियों को चाहिए कि वे जगह लेने से पहले मालिकों से पूछ लें कि ग्राग से बचने के सभी प्रबंध उस इमारत में किए गए हैं या नहीं. साथ ही समयसमय पर बिजली के तारों की नियमित रूप से जांच होनी चाहिए ग्रौर ऐसे उपाय खोजे जाने चाहिए जिस से बिजली के तारों के ग्रापस में मिल जाने से इमारत में ग्राग न लग सके.

इन सभी उपायों में रुपया खर्च होता है पर इस पर रुपया खर्च करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए, क्योंकि ऐसा न करने से किसी भी समय सैकड़ों लोगों की मृत्यु तथा लाखों रुपए की संपत्ति की क्षति का सवाल उठ खड़ा हो सकता है.

रामबाबू माथुर

"अब मैं समझा, तुम्हारे पिताजी ने होली के दिन ही तुम्हें दिखाने की जिद क्यों की थी..."

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : धूपछांव, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

नकल का प्रमाण एक मेज थी

जोधपुर विश्वविद्यालय में पूरक परीक्षा के दौरान उड़न दस्ते ने एक छात्र को नकल करते हुए पकड़ा. उस छात्र ने परीक्षा भवन में अपने रोलनंबर वाली मेज पर पहले ही प्रश्नों के उत्तर लिख लिए थे. इसलिए उस समय समस्या उत्पन्न हो गई कि परीक्षा कापी के साथ नकल के प्रमाण के रूप में 'मेज' किस तरह नत्थी की जाए.

बाद में मेज पर लिखे उत्तरों को एक अलग कागज पर लिख कर कापी के साथ नत्थी कर उड़न दस्ते के हवाले किया गया.

परीक्षा के नियमों के अनुसार नकल में इस्तेमाल सामग्री परीक्षा उत्तर पुस्तिका के साथ नत्थी करना आवश्यक है.

—जलते दीप, जोधपुर (प्रेषक : दौलतसिंह चौहान)

बकरेबकरी की शादी

कुछ समय पूर्व श्रीगंगानगर से कुछ ही दूरी पर स्थित सरेवाला गांव में गधेगधी का विवाह बड़ी धूमधाम से संपन्न हुआ था.

इस अद्भुत शादी के चर्चे अभी शांत भी न हो पाए थे कि यहां से साठ किलोमीटर दूर घड़साना गांव के एक दुकानदार के दुलारे बकरे की शादी गांव के ही एक कुम्हार के यहां नाजों से पली बकरी के साथ धूमधाम से बाजेगाजे के साथ संपन्न हुई.

बारात में कुछ मेमने व वृद्ध बकरे भी शामिल थे, जिन के गले में फूलमालाएं पड़ी हुई थीं.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : कुलविंदर सिंह)

कूड़ाघर में तीन लाख के नोट

वाराणसी जिले के गोपीगंज बाजार में एक तालाब के किनारे कूड़ाघर में तीन लाख रुपए के नोट एक बोरे में बंद पाए गए. सभी नोट इस कदर गले हुए थे कि उन के नंबर भी पढ़ पाना संभव नहीं था.

अनुमान है कि छापे के डर से किसी ने ये नोट एक बोरे में डाल कर जमीन में गाड़ दिए. बाद में बोरा निकालने पर जब नोट सड़ीगली अवस्था में मिले तो उसे कूड़ा समझ कर फेंक दिया गया.

—दैनिक जागरण, कानपुर (प्रेषक : प्रकाश श्रीवास्तव)

छात्रा बी. ए. की, प्रश्नपत्र एम. ए. का

उज्जैन के विक्रम विश्वविद्यालय की बी. ए. (अंतिम वर्ष) की एक छात्रा द्वारा परीक्षा भवन में भूल से एम. ए. (अंतिम वर्ष) का प्रश्नपत्र हल किए जाने से

CHAMPAK
Takes Care of your curious child
CHAMPAK
Opens up vistas of knowledge, Moulds his character and provides him with sweet diversions through its fascinating ARTICLES, SHORT STORIES, COMICS CARTOONS, QUIZ
CHAMPAK—A Good Companion to Grow with.
Published also in Hindi and Gujarati, as fortnightlies and in Marathi, Tamil, Telugu and Malayalam as monthlies.
CHAMPAK
Buy a copy today or subscribe
CHAMPAK
Delhi Press, New Delhi.
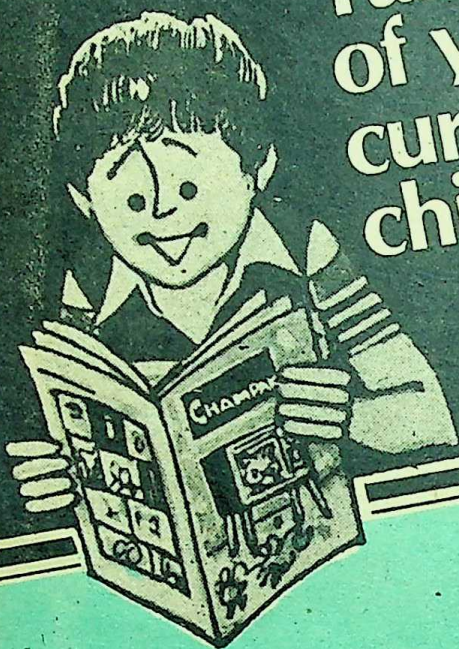
जहां एक ओर उस की योग्यता का उदाहरण मिलता है, वहीं दूसरी ओर उस का भविष्य अधर में लटक गया.

प्राप्त सूचना के अनुसार गत वर्ष परीक्षा केंद्र में बी. ए. (अंतिम वर्ष) के अलावा एम. ए. (अंतिम वर्ष) की परीक्षा भी थी. गलती से छात्रा को एम. ए. का प्रश्नपत्र दे दिया गया जो उस ने हल कर दिया.

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : रामावतार खंडेलवाल)

चोर समझ कर विदेशी की पिटाई

अगर जनता को किसी के बारे में गलतफहमी हो जाए तो वह अच्छेखासे भले आदमी की भी चंदिया साफ कर दे.

यही हाल हुआ पिछले दिनों बंगलौर में एक विदेशी सैलानी का. वह अपने देश यूगोस्लाविया से भारत भ्रमण पर आया था, बच्चे चुराने नहीं. पर उन्हीं दिनों बंगलौर में बच्चों की चोरी की वारदातें बड़े जोरशोर से हो रही थीं. लोगों ने देखा तो यही समझा कि बच्चा चोर मिल गया.

फिर तो उसे घेर कर इस तरह पीटा गया कि बेचारे का पासपोर्ट भी खो गया. इस के बाद लोग उसे थाने ले गए. वहां पता चला कि गलत आदमी पकड़ लिया गया है. तब लोगों ने न केवल उस से माफी मांगी, बल्कि सब ने मिल कर उसे शानदार दावत भी दे डाली.

—मधु मुसकान, नई दिल्ली (प्रेषक : वीमल जी भंसाली)

बंद मालगाड़ी के डब्बे में चोर

रायबरेली की तरफ से आ रही एक मालगाड़ी जैसे ही चारबाग रेलवे स्टेशन पर रुकी, उस के मुहरबंद डब्बे के भीतर से अचानक कुछ तेज आवाजें आने लगीं. रेलवे सुरक्षा दल के सिपाहियों ने आश्चर्य और डर के साथ यह सूचना रेलवे पुलिस को दी. फिर जब सीमेंट की बोरियों से लदे डब्बे की मुहर तोड़ी गई तो एक व्यक्ति उस में से प्रकट हुआ.

डब्बे से बरामद श्रीकृष्ण नामक इस व्यक्ति ने पूछताछ के दौरान पुलिस को बताया कि वह बछरावां (रायबरेली) में सीमेंट की बोरियां चुराने की गरज से डब्बे में घुसा था, लेकिन तब तक डब्बे को सील करने वाले आ गए और वह पिटने के डर से डब्बे में ही दुबक गया. लखनऊ आतेआते डब्बे में उस का दम घुटने लगा तो उसे डब्बे के दरवाजे पीटने पड़े.

श्रीकृष्ण को हवालात भेज दिया गया और मालगाड़ी बरेली रवाना हो गई.

—विजयदूत, बस्ती (प्रेषक : पुष्पा श्रीवास्तव)

महिलाओं द्वारा जूतों पर पालिश

लुधियाना देश का पहला औद्योगिक नगर है जहां महिलाओं ने रोजगार न मिलने पर जूतों की मरम्मत और पालिश का काम अपना लिया है.

लुधियाना बस अड्डे के बाहर सड़क के किनारे अन्य पुरुष मोचियों के साथ कुछ महिलाएं भी जूते की मरम्मत और पालिश का काम करती दिखाई देती हैं. ये महिलाएं पंजाब की निवासी नहीं अपितु अन्य राज्यों से अपने परिवारों के साथ यहां रोटीरोजी कमाने के लिए आई हैं तथा अपने पुरुषों द्वारा अपनाए गए व्यवसाय में सहयोग देती हैं. **—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : अजयकुमार चौरे) (सर्वोत्तम)**

इन बैंकों की स्थापना ने न केवल बीजों की सुरक्षा आसान कर दी है बल्कि इन के प्रयासों से तीसरे विश्व की भोजन की समस्याओं का हल खोजने में भी मदद मिल सकती है...

लेख • विवेक सक्सेना

बीजों के जीन बैंक

बहुत कम तापक्रम पर डब्बाबंद किए गए बीजों की जांच इन्हें इस तरह से काफी समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है.

जरमन किसानों से प्राप्त पुराने बीजों से उगाए गए टमाटर के पौधों का निरीक्षण
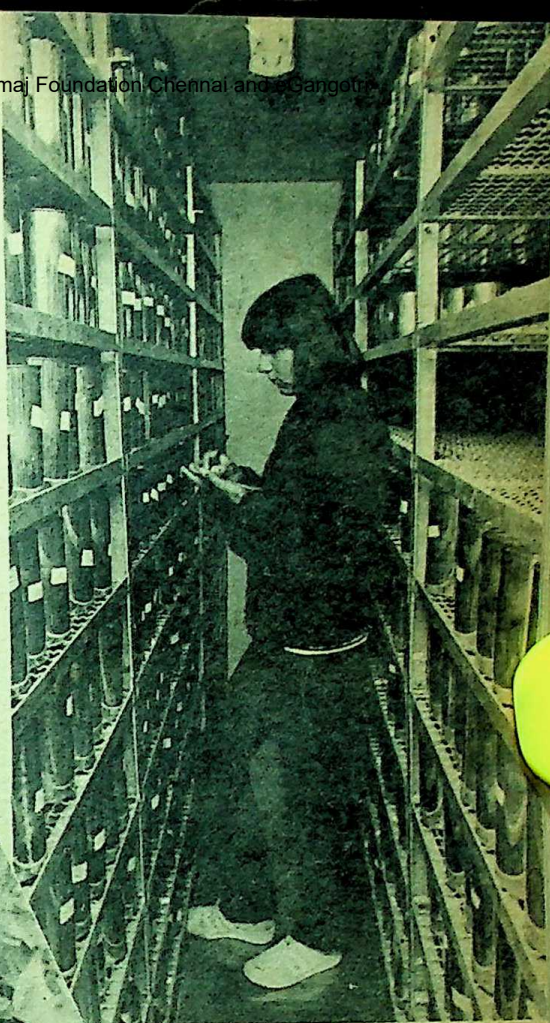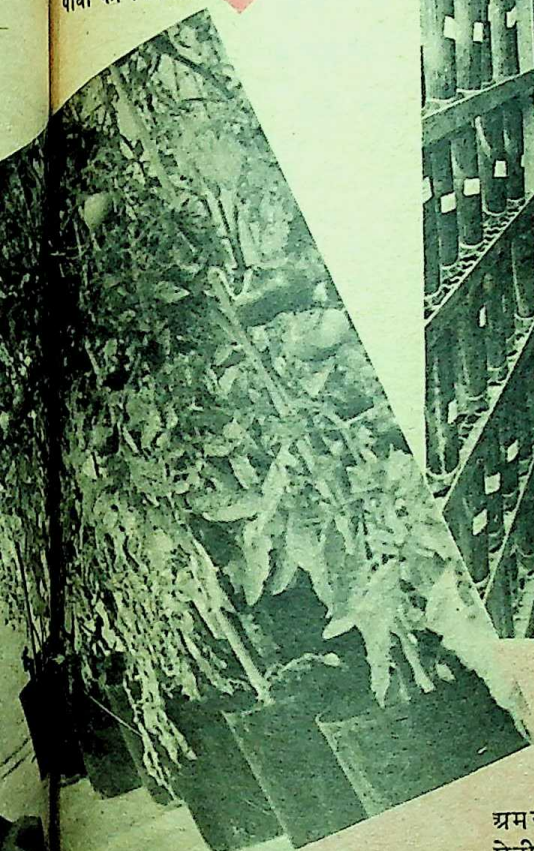
आज कृषि के क्षेत्र में काफी तेजी से प्रगति हो रही है. हर देश के कृषि वैज्ञानिक पौधों पर नएनए प्रयोग कर के भरपूर पैदावार देने वाले नएनए बीजों का विकास करने में लगे हैं. इन बीजों से जहां एक ओर नए गुणों वाले पौधों का विकास हुआ है, वहीं दूसरा ओर पौधे अपने मूल गुणों को खोते जा रहे हैं.

अफ्रीका, एशिया व लैटिन (दक्षिणी) अमरीकी देशों में, वैज्ञानिकों के अनुसार खेती की पैदावार में भारी बढ़ोतरी होने के साथसाथ पौधों के मूल गुणों को समाप्त होने का खतरा पैदा हो गया है.

इस खतरे का सामना करने के लिए पश्चिम जरमनी व कुछ अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने एक अभियान चलाया है. इस अभियान का उद्देश्य पौधों के परंपरागत गुणों में आने वाली कमी को रोकना व पौधों के मूल स्वरूप को बनाए रखना है.

इस अभियान को चलाने में पश्चिम

जरमनी में ब्रुंसविक स्थित कृषि वनस्पति संस्थान के प्रोफ़ेसर मैनफ्रेड डैंब्रोथ विशेष रुचि ले रहे हैं. यह संस्थान पश्चिम जरमनी की संघीय कृषि अनुसंधान संस्था से संबद्ध है.

प्रोफ़ेसर मैनफ्रेड की मेज पर लगभग रोज ही देश के कोनेकोने से आने वाले बीजों के पार्सलों व किसानों के पत्रों का ढेर लगा रहता है. ये पार्सल पश्चिम जर-मनी के विभिन्न नगरों और गांवों से किसानों व बागवानों द्वारा उन विज्ञापनों के जवाब में भेजे जाते हैं जो संस्थान द्वारा पुराने से पुराने बीज एकत्र करने के लिए देश भर की पत्रिकाओं व समाचार-पत्रों में कराए गए थे.

बीजों का इतिहास

इन पुराने बीजों के साथ उन के बारे में संक्षिप्त विवरण भी संलग्न रहता है, जैसे कि वह बीज कितने पुराने पौधे का है, उसे कहां से प्राप्त किया गया है और उस की पैदावार कैसी रही है आदि.

विशेष तौर पर वैज्ञानिक ऐसे बीजों को प्राप्त करने की कोशिश में लगे हुए हैं, जिन्हें काफी लंबे अरसे से बोया जा रहा है और उन से पीढ़ी दर पीढ़ी फसलें ली जा रही हैं. यहां ध्यान देने के काबिल एक बात यह भी है कि ये बीज 'वर्णसंकर' या दो किस्मों अथवा गुणों वाले पौधों के न हो कर एक ही किस्म के पौधों के होते हैं.

प्रोफ़ेसर मैनफ्रेड के पास तरहतरह के बीज इकट्ठे होते जा रहे हैं. उन के पास सेम के ऐसे बीज हैं, जिन्हें परदादा ने 1857 में बोया था और आज पड़पोता बो रहा है. मटर के वे बीज हैं, जो पारिवारिक खेतों में 70 सालों से बोए जा रहे हैं. और न जाने कितने पुरानी किस्मों के बीज उन के पास जमा हो गए हैं.

पचासों साल पुराने इन बीजों में रोगों का मुकाबला करने की क्षमता भी आ गई है. इन बीजों को कृषि वनस्पति संस्थान के अंतर्गत आने वाले 'जीन बैंक' में सुरक्षित रखा जाता है. 'जीन' पौधों के परंपरागत गुणों को बीज में संजोए रखते हैं. इन्हें दूसरे शब्दों में गुणवाहक भी कह सकते हैं.

पिछले कई दशकों से पौधों की नई भरपूर फसल देने वाली किस्में विकसित करने के लिए किए जाने वाले प्रयोगों के कारण बीज अपने मूल आनुवांशिक गुणों को खोते चले जा रहे हैं.

पश्चिम जरमनी का सहयोग

पश्चिम जरमनी का यह संस्थान न केवल देश में उगने वाले पौधों के बीजों को इकट्ठा करने का काम कर रहा है बल्कि दूसरे देशों जैसे कोस्टारिका, इथियोपिया आदि में भी जीन बैंक स्थापित करने में सहयोग दे रहा है.

'विश्व में पौधों के आनुवांशिक गुणों की सुरक्षा' के नारे को कामयाब बनाने के उद्देश्य से ब्रुंसविक के इस कृषि वनस्पति संस्थान के विशेषज्ञ अपने सहयोगियों की सहायता से इस अभियान को पूरे विश्व में फैलाने में मदद दे रहे हैं.

संस्था में इकट्ठे हो रहे पुराने बीजों के इन नमूनों को अगले सौ सालों तक सुरक्षित रखने के लिए उन्हें शून्य से भी 10 अंश कम तापक्रम पर धातु के ऐसे डब्बों में सीलबंद किया गया है जिन के अंदर हवा जरा भी नहीं जा सकती.

डब्बों को सीलबंद करने के लिए विशेष तकनीक को काम में लाया गया है. इस तकनीक द्वारा बीच के ऊपर चढ़े खोल की नमी को पांच प्रतिशत कम कर दिया गया है. ऐसा करने से सालों तक बीजों के गुणों को सुरक्षित रखा जा सकता है.

पश्चिम जरमनी का यह संस्थान एक बड़ा बीज संग्रहालय बन गया है. प्रोफ़ेसर मैनफ्रेड का कहना है कि इस तरह के प्रयासों से तीसरे विश्व की भोजन समस्याओं का हल खोजने में मदद मिल सकती है.

फागुन में...

सूर्यकुमार पांडेय

मल लिया गुलाल
फागुन में,
हो गए कपोल लाल
फागुन में.
बदल गया मुखड़े का रंग
मन में उठती नई उमंग,
तन में सिहरन,
पग में थिरकन,
दुखने लगे ग्रंगग्रंग.
लगता है मौसम ने पूछ लिया
गोरी से हालचाल
फागुन में.
सांसों में घुली प्रीतगंध,
टूट गए सारे प्रतिबंध,
ग्रौर ग्रधिक स्पष्ट
हुए मन में
संयम यौवन के संबंध.
जो ग्रनुत्तरित थे, हल हो गए
मुशकिल टेढ़े सवाल
फागुन में.

इस स्तंभ के लिए समाचार-पत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : शाबाश, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

बस कंडक्टर को पीएच. डी. की उपाधि

देश के इतिहास में संभवत: यह पहला उदाहरण होगा जब एक बस कंडक्टर को पीएच. डी. की उपाधि से सम्मानित किया गया है.

मेरठ विश्वविद्यालय ने हाल ही में मुरादनगर थाने के रावली ग्राम के श्री जयपालसिंह को 'दिनकर का काव्य' शोध प्रबंध पर पीएच. डी. की उपाधि प्रदान की. श्री सिंह बस कंडक्टर हैं.

परिवहन कर्मचारी उच्चाधिकारियों से परिवहन के इतिहास को गौरवान्वित करने वाले श्री सिंह की पदोन्नति करने की सिफारिश कर रहे हैं.

—आज, कानपुर (प्रेषक : अनिलकुमार श्रीवास्तव)

बालिका द्वारा लकड़बग्घे से भाई की रक्षा

दुर्ग जिले के बरपारा ग्राम की एक 11 वर्षीया बालिका अनसूया ने अपने चार वर्षीय भाई को एक लकड़बग्घे से बचाने के लिए उस से संघर्ष कर अपूर्व शौर्य दर्शाया.

एक दिन जब दोनों भाईबहन शाम को खेल रहे थे तब लकड़बग्घे ने भाई पर हमला कर उसे घायल कर दिया. बालिका ने एक बड़ा पत्थर उठा कर पूरी ताकत से लकड़बग्घे के सिर पर मारा. जब इस पर भी लकड़बग्घे ने उस के भाई को नहीं छोड़ा तो अनसूया लकड़बग्घे की पीठ पर चढ़ गई और उस की आंखों पर अपनी रस्सी लगातार मारती रही. लकड़बग्घे ने अनसूया को गिराने की कोशिश की लेकिन क्योंकि उस का सिर पत्थर की चोट से काफी घायल हो गया था, इसलिए वह जंगल में भाग गया.

अनसूया भी इस संघर्ष में घायल हो गई. प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में उस का व उस के भाई का उपचार किया गया. स्वास्थ्य केंद्र के डाक्टर ने बालिका के शौर्य के लिए अपनी ओर से नकद राशि पुरस्कार में दी.

—नवभारत, जबलपुर (प्रेषक : श्रद्धानंद मुलतानी)

अपने लिए स्वयं सहायता

बूंदबूंद से घड़ा भर जाता है, इस लोकोक्ति को पाली जिले के चंडावल गांव के कल्याण नवयुवक मंडल ने चरितार्थ कर दिखाया है.

नवयुवक मंडल के अध्यक्ष शांतिलाल वैष्णव के अनुसार गांववासियों से हर माह एकएक रुपया ले कर गांव में विभिन्न विकास कार्य हाथ में लिए गए हैं.

सोजत के निकट चंडावल गांव में इस मंडल ने बसों के लिए यात्री प्रतीक्षालय

तथा बुकिंग कार्याल[illegible] एक समारोह में इस का उद्घाटन किया. आयुर्वेदिक औषधालय तथा व्यायामशाला का निर्माण कार्य भी प्रगति पर है.

जिलाधीश ने इस अनूठे जन सहयोग की सराहना करते हुए विश्वास दिलाया कि चंडावल गांव की सड़क जल्दी ही पूरी कराई जाएगी. यह सड़क 10 साल से अधूरी पड़ी है.

—जलते दीप, जोधपुर (प्रेषक : रामकिशन दुबेश)

सरकार का मुंह नहीं देखते रहे

चिचोली से पांच मील के क्षेत्र में स्थित जीन, दनौरा, बोरगांव, अटारी, कुमली, टाहली, इटिया एवं विटिया गांवों के आठवीं पास छात्रों को जब नवीं कक्षा में कहीं भी प्रवेश नहीं मिल सका तो इन ग्रामों की पंचायतों ने शासन के द्वार खटखटाए तथा विधायकों के घरों के चक्कर लगाए मगर कोई भी इन की सहायता को तैयार नहीं हुआ.

अंततः ग्रामवासियों ने अपने बच्चों के भविष्य की रक्षा करने का बीड़ा उठाया और दो प्राइवेट शिक्षकों का प्रबंध कर के लगभग 50 छात्रों की पढ़ाई की व्यवस्था की. ग्रामवासियों के साहस को देखते हुए एक अवकाशप्राप्त शिक्षक श्री तोमर ने भी अपनी सेवाएं अर्पित कर दीं और कहा कि विद्यालय की वित्तीय स्थिति को देखते हुए वह निःशुल्क कार्य करेंगे.

इस विद्यालय का संचालन करने के लिए एक समिति का गठन किया गया है. विद्यालय में विज्ञान और कृषि के विषय भी रखे गए हैं. ग्रामवासियों के इस साहस की सभी ओर प्रशंसा की जा रही है. —नवभारत, नागपुर (प्रेषक : र. कु. ग्वालानी)

+ विवाह से पूर्व कौमार्य परीक्षण

कभीकभी ऐसी अनहोनी घटना हो जाती है जो समाज को नई दिशा तो देती ही है, साथ ही साहस की नई परिभाषाएं भी लिख जाती है. ऐसी ही एक घटना सरधना में घटी, जिस में रेणु नामक एक युवती ने अपने भावी पति की चुनौती भरी परीक्षा का सामना कर उसे परास्त करने के साथ ही एक नई मिसाल कायम की.

कहते हैं कि एक बिगड़े दिल युवक ने समाचारपत्रों में विज्ञापन के माध्यम से एक रिश्ता तय किया तथा विवाह के समय वधू की डाक्टरी परीक्षा की जिद कर उस ने सब को असमंजस में डाल दिया. वर का कहना था कि उस ने कुंआरी कन्या के लिए विज्ञापन दिया था, इसलिए वह आश्वस्त होना चाहता है कि उस की भावी पत्नी पूर्णतया कुंआरी है.

काफी तर्कवितर्क के बाद कन्या ने अपने भावी पति की चुनौती को स्वीकार कर अपना डाक्टरी परीक्षण करा लिया, जिस में उस का कौमार्य पूर्णतया सुरक्षित पाया गया. लेकिन जब फेरे पड़ने का समय आया तो रेणु ने आग्रह किया कि वह भी अपने भावी पति के कुंआरेपन का प्रमाण चाहती है.

इस पर वर बगलें झांकने लगा. इस से लड़की सारा माजरा समझ कर बोली. "मुझे सैकंडहैंड व्यक्ति को अपना पति बनाने में कोई दिलचस्पी नहीं है. मैं तुम्हारे साथ विवाह करने को किसी भी कीमत पर तैयार नहीं हूं."

कन्या के इस निश्चय से सारे घर में खलबली मच गई, किंतु रेणु अपनी बात पर अड़ी रही जिस से बारात को बैरंग वापस लौटना पड़ा.

— अमर उजाला, आगरा (प्रेषक : [illegible]) (सर्वोत्तम) •

- नववधू शृंगार कैसे करे?
- ससुराल में नववधू अन्य सदस्यों से कैसे तालमेल बैठाए?
- नववधू किस अवसर पर कैसी पोशाक पहने?
- विशेष अवसरों व सामान्य दिनों के लिए कैसी साड़ियां खरीदें?
- कम जगह घेरने वाला कम खर्च में आकर्षक फरनीचर किस प्रकार बनवाएं?
- भावी वधू की शारीरिक व मानसिक समस्याओं पर विशेषज्ञों की राय, परिवार नियोजन के उपाय तथा व्यावहारिक पहलुओं पर प्रकाश डालने वाले लेख.

साथ ही नववधुओं के लिए उपयोगी कढ़ाईसिलाई, दांपत्य, स्वास्थ्य व सौंदर्य संबंधी सचित्र सामग्री, घरगृहस्थी की समस्याओं पर विशेष

मार्गदर्शन करने वाला एक संग्रहणीय अंक

गृहशोभा

मार्च, 1981

नववधू विशेषांक

मैं ने भी उतारी एक तसवीर

...ायाकार :
...जयकुमार गुप्त,
...लकत्ता.

मैं ने भी उतारी एक तसवीर
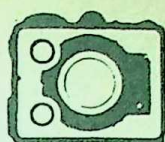
छायाकार :
च. तारे मलहोत्रा,
कलनौर.

होली है
— पंकज गोस्वामी
जादूगर
मुझे तुमसे लड़ाने के लिए, इस तरह रंग के धब्बे लगाना दफ्तर वालों की शैतानी है. रामकसम बेचारी स्टेनो तो दफ्तर ही नहीं आई थी..
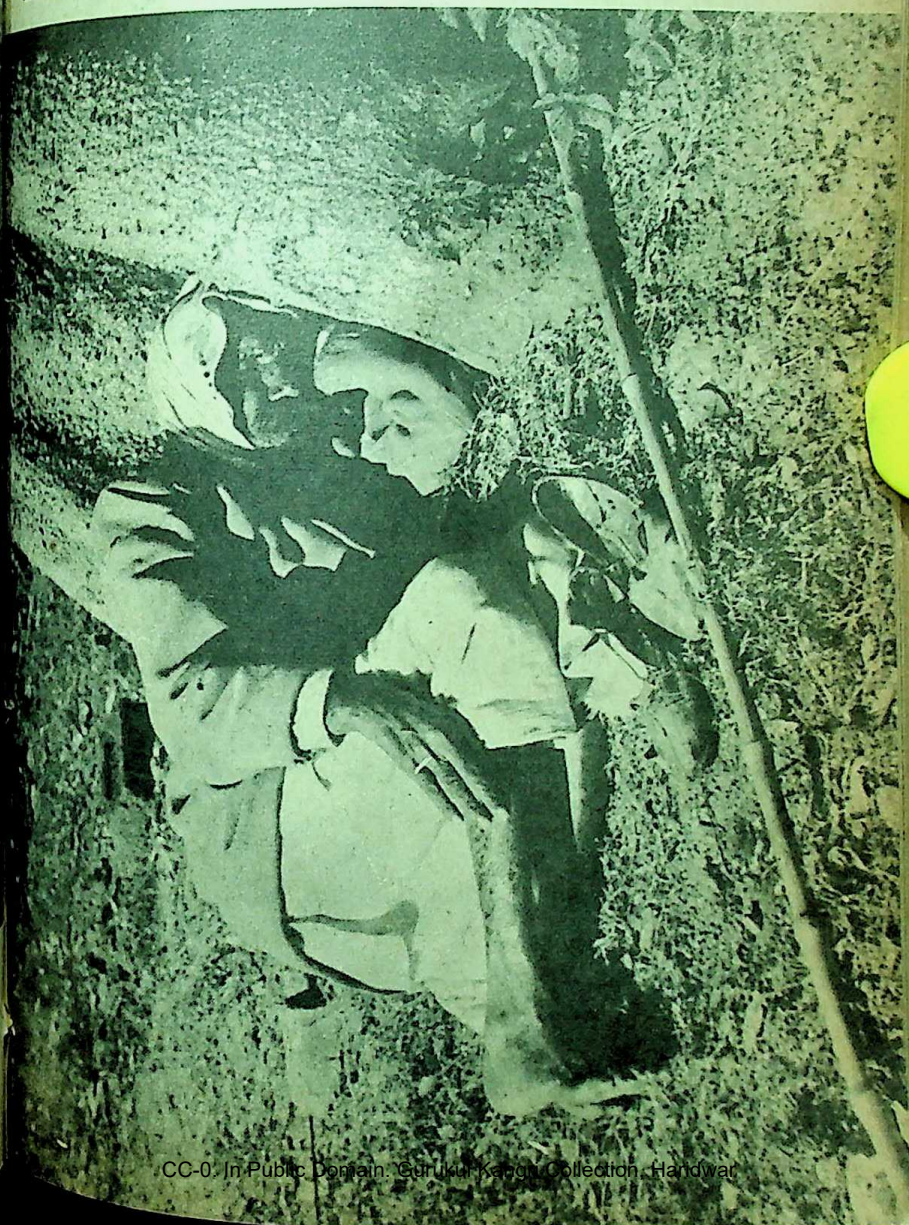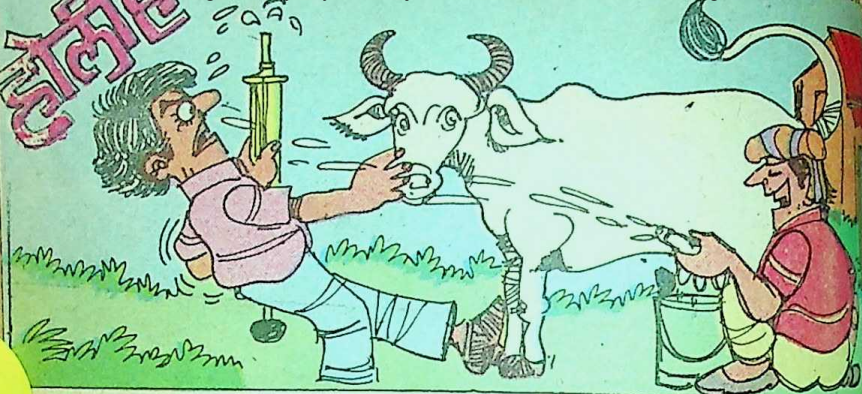
बहुत सारे विरोधियों से एक साथ टक्कर लेनी है...
कीचड़
पड़ौसन की बातें सुनने का जो गुप्त छेद मैनें बन
रखवा था, लगता
उसे पता चल गया है..
योग प्रशिक्षण संस्थान
पंकज गोस्वामी

सरिता मुक्ता विस्तार योजना में भाग लीजिए

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं किया फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. अ[illegible] भी हजारों वर्ग मील भारतीय [illegible] विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पूर्ति [illegible] लिए बहुत बड़े पैमाने पर सामा[illegible] सहयोग और सद्भाव की आवश्यक[illegible] होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्थान, [illegible] पूंजीपति या राजनीतिक दल से संबं[illegible] नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रकार [illegible] सहायता स्वीकार करती है. यह के[illegible] एक ही वर्ग की सहायता और बलबूते [illegible] निर्भर है. और वह हैं सरिता के पाठ[illegible] इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्साहन [illegible] सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती है.

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी पूं[illegible] सरकार का और देशी व विदे[illegible]

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए
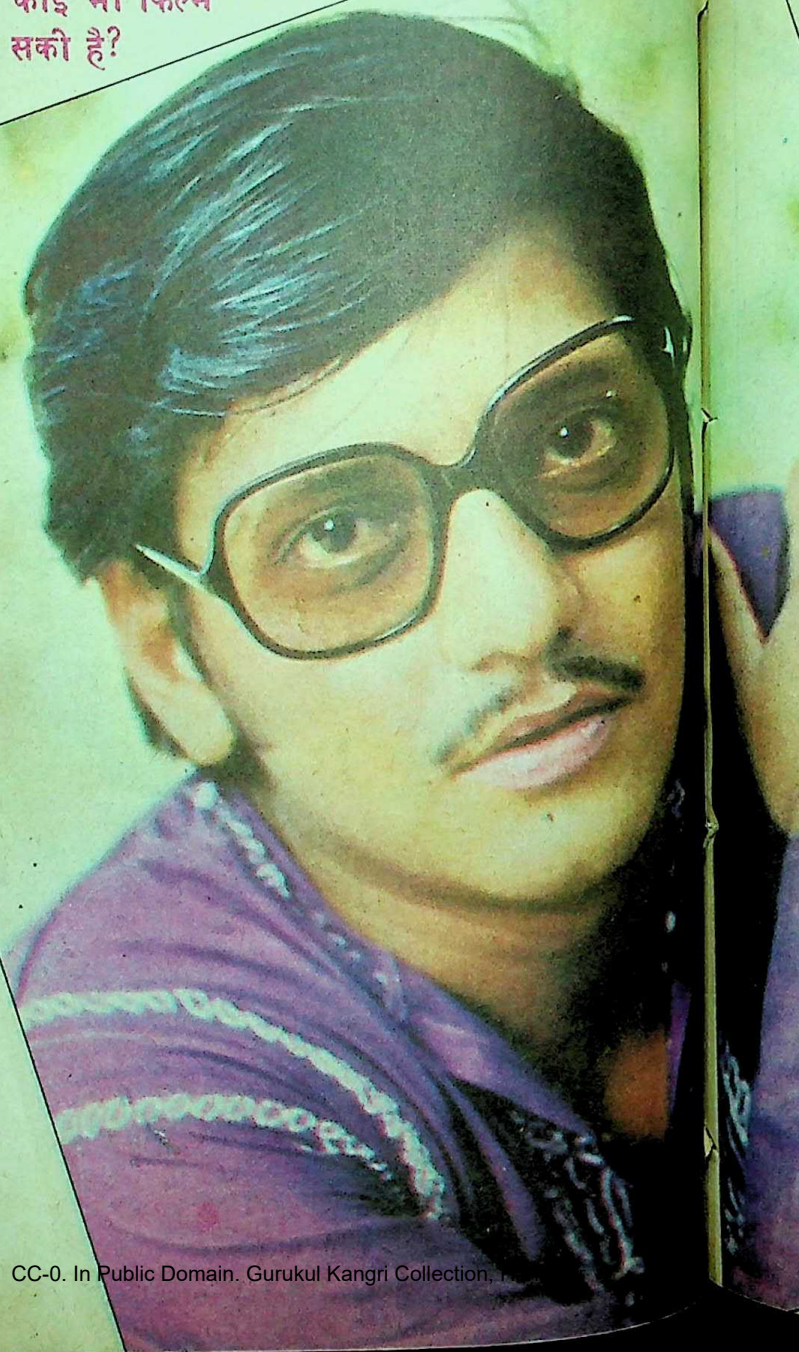
अमोल पालेकर

लेख • इब्राहीम 'अश्क'

फिल्म का हीरो ऐसा तो हो जिसे आप अपना आदर्श मान सकें, उस के व्यक्तित्व से आप प्रभावित हों, उस की जवांमर्दी के कायल हो जाएं, उस के रोब और दबदबे को देख कर जी खुश हो जाए, उस की खूबसूरती और बांकापन देख कर दंग रह जाएं, उस का
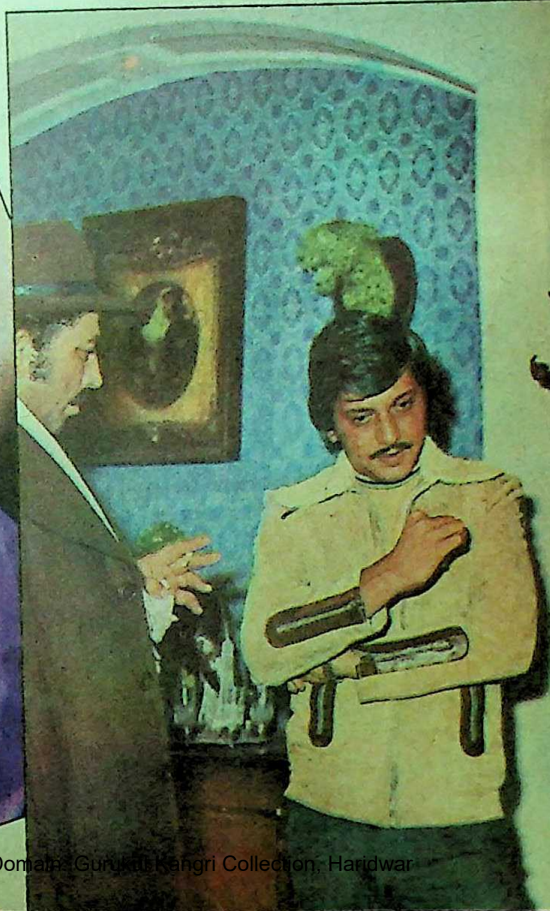
हर काम ऐसा हो जो चरम सीमा पर पहुंचा हुआ हो. वह मुहब्बत करे तो उसे इंतिहा तक पहुंचा सके. वह नफरत करे तो इस तरह कि उस के इस अंदाज पर भी प्यार आने लगे. अमोल पालेकर में ऐसी कोई भी खास बात नजर नहीं आती. फिर भी वह हीरो है, हिंदी फिल्मों का हीरो.

अमोल एक आम भद्दी लड़की जैसा गैरसंजीदा चेहरा है जिस की हंसी में बचपना है, चाल में लचक, बातों में उथलापन और गंभीरता में भोंडा हास्य नजर आता है. परदे पर कोई लड़की ऐसे हीरो से प्यार करने लगती है तो देखने वाले को उस खूबसूरत लड़की की इस बेवकूफी पर या तो रोना आएगा या झल्लाहट.

अमोल का फिल्मों में आगमन

'रजनीगंधा' अमोल पालेकर की पहली फिल्म थी. इस फिल्म में अमोल को हीरो बना कर निर्माता ने एक सिरदर्द मोल ले लिया था. फिल्म बन कर तैयार हो गई तो वितरकों ने इसे देखने के बाद लेने से इनकार कर दिया. नतीजा यह हुआ कि महीनों यह फिल्म डब्बों में बंद पड़ी रही. जैसेतैसे प्रदर्शन के लिए पेश की गई. कहानी अच्छी थी इसलिए हीरोहीरोइन भी कहानी के साथ चल निकले, लेकिन बाक्स आफिस पर फिर भी इस फिल्म को कामयाबी हासिल नहीं हो सकी.

इस के साथ ही एक नाटक और हुआ, जैसा कि अकसर हमारे यहां होता रहा है. वह यह कि हमारी सरकार बड़े शौक से हर उस फिल्म को राष्ट्रीय पुरस्कार दे कर सम्मानित कर देती है जो बाक्स आफिस पर असफलता के रिकार्ड तोड़ देती है. ऐसी फिल्मों में 'तीसरी कसम,' गोधूलि,' 'मृगया,' 'भूमिका,' 'शतरंज के खिलाड़ी,' 'जुनून' और ऐसी अनेक फिल्मों के नाम गिनाए जा सकते हैं. इतना ही नहीं राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फिल्म '27 डाउन' को तो अब तक परदा भी नसीब नहीं हुआ.

फिल्मी लेखकों का रवैया

राष्ट्रीय पुरस्कार मिलने के बाद बिना सोचेसमझे फिल्मी लेखक उस फिल्म की तारीफों के पुल बांधना अपना फर्ज समझने लगते हैं. 'रजनीगंधा' के साथ भी यही हुआ. फिल्मी लेखकों ने इस फिल्म की काफी तारीफ की. अमोल पालेकर और विद्या सिन्हा को तो आसमान पर ही बैठा दिया और यह नहीं सोचा कि ये आसमान से गिरेंगे तो कहां जा कर अटकेंगे.

विद्या सिन्हा इस ऊंचाई से इस बुरी तरह गिरी कि आज तक संभल नहीं पाई है. और अब तो वह एक भूलीबिसरी कहानी बनने लगी है. अमोल पालेकर का हाल भी यही होता अगर

अमोल : अभिनेता बने रहने की बजाए अब निर्देशक बनने की कोशिश क्यों?
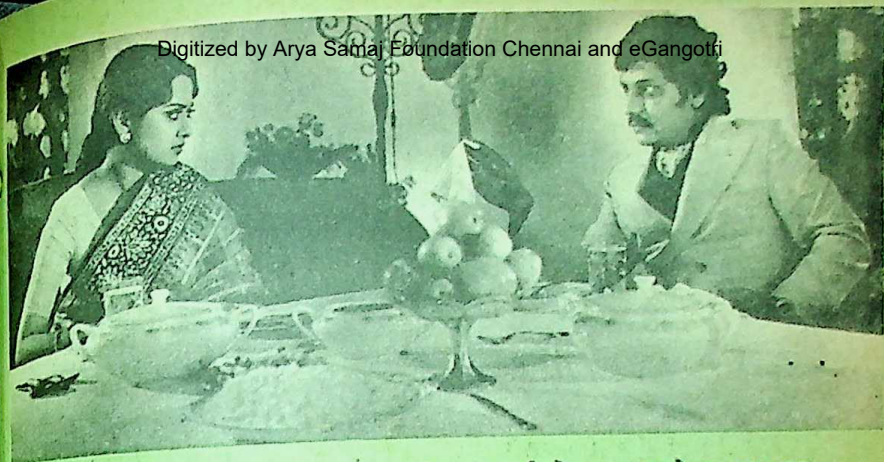
आगामी फिल्म 'परीक्षा' के एक दृश्य में रामेश्वरी के साथ अमोल : क्या इस फिल्म में भी दर्शकों को कुछ नया देखने को मिल सकेगा?

उसे 'चितचोर' और 'घरौंदा' जैसी फिल्मों का सहारा न मिल गया होता.

'चितचोर' की कामयाबी की वजह भी उस की संगीत प्रधान कहानी है, न कि अमोल पालेकर का अभिनय. यही हाल 'घरौंदा' का है. 'घरौंदा' में अमोल को काफी अच्छा रोल मिला है लेकिन डाक्टर श्रीराम लागू के आगे वह बिलकुल बौना नजर आता है. दरअसल 'घरौंदा' की कामयाबी का सेहरा श्रीराम लागू के सिर ही बांधा जा सकता है. हीरो किसी चरित्र अभिनेता से मात खा जाए तो उसे हीरो नहीं कहा जा सकता.

फिल्म 'अपने पराए' को ही ले लीजिए. उत्पल दत्त के आगे अमोल पालेकर कितना टिक पाया है? फिल्म 'चेहरे पे चेहरा' में संजीवकुमार के अभिनय के आगे भी अमोल पालेकर फीका ही नजर आता है. फिर अमोल पालेकर को जबरदस्ती किस तरह एक अच्छा कलाकार, एक अच्छा अभिनेता, एक अच्छा हीरो मान लिया जाए?

हां, फिल्म 'दामाद,' 'गोलमाल,' 'मेरी बीवी की शादी' जैसे रोल में अमोल पालेकर को लिया ही जा सकता है क्योंकि ऐसे रोल कोई भी आम आदमी आसानी से कर सकता है जिन में करने के लिए कुछ होता ही नहीं है. वैसे अमोल पालेकर बजाए हीरो के हास्य अभिनेता बनता तो उसे ज्यादा सफलता मिल सकती थी क्योंकि उस के चेहरे में ऐसी बात जरूर है जिसे देख कर अपने आप हंसी आने लगती है.

अमोल का व्यक्तित्व

जहां तक अभिनय का सवाल है, अमोल पालेकर का चेहरा ही ऐसा है जिस पर न गम अच्छा लगता है, न खुशी, फिर ऐसे चेहरे पर जिंदगी के उतारचढ़ाव के भाव कैसे प्रकट हो सकते हैं?

अमोल पालेकर का पूरा फिल्मी जीवन अगर देखा जाए तो एक बात साफ़ जाहिर हो जाती है कि उस के अपने दमखम पर आज तक कोई फिल्म सफल नहीं हो सकी है. वह कभी कहानी की बैसाखी पर टिकी है तो कभी साथी कलाकारों के कंधों पर. अमोल पालेकर खुद भी इस बात को अच्छी तरह जान चुका है और यही वजह है कि अब उस का झुकाव निर्देशन की ओर बढ़ गया है.

(शेष पृष्ठ 83 पर)

होली क्या यही है ?

व्यंग्य चित्र : आनंद माहि...

बीवीजी, कहो तो आज से नाली का कीचड़ साफ करना बंद कर दूं. होली नजदीक है. होली खेलने के काम आएगा?

रंग से तो मुंह लाल होता है, जब तक दारू से आंखें लाल न हों होली का मजा क्या है...

पड़ोसन से पूरे साल की जलन और रंजिश दूर करने का सही अवसर होली पर मिलता है.
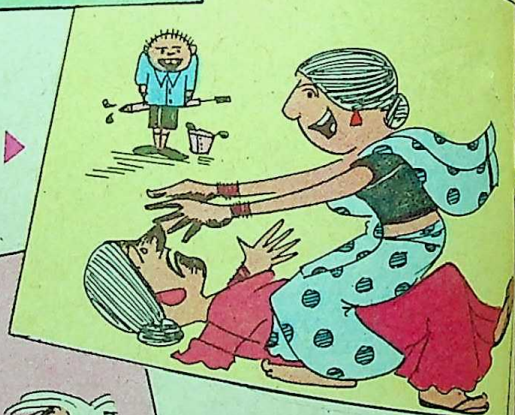
और लोग तो मुंह पर कालिख लगा कर होली खेल गए, नतीजा यह है कि खुद को मिट्टी का तेल, पेट्रोल आदि मुंह पर मलना पड़ता है.

(अमोल प

देखना यह है
क्या कर दि

अमा

अमोल
कलर्क से हीरो
फिल्म 'रजनी
बाबू का रोल
में भी उस ने
फिल्म देखने
की छवि ए
बन गई है. इ
वह लोगों को
जहां त
को जीने की
इतनी हिम्म
करने के लिए
निर्मातानिर्दे
वे अपनी
अमोल 'पाले
अपनी लाखों

होली
महो

आपका

(अमोल पालेकर : पृष्ठ 81 से आगे)

देखना यह है कि बहैसियत निर्देशक वह क्या कर दिखाता है.

अमोल केवल दफ्तरी बाबू

अमोल पालेकर एक मामूली बैंक क्लर्क से हीरो बना था. उस की पहली फिल्म 'रजनीगंधा' में भी उसे दफ्तर के बाबू का रोल मिला था. फिल्म 'घरौंदा' में भी उस ने इसी किरदार को निभाया. फिल्म देखने वालों के जेहन में भी अमोल की छवि एक मामूली दफ्तरी बाबू की बन गई है. इसलिए दूसरे किसी रोल में वह लोगों को इतना पसंद भी नहीं आता.

जहां तक चुनौती भरे किरदारों को जीने की बात है, अमोल पालेकर में इतनी हिम्मत नहीं कि वह ऐसे रोल करने के लिए खुद आगे बढ़े, न ही बड़े निर्मातानिर्देशकों में इतना हौसला है कि वे अपनी बड़े बजट की फिल्म में अमोल पालेकर को ऐसे रोल दे कर अपनी लाखों की रकम दांव पर लगा सकें. फिर कम बजट की छोटी फिल्में बनाने वाले हमारे यहां हैं भी कितने?

एक साथ कई बड़े सितारों को ले कर बनाई जाने वाली फिल्मों से अमोल पालेकर हमेशा दूर ही रहता है. साथी कलाकारों की टीम को भी वह इस नजर से परखता है कि कहीं कोई ऐसा कलाकार न हो जो उसे मात देने वाला हो. हीरोइन के चयन में भी वह किसी मंझी हुई हीरोइन के साथ काम करने से कतराता है. इन सारी बातों को मद्देनजर रखते हुए यही कहा जा सकता है कि अमोल किसी न किसी तरह अपने आप को मनवाने की कोशिश करता है. लेकिन जिस के अंदर कुछ न हो उसे कब तक कोई स्वीकार करता रहेगा? अपने आप को मनवाने के लिए यह भी जरूरी होता है कि फिल्म उद्योग के बड़े से बड़े महारथी के साथ काम कर के अपनी पहचान बरकरार रखे. लेकिन अमोल ने आज तक ऐसा कोई भी चुनौती भरा कारनामा अंजाम नहीं दिया है और न ही भविष्य में उस से ऐसी उम्मीद की जा सकती है. ●

हिंदी में रोज हजारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सब से अलग हैं-
विश्व पाकेट बुक्स

एक लहर टूटी हुई: जीवन से निराश विनोद अपने संक्षिप्त जीवन को और संक्षिप्त बना देना चाहता था. ऐसे में नीला ने निस्वार्थ भाव से विनोद को नई जिंदगी दी. स्त्री और पुरुष के सात्विक प्रेम संबंधों की कहानी.

डाल से बिछुड़े: रीता की शादी इंगलैंड में बसे राम के साथ तय हुई तो उसे लगा जैसे वह भावना के स्वप्नलोक में जा रही है. मगर... ब्रिटेन में बसने वाले भारतीयों की अपमान-जनक जिंदगी की सच्ची तस्वीर.

दिल्ली के आंसू: तैमूर लंग ने एक दिन में एकएक लाख हिंदुओं को कत्ल कर के भारत की धरती को खून से लाल कर दिया. फिर भी कई हिंदू उस के पैर चूमने में अपना सौभाग्य समझते थे....आखिर क्यों?

समय के उस पार: अनार्य राजा करंज और आर्य कन्या अंजसि का प्रेम?—असंभव. परिणाम क्या हुआ?... ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व की भारतीय सभ्यता व संस्कृति की रोमांचक कहानी.

उत्तरदान: रहस्य, रोमांस व रोमांच का पुट लिए स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले उन वीरों की कहानी जो स्वयं स्वतंत्रता पाने में असफल होने के बावजूद भी अपने बच्चों के उत्तरदान में स्वतंत्रता पाने की आशा दे गए.

एक और पराजय: टिशांग कसबे के भोले-भाले नागरिकों को चीनी गुलाम बनाना चाहते थे. क्या वे इस में सफल हो सके?

—प्रत्येक रु. 4

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या लिखें.

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12, कनॉट सरकस, नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट लेने पर 5% व डाकखर्च की छूट. आदेश के साथ पांच रुपए अग्रिम भेजें.

मिथुन

मिथुन

पर है जिस
जाहिर है कि
मजेदार बात
उस ने फिल
करने में अप
चिढ़ थी कि
का मिलाजुल
अपनी खुद
और मारपी
जो चलानी
का कहना है
पैसा कमाय
फिल्म में डु

जब म
हो तो जवा
सुना जाता
कर इस वि
आधा पैसा
भारत सरक
कारपोरेशन
भारत

मिथुन अब निर्माता
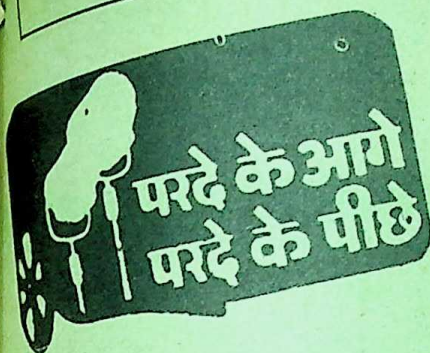
मिथुन निर्माता भी बन गया है. यह फिल्म जापानी तलवारबाजी पर है जिस में कराटे व कुंगफू भी होगा, जाहिर है कि फिल्म का नायक वही होगा. मजेदार बात यह है कि कुछ ही समय पहले उस ने फिल्मों में नाचने और मारपीट करने में अपनी अरुचि प्रकट की थी. उसे चिढ़ थी कि निर्माता उसे हेलेन और शेट्टी का मिलाजुला रूप बनाए जा रहे थे. लेकिन अपनी खुद की फिल्म में वह नाचेगा भी और मारपीट भी करेगा. आखिर फिल्म जो चलानी है. वैसे उस के नजदीकी लोगों का कहना है कि फिल्मों से उस ने जितना पैसा कमाया है उतना वह एक अपनी फिल्म में डुबो देगा.

नेहरू पर फिल्म

जब महात्मा गांधी पर फिल्म बन रही हो तो जवाहरलाल नेहरू पर क्यों नहीं? सुना जाता है कि रूस भारत के साथ मिल कर इस विषय को भुनाने के फेर में है. आधा पैसा रूस लगाएगा और बाकी आधा भारत सरकार नेशनल फिल्म डेवलपमेंट कारपोरेशन या किसी निर्माता द्वारा.

भारत रूस सहयोग से [illegible] बनाए [illegible] दोनों देशों ने साथ मिल कर जो दो फिल्में—'परदेसी' व 'अलीबाबा 40 चोर' बनाई हैं, वे दोनों ही पिटी हैं.

तीन अभिनेता एक समस्या

मिथुन, विजयेंद्र व नसीरुद्दीन शाह—इन तीनों की अभिनय क्षमता की अलग-अलग सीमाएं हैं. लेकिन हिंदी फिल्मों में तीनों की स्थिति लगभग एक जैसी है और तीनों के पारिवारिक जीवन में बिखराव का ढर्रा भी एक जैसा ही रहा है. तीनों अपनी पहलीपहली पत्नी से अलग हो चुके हैं. मिथुन व विजयेंद्र की पत्नियों ने तो फिल्मों में काम करने के लिए तलाक लिया है, जब कि नसीरुद्दीन शाह का

मिथुन : निर्माता बन कर भी क्या अपनी मारपीट, नाचने और उछल-कूद करने वाली छवि बदल सकेगा?

ामला दूसरी तरह का है. अलीगढ़ में स की शादी उम्र में उस से कई साल ड़ी औरत से हुई. सात साल की उस की क बच्ची है जिसे शाह ने चार साल से हीं देखा है.

मिथुन का कहना है कि एलेना ने से तलाक दिया है. विजयेंद्र कहता है, ैं ने निक्की से समझौता करने की काफी ोशिश की लेकिन एक बार जो दरार दा हो जाती है वह भर नहीं पाती. फटा ग्रा दूध कभी नहीं जम सकता. पुरुष ठोर माने जाते हैं लेकिन औरतें कई ामलों में ज्यादा कठोर हो जाती हैं."

अभिनेता से निर्देशक

देव आनंद का भानजा भीष्म कोहली ौर राजेश खन्ना का चेला (चमचा भी) पेशकुमार अभिनय में अपनी कोई दाल गल पाने की वजह से अब निर्देशक बन ए हैं.

भीष्म कोहली की तो पहली फिल्म केस्मत' (जिस में वह सिर्फ निर्देशक था) दर्शित भी हो चुकी है और पिट भी चुकी . 'मैं ने जीना सीख लिया' दूसरी फिल्म जिस का वह निर्देशक तो है लेकिन भिनेता नहीं.

रूपेशकुमार को निर्माता ी. रामानायडू ने निर्देशन ा मौका दिया है और कहा ाता है कि इस में राजेश न्ना का बहुत बड़ा हाथ रहा . खैर हो, डी. रामानायडू ो. राजेश खन्ना के कहने पर ी पहले भी एन. एन. सिप्पी राजेश के दोस्त डैनी को फिर वही रात' के निर्देशन ा मौका दिया था और इस की काफी बड़ी कीमत सिप्पी को फिल्म की असफलता के रूप में चुकानी पड़ी.

विक्रम : होटल या फिल्म?

विक्रम इस समय यह फैसला नहीं कर पा रहा है कि वह फिल्मों में ही रहे या होटल व्यवसाय में चला जाए. 'प्यासी नदी' उस की पहली फिल्म थी. लेकिन एक दरजन फिल्मों में छोटीबड़ी भूमिकाओं में अपनी कोई अलग पहचान कायम न कर पाने की वजह से 'आदमी सड़क का' व 'जानी दुश्मन' के बाद वह गुम हो गया. इस बीच पता नहीं कहां से तिकड़म भिड़ा कर उस ने बंगलौर में एक फाइव स्टार होटल खोलने की

ासीरुद्दीन शाह : अपनी पत्नी ौर बच्चों से बेखबर क्यों?

दीप्ति नवल : नुक्ताचीनी की आदत कहीं फिल्मी जीवन ही चौपट न कर दे.

योजना बना डाली. प्रमोद चक्रवर्ती की 'पतिता' के बाद से उसे फिर फिल्में मिलने लगी हैं. देखें, वह क्या फैसला कर पाता है.

रास्ते की तलाश

'एक बार फिर' की दीप्ति नवल अभी अपने लिए सही रास्ते की ही तलाश में है. वह व्यावसायिक फिल्में करना चाहती है. लेकिन जब ओम प्रकाश रल्हन ने उसे अपनी फिल्म में लेना चाहा तो उस ने "फिल्म बचकानी है" कह कर मना कर दिया.

राजश्री वालों ने उसे उस अमरीकी लड़की की भूमिका देनी चाही जो जन्मी तो भारत में लेकिन वर्षों अमरीका में ही रही. इस भूमिका को उस ने नहीं स्वीकारा क्योंकि उस के अनुसार, "इस में मुझे जरूरत से ज्यादा आधुनिक बनना पड़ता."

कहीं ऐसा न हो कि भूमिकाओं की नुक्ताचीनी करतेकरते उस के हाथ से सारी फिल्में ही निकल जाएं.

प्रीति हीरोइन भी

प्रीति गांगुली की हीरोइन बनने की साध पूरी हो रही है. डी. एस. सुलतान ने हाल ही में उसे 'प्लाट नंबर दो' में भूतपूर्व चरित्र अभिनेता कृष्ण धवन के लड़के दिलीप धवन के साथ बतौर हीरो[इन] इन लिया है. लेकिन उस के साथ सब[से] बड़ी दिक्कत यह है कि जब वह खूबसूर[त] दिखती थी तो बेहद मोटी थी और अ[...]

प्रीति गांगुली : मोटापे के साथ ही क्या चेहरे का सारा आकर्षण भी जाता रहा?

मक्ता
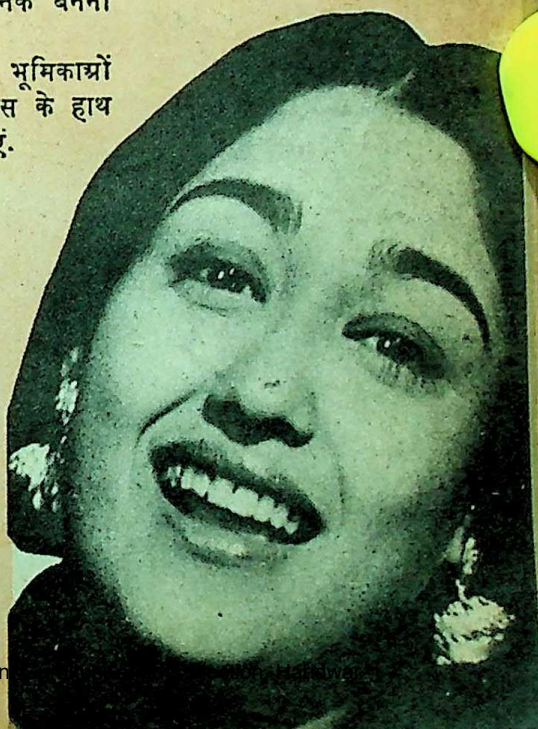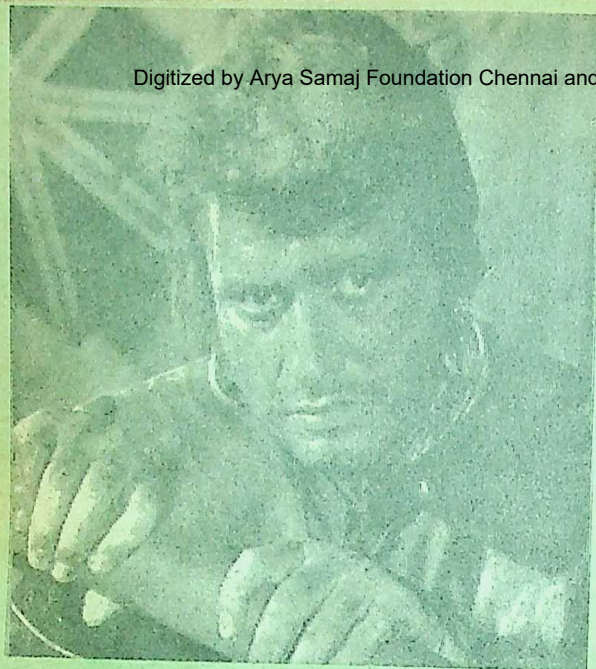
मनोजकुमार : "फिल्म 'क्रांति' की सफलता के बारे में मैं पिछली फिल्मों से ज्यादा आश्वस्त हूं."

मनोज की 'क्रांति'

'क्रांति' एक निर्माता व निर्देशक के रूप में मनोजकुमार की पांचवीं फिल्म है और यही वह पहली फिल्म है जो सही समय व तय बजट में पूरी नहीं हो पाई थी.

फिल्म डेढ़ साल लेट हो गई है और इस का बजट भी 60 से 70 लाख रुपए तक और बढ़ गया है.

खुद मनोजकुमार का कहना है, "जितना पैसा, समय और श्रम मेरी पिछली चार फिल्मों में खर्च हुआ था, उतना मिला कर मैं ने अकेली 'क्रांति' में लगाया है और यही वह फिल्म भी है जिस की सफलता के बारे में मैं पिछली फिल्मों से ज्यादा आश्वस्त हूं."

दिलीपकुमार ने पिछले दिनों इस फिल्म का ट्रायल देख कर कहा था, "ऊपर वाले ने बनाया है इस फिल्म (क्रांति) को, वही इसे चलाएगा भी." •

जब वह पतली हो गई है तो उस के चेहरे का सारा आकर्षण ही मानो साफ हो गया है. अगर हीरोइन के रूप में वह नहीं चली तो शादी कर के घर बैठने के अलावा उस के पास कोई और चारा नहीं रह जाएगा.
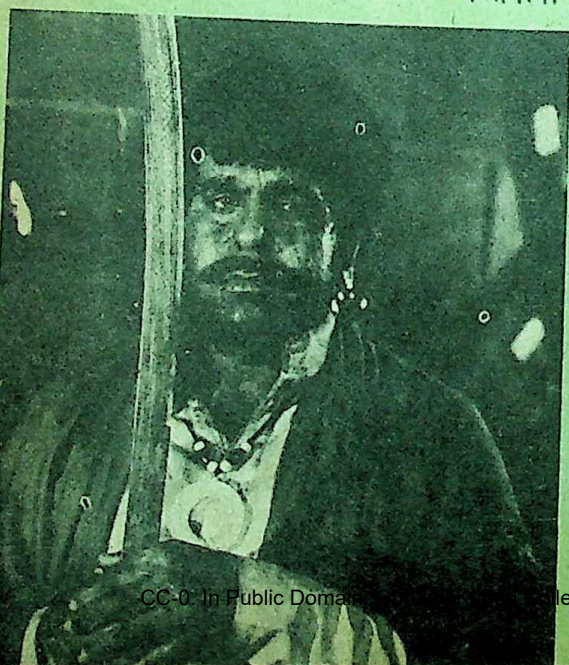
दिलीपकुमार : "ऊपर वाले ने बनाया है इस फिल्म (क्रांति) को, वही इसे चलाएगा भी."

उद्योग की प्रगति श्रमिकों की कार्यकुशलता पर निर्भर है और मधुर वातावरण में ज्यादा से ज्यादा कार्य श्रमिकों से कैसे लिया जाए यह उस उद्योग की प्रबंध व्यवस्था पर निर्भर रहता है, जिसे एक कुशल प्रबंधक ही उचित तरीके से बनाए रख सकता है.

लघु उद्योग प्रबंध

उद्योग में प्रबंधक की भूमिका
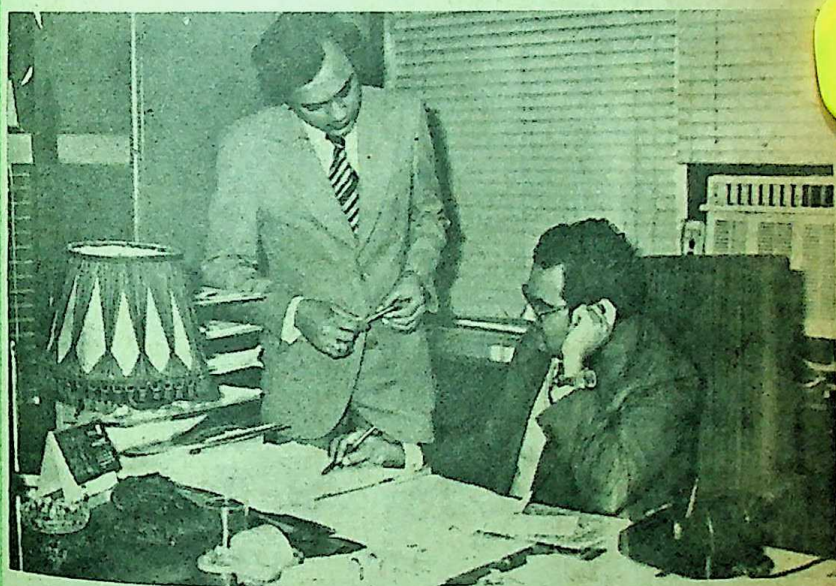
दूसरे महायुद्ध से पहले सब कुछ इतना कठिन नहीं था. कुछ पूंजी एकत्र कर ली, कुछ मशीनें लगा लीं, कुछ श्रमिक ले लिए, कुछ कच्चा माल ले लिया और उद्योग आरंभ हो गया. श्रमिकों से परेशानियां कम थीं. पर आज हालात बदल चुके हैं. सब से बड़ी समस्या श्रमिकों की है. आज तो वे ही उद्योग — चाहे वे लघु हों या बड़े — पनप सकते हैं जिन के पास प्रबंध संबंधी कुशलता है. अब मालिक

ग्रौर मजदूर वाले दिन नहीं रहे. उन के बीच प्रबंध [illegible] है. जो मालिक जितनी ग्रच्छी तरह से प्रबंध कर व्यवस्था रखेगा, वह उतना ही सफल होगा.

सद्भाव कैसे बढ़े?

सच तो यह है कि सब हर कुछ संभाला जा सकता है, पर इनसान को संभालना बहुत कठिन होता है. नाना प्रकार के परिवेश से ग्राए, भिन्नभिन्न तरह की शिक्षा पाए, कुछ शिक्षित कुछ ग्रशिक्षित, कुछ गांव के कुछ शहर के श्रमिकों में एक ग्रजीब तरह का मिश्रण रहता है. उन की ग्रलगग्रलग ग्रपेक्षाएं, ग्रलगग्रलग मान्यताग्रों के चलते किस समय किस का क्या मूड हो जाए, नहीं कहा जा सकता. मशीन के बारे में तो कह सकते हैं कि किस समय, किस कमी से वह कैसा व्यवहार करेगी, पर इनसान के बारे में कुछ भी भविष्यवाणी करना संभव नहीं. ग्रतः कोई भी सूत्र ग्रभी तक हाथ नहीं लगा है जो श्रमिकों ग्रौर मालिक के बीच निश्चित रूप से सद्भाव बनाए रख सके. पर कुछ बातें हैं जिन पर यदि मालिक ध्यान दे तो किसी हद तक सद्भाव रखा जा सकता है ग्रौर उचित मात्रा में काम भी लिया जा सकता है.

मालिक की प्रमुख समस्या श्रमिकों के प्रबंध की रहती है. जमीन खरीदी जा सकती है, मशीन बाजार में मिल जाती है, पूंजी भी बैंक से मिल सकती है, श्रमिक भी बाजार में मिल जाते हैं. पहली तीन चीजें तो एक बार खरीद लेने पर परेशान नहीं करतीं, पर श्रमिक तो एक बार भरती होने के बाद समस्या ही समस्या पैदा करते हैं. मालिक को उन की बढ़ती हुई मांगों का हल खोजते ही रहना पड़ता है.

इनसान से व्यवहार करते समय ग्राजकल मनोविज्ञान का महत्त्व बहुत बढ़ गया है. फिर भी कुछ मापदंड हैं जिन्हें ग्रपना कर कुछ तो किया ही जा सकता है. इस [illegible] में हम मालिक व प्रबंधक को एक ही स्तर पर ले कर चल रहे हैं. ग्रधिकतर लघु उद्योगों में मालिक ही सर्वेसर्वा होता है. काम बढ़ने पर प्रबंधक भी रखना पड़ता है. तो निम्नलिखित बातों पर ध्यान दे कर उद्योग में ग्रपेक्षाकृत शांति रखी जा सकती है. मानसिक शांति होने से मालिक उद्योग के विस्तार या दूसरे उद्योग लगाने के विषय में भी सोच सकता है.

यदि मालिक चाहता है कि श्रमिक उद्योग में ग्रपना व्यवहार व रवैया ठीक रखें तो उसे भी उचित है कि उस का ग्रपना व्यवहार श्रमिकों के प्रति नम्रता का हो ताकि इस के परिणाम स्वरूप वे भी नम्र रहें.

मालिक या प्रबंधक का दायित्व

मालिक को समय पर ग्रा कर काम ग्रारंभ करवा देना चाहिए, फिर चाहे वह कहीं पर भी जाए. इस का सीधा ग्रसर संस्थान के कर्मचारियों पर पड़ता है. वे भी समय से ग्राते हैं.

मालिक को ग्रपने श्रमिकों की समस्याग्रों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार रखना चाहिए ताकि वे ग्रा कर ग्रपनी समस्याएं सामान्य रूप से पेश कर सकें.

मालिक में धैर्य की प्रचुरता होनी चाहिए ताकि श्रमिकों को बारबार व्यर्थ ही उस के क्रोध का शिकार न होना पड़े.

मालिक में ग्रपने निर्णय के प्रति दृढ़ता होनी चाहिए ताकि श्रमिक जानें कि कोई गलत काम सहन नहीं किया जायगा.

मालिक को उद्योग से संबंधित तमाम कार्यों के लिए समय व ध्यान देना चाहिए. यह सोचना गलत है कि काम चल निकला है ग्रतः ग्राराम से रहा जा सकता है. प्रतिस्पर्धा ग्रधिक है. जरा सी भी गफलत से नुकसान हो सकता है. श्रमिक भी मालिक की ढीलढाल से लाभ उठाएंगे.

श्रमिकों के लिए उचित व वांछित सुविधाएं कार्य स्थल पर मुहैया करनी चाहिए ताकि उन का समय बरबाद न हो और न प्रबंध के प्रति दुर्भाव फैले.

यदि कोई अच्छा कार्य करे तो उस की प्रशंसा करनी चाहिए. साथ ही गलत काम करने वाले को दंड भी देना चाहिए. पर इस में पक्षपात न हो.

स्वयं भी योगदान दें

उद्योग के किसी भी काम को अपनी हैसियत से नीचा नहीं समझना चाहिए. यदि आवश्यक हो तो उचित समय पर कंधा लगाना चाहिए. इस से श्रमिक में ऊंचे दरजे का आत्मविश्वास पैदा होता है.

किसी भी समस्या पर तुरंत निर्णय लेना चाहिए ताकि श्रमिकों को अनिर्णय से उत्पन्न समस्याओं का बोझ न उठाना पड़े.

श्रमिकों व कर्मचारियों को उन के गुणों व सक्षमता के आधार पर चुनना चाहिए. सिफारिश से लिए गए व्यक्ति समस्या पैदा करते हैं. उन्हें दंड नहीं दिया जा सकता. यदि दिया गया तो दोस्ती टूटती है.

श्रमिकों व कर्मचारियों की मांगों पर एकदम वादा नहीं करना चाहिए. यदि वादा किया है तो निभाना भी चाहिए. वादा पूरा न होने से दुर्भाव की सृष्टि होती है. अतः बात को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए, पर निर्णय शांतिपूर्वक विचार कर ही करना सब के हित में होता है.

श्रमिकों व कर्मचारियों की आलोचना स्वस्थ होनी चाहिए ताकि उन का मनोबल न गिरे और आलोचना का प्रयोजन पूरा हो. यह याद रखने की बात है कि आलोचना किसी को भी पसंद नहीं आती, अतः इस विषय में जरा चतुराई आवश्यक हो जाती है.

मालिक व श्रमिकों में इतना फासला न रहे कि कोई मालिक से मिल ही न

"दफ्तर के समय में किराए पर ले कर पत्रपत्रिकाएं पढ़ने में बहुत खर्चा होता है, हमारी मांग है कि ये पत्रिकाएं दफ्तर से दी जानी चाहिए."

पाए. व्यावहारिक अंतर को पहचाना जाना चाहिए, पर श्रमिकों को यह विश्वास भी होना चाहिए कि अपनी उचित आवश्यकताओं के बारे में वे मालिक से मिल कर उसे अवगत करवा सकते हैं ताकि वह सहानुभूतिपूर्वक उन पर विचार कर सकें. इस से आपस में बातचीत का सिलसिला बना रहता है.

मालिक को अपनी फैक्टरी में एक बार घूम कर समस्याओं का अध्ययन करना चाहिए. कुछ समस्याएं तो कार्य स्थल पर ही सुलझाई जा सकती हैं.

सब से महत्वपूर्ण यह बात है कि मालिक को हर किसी को प्रसन्न करने का प्रयास नहीं करना चाहिए. यह हो ही नहीं सकता. और यदि कोशिश की जाएगी तो असंतोष ही फैलेगा. आवश्कता पड़ने पर अनुशासन रखने के लिए कड़े कदम भी उठाने पड़ सकते हैं. ढीली नीति से अकसर नुकसान ही होता है.

सलाह लेने के मामले में सावधानी बरतनी चाहिए. सलाह तो हर कोई देना चाहता है. सलाह ली भी जा सकती है पर निर्णय अपना ही होना चाहिए.

हर मामले को तूल नहीं देना चाहिए. छोटेमोटे मामलों को तरह दे कर अपनी शक्तियां वास्तविक महत्वपूर्ण मसलों के लिए सुरक्षित रखनी चाहिए.

मालिक में आत्मविश्वास होना चाहिए. उस का आत्मविश्वास धीरे धीरे श्रमिकों व कर्मचारियों में व्याप्त हो जाता है.

मातहत हमेशा ऐसे व्यक्ति को पसंद करते हैं जो निर्णय ले सकते हैं और उन पर टिके रह सकते हैं.

अत: श्रमिक व कर्मचारी उचित ढंग के भरती करने चाहिए. यदि ऐसा नहीं किया जाता तो संस्थान में हमेशा अशांति बनी रहे तो कोई ताज्जुब नहीं होना चाहिए.

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्त्वपूर्ण होती है, लेखक का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दिया जा रहा है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इस में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 50 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए
द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए
तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.

इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे.

इस के लिए 35 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,

नई दिल्ली-110055.

चित्रावली

प्रदर्शनी के लिए सिर्फ मोटर साइकल ही नहीं : आकर्षण का केंद्र यहां 21 साल की खूबसूरत माडल हैजेल बैट है या विश्व ड्रैगरेस के रिकार्ड विजेता पिप का बेहद लोकप्रिय मोटर साइकल—सुजुकी जी एस एक्स 1100, यह तय कर पाना काफी मुशकिल काम है. वैसे लंदन के इरास कोर्ट में हुई इस प्रदर्शनी में जापानी मशीनों का बोलबला रहा, जिन्होंने कई पहलुओं से तहलका मचाया.
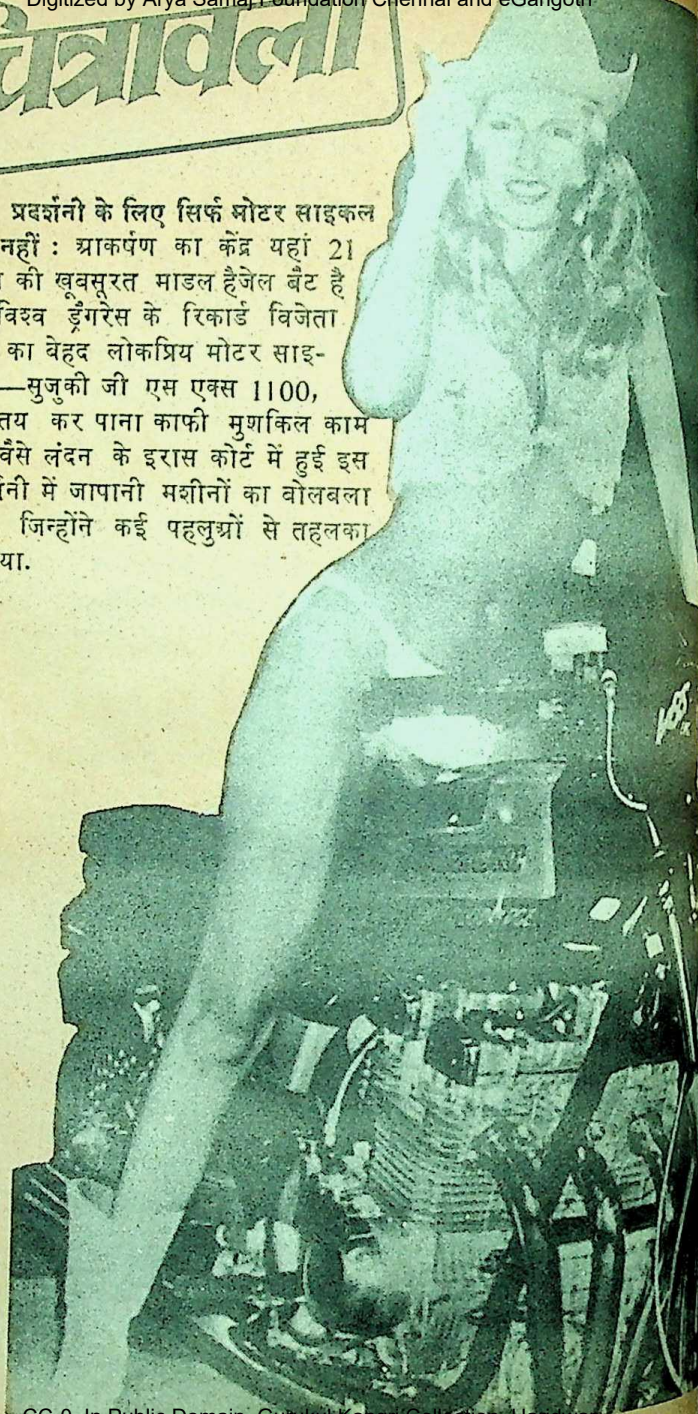
▲ किसान अ
महाराष्ट्र में वि
से नहीं बच स
विधान सभा व

विकल्प ब
भारतीय जनत
25 जनवरी को
लोगों ने पार्टी
कर यह सिद्ध
हथियाने में ज्य
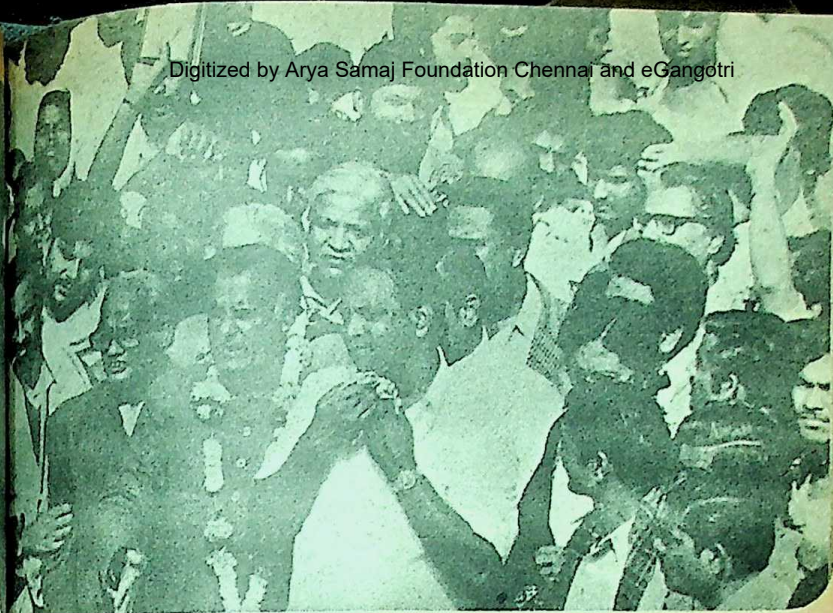
▲ **किसान आंदोलन में राजनीति :** अपनी उपज का सही मूल्य पाने के लिए महाराष्ट्र में किसानों द्वारा शुरू किया गया आंदोलन राजनीतिक चपेट में आने से नहीं बच सका. पिछले दिनों छः विरोधी पार्टियों ने मिल कर नागपुर में विधान सभा की तरफ लंबा कूच किया.

विकल्प की तलाश में : इंदिरा कांग्रेस का विकल्प बनाने के लिए इस समय भारतीय जनता पार्टी का दावा ही सब से ज्यादा मजबूत लग रहा है. लेकिन 25 जनवरी को दिल्ली के रामलीला मैदान में हुई आम सभा में इस पार्टी के लोगों ने पार्टी के अध्यक्ष अटलबिहारी वाजपेयी को भावी प्रधान मंत्री घोषित कर यह सिद्ध कर दिया कि उन की दिलचस्पी भी जनसेवा में कम और कुरसी हथियाने में ज्यादा है. ▼
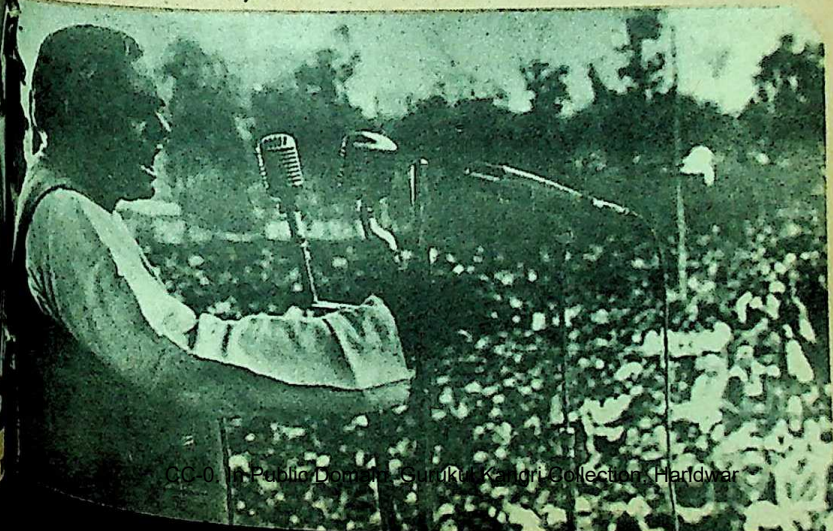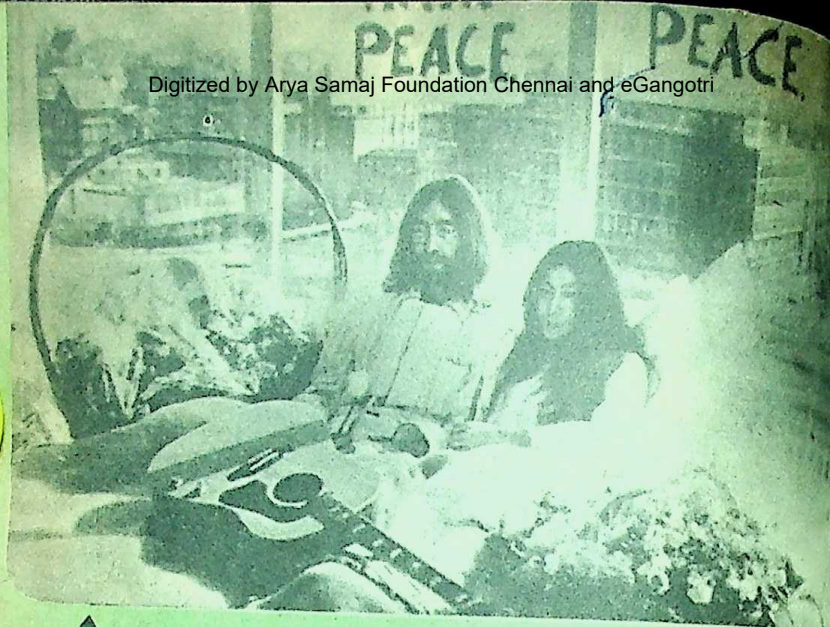
संगीत की मौत : संगीत की दुनिया में तहलका मचा देने वाले बीटल जान लेनन की न्यूयार्क स्थित उस के मकान के बाहर पांच गोलियां दाग कर हत्या कर दी गई. (चित्र में शादी के छः दिन बाद एम्सटर्डम (हालैंड) में अपनी पत्नी योको ओनों के साथ जान संवाददाता सम्मेलन में सवालों का जवाब देते हुए.)

एक प्रतियोगिता शरीर सौष्ठव की : शरीर का सुंदर होना ही नहीं सुगठित होना भी जरूरी है. फिलिपीन की राजधानी मनीला में हुई सुगठित शरीरों की विश्व प्रतियोगिता में पहला स्थान पाया न्यूरेमवर्ग (प. जरमनी) के 29 साल के व्यायाम प्रशिक्षक ह्यबर्ट मेट्ज ने (चित्र में बीच में). कनाडा के शिंडले ने दूसरा और आस्ट्रिया के क्रिश्चियन जेनेत्व ने तीसरा स्थान पाया.
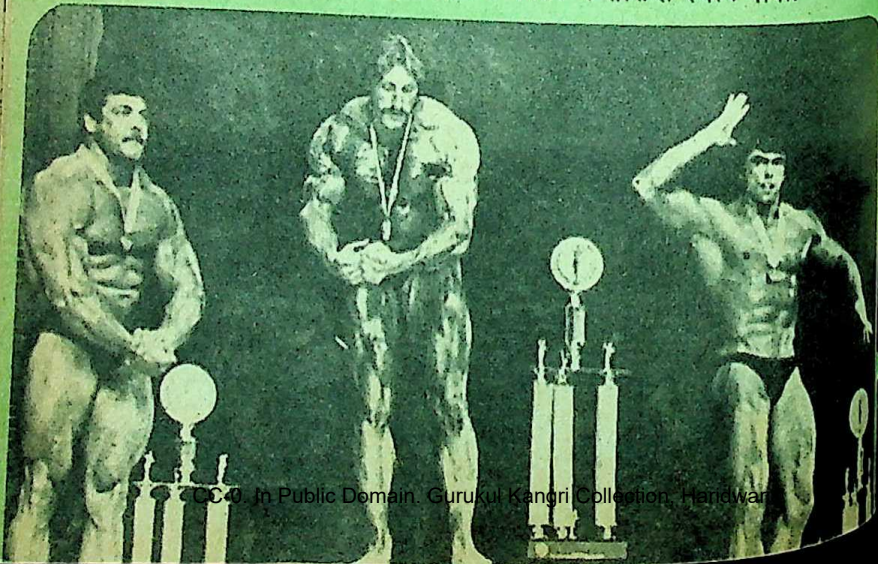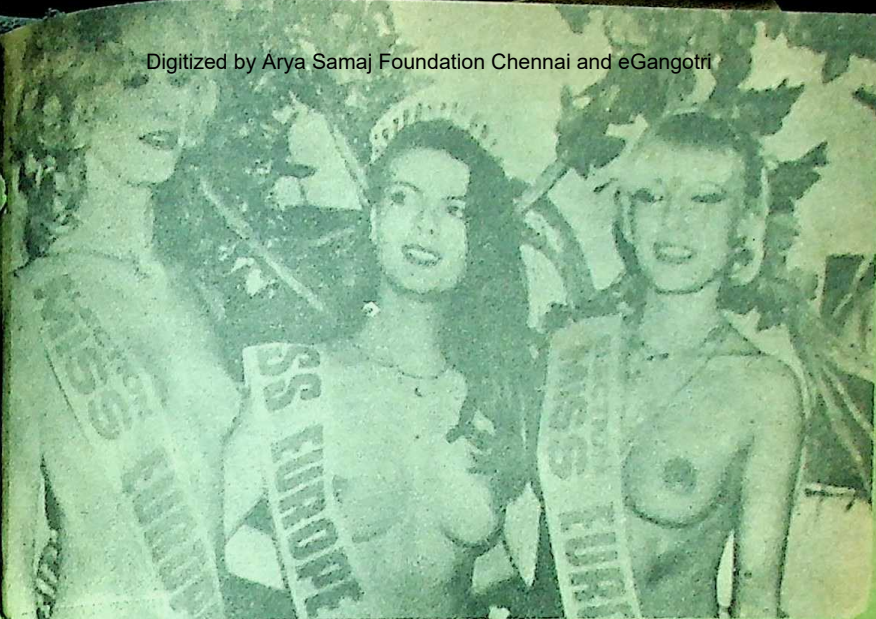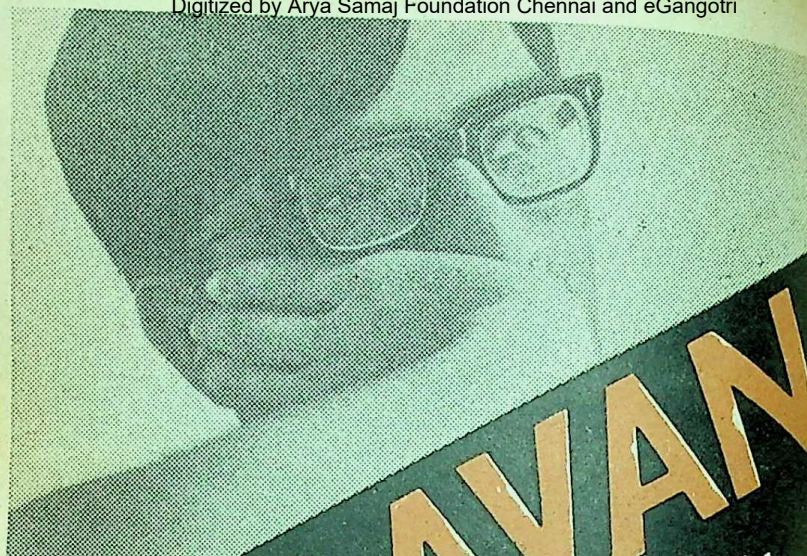
▲ **नग्नता की जीत :** 1981 के लिए यूरोप की सब से खूबसूरत जिस्म वाली युवती होने का श्रेय पाया अंडोरा की जूलिया पेरिन (बीच में) ने. खूबसूरती कपड़े ढके जिस्म में होती है या नंगे जिस्म में, इस का थोड़ाबहुत फैसला तो चित्र देख कर ही किया जा सकता है.

इसी का इंतजार था : सिंगलटन (इंगलैंड) के एक गांव के खतरनाक मोड़ से धोखा खा कर एक छोटी गाड़ी टेड कोर्ट की दुकान से जा टकराई. गाड़ी में बैठे लोगों को तो कुछ नहीं हुआ लेकिन दुकान की हालत का अंदाजा चित्र से लगाया जा सकता है, टैड ने बाद में कहा, "मैं जानता था कि एक न एक दिन ऐसा होगा. इस से पहले तक आधा दरजन गाड़ियां मेरी दुकान से टकरा चुकी थीं. शायद वे दुकान ढाने का अभ्यास कर रही थीं." ▼ ●

CARAVAN
Fortnightly
Of National
Resurgence
CARAVAN awakes your social consciousness.........makes you think of your obligations and responsibilities, exploding traditional anachronism that have retarded India's march towards modernism. Through views and reviews, short stories and humour, every fortnightly CARAVAN acts as the catalyst to action with understanding. An informed and enlightened citizen is that best citizen and CARAVAN readers are just that.
BUY YOUR COPY TODAY
DELHI PRESS GROUP OF MAGAZINES LEAD THE WAY....

जवाब आया है

लघुकथा • वीरेंद्रकुमार जैन

प्रकाशजी ने अपने बेटे नरेन का विवाह श्यामजी की कन्या सुषमा से तय कर दिया था. दहेज को ले कर बड़ी हीलहुज्जत हुई थी. पर जैसेतैसे बात 25 हजार पर तय हो गई.

नरेन को एम. ए. पास किए दो वर्ष हो गए थे, पर कहीं भी नौकरी का जुगाड़ नहीं बन रहा था. जब नरेन की शादी की बात चली तो उस की मां ने अपने पति को आगाह किया, "अभी जल्दी मत करो. नौकरी लगते ही बेटे के दाम बढ़ जाएंगे." पर उन्होंने एक न मानी. वह तो दहेज की रकम से नरेन को छोटामोटा धंधा कराना चाहते थे.

और हुआ वही जो मां ने कहा था. नरेन को एक प्राइवेट माध्यमिक स्कूल में मास्टरी मिल गई.

अब उस की मां ने उलाहना दिया, "मैं न कहती थी, जल्दी मत करो. अगर अब नरेन की शादी की बात चलाते तो पूरे 50 हजार मिलते."

प्रकाशजी को बात समझ में आ गई. उन्होंने श्यामजी को पत्र लिखा : "बेटे नरेन को नौकरी मिल गई है, सो कई जगह से रिश्ते आ रहे हैं. कोई 50 हजार की बात करता है तो कोई 60 हजार की. पर मैं तो आप के आगे वचनबद्ध हूं. अब आप ही मार्गदर्शन दीजिए."

श्यामजी की ओर से अविलंब उत्तर आ गया. उन्होंने लिखा था : "चिरंजीव नरेन बारोजगार हो गए, यह जान कर खुशी हुई. इधर बेटी सुषमा ने भी टीचर ट्रेनिंग की हुई थी और वह एम. ए. में थी ही, सो उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पी. जी. टी. ग्रेड में शिक्षिका की नौकरी मिल गई है. अब आप से क्या छिपाऊं, बच्चे तो जिद्दी होते ही हैं. उस का कहना है कि वह अपने से जूनियर के साथ विवाह नहीं कर सकती.

"आशा है, आप मेरी परेशानी को भली प्रकार समझ रहे होंगे व सहानुभूतिपूर्वक इस पर विचार कर निर्णय लेंगे." ●
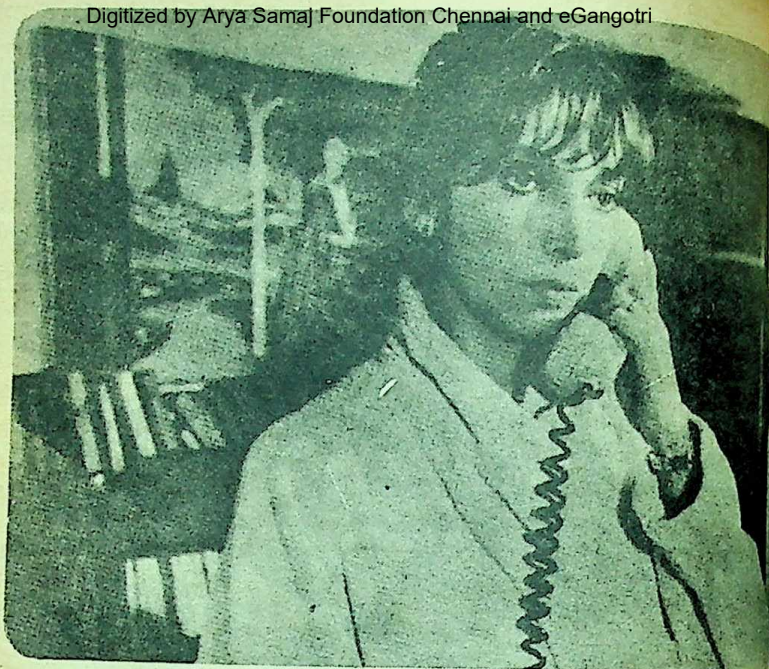
8 iffi आठवां भारतीय अंत

लेख • हमारा फिल्म समीक्षक

गतांक से आगे

इस बार प्रतियोगिता वर्ग में साधारण स्तर की फिल्में ही आईं. लगता है विदेशों में हमारी प्रतियोगिता की कोई प्रतिष्ठा नहीं रह गई है. प्रतियोगिता की कोई भी फिल्म उच्च स्तर की नहीं कही जा सकती है. रूस ने दो फिल्में भेजी थीं. 'स्टाकर्स' और 'ए स्लैप इन दी फेस.' 'स्टाकर्स' बड़ी बोझिल किस्म की उबाऊ फिल्म थी. 'ए स्लैप इन दी फेस' एक सामाजिक फिल्म है और बहुत कुछ भारतीय परिवेश से मिलतीजुलती है.

स्वान सौंग डेज

इस में एक बड़े ही अद्भुत विचि... पात्र का चित्रण किया गया है. इस प्र... के पात्र समाज में बहुत कम देखने ... मिलते हैं. मार्को एक तीस वर्ष का ... युवक है. वह और उस की पत्नी ऐंजेला ... इकट्ठे रहते हैं. ऐंजेला अपने पति ... अत्यंत प्रेम करती है. पर पति एक ... नीतिक कवि है और गायक भी है. ... जब चाहे घर से गायब हो जाता है ... अचानक ही किसी दिन फिर घर पर ... धमकता है. उस की इस प्रकार गायब ...

इटली की फिल्म 'स्वान सौंग डेज' का एक दृश्य.

अचानक मार्को के पड़ोस में तीन किशोर (दो लड़के एक लड़की) आ कर रहने लगते हैं. मार्को दीवार के छेद में से उन की गतिविधियां देखता रहता है. एक दिन वह निर्वस्त्र ही उन के घर में जा घुसता है. वे सब भयभीत हो जाते हैं, पर वह वहां से हटने का नाम ही नहीं लेता. धीरेधीरे वह वहीं डेरा जमा लेता है. उधर पत्नी ऐंजेला परेशान है और वह यह भी नहीं जानती कि उस का पति कई दिनों से साथ वाले फ्लैट में है. वह घर आता है तो ऐंजेला उसे छोड़ कर चली जाती है.

इस के बाद मार्को साथ वाले फ्लैट में जाता है और तीनों किशोरों को उठा-उठा कर एक जगह लिटाता है तो पता चलता है कि वे मर चुके हैं और उन की

अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह

जाना ऐंजेला को सदा ही परेशान किए रहता है. पर वह अपने प्रेम के कारण दबी रहती है.

लोक गायकों का एक दल है. मार्को भी इस का एक सदस्य है. दल विभिन्न कार्यक्रम दिखा कर रोजी कमाता है. दल के नेता की पत्नी का नाम अन्ना है. वह भी मार्को से प्रेम करती है और उस की प्रतिभा से प्रभावित है. मार्को भी जब चाहे उस से शारीरिक संबंध स्थापित कर लेता है. दल का नेता यह सब जानते हुए भी मार्को की प्रतिभा के आगे दबा रहता है.

स्वीडन और स्पेन की संयुक्त फिल्म 'सबीना' का एक भावपूर्ण दृश्य.

रूसी फिल्म 'ए स्लैप इन दी फेस' का एक दृश्य.

हत्या कर दी गई है. उन के शरीरों पर गहरे घाव हैं. वह उन्हें बड़े प्यार से देखता है, वह उन्हें ऐसे ही देखना चाहता था कि वे उस की हर बात स्वीकार करें और किसी प्रकार का विरोध न करें.

तभी दृश्य बदलता है, मार्को एक कार की छत पर खड़ा गिटार बजा रहा है. तीनों किशोर भी खड़े दिखाई दे रहे हैं. पर वे वास्तविक न हो कर मार्को की मात्र कल्पना है. यहीं गाड़ी की छत पर मार्को अपना आखिरी गीत गाता है.

'स्वान सौंग डेज' में एक बड़े ही विक्षिप्त से पात्र का चित्रण किया गया है जो कल्पना जगत का पात्र लगता है. फिल्म जैसी भी हो पर संगीत मधुर है और मार्को अपने अद्भुत चरित्र को बड़ी ही उदासीपूर्ण अमिट छाप दर्शकों पर छोड़ जाता है.

सबीना

स्वीडन की यह फिलम कामुक दृश्यों के कारण बहुचर्चित रही. फिलम के आरंभिक भाग में परी कथाओं जैसी कल्पना है पर अंत में फिलम यथार्थ के धरातल पर आ जाती है.

दो अंगरेजी लेखक हैं माइकल और फिलिप. दोनों मित्र हैं. दोनों शादीशुदा हैं. माइकल के घर में एक लड़की सफेदी करने आती है. लड़की बहुत सुंदर है और उस का नाम है मोनिका. माइकल की पत्नी सुंदर है, पर वह मोनिका पर मोहित हो जाता है. वह उसे किसी न किसी प्रकार अपने जाल में फंसा लेता है पर उस की कामुकता की प्यास अधूरी ही रह जाती है. कभी उस की पत्नी तो कभी कोई और उस के रास्ते आ जाता है.

माइकल एक बार मोनिका को छोड़ने उस के गांव जाता है तो वे लोग पिकनिक मनाने एक पहाड़ी पर जाते हैं. उस पहाड़ी में एक बहुत बड़ी गुफा है जिस के बारे में अनेक किंवदंतियां मशहूर हैं. उस गुफा में से निरंतर आवाजें आती रहती हैं मानो किसी प्यासी नारी की हों. जो कोई भी उस गुफा में गया, फिर कभी वापस लौट कर नहीं आया और हमेशा के लिए सबीना का हो गया. सबीना उस नारी का कल्पित नाम है जो उस गुफा में रहती है.

माइकल वापस लौट आता है. तभी उस का मित्र फिलिप उसे मिलने आता है. मोनिका को देख कर फिलिप भी उस पर मोहित हो जाता है और अपने प्रेम में सफल भी हो जाता है. माइकल हाथ मलता रह जाता है. यह दूसरी मात थी जो उस ने फिलिप के हाथों खाई थी. इस

डेनमार्क की फिलम 'थ्रू दी मिरर' का एक दृश्य.

से पहले भी एक बार वह उस की एक प्रेमिका छीन चुका था. माइकल का हृदय ईर्ष्या एवं बदले की भावना से भर जाता है. वह बदला लेने की एक योजना बनाता है.

माइकल फिलिप के साथ कार्यक्रम बनाता है कि वे दोनों गुफा के अंदर जा कर सबीना के रहस्य का पता लगाएं. फिलिप तैयार हो जाता है. दोनों सपरिवार पहाड़ी पर पहुंचते हैं और सब को बाहर छोड़ कर दोनों रस्सी के सहारे अंधेरी गुफा में नीचे उतर जाते हैं. पहले फिलिप उतरता है और बाद में माइकल. माइकल उतरते समय रस्सी काट देता है.

फिलिप घबरा जाता है. तब माइकल अपने बदले का रहस्य उस पर प्रकट करता है. अब दोनों के लिए बाहर जाने का कोई रास्ता नहीं है. दोनों वहीं तड़प-तड़प कर प्राण दे देंगे. अगर वे चिल्लाएंगे तो कोई भी उन को बचाने नहीं आएगा. सभी यही समझेंगे कि सबीना उन्हें अपना शिकार बना रही है.

इस फिल्म में कुछ परी कथाओं जैसा पुट जरूर है, पर विषय एकदम नया होने से फिल्म में कथानक एवं विषय की दृष्टि से ताजगी है. अगर इस फिल्म की नकल कर के कोई भारतीय निर्माता ऐसी ही फिल्म बना डाले तो कोई आश्चर्य की बात न होगी.

ए स्लैप इन दी फेस

फिल्म में बीसवीं सदी के पहले दशक के रूस का चित्रण किया गया है. रूस के एक कसबे में तुरवंदा और ग्रिगोर नामक दंपती रहते हैं और संतानहीन हैं. संतानहीन होने के कारण तुरवंदा को समाज में अनेक प्रकार के ताने सहने पड़ते हैं. ग्रिगोर गधों की काठिया बनाने का धंधा करता है. ये लोग टोरिक नामक एक अनाथ बच्चे को गोद ले लेते हैं.

टोरिक बड़ा होता है तो ग्रिगोर उसे भी अपने धंधे में लगा लेता है. फिर बूढ़ा हो कर मर जाता है और उस का धंधा टोरिक संभाल लेता है. तुरवंदा अपने बेटे के लिए सुंदर बहू ढूंढ़ना चाहती है. वह अनेक घरों में रिश्ते के लिए जाती है, पर सभी उसे दुतकार देते हैं. कोई भी अपनी लड़की ऐसे लड़के को नहीं देना चाहता जो गधों की काठियां बनाने जैसा निम्न कोटि का धंधा करता हो. कसबे के सभी धनी लोग टोरिक और उस के परिवार से घृणा करते हैं.

इसी दौरान तीन वेश्याएं बाहर से आ कर कसबे में ठहरती हैं. कसबे के अनेक धनी लोग मनोरंजन के लिए उन के पास जाते हैं. एक कसाई युवक टोरिक का दोस्त है. वह अकसर वहां जाता है. एक दिन वह टोरिक को भी वहां ले जाता है. टोरिक उस वेश्या से प्रेम करने लगता है.

टोरिक अपनी प्रेमिका वेश्या के सामने शादी का प्रस्ताव रखता है तो वह सहर्ष स्वीकार कर लेती है. वह प्रसन्न है कि उसे नर्क के जीवन से छुटकारा मिलेगा. टोरिक उसे अपने घर ले जाता है तो अपने बेटे की खूबसूरत बहू देख कर तुरवंदा बहुत प्रसन्न होती है पर जब उसे पता चलता है कि यह एक वेश्या है तो उस का मन घृणा से भर उठता है. वह जिधर निकल जाती है, लोगों के ताने सुनने को मिलते हैं. पहले तो वेश्या को पुत्रवधू के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर देती है, पर जब टोरिक दृढ़ता दिखाता है तो अपने बेटे की खुशी में ही खुशी मान लेती है. उधर समाज में जब उन्हें चारों ओर लांछन ही सहन करने पड़ते हैं तो एक दिन वे घोड़ागाड़ी किराए पर लेते हैं और तुरवंदा, टोरिक व उस की बहू तीनों बैठ कर और अकड़ कर पूरे कसबे की परिक्रमा करते हैं. [illegible] उन्हें अपने किए का कोई पश्चाताप नहीं, बल्कि गर्व है. यह समाज के मुंह

पर थप्पड़ था.

इस फिल्म में स्थान व काल के अतिरिक्त हमारे समाज से कोई भिन्नता नहीं है. बांझ होने के कारण तुरवंदा को जो अपमान सहन करता पड़ता है, वह हमारे लिए नई बात नहीं है. भले ही नए रूस में कितनी ही डींगें हांकी जाती हों पर फिल्म देख कर यही प्रतीत होता है कि निम्न स्तर का धंधा करने वाले लोगों को आज भी तुच्छ दृष्टि से देखा जाता है. फिल्म के निर्देशक ने एक प्रेस सम्मेलन में यह स्वीकार करने से स्पष्ट इनकार कर दिया कि रूस में आज वेश्या नाम की कोई सामाजिक समस्या है, पर फिल्म देख कर यही लगता है कि आज भी यह समस्या किसी न किसी रूप में वहां जरूर मौजूद है.

थ्रू दी मिरर

डेनमार्क की इस फिल्म में दांपत्य जीवन की समस्या उठाई है और पश्चिमी देशों में वैवाहिक संबंधों के अंतरंग झलक दिखाई गई है. विवाहित स्त्री किस प्रकार पर पुरुष यानी अपने प्रेमी से शारीरिक संबंध तक खुले आम रखती है और अपने पति को उपेक्षित किए रहती है. पति है कि फिर भी उसे जीतने की कोशिश किए जाता है.

एक युवती अपने पति से बहुत प्रेम करती है. दोनों का बहुत सुखी दांपत्य जीवन चल रहा है. तभी उस युवती का एक पुराना अमरीकी प्रेमी आ टपकता है. वह उस के प्रेम में दीवानी हो जाती है. वह उसे कई सब्जबाग दिखाता है. युवती अपने पति को छोड़ने को तैयार हो जाती है. वह फोन कर के पति को दफ्तर से बुलाती है और उस के सामने अपने प्रेम का रहस्य प्रकट करती है और प्रेमी के साथ जाने की घोषणा करती है.

इस बातचीत के दौरान पति और प्रेमी में अनेक झड़पें होती हैं. यहां तक कि भारतीय नारी की झलक भी आती दिखाई देती है. तभी ऐसी घटनाएं घटती हैं कि युवती यह महसूस कर लेती है कि पति और बच्चे को छोड़ना संभव नहीं है और वह उन से दूर जा कर सुखी नहीं रह सकेगी. वह महसूस करती है कि कोई भी कदम उठाने से पहले उसे समझना चाहिए कि वह खुद क्या है. वह पति और प्रेमी को झगड़ते छोड़ कर कार ले कर बाहर निकल जाती है ताकि सारी परिस्थितियों पर दोबारा गौर कर सके.

फिल्म देख कर यही लगता है कि पश्चिम भी अब टूटते परिवारों से तंग आ चुका है और प्रेमी की अपेक्षा पति के हक में जा रहा है. वहां परिवार के विघटन की अपेक्षा परिवार के मिलन के पक्ष में आवाज उठ रही है. फिल्म का वातावरण एक भारतीय दर्शक के लिए बड़ा ही अजीब सा लगता है. जहां दूसरे घर में रही स्त्री को कुलटा कह कर त्याग दिया जाता है.

—क्रमशः

जाति का कालिज

कहानी • चंद्रमोहन प्रधान

सुबह का समय ही ऐसा होता है, जब मीठी नींद के असली मजे आते हैं. उस रविवार को हम सुबह मीठी निद्रा की पिनक में पड़े थे कि नीचे से जोरदार साइरन सा बजने की आवाज आई. पहले तो अनसुना कर दिया. सोचा, 'महल्ला रक्षक वीर दल' वालों का कुछ हो रहा होगा, पर दोबारातिबारा ऐसी ही भयानक आवाजें आने लगीं और हमारी प्रात: नमनीया श्रीमतीजी ने हमें जोरों से झिंझोड़ कर अपने क्रोधित मुखचंद्र के दर्शन कराए तो जागने का कायल होना पड़ा.

"अब उठो भी, कुंभकर्ण को मात कर दिया तुम ने. नीचे वे लोग कब से खड़े पुकार रहे हैं."

"कौन उल्लू का पट्ठा इतने सवेरे..." हम ने विरोध किया. वह बीच में बोल पड़ीं, "आठ बज रहे हैं, आप का सवेरा अभी हुआ ही नहीं."

"भई, आज तो इतवार है," हम ने तकिए को पकड़ कर कहा. तभी नीचे से गगनभेदी नाद सुनाई पड़ा, "प्रधानजी, अरे भाई, क्या कर रहे हैं?"

"इतवार है, तभी तो आए हैं वे लोग, परसों शाम को भी आए थे. शास्त्रीजी भी हैं. झटपट नीचे पहुंचो, मैं चाय बनाती हूं."

वह तो रसोई के सुरक्षित किले की तरफ चल दीं और हम पंडित भयंकराचार्य शास्त्री की आवाज पहचान कर उन के छप्पन पुरखों का उद्धार करते नीचे आए.

नीचे शास्त्रीजी के साथ महल्ले और शहर के अपनी जाति के आठदस 'गण-मान्य' सज्जन ठाट से सोफी तथा कुरसियों
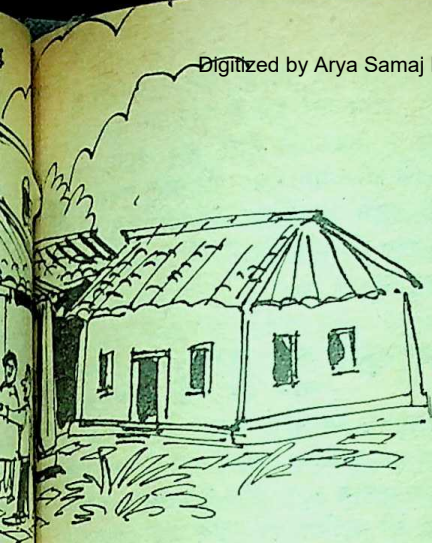
पर आसीन दीखे. हमें देखते ही शास्त्रीजी ने डांटा, "क्या हिमाकत है, दिन चढ़ आया और आप सो रहे थे. बड़े ऐश हैं आप के."

दोचार सज्जन हंस पड़े. हम ने सब को नमस्कार कर बैठते हुए कहा, "भई शास्त्रीजी, इतवार होने से..."

शास्त्रीजी ने बात काट दी, "इतवार को ही तो तय हुआ था. आप को याद नहीं रहता."

अब हम यदि आयें, परसों हमारी जाति वालों की एक अनौपचारिक बैठक हुई थी, जिस में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास हुआ था कि अपनी जाति का एक कालिज खुलना चाहिए. मतदान में हम तटस्थ रहे, क्योंकि इस प्रस्ताव का औचित्य हमारी समझ में नहीं आया था. दूसरे, जाति के नाम पर कुछ करना भी हमें ठीक प्रतीत नहीं होता था. नतीजा? हमारी जाति वालों के स्थायी पुरोहित और हमारे पुराने मित्र पंडित भयंकराचार्य शास्त्री (वास्तविक नाम तो आप का है भास्कराचार्य, पर आप हैं शास्त्रार्थ के भारी शौकीन. प्रतिद्वंद्वियों पर इस भयंकरता के साथ आक्रमण करते हैं कि महल्ले के कुछ स्वयंभू विद्वानों ने आप का नाम भयंकराचार्य रख दिया है. मजा यह कि शास्त्रीजी इस नाम से नाराज न हो कर प्रसन्न ही दीखते हैं) ने हमारे यहां से ही कार्यारंभ करने का निश्चय उसी बैठक में कर लिया था.

हम ने जरा पसोपेश में कहा, "मगर, शास्त्रीजी, यह तो इस जमाने में जंचता नहीं कि जातिपांति के आधार पर शिक्षण

अन्य जातियों के कालिजों की देखादेखी हमारी जाति वालों ने भी कालिज खोल लिया था. मगर जब से हमारी जाति की उपजातियों ने सिर उठाना शुरू किया है तभी से हमारे कालिज का जो हाल है वह तो बस देखते ही बनता है...

उन में से एक जाति भाई बोले, "हां, तो कितना चंदा लिख दूं."

संस्थान खुलें. जमाना अब बदल गया है.”

एक टोपीधारी, स्थूलकाय से सज्जन तमतमा उठे. “जनाब, आप क्या कह रहे हैं? सभी ससुरे तो अपनीअपनी जातियों के कालिज पहले ही खोल चुके हैं. हम क्या कोई अनोखा काम करने जा रहे हैं? उन्हें तो आप ने कुछ नहीं कहा. और, जमाने को क्या कहते हैं? जमाना जाति-पांति का तो अब आया है. आप हैं कहां, साहब?”

शास्त्रीजी ने गंभीरतापूर्वक कहा, “प्रधानजी, आप की जाति में लोग शिक्षित हैं, समर्थ हैं, कोई न्यूनता नहीं है. दूसरे इस दिशा में पहल कर गए, आप कब तक सोते पड़े रहेंगे?”

एक पापड़तोड़ पहलवान टाइप सज्जन ने बड़ा संतप्त मुंह बना कर, लगभग रोते से स्वरों में कहा, “हा खेद! आप सरीखे सुशिक्षित महानुभाव ही जब ऐसा कहेंगे तो जाति का क्या होगा? हमारी ही जाति में उत्पन्न राष्ट्रकवि ने क्या कहा है? (उन्होंने लय से पढ़ा) :

जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिस में रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं है, पत्थर है,
जिस में स्वजाति का प्यार नहीं.”

हम ने निवेदन किया, “महाशयजी, यह कविता तो मैथिलीशरण गुप्त ने स्व-जाति अर्थात हिंदू मात्र के लिए संबोधित कर लिखी है, परतंत्रता के युग में. आप इस का अर्थ संकुचित कर रहे हैं.”

चौथे सज्जन पान चबाते हुए व्यंग्य से बोले, “हांहां, तो आप तो ऐसा अर्थ करेंगे ही. साहित्यकार जो ठहरे.”

शास्त्रीजी ने कहा, “व्यर्थ के वितंडा-वाद से क्या फायदा. प्रधानजी साहित्य-कार हैं, सो हर बात को कई पहलू से देखने के आदी हैं. बहस लाख कर लें, पर जा कहां सकते हैं. आखिर जाति का भी तो कुछ हक होता है. आप लोग चिंता न करें. यह हर तरह सहायक होंगे. मैं [illegible] हूं. यह तो मेरे परम मित्र हैं.”

मान गए. इस से पहले हम ने शास्त्री-जी को सदा किताबों का बैंगन, निरा चोंच और मनोरंजन की वस्तु समझा था, पर आज देख लिया कि भीतर से कितने हजरत हैं. क्या शह दी है कि हम कुछ न कह सके.

नौकर चाय लाया. मंडली में नई जान पड़ गई. शास्त्रीजी ने प्रेमपूर्वक प्याला ले कर चाय समारोह का उद्घाटन किया और बोले, “प्रधानजी, एक मकान ठीक हुआ है कालिज के लिए, छः सौ मासिक पर. उसे अभी देखने जा रहे हैं. फर्नीचर आदि का मामला तय होना है, सामान की सूची बनेगी, साइन-बोर्ड बनेगा, और इसी बृहस्पतिवार के शुभ दिन से एक विशाल ध्वज यज्ञ के साथ कालिज का उद्घाटन हो जाएगा.”

“इतनी जल्दी!” हम चकराए, “छात्र, प्राध्यापक, कोर्स...”

“सब हो जाएगा, साहब,” स्थूलकाय सज्जन इतमीनान से बोले, “अपनी जाति के दरजन भर प्रोफेसर तैयार हैं. छात्रों में भी उत्साह है. कालिज फिलहाल सुबह छः बजे से नौ बजे तक रहेगा, क्योंकि वे लोग विश्वविद्यालय में पढ़ाते भी हैं. लड़के 15-20 तो जुट गए, खोलने पर देखिएगा क्या भीड़ होती है. जब अपनी जाति का कालिज हो जाएगा तो कोई दूसरों के यहां क्यों पढ़ेगा? साल दो साल में जब कालिज विश्वविद्यालय का अंगीभूत होगा, तब देखिएगा, कोई समस्या ही नहीं रहेगी.”

“शुभस्य शीघ्रम्.” शास्त्रवचन का उच्चारण करते शास्त्रीजी ने फरमाया, “आप यथाशक्ति चंदा दें और अभी तैयार हो कर चलें, जरा जगह देख लें.”

चंदे के नाम पर हमारी सांस ऊपर टंगी रह गई. इधर टोपीधारी सज्जन ने [illegible] रसीद बुक टेबल पर रखी. देखा, उस में सौ से ले कर पांच

हजार तक के चंदे लिखे हैं. सौ से कम कोई नहीं.

हम ने पूछा, "कितना जमा हुआ है?"

"अभी कहां," स्थूलकाय सज्जन बोले, "अभी तो कुल जमा 32 हजार हुए हैं. हमारा लक्ष्य है तीन लाख पहले जमा कर लेना. बाद की फिर देखेंगे. कालिज खुल रहा है, कोई अनाथालय नहीं."

"आप जैसे शुभचिंतक साहित्यकार से तो हमें कम से कम 1,111 की आशा है," पापड़तोड़ पहलवान बड़ी आजिजी से बोले.

ग्यारह सौ ग्यारह! हमें लगा, जैसे बेहोशी का दौरा पड़ने ही वाला है. तभी हम बिना उन का प्रेमालिंगन किए न मानते. झट से हम भीतर गए. कान लगा कर सुन रही देवीजी से 11 रुपए मांग कर लाए और टोपीधारी सज्जन से रसीद ले ली.

थोड़ी देर में हम लोग शहर के दक्षिण पूर्वी किनारे के एक महल्ले में कालिज के लिए प्रस्तावित भवन देखने पहुंचे. आसपास खपरैल के घर, कुछ झोंपड़ियों में चाय और पान की दुकानें, पास में ग्रांड ट्रंक रोड, दूरदूर तक हरियाली, बाग. तबीयत खुश हो गई. किंतु अफसोस कि भवन देख कर हम लोगों की आधी खुशी हवा होने लगी. यह मकान गदर से पहले का था या नाना

आखिर हमारी जाति के लोगों ने मिल कर कालिज की रूपरेखा तैयार कर ही ली. कालिज में पढ़ाने और पढ़ने वालों के मामले में सभी यह सोच कर आश्वस्त थे कि अपनी ही जाति के प्रोफेसर यहां पढ़ाने को तैयार हो जाएंगे और छात्रों की तो चिंता ही नहीं. क्योंकि जब अपनी जाति का कालिज हो जाएगा तो कोई दूसरों के यहां भला क्यों पढ़ने जाएगा?

शास्त्रीजी ने झट हमारे प्राण उबारे, "अरे भाई साहब, प्रधानजी कोई लखपती या व्यापारी थोड़े हैं. यह बेचारे कलम के मजदूर और शिक्षक ठहरे. अपने देश में ऐसे काम करने वालों के पास पैसा कहां? इन की एक बात भी मुझ से छिपी नहीं है. ऐसा करें, इन से मात्र 11 रुपए चंदा ले लें अभी, बाद में सुविधा से कभी सौ रुपए और दे देंगे. एक सौ ग्यारह लिख लें इन के नाम. पैसे वालों ने रुपए तो दे दिए, काम तो हमें, इन्हें ही करना है. भला साहित्यसाधकों से कहीं रुपए वसूले जाते हैं?"

शास्त्रीजी के इन अमृततुल्य वचनों को सुन कर उन के प्रति हमारा इतना प्रेम उमड़ा कि और लोग बैठे न होते तो

फड़नवीस से पहले का, यह तो पुरातत्त्व वाले शोध करें, किंतु लंबेचौड़े अहाते में चारों तरफ उगी घास, झाड़ियां इसे एक ऐतिहासिक स्मारक का महत्त्व दे रही थीं. बीच में ऊंची बुरजी पर मकान था. बरामदा तो ठीक दीख रहा था, पर दो कमरों की छतें ढह गई थीं और दरवाजे, खिड़कियां आदि भारत में राजनैतिक ईमानदारी की तरह सिरे से नदारद थे. फर्श का सीमेंट भी टूटा पड़ा था. भीतरी तीन बड़े कमरों की छतें ठीक मालूम हो रही थीं, पर उन का हमें भरोसा नहीं हो पा रहा था कि कब हरियाणा वालों की तरह दल बदल कर आसपास से जमीन के पक्ष में आ पहुंचें.

"भई शास्त्रीजी, हम बोले, "मकान

तो बहुत ठीकठाक करवाना पड़ेगा. लगभग पूरा बनेगा. जिन कमरों की छतें बची हैं, उन्हें भी मजबूत कराना होगा. सीमेंट, मजदूरी, लोहा, लकड़ी, रंग—बहुत खर्च पड़ेगा."

"सब हो जाएगा, साहब," स्थूल सज्जन गर्व से बोले, "जब जाति का कालिज खुल रहा है तो ये भी कोई काम हुए? न होगा, 30 हजार इसी में लगा देंगे. हम तीन लाख तो महीने भर में इकट्ठा कर लेंगे, आप देखते रहें."

और उन्होंने जब 'तुम देखते रहियो' की अदा से हमें देखा तो हमें संतोष प्रकट करना पड़ा.

तभी टोपीधारी सज्जन एकाएक 'हांव' कह कर जोरों से हाई जंप करते ठीक हमारे ऊपर आ गिरे और हमें कस कर आलिंगनबद्ध कर लिया. उन के इस अकस्मात हुए प्रेम विस्फोट का कारण जब तक हमारी समझ में आए, तब तक उपस्थित सज्जन एक स्वर से चिल्ला पड़े, "हैं, हैं... सांप, बचिए, सांप है."

टोपीधारी सज्जन को झट से झाड़ कर हम ने इधरउधर देखा, एक सांप हम लोगों की नाजायज घुसपैठ से नाराज हो कर अपना पुश्तैनी निवास छोड़ बाहर अहाते की तरफ चला जा रहा था. देखते ही देखते वह बाहर पहुंच कर झाड़ियों में जा छिपा.

शास्त्रीजी लरजते स्वर में बोले, "यहां से चलिए. यह जगह बहुत खतरनाक है. पहले इसे साफ कराना पड़ेगा. देख तो लिया और क्या देखना है."

एकमात्र यही ऐसा प्रस्ताव रहा, जिस पर बिना कोई बहस किए सभी सभ्य हृदय से सहमत निकले और झटपट बाहर बरामदे पर निकल आए. नीचे उतरे तो सभी फूंकफूंक कर कदम रखते, जमीन घूरते. किसी तरह अहाता पार कर सड़क पर पहुंचे. खुली सड़क पर आ कर सब की जान में जान आई. हम ने कहा, "बड़ी खैरियत रही कि शास्त्रीजी बच गए. सांप था असली करैत और शास्त्रीजी के पास ही निकला था."

स्थूल सज्जन हांफते हुए बोले, "सब भगवान की दया है. नहीं तो नाहक एक ब्रह्मवध का पाप हमारी पूरी जाति पर पड़ता. कालिज का मामला भी अपशकुन से खटाई में जाता. निकला भी तो करैत!"

खतरे से बाहर आ कर शास्त्रीजी पुनः तत्त्वदर्शी और राजर्षि जनक की तरह विदेह हो गए थे. गंभीरता से बोले, "करैत नहीं, कैरात सर्प कहें. संस्कृत में यही शुद्ध नाम है. शरीर तो एक दिन नष्ट होगा ही, इस की चिंता पंडित नहीं करते. इस शुभ काम में पहली बलि मेरी होती तो मैं धन्य होता." उन का चेहरा शहीदों की तरह गर्व से दीप्त हो उठा, "जो हो, सर्प दंश से मरना तो अपमृत्यु है, और कोई बात नहीं."

सभी सज्जनों ने प्रशंसा भाव से उन्हें देखा. पास की पान की दुकान की तरफ मंथर गति से बढ़ते हुए शास्त्रीजी ने स्थूलकाय सज्जन से कहा, "कल ही से इस काम में हाथ लगवा दें, गुप्ताजी. शुभस्य शीघ्रम्. इस बृहस्पति को तो उद्घाटन संभव नहीं दीखता. किंतु, भवन ठीक होते ही कार्य प्रारंभ कर दें."

"जरूर," गुप्ताजी बोले, "और याद रखें, कालिज के वाइस प्रिंसिपल और संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद का भार आप को ही संभालना है."

शास्त्रीजी ने बड़े निर्विकार भाव से कहा, "आप यजमान लोग जो भी आदेश देंगे, यह ब्राह्मण तिल भर पीछे न हटेगा."

सब ने खुश हो कर पान खाए. गुप्ताजी ने पैसे दिए, और हम से बोले, "प्रधानजी, हिंदी विभाग आप को संभालना है."

हम ने मन में कहा, 'भैया, पहले

प्राचार्य की बात सुनते ही जूनियर प्राध्यापक अशोकजी तमक कर बोले, "मैं चपरासी हूं, जो आप मुझ से पान मंगवा रहे हैं?"

सूत कपास तो हो लेने दो, तब जुलाहों से लट्ठमलट्ठा करना.' पर प्रकट में बोले, "आप की जो आज्ञा हो. शास्त्रीजी जब हैं तो हम भी साथ हैं."

शास्त्रीजी ने गदगद हो कर हमारे कंधे पर हाथ रख दिया.

हम ने पूछा, "अन्यथा न लें तो पूछना चाहता हूं कि प्राध्यापकों के वेतन, संस्था के अन्य व्ययों का क्या उपाय रहेगा? जाहिर है कि शुरू में तो फीस, अनुदान का सवाल नहीं है."

"शुरू में तो चंदे से चलेगा," गुप्ताजी ने फरमाया, "हमें जब तक अंगीभूत न कर लिया जाए. और थोड़ीबहुत फीस तो शुरू में भी आएगी. छात्र संख्या भी बढ़ेगी. प्राध्यापकों के वेतन का जहां तक सवाल है, सो पहली तिमाही में वे फ्री पढ़ा देंगे. तीसरे माह से जो उचित होगा, वेतन तय हो जाएगा. जाति की बात है, जरा सी कुरबानी तो करनी ही होगी."

टोपीधारी सज्जन ने आवेश में कहा, "और क्या! जाति के लिए तो हम जान दे दें, तीन महीनों की तनख्वाह ससुरी क्या चीज है? हाथ का मैल."

शास्त्रीजी ने उदास भाव से कहा, "यही सही, बात ठीक है."

अगले मास 'श्री वीरबहादुर मिठाईलाल गुप्त महाविद्यालय' की स्थापना हवन यज्ञ और प्रसाद वितरण के साथ संपन्न हुई. इस महायज्ञ में हमारी अपनी जेब से कुल 78 रुपए 36 पैसे व्यय हुए. शास्त्रीजी इस महाभारत के शकुनि बन कर बड़ी व्यस्तता से सारा भार अपने कंधों पर लिए रहे.

अगले दिन से कक्षाएं लगने लगीं. अभी कुल छः वर्गों में कार्यारंभ हुआ. छात्र संख्या प्रति वर्ग में कुल छात्र संख्या पांच के औसत से रही. कालिज की कुल छात्र संख्या 28 थी, जिस में चार छात्राएं थीं अलगअलग वर्गों में.

प्राचार्य के तौर पर श्री बांकेलाल गुप्त, एम. ए. (द्वय), साहित्यरत्न, साहित्यभूषण, विशारद, काव्यतीर्थ, तर्क पंचानन, न्यायरत्न, विद्यावाचस्पति, विद्यार्णव को गुप्ताजी पता नहीं, किस कंदरा से निकाल कर लाए थे कि ऐसे विकट उपाधिधारी होते हुए भी उन का नाम सुनने का पहली बार सौभाग्य मिला. उन के कमरे के बाहर लगी पट्टिका पर

तो ये ही उपाधियां लिखी थीं. पता लगा कि यह भी अपनी जाति के एक रत्न हैं, जिन्हें एक नजदीकी कसबे के कालिज से गुप्ताजी ले आए. चूंकि वह नौकरी छोड़ कर आए थे, अतः फिलहाल तीन मास तक तीन सौ भत्ता तय हुआ था. प्राचार्योचित वेतन बाद में मिलना था.

शास्त्रीजी असंतुष्ट थे कि उपप्राचार्य की हैसियत से उन्हें अलग कैबिन नहीं मिला था. गुप्ताजी कालिज के सचिव और कोषाध्यक्ष चुने गए थे, उन्होंने झट मिस्तरी बुला कर बरामदे के एक कोने में लकड़ी, चट्टी आदि के पार्टीशन में उन की कैबिन तैयार कर दी. शास्त्रीजी बड़े प्रसन्न हुए.

समस्या तब उठी, जब उन्होंने अपनी नेम प्लेट बनवानी चाही.

"यार प्रधानजी," वह मायूसी से बोले, "हम हैं तो उपप्राचार्य, संस्कृत में विशारद पास भी हैं. आप तो जानते ही हैं कि शास्त्री की उपाधि हम ने यों ही जोड़ ली है. कालिज वाले तो क्या पूछेंगे, मगर नेम प्लेट पर सिर्फ विशारद, शास्त्री, कैसा भद्दा लगेगा? उस ससुरे प्रिंसिपल की फर्लांग भर लंबी उपाधियां तो देखो."

हम ने कहा, "प्रिंसिपल की उपाधियों के बारे में परसों साइंस के प्राध्यापक कह रहे थे कि डबल एम. ए. के सिवा सब झूठी हैं. दसबीस रुपए की उपाधि के हिसाब से उन्होंने अमृतसर या जाने कहां से मंगवाई हैं. आप भी चाहें तो पचास मंगा सकते हैं, किंतु मेरी राय से यह उचित न होगा. आप की ये दो उपाधियां ही काफी हैं."

नतीजा? बोर्ड लटक गया, "श्रीयुत भास्कराचार्य शास्त्री, विशारद, उपप्राचार्य."

दूसरी परेशानी यह रही कि संस्कृत विभाग में कोई नामांकन अभी तक न हुआ. कुल जमा 28 छात्रों में चार हिंदी या हमारे विभाग में आए, जिन में दो छात्राएं भी थीं. तीसरी छात्रा और अन्य आठ छात्र अंगरेजी या प्राचार्य महोदय के विभाग में (अंगरेजी के वही . विभागाध्यक्ष भी थे.) और बाकी विज्ञान में. इन के अलावा अन्य विभागों में अभी पढ़ाई शुरू नहीं हुई थी. प्रत्येक विभाग में अध्यक्ष के साथ दो अवैतनिक प्राध्यापक रखे गए, तीन मास के बाद वेतन की उसी शर्त पर. जाति का कालिज, और बाद में कालिज बढ़ने पर होने वाले फायदे सोच कर ये लोग सहर्ष काम संभालते.

प्राचार्य के लिए एक चपरासी की नियुक्ति हुई. अन्य विभागाध्यक्षों को खुद पानी पीना, पान खाने जाना, कागजपत्रादि उठानारखना पड़ता था. एक नौकर सफाई, झाड़पोंछ के लिए तय हुआ. प्राध्यापक जाति के लिए त्याग के गर्व से दीप्त हो कर, छोटीमोटी बातों की परवाह न करते. शास्त्रीजी तो ब्राह्मण थे, पर अपने यजमानों के लिए उन्हें इस नौकरी की कंटक शय्या पर लेटना भी मंजूर था.

हमें कालिज में काम संभालने में कोई हानि नहीं हुई, क्योंकि दोतीन ही पीरियड पढ़ाने पड़ते थे, बाकी हमारे सहयोगी प्राध्यापक देख लेते. फुरसत का समय हम अपना लिखनेपढ़ने में लगाते.

एक दिन शास्त्रीजी ने अपने कक्ष में हम से असंतुष्ट भाव से कहा, "हम यहां प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष तो हुए, पर पढ़ाने के लिए कुछ नहीं है. संस्कृत विभाग में तो कोई आता ही नहीं. कितने दुख की बात है. देवभाषा के प्रति मनु की संतानों को रंचमात्र रुचि नहीं दीख पड़ती."

"नया कालिज है," हम ने सांत्वना दी, "अभी जरा धीरज रखें."

कालिज स्थापना के डेढ़ मास बाद ही एक बैठक में एक घटना हो गई.

बात कुछ खास नहीं थी, पर ऐसे छोटेछोटे कारणों से ही बड़ी घटनाओं की पृष्ठभूमि बनती है. आस्ट्रिया के आर्कड्यूक

फर्डिनेंड की हत्या ने प्रथम और एक यहूदी द्वारा हिटलर के अपमान ने द्वितीय विश्वयुद्ध की भूमिकाएं तैयार की थीं. हमारा महाविद्यालय किस गिनती में था?

शनिवार को छुट्टी के बाद, प्राचार्य महोदय के कक्ष में शिक्षकों की बैठक हो रही थी. सचिव गुप्ताजी भी उपस्थित थे, बहस का मुद्दा था—कैसे छात्र संख्या शीघ्र 28 से 2,800 हो और विश्वविद्यालय में कालिज को अंगीभूत कराने के लिए क्या प्रभावकारी उपाय अपनाएं जाएं.

बहस के दौरान, गुप्ताजी को पान की तलब लगी. घंटी बजाई पर चपरासी नदारद. छुट्टी के बाद वह भी आदतन नुक्कड़ के चायखाने में जा पहुंचता. कई बार बेकार घंटी बजाने के बाद प्राचार्य ने जूनियर प्राध्यापक से कहा, "अशोकजी, जरा आप ही लपक कर 10-12 पान बनवा लाएं. परची लिख दीजिएगा पान वाले को."

अशोकजी का रंग जरा पक्का था, पर स्पष्ट दीखा कि चपरासी का स्थानापन्न बनाए जाने पर उन का चेहरा तमतमा कर काले से बैंगनी हो रहा है. तमक कर बोले, मैं "चपरासी हूं, जो आप मुझ से पान मंगवा रहे हैं?"

प्राचार्य महोदय को सब के सामने अनुशासन की यह अवहेलना अखर गई. यह उन्हें निजी अपमान सा लगा. भौंहें टेढ़ी कर बोले, "इस में बुरा मानने की क्या बात हुई? आप कम अवस्था के हैं, सो मैं ने कह दिया."

"कम अवस्था का होने से व्यक्ति की क्या कोई इज्जत नहीं रहती?" अशोकजी तमतमा कर बोले, "और भी तो यहां कई लोग कम अवस्था के हैं, उन से क्यों नहीं कहा आप ने?"

यह तो सरासर विद्रोह था. प्राचार्य तमक कर बोले, "आप को एक काम कहा गया. अनुशासन के..."

अशोकजी ने गरज कर कहा, "पान लाना मेरी ड्यूटी में शामिल नहीं है. आप ने मेरा अपमान किया है. आप मुझे समझते क्या हैं? मेरे पिताजी चाहें तो ऐसे दस कालिज खोल सकते हैं. मैं ने इंजीनियरिंग पान लाने के लिए पास नहीं की है. ऐसी संस्था में मैं नहीं पढ़ा सकता. आप के कालिज से मेरा इस्तीफा है." यह कह कर वह कक्ष से बाहर चले गए.

वातावरण बड़ा बदमजा और कुंठित सा हो गया. उस दिन की बैठक वहीं समाप्त कर दी गई.

दूसरे दिन ही सचिव को अशोकजी के पिताजी की ओर से नोटिस मिला कि उन का पांच हजार का चंदा वापस कर दिया जाए. इस कालिज के अब वह समर्थक नहीं हैं. साथ ही प्राचार्य के पास चार जूनियर प्राध्यापकों के इस्तीफे एक साथ पहुंचे.

शास्त्रीजी ने दिन में हमें बताया, "अशोक के पिताजी से आज भेंट की तो उन्होंने बताया कि वह अपने लड़के के लिए अलग से कालिज खोलने जा रहे हैं. अशोक ही प्रिंसिपल बनेगा. उन का

विचार है, प्राचार्य ने जानबूझ कर अशोक का अपमान किया, क्योंकि प्राचार्य हैं इधर वाले, अशोक है उधर का."

"यह इधरउधर का मतलब क्या है, शास्त्रीजी?" हैरानी से हम ने पूछा.

"कमाल है!" आंखें गोल करते वह बोले, "इतना भी नहीं जानते कि आप की जाति में जो मध्य प्रदेशीय हैं, वे इधर के कहलाते हैं और जो कान्यकुब्ज हैं, वे उधर के. गत रजत जयंती में दोनों उपजातियां समान मान ली गईं, पर भेद-भाव कहीं मिटता है?"

हम सिर थाम कर बैठे रहे. जाति में उपजातियां! सचिव गुप्ताजी को झख मार कर चंदा वापस करना पड़ा, क्योंकि अशोकजी के पिता प्रभावशाली व्यक्ति और बड़े व्यवसायी थे. गुप्ताजी का कारोबार भी उन के सहारे चलता था. हफ्ते भर में ही महाविद्यालय के निकट के एक मकान में दूसरा कालिज खुल गया—'श्रीमेवालाल बजरंगीलाल गुप्त महाविद्यालय (कान्य.)'

यह नया कालिज फिलहाल तीन कमरों के भवन में प्रारंभ हुआ है. प्राचार्य अशोककुमार गुप्ता के लिए कक्ष बरामदे में है. सचिव हैं उन के पिता श्री बजरंगीलाल गुप्ता. सचिव की योजना निकट भविष्य में यहीं जमीन खरीद कर एक शानदार भवन बनवाने की है. अभी तो हमारे कालिज के आधे छात्र और प्राध्यापक वहीं जा पहुंचे हैं, जो..."उधर' की उपजाति के हैं. शास्त्रीजी बड़े फेर में पड़े हैं. अशोक के पिता उन के भी यजमान हैं और उन से शास्त्रीजी को काफी फायदा होता है. वह शास्त्रीजी पर जोर दे रहे हैं कि वह 'उधर' चले आएं. शास्त्रीजी ने अपने कालिज की जन्म कुंडली बनाई है, उस हिसाब से इस कालिज पर प्रारंभ से ही शनि की साढ़े-साती सवार है. राहु केतु को तिरछी निगाहों से घूर रहा है और शुक्र बृहस्पति से नैन—सैन चला रहे हैं. हमारे सचिव गुप्ताजी का खयाल है, कालिज के बोर्ड पर 'इधर' का संकेत लिखा दें और साढ़ेसाती दूर करने के लिए प्रति शनिवार तो साढ़े सात ब्राह्मणों (सात वयस्क, एक लड़का) को भोजन कराएं.

फिलहाल, बाकी दरजन भर छात्रों, तीनचार प्राध्यापकों के सहयोग से हमारा कालिज चल रहा है. बुजुर्गों की दुआ से सब खैरियत है, जब तक कि 'इधर' भी कोई तीसरी उपजाति प्रकट नहीं हो जाती. ●

बंटवारा

एक राजनीतिक दल का
विघटन हुआ.
आधाआधा बांट लें सब कुछ
आपस में यह तय हुआ.
"ठीक है,"
बोले एक घटक के नेता,
"'राज' हम रख लेते हैं,
तुम रख लो 'नैतिकता.'"

—राजेंद्र मेहता

भरपूर पूंजी लगा देने, महंगी मशीनें खरीद लेने या आधुनिकतम तकनीक का उपयोग करने से ही कोई उद्योग प्रगति नहीं कर सकता. बड़ेबड़े कारखाने तक औद्योगिक अशांति का शिकार हो कर बंद होते देखे गए हैं.

किसी भी उद्योग की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उस का प्रबंध किस तरह से किया जा रहा है. इस कार्य में प्रबंधक की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण होती है. प्रबंधक यदि अपने कार्य में दक्ष और व्यवहार कुशल हो तो इस से उत्पादन तो बढ़ता ही है, मालिकों और श्रमिकों के बीच अच्छे संबंध भी बने रहते हैं.

उद्योग को उन्नति की ओर ले जाने के लिए एक कुशल प्रबंधक में क्याक्या गुण हों, इस की सही जानकारी के लिए यहां प्रस्तुत हैं दिल्ली के विभिन्न प्रमुख लघु उद्योगों के प्रबंधकों के विचार.

कुशल प्रबंधक कैसे बनें

भेंटवार्ता • विवेक

किसी भी नए प्रबंधक को बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है. इस लेख में प्रबंध के क्षेत्र में उठने

"प्रबंधक को स्वयं भी समय का पाबंद होना चाहिए." — सुमनलाल ठाकुर (चित्र में अपने कारखाने में बने खिलौनों के साथ).
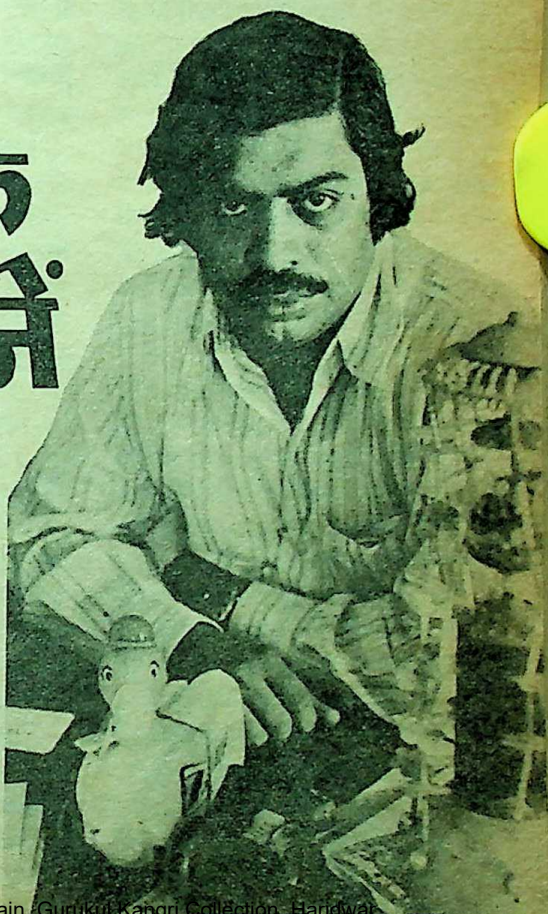
वाली समस्याओं पर कुछ प्रसिद्ध उद्योगों के सफल प्रबंधकों से ली गई भेंटवार्ताएं प्रस्तुत की जा रही हैं, जिन से इस क्षेत्र में आने वाले नए लोग उन के अनुभवों का लाभ उठा सकें.

'हीरो टायज' एक बहुत ही जाना-पहचाना नाम है. यह कंपनी बच्चों के खिलौने बनाने के लिए मशहूर है. यहां इन के युवा प्रबंधक श्री सुमनलाल ठाकुर से की गई बातचीत प्रस्तुत है :

प्रश्न : आप अपने कर्मचारियों के साथ कैसा बरताव करते हैं?

उत्तर : अपने कर्मचारियों के साथ मेरा रवैया हमेशा नरमाई का रहता है. मैं अपने व्यवहार से उन के मन में किसी तरह का डर या आतंक पैदा करना नहीं चाहता हूं.

प्रश्न : वे आप के नरम रवैये का कभी गलत फायदा तो नहीं उठाते हैं?

उत्तर : ऐसा कभी नहीं हुआ, नरमी बरतने का यह अर्थ नहीं होता कि मैं किसी के आगे झुक जाऊं या उसे इतनी छूट दे दूं कि वह मुझ से किसी तरह की बदतमीजी करने का साहस कर सके.

प्रश्न : एक अच्छे प्रबंधक में क्या खूबियां होनी चाहिए?

उत्तर : सब से मुख्य बात यह है कि प्रबंधक को खुद समय पर आना चाहिए, उसे बहुत ही व्यवहार कुशल होना चाहिए और कभी भी कर्मचारियों के हितों की उपेक्षा कर के दूसरों को खुश करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए.

प्रश्न : क्या आप यह महसूस करते हैं कि कर्मचारियों की घरेलू समस्याओं का असर उन की कार्यक्षमता पर पड़ता है? क्या आप अपने कर्मचारियों की घरेलू समस्याओं को जानने व उन्हें हल करने का प्रयास करते हैं?

उत्तर : यह मानी हुई बात है कि अगर किसी कर्मचारी के मन में किसी तरह का तनाव हो तो इस से उस की कार्यक्षमता पर असर पड़ता है और दुर्घटनाएं होने की संभावनाएं भी काफी बढ़ जाती हैं. इसलिए हमारा यही प्रयास रहता है कि हम अपने कर्मचारियों की निजी जिंदगी के बारे में जानकारी रखें और अगर कोई समस्या हमारी मदद से हल हो सकती है तो उसे हल करें.

प्रश्न : अगर किसी कर्मचारी की कोई निजी समस्या है तो उसे किस तरह से प्रबंधकों तक अपनी बात पहुंचानी चाहिए—खुद आ कर या यूनियन के जरिए?

उत्तर : समस्या चाहे निजी जिंदगी की हो या कार्यालय संबंधी, कर्मचारी को खुद ही अपने प्रबंधकों से उस बात को कहना चाहिए. जब कोई मामला यूनियन के माध्यम से हम तक आता है तो अकसर हम भी उसे प्रतिष्ठा का सवाल बना लेते हैं और समस्या बजाए सुलझने के और उलझ जाती है.

प्रश्न : समस्याएं या विवाद पैदा न हों इस के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर : चाहे दफ्तर हो या फैक्टरी अथवा कोई भी जगह हो, अनुशासन हर कीमत पर बनाए रखना चाहिए. अनुशासनहीनता के कारण सारे झगड़े पैदा होते हैं.

इस के लिए यह जरूरी हो जाता है कि प्रबंधक खुद अनुशासन का पालन करता हो. जब तक वह खुद कुछ कर के नहीं दिखाएगा तब तक वह दूसरों से अनुशासित रहने के लिए कैसे कह सकता है.

प्रश्न : प्रबंधक के नाते आपने श्रमिकों के मनोविज्ञान का काफी अच्छी तरह से अध्ययन किया होगा. श्रमिक संतुष्ट रहें इस के लिए प्रबंधक को क्या करना चाहिए?

उत्तर : अगर श्रमिकों को उचित वेतन मिलता रहे तो वे संतुष्ट रहते हैं. मेरे विचार से अगर श्रमिकों को समय पर वेतन मिलता रहे तो 50 प्रतिशत समस्याएं खुद ब खुद हल हो जाती हैं. अगर उन्हें समय पर वेतन नहीं

"प्रबंधक व कर्मचारियों के संबंध इतने मधुर होने चाहिए कि वे अपनी आपसी समस्याओं को खुद सुलझा लें." जगदीशलाल शोरी (बच्चों के वाकर के निर्माता).

मिलता है तो वे टूट जाते हैं क्योंकि उन्होंने भी दूसरों से पैसे देने का वादा किया होता है. इन्हीं सब कारणों से औद्योगिक विवाद पैदा होते हैं.

प्रश्न : आप निर्णय किस तरह से लेते हैं?

उत्तर : किसी कर्मचारी की समस्याओं के बारे में निर्णय लेते समय मैं उस के सुपरवाइजर से भी सलाह मशवरा करता हूं.

मान लीजिए, मुझे किसी कर्मचारी का काम पंसद नहीं है तो मैं उस कर्मचारी के ऊपर जो व्यक्ति होता है उस से उस कर्मचारी को समझाने के लिए कहता हूं, क्योंकि अगर मैं खुद कर्मचारी से कुछ कहूंगा तो वह उसे दूसरे तरीके से लेगा. इस के विपरीत उस का सुपरवाइजर उस के ज्यादा करीब होता है और वह उस की बातों का बुरा माने बिना आसानी से सुन लेता है और अपने व्यवहार में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है.

प्रश्न : मान लीजिए, समान पद पर दो कर्मचारी काम करते हैं. एक की कार्यक्षमता अधिक है और दूसरे की कम. तो क्या अधिक कार्यक्षमता वाले कर्मचारी को ज्यादा वेतन देने से उस के साथी में हीनता या शत्रुता की भावना पैदा नहीं होती है?

उत्तर : अकसर कर्मचारियों में ऐसी भावना आ जाती है. ऐसी हालत में हम उन की इस भावना को प्रतिस्पर्धा में बदलने का प्रयास करते हैं.

हम उन्हें समझाते हैं कि वे भी अपने साथी की तरह मन लगा कर काम करें तो उन्हें भी ज्यादा वेतन मिल सकता है. यह कोई सरकारी दफ्तर तो है नहीं जो हर साल, बिना कुछ किएधरे उन का वेतन बढ़ा दिया जाएगा.

यह तो नागरिक क्षेत्र है. जब भी प्रबंधक कर्मचारी के काम से संतुष्ट होगा, वह उस का वेतन बढ़ा देगा. वेतन में अंतर से कर्मचारियों के मन में एकदूसरे से आगे बढ़ने की भावना पैदा करने में मदद मिलती है.

प्रश्न : अगर कोई कर्मचारी गलती करता है तो उसे सब के सामने डांटना चाहिए या अकेले में?

उत्तर : मेरे विचार से अगर उस ने ऐसी गलती की है जिस से दूसरे भी सबक ले सकते हैं तो सब के सामने डांटने में कोई बुराई नहीं है. पर अगर आप कर्मचारी को अकेले में बुला कर डांटेंगे तो वह ज्यादा अच्छा महसूस करेगा. आखिर उस की भी तो इज्जत होती है.

प्रश्न : अगर आप कभी गलत निर्णय ले लेते हैं तो अपनी गलती महसूस हो जाने पर उस में परिवर्तन कर देते हैं या उसे प्रतिष्ठा का प्रश्न बना कर उस पर डटे रहते हैं?

उत्तर : अकसर भावावेश या गुस्से में गलत निर्णय भी लिया जा सकता है. पर जब हमें समझ में आ जाता है कि हमारा निर्णय गलत है तो हम उसे बदल देते हैं.

किंतु अगर कोई हम से टकराने की कोशिश करता है तो फिर हम किसी भी हालत में अपना निर्णय नहीं बदलते और

हमारी समझ में बदलना चाहिए भी नहीं, भले ही इस की कितनी भी बड़ी कीमत क्यों न चुकानी पड़े.

प्रश्न : प्रबंधक के नाते क्या आप ने कभी ऐसा सोचा है कि कर्मचारियों को सुबह या दोपहर के खाने की छुट्टी से पहले डांट देने से उन की क्षमता पर बुरा असर पड़ता है और वे उदास हो जाते हैं?

उत्तर : मैं ने ऐसा कुछ महसूस नहीं किया. अगर कर्मचारी ने ऐसी गलती की है जिस के लिए उसे उसी समय डांटना चाहिए, तो मेरी समझ में उसे उसी समय डांटना जरूरी है. वैसे बाद में भी उसे बुला कर समझाया जा सकता है.

प्रश्न : क्या आप के विचार में अगर किसी कर्मचारी की कार्यक्षमता में कमी आ जाती है तो उस के वेतन में से कटौती कर लेनी चाहिए?

उत्तर : देखिए, कानूनी तौर पर हम ऐसा नहीं कर सकते. निजी तौर पर भी मैं इस के खिलाफ हूं. कार्यक्षमता में वृद्धि की भी एक सीमा होती है. उस के बाद उस में या तो कमी आने लगती है अथवा वह स्थिर हो जाती है. अतः अगर हम ऐसी हालत में किसी कर्मचारी के वेतन में से कटौती करते हैं तो इस से उस पर बहुत बुरा असर पड़ेगा और उस की कार्यक्षमता एकदम खत्म हो जाएगी. फिर वह बजाए काम करने के समय काटना शुरू कर देगा.

प्रश्न : प्रबंधकों व श्रमिकों के संबंधों को किन तरीकों से और अधिक मधुर बनाए रखा जा सकता है?

उत्तर : छोटीछोटी बातें भी हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण साबित होती हैं. उदाहरण के लिए अगर मेरी फैक्टरी के किसी मजदूर के यहां कोई समारोह होता है तो मैं उस में जरूर भाग लेता हूं.

इस से वह मेरे प्रति अपनत्व महसूस करता है. इस का परिणाम यह होता है कि उस के मन में फैक्टरी केवल कमाई का साधन न रह कर एक ऐसी जगह हो जाती है जहां से वह भावनात्मक रूप से जुड़ जाता है. उसे हर चीज में अपनापन महसूस होता है जो मशीनों के रखरखाव व उत्पादन को बढ़ाने में काफी फायदेमंद साबित होता है.

प्रश्न : कुछ कर्मचारियों को बीड़ी या सिगरेट पीने की आदत होती है. क्या आप के विचार में काम के समय उन्हें ऐसा करने की छूट दी जानी चाहिए?

उत्तर : बहुत सी फैक्टरियां ऐसी हैं जहां धूम्रपान के कारण आग लगने का खतरा रहता है. अतः ऐसी जगह धूम्रपान की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए. पर मेरा निजी विचार यह है कि अगर किसी कर्मचारी को इस तरह की कोई आदत है तो वह उसे हर हालत में पूरा करेगा.

अगर आप उसे काम करते समय धूम्रपान की अनुमति नहीं देंगे तो वह दूसरे बहानों से बाहर जा कर या शौचालयों में धूम्रपान करेगा. इस से काम का और भी ज्यादा नुकसान होगा. इसलिए मेरे विचार में कर्मचारियों को ऐसा करने की छूट दे दी जानी चाहिए.

'शोरी ब्रदर्श' बच्चों के वाकर, साइकिलें आदि बनाने वाली दिल्ली की एक प्रसिद्ध कंपनी है. इस कंपनी के प्रबंधक श्री जगदीशलाल शोरी के कुशल प्रबंध के कारण पिछले 13 वर्षों में इस कंपनी में कभी हड़ताल नहीं हुई.

इन की इस सफलता के पीछे छिपा राज जानने के लिए इन से की गई बातचीत इस प्रकार है :

प्रश्न : प्रबंधक व कर्मचारियों के बीच कैसे संबंध होने चाहिए?

उत्तर : ठीक वैसे ही जैसे एक परिवार में पिता व पुत्र के बीच होते हैं. कर्मचारी को नौकर न समझ कर प्रबंधक को उन से अपने बच्चों की तरह काम लेना चाहिए. इस से कर्मचारी खुश रहते हैं और मन लगा कर काम करते हैं.

प्रश्न : क्या इस से उन में अनुशासन-हीनता पैदा नहीं होती है? प्यार के कारण वे बिगड़ नहीं जाते हैं?

उत्तर : अगर हम अपने बच्चों को ज्यादा छूट दे दें तो यह मानी हुई बात है कि वे बिगड़ जाएंगे. अतः प्रबंधक का व्यवहार ऐसा होना चाहिए जिस से कर्मचारियों के मन में उस के प्रति प्यार भी बना रहे और उस का डर भी.

प्रश्न : प्रबंधक के नाते आप कर्मचारी संघ या यूनियन की उपयोगिता के बारे में क्या सोचते हैं?

उत्तर : मेरे विचार में यूनियन का होना ही सभी औद्योगिक विवादों का मूल कारण है. समस्याएं तो उत्पन्न होती ही हैं, पर उन्हें सुलझाने के लिए तीसरे व्यक्ति की मध्यस्थता की जरूरत नहीं होनी चाहिए.

प्रबंधक व कर्मचारियों के संबंध इतने मधुर होने चाहिए कि वे अपनी आपसी समस्याओं को खुद सुलझा लें. जब यूनियन बीच में आ जाती है तो समस्याएं और विकट हो जाती हैं.

प्रश्न : आप अपने कर्मचारियों के वेतन का निर्धारण किस आधार पर करते हैं. उस की योग्यता, कार्यक्षमता या किसी अन्य बात पर?

उत्तर : वेतन निर्धारण में आदमी की योग्यता व कार्यक्षमता तो प्रमुख होती ही है. इस के अलावा हम इस बात को भी ध्यान में रखते हैं कि उस के ऊपर जिम्मेदारी कितनी है.

अगर कर्मचारी अपने परिवार में अकेला कमाने वाला है और उस पर आश्रित लोगों की संख्या काफी अधिक है तो मेरे विचार में उसे दूसरे कर्मचारियों

कुशल प्रबंधक की पहचान

"1964 से ले कर आज तक मेरी फैक्टरी में कभी कोई हड़ताल नहीं हुई. यह हमारे आपसी सद्भाव का ही प्रभाव है." ये शब्द हैं धीमान साउंड कारपोरेशन के प्रबंधक श्री रामरत्न धीमान के.

उन की कंपनी में रेडियो व ट्रांजिस्टरों का निर्माण होता है. श्री रामरत्न के अनुसार अगर श्रमिक को सिर्फ श्रमिक न समझ कर उस के साथ बराबरी का बरताव किया जाए तो कभी कोई समस्या उत्पन्न नहीं होती.

उन के विचार में बराबरी का अर्थ यह नहीं है कि आप मजदूरों को मालिक समझ बैठें. उन्हें आप मजदूर समझिए, पर इस के साथ यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि वे भी इनसान हैं और हर आदमी की, चाहे वह अमीर हो या गरीब, मालिक हो या मजदूर, अपनी इज्जत होती है.

कर्मचारियों की गलती करने पर डांटना तो चाहिए पर उस का उद्देश्य कभी भी उन के स्वाभिमान को चोट पहुंचाना नहीं होना चाहिए. किसी भी प्रबंधक को कारीगर या कर्मचारी के काम के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए.

"प्रबंधक का व्यवहार ऐसा होना चाहिए जिस से कर्मचारी खुद को नौकर न समझे और फैक्टरी के प्रति उस में लगाव की भावना पैदा हो."

प्रबंधक की यह जिम्मेदारी होती है कि वह कर्मचारियों के मन में यह बात कूटकूट कर भर दे कि उन की उन्नति तभी होगी जब उन की फैक्टरी को मुनाफा होगा और इस के लिए उन्हें दूसरों के बहकावे में न आ कर मेहनत व लगन से काम करना चाहिए.

कर्मचारियों से प्रबंधक को बराबर निजी संपर्क बनाए रखना चाहिए. इस से गलतफहमियां दूर करने में सहायता मिलती है.

की तुलना में अधिक वेतन मिलना चाहिए, क्योंकि अगर कर्मचारी के मन में तनाव हो या वह किसी तरह की समस्या में फंसा हो तो इस का सीधा प्रभाव उस की कार्यक्षमता पर पड़ता है और इस से उत्पादन प्रभावित होता है.

प्रश्न : मान लीजिए, आप ऐसा महसूस करते हैं कि किसी कर्मचारी की कार्यक्षमता कम होती जा रही है. ऐसी हालत में आप क्या करेंगे. उसे डांटेंगे या उस को काम से निकाल देंगे अथवा कोई और कदम उठाएंगे?

उत्तर : कभीकभी यह देखने में आता है कि एक ही काम को करतेकरते कर्मचारी ऊब जाते हैं और इस का असर उन की कार्यक्षमता पर पड़ता है. ऐसी हालत में कर्मचारी को डांटना या निकाल देना ठीक नहीं होता क्योंकि यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या है. अगर कभी कोई ऐसी समस्या पैदा होती है तो हम उस कर्मचारी के काम में परिवर्तन कर देते हैं. मान लीजिए वह बच्चों का वाकर बना रहा है तो हम उसे पाइप मोड़ने या ड्रिलिंग करने के काम में लगा देंगे और यह पता करना चाहेंगे कि वह किस काम को कर के ज्यादा खुश रहता है. उसे जो काम अच्छा लगेगा, हम उसे वही करने को देंगे.

प्रश्न : क्या कभी आप ने ऐसा पाया है कि मजदूर या कर्मचारी प्रबंधकों को बेवकूफ बनाने का प्रयास करते हैं? ऐसी हालत में प्रबंधक को क्या करना चाहिए?

उत्तर : जब कर्मचारियों को यह पता चल जाता है कि वे जो काम कर रहे हैं उस के बारे में प्रबंधक को जरा भी जानकारी नहीं है तो वह सचमुच उसे गुमराह करने या उस की अज्ञानता का लाभ उठाने की कोशिश करते हैं. ऐसी हालत पैदा न हो इस के लिए यह जरूरी हो जाता है कि प्रबंधक को हर कर्मचारी के काम के बारे में पूरी जानकारी हो और वह उसे स्वयं कर सकने की योग्यता रखता हो. ऐसी हालत में कर्मचारी उस से दब कर रहते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि किसी भी किस्म की बहानेबाजी प्रबंधक के सामने नहीं चल सकती. ●

"महोदय, आप को उद्घाटन फीता काट कर नहीं बल्कि इस फाइल पर यह लाल फीता बांध कर करना है."

लघु उद्योग प्रबंध

अपने उद्योग में वृद्धि के लिए कितने भी साधन जुटा लें, पर यदि काम करने वाले कर्मचारियों के साथ प्रबंधकों का आपसी व्यवहार मानवीय दृष्टिकोण पर आधारित नहीं है तो कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता.

मोहन की पत्नी सख्त बीमार थी. उस के इलाज के लिए उसे पैसे की आवश्यकता हुई. और कोई रास्ता न होने से उस ने अपनी भविष्य निधि में से कुछ रकम की मांग की. जब चार दिन तक पैसा हाथ नहीं आया तो उस ने भागदौड़ आरंभ कर दी. फिर भी पैसा 10 दिन के बाद मिला. तब तक बिना पैसे के इलाज ठीक से न हो सका और उस की पत्नी की हालत और बिगड़ गई.

इस अमानवीय व्यवहार ने उसे क्षुब्ध कर दिया. प्रशासन के प्रति उस के मन में घोर असंतोष ने जन्म लिया. उस

प्रबंध में मानवतावादी दृष्टिकोण: उत्पादन बढ़ाने का अचूक उपाय

कर्मचारियों को काम के घंटों में चाय आदि की आवश्यकता भी महसूस होती है. अतः यह सब कार्यालय में मंगाने पर पाबंदी न लगाएं.
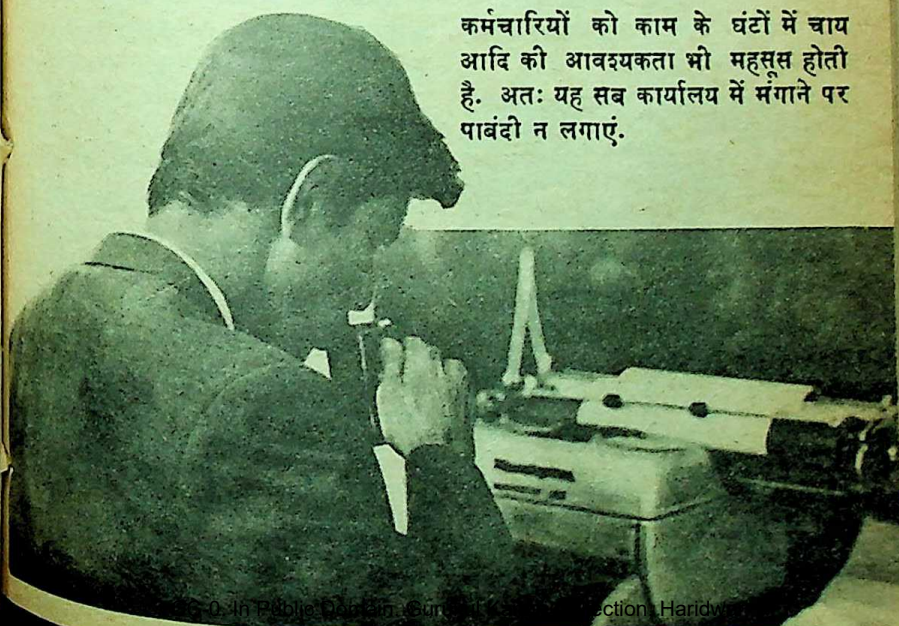
ने यह बात अपने साथियों से भी कही. सभी ने उस से सहानुभूति प्रकट की और प्रशासन से नाराजगी. मोहन को अपने मित्र से ईर्ष्या हुई जो पास ही दूसरे कार्यालय में काम करता था. उस ने भी अपने पिता की बीमारी के कारण कुछ रकम अगाऊ मांगी थी. उसे दूसरे ही दिन न केवल रकम मिल गई थी वरन् उस के बास ने उसे बुला कर उस के पिता के बारे में पूछताछ भी की थी.

एक कार्यालय में जगह की कमी के कारण एक मेज पर तीनतीन बाबू बैठते थे. चलनेफिरने की भी जगह नहीं थी. फिर भी अधिकारी पूरा काम मांगते थे. कर्मचारी तंग हालत में बैठ कर दुखी थे. कभी कह भी देते, "आप बैठने के लिए तो जगह दे नहीं सकते, हम से क्या उम्मीद करते हो?" एक दूसरे कार्यालय में जहां यथेष्ट जगह थी, इस तरह का असंतोष नहीं था. साथ ही उत्पादन भी उचित स्तर पर था.

कारीगर हो या मजदूर सभी को काम करने के लिए पर्याप्त जगह दें अन्यथा वह अपनी क्षमता जितना काम कैसे कर सकेगा?
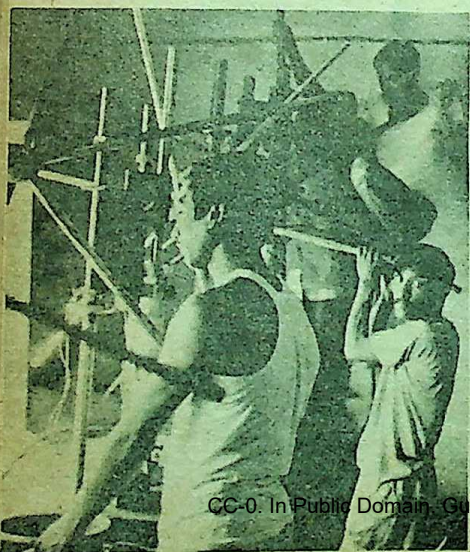
एक फैक्टरी में बालटियों पर जस्ता चढ़ाया जाता था. काम के दौरान उस फैक्टरी से धुंए के गहरे बादल उठते थे, जिस से न केवल उस फैक्टरी वाले कर्मचारी परेशान थे वरन् आसपास की दूसरी फैक्टरियों के लोग भी परेशान थे. यह धुआं सारी फैक्टरी में फैल जाता. प्रबंधकों ने उस धुएं को ऊपर निकालने के लिए चिमनी का इंतजाम नहीं किया था. हां, यह अवश्य किया था कि डाक्टरी प्रमाण ले लिया था कि यह धुआं स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं है. प्रमुख अधिकारी आध मील दूर अपने कमरे में बैठ कर यह महसूस नहीं कर सकते थे कि उस दमघोटू धुएं से कर्मचारियों को कितनी परेशानी होती थी.

असंतोष न बढ़ने दें

इस का फैक्टरी के उत्पादन पर सीधा असर पड़ रहा था. मालिक ने चिमनी न लगा कर कुछ हजार रुपए तो बचाए पर उस से कहीं अधिक नुकसान उत्पादन घटने से उठाया. कुछ समय बाद कर्मचारियों ने आवाज बुलंद की तो मजबूरन चिमनी लगवानी पड़ी. फिर इस कारण से उत्पन्न असंतोष अपने आप शांत हो गया.

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि जहां कर्मचारियों की सुखसुविधा का ध्यान नहीं रखा गया, वहां असंतोष ने जन्म लिया और जहां यह किया गया, वहां संतोष रहा. शांत व सद्भावपूर्ण वातावरण में अधिक और अच्छा काम होता है, यह हम और आप सब जानते हैं.

कर्मचारियों का अधिक समय कार्यालय या फैक्टरी में बीतता है. अतः कार्यस्थल पर उचित सुविधाएं होना आवश्यक है. कार्यालय में उसे पंखा चाहिए. यह कहने से कोई लाभ नहीं कि क्या घर पर भी पंखा है. वहां तो वह अखबार से हवा कर सकता है. कपड़े उतार कर बैठ सकता है. कार्यालय में तो ऐसा नहीं किया जा सकता. हर संस्थान में व्यक्ति
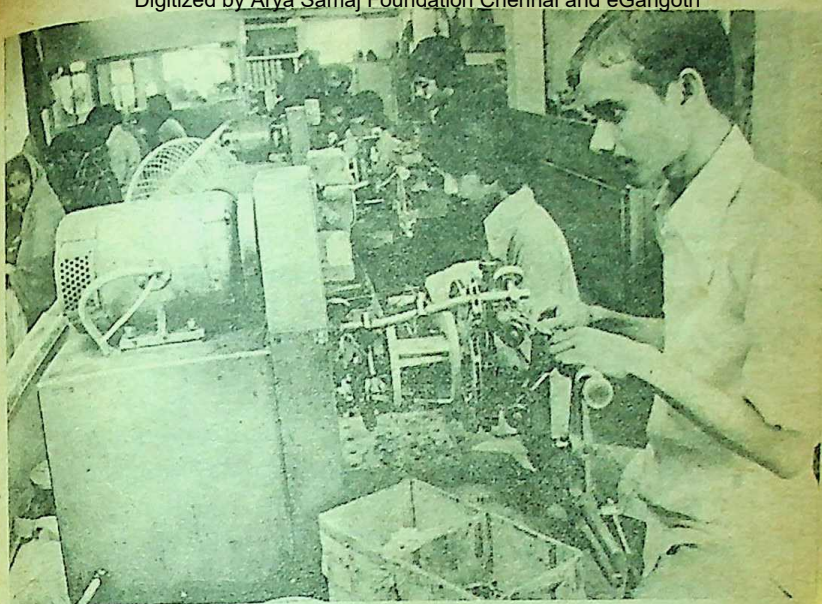
प्रत्येक कर्मचारी को अपना काम स्वतंत्रता पूर्वक करने की छूट तो दें पर यह भी ध्यान रखें कि कहीं वे आपस में बातें कर के समय बरबाद तो नहीं कर रहे?

का अपना महत्त्व है. कितनी भी मशीनें हों, किसी भी हद तक मशीनीकरण हो पर मशीन पर काम करने वाले व्यक्ति का अपना महत्त्व है. जब तक इस व्यक्ति पर उचित ध्यान नहीं दिया जाता, कुछ भी नहीं पाया जा सकता.

मानवीय व्यवहार का प्रतिफल

यदि संस्थान में मानवीय व्यवहार का अभाव है व मानव को मानव नहीं एकमात्र वस्तु समझा जाता है तो वह संस्थान कुछ भी हासिल नहीं कर सकता. पर यदि आप अपने कर्मचारियों का विश्वास जीत कर उन्हें विश्वास दिला सकते हैं कि आप के हाथों उन का भविष्य सुरक्षित है तो आप के अधिकार में एक अमूल्य निधि है जिस से कुछ भी पाया जा सकता है. अधिकारी अकसर भूल जाते हैं कि मातहत भी उतने ही संवेदनशील हैं जितने कि वे स्वयं. उन में भी वे ही क्रियाकलाप होते हैं, वे ही स्पंदन होते हैं जो स्वयं उन में. वे कह न सकें, यह बात दूसरी है. एक मजदूर भी अन्याय को उतना ही समझता है जितना दूसरे वर्ग के लोग.

आपसी संबंधों पर प्रतिकूल असर डालने वाले अनेक कारण हैं. कुशलता व उत्पादन और काम करने की उचित परिस्थितियों में सीधा संबंध है. इस से पहले कि आदमी अपनी सेवाएं पूर्ण रूप से प्रदान कर सके, उसे मानसिक व भौतिक दोनों तरीकों से तैयार करना आवश्यक है.

कर्मचारी के मानसिक रूप से तैयार होने के लिए आवश्यक है कि उस के व्यक्तिगत मामले सही समय पर सही तरीके से निबटाए जाएं. वह तो अपने परिवार का पेट भरने के लिए आया है. उसे अच्छी तरह मालूम है कि पैसा ही परिवार वालों के चेहरे पर खुशियां ला सकता है. परिवार के सदस्यों के मुसकराते चेहरे ही उसे अपूर्व सुख व संतोष

प्रदान करते हैं. इस से उसे और काम करने की प्रेरणा मिलती है. यदि उसे वेतन समय पर नहीं मिलता तो देखिए क्या होता है—उसे हर तरफ परेशानी का सामना करना पड़ता है, समय पर अपने देनदारों का भुगतान न करने से मुंह चुराना पड़ता है. घर वाले भी उम्मीद लगाए बैठे रहते हैं कि अब हाथ खुलेगा. पर जब निश्चित तारीख को मालिक वेतन नहीं देता तो चारों ओर समस्याएं ही समस्याएं दिखाई देने लग जाती हैं. जब वह असंतुलित मन से फैक्टरी या कार्यालय जाता है तो वह काम में पूरा ध्यान नहीं दे पता. फलस्वरूप उत्पादन घटता है.

हर काम समय पर हो

अतः समय पर वेतन का भुगतान, समय पर वार्षिक वेतनवृद्धि, पक्षपात के बिना समय पर पदोन्नति, समय पर अग्रिम धनराशि का भुगतान, समय पर अवकाश आदि का बहुत महत्त्व है. इन सब बातों पर ध्यान देने से एक ऐसे वातावरण की सृष्टि होती है जिस से कर्मचारी को लगन से काम करने की प्रेरणा मिलती है. आम तौर पर इन पर ध्यान नहीं दिया जाता था. इसी लिए सरकार को फैक्टरी ऐक्ट व समय पर भुगतान करने के कानून बनाने पड़े. अभी भी इन का उल्लंघन होता है. मालिकों पर जुरमाने आदि होते रहते हैं. हां तो एक बार व्यक्तिगत मामलों पर सहानुभूतिपूर्वक ध्यान दे कर दूसरी भौतिक सुविधाओं पर ध्यान दिया जा सकता है.

मेरा अपना अनुभव है कि जिस भी फैक्टरी व कार्यालय में इन बातों का ध्यान रखा गया है, वहां यूनियन में मामले कम हो गए हैं. इस ओर बरती गई अधिकारियों की उदासीनता व निष्क्रियता ही कर्मचारियों को यूनियन की ओर भी झुकाती है, क्योंकि उन्हें अनुभव से मालूम हो गया है कि यूनियन की मारफत कहलाने से काम के जल्द होने की संभावना रहती है. मेरा भी अनुभव है कि कर्मचारी पहले स्वतः ही अपनी परेशानी अधिकारियों की मारफत ठीक कराने का प्रयास करते हैं. वहां उदासीनता देख कर ही दूसरा रास्ता देखने को मजबूर होते हैं.

असंतोष की वजह जानें

मेरे एक मित्र ने एक कार्यालय में पद संभाला, जहां रोज ही यूनियन की ओर से मुर्दाबाद के नारे लगते और घेराव के हथकंडे अपनाए जाते थे. पहले ही दिन उन्हें लगा कि कहां आ फंसे. मुझ से सलाह लेने आए कि क्या करें कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे. सब बातें सुन कर मैं ने सलाह दी कि एक पूरा माह लोगों के व्यक्तिगत मामलों को निबटाने में लगा दो, फिर कार्यालय में कार्य संबंधी सुविधाएं दे दो. कुछ पैसा खर्च हो तो उसे पूंजी विनियोजन समझ कर लगा दो. उन्होंने जा कर जब विस्तार से देखा तो मालूम हुआ कि लोगों के भुगतान पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था. लोगों को एकएक भुगतान के लिए महीनों चक्कर काटने पड़ते थे. फिर बाबुओं को लेदे कर वे अपना काम करवाते थे.

एक तो पैसा समय पर न मिलने का असंतोष, उस पर बारबार चक्कर काटने के कारण समय की बरबादी. अकसर ही ये मामले यूनियन में उठाए जाते थे और आए दिन मुर्दाबाद के नारे लगते थे. मित्र महोदय ने दो माह के अंदर यह हालत ला दी कि आज बिल दो और कल पैसा लो. साथ ही कुछ पैसा खर्च कर आवश्यक सुविधाएं भी प्रदान कर दीं. परिणाम सुखद था. कहने लगे, "अब तो मुर्दाबाद और घेराव आदि की बातें पुरानी हो गई हैं. यूनियन की बैठकें भी कम हो गए हैं. सब प्रसन्न हैं और जो मैं कहता हूं करते हैं."

कहना न होगा कि जब कुछ समय बाद उन की बदली हुई तो दफ्तर वालों ने पूरा जोर लगाया कि न हो.

कुछ अन्य बातें

जब एक बार मानसिक रूप से कर्मचारी अपना काम ठीक से करने को तैयार हो जाते हैं तो कुछ और बातों पर भी ध्यान देना आवश्यक हो जाता है. कार्य संबंधी सुविधाओं का कार्यालय व फैक्टरी में अपना स्थान है. उत्पादन बढ़ाने में ये महत्वपूर्ण योगदान करते हैं. इन सुविधाओं से यदि फैक्टरी में अधिक सामान बनता है तो कार्यालय में कुशलता बढ़ती है. इन सुविधाओं में प्रमुख हैं :

कार्य करने का यथेष्ठ स्थान.

उचित मात्रा में रोशनी व हवा का प्रबंध.

ठीक तरह का फर्नीचर.

पीने के पानी की उचित व्यवस्था.

शौचालय की व्यवस्था.

कैंटीन की व्यवस्था.

दुर्घटनाओं से बचने का प्रबंध.

आग बुझाने की सेवाएं.

शांतिपूर्ण वातावरण.

जब भी कोई व्यक्ति किसी फैक्टरी या कार्यालय में काम करने जाता है तो यदि वह बाबू है तो उसे बैठने के लिए मेज व कुरसी चाहिए और यदि कारीगर है तो आवश्यक औजारों सहित काम करने की मेज. यह भी आवश्यक है कि काम में आने वाली जितनी भी चीजें हैं वे हाथ के पास हों. ठीक उसी प्रकार जिस तरह एक गृहिणी अपने मसाले, माचिस, कलछी आदि अपने चूल्हे के पास रखती है. किसी को भी किसी औजार के लिए या फाइल के लिए दूरदूर तक न जाना पड़े. यदि इस प्रकार की सुविधा नहीं होगी तो कर्मचारियों से लगन व मन से काम करने की आशा करना मात्र दुराशा ही होगी.

मैं ने कई बार इस तरह के वातावरण में कर्मचारियों की बातें सुनी हैं, वे प्रशासन की बुराई ही करते हैं. मैं ने भी कई बार इस तरह के दमघोंटू वातावरण में काम किया है और मैं कह सकता हूं कि मेरे मन में भी प्रशासन के प्रति तीव्र आक्रोश उभरा था.
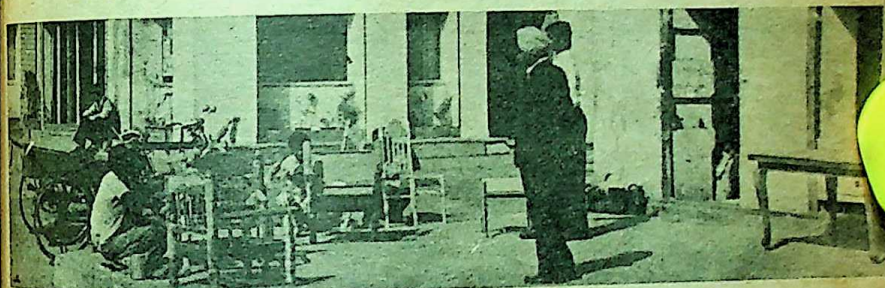
श्रमिक भी मानव है, उसे भी धूप, हवा उतनी ही महसूस होती है जितनी प्रबंधकों को. तब धूप और हवा के थपेड़ों को सह कर क्या ये अपनी क्षमता जितना काम कर सकेंगे?

एक कार्यालय में कुछ नक्शानवीस काम करते थे. वे नक्शे बनाने के लिए अधिक रोशनी की आवश्यकता महसूस कर रहे थे. सूर्य का प्रकाश यथेष्ट नहीं था. बिजली के बल्ब अधिक काम के नहीं थे. उन्होंने ट्यूबलाइट की मांग की. प्रशासन को यह खर्चीला मालूम पड़ा. मांग पूरी नहीं की. कम रोशनी में काम करतेकरते जब उन की आंखें दुखने लगतीं तो वे उन्हें आराम देने बाहर चले जाते.

एक आता, दूसरा जाता. आंखों को धो कर कुछ आराम दे कर वापस आते. हर घंटे पीछे पांच मिनट जाया होते. इस तरह काम का अप्रत्यक्ष नुकसान होता. प्रशासन को यह तो सह्य था, पर कुछ सौ रुपयों का खर्च ट्यूबलाइट पर सह्य नहीं था.

एक फैक्टरी में पेंटर अपने कपड़े बचाने के लिए बचाव के कपड़े 'ओवर आल' की मांग कर रहे थे, पर प्रशासन टाल रहा था. हालांकि खर्च मात्र सौ रुपए का था. अपने कपड़ों को बचा कर जब वे पार्सलों पर पता लिखते तो समय अधिक लगता. प्रबंधक की बदली होने पर जब दूसरा नया प्रबंधक आया तो उस ने उन की समस्या समझ फौरन ही बचाव के कपड़े दे दिए. इस से न केवल उन का मनोबल बढ़ा वरन् प्रबंधक के प्रति सद्भाव भी जाग्रत हुआ.

प्रबंधकों की उदासीनता

आजकल के नए भवनों में तो शौचालय आदि की सुविधा पर्याप्त होती है, पर उन की सफाई के बारे में उदासीनता सामान्य बात है. आजकल अधिक जगह निकालने के लिए इन सुविधाओं में कटौती की जाती है. फलस्वरूप कई नए भवनों में कर्मचारियों की अधिकता के कारण कार्यालय में बदबू ही फैली रहती है. इन सुविधाओं और व्यक्ति की सामान्य आवश्यकताओं का परस्पर घनिष्ठ संबंध है. यदि सुविधाएं कम हैं या उन की उपेक्षा की जाती है तो मनोबल पर प्रतिकूल असर पड़ता है. और दूसरी परेशानियां तो सह ली जाती हैं पर यदि शौचालय के आगे कतार लगानी पड़े तो यह मनोबल गिराने का एक प्रमुख कारण हो जाता है. इस से प्रबंधकों के प्रति तो दुर्भावना पैदा होती है, साथ ही उत्पादन का समय भी बरबाद होता है.

इसी प्रकार पीने के पानी का प्रबंध व चायनाश्ते की सुविधा भी आवश्यक है. साथ ही दुर्घटना रोकने तथा आग बुझाने का भी उचित प्रबंध होना चाहिए. ये तो उदाहरण मात्र हैं. हर कार्यालय व फैक्टरी की आवश्यकतानुसार इन में रद्दोबदल हो सकता है पर आधारभूत आवश्यकताएं तो ये हैं ही.

वातावरण प्रबंधक पर निर्भर है

यह नहीं है कि प्रबंधक इस मामले में उपेक्षा बरतते हैं और वे इन के अभाव में उत्पादन में कमी से वाकिफ नहीं हैं. सच तो यह है कि यह प्रमुख अधिकारी की विचारधारा पर निर्भर करता है. मालिक अपनी तरफ से तो उसे यथेष्ट वित्तीय अधिकार दे देता है ताकि वह सही समय पर सही निर्णय ले कर कर्मचारियों के मनोबल को न गिरने दे. यह नहीं कि वह करना नहीं चाहता. वास्तविकता तो यह है कि वह यह महसूस ही नहीं कर पाता कि इन के अभाव में किस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से उत्पादन का ह्रास होता है. यदि वह समझ ले तो कदापि ऐसा न होने दे और अपने अधिकारों को उपयोग में ला कर एक साफसुथरा वातावरण बना दे.

मेरे एक मित्र का जो अत्यंत सफल प्रशासक हैं, उस का यह रवैया रहा है कि नए कार्यालय में जा, दो हफ्ते के अंदर कार्यालय की इस संबंध में कमियों का पता लगा लें और फिर आवश्यक रकम खर्च कर उन्हें मुहैया कर दें. इस सहानुभूतिपूर्ण रवैये से वातावरण अनुकूल हो जाता था. फिर वह उन से अपने मन का करवाते थे. उन के व कर्मचारियों के बीच हमेशा सद्भाव रहा.

इन सुविधाओं पर ध्यान देने से निश्चय ही ऐसा वातावरण बनता है जिस से संस्थान में गति आती है. पर इस विषय में यह ध्यान रखना जरूरी है कि कर्मचारियों को न लगे कि भीख दी जा रही है. प्रबंधक अपनी तरफ से तो कुछ सुविधाएं दें ही, पर कुछ रह भी जाए

जिन के लिए उन्हें भी मांगने की गुंजाइश रहे ताकि वे प्रबंधकों पर जोर दे कर उन्हें मनवा सकें. इस प्रकार कुछ मिलने में एक प्रकार का संतोष होता है.

हर कार्य में समझदारी और व्यक्तिगत सहानुभूति की भावना होना आवश्यक है. जब हर वस्तु प्रबंधक अपनी तरफ से देता है तो इस भावना का ह्रास होता है. जब वे आते हैं, अपनी समस्या पेश करते हैं, अपनी कठिनाई बतलाते हैं, अपनी मांग के प्रति आप को आश्वस्त करते हैं और फिर आप उस से राजी होते हों तो उन्हें लगता है कि वे जीत गए हैं. आप ने इस से कुछ खोया नहीं. आप तो वह देना ही चाहते थे, पर फर्क इतना है कि उन के कहने से दे दिया.

मुझे एक अधिकारी का मामला याद आता है जहां उस ने कर्मचारियों का संतोष बढ़ाने के लिए तय किया कि वह उन्हें पूरी छुट्टी समय से देगा. उस से पहले का अधिकारी इस मामले में कंजूस था. कुछ माह हर किसी को पूरी छुट्टी मिली. न कम की गई और न नामंजूर.

पर इस का परिणाम कुछ अच्छा नहीं निकला. जरा सोचने से उसे अपने निर्णय की खामी नजर आ गई और उस ने अपना रवैया बदल लिया. इस के बाद जब किसी कर्मचारी ने एक माह का अवकाश मांगा तो वह उसे बुला कर पूछते कि इतने अवकाश से संस्थान के काम का नुकसान होगा, क्या कुछ कम छुट्टी लेने से काम नहीं चल सकता. साथ ही वह उस के कारण को जान कर उस से उस के बारे में बात भी करता. अकसर ही कर्मचारी कुछ कम छुट्टी लेना मंजूर कर लेता.

पहले अधिकारी बिना पूछेताछे छुट्टी मंजूर कर देता था. कर्मचारी उसे अपनी समस्या बतलाना चाहते, पर वह यह कह कर कि हम ने छुट्टी मंजूर कर दी है, उस का मुंह बंद कर देता. वह बेचारा वापस हो लेता कि अधिकारी हृदयहीन है. सोचता, मैं ने तो अपने बाप के मरने पर अवकाश मांगा था उस ने सहानुभूति दर्शाना तो दूर बात भी नहीं की. कमी व्यक्तिगत संस्पर्श और सहानुभूति की थी.

यह स्पष्ट होना चाहिए कि कार्यालय के आपसी व्यवहार में व्यक्तिगत संस्पर्श और सहानुभूति की आवश्यकता है. यही वह जादू की छड़ी है जिस से वातावरण सुखद एवं सद्भावपूर्ण बनाया जा सकता है. आप अपने संस्थान में उत्पादन बढ़ाने के लिए कितनी भी सुविधाएं प्रदान कर दें पर यदि उन के आधार में व्यक्तिगत संस्पर्श और सहानुभूति नहीं है तो कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता. ●

प्रबंध संबंधी कुछ महत्त्वपूर्ण बातें

यदि इन छोटीछोटी पर महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान में रख कर श्रम, मशीन व उत्पादन के बीच उचित तालमेल बैठा दिया जाए तो कई अनावश्यक परेशानियों से बचा जा सकता है और उद्योग भी प्रगति कर सकता है.

हर कार्य के करने का एक सब से अच्छा तरीका होता है. यदि वह तरीका तलाश लिया जाए तो काम जल्द और अच्छा होता है. ऐसा छोटे से ले कर बड़े काम तक में होता है. मैं एक छोटे से उदाहरण से यह समझाता हूं. मेरे

पास मेल आर्डर का काम है. एक दिन में कभी 500 लिफाफे भी पोस्ट करने पड़ते हैं. टिकट लगाने के लिए हम पहले टिकटों को अलगअलग फाड़ लेते थे और एकएक को गीला कर चिपकाते जाते थे. इस में बहुत समय लगता था. एक साथी जो इस तरह का काम करते थे बोले, "दस टिकट की एक पत्ती ले लो. उस के एक-एक टिकट को गीला कर चिपकाते चलो और फाड़ते चलो."

कुछ समय यह किया. समय बचा. एक दिन डाकखाने में इस तरह टिकटें चिपका रहा था. पोस्टमास्टर ने देखा तो बोले, "भले आदमी, पूरे 10 टिकट की पत्ती को गीले कपड़े से एकबारगी गीला कर लो और चिपकाते चलो. बारबार गीला करने का समय बचेगा."

जहां पहले टिकट चिपकाने में 15 मिनट लगते थे, अब मात्र पांच मिनट में ही काम हो जाता. सब से सही तरीका मिला तो काम जल्द और अच्छा होने लगा. यही सोचनेविचारने की बात है. कारखाने में अनेक काम होते हैं. हर कोई अपने-अपने ढंग से करता है. पर यदि जरा अध्ययन कर काम के तरीके का सब से अच्छा तरीका खोज लिया जाए तो समय बचे और वही श्रमिक जो दिन में 100 चीजें बनाता है, 125 बनाने लगे.

कार्यपद्धति का अध्ययन करें

काम करने में शक्ति का क्षय होता है. कार्यपद्धति का अध्ययन कर यह पता लगता है कि वह शक्ति किस प्रकार व्यय हो रही है. फिर निष्कर्षों को इस प्रकार लागू किया जाए कि उद्योग का भी लक्ष्य कम से कम प्रयास से और कम से कम सामग्री के उपयोग से हो सके. इस अध्ययन के फलस्वरूप हम हाथपैर के व्यर्थ के संचालन को कम कर सकते हैं. साथ ही उस व्यर्थ के श्रम को रोक सकते हैं जो श्रमिक को थकाता है. यदि श्रमिक दिन भर काम कर बिलकुल थक जाता है तो उस के पास परिवार को देने के लिए कुछ नहीं बचता. वह चुका सा घर पहुंचता है. जा कर लस्त पड़ रहता है. या उस थकावट को मिटाने के लिए शराब पी कर लेट रहता है. यह न स्वयं श्रमिक के हित में है, न उस के परिवार के और

किसी भी संस्थान में समय का विशेष महत्त्व है. इसलिए समय के मामले में पूरी तरह सतर्क रहें.

न आप के उद्योग के ...
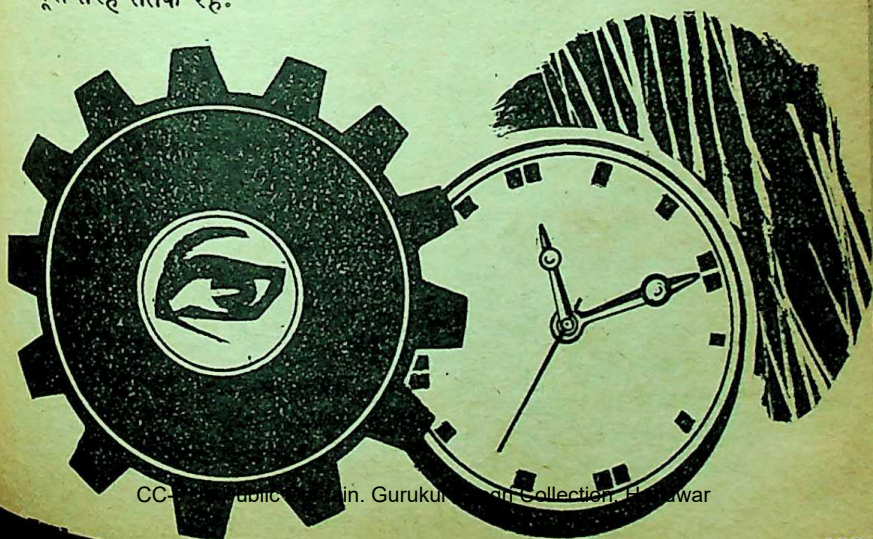
यदि कार्यपद्धति में सुधार कर वही काम कम समय और कम मेहनत से किया जाए तो श्रमिक को राहत मिले. मालिक को चाहिए कि वह इस ओर ध्यान दे. पर यदि वह अपने श्रमिकों को भी प्रोत्साहित करे कि वे भी कम श्रम करने के कुछ तरीके सुझाएं और उपयुक्त को मान ले तो बहुत लाभ हो सकता है. यह अध्ययन कुछ इस प्रकार से होना चाहिए कि उन्हें यह न महसूस हो कि छटनी आदि करने की मंशा है. वैसे छटनी का तो सवाल भी नहीं उठता. अच्छा काम होगा, उपभोक्ता प्रसन्न होंगे तो वे अधिक माल खरीदेंगे. माल की खपत बढ़ेगी तो और बनाना होगा. पर मानव स्वभाव तो मानव स्वभाव है. श्रमिकों में यह भावना उठ सकती है, अतः चतुराई की आवश्यकता है.

कारखाने की रूपरेखा

इसी से जुड़ा हुआ प्रश्न है कारखाने की रूपरेखा का. अकसर ही बिना अधिक सोचेसमझे या भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखे मशीनें यहांवहां खड़ी कर दी जाती हैं. कभी पहला व चौथा काम तो पासपास हो जाता है और दूसरा व तीसरा काम दूसरे छोर पर. पहला काम हो कर उसे दूसरे व तीसरे काम के लिए दूर ले जाना पड़ता है. फिर चौथे काम के लिए पुनः पहले के पास लाना पड़ता है क्योंकि चौथा काम पहले के पास है. कितना समय व श्रम बरबाद होता है इस में. अतः सारे कार्य को छोटेछोटे भागों में विभक्त कर कार्यस्थल में मशीन आदि को इस प्रकार जमाना चाहिए कि माल एक मशीन से दूसरी मशीन पर बिना परेशानी के चला जाए, समय व श्रम कम लगे, व्यर्थ सामान यहां से वहां मारामारा न फिरे. एक के बाद दूसरा काम होता जाए. आरंभ में तो भविष्य का भी ध्यान रखते हुए योजना बनानी पड़ती है, पर

... से बहुत लाभ भी होता है.

रुचि के अनुरूप काम

हर आदमी अपनी दिलचस्पी के अनुसार किसी काम को अच्छा कर सकता है. कोई मेहनत का काम कर सकता है तो कोई बाहर घूम कर करने का तो तीसरा लिखापढ़ी करने का. जिस की दिलचस्पी लेखा करने में है यदि उसे बिक्री का काम सौंप दिया जाए और जिसे बाहर काम करना अच्छा लगता है उसे लेखा रखने का तो दोनों ही असफल रहेंगे. उद्योग का समय व शक्ति दोनों ही नष्ट होंगे. मोटे काम करने वाले श्रमिक को भी बारीक काम और बारीक काम करने वाले को मोटे काम में लगाने का परिणाम भी अच्छा नहीं होता. अतः अपने कर्मचारियों व श्रमिकों की दिलचस्पी का ध्यान रख कर जो काम जिस के उपयुक्त हो, उसे देना चाहिए. यहां तक कि साझे में काम हो रहा हो तो हर साझेदार को अपने रुझान का काम करना चाहिए.

एक उद्योग में तीन साझेदार थे. एक वकील, दूसरा लेखाकार और तीसरा प्रबंधक. तीनों ने अपनाअपना काम ले लिया. कुछ समय तो ठीक चला, पर बाद में कुछ गलतफहमी से लेखाकार ठीक से हिसाब नहीं रख सका. आपस में काम बदल लिए. बदलने की देर थी कि उद्योग का ढांचा चरमराने लगा. लेखाकार कचहरी का काम नहीं कर सके, वकील साहब प्रबंध नहीं कर सके और प्रबंधक महोदय हिसाब नहीं रख सके. उन्हें पुनः अपनेअपने काम को करना पड़ा.

जब उद्योग लगाया है तो उस से संबंधित कोई भी काम बेइज्जती वाला नहीं समझना चाहिए. आवश्यकता पड़ने पर अपना कंधा लगाने को भी तैयार रहना चाहिए. कभी जरा से सुझाव से, कभी जरा साथ में काम में लग जाने से रुका हुआ काम आगे बढ़ जाता है. जब श्रमिकों

को इस बात ... आवश्यकता पड़ने ... हाथ बंटाने ... दृष्टिकोण भी ... का मतलब यह ... अड़ाते रहो. ... बल गिरता है ... कोई स्वतः ही ... क्योंकि उस में ... यह तो मालिक ... कहां, किस क... आवश्यकता है ... करे. यह संभव ... मालिक कार्य... मशीन पर ... समयसमय पर ... लगाए.

मातहत ...

अकसर ... प्रबंधक और ... इतना होता है ... कोई सिलसिला ... अपनी हतक ... मातहत लोगों ... बातचीत करें ... दुनिया होती है ... में कुंठाएं पन... रूप ले लेती है ... तो सब की चि...

को इस बात का भान रहता है कि आवश्यकता पड़ने पर मालिक हर काम में हाथ बंटाने को तैयार है तो उन का दृष्टिकोण भी बदल जाता है. हाथ बंटाने का मतलब यह नहीं कि हर समय टांग अड़ाते रहो. इस से तो श्रमिकों का मनोबल गिरता है. मानव स्वभाव है कि कोई स्वतः ही मदद मांगने नहीं आएगा, क्योंकि उस में अपनी हेठी जो होती है. यह तो मालिक को ही देखना होगा कि कहां, किस को, किस समय मदद की आवश्यकता है और वह उस का प्रबंध करे. यह संभव तभी है जब प्रबंधक या मालिक कार्य के दौरान श्रमिक को मशीन पर काम करते देखे और समयसमय पर अपने कार्यक्षेत्र का चक्कर लगाए.

मातहत से संपर्क बनाए रखें

अकसर यह होता है कि मालिक व प्रबंधक और कर्मचारियों का आपसी अंतर इतना होता है कि आपस में बातचीत का कोई सिलसिला ही नहीं होता. प्रबंधक अपनी हतक इज्जत समझते हैं कि अपने मातहत लोगों से संपर्क रखें या उन से बातचीत करें. दोनों की अपनीअपनी दुनिया होती है. आपसी बातचीत के अभाव में कुंठाएं पनपती हैं. शिकायतें भयानक रूप ले लेती हैं और जब विस्फोट होता है तो सब की चिंदी उड़ती है. कर्मचारी या श्रमिक अपनी समस्याएं अपने मालिक को बतलाना चाहते हैं. पर जब वह रास्ता बंद मिलता है तो दूसरा तलाशते हैं और वह रास्ता होता है यूनियन का. और फिर मुर्दाबाद के नारे लगते हैं व हड़तालें होती हैं.

शिकायत पर तुरंत ध्यान दें

हर शिकायत आरंभ में छोटी होती है और वह आसानी से निपटाई जा सकती है. पर जब उसे विशाल पेड़ का रूप ले लेने दिया जाता है तो सब कुछ खटाई में पड़ जाता है. अतः आवश्यक है कि प्रबंधक व मालिक अपने कर्मचारियों को इतनी स्वतंत्रता दें कि वे आ कर दो बात तो कर सकें, पर इस का यह भी मतलब नहीं कि वे हर समय सिर पर सवार रहें. इतना ही यथेष्ट है कि वे समझें कि जरूरत पड़ने पर वे मालिक से मिल सकते हैं. वे दिन नहीं रहे जब मालिक अपने श्रमिकों को मात्र वस्तु समझते थे. उन से अब संपर्क रखना होगा पर इस के साथ ही इतना फासला भी कि वे नाजायज लाभ उठाने की हिम्मत न कर सकें. अभी अपने यहां इतनी जागरूकता नहीं आई है कि मालिक की उदारता को गलत न समझा जाए.

कुछ दिन पहले मेरे एक मित्र प्रबंधक ने अपने कर्मचारियों की शिकायत करते हुए कहा कि वह उन की अनुशासनहीनता से परेशान हैं. हाल में मैं ऐसे ही उन के कार्यालय चला गया. लंच होने में आध घंटा था, पर वह अपने स्टाफ के साथ ताश खेलने में व्यस्त थे. इन हालात में वह किस प्रकार अनुशासन रख सकते थे. उन्होंने इस विषय में सीमा का अतिक्रमण कर अपनी नियंत्रण क्षमता खो दी थी. आपसी संपर्क तो रहे पर उन्हें यह न लगे कि गलत बातें सह ली जाएंगी.

समस्या पर उस के निवारण के लिए समुचित निर्णय तुरंत ही लेना चाहिए. कभी ये निर्णय कटु भी होते हैं

ग्रौर उन्हें टालने का प्रयास किया जाता है. पर परिणाम ग्रच्छा नहीं होता. टालने से या ग्रांख बंद करने से वह समस्या हल तो नहीं हो जाती, वरन् वह ग्रौर समस्या पैदा कर देती है. निर्णय टालने के परिणाम हमेशा ही भयानक होते हैं. यदि समय से निर्णय लिया जाए तो बहुत सी ग्रप्रिय घटनाएं रुक सकती हैं. हड़ताल ग्रादि इसी टालू प्रकृति के परिणामस्वरूप होती हैं. समय पर निर्णय लेने से जहां पहले कम से काम चलता ग्रौर संतोष पैदा होता वहां टालने के फलस्वरूप ग्रधिक देना पड़ता है ग्रौर जो ग्रसंतोष होता है वह ग्रलग.

किसी भी संस्थान में समय का बहुत महत्त्व है. यदि समय पर माल बना कर नहीं दिया गया तो ग्रनेक परेशानियां पैदा होती हैं. समय पर माल बने, इस के लिए ग्रावश्यक है कि दूसरे ग्रौर काम भी समय पर हों. पर ग्रकसर ही इस पर ध्यान नहीं दिया जाता. ग्रारंभ में तो समय बरबाद किया जाता है ग्रौर बाद में जब उस के परिणाम भयंकर निकलते हैं तो सिर पकड़ कर बैठ जाते हैं. किसी भी स्तर पर समय की बरबादी सह्य नहीं होनी चाहिए. इस मामले में प्रबंधक को ही पहल करनी होगी. यदि प्रबंधक को समय का ज्ञान होगा, वह स्वयं समय से ग्राएगा, समय से ग्रपना काम करेगा तो मातहतों में भी उस का ग्रसर होता है. मालिक होने के नाते हो सकता है कि ग्राप को समय के बाद शाम को देर तक कार्यालय में बैठना पड़े, पर उचित है कि ग्राप ग्रपने सहयोगियों को व्यर्थ न रोकें. कई जगह मातहत मालिक का मुंह जोहते बैठे रहते हैं. यह समय का भयानक दुरुपयोग है. जिन्हें व्यर्थ बैठना पड़ता है उन में विद्रोह की भावना का उदय होता है.

इन बातों पर ध्यान दे कर ग्रपने कारखाने का, ग्रपने उद्योग का वातावरण संतोषजनक बनाया जा सकता है.
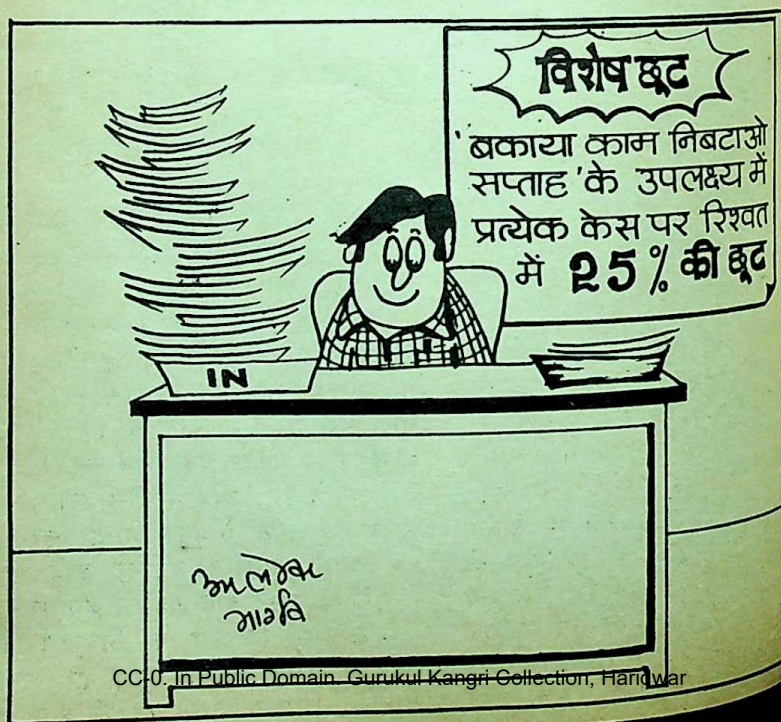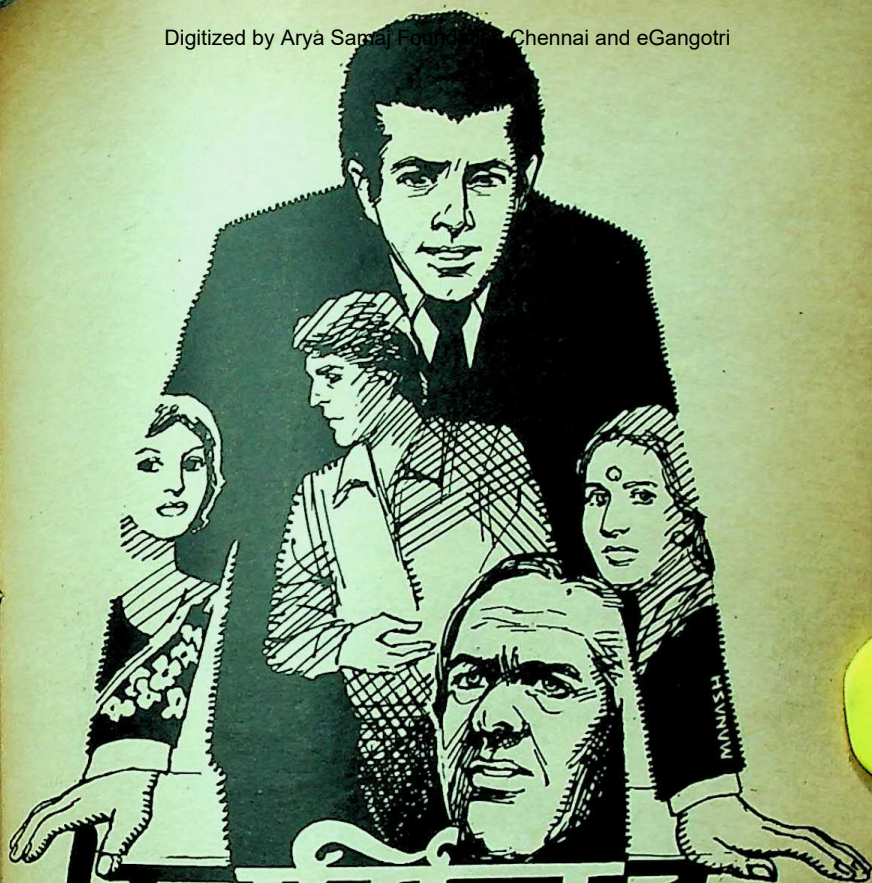
पुनर्मिलन

कहानी • ब. नारायणन

रमेशचंद्र से रमन की मुलाकात विमान में हुई. वहीं आपसी बातचीत के बाद रमन ने उन की फर्म में नौकरी करना भी स्वीकार कर लिया. हालांकि उसे इस नौकरी से न आर्थिक लाभ होना था, न अनुभव संबंधी ही, फिर उस ने रमेशचंद्र का प्रस्ताव किसलिए स्वीकार किया?

रमेशचंद्र बंबई से दिल्ली जाने वाली एयरबस पर खिड़की की ओर वाली सीट पर बैठ गए. बगल वाली सीट पर कौन आएगा, शायद मुफ्त यात्रा करने वाला इंडियन एयरलाइंस का कोई कुली या सफाई करने वाला. देश में और कहीं समाजवाद भले ही लागू न हो, लेकिन हमारी विमान

पुनर्मिलन [illegible] सामाजिक सहन-शीलता का सब से ज्वलंत उदाहरण हैं.

जब वह इस तरह की बातें सोच रहे थे तभी एक नवयुवक उन के पास आया और बोला, "क्या मैं इस सीट पर बैठ सकता हूं?"

"अगर यह आप के नाम है तो मैं कैसे आपत्ति कर सकता हूं? आप को पूछने की जरूरत ही नहीं है?"

"दुर्भाग्य से मुझे पूछना पड़ रहा है क्योंकि आप ने सीट पर ब्रीफकेस रख दिया है."

युवक ने उसे खुद उठा कर सामान के रैक पर रख दिया. रैक को बंद कर के वह सीट पर बैठ गया.

कुछ समय तक कोई नहीं बोला. जब विमान उड़ने लगा और लोगों ने सीटबेल्ट खोल दी तो रमेशचंद्र ने सिगरेट की डिब्बी निकाली और युवक को पेश की.

युवक ने एक सिगरेट ली और रमेशचंद्र की सिगरेट जलाने के बाद अपनी सिगरेट जलाई और आराम से बैठ गया. रमेशचंद्र की इच्छा बातचीत करने की हुई. उन्होंने युवक को अपना परिचय दिया, "मैं रमेश इंडस्ट्रियल पंप्स मेन्युफैक्चरिंग कंपनी का मालिक रमेशचंद्र हूं."

युवक ने जवाब दिया, "मैं रमन हूं और बंबई की एक सलाहकार फर्म में हिस्सेदार हूं. मैं ने मैकेनिकल इंजीनियरिंग में एम. बी. ए. की डिगरी ली है. कार्यालय के कुछ लोग दिल्ली में काम कर रहे हैं और मैं उस रिपोर्ट को अंतिम रूप देने जा रहा हूं."

"बहुत बढ़िया. हम अपना समय अच्छी तरह बिता सकते हैं. मैं आप से बहुत सी बातों पर विचारविमर्श करना चाहूंगा."

रमन ने मुसकरा कर कहा, "यह आप को भारी पड़ेगा क्योंकि मेरी कंपनी सब से [illegible] कहानियों में से एक है."

और रमेशचंद्र ने भी उसी रौ में जवाब दिया, "सलाह उचित होने पर यह बंदा भी अच्छे पैसे दे सकता है."

रमन ने जवाब दिया, "हां, तो फिर कहिए."

"**मैं** ने दिल्ली में एक कार्यालय स्थापित किया है, जिस के जरिए उत्तर में मैं अपने उत्पादों को बाजार में लाना चाहता हूं. उत्तर में मेरी मोटरें और पंपों की बहुत मांग है और मैं ने आर्डर बुक करने के लिए सेल्स इंजीनियरों की नियुक्ति की है. मैं बंबई से फैक्टरी में बैठेबैठे आर्डर पर माल भेजता हूं.

"मेरा बेटा जगदीश, जो बहुत ही योग्य है, फैक्टरी में इंडस्ट्रियल इंजीनियर के रूप में काम करता था. उस ने फैक्टरी के संचालन में मेरी खामियों को ढूंढ़ना शुरू किया और कहने लगा कि मैं उत्पादन को बढ़ाने के लिए कुछ नहीं कर रहा हूं, हालांकि इसी फैक्टरी से अपेक्षाकृत कम लागत पर उत्पादन लिया जा सकता है.

"मैं उस से सहमत था लेकिन मैं ने कहा कि उत्पादन उतना ही होना चाहिए जितनी मांग हो, मांग से ज्यादा सामान बनाने से पूंजी का प्रयोग सीमित हो जाता है.

"उस ने मेरी बात में दम देखा और कहा कि दिल्ली में हम एक कार्यालय खोलें जहां से माल की तुरंत सप्लाई की जा सके. उस ने बिक्री के काम में लगे लोगों में बढ़ोतरी का भी सुझाव दिया.

"मैं राजी हो गया. उस ने दिल्ली जा कर काम शुरू कर दिया. आर्डर आने लगे. मैं ने मांग को देखते हुए उत्पादन को बढ़ा दिया.

"लेकिन कुछ महीनों बाद आर्डर आने कम हो गए और उस के बाद तो बिलकुल ही बंद हो गए.

"मेरे बेटे ने मुझे पत्र लिखा कि बिक्री

बढ़ाने के लिए उस ने बहुत अधिक माल उधार देना शुरू कर दिया था, वसूली रुक गई है, इसलिए आर्डर बुक नहीं किए जा सकते. लेकिन इस का नतीजा यह हुआ कि उस में मुझे अपना चेहरा दिखाने की हिम्मत नहीं रही. उस ने फर्म अपने सहायक के हवाले कर दी और उसे चलाने के लिए मुझे कोई प्रबंध करने को कहा. चूंकि वह पैसे के बिना नहीं रह सकता, इसलिए उस ने बैंक में जो कुछ था उसे निकाल लिया और लिखा कि एक दिन वह मय ब्याज के सब चुका देगा."

रमन सुन रहा था. उस ने रमेशचंद्र से पूछा, "रमेशजी, क्या आप का बेटा आप से डरता है? विदेश में पढ़े युवक में आप का सामना करने और संयुक्त रूप से काम करने का साहस होना चाहिए. क्या बचपन में आप उस के साथ बहुत कड़ाई से पेश आते थे?"

"शायद," रमेशचंद्र ने जवाब दिया, "मैं अपने बच्चों के साथ हमेशा कड़ाई बरतता हूं."

"फिर इस बात की संभावना नहीं कि आप का बेटा स्वयं आप के पास आए. आप का अहं, अनुशासन की भावना आप को उसे ढूंढ़ने से रोकेगी. अब आप मुझ से क्या चाहते हैं?"

रमेशचंद्र ने जवाब दिया, "क्या आप दिल्ली के कार्यालय का प्रबंध अपने हाथ में ले कर उसे ठीक कर सकते हैं?"

"मेरे विचार में मैं ऐसा कर सकता हूं. हम प्रबंध कार्य में सलाह देने वाले लोग यही काम करते हैं, लेकिन मैं बहुत दिनों तक यह काम नहीं कर सकता. मैं समझता हूं कि वसूली की स्थिति को काबू में लाने, बराबर पैसा आने, सारे माल को खपाने तथा उत्पादन को और बढ़ाने आदि में दो वर्ष का समय लगेगा."

रमन की कुशाग्रता को देख कर रमेशचंद्र ने कहा, "रमन साहब, मैं समझता हूं कि आप की फर्म दो वर्ष से अधिक पुरानी है और अब वह अपने

बातों ही बातों में रमेशचंद्र ने रमन से पूछा, "क्या आप हमारे दिल्ली के कार्यालय का प्रबंध अपने हाथ में ले कर उसे ठीक कर सकते हैं?"

पुर्नमिलन आप चलने में समर्थ होगी. आप मेरे दिल्ली वाले कार्यालय का प्रबंध दो वर्ष के लिए संभाल लीजिए. मैं आप को अपने ढंग से काम करने के लिए पूरा पैसा दूंगा. अगर आप ने मेरा दिल्ली का कारोबार ठीक कर दिया तो मैं आप को लाभ में अच्छा हिस्सा दूंगा. आप कितना पैसा लेंगे? हमारे पास आप के इस्तेमाल के लिए फ्लैट और कार भी है."

रमन चुनौतियां पसंद करता था. वह विनम्र दिखता था. उस ने महसूस किया कि रमेशचंद्र के साथ उस का सहयोग लाभकारी रहेगा. उस के दिमाग में और भी विचार आए और उस ने कहा, "रमेशजी, आप ने मुझे मेरे ही जाल में पकड़ लिया है. इसलिए मैं आप से इनकार नहीं कर सकता और अपने और अपनी धारणाओं के प्रति मैं न्याय करना चाहता हूं. मैं आप का काम संभालूंगा, लेकिन दो साल के बाद आप को मुझे इस भार से मुक्त कर देना होगा."

तब तक मैं अपने उत्तराधिकारी का चुनाव कर के उस को प्रशिक्षित कर चुका होऊंगा. मेरे काम में किसी प्रकार का दखल नहीं दिया जाना चाहिए. जो भी समय हम ने साथ बिताया, उस में अगर आप को मेरे ऊपर विश्वास हो गया हो तो कृपया बतलाइए कि आप इस काम के लिए कितना देंगे?"

रमेशचंद्र ने काफी अच्छा प्रस्ताव रखा, जिसे रमन ने स्वीकार कर लिया और दोनों ने हाथ मिलाए. फैक्टरी, परिवार और अन्य चीजों के बारे में उन की बातचीत जारी रही.

रमन ने रमेशचंद्र से पूछा, "क्या आप यह समझ रहे हैं कि आप ने अभी 10 हजार रुपए बचा लिए हैं?"

जब रमेशचंद्र ने उस की ओर देखा तो उस ने कहा, "अपनी फर्म के लिए एम. बी. ए. इंजीनियर का चुनाव करने के लिए आप को अखबारों में विज्ञापन देना पड़ता, एक दरजन लोगों को साक्षात्कार के लिए बुलाना पड़ता, प्रथम श्रेणी का किराया देना पड़ता और तब किसी एक को चुनते. अब आप ने यह सब खर्चा बचा लिया है."

रमेशचंद्र ने कहा, "अंतिम हिसाब करते समय मैं यह सब याद रखूंगा."

"खैर, पहले देखें कि हम कैसा काम कर पाते हैं," रमन ने जवाब दिया.

पालम हवाई अड्डे पर विमान उतरा. दोनों पांच सितारा होटल में गए, जहां उन्होंने पहले से कमरे बुक करवा रखे थे. यह भी महज संयोग की बात थी कि दोनों के कमरे अगलबगल में थे.

रमन जिस काम से दिल्ली आया था उसे उस ने पूरा कर लिया. इस बीच रमेशचंद्र ने पावर आफ एटार्नी और अन्य कागजात तैयार करा लिए. कुछ दिनों बाद रमन ने महाप्रबंधक के रूप में काम संभाल लिया.

पहले ही दिन कार्यालय में रमन ने बकाया राशि की जानकारी प्राप्त की.

सरकारी क्षेत्र के एक प्रतिष्ठान पर काफी भारी रकम बकाया थी. वह वहां गया और विभागाध्यक्ष से मिला और भुगतान में विलंब के बारे में पूछताछ की.

उसे बताया गया कि सप्लाई किए गए एक पंप के कारण कई अन्य मशीनें भी खराब हो गईं. यह बात जगदीश की जानकारी में लाई गई, जिस ने जांच के लिए एक सेल्स इंजीनियर को भी भेजा.

इंजीनियर ने रिपोर्ट दी कि ठीक से काम में न लाए जाने के कारण ही ऐसा हुआ जिस के लिए कंपनी जिम्मेदार नहीं है.

जगदीश और महाप्रबंधक के बीच कहासुनी हुई जो न केवल पंप बदलने बल्कि उस से हुए नुकसान का मुआवजा

पुनर्मिलन देने की भी बात कह रहा था. दोनों ने कठोर रुख अपना लिया. इसी लिए भुगतान रुक गया.

रमन महाप्रबंधक धर्मपाल के पास गया तथा रमेश एजेंसीज के नए महाप्रबंधक के रूप में अपना परिचय दिया.

महाप्रबंधक ने जगदीश के बारे में कुछ बातें कहीं और बताया कि जब तक मामला सुलझ नहीं जाता तब तक भुगतान नहीं होगा.

रमन ने कहा, "धर्मपालजी, इस समय बाजी आप के हाथ में है क्योंकि आप के पास कुछ लाख रुपए रुके हुए हैं और मैं मुकदमा भी नहीं लड़ सकता क्योंकि आप सरकारी पैसे से लड़ेंगे जब कि मुझे अपने पैसे से लड़ना पड़ेगा. इसलिए

उपयोग न करने तथा तरहतरह की अन्य परेशानियों से बचना चाहते थे.

बकाया राशि के भुगतान के बाद उस प्रतिष्ठान के लिए नए आर्डर बुक करने के दरवाजे खुल गए.

इस के बाद सब से बड़ी राशि कानपुर के एक विक्रेता के पास बकाया थी.

रमन को पता चला कि वह बहुत अच्छा विक्रेता था तथा जगदीश ने उसे बिक्री बढ़ाने के लिए सामान से लाद दिया था. रमन ने कानपुर जा कर पूरी जांच की. अपनी सलाहकार सेना के कारण उस के संपर्क कानपुर में भी थे. उसे बताया गया कि उस के विक्रेता को शेयर बाजार में काफी नुकसान हुआ है. यह बात बाहर के लोगों को पता नहीं

रमेशचंद्र की कंपनी का काम संभालते ही रमन ने कंपनी की स्थिति का जायजा लिया और पूरी स्थिति समझते ही उस ने जो कठोर निर्णय ले कर उन कर अमल करना शुरू किया तो देखते ही देखते कंपनी की दशा बदल डाली...

कृपया कल तक चैक तैयार करा दीजिए. पंप कल बदल दिया जाएगा और दोपहर तक आप के यहां काम करने लगेगा. जहां तक नुकसान हुए पुरजों का सवाल है, उन की जगह नए पुरजे अपने स्टोर से दे दीजिए, मेरे आदमी आप के इंजीनियरों की सहायता से उसे लगा देंगे."

"आप ठीक कहते हैं. यह किया जा सकता है."

महाप्रबंधक ने मुख्य लेखाधिकारी को बुलाया और रमेश एजेंसीज की सभी बकाया राशि का चैक बना कर तैयार रखने को कहा.

श्री धर्मपाल रमन की बात से इसलिए सहमत हो गए कि वह बजट वर्ष की समाप्ति तक इतना अधिक बकाया रोके रखने तथा बजट प्रावधानों का

थी और उसे अभी भी शहर का सब से बड़ा व्यापारी माना जाता था. यह जान कर वह एक वकील के पास गया. उस से कानूनी सलाह ली.

रमन उस दुकानदार के पास भी गया. उसे अपना परिचय दिया, आर्डरों में कमी का कारण पूछा तथा बकाया राशि का कम से कम भुगतान करने को कहा.

दुकानदार ने कुछ कारण बताए और अगली डाक में चैक भेजने का वादा किया. "आप की रकम वैसी ही सुरक्षित है जैसी कि बैंक में, मैं कुछ अस्थायी कठिनाइयों के कारण भुगतान नहीं कर सका."

रमन बोला, "भाई साहब, मैं ने ऐसा कई लोगों से पहले भी सुना है. मैं

इस व्यापार में बहुत दिनों से हूं. मैं अपना पैसा अभी और इसी वक्त चाहता हूं."

दुकानदार नाराज हो कर बोला, "तुम मुझे धमकी दे रहे हो? मैं ने तुम्हारे जैसे बहुत देखे हैं. जाओ गंगा में डूब मरो. तुम धमकी दे कर मुझ से एक पैसा भी नहीं पा सकते."

रमन सीधे वकील के पास गया और मामला उस के सुपुर्द कर दिया. उस के बाद अदालत में जा कर मुकदमा दायर कर आया.

कुछ ही समय बाद वकील को संपत्ति की कुर्की का आदेश मिल गया.

वकील को अदालत को यह समझाने में काफी मेहनत करनी पड़ी कि दुकानदार का इरादा ठीक नहीं है.

जब दुकानदार ने रमन, वकील और न्यायालय के आदेश को देखा तो घबरा गया. उसे इतनी जल्दी काररवाई की आशा नहीं थी. इसी लिए रमन की धमकी को महत्त्व नहीं दिया था. अब वह स्थिति की जटिलता को समझ गया. अगर उस के सभी ऋणदाताओं को पता चल गया तो वह तबाह हो जाएगा.

इसलिए उस ने अपने लाकर से सारे गहने निकाल कर बैंक में गिरवी रखे तथा रमेश एजेंसीज की बकाया राशि का पचास प्रतिशत तुरंत रमन को दिया और कहा कि वह इस का प्रचार न करे तथा शेष राशि वह स्थिति सुधरने पर शीघ्र ही दे देगा.

रमन ने उस से हाथ मिला कर कहा, "भाई साहब, मैं अभी भी आप से व्यापार और पुराने संबंधों को बनाए रखना चाहता हूं."

उस के बाद उस ने शेयर मार्केट के बारे में उसे कुछ सूचनाएं दीं और यह लिखवा कर ले लिया कि एक महीने में बकाया राशि का भुगतान हो जाएगा.

इस बीच उस ने कानपुर में अलग से आर्डर बुक करने के लिए एक सेल्स इंजीनियर की नियुक्ति कर दी.

अन्य स्थानों पर भी इसी तरह साम, दाम, दंड की नीति अपना कर उस ने सब कुछ नियमित कर दिया और आर्डर के साथ भुगतान के लिए भी सेल्स इंजीनियर को जवाबदेह बना दिया.

रमन में यही खूबी थी कि वह झूठी धमकी नहीं देता था. अगर वह धमकी देता था तो उसे हर कीमत पर पूरी भी करता था. इस प्रकार उस का अपना सम्मानजनक स्थान बन गया.

कानपुर के दुकानदार को शेयर बाजार में लाभ हुआ और उस ने तुरंत बकाया भुगतान कर दिया तथा रमन को धन्यवाद भी दिया.

उस के बाद उस ने सेल्स इंजीनियर के साथ जम कर अभियान चलाया, जिस से बहुत प्रतिष्ठा वाले आर्डर मिले और रमन की प्रतिष्ठा भी खूब बढ़ी.

जब रमेशचंद्र दिल्ली आए तो उन्होंने बाजार के बारे में उस से विचारविमर्श किया.

रमन ने कहा, "हमें अपने उत्पादन की साख बनानी होगी. हमें अपने उत्पादन के अतिरिक्त गुणों और प्रयोग के के कामों के बारे में प्रचार में जोर देना होगा, चाहे वे उस में हों या न हों."

"हम यह कैसे कह सकते हैं? क्या यह झूठा प्रचार नहीं होगा?"

"बाजार में पहुंचने के लिए कोई भी बात गलत नहीं है. बात सुझाव के रूप में कही जाएगी जो कानूनी रूप से बाध्य नहीं होगी.

"मेरा एक मित्र बाल काले करने की सामग्री बेचता था. जब वह एक दुकानदार के पास खिजाब ले कर पहुंचा तो दुकानदार बोला कि एक दूसरी कंपनी यही चीज कम दामों में दे रही है. मेरे मित्र ने अपनी कंपनी के माल की बढ़चढ़ कर तारीफ की और कहा कि ग्राहक को थोड़ा ज्यादा पैसा तो जरूर देना पड़ता

है, लेकिन बढ़िया [illegible] होने के कारण [illegible] उस की आसानी से भरपाई हो जाती है.

"दुकानदार ने आर्डर दे दिया और जब मेरे मित्र ने अपनी कंपनी को माल भेजने के लिए फोन किया तो कंपनी ने कहा कि उस के पास तुरंत भेजने के लिए माल नहीं है. उस ने कंपनी वालों से कहा कि वे दूसरी कंपनी का माल खरीद कर उसे ही अपने पैकिंग में बंद कर के भेज दें."

रमेशचंद्र की अनुमति से रमन ने अन्य उत्पादनों के लिए विक्रेताओं की नियुक्ति की. सेल्स विभाग के कर्मचारियों की संख्या बढ़ाई तथा सारा काम ठीक ढंग से चलने लगा. बिक्री और भुगतान साथसाथ चलने लगा. अब पैसा काफी आने लगा था और साल के अंत में उस ने रमेशचंद्र को वह पैसा लौटा दिया जो उन्होंने शुरू में उसे दिया था. फैक्टरी में बिक्री के हिसाब से उत्पादन बनाए रखा गया तथा फैक्टरी का नफा भी बढ़ गया.

रमेशचंद्र इस स्थिति से बहुत प्रसन्न थे और उन्होंने अपनी पत्नी से खूब प्रशंसा की. लेकिन वह उदास थी.

"तुम्हें क्या चीज खल रही है?" उन्होंने पूछा.

"आप से यह प्रशंसा मेरे बेटे को मिलनी चाहिए थी. वह आप से डरता है इसलिए मुझे पता नहीं कि वह आज भी [illegible] है या मर गया है.

"आप ने उस की खोजखबर तक नहीं ली. आप के लिए आप का अहं महत्वपूर्ण है लेकिन मेरे लिए अपनी कोख से जनमे पहले बच्चे के प्रति प्यार और देख-भाल."

रमेशचंद्र यह कह कर वहां से चले आए, "अब तुम उस के बारे में मुझ से कभी कोई बात मत करना. अगर वह मुझे बाप के रूप में महत्त्व देता तो सीधे मेरे पास आ कर अपनी गलती के लिए माफी मांगता, चोरों की तरह भाग नहीं जाता."

ऐसे पति के साथ वह आंसू बहाने के अलावा और कुछ नहीं कर सकती थी.
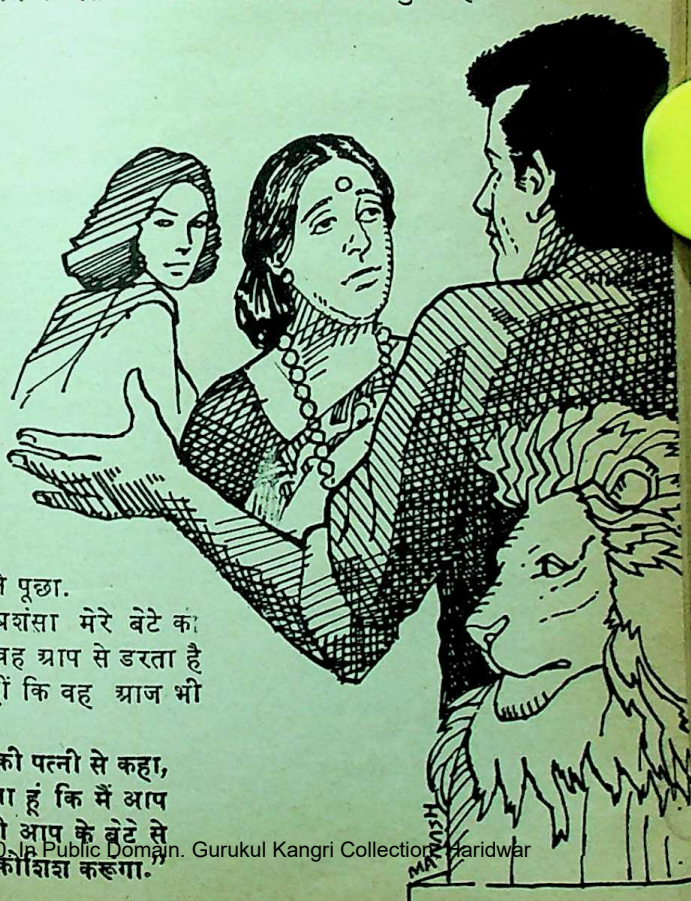
रमन ने रमेशचंद्र की पत्नी से कहा, "मां, मैं वचन देता हूं कि मैं आप को जल्दी से जल्दी आप के बेटे से मिलवाने की पूरी कोशिश करूंगा."

उस की बेटी शोभा ने उसे सांत्वना देने की कोशिश की.

समय बीतने के साथ रमेशचंद्र और रमन के संबंधों में प्रगाढ़ता आती गई.

रमेशचंद्र ने रमन से साफसाफ कह दिया था कि उस के घर में वह परिवार के एक सदस्य के रूप में रहे और बंबई अकसर आता रहे.

पहली बार रमन जब रमेशचंद्र के घर में रहा तो उसे कुछ झिझक, अटपटापन महसूस हुआ. लेकिन रमेशचंद्र की पत्नी व बेटी शोभा ने उस की खातिरदारी कुछ इस तरह की कि बाद में जब भी वह आता तो उसे घर जैसा ही लगता.

कुछ बार आने के बाद वह कमोबेश घर का ही सदस्य बन गया और रमेशचंद्र की पत्नी ने उसे 'बेटा' तथा शोभा ने 'भाई साहब' कहना शुरू कर दिया.

ऐसे ही एक मौके पर रमेशचंद्र की पत्नी ने रमन को बताया कि उसे अपने बेटे जगदीश की जुदाई का कितना गम है. उस ने जगदीश के चरित्र, साफगोई तथा कर्मचारियों के प्रति रवैये की तारीफ उसी तरह की जिस तरह एक ममतामयी मां कर सकती है.

आखिर में उस ने कहा, "बेटा रमन, क्या तुम जानते हो कि उस के पिता से मैं कितनी लड़ी तथा रोते हुए जगदीश को माफ करने और मेरे इकलौते बेटे को वापस लाने को कहा?

"लेकिन वह एक ही उत्तर देते हैं कि जगदीश स्वयं आ कर माफी मांगे. तब तक वह उस के लिए कुछ भी करने में असमर्थ हैं. पिता के घमंड और पिता से बेटे के मन में बेकार के भय के कारण मुझ से मेरा बेटा छिन गया."

यह कह कर वह रोने लगीं. शोभा ने मां को सांत्वना दी और रमन से बोली, "भाई साहब, पिताजी माफ की बहुत मानते हैं. आप ही उन्हें समझाइए न."

रमन ने रमेशचंद्र की पत्नी और शोभा को यह सांत्वना दी, "मां, फिक्र मत कीजिए. हर चीज का एक समय और स्थान होता है. अपने पति पर विश्वास रखिए. मैं जानता हूं कि उन के मन में अपने बेटे के प्रति प्यार है और एक दिन वह मान जाएंगे."

"हां, बेटा, वह दिन आने तक क्या मैं जिंदा रहूंगी? यह दुख मुझे कैंसर की तरह खाए जा रहा है. और कितने दिनों तक मैं यह यंत्रणा भोग सकती हूं?"

"मां, मैं वचन देता हूं कि मैं आप को जल्दी से जल्दी आप के बेटे से मिलवाने की पूरी कोशिश करूंगा. इस के बदले में आप मुझे वचन दीजिए कि आप हमेशा दुख में डूबी नहीं रहेंगी."

वह मुसकराईं और शोभा ने कहा, "मां, क्या आप ने पिताजी को यह कहते नहीं सुना है कि रमन तब तक कोई वचन या धमकी नहीं देता जब तक यह न जानता हो कि वह उसे पूरा कर पाएगा? इसलिए धीरज रखिए और खुश रहिए."

रमन को बहुत दुख हुआ और उस ने रमेशचंद्र का हृदय परिवर्तन करने के लिए कई योजनाओं पर विचार किया. लेकिन कोई उसे पसंद नहीं आई, क्योंकि वह जानता था कि रमेशचंद्र अपने सिद्धांतों से डिगेंगे नहीं. शुरू में उन के बेटे ने अपनी भूल सुधार ली होती तो आसान था. लेकिन समय के अंतराल के साथ उस की काल्पनिक और वास्तविक शिकायतें बहुत बढ़ गई होंगी और माफी देने में उन का घमंड आड़े आएगा.

खैर, रमन ने पहले जगदीश का पता लगाने और फिर उस के रवैये की जानकारी प्राप्त कर समझौता कराने के बारे में सोचने का फैसला किया.

उस ने कार्यालय के हर आदमी से

पूछा कि क्या किसी को जगदीश के बारे में कुछ पता है. सब ने अनभिज्ञता प्रकट की. यह बता कर कि उस का संपर्क जगदीश से है, कोई भी अपने मालिक के कोप का भाजन नहीं बनना चाहता था.

रमन को लगा कि प्रतिष्ठान के एक सब से पुराने कर्मचारी को शायद पता हो और वह उस से अकसर कहता कि उस के पास जगदीश के लिए उस की मां का संदेश है.

लगभग एक सप्ताह बाद रमन ने एक नौजवान को कार्यालय में आते देखा. उस के कार्यालय में घुसते ही सभी कर्मचारियों ने खड़े हो कर उस का अभिवादन किया.

रमेशचंद्र के घर में जो तसवीरें उस ने देखी थीं, उन से उस ने अंदाजा लगाया कि वह आदमी जगदीश ही है.

वह नौजवान सीधे रमन के कमरे में आया. रमन ने खड़े हो कर उस से हाथ मिलाते हुए कहा, "कैसे हो, जगदीश?"

जगदीश ने उस से झिझकते हुए हाथ मिलाया और बैठ गया. रमन खुशी से भर गया और उस के स्वास्थ्य, रहने के स्थान, काम आदि के बारे में पूछताछ की.

लेकिन जगदीश का व्यवहार उस के व्यवहार के सर्वथा विपरीत रहा.

"रमन साहब," उस ने कहा, "मैं आप के पास भाईचारा कायम करने नहीं आया हूं. मैं यहां सिर्फ इसलिए आया हूं कि आप के पास मेरे लिए मेरी मां का संदेश है और मैं वही जानना चाहता हूं."

रमन उस से इस तरह के व्यवहार की अपेक्षा नहीं करता था. पहले उसे भय था कि विरोध केवल पिता की ओर से है. लेकिन बेटा भी समान रूप से हठी था.

थोड़ी देर के लिए उस ने सोचा कि वह भी जगदीश के साथ वैसा ही व्यवहार करे लेकिन कारोबार का विशेषज्ञ होने के नाते उस ने ऐसा नहीं किया.

कारोबार में उस के लिए बड़ेबड़े
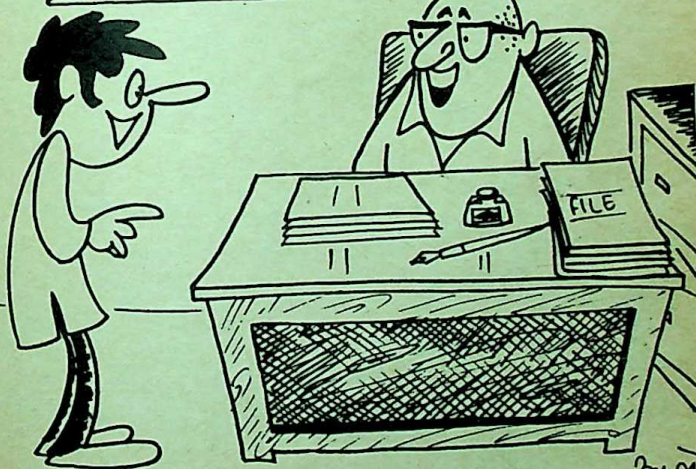
"और इन फाइलों के लिए लाल फीते देना न भूलना."

अधिकारी समस्या नहीं होते थे, बल्कि वे बिचौलिए होते थे, जिन से उस आर्डर और भुगतान के लिए संपर्क करना पड़ता था. कभी खानेपीने पर बुला कर उन के रवैये को नरम बनाने का प्रयास होता था. उस समय व्यापार की बात बिलकुल नहीं करता था. उस ने वही नीति फिर अपनाने की कोशिश की.

उस ने चपरासी को बुला कर दो कप चाय लाने के लिए कहा और फिर जगदीश से अनुमति ली कि वह व्यापार के संबंध में एक फोन करना चाहता है. यह सब जगदीश को ठंडा करने की चाल थी.

चाय पीते समय रमन ने कहा, "जगदीश, तुम्हारी बहन शोभा बहुत अच्छी है, अगर वह सांत्वना न देती तो तुम्हारी मां तुम्हारे दुख में पागल हो गई होती."

यह सुन कर जगदीश को अपने घर की वास्तविक स्थिति का एहसास हो गया और उस का रवैया अचानक बदल गया.

जब उस ने सुना कि उस की मां इतनी दुखी है तो उस की आंखें भर आईं और उस ने पूछा, "रमन साहब, आप हमारी मां और बहन को कैसे जानते हैं? मैं सोचता था कि आप केवल इस कार्यालय के प्रबंधक हैं, घर के नहीं."

"जगदीश, यह मेरा सौभाग्य है कि तुम्हारे पिता ने मुझे आदेश दिया है कि जब भी मैं बंबई आऊं तो उन के घर पर ही ठहरूं. उन के प्यार ने मुझे परिवार का एक सदस्य बना दिया है. तुम्हारी मां मुझे 'बेटा' और बहन 'भाई साहब' कहती है, इसलिए हम दोनों भाई हैं अन्यथा क्या तुम्हारी मां मुझ पर इतना विश्वास करती? इसलिए औपचारिकता छोड़ो और मुझे केवल रमन कहो."

"रमन, मुझे यह सुन कर बहुत दुख हुआ कि दुख के कारण मेरी मां इतनी विनम्र हो गई हैं कि उसे बाहरी व्यक्ति से विश्वास करना पड़ा. वह अपने कर्मचारियों से एक या दो शब्द से ज्यादा नहीं बोलती थीं. इसलिए तुम्हें इस बात पर गर्व होना चाहिए कि वह तुम पर विश्वास करती हैं."

"**मुझे** इस बात का बहुत गर्व है, जगदीश, और अगर तुम्हारा सहयोग मिला तो इस परिवार के लोगों को मिलाने में मैं सहायक हो सकता हूं. मैं उस समय सब से खुश आदमी होऊंगा और तुम्हारे पिता के साथ दो साल के अनुभव को अपने जीवन का सब से महत्वपूर्ण हिस्सा मानूंगा."

"रमन, तुम बड़े विचित्र व्यक्ति लगते हो, मैं ने सुना है कि प्रबंध में तुम्हारे सहयोगी बड़े आक्रामक और स्वार्थी हैं तथा परिस्थितियों को समझेबूझे बिना तुम्हारे दिए हुए काम को करते हैं. बताओ, तुम मेरे परिवार के झगड़े में कैसे और क्यों पड़े?"

"प्रबंधकों के बारे में तुम्हारे जो विचार हैं, उस से मुझे विश्वास है कि तुम यह मानने के लिए तैयार नहीं होगे कि यहां की नौकरी से अधिक पैसा मुझे अपनी सलाहकार सेवा में नहीं मिलता था. जब तुम्हारे पिता ने सारी कहानी सुनाई और तुम्हारा पत्र भी दिखाया तो यह मेरे दिल को छू गया. यहां एक ऐसा परिवार है जिस में बाप कठोर और न झुकने वाला तथा बेटा अपने पिता से डरता है. पिता और पुत्र के रवैये से समझौता कठिन हो रहा है. अगर मैं पिता को विनम्र तथा पुत्र के मनोबल को बढ़ा कर दोनों में मेल करा सकूं तो मेरे लिए बहुत बड़ी बात होगी. यह सोच कर मैं ने तुम्हारे पिता का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया. मेरी सफलता तुम्हारे सहयोग पर निर्भर करती है."

"रमन, मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि तुम पर विश्वास करूं या नहीं. लेकिन जब मेरी मां ने, जो एक बहुत ही

व्यावहारिक महिला है, तुम पर इतना विश्वास किया है तो मेरे पास तुम्हारी बात मानने के अलावा और कोई चारा नहीं है. बताओ, मुझे करना क्या है?"

"सब से पहले तो तुम जो कुछ भी कर रहे हो, जहां भी रह रहे हो वह सब छोड़ कर अपनी फर्म को संभालो और अपने घर में रहो."

"रमन, क्या तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि अब मैं उस काम में सफल हो सकता हूं जिस में पहले बुरी तरह असफल हो गया था. और फिर तुम्हारा क्या होगा?"

"मेरे केवल छः महीने बचे हैं. इस बीच हम दोनों मिल कर काम करेंगे और मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि जब मैं छोड़ूंगा तब तुम मुझ से भी ज्यादा अच्छी तरह इसे संभाल लोगे. तुम औद्योगिक इंजीनियर हो और कर्मचारियों तथा उत्पादन के बारे में तुम्हें अच्छी जानकारी है. मार्केटिंग के लिए उत्पादन से बिलकुल अलग मानसिकता की जरूरत होती है. फैक्टरी में तुम्हारी चलती है तो मार्केटिंग में ग्राहक की. इसलिए तुम्हें अपने दृष्टिकोण को उस के अनुकूल बनाना होगा. जब तुम्हें झुकना हो, तो झुको. लेकिन जब तुम्हें अपनी बात रखनी हो तो वह रखो, लेकिन उस से ग्राहक को दुख नहीं होना चाहिए. जब तुम्हें प्रतिस्पर्धा के लिए झूठ बोलना हो तो बिना झिझके वह भी बोलो. यह सब तुम धीरेधीरे सीख जाओगे और कोई भी ऐसी चीज नहीं है जो तुम दिमाग लगाओ तो न कर सको."

"ठीक है, रमन, अपना भाषण भविष्य के लिए सुरक्षित रखो. क्या मेरे पिताजी इस से सहमत होंगे?"

"अगर समय और दृष्टिकोण उचित है तो किसी भी व्यक्ति को समझाया जा सकता है और अगर हम असफल होते हैं तो आखिरी चाल के रूप में हमारे पास तुम्हारी मां हैं ही. लेकिन उन का प्रयोग हम सब से हार जाने के बाद करेंगे."

"लगता है, तुम ने सब कुछ सोच लिया है, अच्छा मालिक, मैं कब नौकरी पर आऊं और मेरी तनख्वाह क्या होगी?"

"जगदीश, मालिक तो तुम होगे क्योंकि कानूनी रूप से मालिक तुम्हीं हो. रही तनख्वाह की बात, तो समय से पहले हमारी योजना तुम्हारे पिताजी को कहीं मालूम हो गई तो? इसलिए अपने काम को उचित ठहराने के लिए मैं पहले तुम्हें छः महीने परख पर रखूंगा."

अपनी फर्म छोड़ने के बाद जगदीश ने कई नौकरियां कीं और छोड़ीं, लेकिन वह कहीं टिक नहीं सका, क्योंकि उसे अफसरों की कुछ बातें पसंद नहीं आती थीं. खासकर यूनियन के नेताओं से मिल कर मजदूरों को उन के उचित हक से महरूम करना.

वह मजदूरों के प्रतिनिधियों द्वारा

इंतजार

और कुछ पल उस का
रास्ता देख लूं,
आसमां पर एक
तारा और है.
—परबीन शाकिर

अपनाई गई तोड़फोड़ की नीति, यूनियनों की आपसी रंजिश को भी पसंद नहीं करता था जिस से महीनों का नुकसान और धन का अपव्यय होता था.

इन गतिविधियों को देख कर उसे अपने पिता की साफगोई तथा मजदूरों के मन में उन के प्रति जो सम्मान था वह याद आता था. पिता के बारे में उस के विचार बहुत ऊंचे हो गए थे. उस ने रमन के प्रस्ताव को परिवार के साथ समझौते के रूप में स्वीकार किया. उस में अभी भी सीधे अपने पिता के पास जाने की हिम्मत नहीं थी. इसलिए उस ने रमन की मदद का स्वागत किया.

जगदीश ने फर्म में नौकरी कर ली. रमन के सेल्स इंजिनियरों की एक बैठक बुलाई और उस में काफी विचारविमर्श हुआ. सभी बातों पर विचार किया गया और निर्देश भी जारी किए गए.

जहां कहीं भी गड़बड़ होती, रमन और जगदीश साथ जा कर मामले निबटाते, गलतफहमियों को दूर करते. जगदीश रमन को काम करते हुए बहुत ध्यान से देखता तथा उस की हर बात नोट करता रहता. धीरेधीरे रमन ने अपना सारा काम जगदीश के हवाले कर दिया और वह जगदीश में पैदा होते आत्मविश्वास को देखता रहा.

होने वाले परिवर्तन से जगदीश भी अपरिचित नहीं था. अब उसे भी अपनी मूर्खता का एहसास हो गया कि वह अपने पिता से दूर क्यों भागा.

एक दिन उस ने रमन से कहा, "मैं पिताजी से अभी मिल कर क्यों न माफी मांग लूं जिस से मैं जीवन का दुखद अध्याय भूल जाऊं? मैं महसूस करता हूं कि मैं ने परिवार के प्रति गलती की है और उसे सुधारना चाहता हूं."

"जगदीश, मुझे बहुत खुशी है कि तुम इस निर्णय पर स्वयं पहुंचे हो. इस से तुम्हारी परिपक्वता झलकती है. तुम्हारे पिताजी यहां किसी न किसी दिन आएंगे और तुम्हारे उन से मिलने से पहले ही मुझे उन को सारी बात बता देनी होगी. मेरे विचार में हमें यह मान कर नहीं चलना चाहिए कि जैसा हम चाहते हैं वैसा ही होगा. मान लो कि वह कोई ऐसी बात कहते हैं जिस से तुम्हारे मन को चोट पहुंचती है और तुम कोई ऐसी-वैसी बात कह बैठो. तब तुम अगर अपने परिवार से मिल भी जाते हो तो उस से किसी को संतोष नहीं होगा."

जगदीश रमन की सलाह मानने को सहमत हो गया.

एक दिन रमेशचंद्र बिना बताए दिल्ली कार्यालय में आ गए.

जगदीश कार्यालय के काम से बाहर गया हुआ था और रमन ही वहां था. जिस तरह से रमेशचंद्र कार्यालय में आए उस से उसे लगा कि कुछ गड़बड़ है. इसलिए उन का अभिवादन करने और उन की पत्नी और शोभा के हालचाल पूछने के बाद वह उन के बोलने का इंतजार करने लगा.

रमेशचंद्र ने धीरेधीरे कहना शुरू किया लेकिन उन की आवाज में क्रोध था.

"मैं ने तुम से अपने परिवार के मामले में दखल देने के लिए कब कहा था?" रमन के जवाब के लिए कुछ कुछ देर रुकने के बाद उन्होंने पूछा, "तुम ने किस की आज्ञा से जगदीश को नौकरी पर रखा है? तुम ने इस बात को मुझ से छिपाने की जुर्रत कैसे की?"

रमन ने शांतभाव से जवाब दिया, "मेरे विचार में इस समय आप मेरी बात सुनने के मूड में नहीं हैं. लेकिन मैं कह सकता हूं कि जगदीश कर्मचारी नहीं है. वह मेरे साथ मार्केटिंग के मामले में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा है और मैं अपनी जगह पर उसे तैयार कर रहा हूं. मैं ने आप के

विचारों के [illegible] आप के परिवार के मामलों में दखल दिया. मैं समझता हूं कि मैं ने आप का विश्वास खो दिया है और आप चाहेंगे कि बिना एक पल इंतजार किए मैं नौकरी छोड़ दूं. लेकिन इस पर विचार करने से पहले क्या मैं आप से एक सवाल पूछ सकता हूं?"

रमेशचंद्र ने सिर हिलाया और रमन ने अपनी बात जारी रखी, "क्या आप यह मानते हैं कि कोई गलती नहीं कर सकता?"

"रमन, मैं यह नहीं मानता, लेकिन मैं चाहता हूं कि कोई भी काम सीधे किया जाए, मेरे पीछे नहीं. चूंकि तुम ने अपनी गलती मान ली है इसलिए मैं तुम्हारे तर्कों को सुनने के लिए तैयार हूं."

रमन ने कहा, मुझे अफसोस है कि आप ने मुझे गलत समझा. मेरा सवाल जगदीश के बारे में था. उस ने एक गलती की, बस, इसी लिए आप के मन में उस के लिए कोई जगह नहीं रह गई."

"रमन, तुम फिर मेरे पारिवारिक मामलों में दखल दे रहे हो, लेकिन मैं तुम्हारे शक को दूर करना चाहता हूं. मेरा बेटा सैकड़ों गलतियां कर सकता है लेकिन उस में मेरे सामने उसे स्वीकार करने और सुधारने की हिम्मत होनी चाहिए."

—क्रमशः

होली का रंग लाल

पृष्ठ 32 से आगे

सारा गुलाल थालियों सहित पठानों के चेहरों पर दे मारा गया. उन की आंखें कुछ शराब, कुछ माजून के नशे में वैसे ही मुंदती जा रहा थीं. पैर लड़खड़ा रहे थे. इस गुलाल की मार ने उन के नयन एकदम बंद करा दिए. फाटक बंद करते हुए दुर्गपाल का सर एक राजपूत की तलवार के वार से कट कर दूर जा गिरा.

चारों ओर राजपूती तलवारें चमक रही थीं. रानी ने योजना बना कर हाड़ा वीरों को नारी के वेष में सजा रखा था. वे ही वीर इस समय शत्रुओं का सर्वनाश कर रहे थे. रानी का कहना था, "जब शत्रु प्रबल हो, तब उसे उपाय से मारना ही उचित है." उन की प्रजा भी 'रानी की जय' कहती हुई इस होली में शामिल हो गई थी. एक ओर जय-घोष एक ओर से सुनाई दिया. अपने घोड़े दौड़ाते, कुछ दूर पर छिपे शेष राजपूतों का समूह आ पहुंचा था. किले के फाटक खुले ही थे. असावधान शत्रु का कुछ ही देर में सफाया हो गया. देखते-देखते राजपूत वीर नगर में फैल गए. कोटा पर राजपूतों का अधिकार सरलता से हो गया.

उस दिन कोटा में सूर्यास्त तक होली मनाई गई थी. सूर्य भी पश्चिम दिशा के कपोलों पर गुलाल मल रहा था. आजादी के दीवाने राजपूत स्वतंत्रता पाने में उल्लासमग्न थे. उन में उत्साह था, आवेश था. साथ ही एक दृढ़ संकल्प था. अब अपने देश को दुश्मनों के हाथ में कभी नहीं जाने देंगे. इस तरह एक रानी ने देश को छुड़ाने के लिए खून की होली, स्वतंत्रता की रंगीन होली खेली थी. राजस्थान के इतिहास में यह अनोखी गाथा अमर हो गई है. ●

कीमतें कम करने के लिए:

• सरकारी खर्च कम हो

• करों में कमी हो

बढ़ती हुई कीमतों की मूल वजह (और प्रायः एकमात्र) सरकार द्वारा आवश्यकता से ज्यादा खर्च किया जाना (करों व ऋणों से प्राप्त आय की तुलना में ज्यादा व्यय) और उस घाटे को पूरा करने के लिए नए करेंसी नोट छापना तथा माल व सेवाओं पर नएनए कर थोपना है.

हर नया नोट, हर नया कर माल व सेवाओं की कीमत में तुरंत वृद्धि कर देता है, जिस की वजह से सरकारी खर्च में और अधिक वृद्धि आवश्यक हो जाती है. इस वृद्धि की भरपाई के लिए फिर नए नोट छपते हैं, फिर नए कर लगते हैं और इस से कीमतें लगातार बढ़ती जाती हैं.

राजनीतिबाज बढ़ती हुई कीमतों का सारा दोष उत्पादकों व व्यापारियों के जिम्मे मढ़ कर आम लोगों को धोखा देने की कोशिश करता है, यह अच्छी तरह से जानते हुए भी कि करों द्वारा बढ़ी लागत उत्पादक और व्यापारी अपनी जेब से पूरी नहीं कर सकते. उन्हें चीजों के दाम बढ़ाने ही पड़ते हैं. आम लोगों के हाथ में अतिरिक्त धन आने से भी वस्तुओं की मांग ज्यादा बढ़ जाती है जिस से कीमतें भी और बढ़ जाती हैं.

इस के साथ ही राजनीतिबाजों की अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए, अपनी पार्टियों को चलाने के लिए और चुनाव लड़ने के लिए काले धन की मांग भी जुड़ जाती है. यह रकम सिर्फ माल व सेवाओं की कीमत से ही प्राप्त हो सकती है. इस प्रकार कीमतें और ज्यादा से ज्यादा बढ़ती जाती हैं.

कभीकभी यह कहा जाता है कि ज्यादा उत्पादन से कीमतें बढ़ना रोका जा सकता है. लेकिन अगर कहीं कोई ज्यादा उत्पादन होगा तो वह कच्चे माल और सेवाओं पर बढ़े हुए करों की वजह से ज्यादा कीमत पर ही होगा. और इसलिए बढ़े हुए उत्पादन से भी कीमतें कम नहीं होंगी.

कीमतें कम करने के लिए

• करों में कमी कीजिए.

• सरकारी खर्च कम कीजिए.

इस के अलावा और कोई रास्ता नहीं है.

हार की जिम्मेदारी

हार की जिम्मेदारी किस की होती है—खिलाड़ियों की या अधिकारियों की? करांची के तीन वकीलों का कहना है कि इस के लिए पूरी जिम्मेदारी अधिकारियों पर आती है और उन्हें हा

आस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री मेलकम फ्रेजर : क्रिकेट बोर्ड से जवाबतलब.
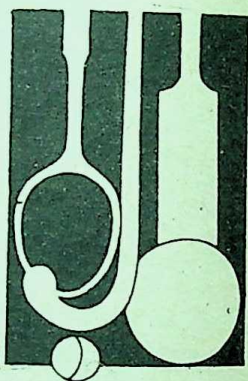
भारत व पाकिस्तान के बीच खेले गए एक हाकी मैच का दृश्य : खेलों में अधिकारियों के हस्तक्षेप से अब सभी चिंतित हैं.
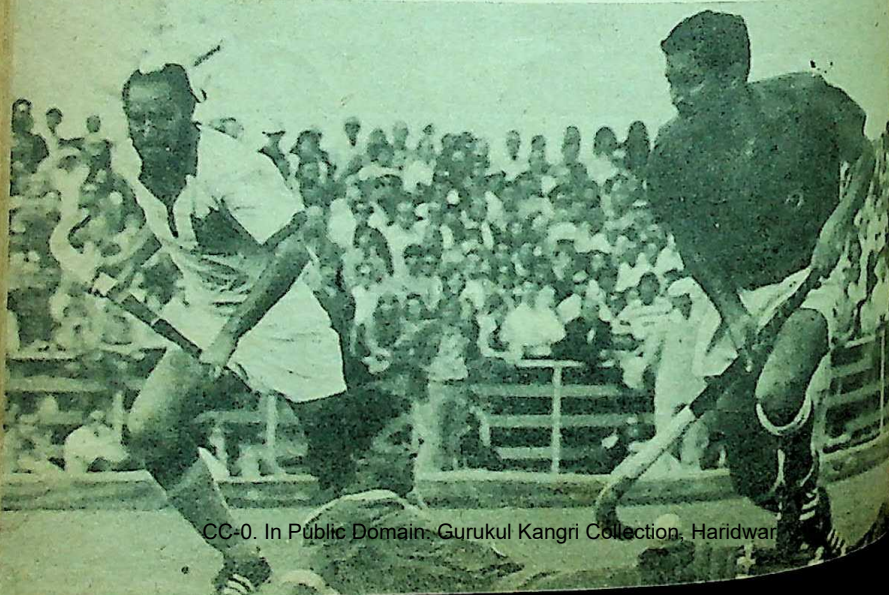
खेल समीक्षा

के बाद अपने पद पर नहीं बने रहना चाहिए. सिंध उच्च न्यायालय में दायर की गई अपील में उन्होंने कहा है कि अदालत को पाक हाकी संघ के अध्यक्ष एयर मार्शल (अवकाश प्राप्त) नूर खां व उन के सचिव ब्रिगेडियर (अवकाश प्राप्त) मंजूर हुसैन आतिफ को अपने पद छोड़ने के लिए बाध्य करना चाहिए.

अपील में यह भी कहा गया है कि दोनों के तानाशाही रवैये व गलत फैसलों ने पाकिस्तान में हाकी को काफी नुकसान पहुंचाया है. इन्हीं दोनों की वजह से रशीद जूनियर ने 1977 में, इस्लाहउद्दीन ने 1978 में और सलीम शेरवानी ने 1979 में हाकी छोड़ दी. मनवसल जमान ने भी उस समय हाकी छोड़ी जब वह श्रेष्ठ फार्म में था.

इन तीनों वकीलों का आक्रोश हर उस पाकिस्तानी का आक्रोश है जो पिछले दिनों 'चैंपियंस कप हाकी' में हुई पाकिस्तान की अप्रत्याशित हार से हतप्रभ है. पाकिस्तान हाकी का विश्वविजेता है. पिछली दो चैंपियंस ट्राफियां वह जीत चुका है. लेकिन इस बार वह फाइनल में भी नहीं पहुंच सका. 11 जनवरी को जब पाकिस्तान हालैंड से एक गोल से हार गया तो दर्शकों ने मैदान पर हुड़दंग मचाना शुरू कर दिया. उन्हें तितरबितर करने के लिए पुलिस को लाठी चलानी पड़ी और खिलाड़ियों को भी पुलिस के संरक्षण में ही बाहर ले जाया जा सका.

सिर्फ तीन वकीलों ने ही नहीं आम लोगों ने भी इस हार के लिए अधिकारियों को ही जिम्मेदार ठहराया है. पाकिस्तान टाइम्स के एक संवाददाता ने तो आरोप लगाया है कि अधिकारियों ने प्रतियोगिता से पहले जानबूझ कर कृत्रिम मैदान (एस्फो टर्फ) पर खिलाड़ियों को जरूरत से ज्यादा अभ्यास कराया ताकि प्रतियोगिता में वे असफल हो जाएं और वे उन की जगह अपने रिश्तेदारों को भर सकें.
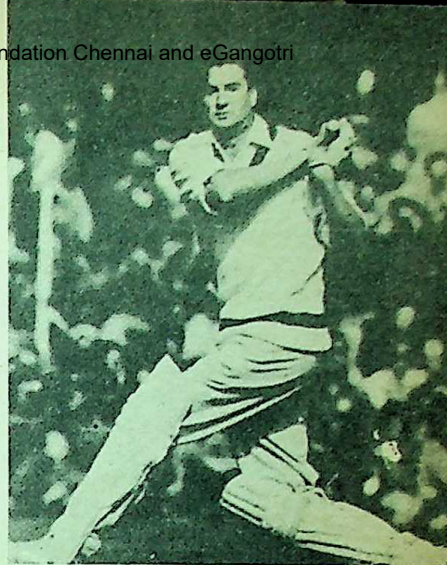
आस्ट्रेलिया के भूतपूर्व आलराउंडर कीथ मिलर : अब क्रिकेट से अपने संबंधों तक पर लज्जा आ रही है.

दरअसल अधिकारियों के हस्तक्षेप से खेलों के लिए तभी समस्याएं पैदा होती हैं जब न तो सरकार और न ही आम लोग खेलों में विशेष दिलचस्पी लेते हैं. ऐसे में उन प्रभावशाली लोगों की बन आती है जो खेल संघों पर अपना कब्जा कर अपनी इच्छानुसार खिलाड़ियों के भविष्य और खेलों से खिलवाड़ करते हैं. ऐसा भारत में बड़े पैमाने पर हो रहा है और पाकिस्तान भला इस से कैसे बचा रह सकता है?

क्रिकेट की हत्या

मैलबर्न में 1 फरवरी को आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड के बीच सीमित ओवरों का मैच शुरू हुआ. आस्ट्रेलिया ने 50 निर्धारित ओवरों में चार विकेट पर 235 रन बना लिए. न्यूजीलैंड ने 49.5 ओवर में आठ विकेट पर 229 रन बना लिए थे. आखिरी गेंद पर अगर न्यूजीलैंड का खिलाड़ी छः रन बना लेता तो मैच बराबरी

पर छूट सकता था. उस समय ग्रास्ट्रेलिया के कप्तान ग्रेग चैपल का छोटा भाई ट्रवर चैपल गेंदबाजी कर रहा था. मैच ग्रास्ट्रेलिया के हाथ से न निकल जाए, इस डर से ग्रेग ने ट्रेवर को अंडर ग्रार्म गेंद फेंकने को कहा. ट्रेवर झुका ग्रौर उस ने गेंद सीधी विकटों की तरफ लुढ़का दी. इस गेंद पर कोई रन नहीं बन सका ग्रौर इस तरह ग्रास्ट्रेलिया ने छः रन से मैच जीत लिया.

लेकिन ग्रेग के इस कदम ने समूचे क्रिकेट जगत में विवाद का एक नया मुद्दा उठा दिया. बात खिलाड़ियों, पत्रकारों से ले कर प्रधान मंत्री तक जा पहुंची. क्रिकेट में हाथ ऊपर उठा कर (ग्रोवर ग्रार्म) गेंद फेंकी जाती है. इंगलैंड में ग्रंडर ग्रार्म गेंद फेंकना दंडनीय है लेकिन क्योंकि ग्रास्ट्रेलिया में ऐसा कोई नियम नहीं है, इसलिए व्यावहारिक रूप से ग्रेग के कदम को ग्रनुचित नहीं ठहराया जा सकता. लेकिन जहां तक खेल भावना का सवाल है ग्रेग को क्रिकेट की हत्या करने के दोष से मुक्त नहीं किया जा सकता.

ग्रास्ट्रेलिया के भूतपूर्व ग्रालराउंडर कीथ मिलर ने कहा, "इस घटना के बाद तो मैं यह याद रखना भी पसंद नहीं करूंगा कि मेरा कभी क्रिकेट जैसे महान खेल से वास्ता रहा था." सब से ज्यादा ग्रालोचना तो ग्रेग के बड़े भाई इयान ने की. उस ने कहा, "मैं नहीं समझ सकता कि 35,000 डालर के इनाम के लिए वह ग्रपनी प्रतिष्ठा यों गिरा सकता है. (पांच मैचों की फाइनल श्रृंखला में 3 मैच जीतने वाली टीम को 35,000 ग्रास्ट्रेलियाई डालर मिलने थे ग्रौर इस मैच से पहले खेले गए दो मैचों में एकएक ग्रास्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड ने जीत लिया था.) यह मैच ग्रगर ग्रास्ट्रेलिया ने गंवा भी दिया होता तो भी बाकी दो मैच जीत कर वह सफलता पा सकता था."

बात प्रधान मंत्री तक पहुंची. न्यूजीलैंड के प्रधान मंत्री राबर्ट मलडून ने इसे एक कायरतापूर्ण कदम बताया. ग्रास्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री मेलकम फ्रेजर ने तो ग्रास्ट्रेलियाई क्रिकेट बोर्ड तक से इस के लिए जवाबतलबी की.

ग्रास्ट्रेलियाई बोर्ड ने भी ग्रेग के रवैये पर नाराजगी दिखाई. लेकिन सजा के तौर पर ग्रेग को कुछ समय के लिए टीम से निकाल देने की हिम्मत नहीं जुटा सका, क्योंकि ग्रास्ट्रेलिया की वर्तमान टीम के लिए ग्रेग बहुत बड़ा सहारा है ग्रौर बिना उस के टीम को ग्रस्तव्यस्त होने से नहीं बचाया जा सकता. लिहाजा सिर्फ धमकी दे कर ग्रेग को माफ कर दिया गया.

लेकिन वेस्टइंडीज के क्रिकेट बोर्ड ने तेज गेंदबाज सिलवेस्टर क्लार्क को माफ नहीं किया ग्रौर उसे तीन मैचों के लिए टीम से निकाल दिया गया. पाकिस्तान के साथ हुए एक टेस्ट में क्लार्क ने दर्शकों द्वारा फेंकी गई चीजों से गुस्सा हो कर एक ईंट दर्शकों पर दे मारी थी जिस से एक दर्शक घायल हो गया था. वेस्टइंडीज क्लार्क के बिना ग्रपना काम चला सकता है, ग्रास्ट्रेलिया ग्रेग के बिना नहीं, इसलिए क्लार्क को ही सजा मिली ग्रौर ग्रेग बच गया.

हालांकि बाद में ग्रेग ने ग्रपने व्यवहार के लिए माफी मांगी और साथ ही यह भी स्वीकार किया कि क्रिकेट के व्यावसायिक प्रतिष्ठा वाले पक्ष ने जीत का महत्त्व उस के लिए इतना बढ़ा दिया था कि संभावित हार का तनाव वह झेल नहीं सका.

फुटबाल खेल कर नहीं देख कर करोड़पती

फुटबाल खेल कर तो ग्रब तक कई खिलाड़ी करोड़पती बन गए हैं, लेकिन फुटबाल देख कर ब्राजिल का एक 23 वर्षीय मजदूर टेडियू रिसेंदे एक ही दिन

में करोड़पती बन गया. ब्राजिल की सरकार एक लाटरी चलाती है, जिस में मैचों के परिणाम की सही भविष्यवाणी करने वाले को इनाम मिलता है. सीमेंट फैक्टरी के मजदूर रिसेदे ने एकदो नहीं बल्कि एक साथ ही 13 मैचों के परिणामों की सहीसही भविष्यवाणी कर डाली. और पलक झपकते ही 30 लाख डालर यानी लगभग दो करोड़ 40 लाख रुपए का मालिक बन बैठा. आज तक किसी भी खेल परिणाम की लाटरी से कोई व्यक्ति इतनी रकम नहीं जुटा सका है.

वारेल की याद में

7 फरवरी 1981 को कलकत्ता में फ्रैंक वारेल दिवस मनाया गया. वेस्टइंडीज का यह महान क्रिकेट खिलाड़ी एक महान व्यक्ति भी था. 1962 में जब भारतीय क्रिकेट टीम वेस्टइंडीज का दौरा कर रही थी, तब भारत का कप्तान नारी कंट्रेक्टर सिर में गेंद लग जाने से मैदान में गिर कर बेहोश हो गया था. उसे जीवित बचा पाने का एक ही रास्ता था कि कोई व्यक्ति उसे अपना खून देता. वारेल ने तब नारी को अपना खून दे कर बचाया. बाद में वारेल को रक्त कैंसर हो गया और अंतिम क्षणों में मौत से जूझते हुए जब उसे खून की जरूरत पड़ी तो उसे खून नहीं मिल सका. 7 फरवरी, 1967 को वह खून की कमी की वजह से मर गया.

7 फरवरी, 1981 को कलकत्ता में वारेल की याद में एक रक्तदान शिविर लगाया गया, जिस में नारी कंट्रेक्टर व उस की पत्नी ने रक्तदान किया.

निष्पक्ष अंपायर

व्यावसायिकता और प्रतिष्ठा ने खेलों से निष्पक्षता की स्थिति खत्म कर दी है. और अब ऐसी स्थिति आ गई है कि अंपायरों के निर्णय भी विवादास्पद होने लगे हैं. इस हालत को खत्म करने के लिए प्रायः सभी खेलों की बड़ी प्रतियोगिताओं में तीसरे देश के अंपायरों की नियुक्ति की जाने लगी है. अंतरराष्ट्रीय लान टेनिस संघ ने हाल ही में फैसला किया है कि डेविस कप के महत्वपूर्ण मुकाबलों के लिए उन दो देशों के अलावा जिन में मुकाबला हो रहा हो, किसी अन्य देश के अंपायर को नियुक्त किया जाएगा. ●

कुछ समय पहले जब मुझे अपने अधीन एक कारखाने का प्रबंध करना कठिन हो रहा था तब मैं ने अपने एक मित्र से सलाह ली. वह अपना काम अच्छी तरह चला रहे थे. उन्होंने सब कुछ सुन कर कुछ तरीके बताए, जिन से उन के हिसाब से अच्छे परिणाम निकल सकते थे. मैं तो परेशान था ही और वे तरीके भी कुछ खर्चीले नहीं थे, इसलिए मैं ने उन पर आचरण करने का विचार कर लिया. उन्हें अपना कर मुझे आशातीत सफलता मिली. उस के बाद तो वे तरीके मेरे स्वभाव का हिस्सा ही बन गए. जिस भी संस्थान में किसी को अपने मातहत कर्मचारियों या श्रमिकों से काम ले कर उद्योग के लक्ष्य को प्राप्त करना है वे इन को अपना कर लाभ उठा सकते हैं :

अपने मातहत लोगों को अपने ही समान मानव समझो और उन से नम्रता का व्यवहार करो. तीखा बोलने से उस समय तो काम हो जाता है पर कड़वाहट रह जाती है जिस का परिणाम आगे अच्छा नहीं होता. बिना संतुलन खोए अपनी बात अधिक प्रभावशाली ढंग से कही जा सकती है.

कार्य स्थल पर समय से पहुंच कर

उद्योग चलाने के कुछ तरीके ऐसे भी हैं जिन का प्रयोग बिना कुछ भी खर्च किए किया जा सकता है. और इन से उद्योग में सद्भाव भी बढ़ता है और उत्पादन भी.

इन तरीकों को भी आजमा कर देखिए

लघु उद्योग प्रबंध

अपने अधिकारक्षेत्र का एक चक्कर लगा
लेना चाहिए. इस का ध्येय दोष निकालना नहीं वरन कर्मचारियों की समस्याएं उन के काम करने के स्थान पर सुलझाना होना चाहिए. जब समस्याएं कार्य स्थल पर ही तय कर दी जाती हैं तो प्रबंधकों में विश्वास की भावना बढ़ती है. साथ ही कमरे में आ कर मिलने वालों की संख्या कम हो जाती है. तब महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए समय मिल जाता है.

कार्यालय का समय समाप्त होने के समय पुन: एक बार कारखाने में जा कर कर्मचारियों व श्रमिकों को दिन भर के काम के लिए धन्यवाद देना चाहिए. कहा जा सकता है कि हम ने पैसा दिया, उन्होंने अपना कर्त्तव्य किया है, फिर धन्यवाद कैसा. पर इस का प्रभाव आश्चर्यजनक होता है. प्रयोग कर देखें. कोई खर्च तो होता नहीं, मात्र जबान हिलाने की बात है.

वेतन बांटे जाने का समय अत्यंत महत्त्वपूर्ण है. मालिक को चाहिए कि या तो स्वयं पैसा बांटे या कम से कम बंटने की जगह उपस्थित रहे. इसी के लिए तो वे आप के संस्थान में आए हैं. आप के वहां होने से लगता है कि आप को उन्हें वह पैसा देने में प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है. कुछ अपनत्व का भी उदय होता है. माह में एक बार एक घंटा इस काम के लिए देना कोई कठिन नहीं, बशर्ते कि इच्छा हो.

वेतन तो एक मुश्त रकम होती है जो एक बार दी जाती है. उस के अलावा भी कुछ और देना चाहिए. यह कुछ भी हो, यह तो संस्थान पर निर्भर करेगा और मालिक की उदारता पर. देना अवश्य चाहिए. न भी कुछ कारण हो तो देने का कुछ बहाना भी हो सकता है. इस अतिरिक्त देय को अपने खर्चे में पहले ही जोड़ लेना चाहिए.

इन बातों को अपना कर हर मालिक व प्रबंधक जल्द अच्छे परिणाम ले सकता है. इस से संस्थान में, उद्योग में सद्भाव बढ़ेगा और साथ ही उत्पादन भी.

"श्रीमान, मेरा तबादला किसी और शाखा कार्यालय में कर दीजिए. यहां दूरदूर तक कोई क्लब या सिनेमाहाल नहीं है."

पर्यटकों के पहनावे पर भी नजर

जिंदगी कितनी भी डरावनी क्यों न हो, दुनिया के विभिन्न हिस्सों में शीत, गरम युद्ध क्यों न छिड़े हुए हों, रोचक घटनाएं जबतब घटती ही रहती हैं. कनाडा का एक चिकित्सक अपने परिवार के साथ पीकिंग स्थित माओ त्से तुंग के स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित करने जाना चाहता था. लेकिन जैसे ही यह परिवार तिएन एन मैन स्कवायर (क्षेत्र) में प्रविष्ट हुआ, एक अधिकारी ने उसे टोका और कहा कि डाक्टर की पत्नी ने टांगों पर जो लंबा सा कपड़ा पहना हुआ है, वह स्मारक के गंभीर माहौल के लिए कतई उपयुक्त नहीं है. डाक्टर ने अधिकारी से पूछा कि अगर उस की पत्नी अपनी मां का पेटीकोट पहन ले तो क्या वह भीतर जा सकेगी.

अधिकारियों को इस पर कोई ऐतराज नहीं था. डाक्टर की पत्नी की मां भी साथ थी. उस ने अपना पेटीकोट उतार दिया, जिसे उस की लड़की ने पहन लिया. जैसे ही वे स्मारक की तरफ बढ़े, फिर एक अधिकारी ने टोका, क्योंकि डाक्टर का 17 वर्षीय छोटा भाई छोटी सी निकर पहने था, जिसे पहन कर स्मारक में जाने पर पाबंदी थी.

डाक्टर की पत्नी ने क्योंकि माओ का यह स्मारक पहले से देखा हुआ था, इसलिए उस ने मां से लिया हुआ अपना पेटीकोट उतार दिया और अपने देवर के कंधों पर डाल दिया. अब उस के भीतर जाने पर अधिकारियों को कोई आपत्ति नहीं हुई. वह भीतर गया और माओ के मृत शरीर को देख आया.

कैदी ने उंगली कुतर कर न्याय मंत्री के पास भेजी

पेरिस में कैदियों की रक्षा के लिए बनी समिति के अनुसार बैंक डकैती के लिए सजा पाए एक अपराधी ने अपनी उंगली का ऊपरी सिरा कुतर कर और उसे फ्रांस के न्याय मंत्री एलेन पेरेफिटिड के पास अपनी इस मांग के समर्थन में भेजा कि उस के मामले की दोबारा सुनवाई की जाए. 40 वर्षीय मारिस लाक्विन 12 साल की सजा काट रहा है.

उल्लेखनीय है कि एक अन्य मामले की दोबारा सुनवाई के दौरान लाक्विन को बरी कर दिया गया था. उस का दावा है कि बैंक डकैती का उस पर जो आरोप है, वह भी बेबुनियाद है.

बलात्कार के 113 मामलों का दोषी अब पुलिस हिरासत में

कोलोन (प. जरमनी) पुलिस ने हाल ही में एक 25 वर्षीय डिलीवरी ड्राइवर को गिरफ्तार किया है. पुलिस को संदेह है कि पिछले दो वर्षों में उस इलाके में बलात्कार के जिन मामलों से आतंक सा रहा है, उन में से 113 मामलों में यह दोषी है. यह व्यक्ति 'नीले वेष वाला बलात्कारी' के नाम से कुख्यात है, क्योंकि यह सदा ऊपर से नीचे तक नीले कपड़े ही पहनता था. यह सप्ताह के काम वाले दिनों में ही बलात्कार के लिए शिकार फांसा करता था. वह अपने शिकारों को या तो भूमिगत कार पार्किंग स्थलों में या सामान पहुंचाने के बहाने घर में घुस कर दबोचा करता था.

पुलिस का कहना है कि गिरफ्तार व्यक्ति शनिवार, रविवार हमेशा अपनी पत्नी के साथ बिताता था.

जूतों का संसार

लेख • लोकेंद्र चतुर्वेदी

हालीवुड के विख्यात फिल्म निर्माता वार्नर हरजोग का निकम्मा दोस्त एरोल मारिस डींगें मारने का आदी था. फिल्म निर्माण के बारे में उस की डींगें सुनतेसुनते तंग आ कर एक दिन हरजोग ने गुस्से में आ कर कह दिया, "तुम जैसा गपोड़ा कभी फिल्म नहीं बना सकता और अगर तुम ने कभी

हर पहन...
सुरक्षा क...
निभाने ...
अपना रो...
पर अनु...
जिन की...
आकारप्र...
परिवर्तन...

←
जूते बनाते ...
भारत में ...
निर्माण अ...
सर्वाधिक है...
इन के संग्र...
नए प्रयोग ...
न के बरा...

ईंटों के ...
देशों में ...
के लिए ...
प्रयोग का...

हर पहनने वाले के पैरों की सुरक्षा का दायित्व चुपचाप निभाने वाले जूतों का भी अपना रोचक इतिहास है. इन पर अनुसंधान भी किए गए जिन की बदौलत जूतों के आकारप्रकार में क्रांतिकारी परिवर्तन संभव हो सके.

यह असंभव काम कर दिखाया तो मैं जूता खा जाऊंगा."

इस बात को हुए जब दो बरस बीत गए और मारिस ने पालतू जानवरों के जीवन पर एक सफल फिल्म बना डाली तब हरजोग को कैलिफोर्निया के पांच सितारों वाले एक होटल में दावत का निमंत्रण मिला. स्वागत के लिए मेजमान के रूप में मारिस उपस्थित था. हरजोग के लिए शानदार मेज सजी थी और मेज के बीचोंबीच एक प्लेट में नौ नंबर का जूता रखा था. होटल के प्रमुख रसोइए ने पांच

← जूते बनाते कारीगर : भारत में जूतों का निर्माण और खपत सर्वाधिक है. फिर भी इन के संग्रह या नए-नए प्रयोग का चलन न के बराबर क्यों?

ईंटों के जूते : दूसरे देशों में केवल शौक के लिए किए गए प्रयोग का नमूना. →

जूतों का संसार

घंटे लगातार जूते को उबाल कर नरम बनाने की कोशिश की थी.

बात के पक्के हरजोग ने जूता खाना शुरू किया और सात घंटे में ऊपरी हिस्सा खा गए. जूते का तला खाने से इनकार करते हुए उन्होंने कहा, "मैं जब मुर्गा खाने की बात करता हूं तो उस में हड्डियां शामिल नहीं रहतीं. इसी तरह जूते में तला शामिल नहीं है."

जूता खाने की परंपरा

हरजोग ने तो बात निभाने को जूता खाया था, पर दूसरी तरह से जूता खाने की परंपरा लगभग हर देश में चली आ रही है. लगभग हर देश के लोग जूता पहनने, लगाने, खाने और खिलाने के काम में व्यस्त हैं. स्वामी के चरणों को सुख पहुंचाने वाला यह साधन शत्रु के लिए घातक अस्त्र बन कर उस की कपाल क्रिया करने को हमेशा तत्पर रहता है. जूते के आविष्कार के संबंध में कई देशों ने दावे किए हैं किंतु सर्वाधिक चर्चित और प्रामाणिक विवरण भारतीय पौराणिक साहित्य में मिलता है.

महाभारत में आए एक प्रसंग के अनुसार परशुराम के क्रोधी पिता जमदग्नि की पत्नी जब सूर्य के ताप से तपती धरा पर चली, तब उन के पैर जलने लगे और उन में छाले पड़ गए. इस पर महर्षि जमदग्नि इतने क्रुद्ध हुए कि सूर्य का सर्वनाश करने की तैयारी करने लगे. घबरा कर सूर्य ने अपनी जान बचाने के लिए पहला जूता जमदग्नि की पत्नी को भेंट किया. उस के बाद तो जूते ने इतनी तेजी से अपना प्रभाव बढ़ाया कि सतयुग में रघुवंश के सिंहासन पर 'जूते' आसीन रहे और उस के बाद उसी सिंहासन पर राम बैठे.

जूतों के जनक भारत के जूते आज भी सारी दुनिया में चल रहे हैं और आगरा शहर के बने जूतों का डंका तो सारी दुनिया में बज रहा है. दुनिया के मशहूर जूता विशेषज्ञ और अंतरराष्ट्रीय जूता कंपनी 'बाटा' के प्रबंध अधिकारी श्री पैलेटी तो आगरा के जूता कलाकारों से इतने अधिक प्रभावित हुए कि कह उठे, "मुझे ताज से ज्यादा अच्छे आगरा के जूता कलाकार लगे." वैसे श्री पैलेटी के अनुसार इस वक्त दुनिया में सिर्फ दो देशों के जूतों का चलन है और वे हैं इटली और भारत.

जूतों के संग्रहालय

इतना होते हुए भी अफसोस इस बात का है कि हमारे देश में जूतों का कोई संग्रहालय नहीं है तथा ऐतिहासिक महत्त्व के व्यक्तियों के जूते संभाल कर रखने की कोई व्यवस्था नहीं है. इस मामले में छोटा सा यूरोपीय देश पश्चिमी जरमनी हम से कहीं आगे है जहां एक नहीं बल्कि दो जूता अजायबघर हैं. जरमनी के इन संग्रहालयों में विलियम कैसर और प्राचीन रोम के मरदाने जूतों से ले कर आस्ट्रिया की महारानी के रेशमी जूते भी संभाल कर रखे गए हैं.

सिर्फ यही नहीं, बल्कि जूतों पर अनुसंधान के लिए भी जरमनी में अलग से एक संस्थान है.

इस संस्थान ने सन 1979-80 में 50 लाख रुपए खर्च कर जूतों के फीतों में क्रांतिकारी सुधार किया है. खिलाड़ियों के लिए बनाए गए ये फीते सूक्ष्म इलेक्ट्रानिक यंत्रों से सज्जित हैं और खिलाड़ी का पैर जूते में जाते ही उस की ऊंचाई, वजन और अन्य परिस्थितियों के आधार पर यह बता देते हैं कि फीतों को कितना कसा जाए.

इन इलेक्ट्रानिक फीतों की कीमत ढाई से ले कर चार हजार रुपए है.

अब सवाल यह उठता है कि जब फीते ही तीनचार हजार रुपए के पड़ रहे हैं तब जूते कितने में पड़ेंगे. वैसे जूतों की सामान्य कीमत 50 रुपए से 20 हजार रुपए के बीच हो सकती है, पर कुछ जूते-

जूतियां विशेष होते हैं. सन 1978 में जापान के एक कारीगर ने प्लेटिनम जड़ी से जो जूतियां बनाई थीं वे चार लाख रुपए में बिकीं. गिनीज की 'बुक ग्राफ वर्ल्ड रिकार्ड' के ग्रनुसार बिक्री के लिए बनाए गए जूतों में 'स्टाइलो मैचमेकर' इंगलैंड द्वारा बनाए गए गोल्फ के जूते फिलहाल सब से कीमती हैं. मिंक से मढ़े ये जूते 60 हजार रुपए प्रति जोड़ी के हिसाब से बिक रहे हैं.

पहियों वाले जूते : चलते-चलते जब 'रोलिंग स्केटिंग' करने की इच्छा हो, एक लिवर दबाते ही पहिए बाहर निकल आते हैं. ↑

जूतों का मेला

जूते बनाने ग्रौर पहनने के शौकीनों की कमी ग्रमरीका में भी नहीं है. यहां तो हर साल राष्ट्रीय स्तर पर जूतियों का मेला लगता है. सन 1979 के ग्राखिरी दिनो में सनफ्रांसिस्को में लगे इस मेले में ऊंची एड़ियों की जो जूतियां रखी गई थीं वे दुनिया की सब से ऊंची जूतियां मानी जाती हैं.
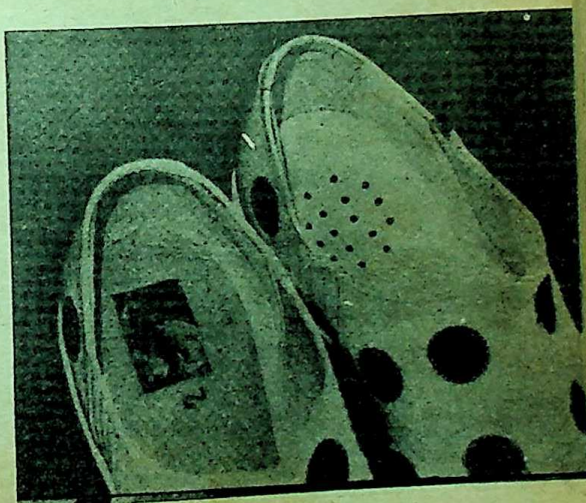
ग्यारह फीट ऊंची ऐड़ी की जूती पहन कर चलने की कल्पना भी ग्राप शायद नहीं कर सकते. इस मेले में मोटे कार्क के तले के जो जूते प्रदर्शित किए गए, उन में पहिए छिपे हुए थे. चलते-चलते जब 'रोलिंग स्केटिंग' करने की तबीयत होने लगे, तब एक लिवर दबाते ही पहिए बाहर निकल ग्राते हैं. स्विटजरलैंड के कारीगर हेराल्ड ग्रीन के डिजा-

हवादार जूते : पैरों में हवा पहुंचती रहे इस के लिए इन जूतों में ऊपर की तरफ छोटेछोटे छेद रखे गए हैं. →

इन पर तैयार किए गए ये जूते आजकल अमरीका में काफी बिक रहे हैं.

नायाब और अद्भुत जूते बनाने की होड़ में अव्वल रहने की कोशिश करते-करते न्यूयार्क के एक जूता निर्माता ने ऐसे जूते बना डाले जिन की एड़ी में मछलियां पलती हैं. हेराल्ड स्मरलिंग की फर्म ने इस तरह के 100 जोड़ी जूते तैयार किए हैं.

'गोल्ड फिश बूट' नामक इन जूतों की ऐड़ी में विशेष किस्म के प्लास्टिक का बना हुआ एक पारदर्शी प्याला फिट रहता है. पानी, कंकड़ और वनस्पतियों से भरे इस प्याले में अठखेलियां करती नन्हीं 'गोल्ड फिश' तैरती हैं. हवा आने के लिए ऊपर की तरफ छोटेछोटे छेद हैं.

जूतों के जरिए तस्करी

जूतों की ऐड़ी में मछलियां पालने वाले तो न्यूयार्क में रहते हैं पर दुबई के अबू मोइडू तो अपनी चप्पलों के तले में छः लाख रुपए का सोना छिपा कर ले जाते हुए पकड़े गए थे. बंबई के कस्टम अधिकारियों ने पिछले दिनों इन की चप्पलों के तले से तीन किलो सात सौ ग्राम सोना बरामद किया.

अपराध के लिए जूतों में सोना छिपाने वाले अबू मोइडू से ठीक विपरीत सीडर टाउन (इंगलैंड) के बुच महाशय हैं जो अपने पूरे परिवार को जूते में बिठा कर लंदन की सैर कराते हैं. बुच महाशय ने जूते के आकार की कार तैयार की और उस में वाम्सि वेगन का शक्तिशाली इंजन फिट करवाया है. अपनी इस अनोखी जूता कार में बैठते हुए बुच महाशय का सिर गर्व से ऊंचा हो जाता है.

जहां तक जूतों की दुकान का संबंध है, इस वक्त लंदन की आम्सफोर्ड स्ट्रीट वाली 'लिली एंड किनर' सब से बड़ी दुकान मानी जाती है. 76 हजार वर्ग फीट फर्श के विस्तार वाली इस दुकान में एक लाख 25 हजार जूतियों का भंडार है और रोज हजारों ग्राहक यहां आते हैं. लकड़ी की खड़ाऊं से ले कर मिंक और मगर की खाल तक के जूते इस दुकान से खरीदे जा सकते हैं. इतनी बड़ी दुकान से भी जब ब्रिटिश शिल्पज्ञ पेट्रिक कुक अपने मनचाहे जूते प्राप्त नहीं कर सके, तब विवश हो कर बेचारे को ईंटों की भट्ठी में 'जूते' पकाने पड़े. ईंटों से बने जूते पहन कर पेट्रिक साहब हर जगह टहलते हुए पहुंच जाते हैं.

पशु भी जूता पहनते हैं

सिर्फ आदमी ही नहीं, कुछ पशु भी जूतों के शौकीन होते हैं और जूते पहनने के बाद उन्हें कम ही उतारते हैं. ऐसे पशुओं में घोड़ा सब से प्रमुख है. घोड़े के उतरे हुए 'जूते' (नाल) इतने शुभ समझे जाते हैं कि कुछ लोग उसे अपने घर में संभाल कर रखते हैं. घोड़ों के जूते इकट्ठे करने में नार्टिघम शायर के जार्ज फ्लिंडर ने रिकार्ड स्थापित किया है. घोड़ों के 'जूतों' के पहाड़ की तसवीरें बेच कर ही फ्लिंडर साहब ने इतनी रकम इकट्ठा कर ली कि एक छोटा हस्पताल बनवा दिया.

जूतों का यही महत्त्व देख कर ही शायद उर्दू के विख्यात शायर अकबर इलाहाबादी को कहना पड़ा था :

मैं ने इक मजमूं लिखा
बूट डासन ने बनाया,
मुल्क में मजमूं न फैला,
और जूता चल गया.

आप का भाषा ज्ञान
(पृष्ठ 35 के उत्तर)

1. तालाबंदी, 2. विश्वास प्रस्ताव, 3. विकेंद्रीकरण, 4. विधेयक, 5. लाभांश, 6. मुद्रास्फीति, 7. अवमूल्यन, 8. भविष्यनिधि, 9. भाईभतीजावाद, 10. उर्वरक, 11. प्रपत्र.

अपनी समस्याएं भेजिए. इस स्तंभ के अंतर्गत नीरजा द्वारा आप की समस्याओं का समाधान दिया जाता है.

भेजने का पता : नीरजा, मैं क्या करूं? मुक्ता, नई दिल्ली-55.

मैं अपनी ममेरी बहन से प्रेम करता हूं और शादी करना चाहता हूं. हमारी शादी को हिंदू समाज मान्यता देगा या नहीं?

हिंदू विवाह कानून के अनुसार आप यह विवाह नहीं कर सकते. इसलिए आप को अपनी ममेरी बहन से विवाह का खयाल छोड़ देना चाहिए.

मेरी आयु 17 वर्ष है. मुझे भूतप्रेतों से बहुत डर लगता है, मन बहुत घबराता रहता है. क्या करना चाहिए?

भूतप्रेत नाम की किसी चीज का दुनिया में कोई अस्तित्व नहीं होता. आप ने भूतप्रेतों के बारे में जो बातें या कहानियां सुनी हैं, वे सब झूठ हैं. आप का डर और घबराहट केवल आप के मन का एक भ्रम है. अपने मनमस्तिष्क में पूरी तरह यह बात बिठाने की कोशिश करें कि भूतप्रेत नहीं होते, आप का डर अपने आप चला जाएगा.

मैं 25 वर्षीय विवाहित युवक हूं. सेक्स की दृष्टि से मेरे अंदर लड़के के बजाए लड़की वाले भाव ज्यादा हैं. मैं इस रोग से परेशान हूं.

अक्सर हारमोंस की गड़बड़ी की वजह से ऐसा होता है. आप अपने निकट के बड़े हस्पताल में मनोरोग चिकित्सक से अपनी जांच करवाएं.

मैं दसवीं कक्षा, विज्ञान का छात्र हूं. पहले मैं पढ़ने का इच्छुक नहीं था इसलिए पिछला कोर्स मुझे नहीं आता. अब मैं पढ़ने का इच्छुक हूं पर पिछला कोर्स न आने की वजह से पढ़ाई में आगे बढ़ने से असमर्थ हूं.

आप अब पढ़ने के इच्छुक हैं—यदि आप की यह इच्छाशक्ति सच्ची है तो पढ़ाई में आगे बढ़ने से आप को कोई नहीं रोक सकता. जो कोर्स आप नहीं पढ़ सके हैं उस की एक सूची बनाएं और कार्यक्रम बना कर बारीबारी से एकएक विषय का अध्ययन करते जाएं. इस काम में अपने से ज्यादा होशियार छात्रों या अध्यापकों की मदद मांगने में भी कोई संकोच न करें.

मैं 18 वर्षीय युवक हूं. दो साल पहले मैं हस्तमैथुन करता था, अब नहीं करता. अब सप्ताह में दो बार स्वप्नदोष हो जाता है, इसलिए परेशान हूं.

आयु की दृष्टि से आप यौवन में प्रवेश कर रहे हैं. इस उम्र में जो लोग सेक्स के प्रति ज्यादा उत्सुकता रखते हैं, उन में स्वप्नदोष की शिकायत हो जाना आम बात है. इस से शारीरिक दृष्टि से विशेष हानि नहीं होती. आप निश्चित हो कर अपने को अन्य कामों में व्यस्त रखें और सेक्स के बारे में कम सोचें. उत्तेजक साहित्य न पढ़ें.

मैं ने अपनी प्रेमिका को कुछ प्रेम पत्र दिए हैं. उस ने भी मुझे प्रेम पत्र दिए. एक बार पत्रों का आदानप्रदान करते हुए कुछ लोगों ने हमें देख लिया. अब उस लड़की ने मुझ से बोलना तक छोड़ दिया है.

जो लड़की आप से बोलने तक की हिम्मत न जुटा रही हो, वह प्रेमविवाह में आप का साथ दे सकेगी, इस में शक है. उस लड़की का विचार छोड़ दें और यह मान कर संतोष करें कि अच्छा हुआ समय रहते आप सचेत हो गए.

मैं बी. ए. एम. एस. का छात्र हूं. मेरा विवाह एक इंटर पास ग्रामीण लड़की से हुआ था. उस से मेरा मन नहीं मिल सका क्योंकि वह दुश्चरित्र है और प्यार करने के बावजूद उस ने मुझे प्यार नहीं दिया. कुछ महीने पहले उस के पिता समस्त सामान सहित उसे ले गए. लेकिन अब उसे वापस भेजना चाहते हैं. दूसरी तरफ मेरे लिए नए रिश्ते आ रहे हैं. क्या करना चाहिए?

यदि आप हर दृष्टि से खूब सोच-विचार के बाद इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि किसी भी स्थिति में आप अपनी पत्नी के साथ सुखी नहीं रह सकेंगे तो बेहतर है कि विवाह विच्छेद कर के नया उपयुक्त रिश्ता स्वीकार कर लें. लेकिन कानूनी रूप से तलाक लेने के लिए जरूरी है कि आप यह साबित कर सकें कि (1) आप की पत्नी आप की इच्छा के विरुद्ध एक साल से ज्यादा समय से आप से अलग रह रही है. या (2) उस के अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों से शारीरिक संबंध हैं. या (3) वह स्वभाव से क्रूर है और आप को व आप के परिवार को शारीरिक या मानसिक तौर पर यातना पहुंचाती है.

मैं 18 वर्षीय युवक हूं. माडल बनने के लिए मुझे क्या करना होगा?

आप विज्ञापन एजेंसियों, पत्रिकाओं और माडलिंग एजेंसियों से संपर्क करें. यदि आप का व्यक्तित्व उपयुक्त होगा तो आप को जरूर अवसर मिलेगा.

—नीरजा

सरिता

अप्रैल (प्रथम) 1981

आप की चिकित्सा संबंधी समस्याओं पर विशेषज्ञों द्वारा लिखे गए कई उपयोगी लेख

प्रमुख आकर्षण :

• स्त्री शरीर : व्याधियों का गढ़

गर्भ धारण के लिए सर्वाधिक उपयुक्त समय कौन सा है? गर्भवती महिला कौनकौन सी सावधानियां बरते? गर्भावस्था में कौनकौन सा आहार लेना चाहिए? स्त्री को कितनी बार गर्भ धारण करवाना चाहिए? बारबार गर्भपात कराने से क्या हानियां हैं इत्यादि. विभिन्न स्त्री रोगों पर विक्टोरिया मेमोरियल महिला चिकित्सालय, मुरादाबाद की अधीक्षक से उपयोगी बातचीत.

• सामान्य स्त्री रोग तथा उन के उपचार

मासिक धर्म संबंधी गड़बड़ी, ल्यूकोरिया, हिस्टीरिया, सिरदर्द, एनीमिया इत्यादि सामान्य स्त्री रोगों पर भारत के स्त्री रोगों के प्रमुख चिकित्सक द्वारा सुझाए गए उपचार.

• दमा और उस का इलाज

दमा क्या है, इस बीमारी के लक्षण क्या हैं? यह रोग क्यों होता है? तथा इस की रोकथाम व उपचार कैसे किया जाता है—रोग के विशेषज्ञ द्वारा दी गई संपूर्ण जानकारी.

• रक्तचाप

रक्तचाप क्या है? एक सामान्य व्यक्ति का रक्तचाप कितना होता है? उच्च रक्तचाप के लक्षण व कारण क्या हैं? उच्च रक्तचाप होने पर क्या करें?

इन सब के अतिरिक्त संपूर्ण परिवार का मनोरंजन करने वाली 8 कहानियां, कई अन्य लेख, मर्मस्पर्शी कविताएं तथा सभी स्थायी स्तंभ.

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराएं.

पृष्ठ : 194

मूल्य वही 3.00 रु.
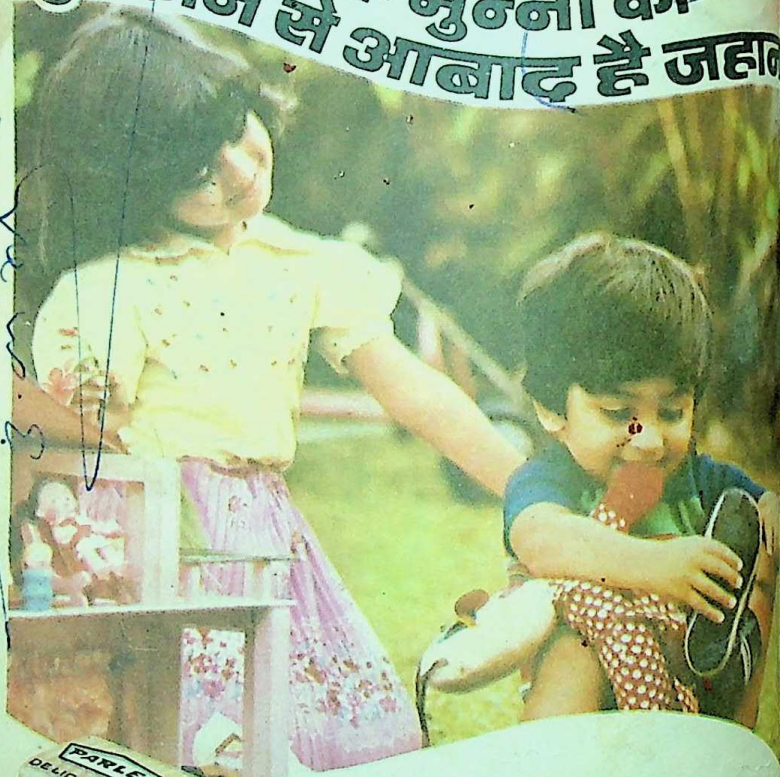
MUKTA March (Second) 198
R.N. 6502/60 D(C)-104

मुक्ता

फरव

आठवां भारतीय
अंतरराष्ट्रीय
फिल्म समारोह

कवि सम्मेलन :
प्रपंच या मनोरंजन ?

साक्षात्कार में
जाने से पहले

पुरानी कार की
खरीदारी कैसे करें

2.75 रुपए

MUKTA March (Second) 198-
R.N. 6502/60 D(C)-104

मुक्ता

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

लेख

कथा साहित्य

कविताएं

स्तंभ

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

फरवरी (द्वितीय) 1981
अंक : 350

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स. प. प्रा. लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मुक्ता नाम रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा (केवल टिकट नहीं) आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

मूल्य : एक प्रति : 2.75 रुपए, एक वर्ष : 55.00 रुपए. विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 रुपए.

मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान :
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग :
एम—12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.

संपादक के नाम

जनवरी (प्रथम) अंक के 'मुक्त विचार' में 'शराब पीने की खुली छूट' शीर्षक टिप्पणी में व्यक्त आप के विचारों से मैं पूरी तरह से सहमत हूं.

सचमुच इंदिराजी ने शराब पीने की खुली छूट दे कर बड़ा ही घातक काम किया है. इस से न केवल जनता की अपितु देश की भी दशा खराब होगी.

ऐसा भी तो नहीं है कि देश के अधिकांश आर्थिक पहलू इसी पर निर्भर हों. फिर जब पश्चिमी देशों ने भी, जहां शराब पीना एक आम बात है, इस पर प्रतिबंध लगाना शुरू कर दिया है तो इंदिराजी को भी यथाशीघ्र नशाबंदी लागू कर एक आदर्श उपस्थित कर देना चाहिए.

—**नरेशप्रसाद पंजियारा**

✦

बिहार का 'आंख फोड़वा कांड' मानव समाज के सामने अमानुषिकता व गैरकानूनी दंड का एक जीताजागता उदाहरण है. इस की जितनी निंदा की जाए थोड़ी है. फिर भी भागलपुर की जनता ने ऐसे जघन्य कुकृत्य का समर्थन कैसे किया? यह विचारणीय प्रश्न है. क्या जन आक्रोश आंख फोड़ने जैसे जघन्य अपराध को ठीक बताता है? वास्तव में जन आक्रोश सरकार की सुरक्षा प्रदान करने की असफलता का द्योतक है.

यहां का जनजीवन चोरों, डकैतों और बलात्कारी हैवानों से आक्रांत है. कोई भी अपने को, अपने धन को, अपने परिवार को सुरक्षित नहीं समझता. सरकार और पुलिस के प्रति चारों ओर अविश्वास का वातावरण व्याप्त है. इन अपराधियों में कुछ के भयंकर कांड दिल को दहलाने वाले हैं. इन का आतंक इस कदर व्याप्त था कि लोग चुप रहने में ही कल्याण समझते थे.

पुलिस जब इन के कार्यों को रोक सकने में समर्थ थी तब तो रोकने के बदले हिस्सेदार रही, जब इन की ताकत ने पुलिस को भी चुनौती दे दी और उसे हिस्से मिलने बंद हो गए तो पुलिस वाले भी जागे. जनता तो परेशान और आतंकित थी ही इसलिए चाहती थी कि कोई इन दुष्टों से पल्ला छुड़ाए. सो पुलिस ने इस जनभावना का लाभ उठाया.

यहां जन आक्रोश इतना प्रबल है कि मानवता की चीखपुकार उस में दब कर रह जाती है. जब तक सुरक्षा का वातावरण नहीं बनता, यहां की स्थिति सामान्य नहीं बन सकती. यही कारण है कि भागलपुर की जनता पुलिस की इस क्रूरता को नहीं समझ पाई और पुलिस द्वारा इन दुष्टों के अतिरिक्त अन्य लोगों की आंख फोड़ देने जैसे बुरे कर्म की निंदा करने में असमर्थ रही. पुलिस अभी

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

भी इस भावना का पूरापूरा [illegible]
रही है.

—जगदंबीप्रसाद यादव
(भू. पू. केंद्रीय राज्य मंत्री)

◆

दिसंबर (द्वितीय) अंक के 'मुक्त विचार' में 'कालेधन का कारण अधिक कर' शीर्षक टिप्पणी पढ़ी. वास्तव में सरकार सब कुछ जानते हुए भी प्रति वर्ष करों में वृद्धि करती जाती है. कर वृद्धि के कारण ही काले धन का जमाव अधिक हो रहा है. यही वजह है कि व्यक्ति अपने जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए सभी प्रकार के हथकंडे अपनाने लगा है. मैं आप के विचारों से सहमत हूं कि यदि काले धन को समाप्त करना है तो करों में छूट देना आवश्यक है.

इसी अंक में 'भारतीय पुलिस और भयभीत ग्रामीण' (लेख : राजेंद्र जैन) पढ़ा. यह बिलकुल सही है कि आज हमारे यहां की पुलिस में नैतिकता समाप्त हो गई है. मैं अपने गांव में पिछले माह घटी एक घटना बताता हूं. गांव के एक व्यापारी को यहां के थानेदार ने दो दिन बंद रख कर अकारण ही मारापीटा, क्योंकि उस ने थानेदार को पैसे देने से इनकार किया था. बाद में स्थानीय नेताओं की कोशिशों एवं समाचारपत्रों में समाचार छप जाने से ही थानेदार के खिलाफ काररवाई हो सकी. —अनिल मंडलोई

◆

दिसंबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'खूंखार डकैतों की घाटी' में यह जानकारी दी गई है कि इस समय आत्मसमर्पित बागी 'नवजीवन शिविर, मुंगावली' नामक जेल में रह रहे हैं. तथ्य यह है कि सब बागियों को कई महीने पहले ही रिहा किया जा चुका है और वर्तमान में यह शिविर पूर्णत: खाली पड़ा हुआ है.

—शरद नारायण खरे

◆

नवंबर (द्वितीय) अंक में 'घोटालों और झगड़ों से घिरा दिल्ली क्रिकेट संघ' (लेख : विशेष प्रतिनिधि) पढ़ा. आप के बेबाक निष्कर्ष के लिए धन्यवाद.

आश्चर्य होता है कि इतने होहल्ले के बावजूद सरकार राजनीतिबाजों को खेलकूद के मामले में टांग क्यों अड़ाने देती है ? हमारे यहां विश्व स्तर के कितने ही खिलाड़ी हैं, लेकिन इन राजनीतिबाजों के कारण उन की प्रतिभा सिकुड़ कर रह जाती है.

इसी अंक में प्रकाशित 'पगला बाबू' (कहानी : नरेंद्र शास्त्री) हृदय को झकझोर देती है. —संजयकुमार सिन्हा

◆

अक्तूबर (द्वितीय) अंक में 'हिजड़े' (लेख: विवेक सक्सेना) पढ़ा. इस में व्यक्त बहुत से तथ्य ऐसे हैं जिन पर विश्वास नहीं किया जा सकता, जैसे कि हिजड़े जन्म से नहीं पैदा होते हैं.

स्त्री हिजड़ों की आम औरतों की तरह ही अपनीअपनी शारीरिक बनावट के अनुरूप बड़ीबड़ी मध्यम तथा छोटी छातियां (स्तन) होती हैं. उन के बाहरी मेकअप तथा लिबास से उन्हें कोई हिजड़ा नहीं कह सकता जब तक कि उन का ढका यौनांग न देख लें.

दूसरी बात, मैं लेखक के इस कथन से भी सहमत नहीं हूं कि "जनाने हिजड़े वे पुरुष होते हैं, जो अपना लिंग कटवा देते हैं. वैसे वे हर प्रकार से पूर्ण पुरुष होते हैं. उन के परिवार होते हैं. जनाने हिजड़ों के मर्द उन की काम तृप्ति करते हैं."

इस संबंध में मेरा कहना है कि उन हिजड़ों में स्वयं स्त्री जाति के हिजड़े भी होते हैं तो फिर यह लिंग कटवा कर स्त्री हिजड़ा बनने में क्या तुक है? यह बात मेरी समझ में नहीं आई. स्त्री हिजड़े के रहते हुए पुरुष के अपना लिंग कटवा कर स्त्री हिजड़ा बनने की बात कुछ विचित्र सी लगती है. जहां तक काम पिपासा का संबंध है, वे 'पैसिव' सहगामी 'ऐक्टिव' कभी नहीं हो सकते.

—डा. विश्वनाथ तरुण

लेखक का उत्तर

अक्तूबर (द्वितीय) अंक में प्रकाशित मेरे लेख 'हिजड़े' में दिए गए तथ्यों को अप्रामाणिक मानते हुए यह कहना कि असली हिजड़ों की एक जाति होती है और वे जन्मजात ही पैदा होते हैं. तर्कसंगत नहीं है. जब हिजड़े खुद बच्चे पैदा करने में असमर्थ होते हैं तो वे अपनी जाति कैसे बढ़ा सकते हैं?

दूसरी बात यह कि छातियां उभर आना कोई विशेष बात नहीं है. हारमोंस की गड़बड़ी या शरीर में चरबी बढ़ जाने के कारण कई पुरुषों की छातियां भी उभर आती हैं. मैं ने स्वयं लिखा है कि लाख दो लाख में कुछ बच्चे ऐसे हो सकते हैं जिन के यौनांग विकसित न हों. फिर चिकित्सा शास्त्र में भी कहीं हिजड़ों का उल्लेख नहीं है. इस बात को डाक्टरों ने भी स्वीकारा है कि लाख बच्चों में एकाध बच्चा ऐसा पैदा हो सकता है जिस का यौनांग ठीक तरह से विकसित न हो अथवा विकृत हो. पर ऐसे मामलों में शल्य चिकित्सा द्वारा उसे ठीक किया जा सकता है.

आम हिजड़े 'जनाने' व 'मरदाने' होते हैं. लिंग कटे हिजड़े जनाने व दूसरे 'मरदाने' या 'जनखे' कहलाते हैं जो पूर्ण पुरुष ही होते हैं, किंतु हिजड़ों के साथ रहते व उन के जैसा ही व्यवहार करते हैं.

लेख में यह भी एकदम स्पष्ट है कि हिजड़े अप्राकृतिक मैथुन के आदी होते हैं. अतः यहां 'ऐक्टिव' या 'पैसिव' होने का सवाल ही नहीं उठता. हिजड़े आसानी से अपने बारे में जानकारी न दे कर लोगों को गुमराह करते हैं. अधिक प्रामाणिक जानकारी के लिए आप 'इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' के आठवें खंड में पृष्ठ 822 पर 'युनुक' शीर्षक के अंतर्गत दी गई जानकारी को देखें. संसार में कहीं भी जन्मजात हिजड़े पैदा होने का उल्लेख नहीं मिलता.

—विवेक सक्सेना
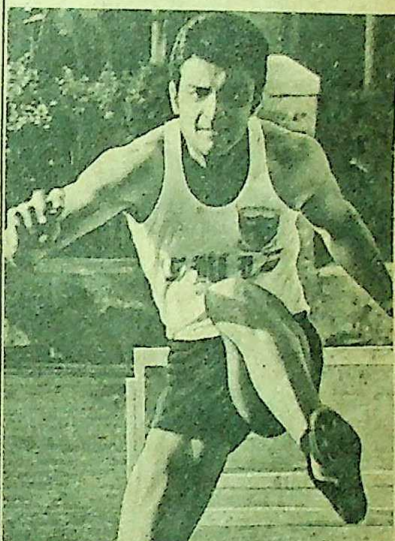
भूभारती
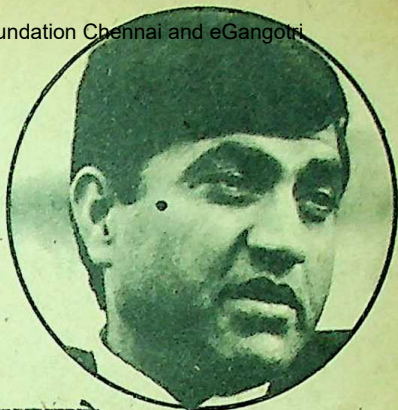
फरवरी (प्रथम) 1981 अंक के मुख्य आकर्षण

बड़े बजट की फिल्मों के बड़े कारनामे
करोड़ों रुपए की लागत से बनाई जाने वाली इन फिल्मों में जो धन लगाया जाता है वह कहां से आता है और फिर इन फिल्मों की सफलता के लिए कैसीकैसी योजनाएं अमल में लाई जाती हैं?

भारतीय जनता पार्टी और गांधीवादी समाजवाद
गांधीवाद और समाजवाद की कड़ियां जोड़ कर भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने बंबई अधिवेशन में लोगों को अपनी ओर कितना आकर्षित किया?

मध्य प्रदेश की राजनीतिक सरगरमियां
इस्तीफों की शुरुआत और गुटों की दलदल में फंसे इंदिरा कांग्रेस के नेताओं और केंद्रीय मंत्रियों के हंगामे.

बिहार के मुख्य मंत्री की बचाव की राजनीति
आर्थिक अपराधों से अपने आप को मुक्त कराने के लिए जगन्नाथ मिश्र क्याक्या कोशिशें कर रहे हैं.

राजेश पायलट मामूली सांसद या और कुछ...
राजीव गांधी के साथी, संजय के दोस्त और इंदिरा गांधी के नजदीकी समझे जाने वाले व्यक्ति की असलियत क्या है?

इन के अलावा
कहानी, राजनीतिक चुटकुले और सभी स्थाई स्तंभ.

आज ही खरीदें

संपादकीय

फरवरी (द्वितीय) 1981

मुक्त विचार

असंतुष्टों को सजा

श्रीमती इंदिरा गांधी संसद व विधान सभाओं में अपने दल के सदस्यों तथा मुख्य मंत्रियों के झगड़ों से अब तंग आ गई हैं. पिछले कुछ सप्ताहों से असंतुष्ट सदस्यों को आम तौर पर इंदिराजी से समर्थन मिलना तो दूर, उलटे अब उन से खुले आम झाड़ खानी पड़ रही है.

मध्य प्रदेश के एक वरिष्ठ नेता को तो उन्होंने दल से ही निकलवा दिया है क्योंकि वह मुख्य मंत्री अर्जुनसिंह की नाक में दम किए हुए था. आंध्र प्रदेश में भी उन्होंने ऐसा ही सख्त कदम उठाया है.

लगता है कि वह जनसाधारण की लगातार इस आलोचना से कि सरकार कहां काम कर रही है, भयभीत होने लगी हैं और अब कुछ कर दिखाने की कोशिश कर रही हैं. वरना हर मुख्य मंत्री, मंत्री या वरिष्ठ नेता के खेमे में लगातार फूट डलवाते रहना और उन्हें तलवार की नोक पर रखना उन का सब से प्रिय खेल था. इंदिराजी की राजनीतिक सफलता का सब से बड़ा श्रेय ही इस खेल को अच्छी तरह खेलने की क्षमता पर जाता है.

यद्यपि 1971 से सभी मुख्य मंत्री व संगठन की राज्य शाखाओं के अध्यक्ष उन के इशारों पर ही बनते रहे हैं, फिर भी हरेक को सदा ही किसी न किसी विरोध का लगातार सामना करना पड़ता रहा है. जब सभी कांग्रेसी इंदिराजी के प्रति निष्ठावान हैं तो वे उन के द्वारा चुने व्यक्तियों का विरोध कर ही कैसे सकते हैं? यह विरोध तो वे स्वयं इंदिराजी के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष वरदान से ही करते हैं.

इंदिराजी समझती हैं कि यदि उन्होंने अपने दल के किसी अन्य व्यक्ति को कोई छूट दे दी तो कहीं वह अपनी बुद्धिमत्ता, लोकप्रियता व सत्ता का लाभ उठा कर उन्हें ही धता न बता दे: इसलिए राजनीतिक आवश्यकता ही यह रही कि ऐसे व्यक्ति को चैन से न बैठने दिया जाए और उस का अधिकांश समय व शक्ति अपना घर ही ठीक करने में लगती रहे.

1969 से 1977 तक इंदिराजी ने ऐसा ही किया और अब फिर सत्ता में आ कर वैसा करने लगी हैं, जब कि इस बार उन के साथ चलने वाले कांग्रेसी पूरी तरह से उन पर आश्रित हैं.

इस से देश को जो हानि हुई है उस का मूल्यांकन तो संभव नहीं है पर पिछले 10 वर्षों की बिगड़ती आर्थिक स्थिति, बढ़ती कामचोरी और अराजकता के लिए

इस नीति को आसानी से दोषी ठहराया जा सकता है.

अब यदि परिस्थितियों के दबाव के कारण ही इंदिराजी को इस नीति में परिवर्तन करना पड़ा तो देश के लिए बहुत संतोष की बात होगी. फिर मुख्य मंत्री व अन्य मंत्री निश्चितता से जैसेतैसे अपनी योग्यता के अनुसार कुछ तो कर पाएंगे.

इं. कां. का विकल्प क्यों नहीं?

यद्यपि इंदिरा कांग्रेस की सरकार पिछले एक वर्ष में देश के लिए कुछ नया कर पाने की बात तो दूर, कानून व व्यवस्था तक ठीक नहीं कर पाई है, फिर भी उस के सत्ता से हटाए जाने के अवसर अभी भी कम ही हैं. इस का कारण है—जनसाधारण को विश्वास दिला सकने वाले विकल्प का अभाव.

जनता पार्टी के टूटने के बाद राजनीतिक दल बुरी तरह बिखर गए हैं. लोक दल, जनता पार्टी और अर्स कांग्रेस की तो बुरी हालत है. लोक दल के पास चरणसिंह हैं जिन की व्यक्तिगत लोकप्रियता उत्तर प्रदेश में तो है पर यह दल दूसरे दर्जे के नेताओं के अभाव में अपने पैर नहीं फैला पा रहा है. उलटे उस में अभी भी इतने अधिक आंतरिक विवाद हैं कि मतदाता उसे केंद्र की तो क्या नगरपालिका की जिम्मेदारी देते हुए भी घबराएंगे.

अर्स कांग्रेस और जनता पार्टी कांग्रेस छाप नेताओं के ही झुंड हैं जो न इतने छोटे और प्रभावहीन हैं कि किसी दूसरे दल में मिल सकें और न ही इतने कुशल और असाधारण क्षमता वाले कि अपने दलों को लोकप्रिय बना सकें. इन दोनों दलों के पास तो इंदिरा कांग्रेस से भिन्न नीतियां भी नहीं हैं.

अब बचा जनसंघ का नया संस्करण भारतीय जनता पार्टी जो मध्यमवर्गीय जनता में अपना प्रभाव बनाए रख रहा है.

इस का हाल का बंबई अधिवेशन काफी सफल रहा पर वह इस के कर्मठ कार्यकर्ताओं के कारण था, आम जनता के झुकाव के कारण नहीं.

इस के नेता अभी भी अपनी संकुचित विचारधारा से नहीं निकल पा रहे हैं. कहने को तो उन्होंने हिंदूहिंदी की नीति त्याग कर गांधीवादी समाजवाद का बाना ओढ़ लिया है पर इस से उन के व्यवहार में फर्क पड़ा है, यह सिद्ध नहीं होता.

कठिनाई यह है कि कांग्रेस (या इस की शाखाओं) को छोड़ कर सभी दल छोटेछोटे द्वीपों की तरह हैं. वे सभी धर्मों, भाषाओं, जातियों व वर्गों का संयुक्त रूप से नेतृत्व करने में असफल हो रहे हैं. हरेक के जितने समर्थक हैं, उस से कहीं ज्यादा विरोधी हैं.

जनता पार्टी यद्यपि खिचड़ी थी, पर वह वास्तव में कांग्रेस का विकल्प थी क्योंकि केवल उसी में हर धर्म, भाषा, क्षेत्र, नीति, जाति और वर्ग के लोग शामिल थे.

जब तक वर्तमान राजनीतिक दल अपना प्लेटफार्म इतना विस्तृत नहीं करेंगे, वे कांग्रेस का सही रूप में विकल्प नहीं बन पाएंगे.

न्यायाधीशों के भी तबादले

इंदिरा कांग्रेसी शासन में काम करने का सब से अच्छा तरीका धड़ाधड़ तबादले करना है. जब भी सरकार की किसी मामले में आलोचना हो या सरकार को किसी की आलोचना करनी हो तो एकदम तबादलों के हथियार का उपयोग कर लिया जाता है.

अब यह हथियार सरकार न्यायपालिका पर भी चला रही है. पिछले कई महीनों से केंद्रीय विधि मंत्री वकालत

कर रहे थे कि उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों के तबादले करने का सरकार को पूरा अधिकार है तथा यह देश के हित में है कि उन के तबादले किए जाएं. वह तो यहां तक कहते हैं कि तबादले इतने होने चाहिए कि किसी भी उच्च न्यायालय के अधिकांश न्यायाधीश राज्य के बाहर के ही हों.

हमारे संविधान ने उच्च न्यायालय व सर्वोच्च न्यायालय को बहुत अधिकार व स्वतंत्रता दी है. एक बार नियुक्त होने के बाद न तो किसी न्यायाधीश को पदावकाश की आयु से पहले निकाला जा सकता है, न उस का वेतन कम किया जा सकता है. अब तक सरकार का एक मात्र हस्तक्षेप नियुक्ति के समय था. पदोन्नति के मामले में राजनीतिबाज समयसमय पर अपना अधिकार इस्तेमाल कर के वरिष्ठतम न्यायाधीश को मुख्य न्यायाधीश बनाने से इनकार कर देते हैं पर इस में भी काफी विवाद होता है.

जो न्यायाधीश सरकारी नीति के अनुसार चलें, उन से तो कोई कठिनाई नहीं होती पर जो बिना जुर्म साबित हुए पकड़े गए लोगों को छोड़ते अथवा सरकार विरोधी निर्णय देते हैं, उन के मामलों में राजनीतिबाजों को काफी कठिनाई होने लगी थी.

इसलिए इस बार उत्तर प्रदेश, मद्रास व केरल उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों के तबादले कर दिए गए हैं. खेद की बात तो यह है कि तबादला करने से पहले संबंधित न्यायाधीश की सहमति भी नहीं ली गई.

इस के विरोध में एक न्यायाधीश ने तो त्यागपत्र दे दिया है पर बाकी दो विचार कर रहे हैं कि क्या किया जाए.

सरकार इन तबादलों से यह साफसाफ बता देना चाहती है कि यदि नौकरी करनी है तो हमारी मानो वरना हम पद पर जलील कर के ही काम करने देंगे. चूंकि तबादले का कोई नियत नियम या प्रक्रिया नहीं होगी, इसलिए सरकार जब मर्जी किसी पर इस्तेमाल कर सकेगी. जो न्यायाधीश सरकार विरोधी निर्णय देंगे, उन्हें कुछ नहीं कहा जाएगा.

वैसे ही हमारे देश में सरकार बहुत शक्तिशाली हो गई है. रेडियो और टेलीविजन सरकार के अपने ही हैं. समाचारपत्रों को सरकार विज्ञापन के डंडों से हांकती रहती है. अदालतें अभी तक सरकार को कानूनसम्मत काम करने पर बाध्य करने की क्षमता बनाए रख रही थीं. अब जनता का यह अधिकार भी छिनने लगा है क्योंकि सरकार, रोजरोज अदालतों के निर्णय में दखल दे सकेगी.

अमरीकी बंधक छूटे

ईरानियों ने तेहरान स्थित अमरीकी दूतावास के 52 राजनयिकों को लगभग 15 महीनों तक बंदी बना कर रखने के बाद आखिर छोड़ दिया. शुरू में ईरान के उद्दंड छात्रों ने इन लोगों को बंदी बना कर यह मांग की थी कि ईरान के भूतपूर्व शाह मुहम्मद रजा पहलवी को उन की अमरीका में मौजूद संपत्ति सहित ईरान को लौटाया जाए जहां उन पर मुकदमा चला कर उन्हें सजाए मौत दी जा सके. शाह की मृत्यु के बाद भी ईरान सरकार उन की संपत्ति की मांग करती रही थी.

संसार का सब से अधिक शक्तिशाली और समृद्ध देश होते हुए भी अमरीका इन बंधकों को छुड़ाने के लिए मात्र हाथपैर ही मारता रह गया. एक बार उस ने इन बंधकों को छुड़ाने के लिए सैनिक दस्ता भेजा भी पर उस का यह प्रयत्न बीच में ही असफल हो गया.

तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर इस अमरीकी असफलता के लिए काफी हद तक जिम्मेदार ठहराए जा सकते हैं क्योंकि चुनाव में रोनाल्ड रेगन

से उन के हारने के तुरंत बाद ही ईरानियों का रवैया ढीला पड़ने लगा और रेगन के राष्ट्रपति पद की शपथ लेने से कुछ क्षण पूर्व ही बंधकों को मुक्त कर दिया गया.

रोनाल्ड रेगन काफी अनुदार किस्म के व्यक्ति हैं और उन की पार्टी इस समय अमरीका की छवि सुधारने के लिए सख्ती की नीति की वकालत कर रही है. शायद यही वजह है कि मानव अधिकारों की दुहाई देने वाले जिमी कार्टर से तो ईरानी भयभीत नहीं थे पर जैसे ही राजनीति ने करवट ली ईरानी नेता व मुल्ला घबराने लगे.

इस घटना ने सिद्ध कर दिया है कि विश्व में जिंदा रहने के लिए शांतिशांति का पाठ पढ़ना महज मूर्खता है. जो शांति, अहिंसा की दुहाई देता है, विश्व उसे कायर और कमजोर समझता है, महान नहीं. पिछले कुछ वर्षों से अमरीका ने शांति की ज्यादा बातें करनी शुरू कर दी थीं, इसलिए रूस शक्ति का अधिक इस्तेमाल करने लगा था. अमरीकी अब समझ गए हैं कि संयुक्त राष्ट्र संघ के बावजूद अंतरराष्ट्रीय संबंध अब भी सैन्य शक्ति के आधार पर ही तय होंगे.

उद्योग बंद होने की आम वजह

भारत सरकार का एक संस्थान है भारतीय औद्योगिक पुनर्निर्माण निगम जो किन्हीं कारणों से बंद हुए उद्योगों को सहायता दे कर दोबारा अपने पैरों पर खड़े होने का अवसर देता है. ये उद्योग अधिकतर नागरिक क्षेत्र के होते हैं पर आमतौर पर यह निगम सहायता देने से पहले उद्योग को सरकारी प्रबंध में ले लेता है.

इस निगम के चेयरमेन ने स्वीकार किया है कि अधिकतर बीमार उद्योग कुप्रबंध के कारण नहीं, बाहरी कारणों से बंद होते हैं. इन में से सब से अधिक कारण हैं बिजली की कमी, महंगाई, सस्ती जबरन सरकारी खरीद, सूखा और कर्मचारियों के आंदोलन.

बहुत से उद्योग लगातार घाटे के बाद इसलिए बंद हुए क्योंकि उन का अधिकांश माल सरकार ही खरीद सकती थी. चूंकि सरकारी विभाग आसानी से दाम बढ़ाने को तैयार नहीं होते थे, इसलिए प्रबंधकों को घाटे में भी माल बेचना पड़ता था वरना उन को उद्योग बंद करना पड़ता जिस में और अधिक नुकसान होता.

बहुत से उद्योगों में पैसे की कमी के कारण आधुनिक मशीनें नहीं लग पातीं और उस से भी नुकसान बढ़ता जाता है.

सब से बड़ी बात जो उन्होंने कही है वह है यूनियनों की दखलअंदाजी. जिन उद्योगों को सरकार ने अपने हाथ में लिया और भरपूर आर्थिक सहायता भी दी, उन में से दोचार को छोड़ कर आज भी अधिकांश नुकसान में चल रहे हैं क्योंकि वहां की यूनियनें किसी तरह का अनुशासन कायम नहीं करने देतीं.

निगम अब सरकार से मांग कर रहा है कि औद्योगिक विवाद कानून में संशोधन किया जाए ताकि कर्मचारियों पर लगाम कसी जा सके और उत्पादन बढ़ाया जा सके.

जब स्वयं सरकारी अधिकारी मान रहे हैं कि उद्योगों में बीमारी की वजह कानून और बाहरी कारण हैं तो कोई वजह नहीं कि उद्योगपतियों को नाहक दोषी ठहराया जाए. सरकार का उद्योगपतियों से इतना अधिक द्वेष है कि भारी नुकसान की हालत में भी प्रबंधकों को यूनियनों के चंगुल से बचाने की कोशिश नहीं करती बल्कि उलटे श्रम अधिकारी यूनियनों को उकसाते रहते हैं. अतः जो सुविधाएं सरकारी प्रबंधक सरकारी उद्योगों को चलाने के लिए मांग रहे हैं, वैसी ही उद्योगपतियों को भी दी जानी चाहिए. ●

1980 में 30 से अधिक देशों में राजनीतिक कारणों से लोगों की अंधाधुंध हत्याएं की गईं. पूरे साल में कोई दिन ऐसा नहीं गया जिस दिन किसी न किसी को राजनीतिक कारणों से मौत के घाट न उतारा गया हो. आखिर मानव अधिकारों के हनन का यह सिलसिला कब तक चलेगा?

मुंह खोलते ही मौत

क्या मानवाधिकार का यही अर्थ है?

कहने को आज दुनिया का हर देश जनकल्याण, विश्व शांति, न्याय, जनमत और मानव अधिकारों की दुहाई देते नहीं थकता. पर कितने देश हैं, जो राजनीति के इन ऊंचे सिद्धांतों पर वास्तव में अमल करते हैं? बहुत से ऐसे देश हैं जो आवाज तो मानव अधिकारों की उठाते हैं, पर अपने यहां धार्मिक कानूनों की आड़ में मानव अधिकारों का गला घोटते हैं और अपने नागरिकों पर जुल्म करते हैं. कम्यूनिस्ट देश सब इनसानों की भलाई और बराबरी के ठेकेदार बन कर दूसरे देशों को जबरन कम्यूनिज्म का लबादा ओढ़े रहने को मजबूर करते हैं. तब यही कम्यूनिज्म आदमी पर आदमी के जुल्म का कारण बन जाता है. इन्हीं की देखादेखी आज लोकतांत्रिक देशों में भी मानवअधिकार सुरक्षित नहीं रह गए हैं.

विशेष रूप से राजनीतिक कारणों से लोगों को सताने, अपंग किए जाने या मार दिए जाने की घटनाएं इन दिनों बहुत बढ़ गई हैं. 'एमनेस्टी इंटरनेशनल' की 10 दिसंबर, 1980 को जारी पिछली वार्षिक रिपोर्ट में जो तथ्य दिए गए हैं, वे रोंगटे खड़े कर देते हैं. उन से कई सभ्य कहलाने वाले सफेदपोश देशों की कलई खुल जाती है. 416 पृष्ठों की इस रिपोर्ट में 110 देशों की मानव अधिकार और राजनीतिक स्वतंत्रता की स्थिति का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है.

रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले 12 महीनों में 30 से अधिक देशों में राजनीतिक कारणों से लोगों की अंधाधुंध हत्याएं की गईं. पूरे साल में कोई दिन ऐसा नहीं गया जिस दिन किसी न किसी को राजनीतिक कारणों से मौत के घाट न उतारा गया हो.

अफ्रीकी देश

हाल में आजाद हुए अफ्रीकी देश

लेख • सगीर किरमानी

जिंबाबवे के लोगों ने अपने यहां सैनिक शासन का दमनचक्र देखा है. वहां पिछले सैनिक शासन ने अपने राजनीतिक विरोधियों का जिस निर्ममता से सफाया किया उस की मिसाल कम ही मिलती है. जिन व्यक्तियों पर भी राजनीतिक विरोधी होने का शक होता था, उन्हें बिना कारण बताए गिरफ्तार कर लिया जाता था और सफाई का मौका दिए बिना सैनिक अदालत उन्हें मौत की सजा सुना देती थी.

पिछले वर्ष तीन अफ्रीकी देशों की सरकारों का पतन हुआ, जो वहां कई सालों से सत्ता में थीं. इन देशों की जो पिछली बातें अब प्रकाश में आ रही हैं उन से पता चलता है कि सत्ता में रहने वाले लोग अपने विरोधियों का किस तरह दमन करते थे और अब भी करते हैं.

अगस्त, 1979 में गिनी के राष्ट्रपति मैसी गुमेआ को सत्ता से हटा दिया गया. उन के ऊपर सामूहिक हत्या और मानव अधिकारों के हनन का आरोप लगाया गया. इसी अपराध में उन्हें फांसी दी गई.

सितंबर, 1979 में मध्यवर्ती अफ्रीकी साम्राज्य (अब मध्यवर्ती अफ्रीकी गणराज्य) के सम्राट बोकासा का तख्ता उलट दिया गया था. उन्हें हाल ही में फांसी की सजा सुनाई गई है. पांच महीने पहले ही उन की सरकार ने 100 स्कूली बच्चों को मौत के घाट उतार दिया था. बोकासा की इस कारण सारी दुनिया ने निंदा की थी.

अप्रैल, 1980 में लाइबेरिया के राष्ट्-

पति विलियम टॉलबर्ट को सत्ता से हटा दिया गया. इस के कुछ ही दिनों बाद उन की सरकार के 13 मंत्रियों और कुछ अफसरों को फांसी पर चढ़ा दिया गया. उन्हें अपनी सफाई देने का मौका भी नहीं दिया गया.

जाइरे में मानव अधिकारों को तहस-नहस करने की कई मिसालें कायम की गईं. यहां जेलों में राजनीतिक बंदियों की रहस्यमय मौतें हुईं. कई राजनीतिक लोग बिना कोई कारण बताए गिरफ्तार किए गए, उन्हें कड़ी से कड़ी यातनाएं दी गईं और सफाई का कोई मौका दिए बिना ही उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया.

इस के अलावा इथियोपिया में पिछले वर्ष बड़ी तादाद में राजनीतिक कैदियों को अमानवीय यातनाएं दिए जाने और मार डालने के समाचार मिले हैं. कैमरून की जेलों में हजारों राजनीतिक कैदी मौत से भी बदतर स्थिति में रह रहे हैं.

दक्षिण अफ्रीका में स्कूली बच्चों को लंबे समय तक नजरबंद रखे जाने की खबर है. इसी देश की सरकार ने विरोध का स्वर मुखर करने वाले बहुत से युवकों को बंदी बनाया. उन्हें अंगोला से पकड़ कर नांबिया ले जाया गया, जहां उन्हें पूरे साल तक शेष दुनिया से एकदम अलग-थलग रखा गया.

अमरीकी देश

'एमनेस्टी इंटरनेशनल' की रिपोर्ट के अनुसार पिछले साल आर्जेनटीना, चिली, अलसाल्वाडोर, ग्वाटेमाला, उरुग्वे, पैराग्वे आदि देशों में राजनीतिक विरोधियों को
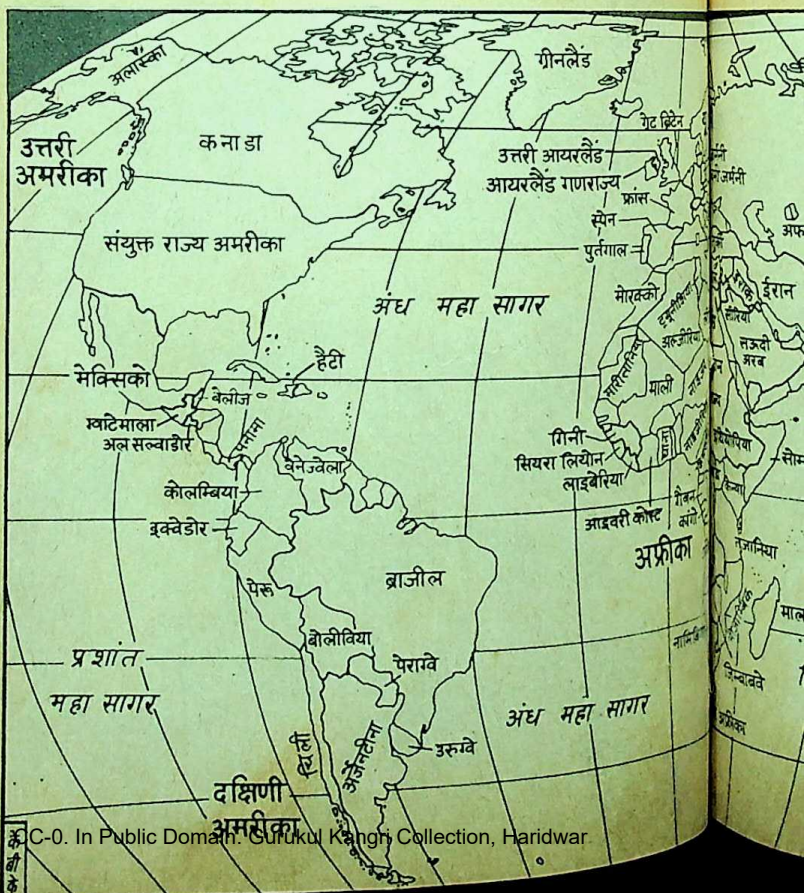
यातनाएं दिए जाने, उन्हें अज्ञात स्थानों पर ले जा कर मार डालने और बहुत बड़ी संख्या में लोगों को अकारण गिरफ्तार किए जाने की घटनाएं काफी तादाद में घटी हैं. रिपोर्ट में यह टिप्पणी भी की गई है कि मानव अधिकारों का हनन इन देशों की सरकारी नीति मालूम होती है.

अलसाल्वाडोर में हालांकि अक्तूबर, 1979 में नई सरकार सत्ता में आ गई, पर यहां लोगों को अमानवीय यातनाएं दिए जाने और मार डालने का सिलसिला पहले की तरह बराबर जारी रहा है.

ग्वाटेमाला की पुलिस ने वर्ष के पूर्वार्द्ध में 1,200 लोगों की हत्याओं के लिए एक गिरोह को दोषी ठहराया है. पर 'एमनेस्टी इंटरनेशनल' को इस बात के प्रमाण मिले हैं कि इन सभी लोगों की हत्याओं में स्वयं ग्वाटेमाला की सरकार का हाथ था.

एशियाई देश

एशियाई देशों में भी राजनीतिक विरोधियों को परेशान करने और सफाई का मौका दिए बिना बंदी बनाए रखने की घटनाएं जारी हैं. मलयेशिया और सिंगापुर में बहुत से राजनीतिक कैदी बिना मुकदमा चलाए जेलों में अनिश्चित-काल से बंद हैं.

ताइवान तक में बहुत से राजनीतिक कैदियों को इस तरह कैद किया हुआ है कि वे किसी से मिलजुल भी नहीं सकते. शेष दुनिया से उन का कोई संबंध नहीं रहने दिया गया है. यह यातना उन्हें उस समय तक दी जाएगी, जब तक वे अपने ऊपर लगाए गए 'आरोपों' को स्वीकार
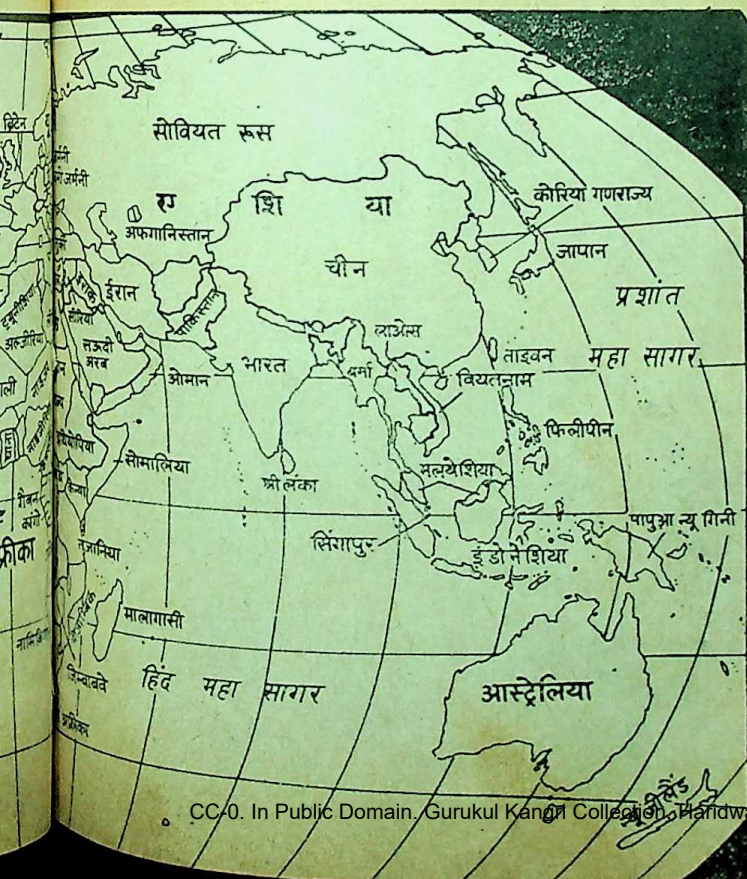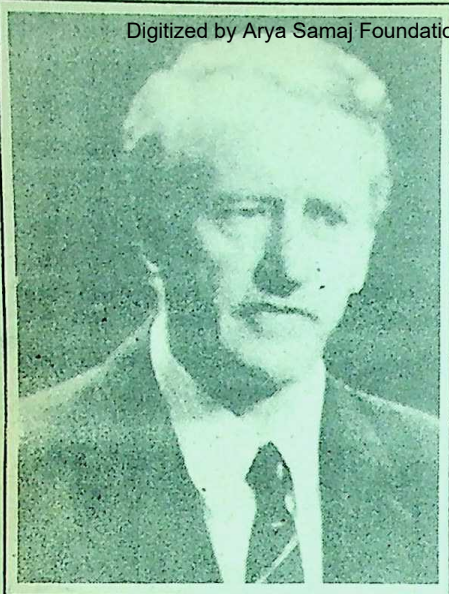
इवान स्मिथ (रोडेशिया—अब जिंबाबवे) : जिस निर्ममता से राजनीतिक विरोधियों का सफाया किया क्या उस की मिसाल कहीं भी मिल सकती है?

नहीं कर लेते. अपराध स्वीकार करने का क्या नतीजा होगा, यह बताने की आवश्यकता नहीं.

कोरिया गणराज्य में राजनीतिक विरोधियों को तरहतरह के मुकदमों में फंसाया गया और राजनीतिक स्वतंत्रता के सारे अंतरराष्ट्रीय कानून ताक पर रख दिए गए.

पाकिस्तान में राजनीतिक बंदियों को जब सैनिक अदालतों के सामने ले जाया जाता है तो उन्हें वकील साथ लाने की अनुमति नहीं होती. ये बंदी सैनिक अदालतों द्वारा सुनाए गए मनमाने फैसलों के खिलाफ कोई अपील भी नहीं कर सकते.

चीन में लागू हुए नए कानून से मानव अधिकारों की सुरक्षा होगी, इस की बड़ी आशा थी. पर 'एमनेस्टी इंटरनेशनल' की इस रिपोर्ट के अनुसार वहां मानव अधिकारों और नागरिक स्वतंत्रता की

निरंतर [illegible] की प्रक्रिया अब भी जारी है.

इंडोनेशिया में हजारों राजनीतिक कैदियों को 1965 से बिना कोई मुकदमा चलाए बरसों बंदी रखा गया. उन पर सरकार का तख्ता उलटने का आरोप था. यद्यपि अब उन्हें रिहा किया जा चुका है लेकिन प्रामाणिक रिपोर्टों के अनुसार 'फ्रेटिलिन स्वतंत्रता आंदोलन' से संबंधित बहुत से कैदी अभी भी लापता हैं. ऐसा समझा जाता है कि उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया है.

वियतनाम और लाओस में हजारों लोगों को 'नए सिद्धांत सिखाने' के नाम पर कैंपों में रखा जाता है. 'एमनेस्टी इंटरनेशनल' का एक मिशन दिसंबर, 1979 में वियतनाम गया था. उस ने रिपोर्ट दी थी कि 26,000 लोगों को ऐसे कैंपों में रखा हुआ है. खबर है कि मार्च, 1980 में इन

मध्यवर्ती अफ्रीकी साम्राज्य (अब मध्यवर्ती अफ्रीकी गणराज्य) का सम्राट बोकासा : स्कूली बच्चों तक को मौत के घाट उतारने का जघन्य अपराध किया.
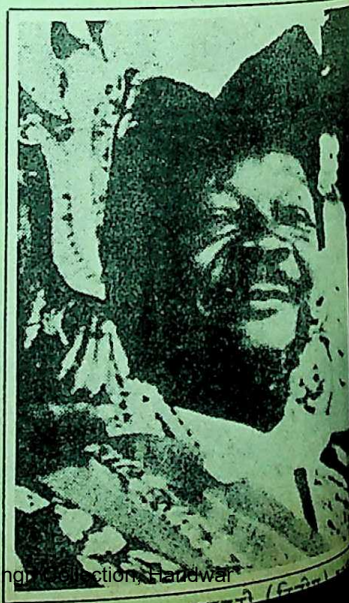
कैंपों से 2,000 लोगों को छोड़ दिया गया.

यूरोपीय देश

पूर्वी यूरोप में तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता लगभग समाप्त ही हो गई है. सोवियत रूस में 'सोवियत विरोधी प्रचार' और रूमानिया में 'असामाजिक आचरण के लिए लोगों को उकसाने' के आरोप में अनगिनत लोगों को बंदी बनाया जाना जारी है. युगोस्लाविया में सरकार विरोधी प्रचार करने वालों को अब भी फांसी की सजा दी जा रही है.

सोवियत रूस में अक्तूबर, 1979 और अप्रैल, 1980 के बीच 100 से ज्यादा सरकार विरोधी लोगों को गिरफ्तार किया गया या उन पर मुकदमे चलाए गए और अंत में उन्हें फांसी दे दी गई.

पूर्वी जरमनी में बिना अनुमति के देश छोड़ कर जाने का प्रयास करने वाले व्यक्ति बड़ी तादाद में कैद किए गए हैं.

पूर्वी यूरोप के कुछ देशों में राजनीतिक विरोधियों और सरकारी नीतियों से असहमत व्यक्तियों को गिरफ्तार करने और पुलिस थानों में बुला कर उन्हें अमानवीय यातना देने की घटनाएं भी घटी हैं. ऐसे देशों में पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया और रूमानिया का नाम खास तौर से लिया जा सकता है.

पश्चिमी यूरोप के कुछ देशों में भी शांतिपूर्वक और अहिंसक ढंग से अपने विचार व्यक्त करना जुर्म माना जाता है. ऐसे लोगों को पुलिस वहां घर लेती है और उन्हें तरहतरह की यातनाएं देती है. यदि पकड़े गए व्यक्तियों की कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि होती है तो उन पर विशेष अदालतों में मुकदमे चलाए जाते हैं और उन्हें कड़ी सुरक्षा वाली जेलों में रखा जाता है.

तुर्की में भी राजनीतिक कैदियों को सख्त यातनाएं दी जाने की घटनाएं घटी हैं. स्पेन में 'एमनेस्टी इंटरनेशनल' के मिशन ने कई ऐसे कैदियों के बारे में पता लगाया है, जिन्हें बाहरी दुनिया से पूरी तरह अलग नजरबंद रख कर सख्त यातनाएं दी जा रही हैं.

रूसी राष्ट्रपति ब्रेझनेव व अफगान शासक बबरक करमाल : रूस अपने ही देश में नहीं अफगान में भी हस्तक्षेप कर के वहां भी राजनीतिक स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने में लगा हुआ है.
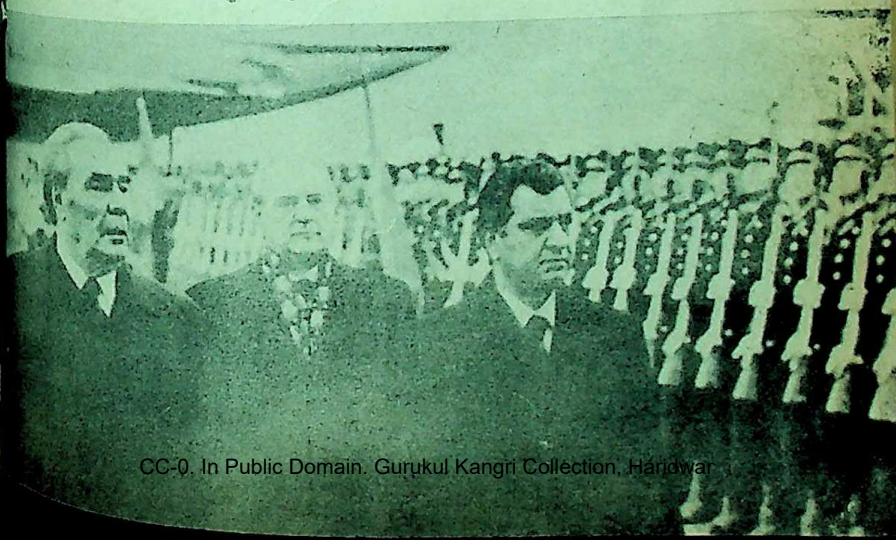
स्पेन उन कुछ पश्चिमी यूरोपीय देशों में एक है, जहां अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर कड़ा अंकुश है. वहां लेखकों, पत्रकारों और संपादकों को गिरफ्तार कर के अदालत के कटघरे में खड़ा करने की घटनाएं आम हैं.

पश्चिम जरमनी, फ्रांस, पुर्तगाल और इटली में भी मानव अधिकारों की हालत कमोबेश ऐसी ही है.

उत्तरी आयरलैंड, आयरलैंड गणराज्य और फ्रांस में राजनीतिक विरोधियों का दमन करने के लिए विशेष अदालतों की व्यवस्था की गई है.

मध्यपूर्वी और उत्तरी अफ्रीकी देश

ईरान में फरवरी, 1979 और अप्रैल, 1980 की क्रांति में लगभग 1,000 लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया. ज्यादा-

आयतुल्लाह खुमैनी (ईरान) : फरवरी 79 से अप्रैल 80 के बीच लगभग एक हजार लोगों को बिना कोई सुनवाई के मौत के घाट उतार दिया गया.

मानव अधिकारों के प्रति उदासीनता क्यों?

संयुक्त राष्ट्र संघ ने 10 दिसंबर, 1948 को मानव अधिकारों की रक्षा के लिए एक घोषणापत्र जारी किया था. बाद में इस घोषणापत्र को कानूनी हैसियत देने के लिए संधिपत्र का रूप दे दिया गया.

इस संधि के तहत विभिन्न देशों के लिए तीन प्रतिज्ञापत्र तैयार किए गए.

1. आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए प्रतिज्ञापत्र.

2. नागरिक व राजनीतिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए प्रतिज्ञापत्र.

3. एक ऐच्छिक प्रतिज्ञापत्र, जिस पर हस्ताक्षर करने वाले देश के मामले में सामान्य लोगों की इन शिकायतों पर भी संयुक्त राष्ट्र संघ की मानव अधिकार समिति विचार कर सकती है कि वह देश प्रतिज्ञापत्रों के अनुसार अपने लोगों को स्वतंत्रता व सुविधाएं नहीं दे रहा है.

इन तीनों प्रतिज्ञापत्रों पर हस्ताक्षर करने एवं इन की पुष्टि करने वाले देश केवल 18 हैं: कोलंबिया, डेनमार्क, इक्वेडोर, फिनलैंड, जमैका, मैडागास्कर, मारीशस, बारबाडो, नार्वे, डोमिनिकन गणराज्य, पनामा, आस्ट्रिया, गिनी, अलसाल्वाडोर, इटली, होंडुरास, नीदरलैंड, कोस्टारिका और सेनेगल.

चीन, भारत, पाकिस्तान, जापान, बर्मा, नेपाल, अफगा-

अनवर सादात (सऊदी अरब) : पिछले वर्ष ऐसे 79 व्यक्तियों को फांसी दे दी गई जिन पर राष्ट्रद्रोही होने का आरोप था.
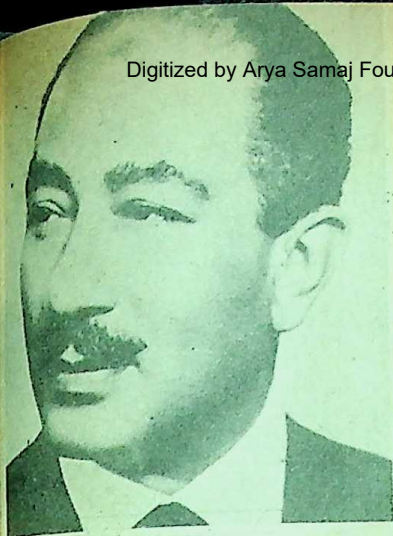
कर मामलों में कोई पेशी और सुनवाई नहीं हुई.

इराक का हाल इस से बदतर नहीं तो अच्छा भी नहीं है. यहां राजनीतिक विरोधियों के अलावा उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया जाता है, जिन पर जरा भी सरकार से असहमत होने का शक होता है. पिछले वर्ष कई ऐसे व्यक्तियों को यहां फांसी दे दी गई. इसी प्रकार सीरिया और लीबिया से भी राजनीतिक विरोधियों को मार डालने के समाचार मिले हैं.

'एमनेस्टी इंटरनेशनल' को पता चला है कि सऊदी अरब में पिछले 12 महीनों में ऐसे 79 व्यक्तियों को फांसी दे दी गई, जिन पर राष्ट्रद्रोही होने का आरोप था. सऊदी अरब में मुकदमा चलाए बिना लोगों को बरसों जेल में डाले रखना एक

निस्तान, श्रीलंका, इथियोपिया, अलबानिया, फिजी, फ्रांस, घाना, मलयेशिया, इंडोनेशिया, मैक्सिको, मोजांबीक, कोरिया, सिंगापुर, सूडान, सऊदी अरब, वियतनाम, तुर्की और यमन ऐसे राष्ट्र हैं, जिन्होंने तीनों में से किसी भी प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर नहीं किए.

अमरीका, रूस, इंगलैंड, पूर्वी जरमनी, पश्चिम जरमनी, फिलीपीन, साइप्रस, पेरू, लेबनान, केनिया, ईरान, कनाडा, लीबिया, मंगोलिया, ट्यूनीशिया, तंजानिया, इराक, स्पेन, अलजीरिया, बेल्जियम, मोरक्को, न्यूजीलैंड, लाइबेरिया, पुर्तगाल, आर्जेनटीना, मिस्र, युगोस्लाविया, रूमानिया, पोलैंड, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, चिली, बुलगारिया आदि देशों ने पहले दो प्रतिज्ञापत्रों पर हस्ताक्षर कर ऐच्छिक प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर से इनकार कर दिया है.

ऐच्छिक प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर नहीं करने का अर्थ है कि ये देश नहीं चाहते कि इन के खिलाफ मानव अधिकारों के हनन की शिकायतों पर संयुक्त राष्ट्र संघ विचार करे.

आखिर संसार के अधिकतर देश अपने नागरिकों के लिए सामाजिक व राजनीतिक अधिकारों की सुरक्षा की लिखित गारंटी देने से क्यों कतरा रहे हैं?

दुनिया के ज्यादातर देशों की मानव अधिकारों के प्रति यह उदासीनता जाहिर करती है कि इन देशों द्वारा बुलंद किए जाने वाले विश्व शांति, जनकल्याण और मानवता के नारे खोखले हैं. अधिकतर देशों के सत्तारूढ़ लोग केवल अपनी ही सुरक्षा के लिए ज्यादा चिंतित हैं और विरोधियों को ज्यादा से ज्यादा सताने के अपने रास्ते खुले रखना चाहते हैं.

जिया उल हक (पाकिस्तान) : सैनिक अदालतों को राजनीतिक बंदियों के मुकदमों में मनमाने फैसले करने की छूट.

आम बात है.

मिस्र में खास तौर से वामपंथी विचारधारा वाले लोगों को जेलों में बंद कर दिया गया है और उन के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है. मोरक्को में हड़ताल करने वाले मजदूर संगठनों के लोगों को बिना मुकदमा चलाए जेलों में कैद कर दिया गया है. ट्यूनीशिया भी मोरक्को का अनुकरण कर रहा है. इसी प्रकार इजराइल की जेलों में भी राजनीतिक बंदियों के साथ बुरा सलूक किया जाता है.

लोग लापता कर दिए जाते हैं

'एमनेस्टी इंटरनेशनल' ने राजनीतिक विरोधियों को सताए जाने की एक और प्रवृत्ति की तरफ संसार का ध्यान खींचा है. यह है—विरोधियों को गायब कर दिया जाना.

संसार के विभिन्न देशों में सत्तारूढ़ लोगों के बहुत से विरोधी लंबे अरसे से लापता हैं. वहां की सरकारों ने यह घोषित किया हुआ है कि वे गायब हो गए हैं, पर वास्तविकता यह है कि उन्हें चुपके से मार दिया गया है.

यह तरीका उन सरकारों का है जो दिनरात मानव अधिकारों की सुरक्षा की दुहाई देती रहती हैं और अपने लोगों और संसार की नजरों में अपनी भली छवि बनाए रखना चाहती हैं.

'एमनेस्टी इंटरनेशनल' को सीरिया, आर्जेनटीना, ब्राजील, अफगानिस्तान, चिली, इराक, ईरान, हेटी, मैक्सिको आदि की जेलों से काफी बड़ी तादाद में लोगों के गायब हो जाने (यानी गायब कर दिए जाने) की खबरें मिली हैं.
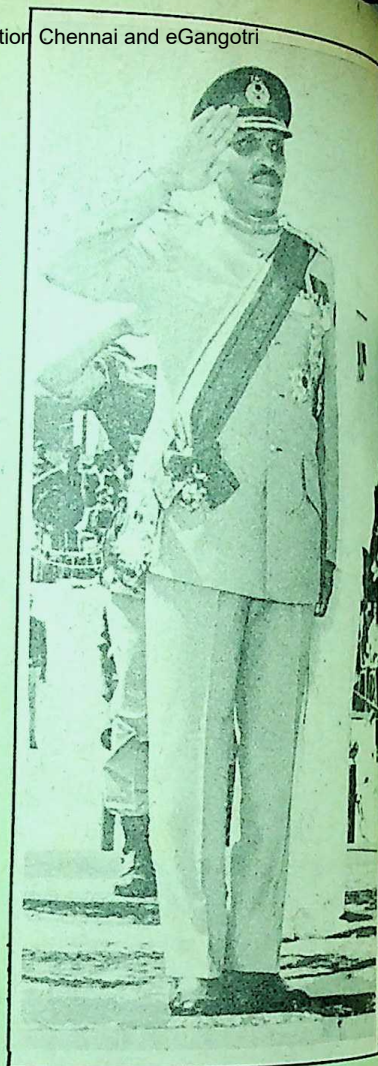
'एमनेस्टी इंटरनेशनल' ने गायब हुए व्यक्तियों के बारे में पता लगाने का भी प्रयास किया. सीरिया की पामायरा नामक रेगिस्तानी जेल से हजारों कैदियों के गायब हो जाने की सूचना खुद सीरिया सरकार ने प्रसारित की. 'एमनेस्टी इंटरनेशनल' ने इन सूचनाओं पर गंभीरता से ध्यान दिया और लापता लोगों के बारे में पता लगाने का प्रयत्न शुरू कर दिया.

मालूम हुआ है कि सीरिया की उक्त जेल से गायब घोषित किए गए लोग एक अनजान स्थान पर ले जाए

पार्क चुंग (कोरिया) : यहां भी राजनीतिक स्वतंत्रता के सारे अंतरराष्ट्रीय कानून ताक पर रख कर विरोधियों को तरहतरह के मुकदमों में फंसाया गया.

सादाम हुसैन (इराक) : सरकार से असहमत लोगों को भी गिरफ्तार करने का सिलसिला जारी है.
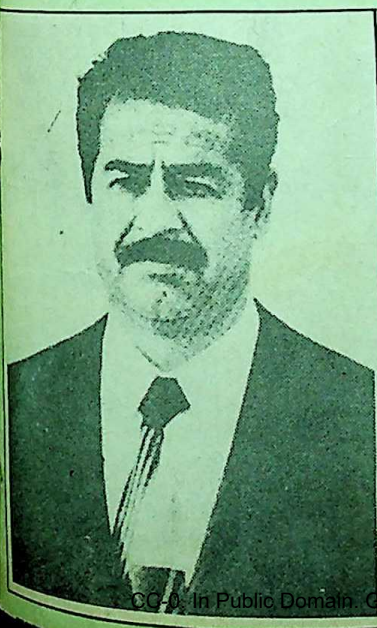
गए और उन्हें गोलियों से भून दिया गया. इस के अलावा 20 लोगों को मौत की सजा दिए जाने की बात स्वयं सरकार ने स्वीकार की है.

सूडान की जेलों से भी सैंकड़ों राजनीतिक बंदियों के गायब होने के समाचार मिले हैं. वे कहां होंगे, इस का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है.

फरवरी, 1980 में ईरान में 80 फिदाई आतंकवादियों को जान से मार डाला गया और सरकार ने उन्हें 'लापता' घोषित कर दिया.

चिली में सितंबर, 1973 में बड़ी तादाद में लोगों को पकड़ा गया था. उन्हें एक राजनीतिक बंदी शिविर में रखा गया, ऐसी सूचना खुद चिली सरकार ने दी थी. फिर सरकार ने घोषणा की कि ये बंदी 'गृहयुद्ध' के दौरान गायब हो गए और सरकार उन का पता लगाने की कोशिश कर रही है. अक्तूबर, 1979 में इन गायब लोगों की लाशें यूबेल शहर के एक कब्रिस्तान में पाई गई हैं.
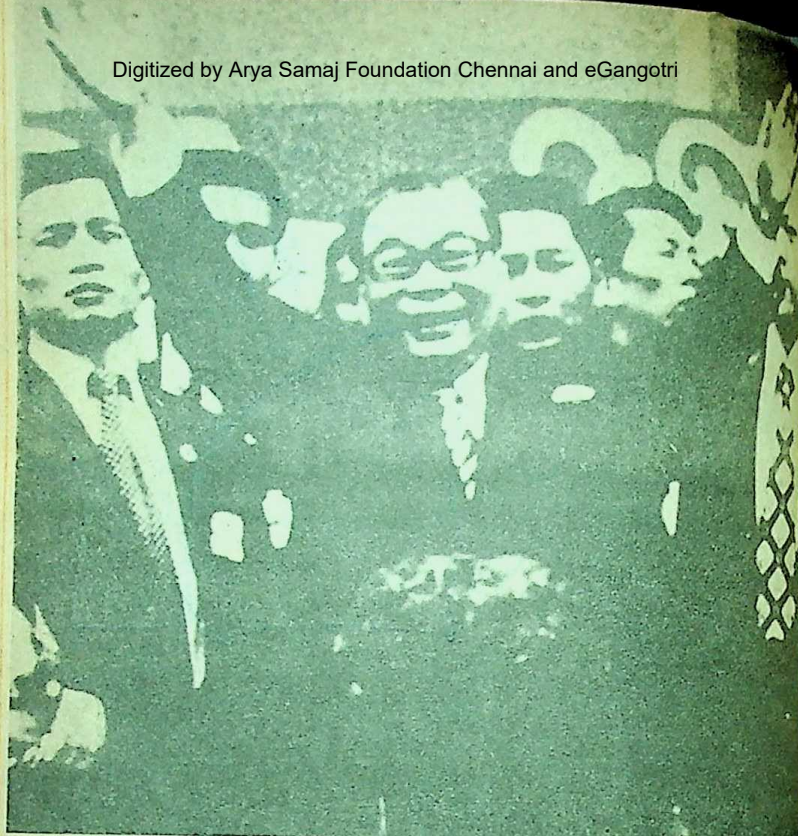
ताइवान के राष्ट्रपति च्यांग चिंग कुओ : राजनीतिक कैदियों का शेष दुनिया से संबंध विच्छेद कर उन्हें यातनाएं देने का सिलसिला कब तक जारी रहेगा?

20 जून, 1979 को अर्जेनटीना से 2,665 व्यक्तियों के गायब होने की सूचना 'एमनेस्टी इंटरनेशनल' को मिली. इन सभी व्यक्तियों के नाम व पते भी प्रकाशित किए गए थे. मार्च, 1980 में इस सूची के नामों की संख्या बढ़ कर 3,600 तक पहुंच गई. ऐसा संदेह है कि ये तमाम लोग मौत की गोद में भेज दिए गए.

बंदियों को गायब करने का प्रशिक्षण

'एमनेस्टी इंटरनेशनल' को एक ऐसे प्रशिक्षित गिरोह की जानकारी भी मिली है, जिस के सदस्यों को ब्यूनस आयरस के एक सैनिक कालिज में जेलों से बंदियों को गायब करने का बाकायदा प्रशिक्षण दिया गया था.

अफगानिस्तान सरकार ने तो खुद ही यह घोषणा की है कि देश की जेलों से हजारों की तादाद में लोग गायब हो गए हैं. 'एमनेस्टी इंटरनेशनल' को शक है कि ये सब कैदी किसी अज्ञात स्थान पर ले जा कर मार दिए गए हैं.

हेटी की सरकार ने 151 कैदियों के गायब होने की सूचना प्रसारित की थी. 'एमनेस्टी इंटरनेशनल' को प्रमाण मिले हैं कि इन में से ज्यादातर को मार डाला गया और कुछ लोग जेलों में बीमारी और इलाज के अभाव के कारण मर गए.

इसी प्रकार इराक की जेलों से भी बड़ी संख्या में राजनीतिक कैदियों के गायब हो जाने की खबरें प्राप्त हुई हैं. ●

दक्षिण पश्चिम भारत के कर्नाटक राज्य के कुर्ग जिले में रोज की चर्चा या मुख्य बातचीत का विषय अब बरसात नहीं है.

जंगलों से परिपूर्ण यह क्षेत्र धरती पर एक हरे टुकड़े की तरह दिखाई देता है. काफी बागानों, संतरे, काजू, इलायची के बगीचों तथा धान के खेतों वाले इस क्षेत्र में पानी बसंत और गरमी के दौरान बरसता है.

पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी शुरू में हुई बरसात प्रभावकारी नहीं रही. बसंत के खतम होने तथा गरमी के जाने पर बरसात नहीं हुई.

कई सप्ताहों की हलकी गरमी, कई महीनों की मानसूनी बरसात, ऊंचाई तथा उपजाऊ जमीन ने कुर्ग को भारत का आदर्श 'काफी क्षेत्र' बना दिया है.

साठ मील लंबे और 40 मील चौड़े इस काफी क्षेत्र में बरसात कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले 6,00,000 लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण घटना होती है.

अपने को कशमीरियों के वंशज बताने वाले कोदवार जाति के लोगों के इस सुरक्षित, शांत और संपन्न क्षेत्र में सालाना 150 इंच बरसात होती है.

कावेरी नदी के उद्गम स्थल बाघमंडल में मानसूनी बरसात साल में 300 इंच तक पहुंच जाती है. बंगाल की खाड़ी तक कावेरी नदी के किनारे अतीत में जाने कितने साम्राज्य उदय और अस्त हुए.

इस छोटे से राज्य में साल में बरसात पूर्वी कुर्ग की तरह 60 इंच भी हो सकती है.

फिर भी कुर्ग में आजकल 45,000 हैक्टेयर में काफी की खेती होती है जबकि भारत में कुल 1,90,000 हैक्टेयर में काफी पैदा होती है.

काफी की खेती करने वाले, पौध विशेषज्ञ और कृषि अर्थशास्त्री तथा अन्य

लोग बाहर से आने वालों को बताते हैं कि पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी अप्रैल में अच्छी बरसात नहीं हुई. यह संवाददाता कुर्ग में जब लोगों से मिला तो भारत के 1,00,000 काफी उत्पादकों में से, जिन में से बहुत से छोटे उत्पादक हैं, अधिकतर लोग काफी बागानों में बातचीत और नोकझोंक के दौरान इसी तथ्य को दोहराते रहे.

"पूरे विश्व में काफी का उत्पादन काफी की फसल पर निर्भर करता है. इस वर्ष काफी की फसल ठीक होगी. हालांकि फसल थोड़ी होगी. हम में से हजारों के लिए अच्छी फ़सल नहीं होगी. ध्यान रखिए अच्छी फसल नहीं..." ब्रिटेन के रायल कालिज आफ एग्रीकल्चर में पढ़े एक युवा कोदवा काफी उत्पादक ने बताया.

कुर्ग के बहुत से काफी उत्पादक, जि... में से आज अधिकतर भारत के अन्य क्षे... के गैर कोदवा हैं, बरसात से चिंतित नहीं थे. मानसून अब दूर नहीं है और... काफी की फसल और निर्यात के लि... उपलब्ध होने के लिए निर्णायक होगी... सैकड़ों कोदवा लोगों ने अपने काफी बागान 300-400 प्रतिशत लाभ पर बे... दिए हैं.

हर काफी उत्पादक ने भारतीय काफी अधिनियम के तहत विभिन्न करों तट कर, केंद्रीय आबकारी, शुल्क, आबकारी शुल्क और निर्यात शुल्क की कटु आलोचना की.

आजकल एक टन काफी पर निर्यात शुल्क 7,300 रुपए है जो जुलाई, 1979 में 9,000 रुपए प्रति टन था, हालांकि सितंबर, 1978 में जब काफी के निर्यात पर पहली बार शुल्क लगाया गया था तब

प्रारंभिक अवस्था में काफी के बीज किसी नर्सरी जैसी जगह में बो दिए जाते हैं. कुछ समय बाद विकसित होते ही इन छोटे पौधों को उखाड़ कर दूसरी जगह ले जा कर लगाया जाता है.

कुर्ग के एक काफी बागान में काम करती महिलाएं. भारत के छोटेबड़े काफी बागानों में काम करने वाले 2,50,000 लोगों में से 1,50,000 लोग कर्नाटक में काम करते हैं इन में से भी ज्यादातर कुर्ग में.

यह केवल 4,000 रुपए प्रति टन था.

भारतीय काफी बोर्ड बंगलौर के मुख्य विपणन अधिकारी आई. ए. एस. अधिकारी श्री एस. एस. मीनाक्षी सुंदरम ने बताया कि "काफी के निर्यात में असल में बड़े पैमाने पर वृद्धि 1975-76 में शुरू हुई." उसी समय देश में आपातस्थिति लागू हुई थी तथा ब्राजील में काफी की फसल को पाला मार गया था.

शुल्क से प्राप्त आय का उपयोग

निर्यात शुल्क के अलावा सभी करों को विभिन्न काफी अनुसंधान केंद्रों में अनुसंधान कार्यों पर व्यय किया जाता है. (आजकल भारतीय काफी बोर्ड के तीन अनुसंधान केंद्र कार्य कर रहे हैं. मुख्य केंद्र कर्नाटक राज्य के चिकमगलूर जिले में बेलहोन्नूर में है, दो अन्य उपकेंद्र कुर्ग जिले के शेट्टाहल्ली तथा केरल के मालाबार जिले के विन्नाड में है.)

भारतीय काफी बोर्ड के अधिकारियों के अनुसार 1978-79 में काफी पर केंद्रीय आबकारी शुल्क के रूप में 5.1 करोड़ रुपए, भारतीय काफी अधिनियम की धारा 12 के अंतर्गत आबकारी शुल्क के रूप में 50 लाख रुपए, धारा 11 के अंतर्गत शुल्क के रूप में 74 लाख रुपए तथा निर्यात शुल्क के रूप में 26.48 करोड़ रुपए (अनुमानित) थोपा गया था. लेकिन 1977-78 में निर्यात शुल्क 60.9 करोड़ रुपए रहा.

भारत में काफी का कुल उत्पादन

भारत औसतन हर साल 1,25,000 टन काफी का उत्पादन करता है. भारतीय काफी बोर्ड के अधिकारी यह स्वीकार करते हैं कि 1978-79 में यह गिर कर 1,10,000 टन हो गया. वे इस का कारण काफी की फसल में उतारचढ़ाव बताते हैं जिस से काफी उत्पादन में कमी या बढ़ोतरी होती है.

आजकल विश्व में काफी का लगभग 2.5 प्रतिशत उत्पादन भारत में होता है, जब कि विश्व के सब से बड़े काफी उत्पादक देश ब्राजील का उत्पादन 35.37 प्रतिशत है. इस के अतिरिक्त पेरू, कोलंबिया, इंडोनेशिया, अंगोला और मोजांबिक अन्य बड़े काफी उत्पादक देश हैं.

सन 2000 तक भी भारत में काफी का उत्पादन दो से ढाई लाख टन हो सकेगा. यह भारतीय काफी बोर्ड का लक्ष्य है. तब भी विश्व में भारत का स्थान 11 वां या 12वां होगा.

खरीद-बिक्री पर एकाधिकार

1980 के दशक और उस के बाद भी भारतीय काफी बोर्ड, जिसे भारतीय काफी अधिनियम के अंतर्गत भारत में हर वर्ष उत्पादित काफी को खरीदने और इकट्ठा करने का एकमात्र अधिकार है, 'भारत में काफी की खंपत में पांच प्रतिशत बढ़ोतरी' की आशा करता है.

देश में उत्पादित काफी को खरीद कर इकट्ठा करने के बाद भारतीय काफी बोर्ड बंगलौर में हर पखवाड़े देश और विदेश के लिए काफी की नीलामी करता है और देश भर में काफी भेजने का प्रबंध भी करता है.

भारतीय काफी बोर्ड केंद्रीय वाणिज्य मंत्रालय के अधीन एक सार्वजनिक उपक्रम है. कुछ अधिकारी इसे बड़ा सहकारी संगठन कहते हैं. बोर्ड को इस बात की संभावना नहीं है कि 1980 के दशक में और उस के बाद भारत में काफी उत्पादन क्षेत्रों में कोई विशेष परिवर्तन हो सकेगा.

श्री मीनाक्षी सुंदरम का कहना है, "यह सब मात्र आत्मनियंत्रण है." वह इस आत्मनियंत्रण की नीति पर बल देते हुए स्वीकार करते हैं कि भारत में काफी उत्पादन का क्षेत्र चाय की तुलना में बहुत कम है लेकिन चाय की अपेक्षा काफी के निर्यात से अधिक विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है.

भारतीय काफी बोर्ड के परंपरागत तरीकों से काम करते हुए इस के नियोजक, प्रचारक और संवर्धक "उत्तर, पश्चिम और पूर्वी भारत के परंपरागत चाय उत्पादक और चाय पीने वाले क्षेत्रों में

कुर्ग के एक काफी फार्म में गरमी और बसंत की बरसात में भीग गए बीजों को श्रमिकों द्वारा सुखाया जा रहा है.
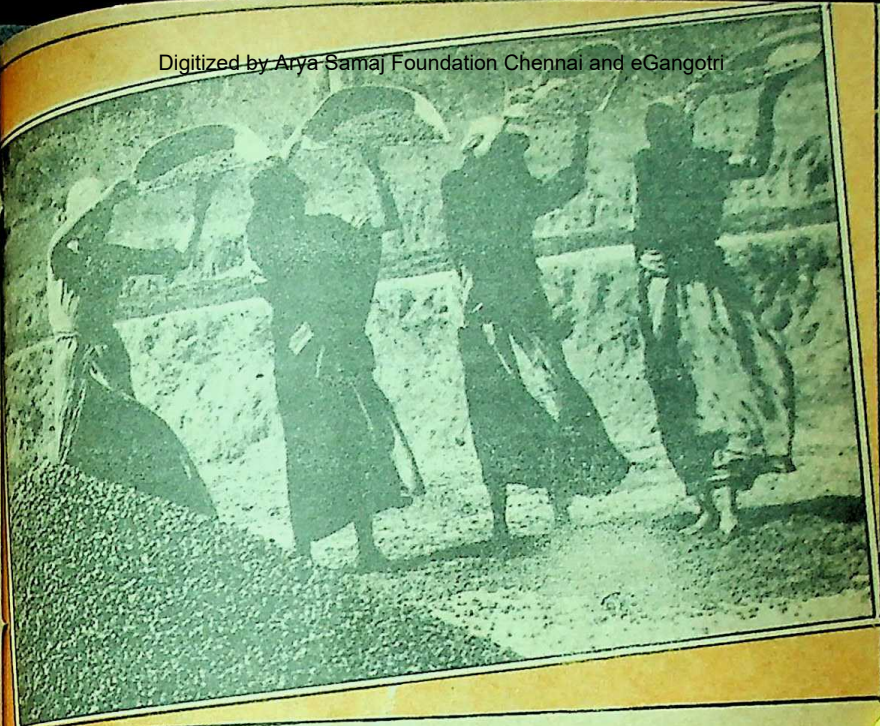
महिलाओं के लिए इस उद्योग में रोजगार के पर्याप्त अवसर हैं. चित्र में महिलाएं काफी के दानों को अलग करती हुईं.

दखलअंदाजी नहीं करना चाहते," हालांकि आजकल भारत के परंपरागत गैर काफी उत्पादक और गैर काफी पीने वाले राज्यों में बहुत अधिक काफी की बिक्री हो रही है.

काफी के पौधों की संरचना, कीटनाशक, बीमारियों और भूमि कटाव के बारे में बेलहोन्नूर केंद्र में किए गए निरंतर और व्यापक अनुसंधान के बाद भारतीय काफी बोर्ड अरुणाचल प्रदेश और अन्य उत्तरपूर्वी राज्यों में काफी के उत्पादन की संभावनाओं के बारे में अध्ययन करने का प्रयास कर रहा है. लेकिन यह अभी प्रारंभिक अवस्था है.

भारत अरबिका काफी का भी समान मात्रा में उत्पादन करता है. यह काफी अपने रंग और शक्ति के कारण बहुत प्रचलित है. भारतीय काफी बोर्ड के अधिकारियों का दावा है कि इन दो कारणों से भारतीय काफी का निर्यात बढ़ने की संभावना अधिक है.

वर्तमान में काफी उत्पादों का अंतरराष्ट्रीय मूल्य "बहुत लाभकारी है और बेकार में चिंता करने का कोई कारण नहीं है. भारतीय काफी का भविष्य बहुत उज्ज्वल है," मुख्य काफी विपणन अधिकारी का तर्क है.

विश्व में काफी की मांग

वर्तमान में विश्व में काफी की मांग और आपूर्ति में अंतर लगभग 20 लाख बोरियों का है (एक बोरी में 60 किलो काफी होती है) और वह आश्वस्त करते हैं कि "चिंता का कोई कारण नहीं है."

श्री मीनाक्षी सुंदरम का कहना है कि "1979-80 में विश्व में 8.18 करोड़ बोरी काफी का उत्पादन हुआ जिस में से निर्यात की जाने वाली काफी केवल

6.17 करोड़ बोरी थी. यह बहुत ही उत्साहवर्धक है."

काफी की फसल साल में दो बार होती है तथा काफी निर्यात के विकास और विस्तार की संभावनाओं पर विचार-विमर्श करते समय इस तथ्य को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए.

भारतीय काफी कृषि की विशेषता

काफी की खेती करने वाले अधिकतर लोगों के अनुसार विश्व में सर्वमान्य 'सर्वश्रेष्ठ' किस्म की काफी का उत्पादन ही भारतीय काफी कृषि उद्योग की मूल शक्ति है. विदेशों में भारतीय काफी की लोकप्रियता बढ़ाने में यही एक मूल तत्व है. काफी की खेती करने वाले और भारतीय काफी बोर्ड के अधिकारी कहते हैं कि यही कारण है कि भारतीय काफी के निर्यात में निरंतर बढ़ोतरी हो रही है.

1970 के दशक के मध्य से भारत में हर साल 50,000 टन काफी की [illegible] हो रही है.

काफी उत्पादों के अंतरराष्ट्रीय मूल्यों में उतारचढ़ाव के कारण भारत से काफी के निर्यात और विदेशी मुद्रा अर्जन में उतारचढ़ाव आया. 1977-78 के दौरान भारत ने 55,287 टन काफी का निर्यात कर के 230.45 करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा अर्जित की. लेकिन अगले वर्ष 1978-79 में भारत ने 66,216 टन काफी का निर्यात कर के केवल 157.[illegible] करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा अर्जित की. इस प्रवृत्ति के साथ चलने के अलावा भारत के पास और कोई चारा नहीं है.

काफी की खेती करने वाले समुदाय के लोग इस पर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं ? उन में से बहुतों को कोई चिंता नहीं. बहुत से यह दावा करते हैं कि न कोई समस्या है और न कोई

(शेष पृष्ठ 160 पर)

फार्म के पिछवाड़े प्रचुर मात्रा में काफी के बीज सुखाने के लिए बिखरे दिखाई दे रहे हैं. यहां बीजों में से बेकार की धूल व गंदगी निकाल दी जाती है.
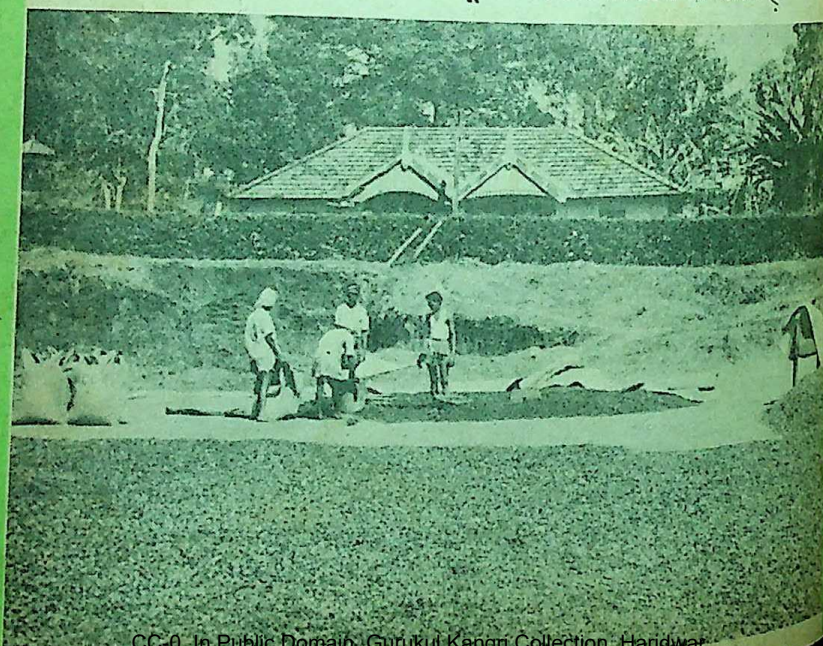
पसंद अपनी अपनी

इस स्तंभ के लिए रोचक चुटकुले भेजिए. सर्वोत्तम चुटकुले पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : पसंद अपनीअपनी, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

अपना परीक्षाफल जानने को उत्सुक चार विद्यार्थी एक ज्योतिषी के पास गए. ज्योतिषी मुंह से कुछ नहीं बोला, बस उस ने एक उंगली आगे बढ़ा दी.

परीक्षाफल निकला तो उन में से एक ही विद्यार्थी उत्तीर्ण हुआ. चारों विद्यार्थी उत्सुकतावश फिर उसी ज्योतिषी के पास गए और विस्मित हो कर उन्होंने पूछा, "आप को कैसे पता चल गया था कि एक ही विद्यार्थी उत्तीर्ण होगा?"

ज्योतिषी बोला, "सीधी सी बात है, यदि तीन पास होते तो एक उंगली का अर्थ होता कि एक फेल होगा. चारों पास हो जाते तो संकेत का अर्थ होता, एक भी फेल नहीं होगा. यदि चारों फेल हो जाते तो इसी संकेत का अर्थ होता, एक भी पास नहीं होगा."

—'राज' रोजागांवी

✦

✦ चलती हुई बस में, एक स्त्री के पति भीड़ के कारण अपने से सट कर खड़ी हुई एक सुंदर युवती को देख कर फूले नहीं समा रहे थे.

अचानक ही वह युवती घूमी और एक थप्पड़ उन श्रीमानजी के मुंह पर मार दिया. फिर बोली, "यह स्त्रियों को चुटकी काटने का नतीजा है."

श्री मानजी भौचक्के रह गए. बस से उतरते ही अपनी पत्नी को सफाई देते हुए बोले, "मैं ने उस को चुटकी नहीं काटी थी."

श्री मतीजी भी मजा लेते हुए बोलीं, "कोई बात नहीं, असल में तो मैं ने ही उसे चुटकी काटी थी क्योंकि तुम उस के कुछ ज्यादा ही समीप होते जा रहे थे."

—विजयकुमार **(सर्वोत्तम)**

✦

एक पड़ोसी (दूसरे से) : कल रात आप ने अपने बच्चे को बहुत पीटा. आखिर ऐसी क्या गलती हो गई उस से?

दूसरा पड़ोसी : दरअसल दो दिन बाद उस बदमाश का परीक्षाफल निकलने वाला है और मैं आज ही एक महीने के लिए कलकत्ता जा रहा हूं. —भवानीशंकर दवे

✦

"इंद्रधनुष और पुलिस के सिपाही में क्या समानता है?" एक मित्र ने दूसरे से पूछा.

"दोनों ही तूफान खतम हो जाने के बाद दिखाई देते हैं," दूसरे मित्र ने उत्तर दिया.

—सुशील बत्रा ●

कनाडा की कन्या

उस से सब से पहली भेंट इकबाल साहब के घर हुई. इकबाल साहब नाइजीरिया के उस गांवनुमा कसबे में रह रहे विदेशियों में सब से सीनियर थे. वह 1975 से लगातार वहां रह रहे थे जब कि हम सब बाद में वहां पहुंचे थे.

कहानी • डा. श्यामलाल कौशिक

फिर वह सच्चे अर्थों में मेहमाननवाज थे. उस कसबे के बच्चेबच्चे को यकीन हो गया था कि नया आने वाला प्रत्येक विदेशी इकबाल साहब के घर ही जाएगा. इसलिए बस स्टैंड पर जैसे ही कोई नया विदेशी उतरता, वहां के कुली उस से यह जानने में कभी समय नष्ट न करते कि उसे कहां जाना है. और अपनी टूटी-फूटी अंगरेजी और सांकेतिक भाषा में उसे यह आश्वस्त करते हुए कि वे उसे ठीकठिकाने पर पहुंचा देंगे, उस का सामान उठा कर कोई एक किलोमीटर दूर इकबाल साहब के घर की तरफ दौड़ पड़ते. और इकबाल साहब उसे हाथोंहाथ लेते. ऐसे अवसर भी आते रहे कि अतिथि आया और चला भी गया पर इकबाल साहब उस का नामधाम ठी

डोना से सभी लोग काम तो लेते थे मगर उस की आलोचना भी करते रहते थे.

क्या उस की राष्ट्रीयता भी न जान पाए.

इसलिए स्वाभाविक ही था कि कनाडा से आने वाली यह युवती भी सब से पहले इकबाल साहब के घर ही पहुंची.

उस कसबे में रह रहे हम सब विदेशी भी पहलेपहल इकबाल साहब के अतिथि बने थे. यद्यपि सभी धीरेधीरे अलगअलग जगह व्यवस्थित होते गए थे. किंतु रोज शाम को बिला नागा इकबाल साहब के घर पहुंचते और वहां घंटों महफिल जमती. इकबाल साहब की बेगम और बच्चे दौड़-दौड़ कर हम सब की खिदमत करते. इस बीच चाय के दो दौर तो चल जाना मामूली बात थी. किसी दिन हम में से कोई न पहुंचता तो इकबाल साहब को तब तक चैन न पड़ती जब तक वह उस की मजबूरी न जान लेते. यदि वह उस दिन कसबे में ही होता तो उन्हें जरूर यह संदेह होता कि अवश्य ही उस की तबीयत ठीक नहीं है और वह अपने किसी बच्चे को उस के घर दौड़ा कर तसल्ली करते.

कनाडा से आने वाली उस युवती से ऐसी ही एक महफिल में भेंट हुई.

कनाडा में एक स्वयंसेवी संगठन है कनाडियन यूनीवर्सिटीज सर्विस ओवरसीज जिसे संक्षेप में 'क्यूसो' कहते हैं. वह संगठन तृतीय विश्व के विकासशील देशों में सेवा कार्य करने के इच्छुक कनाडा-वासियों को स्वयंसेवकों के रूप में भरती करता है और दोदो वर्ष के लिए बाहर भेजता है. इस अवधि में उन्हें मात्र गुजारे लायक वेतन मिलता है. इस प्रकार आने वाले स्वयंसेवकों में अधिकतर शिक्षण कार्य करते हैं. वे प्रायः युवा होते हैं और अकेलेअकेले, उन में भी महिलाएं अधिक.

वह युवती भी क्यूसो की सदस्य के रूप में उस कसबे के माध्यमिक विद्यालय में शिक्षिका बन कर आई थी. अपना नाम उस ने मिस डोनाविल एंडरसन बताया. किंतु साथ ही खिलखिला कर हंसते हुए महफिल पर इधर से उधर दृष्टि डालते

हुए बोली, "मेरा नाम ... घर पर मुझे सभी डोना कहते हैं. आप भी मुझे इस नाम से पुकार सकते हैं. अब तो दो वर्ष के लिए यह भी मेरा घर है न?" और वह फिर खिलखिला पड़ी.

और उसी क्षण से वह सभी छोटेबड़ों के लिए डोना बन गई. उस के साथ मिस-विस लगाने का झंझट कभी किसी ने नहीं किया.

डोना स्वयंसेविका बन कर वहां पहुंची थी और उस ने इस नाम को पूरी तरह सार्थक सिद्ध किया.

विद्यालय में क्या मजाल कि कभी किसी कक्षा में देर से पहुंचे या समय से पहले चली आए. पूरी लगन से पढ़ाती. रिकार्ड सदैव पूरा और अपटूडेट. किसी ने भी सहायता मांगी तो फौरन तैयार. पढ़ाई के अतिरिक्त अनेक कामों में स्वेच्छा से स्वयं आगे बढ़ कर सहायता करने लगी. परिणामस्वरूप अनेक जिम्मेदारियां उस के ऊपर सिमट आईं. विद्यालय से लौटने की कभी जल्दी नहीं. प्रायः अतिरिक्त समय काम कर के ही लौटती और जब लौटती तो विद्यार्थियों के लिखित कार्य से लदीफदी, जिसे रात में जांच कर अगले दिन वापस ले जाती. खाली बैठना तो वह जानती ही न थी.

एक दिन विद्यार्थियों ने किसी बात पर बिगड़ कर कक्षाओं में जाने से इनकार कर दिया तो अन्य सब शिक्षक तो आराम से स्टाफ रूम में बैठ कर गप्पें हांकने लगे. बैठना तो डोना को भी पड़ा किंतु वह अत्यंत बेचैन रही. चाक, डस्टर और पुस्तकों को उस ने हाथ से नहीं छोड़ा और उस की आंखें और कान बराबर बाहर की ओर ही लगे रहे कि कब विद्यार्थियों की जिद खतम हो और कब वह कक्षा में पढ़ाने पहुंचे.

डोना ने केवल विद्यालय के काम में ही नहीं, अपने पासपड़ोस में, शिक्षकों की उस कालोनी में भी अपने आप को स्वयं-सेविका सिद्ध किया. विश्व का यह भा... अभी तक ऐसा है जिस में डाकिया नाम... धारी प्राणी नहीं पाया जाता. डाक डाक... खाने से स्वयं लानी होती है. डोना के आने से पूर्व किसी दिन कालोनी के को... कई व्यक्ति इस काम के लिए डाकखाने में पहुंच जाते तो किसी दिन कोई नहीं पहुं... चता. ऐसा भी होता था कि कोई केवल अपनी डाक छांट लाता और ऐसा भी होता कि ले तो आता औरों की भी कि... ला कर अपने घर में डाल लेता. जब कोई मिला और याद रही तो दे दी. डोना ने बहुत शीघ्र यह जिम्मेदारी संभाल ली और बड़ी कुशलता के साथ प्रतिदि... समय पर डाकघर पहुंचती, पूरी कालोनी की डाक संभाल कर लाती और हर किसी के घर जा कर सौंपती. साथ ही सब के हालचाल पूछती. हारीबीमारी में लोगों को हस्पताल ले जाती या डाक्टर को बुला लाती, दवाई खरीद लाती, अकेले रहने वालों के लिए चायपानी भी बना देती. अन्य सेवाटहल कर देती.

यह सब सेवा कार्य डोना अपने पूरे प्रवास काल में करती रही. किंतु यह स्पष्ट होने में बहुत समय नहीं लगा कि उसे यश मिलने वाला नहीं है. बहुत शीघ्र उस की टीकाटिप्पणी शुरू हो गई. कसबे के तीनों समाजों में वह अस्वीकार्य हो गई. उस का स्वागत होना बंद हो गया. हां, उस की सेवाओं से लाभ उठाना किसी ने बंद नहीं किया. और इस के लिए प्रचलित शिष्टाचार भी सब निभाते रहे. स्वागत अभिवादन के शब्द, एक इंच मुसकान और एकआध चलती जाती हंसीमजाक और अट्टहास.

कारण बना उस का खाली समय का आचरण.

आज की सामान्य पाश्चात्य महिलाओं के समान सिगरेट, शराब उसे भी प्रिय थे किंतु विद्यालय के समय में क्या मजाल कि कभी सिगरेट उस के होंठों से ल...
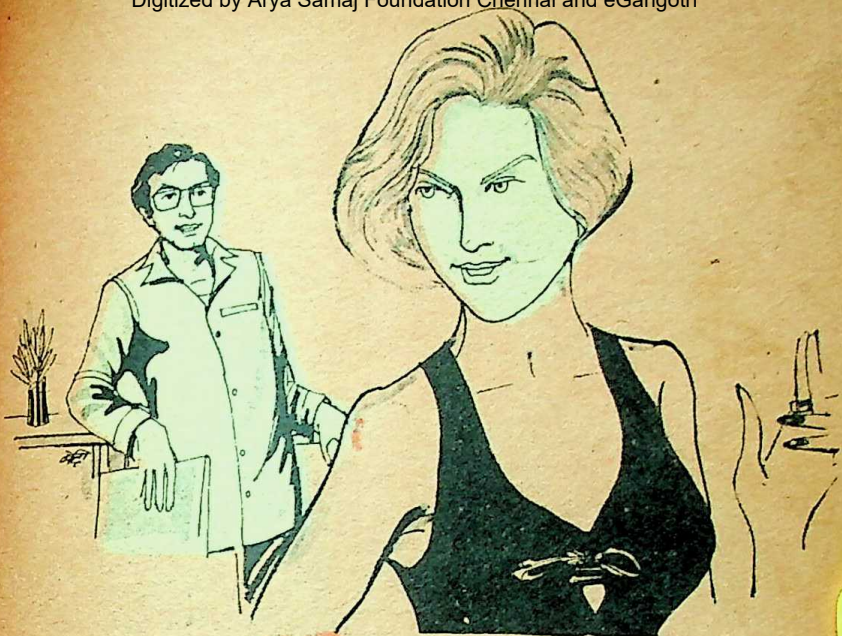
डोना ने कहा, "बात यह है डाक्टर कि मैं यहां कुछ समय और रहना चाहती हूं. आप इस में मेरी मदद अवश्य करें."

जाए, जब कि यह वहां के शिक्षकों के लिए निषिद्ध नहीं माना जाता. कई शिक्षकों के मुंह से कक्षा में पढ़ाते समय भी शराब का भभका आ जाना कोई अनोखी बात नहीं थी, किंतु डोना के मुंह से कभी शराब की गंध नहीं आती थी. वह सदैव संयत आचरण करती. किंतु विद्यालय की ड्यूटी समाप्त होते ही सब बंधन तोड़ डालती.

जो लड़की चाहे जैसे कपड़े लटका कर अधनंगी सी हो कर मुक्त घूमफिर सकती हो, पुरुषों के साथ बैठ कर सिगरेट-शराब पी सकती हो, गप्पें लड़ा सकती हो, ताश खेल सकती हो, चाहे जिस किसी के साथ सैरसपाटे पर जा सकती हो, वह भारतीयों, पाकिस्तानियों और बंगलादेशियों में कैसे सम्मान पा सकती थी? ठीक है, पुरुष वर्ग उस से हंसीठिठोली कर लेने में कोई हर्ज नहीं समझता था. कुछ इस से भी एकदो कदम आगे बढ़ जाने को ललचाते. कुछ ने इस का जुगाड़ बैठाने के भी प्रयास किए किंतु वही अपनी-अपनी पत्नियों और विशेषरूप से अपने किशोर बेटेबेटियों को उस की छाया से बचाने के भरसक प्रयास करते रहे.

एक दिन हम कुछ मित्र बैठे ताश खेल रहे थे कि डोना डाक ले कर आई. पत्र दिए, सभी का हालचाल पूछा और यह कहते हुए उलटे पांव लौट पड़ी कि उसे दूसरों के पत्र भी देने हैं. "सेवा भावना हो तो ऐसी"—मेरे मुंह से अनायास निकला. "और प्रशंसक हों तो आप जैसे," मेरे एक खास साथी ने छींटा कसा.

"क्या मतलब?" मैं अचकचा कर बोला, "क्या मैं झूठी प्रशंसा कर रहा हूं?"

"नहीं मेरे भोले मित्र, प्रशंसा तो आप सच्ची ही कर रहे होंगे," वह रहस्यमय आवाज में बोले, "किंतु मैं केवल यह कहना चाहता हूं कि यह अकेली ऐसी नहीं है. पिछले 10 वर्षों से इस देश में हूं

और कितनी ही क्यूबा लड़कियां देखी हैं. सभी अत्यधिक सेवाभावी होती हैं और सभी प्रकार की सेवा के लिए तैयार हो कर आती हैं. आप की सूचना के लिए निवेदन करना चाहता हूं कि दो प्रकार की गोलियां ये नियमित रूप से खाती हैं—एक तो पेलोड्रीन मलेरिया की रोकथाम के लिए और दूसरी...आप समझ ही गए होंगे." और वह एक कुटिल मुसकराहट अपने होठों पर ले आए.

"खैर, छोड़िए इन बातों को," वह थोड़ा रुक कर बोले, "आप तो यह बताइए कि चाहिए हो तो बात करूं? अकेले रहते हो. जरूरत तो महसूस होती ही होगी?"

"आप बात तो मजाक में ले गए," मैं खीजा..

"इस में मजाक कैसा?" वह गंभीर होते हुए बोले, "अरे भाई, मैं ने कहा न कि मैं 10 वर्षों से इन का आनाजाना देख रहा हूं. मेरी नेक सलाह है कि इन के जाल में मत फंस जाना नहीं तो जीवन भर पछताओगे. अकेले हो इसलिए विशेषरूप से कहता हूं. तुम्हारी पत्नी भी साथ नहीं है जो तुम्हें बचा सके. ये पूरी घाघ होती हैं. खूब खेलींखाईं. इम्तयाज भाई से पूछो क्या कह रही थी इन की बेगम से."

"अरे हां, वाकई," पाकिस्तानी साथी इम्तयाज चौधरी बोले, "मैं तो सकते में रह गया इस की बात सुन कर. मेरी बेगम उम्मीद से है. इस डोना को पता चल गया होगा कहीं से. एक दिन आई तो मेरी बेगम से बोली कि 'बड़ा अटपटा लग रहा होगा आप को इस हालत में. मैं अनुभव कर चुकी हूं. एक बार गर्भवती हो गई थी. लेकिन मैं ने तो झंझट से छुटकारा पा लिया गर्भपात करा कर. बड़ा कठिन है न बच्चे को जन्म देना और उसे पालना. विशेषरूप से मेरी जैसी अविवाहिताओं के लिए.'

"यह तो सब कुछ सहज भाव से कह गई और मेरी उपस्थिति में. लेकिन मैं और मेरी बेगम दोनों पसीनापसीना हो गए. कहीं मुंह काला करती रही थी और यह सब गुनाह कर ही लिया था तो अब कम से कम इस का ढिंढोरा तो न पीटती. फिर तोबातोबा, इस के जाते ही मेरी बेगम बोली, 'कह देना इस कलमुंही से, आज के बाद मेरे घर में कदम रखा तो हां.'"

"सुन लिया आप ने?" मेरे वह घाघ साथी पुनः बोले, "और यह भी सुन लो कि यह कचरा माल होता है. वहां कोई किसी भाव नहीं पूछता. तभी तो यहां आती हैं. किसी दिन बिना मेकअप के देख लोगे तो शक्ल पर पूरे 12 बजे पाओगे."

"शक्ल पर 12 बजे हों या 14," मैं थोड़ा चिढ़ कर बोला, "मुझे इस से कुछ लेनादेना नहीं है. मैं तो केवल यह कह रहा था कि कितनी भावना है इस में सेवा की."

"अरे भाई, यह सब दिखावा है दिखावा. तुम्हारे जैसे किसी भोले पंछी को फंसा लेने का. कोई फंसा नहीं कि बस सब कुछ छोड़ बैठती हैं सेवावेवा, ड्यूटीव्यूटी."

काले अफ्रीकी शुरू में तो डोना के बड़े शौदाई बने. अनेकों उस के चारों तरफ मंडराए. उस के घर पर आगंतुकों का तांता लगा रहा. रोज शाम को दोचार मोटरसाइकलें, मोटर कारें उस के घर के सामने दिखाई देतीं और पास से गुजरने वालों को पाश्चात्य संगीत की मंदमंद मधुर लहरियों की पृष्ठभूमि में हंसी के फुव्वारे छूटने की ध्वनियां सुनाई देतीं.

किंतु यह सब बहुत दिन नहीं चल पाया. काले आगंतुकों की संख्या कम होती गई और शीघ्र ही समाप्तप्राय हो गई.

कुछ दिन तक तो इस का कारण समझ में नहीं आया. यह तो ठीक है कि

त्वचा का रंग कोई मामूली नशे की चीज नहीं है. इसी लिए तो जातीय ऊंचनीच की भावना को समाप्त करने के सारे प्रयासों, सारी घोषणाओं के बावजूद यह अभी तक भी काफी पक्की जड़ जमाए हुए है. विशेष रूप से गोरों के मन में. रंगदार लोगों को वे फिर भी किसी हद तक बरदाश्त करने लगे हैं किंतु कालों को हरगिज नहीं. हां, किसी प्रकार का मतलब निकालने की बात भिन्न है.

किंतु डोना ने कालों से घृणा की हो, ऐसा कुछ प्रकाश में आया नहीं. वह तो उन इनेगिने गोरों में थी जो जातीय समानता पर बराबर बल देते हैं. इतना ही नहीं, उस के पास जातीय भेदभाव को दूर करने का अपना फार्मूला भी था. जिसे वह क्रास कलचर कहती थी. एक परिचर्चा में भाग लेते हुए उस ने अपने इस फार्मूले की व्याख्या की थी.

उस का तर्क था "कि हम अत्यधिक आशावान बनें तो विभिन्न रंगों की जातियों से एकदूसरे को बरदाश्त करने लगने की आशा कर सकते हैं, विशेष रूप से गोरी जातियों से (जो स्वयं को सर्वोच्च समझती हैं) रंगदार और काली जातियों को. मतलब यह कि अपनी उच्चता की भावना को बनाए रखते हुए बस अपने से हीनों के प्रति उदार हो जाना, दयावान हो जाना. और अब तो कालों और रंगदारों में भी प्रतिक्रिया स्वरूप ही सही, स्वयं को सर्वोच्च सिद्ध करने की भावना पनप रही है. काले 'ब्लैक इज ब्यूटीफुल' का नारा बुलंद करने लगे हैं और गोरों को त्वचाविहीन होने, ल्यूकोडर्मा से पीड़ित होने की घृणास्पद उक्ति देने लगे हैं. तो रंगदार रोटी का उदाहरण ले कर कहते हैं कि भट्टी में केवल हम ही ठीक प्रकार सावधानी के साथ पकाए गए हैं. गोरे कच्चे ही निकाल फेंके गए हैं तो कालों को जला डाला गया है.

"तो जातीय ऊंचनीच की भावना सहनशीलता के उपदेशों से तो मिटेगी नहीं. इस के लिए तो अधिक क्रांतिकारी, अधिक अग्रगामी कदम उठाने की आवश्यकता है. और वह कदम एक ही हो सकता है. ये जातियां आपस में विवाहशादी करें और संकर नसल पैदा करें. इस से कुछ जातियों के मन में समाया हुआ विशुद्ध रक्त से संबंधित होने का फितूर निकलेगा. और चूंकि गोरी जातियों के मन में यह फितूर अधिक है, इसलिए उन पर इस दिशा में अधिक जोशखरोश के साथ आगे बढ़ने का दायित्व आता है. उन्हें इस झूठे अहं को त्यागने की अधिक आवश्यकता है. मैं तो इस दायित्व को स्पष्टतया समझती हूं और किसी भी उपयुक्त अश्वेत युवक से शादी करने को तत्पर हूं. उन में भी काले को वरीयता दूंगी, क्योंकि हम गोरों में घृणा की यह भावना रंगदारों को अपेक्षा कालों के प्रति कहीं अधिक है. इतना ही नहीं, मैं आज यह घोषणा भी करना

चाहूंगी कि मैं शादी करूंगी तो केवल किसी काले के साथ."

उस के इस भाषण पर खूब तालियां बजी थीं और इस के साथ ही उस के दरवाजे पर कालों की भीड़ भी बढ़ी थी.

किंतु जैसा कि मैं ने कहा, यह भीड़ छंट भी जल्दी गई. हुआ यह कि डोना त्वचा के क्रास कलचर के लिए तो राजी हो गई थी किंतु एक अन्य प्रकार का क्रास कलचर उस के गले नहीं उतरा, और वह था अफ्रीकियों के बहुपत्नीवाद से समझौता करना. लगभग पूरे अफ्रीका में यह पक्की मान्यता है कि पुरुष प्रकृति से बहुपत्नीवादी होता है. महिलाओं के मासिक धर्म, गर्भाधान, शिशुजन्म आदि की व्यवस्थाओं, वर्जनाओं का हवाला देते हुए वे कहते रहते हैं कि पुरुष का एक स्त्री से काम नहीं चल सकता.

डोना से शादी के इच्छुक आगे आने वाले कालों में कितने ही पहले से ही एक या एक से अधिक पत्नियों के स्वामी थे. जो पत्नीविहीन थे वे भी उसे एकमात्र पत्नी बनाए रखने का वचन नहीं दे सके. झूठा वचन देना अफ्रीकियों की प्रकृति में नहीं है, कम से कम ऐसे महत्वपूर्ण मामलों में.

परिणामस्वरूप सभी एकएक कर के विदा होते गए और क्रास कलचर की एक और चुनौती डोना के सामने छोड़ गए.

लेकिन विडंबना तो देखिए कि उस कसबे में रह रहे इनेगिने श्वेतों ने, उस के अपनों ने भी डोना को तिरस्कृत कर दिया. यों तो वे उस से बराबर मिलतेजुलते. अपने सामूहिक खानपान, नाचगाने में वे उसे प्रायः सम्मिलित करते. एक युवती तो उस के मकान में भी साझेदार थी और अंत तक बनी रही. किंतु यह सब वे शिष्टाचार वश चलाते रहे अन्यथा उन के मन में कोई स्थान डोना के लिए नहीं रह गया था.

वह इतनी क्यों घूमतीफिरती है चाहे जिसतिस के साथ? सिगरेट, शराब का इतना अधिक चसका क्यों है उसे? चाहे जैसे कपड़े क्यों लटकाए रहती है? इस सब पर उन्हें तनिक भी एतराज नहीं था. वे सब भी तो यह कर रहे थे. सभी खेलने-खाने आए थे. फिर वे इस बात को जानते और मानते थे कि हर किसी का अपना जीवन है, अपनी जीवन शैली है, जैसे चाहे जिए, जैसे चाहे चले. किसी दूसरे को क्या अधिकार है दखल देने का? भारतीय, पाकिस्तानियों, बंगलादेशियों की जबरदस्ती किसी का संरक्षक बन जाने की प्रवृत्ति से वे कोसों दूर थे.

किंतु उन्हें आपत्ति थी तो डोना के क्रास कलचर विचारों पर. उन के विचार में यहां तक तो ठीक था कि कालों के साथ उठबैठ लो, खापी लो, चाहो तो नाचगा लो, चलो जायका बदलने के लिए मौजमस्ती भी कर लो. लेकिन उन्हीं के हो रहो या हो रहने की घोषणा कर डालो, यह वे अपने जातीय सम्मान के विरुद्ध समझते थे. किसी काले आदमी की गुलामी करना, उस के बच्चों की मां बनना, छि: छि:?

और यह सब एक थोथे आदर्श और और झूठे सिद्धांत की आड़ ले कर. क्या होता है क्रास कलचर और जातीय समानता? प्रकृति ने तो सब को समान बनाया नहीं, यह डोना बनाएगी. अरे साफसाफ कहो न कि गोरों को तो खूब खंगाल लिया. इतनी हूर की परी हो नहीं कि उन में से कोई जीवन भर ऐश कराने के लिए तैयार हो जाता. अब कालों के पेट्रोल के पैसे पर गिद्ध दृष्टि है. नौ सौ चूहे खा कर बिल्ली हज को चली.

एक दिन डोना बोली, "डाक्टर, आप की सहायता चाहिए."

"हां, बोलिए न," मैं उत्साह दिखाते हुए बोला, "मुझे प्रसन्नता होगी."

"नहीं, आप के घर आऊंगी, किसी सुविधा के समय.

"तुम पश्चिमी लोगों का शिष्टाचार, तोबातोबा," मैं मजाक में बोला, "अरे, आप के लिए न मैं अनजान और न मेरा घर अनजान. कभी भी आ जाइए. आज शाम को ही सही."

वह शाम को आई तो बोली, "बात यह है डाक्टर कि मैं दो वर्ष के लिए यहां आई थी. वह अवधि पूरी हो रही है. किंतु मैं चाहती हूं कि कुछ समय के लिए और रह जाऊं."

'शायद कुछ चक्कर चल रहा है किसी के साथ,' मैं ने मन ही मन सोचा. किंतु पूछा कुछ नहीं. और बात को हलकेपन की तरफ ले गया.

"क्यों नहीं चाहोगी ऐसा," मैं ने ठिठोली की, "अनुभवी लोग ठीक ही कहते हैं कि इस देश में रह रहे विदेशी लोग बातबात पर झुंझलाएंगे, कष्टों की प्रति क्षण शिकायत करेंगे, अपने अनुबंध आगे न बढ़ाने की प्रतिज्ञाएं करेंगे किंतु कुछ ऐसी पकड़ है यहां की मिट्टी में कि वे रहेंगे यहीं, जब तक रह सकें."

"कुछ भी समझ लीजिए," अनावश्यक सफाई न देते हुए डोना बोली, "अब तक तो अपने देश की तरफ से यहां थी. अब यहां नौकरी के लिए आवेदन करने का निश्चय किया है. आप अनुमति दें तो आप का नाम संदर्भ के रूप में दे दूं. सिफारशी पत्र लिख देंगे मेरे लिए?"

"बड़ी प्रसन्नता के साथ," मैं तपाक से बोला, "अरे भई, यहां रहोगी तो मुझे भी आप की सेवाएं मिलती रहेंगी. आप जैसे सेवाभावी मिलते कहां हैं?"

"बहुतबहुत कृतज्ञ हूं इस सहायता और प्रशंसा के लिए."

इस के बाद मैं तो दो मास की छुट्टी पर भारत चला आया, लौटा तो डोना को वहां नहीं पाया. उस ने और ठहरने का इरादा बदल दिया था और कनाडा लौट गई थी.

सुनने में आया कि एक काले के साथ शादी होतेहोते रह गई. डोना ने उसे इच्छा होने पर दूसरी पत्नी ले आने की छूट भी दे दी थी. किंतु वह फिर भी पीछे हट गया. उस के अनुसार उस के मातापिता ने विदेशी महिला से शादी करने की अनुमति नहीं दी. ●

बिना शल्य चिकित्सा के गुर्दे का आपरेशन

सोवियत वैज्ञानिकों ने गुरदे की पथरी को खत्म करने के लिए एक नए प्रकार का उपकरण और औजार पुंज तैयार किया है. बैंकाल—दो नाम के इस उपकरण और औजार पुंज की सहायता से बिना चीरफाड़ किए ही पथरी का इलाज किया जा सकता है.

इस उपकरण पुंज में एक टेलीविजन स्क्रीन भी है, जिस पर स्पष्ट दिखाई देता है कि एक छड़ जैसी चीज पथरी को गुरदे में कैसे खोज रही है. इसी उपकरण पुंज के दूसरे भाग में एक शिकंजे के समान औजार है, जिस में धातु के चार मुलायम गद्दे से लगे हुए हैं.

यह शिकंजा न केवल पथरी को मजबूती से पकड़ने में मदद करता है, बल्कि गुरदे की मुलायम दीवारों की फटने से रक्षा भी करता है.

पथरी को शिकंजे में दबाने के बाद बिजली का एक तेज झटका दिया जाता है. और उस से पथरी टूट कर टुकड़ों में बिखर जाती है. प्रयोगों ने यह साबित कर दिया है कि इस तरह तोड़ी गई पथरी के छोटेछोटे टुकड़े अन्य तरीकों की तुलना में आसानी से गुरदे से बाहर निकल आते हैं. ●

आज जहां कहीं भी कवि सम्मेलन के नाम से आयोजित होने वाले ये समारोह क्या केवल भौंडे मनोरंजन का साधन बन कर कवि सम्मेलन के स्वस्थ स्वरूप को ही विकृत नहीं कर रहे हैं?

लेख • मोहन सोलंकी

एक जमाना था जब विशुद्ध साहित्यिक कवि सम्मेलन हुआ करते थे. साहित्यकारों की महफिलें जमती थीं और विशुद्ध साहित्य की सेवा का भाव ले कर या विद्वानों का संसर्ग-लाभ प्राप्त करने हेतु नवकवि या साहित्यकार इकट्ठे होते थे. वाराणसी, इलाहाबाद, दिल्ली, आगरा और अन्य नगरों में जो कवि सम्मेलन हुआ करते थे, उन में ऐसे ही कवि आमंत्रित किए जाते थे.

ये लोग साहित्य जगत में निरंतर अपनी साधना का अर्घ्य देने वाले साहित्यकार कवि हुआ करते थे. माखनलाल
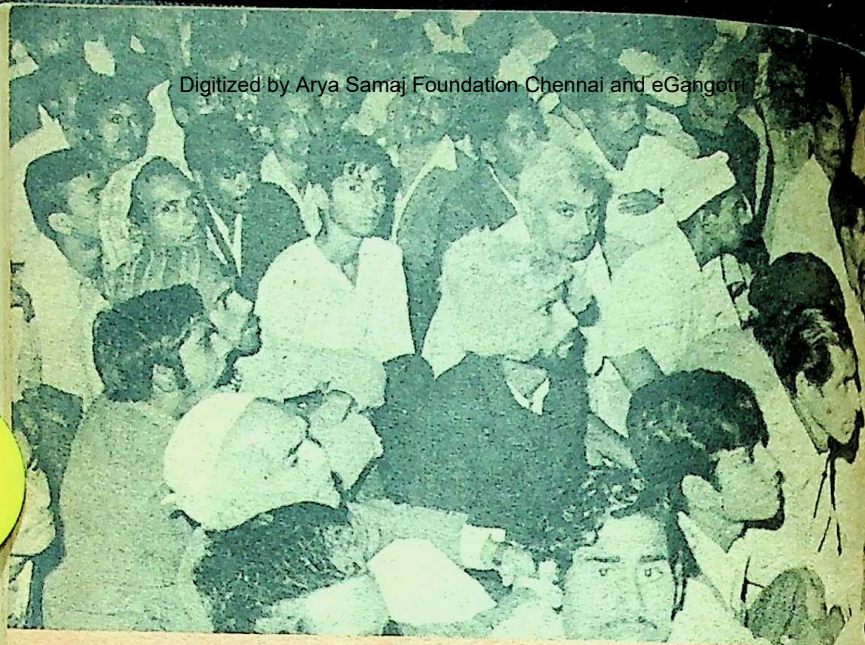
आम श्रोताओं की रुचि और सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने की इच्छा ने भी क्या स्वयं कवियों को सम्मेलनों को विकृत करने की ओर प्रेरित नहीं किया है?

चतुर्वेदी, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला,' महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत, रामधारीसिंह 'दिनकर' जैसे लब्धप्रतिष्ठ कवियों का योगदान इन में हुग्रा करता था. श्रोताग्रों की रुचि भी तब वैसी ही थी. वे ग्रच्छी रचनाएं पसंद करते थे ग्रौर ग्रसाहित्यिक कवियों को सुनना तक गवारा नहीं करते थे.

प्रारंभिक समय के कवि सम्मेलन

उस समय कवि सम्मेलन के मंच से बड़ी वजनदार चीजें श्रोताग्रों को सुनने को मिलती थीं. माहौल ही कुछ ग्रौर होता था. सच कहें तो तब कवि सम्मेलन विशुद्ध साहित्यिक सम्मेलन हुग्रा करता था.

इस के विपरीत ग्राज कवि सम्मेलन कुछ ग्रौर ही हो गए हैं. ग्रब ये भौंडे मनोरंजन का साधन भर रह गए हैं. ग्राज लोगों को न तो साहित्य से सरोकार रह गया है ग्रौर न ही विशुद्ध साहित्यिक कृतियों से. ग्राज सस्ती फिल्मों की तरह वे सस्ता मनोरंजन चाहते हैं. उसी वजह से कवि सम्मेलनों का स्वरूप भी बदल गया है.

फिल्मों का हमारे जनजीवन पर ऐसा प्रभाव पड़ा है कि लोगों में यह धारणा सी बन गई है कि फिल्में ही मनोरंजन का एकमात्र माध्यम हैं. इसी कारण मनोरंजन के दूसरे साधनों का रुख भी उसी के ग्रनुसार बदलता चला गया है. जब सब कुछ बदल रहा है तो भला कवि सम्मेलन ग्रपने ग्रनूठेपन को कहां तक ग्रौर कैसे संभाल पाता. ग्राम श्रोताग्रों की रुचि ग्रौर सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने की इच्छा ने ग्राज कवि सम्मेलन को भी निहायत हलकाफुलका बना डाला है. एक समय ताल ग्रौर लय की कुछ ऐसी ग्रांधी चली कि कवि सम्मेलन का मंच कवियों का मंच न रह कर मात्र गवैयों का मंच हो गया. बात यहीं तक सीमित न रही, फिल्म के भौंडे हास्य को सस्ती लोकप्रियता मिलते देख हमारे कवियों ने भी उसी हास्य को काव्य का जामा पहना डाला.

फिल्मी गीत सुनसुन कर हम साहित्यिक मंच से विशुद्ध कविताएं सुन पाने लायक नहीं रहे. हमें वह हलका हास्य चाहिए, वह ओछी उड़ान चाहिए जिसे समझने के लिए माथापच्ची न करनी पड़े.

हास्य हास्य ही रहता तो गनीमत थी, पर आज तो कई तरह की आवाजें बना कर किसी 'कामेडियन' की नकल उतारने वाला भी कवि हो गया है. विशुद्ध साहित्य तो अब केवल स्कूल कालिज की किताबों में ही रह गया है.

ये साहित्यिक संस्थाएं

देश में साहित्यिक संस्थाओं की भरमार है. हमारे नगर में ही कई ऐसी संस्थाएं हैं.

मेरे एक मित्र शिक्षक हैं. काफी सज्जन और मिलनसार व्यक्ति हैं. वैसे वह कई ऐसी संस्थाओं से जुड़े होने के बावजूद एक साहित्यिक संस्था विशेष के सचिव के रूप में विशेष सक्रिय हैं. उन की यह संस्था कई बार अखिल भारतीय स्तर के कवि सम्मेलन आयोजित कर नाम कमा चुकी है. उन के कवि सम्मेलनों में आज के सभी बहुचर्चित कवि आ चुके हैं.

वह सज्जन एक दिन एक रेस्टोरेंट में हम से मिले और अपनी पीड़ा हमारे सामने उगल दी, "क्या बताएं यार, हमारी संस्था के संयोजक महोदय (जो काफी चतुर और काव्य प्रेमी हैं) ने पिछली मरतबा एकत्र धन राशि से काफी रुपयों का घपला कर दिया है."

"सो कैसे ?" मैं ने सहज जिज्ञासा भाव से पूछा. तो वह बोले, "हम लोगों ने जो चंदा इकट्ठा किया था, उस में से कवियों को जो रकमें दी गईं उस में से उन्होंने अपनी दलाली के रुपए काट लिए. यानी कि कवि को जितना दिया दिखाया गया, उस से कम रुपया दिया गया और काफी रकम वह डकार गए.

"यह भी पता चला है कि उन्होंने हर साल यही किया है. कवियों से पहले

चाहे वह कोई भी सम्मेलन हो, अब बिना कवयित्रियों को सम्मिलित किए आयोजकों को आनंद ही नहीं आता.

ही यह बात तय कर ली जाती थी कि उन की मनचाही रकम तो वह दिलवा देंगे लेकिन अपना कमीशन उस में काट लेंगे. कवि बेचारे को कौन से बावले कुत्ते ने काटा था जो वह यह छोटी सी शर्त स्वीकार नहीं करता."

जनता की भावनाओं से खिलवाड़

वैसे भी ये संस्थाएं कई तरह से जनता की भावनाओं से खेलती रहती हैं. अच्छे कवियों के आने के विज्ञापन दैनिक अखबारों में प्रकाशित करवा दिए जाते हैं. उन के आधार पर खूब चंदा बटोरते हैं. पर बाद में कवि सम्मेलन के दिन संयोजक महोदय उदास चेहरा लिए मंच पर आ कर बड़े दीन स्वरों में श्रोताओं को मनहूस खबर सुना देते हैं कि अमुक कवि अचानक आ पड़ी बाधा से कवि सम्मेलन में नहीं पहुंच सकेंगे, जिस का उन की संस्था को काफी दुख है. जनता से इस के लिए वह बारबार क्षमा भी मांगते हैं.

जनता या श्रोता बेचारे चुप रह जाने के अलावा क्या करें.

इन संस्थाओं के सदस्य या संयोजक कुछ ऐसे भी होते हैं जो बड़े रसिक और दिलफेंक होते हैं. उन्हें साहित्य से या कविता से कुछ लेनादेना नहीं होता है. वे तो केवल सम्मेलन को मात्र दिल बहलाने का माध्यम मान कर लोगों के सामने अपनी रुचि या पसंद के कवियों को ही पेश करते हैं.

इन में उन के रिश्तेदार, मित्र या परिचित भी हो सकते हैं.

हास्य के नाम पर दर्शकों के सामने भोंडी शक्लें प्रस्तुत करते, बेहूदे भाव प्रदर्शित करते कवि आज किसी भी सम्मेलन में देखे जा सकते हैं.
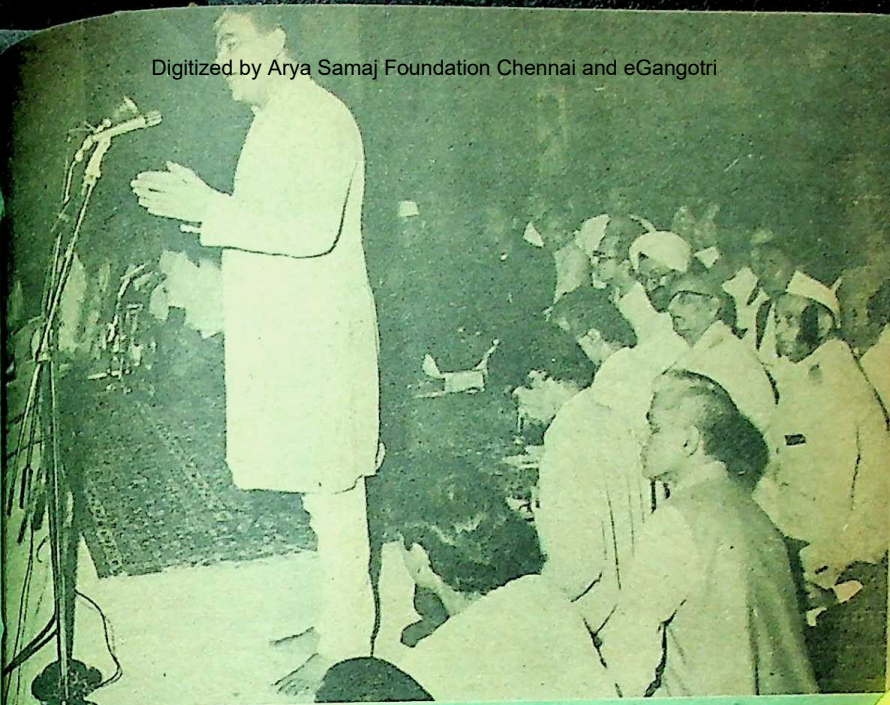
आए दिन कवि सम्मेलन होते हैं पर वही गिनेचुने कवि हर कहीं आमंत्रित क्यों होते हैं, जिन्हें श्रोताओं ने पचासों बार पहले भी सुना हुआ हो?

इन में काफी लोग ऐसे भी मिल जाते है, जिन्हें 'आंखें सेंकने' की लत होती है. इन लोगों ने कवि सम्मेलन को 'मुजरा' का रूप प्रदान कर दिया है. इन कवि सम्मेलनों में बिना सुंदरी रूपसी 'कवयित्रियों' के इन्हें आनंद ही नहीं आता. इसी लिए आज कई स्थानों पर सिर्फ 'कवयित्री सम्मेलन' भी होने लगे हैं. ये कवयित्री कही जाने वाली विदुषी महिलाएं, कविता कम सुनाती हैं, हावभावों का प्रदर्शन अत्यंत उदारतापूर्वक करती हैं. मानो प्रकृति की इस विशेष देन के प्रदर्शन में कंजूसी नहीं करना चाहती हों. बीचबीच में चुहलबाजियां और भद्दे मजाक भी ऐसे सम्मेलनों की जान बन जाते हैं.

एक कवि मित्र हैं. काफी प्रतिभासंपन्न, और अच्छी श्रेणी के गीतकार हैं. लेकिन उन्हें सिर्फ इसी बात का दुख है कि उन की कविताएं पत्रिकाओं से हट कर, मंच के माध्यम से लोगों तक नहीं पहुंच पाईं.

उन्होंने अनेक बार इस बात का प्रयास किया कि कुछ संस्थाएं उन्हें अपने शहर में कवि सम्मेलनों में आमंत्रित करें, किंतु ऐसा नहीं हो पाया.

ये कवि ठेकेदार

इस का सब से बड़ा कारण है कि यह गीतकार महाशय आज तक उन्हीं पुराने खयालातों में जी रहे हैं, जब कवि को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था. आज तो वक्त ने काफी करवट ली है और 'चमचा युग' की शुरुआत हो गई है. ऐसी रस्में शुरू हो गई हैं कि "तुम मुझे बुलाओ, मैं तुम्हें बुलाऊं". मसलन गोंदिया के किसी कवि ने नागपुर के किसी कवि को अपने सम्मेलन में आमंत्रित किया तो यह शर्त भी रख दी कि नागपुर में अपने सम्मेलन में उन्हें अवश्य बुलवाया जाए.

आजकल यह परंपरा सी बन गई है. लोगों ने इसे धंधा ही बना लिया है. इस तरह कवि सम्मेलन भी अच्छीखासी अखाड़ेबाजी हो गई है. इसी कारण आजकल साहित्यिक संस्थाओं में पदाधिकारी होने की होड़ लगी रहती है, क्योंकि इन्हीं लोगों को तो अपने कवि सम्मेलन में कवियों का चुनाव करना होता है.

मैं एक ऐसे महाशय को जानता हूं, जो काफी अच्छा साहित्यकार होने का दंभ करते हैं. उन्हें एक बार कविता की खब्त सवार हो गई और वह कवि बन भी गए. जब कवि बन गए तो सम्मेलन में जाना जरूरी हो गया. उन्होंने एक जानेमाने कवि से सांठगांठ कर ली और उन से यह वादा किया कि वे अपनी संस्था के अंतर्गत होने वाले कवि सम्मेलनों में उन्हें अवश्य बुलवाएंगे, बदले में उन्हें उसे अपने यहां बुलवाना होगा. बात तय हो गई. दोचार बार 'वह' उन के यहां और इतनी ही बार 'यह' वहां गए. दोनों किसी दूरदराज क्षेत्र में साथसाथ भी गए. बड़ेबड़े चित्रों सहित अखबारों में नाम छपा. अगले कविता को जाने बिना कवि बन गए.

...और 'पंडा कवि'

इन में कुछ 'पंडे छाप' कवि भी शामिल हैं. इन 'पंडा कवि' के अपने खेमे हैं. इन का अलगअलग अखाड़ा और क्षेत्र है. अब तक सुना था कि तीर्थस्थलों पर ही पंडे होते हैं, लेकिन यहां साहित्य जगत में भी पंडों की अलग ही भूमिका है. ये 'कवि पंडे' हमेशा कुछ जानेमाने कवियों को अपनी मुट्ठी में रखे रहते हैं. जो ये कहेंगे, वही वे करेंगे. अगर किसी संस्था को कोई कवि सम्मेलन करवाना हो तो संस्था को उस कवि पंडे के पास जाना होगा. फलां कवि कितनी रकम लेगा, कौन कवि ठीक रहेगा, यह पूरी जानकारी कवि पंडा संयोजक को देता है. उस में वह 'कमीशन' भी ठीक कर लेता है. बाद में सम्मेलन का भार भी खुद उठाने की जिम्मेदारी ले कर अखाड़ा सा तैयार कर लेता है.

जिन कवियों को आमंत्रित किया जाता है, पंडा कवि उन से भी कमीशन खाता है. बेचारा कवि मंच और पैसा मिलने के लालच में हामी भर देता है.

इन पंडों ने कविता की दुकानें खोल रखी हैं. हर तरह के कवियों की सूची इन के पास सदा रहती है. किस कवि का क्या दाम है, यह भी इन के पास रहता है. इन पंडों ने हर जगह अपना कुछ ऐसा रंग जमा रखा है कि कविगण इस के दायरे से हट नहीं पाते. न आयोजक ही इन के बिना काम कर सकते हैं.

कवि या बाजीगर

आजकल कवियों ने अलगअलग शक्लें बना ली हैं. मंच की भूख ने उन्हें काफी गिरा दिया है. पैसे की ललक उन के जीवन से चिपट गई है. उन के सामने अपने साहित्य का कोई मूल्य नहीं रह गया है. जैसे भी हो लोगों को किसी भी तरह हंसा कर, उन के सामने भोंडी नकलें प्रस्तुत कर, बेहूदे भाव प्रदर्शित कर, सिर्फ रुपया खींचने की बाजीगरी भर इन कवियों के पास रह गई है.

आए दिन जो कवि सम्मेलन आयोजित होते हैं, उन में जो कवि आमंत्रित होते हैं, क्या वे उन्हीं गिनेचुने आठदस कवियों में से नहीं होते, जिन को श्रोताओं ने पचासों बार सुना होता है? क्यों इन्हीं घिसेपिटे कवियों को बारबार आमंत्रित किया जाता है?

आयोजकों को चाहिए कि ऐसे कवियों को आमंत्रित करें जिन से साहित्य का मंच गौरवान्वित हो. ऐसा कवि लोगों में एक नई स्फूर्ति और चेतना पैदा करेगा. जनता का पैसा अखाड़ेबाजों और बाजीगरों की जेब में न पहुंचे, बल्कि सच्चे साहित्य सेवी को उस का लाभ मिले. तभी हिंदी की सच्ची सेवा होगी. •

रंगभेद का जहर

एक गोरा कार चालक इस बात के लिए तो तैयार हो गया कि उस के खिलाफ मुकदमा चला दिया जाए लेकिन किसी अश्वेत डाक्टर से अपने खून व मूत्र की जांच कराने को तैयार नहीं हुआ. लंकाशायर (इंगलैंड) की एक अदालत से उस ने कहा कि वह रंगभेद का समर्थक है. इस से कानून भंग होता है या नहीं, इस बात से उसे कोई मतलब नहीं है.

अभियोग में कहा गया था कि कार चालक डेविड स्विडेस ने थाने में तब अपने खून व मूत्र का नमूना देने से इनकार कर दिया जब उसे पता लगा कि पुलिस सर्जन एक अश्वेत व्यक्ति है.

✦

आसमान में उड़ने वाली अदृश्य वस्तुएं

छः फैंटम लड़ाकू विमान तेजी से आसमान में पहुंचे लेकिन जापान के सुदूर उत्तरी द्वीप होकाइडो पर उड़ने वाली चीजों का पता नहीं लगा सके.

होकाइडो में विभिन्न स्थानों पर लगे राडारों से शाम सात बजे से ले कर एक घंटे तक होकाइडो के पूर्व में नेमूरो जलडमरूमध्य के ऊपर 900 से 1,800 मीटर की ऊंचाई पर 70 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ती हुई कुछ वस्तुओं को देखा गया. लेकिन कोई भी विमान उन का पता लगाने में सफल नहीं हो सका.

जमीन के राडारों ने तो उन वस्तुओं को साफ देख लिया, लेकिन विमानों के राडार उन्हें नहीं पकड़ सके.

✦

चुंबन महंगा पड़ा

50 साल के एक व्यक्ति को श्रीलंका की भूतपूर्व शाही राजधानी कैंडी की एक व्यस्त सड़क पर एक महिला कांस्टेबल को चूम लेने के आरोप में एक साल के कठोर कारावास की सजा दी गई. उसे उस महिला कांस्टेबल की पवित्रता भंग करने का दोषी पाया गया.

✦

50,000 से अधिक अवयस्क बच्चियों से वेश्यावृत्ति

छोटी उम्र की करीब 50,000 लड़कियों का जिन में से कुछ सिर्फ 12 साल की हैं, उत्तरपूर्वी ब्राजिल के कसबों में गैरकानूनी ढंग से वेश्यावृत्ति में लगा कर शोषण किया गया है. यह सूचना एक स्वतंत्र मानव अधिकार विशेषज्ञ ने जेनीवा में संयुक्त राष्ट्रसंघ की एक बैठक में दी.

इंगलैंड के बेंजामिन व्हिटेकर का कहना है कि ये लड़कियां आम तौर पर 12 और 14 साल के बीच की आयु में काम शुरू कर देती हैं और 20 वर्ष की उम्र तक पहुंचतेपहुंचते उन्हें वेश्यालयों के मालिक बूढ़ी हो गई मान लेते हैं. ब्रिटिश चैरिटी आक्सफैम के प्रमाणों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया, "उन्हें एक ग्राहक के बदले सिर्फ 10 क्रूजेरो (37 अमरीकी सेंट) मिलते हैं लेकिन वेश्यालय के किराए के रूप में उन्हें हर दिन वेश्यालय के मालिक को 60 क्रूजेरो (लगभग 2.22 डालर) देने पड़ते हैं."

CARAVAN
Fortnightly
Of National
Resurgence
CARAVAN awakes your social consciousness.....makes you think of your obligations and responsibilities, exploding traditional anachronism that have retarded India's march towards modernism. Through views and reviews, short stories and humour, every fortnightly CARAVAN acts as the catalyst to action with understanding. An informed and enlightened citizen is that best citizen and CARAVAN readers are just that.
BUY YOUR COPY TODAY
DELHI PRESS
GROUP OF MAGAZINES
LEAD THE WAY....

पोल पोट के नरमांस भक्षी सैनिक

कंपूचिया (कंबोडिया) के प्रधान मंत्री पद से हटाए गए पोल पोट के कुछ सैनिकों ने मनुष्य का का मांस खाना शुरू कर दिया है. विएतनाम की एक संवाद समिति ने 17 साल की एक कंपूचियाई लड़की का हवाला देते हुए कहा है कि पोल पोट के एक सैनिक ने उस के भाई का सिर काट दिया, उस की हड्डियों से गोश्त अलग कर दिया और तब उसे पत्तों में लपेट लिया.

इस खबर की पुष्टि नहीं हो सका है, किंतु हाल ही में कंपूचिया का दौरा करने वाले एक गैर कम्युनिस्ट पत्रकार ने कहा है कि कंपूचिया में मौजूद अनेक विएतनामी सैनिकों ने उसे पोल पोट के सैनिकों द्वारा नरमांस खाने के बारे में बताया है. सैनिकों ने उन दस्तों के बारे में भी बताया जो मनुष्यों का सूखा गोश्त साथ ले कर चलते थे और पोट के उस शिविर की सूचना दी जहां यह गोश्त सुखाया जाता था.

इस सूचना में यह स्पष्ट नहीं है कि यह कथित नरभक्षण सैनिकों ने भोजन पाने के लिए किया या बदला लेने के लिए. 1970 से 1975 तक हुए कंबोडिया युद्ध में एकदूसरे के पक्ष में लोगों का जिगर निकाल कर खाना एक परंपरा बन गई थी.

◆

दानवी पशु नैसी के भाईबंद अमरीका में भी

लगता है स्काटलैंड के विख्यात दानवी पशु नैसी के भाईबंद अमरीका में भी हैं. अमरीकी केंद्रीय गुप्तचर विभाग के एक भूतपूर्व स्टाफ सदस्य ने उन्हें अमरीका में खुद अपनी आंखों से देखा है.

नैसी परिवार के अमरीकी पशुओं का पता सब से पहले 27 जून, 1978 को वर्जिनिया इलेक्ट्रिसिटी कंपनी की एक कर्मचारी मैरी लुइस को लगा था. उस ने कुछ अजीब से पशुओं को पोटोमैक नदी के पानी में घूमते देखा. स्थानीय अधिकारियों का अनुमान था कि शायद उस ने पारपाइज को देखा है.

लेकिन 25 जुलाई को अमरीकी गुप्तचर विभाग के भूतपूर्व कर्मचारी डोनाल्ड काइकर और उस की पत्नी ऐन ने कई मीटर लंबे कुछ जीवों को देखा जो दिखने में टेलीग्राफ के खंभों जैसे थे. उन के सिर पानी से बाहर थे और वे चैसापीक खाड़ी में तैर रहे थे.

काइकर दंपती ने यह घटना अपने पड़ोस में रहने वालों को बताई. इस के एक घंटे बाद ही श्रीमती मरटल स्मूट ने तीन दैत्याकार पशुओं को जिन में एक बड़ा व दो छोटे थे, खाड़ी की तरफ उतरते हुए देखा. उस ने बताया कि सब से बड़ा जीव 10 मीटर लंबा था और बाकी दो डेढ़ व आठ मीटर लंबे.

अपने बच्चों व खाड़ी में तैरने वालों के लिए खतरा मान कर मरटल के पति ने दो छोटे जीवों में से एक पर गोली चलाई जिस के बाद उन पशुओं का पूरा परिवार ही पानी में गायब हो गया. स्थानीय लोगों ने ब्रिटिश लोगों की नकल पर इन दैत्यों का नाम 'चैसी' रख दिया.

◆

पुस्तक मेला अंतरराष्ट्रीय समारोह में बदला

मध्य अक्तूबर में फ्रैंकफर्ट में आयोजित पुस्तक मेला एक अंतरराष्ट्रीय समारोह बन गया. इस का मुख्य विषय था : 'आत्मनिरीक्षण के रास्ते पर एक महाद्वीप—अफ्रीका. और इस में पहली बार अफ्रीकी देशों को अपने प्रकाशन रखने के लिए प्रोत्साहित किया गया था. मेले के दौरान अफ्रीका में बने माडर्न आर्ट के नमूनों को भी रखा गया.

दाँव

कहानी • अरुण अलबेला

मुझे आशा नहीं थी कि आशा अभी तक मोमबत्ती की तरह जलती पिघलती रही होगी.

किंतु कमरे में प्रवेश करते ही मैं ने उसे इसी रूप में पाया. हालांकि ऐसा होना नहीं चाहिए था, किंतु दांपत्य जीवन में तकरार का दिन निश्चित नहीं होता. मैं आशा पर प्रतिबंध नहीं लगा सकता था. केवल उसे समझा ही सकता था कि क्रोध करना ठीक नहीं. फिर भी वह उसे दूसरे ढंग से ले रही थी, जिस से मामला उलटा पड़ रहा था.

वह कह रही थी, "देखो, सुरेखा सु

है, उस के पति प्रकाश ने फैक्टरी में तरक्की पा ली है. एक तुम हो कि तरक्की पाने की कोई कोशिश ही नहीं करते. पता नहीं कब तक मिस्तरी के रूप में काम करते रहोगे."

मैं ने उस को समझाया, "मिस्तरी होना कोई बुरी बात नहीं है. माना मिस्तरी श्रमिक वर्ग में आता है, किंतु इस में कोई अप्रतिष्ठा की बात तो नहीं है. मिस्तरी होने के लिए प्रशिक्षण लेना पड़ता है. कुशलता का प्रमाणपत्र प्राप्त करना पड़ता है. तब जा कर किसी कारखाने में नौकरी मिलती है. कठिनाइयों के बावजूद मैं नौकरी प्राप्त कर सका. भविष्य निधि, बीमा आदि की रकमें कटने के बाद सात-आठ सौ रुपए मिल ही जाते हैं. गुजरबसर ठीक से हो जाती है. और क्या चाहिए? तरक्की के लिए साहब लोगों के तलवे सहलाना क्या अच्छी बात है?"

"तो क्या इस डर से तरक्की पाने की कोशिश ही छोड़ देनी चाहिए?" वह बोली.

मैं आशा को कैसे समझाता कि प्रकाश ने तरक्की पाने के लिए कैसीकैसी उल्टीसीधी कोशिशें की हैं.

प्रकाश जब मिस्तरी था तो सदा अपने ऊपर के अधिकारियों के इर्दगिर्द घूमता रहता था. वह उन्हें खुश रखने की कोशिश करता. उन्हें पान खिलाता, सिगरेट पिलाता, कभीकभी उन्हें फैक्टरी से बाहर होटलों में ले जा कर समोसे, पकौड़े या जलेबियां खिलाता. स्पेशल चाय का

आशा हमारे परिवार के जीवन स्तर को बहुत ही घटिया समझती थी और मुझे सदा अपने पड़ोसी प्रकाश जैसे ठाटबाट जुटाने के लिए प्रेरित करती थी. पर जब उसे प्रकाश के इस ठाटबाट को पाने के लिए अपनाए दांवपेचों का पता चला तो न जाने क्यों उस के विचार बदल गए?

आर्डर देता. फिल्म दिखाने के लिए सिनेमा ले जाता.

अधिकारी उस से खुश रहते. इस के बदले वे उसे अधिक से अधिक ओवरटाइम दिलाते. ओवरटाइम का समय भी ज्यादा लिख देते.

हालांकि वह काम नहीं जानता था, पर बातें खूब बनाता था. उस की बातों से ऐसा लगता था जैसे मशीनों के बारे में उस से ज्यादा और कोई जानता ही न हो.

वह ज्यादातर समय खाली बैठा रहता था. गपबाजी में अपने साथसाथ दूसरों का भी समय बरबाद करता. लेकिन जैसे ही प्रबंधक को आते देखता तो यों काम में लग जाता, जैसे उस से अधिक काम करने वाला और कोई न हो. जब उच्च अधिकारी चले जाते तो वह अपने साथी पर काम छोड़ फिर मौजमस्ती में लग जाता. उस के अधिकारी उस से समोसे खाने और फिल्म देखने के लोभ में उच्च अधिकारियों से उस की झूठी बड़ाइयां करते. भला अपने कमरे में बैठे रहने वाले अधीक्षक या प्रबंधक को क्या मालूम कि वह क्या काम करता है?

प्रकाश यदाकदा श्रमिकों के नेता से भी मिलता. उसे कुछ देकर खुश रखता. नेता भी उसे अपना चमचा समझ कर अपने इर्दगिर्द बने रहने को कहता. इस से उसे लाभ यह हुआ कि वह नेता का अपना आदमी समझा जाने लगा.

यही कारण था कि अन्य श्रमिकों को उस के विरुद्ध बोलने का साहस न होता.

प्रकाश मुझ से बारबार कहता, "राजू, सिर्फ काम करने से कुछ नहीं होता. मैं मानता हूं, तुम लगन व मेहनत से काम करते हो. पर तुम्हारी इस लगन व मेहनत को देखने वाला कौन है? तुम्हें आगे बढ़ना है तो अपने ऊपर के अधिकारियों की दृष्टि में 'अच्छे' बनो. उन को मक्खन लगाओ. यूनियन को पकड़ो. ऐसे ढंग से ...जिस से सभी तुम्हें बहुत ... यार और चुस्त समझें."

मैं कहता, "यही सब मुझ से ... होता, प्रकाश. मैं श्रम को मानता ... मैं व्यर्थ समय बिताना ठीक नहीं समझता ... मैं फैक्टरी से पूरा वेतन लेता हूं तो ... काम क्यों करूं? मैं मालिक से गद्दारी नहीं कर सकता. किसी की चमचागीरी करना मेरे बस की बात नहीं है. ... ऊपर के अधिकारियों को खुश करने के लिए न मैं अपने ऊपर कर्ज चढ़ा सकता हूं, न उन की व्यक्तिगत चाकरी कर सकता हूं."

यह सुन कर वह बौखला उठा, "इस तरह तुम कभी तरक्की नहीं कर सकोगे. तुम सदा मिस्तरी ही रहोगे. आगे बढ़ना है तो आदर्श को गोली मारो."

उसे मेरी बात बुरी लगती, मुझे उस की बात. दोनों दो ध्रुवों की तरह एकदूसरे के सामने खड़े थे. दोनों के सिद्धांत, आदर्श अलग थे. मैं श्रम को प्रधानता देता था तो वह चमचागीरी को.

हम दोनों एकदूसरे के पड़ोसी थे. अत: दोनों की पत्नियों में मैत्री होना स्वाभाविक था. प्रकाश ने अपनी पत्नी सुरेखा को पूरी तरह विश्वास दिला रखा था कि वह एक दिन अधिकारी बन कर रहेगा. इस बात को सुरेखा आशा के सामने दोहराती तो उसे अच्छा नहीं लगता था.

वह हीन भावना से ग्रस्त हो मुझ से कहती, "तुम भी तरक्की पाने की कोशिश करो न."

मैं भला उसे कारखाने में चलने वाली गतिविधियों के विषय में क्या बताता! उसे कैसे समझाता कि लोग अपना स्वार्थ साधने के लिए कैसेकैसे दांवपेच खेलते हैं. कहीं जातपांत है तो कहीं प्रांतीयता, कहीं चमचागीरी है तो कहीं रिश्वतखोरी. और मुझ जैसे सीधे लोग दांव में हार कर पेंच में उलझ जाते हैं.

मैं अपने काम से [illegible] घंटे काम कर के घर लौटता. कभीकभार ही ओवरटाइम करता.

अपने ऊपर के अधिकारियों, मजदूर प्रतिनिधियों, यूनियन के नेताओं को खुश करने का नतीजा यह हो रहा था कि प्रकाश के ऊपर कर्ज लगातार बढ़ता जा रहा था.

उस ने एक दिन मुझ से कहा, "राजू, बड़ी तंगी है. तीनचार सौ रुपए उधार दे दो. धीरेधीरे लौटा दूंगा."

वह पैसा खर्च करने के मामले में बिलकुल अनाड़ी था. अपने को 'पैसे वाला' जतलाने के लिए हाथ में आया पैसा पानी की तरह बहाता था. अपने लिए, पत्नी के लिए या बच्चों के लिए सामान खरीदने जाता तो दुकानदार जितना मांगता दे देता. फिलम देखना, होटल जाना और शराब पीना आम बात थी. उस के खर्चीले स्वभाव से उस की पत्नी सुरेखा खुश थी.

पता नहीं, सुरेखा उस के ऊपर चढ़े कर्ज को जानती थी या नहीं. पर खर्च की बात आने पर वह हमेशा यही कहता, "जीवन में क्या रखा है? खाओ, पिओ और मौज करो."

उन्हीं दिनों एक नएनए अधीक्षक आए. उन्होंने मेरे श्रम, लगन और काम करने के ढंग को देखा तो मुझ से प्रभावित होने लगे. वह ऐसे व्यक्ति को पसंद करते थे जो तनमन से काम में लगा रहता हो.

उन्होंने एक दिन कहा, "आदमी का काम देखा जाता है, चेहरा नहीं. जो मटरगश्ती करता है वह स्वयं अपने को धोखा देता है. मान लीजिए, आप सब मन लगा कर काम नहीं करेंगे तो काम सीखेंगे कैसे? आप में से ही अगर किसी पर दूसरों के काम की देखरेख की जिम्मेदारी डाल दी जाए तो वह तभी काम करा सकेगा जब वह खुद काम जानता हो. अयोग्य व्यक्ति सिफारिश से कोई ऊंचा पद पा जाता है तब उस का परिणाम फैक्टरी को भुगतना पड़ता है. सामान

सुरेखा आशा से बढ़चढ़ कर बातें कर रही थी तभी प्रकाश मुझ से बोला, "राजू, बहुत बुरी तरह फंस गया हूं, मैं. हजारों का कर्ज हो गया है. अब क्या करूं?"
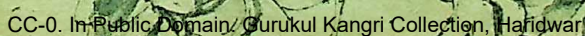
अच्छा नहीं बन पाता और फिर बाजार में उस फैक्टरी की साख पर बुरा असर पड़ता है."

मुझे लगता, वह अप्रत्यक्ष रूप से यह बात प्रकाश को ले कर कहते हैं. वह उस की गतिविधियां जान गए थे और उन्होंने प्रबंधक से उस की शिकायत भी की थी.

उन्हीं दिनों हमारे विभाग में दूसरों के काम की देखरेख करने वाले का पद रिक्त हुआ. सभी जान गए, अधीक्षक महोदय यह पद मुझे देना चाहते हैं.

प्रकाश के लिए यह असह्य था. उस ने कह दिया, "मेरे रहते हुए तुम परिनिरीक्षक नहीं बन सकते. अच्छा यही होगा कि तुम स्वेच्छा से मेरे हक में हट जाओ."

चाहते हुए भी अधीक्षक मेरे लिए कुछ नहीं कर सके.

प्रकाश ने विजयोल्लास से कहा, "देखा, इसे कहते हैं सिफारिश. काम करते-करते रिटायर हो जाओगे पर केवल काम के बल पर तरक्की नहीं पा सकोगे."

सुरेखा खुश थी. उसे लगा था, उस का पति अधिकारी हो गया है, जब कि परिनिरीक्षक अधिकारी की कोटि में नहीं आता. वह मात्र प्रबंध विभाग व श्रमिकों के बीच एक कड़ी होता है.

सुरेखा ने अपनी सहेलियों पर धाक जमानी शुरू कर दी. मिस्तरियों की पत्नियों से मिलना अपनी बेइज्जती समझने लगी. उस ने अपने रहनसहन का स्तर और भी ऊंचा कर लिया. उस ने प्रकाश से भविष्य निधि और सोसायटी से एक बड़ी रकम बतौर कर्ज निकलवा ली और घर को आधुनिक ढंग से सजाने में लग गई.

यह सब मेरी पत्नी को भला कैसे सहन होता? उस की भी इच्छा होती थी कि मैं भी परिनिरीक्षक हो जाऊं और हमारा घर आधुनिक सामान से सजा हो.

परिनिरीक्षक होते ही प्रकाश [illegible] दिखाने लगा. वह चाहने लगा था [illegible] सारे मिस्तरी उस के इर्दगिर्द चक्कर [illegible] उस की चापलूसी करें, उसे खुश रखें, [illegible] पानसिगरेट पेश करें.

जब किसी मिस्तरी को कोई [illegible] समझ में न आता और वह पूछता [illegible] प्रकाश झुंझला जाता. कहता, "इतने [illegible] से काम कर रहे हो, फिर क्यों समझ [illegible] नहीं आता? कोशिश कर के देखो."

एक दिन उस ने मुझ से कहा, "राजू [illegible] ने तुम से जो रुपए उधार लिए [illegible] उन्हें लौटा नहीं सकूंगा. मैं माह में दो-[illegible] दिन अधिक ओवरटाइम दे दिया करूं[illegible] जिस से तुम्हारी रकम निकल जाएगी."

सुन कर मुझे बड़ा अजीब सा लगा[illegible] मैं ने कह दिया, "एक तिकड़मबाज इस [illegible] अधिक सोच ही क्या सकता है."

इस के बाद वह मुझ से बराबर [illegible] चिढ़ने लगा. मुझे अधिक मेहनत का काम [illegible] दे कर अपना क्रोध शांत करता. उस ने [illegible] सुरेखा के माध्यम से मेरी पत्नी में हीन[illegible] भावना पैदा करने की कोशिश की. आशा [illegible] कुछ समझ नहीं पा रही थी. वह मुझ से [illegible] खिचीखिची सी रहने लगी.

मैं कमरे में आया तो आशा को [illegible] चुपचाप पा कर मैं ने ही पहल की, "क्या बात है, देवीजी. आज चेहरे पर उदासी क्यों छाई हुई है?"

वह तिलमिला गईं, "मेरे जीवन में खुशी कहां? एक सुरेखा का भाग्य है जो अपना जन्मदिन भी धूमधाम से मनाने जा रही है."

मैं ने समझाया, "तरक्की पा लेने से सारी खुशियां नहीं मिल जातीं, न उस का स्तर बदल जाता है. खुशियां पाने के लिए दिल में संतोष होना चाहिए. हमारा परिवार छोटा है. दो प्यारेप्यारे बच्चे हैं. हम पर किसी का कर्ज नहीं. वेतन में अच्छी तरह गुजरबसर हो ही जाती है. फिर और क्या चाहिए?"

वह बोल उठी, "क्या है हमारे यहां? न फ्रिज, न लोहे की अलमारी, न गैस का चूल्हा, न कुकर. सुना है, सुरेखा का पति स्कूटर खरीदने वाला है."

"ऐसा मैं भी कर सकता हूं, किंतु व्यर्थ रुपए खर्च करने से क्या लाभ? बैंक में कुछ तो रहना ही चाहिए ताकि संकट में काम आ सके."

तभी सुरेखा आ गई. वह अपने जन्मदिन का निमंत्रण देने आई थी. मैं बाहर के बरामदे में कुरसी लगा कर बैठा रहा और उन दोनों को बात करने के लिए कमरे में छोड़ दिया.

तभी प्रकाश भी आता दिखाई पड़ा. उस ने आते ही कहा, "राजू, सुरेखा का जन्मदिन है और मेरे हाथ खाली हैं. तुम सहायता नहीं करोगे तो मेरी इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी."

"पर इस समय मेर पास रुपए नहीं हैं" मैं ने साफ़साफ कह दिया.

वह गिड़गिड़ाया, "बहुत बुरी तरह फंस गया हूं मैं. पहले से ही हजारों का कर्ज चढ़ा हुआ है. सुरेखा मानती ही नहीं. वह अपना जन्मदिन धूमधाम से मनाना चाहती है. उस ने अपनी बहुत सी सहेलियों को बुला लिया है. मैं परिनिरीक्षक बनने के लिए तो कर्जदार हुआ ही था, अब दिखावे और पत्नी के नाजनखरों के कारण और कर्जदार होता जा रहा हूं."

मुझे क्रोध आ गया. मैं ने तीखे स्वर में कहा, "तुम चमचागीरी में माहिर न होते तो तुम्हारा कुछ भी दांव न चलता. मुझे डर है कि तुम और तरक्की पाने के लिए अपनी बचीखुची इज्जत को भी दांव पर लगा दोगे. अच्छा होगा, तुम अब भी संभल जाओ."

वह उदास स्वर में बोला, "राजू, शायद तुम नहीं जानते, अधीक्षक ने मेरी अयोग्यता को प्रबंधक के सामने प्रमाणित कर दिया है. मुझे मशीनों का काम न आने के कारण अगले सप्ताह से दूसरे

जुदाई का आलम

किसी के दिल की धड़कन तक
कोई महसूस करता है,
जुदाई में यह एक आलम
भी होता है मुहब्बत का.

—बिस्मिल सईदी

विभाग में भेजा जा रहा है."

मैं ने कह दिया, "सिफारिश भिड़ा कर एक बार फिर अधीक्षक को दिखा दो कि तुम काम के अलावा अन्य बातों में कितने होशियार हो."

वह तिलमिला उठा.

तभी सुरेखा हमारे सामने आ खड़ी हुई. वह प्रकाश को खा जाने वाली दृष्टि से घूरने लगी; मानो प्रकाश ने अपनी इज्जत को गिरवी रख दिया हो. सुरेखा को शायद उस से ऐसी आशा नहीं थी.

सुरेखा ने अभीअभी आशा के सामने खूब बड़ाई की थी. यह भी कहा था कि उस के पास रुपयों की कमी नहीं है.

आशा को अपना दांव चलाने का इस से अच्छा मौका कब मिलता. उस ने सुरेखा का मुंह सदा के लिए बंद करना ही ठीक समझा. बोली, "कोई बात नहीं. कभीकभी ऐसा भी हो जाता है. हमारे यहां भी पैसे की कमी पड़ जाती है. तुम्हारी इज्जत मेरी है. मैं ने कुछ रुपए बचा रखे हैं, उस से तुम अपना जन्मदिन मना लो." और रुपए दे दिए.

सुरेखा और प्रकाश के जाने के बाद आशा मुझ से बोली, "मुझे माफ कर दो. मैं बहक गई थी. हम जैसे भी हैं, ठीक हैं."

विश्व सुलभ साहित्य

द्वारा प्रकाशित यौन विज्ञान व परिवार संबंधी प्रमाणिक पुस्तकें.

युवकों से
युवकों को योग्य पति और जिम्मेदार पिता बनने में सहायक पुस्तक.
रु. 3 50

युवतियों से
एक युवती समझदार बहू, प्रिय पत्नी, योग्य गृहिणी और आदर्श मां बन कर अपनी जिम्मेदारियों को सही ढंग से कैसे निभाए.
रु. 5.00

पति से
पति का पत्नी को समझने व अपना बनाए रखने में सहायक उपयोगी पुस्तक.
रु. 4.00

पत्नी से
परिवार को सुखमय बनाने के लिए विभिन्न समस्याओं का विवेचन. हर पत्नी के लिए अनिवार्य.
रु. 5.00

कामकला (दो भाग)
यौन जीवन सुखमय बनाने में सहायक पुस्तक. सेक्स के हर पहलू का वैज्ञानिक विश्लेषण.
प्रत्येक भाग रु. 5.00

स्त्री पुरुष
प्राचीन भारतीय काम विज्ञान तथा आधुनिक पश्चिमी खोज के ज्ञान का समावेश इस पुस्तक में मिलेगा
रु 6.50

बच्चों की समस्याएं
बच्चों को शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ कैसे बनाएं ?
रु. 3.00

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें. या आदेश भेजें.

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

VSS 101

पूरा सेट केवल 25 रुपए में डाक खर्च सहित या कोई भी तीन पुस्तकें लेने पर डाक खर्च की ...

गंजापन: क्या और क्यों?

लेख • रामभरोसेलाल गर्ग
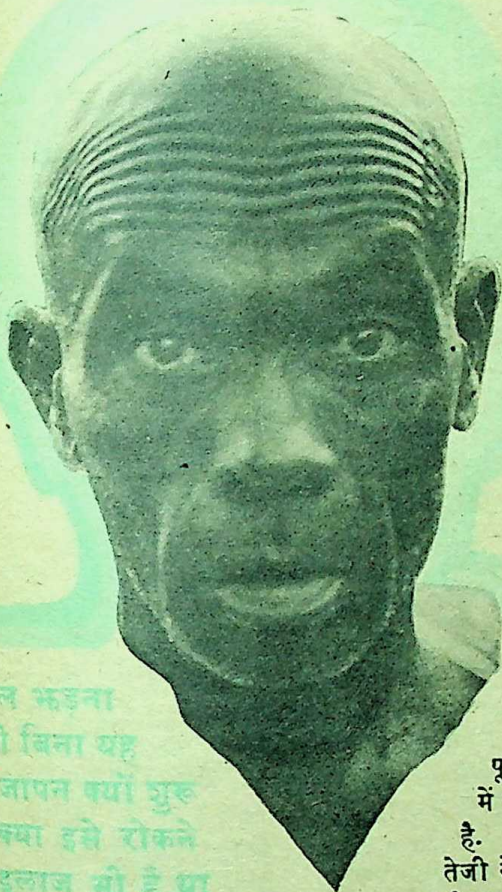
सिर के बाल झड़ना शुरू होते ही बिना यह जाने कि गंजापन क्यों शुरू हुआ और क्या इसे रोकने का कोई इलाज भी है या नहीं—प्रायः लोग सभी जायज-नाजायज तरीके अपनाने लगते हैं. पर इन का नतीजा?

गंजेपन की समस्या बिना जातपांत, गरीबीअमीरी और ज्ञान व अज्ञानता के बंधन के हर देश में विद्यमान है. अमरीका के श्वेत नागरिकों में से दो तिहाई किसी न किसी हद तक इस मर्ज से पीड़ित हैं. पूर्व के देशों में हर आठ में से एक व्यक्ति गंजा है. जापान में गंजापन तेजी से बढ़ता जा रहा है. यही कारण है कि गंजेपन को दूर करने तथा सिर पर फिर से बाल उगाने का दावा करने वाली अनेक दवाएं बाजार में धड़ल्ले से बिकती हैं और लोग उन्हें बड़े शौक से खरीदते हैं. लेकिन उन के निरंतर उपयोग के बाद भी नए रूप से एक भी बाल सिर पर उगता दिखाई नहीं देता. दवाई बदली जाती है लेकिन नई दवाई भी
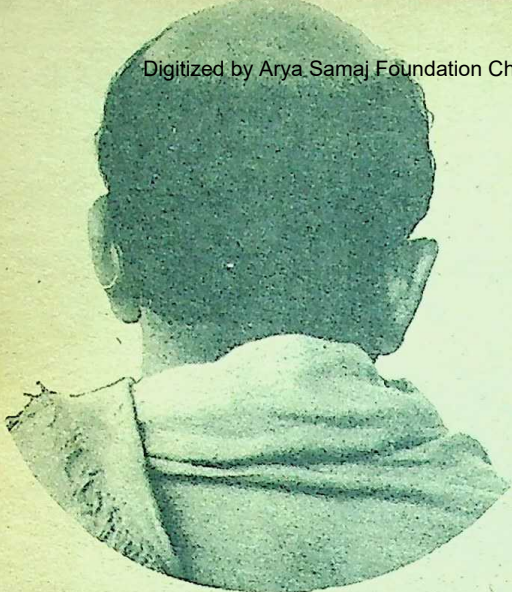
कोई करिश्मा नहीं दिखा पाती.

कम ही लोग जानते हैं कि गंजेपन का कोई इलाज नहीं है. अप्रैल, 1979 में हैम बर्ग (पश्चिम जरमनी) में हुई एक अंतरराष्ट्रीय गोष्ठी में वैज्ञानिकों ने यह स्पष्ट राय जाहिर की थी कि गंजापन एक ऐसी बीमारी है जिस की कोई दवा नहीं है. इन प्रतिनिधियों ने बताया कि अपने सिर पर फिर से बाल उगाने के लिए उन्होंने कौनकौन से पापड़ नहीं बेले. किस्मकिस्म की दवाइयां लगाईं. हेयर टानिक आजमाए. विशेष प्रकार का भोजन और दवाएं खाईं. तेल की मालिश कराई. जादू टोना किया. यहां तक कि भगवान के द्वार पर भी दस्तक दी, सिर झुकाया लेकिन अफसोस, सिर पर बाल न उगने थे न उगे. वैज्ञानिकों ने यह स्वीकार किया कि चूंकि गंजेपन का कोई इलाज नहीं है, इसलिए अच्छा यह है कि दवा तलाश करने की अपेक्षा इसे फैलने से रोकने के उपाय करने चाहिए.

बालों का गिरना हमेशा गंजेपन का सूचक नहीं होता. बहुत से लोगों का विश्वास है कि खोपड़ी पर कई लाख बाल होते हैं, जो गलत है. वास्तविकता यह है कि सामान्य खोपड़ी पर एक लाख तक

बालों का गिरना हमेशा गंजेपन का सूचक नहीं होता. इसलिए इस की रोकथाम के उपाय अवश्य करें.

बाल होते हैं. इन में से 90 प्रति बाल उगने की अवस्था में होते हैं ये मजबूती से खोपड़ी से जुड़े होते तथा केवल 10 प्रतिशत झड़ने स्थिति में होते हैं. इस के अतिरि बालों की आयु होती है और आ आयु के अनुसार ये लंबे हो गिर जाते हैं और इन का स्था नए बाल ले लेते हैं. आम तौर ऐसा ऋतु परिवर्तन के समय होता लेकिन यदि बालों के गिरने का क्रम रहे और नए बाल न उगें तो गंजेपन आरंभ मानना चाहिए.

गंजेपन के कई कारण

इस प्रकार गंजेपन के अनेक कार हो सकते हैं. बहुत से व्यक्ति गंजेपन का कारण हारमोंस की कमी मानते हैं. हैम बर्ग में हुई अंतरराष्ट्रीय गोष्ठी के अध्य डा. गुंटर ने बताया कि यह कहना गल है कि गंजापन हारमोंस की कमी के कार होता है क्योंकि इस बात के पर्याप्त प्रमा मिल चुके हैं कि ऐसे व्यक्ति भी गंजे जिन में हारमोंस पर्याप्त मात्रा में पाए गए हैं. बहुत से लोगों का विश्वास है कि सिर में रूसी (फयास) होने से गंजापन हो जाता है, पर यह भी गलत है. डा. डी. ए रिवेली के अनुसार सिर में रूसी होना अच्छी बात नहीं है लेकिन इसे गंजेपन के लिए उत्तरदायी नहीं माना जा सकता. ऐसे बहुत से लोग मिल जाएंगे जिन के रूसी होती है लेकिन उन के सिर बालों से भरे हुए हैं.

वैज्ञानिक अब इस बात पर सहमत होते जा रहे हैं कि गंजापन संभवतः वंशानुगत होता है. अतः इस दिशा में पहला कदम यह उठाना चाहिए कि जिन परि वारों में गंजेपन के लक्षण हैं उन के बच्च

की आरंभ से ही चिकित्सा की व्यवस्था की जाए. हैम वर्ग की गोष्ठी में डा. गुंटर ने बताया कि हाल के वर्षों में ऐसी महिलाओं की संख्या बढ़ी है जिन के बाल झड़ते हैं. उन्होंने बताया कि लंबे अरसे तक नींद की गोलियां खाना, भावनात्मक उतारचढ़ाव, सदमा, असफल प्रेम आदि ऐसे कारण हैं जो स्त्रियों को धीरेधीरे गंजेपन की ओर ले जाते हैं. अतः गंजेपन के प्रमुख कारण ये माने जा सकते हैं : मानसिक तनाव, किसी दीर्घकालीन रोग से होने वाले कष्ट से स्नायु मंडल पर प्रभाव, अनिद्रा, दांतों की पीड़ा, गरम वातावरण में लगातार काम करते रहना व ओषधियों का प्रतिक्रियात्मक प्रभाव.

गंजेपन की रोकथाम

इन सभी कारणों में मानसिक तनाव, अनिद्रा तथा दीर्घकालीन रोग का स्नायु मंडल पर कुप्रभाव सब से अधिक महत्वपूर्ण हैं. व्यवहार में देखने में आता है कि गंजे व्यक्ति अन्य व्यक्तियों की तुलना में अधिक भावुक होते हैं जो तनाव के सर्वाधिक शिकार पाए जाते हैं. ऐसे व्यक्तियों को नींद भी पर्याप्त नहीं आती. अतः इस दिशा में दूसरा महत्वपूर्ण कदम तनाव को कम करना है. यह अपने शरीर को

मानसिक तनाव भी गंजेपन का एक मुख्य कारण है. इसलिए जहां तक संभव हो मानसिक तनाव से बचना चाहिए.
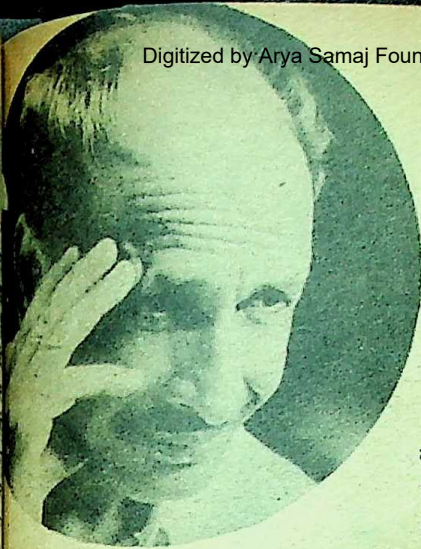
ढीला छोड़ने के अभ्यास तथा संतुलित आहार द्वारा संभव है. घर व बाहर ऐसी स्थिति बनाए रखनी चाहिए जिस से तनाव कम हो. तनाव को कम करने के लिए शामक ओषधियां या नींद की गोलियां गंजेपन को बढ़ाने में सहायता करती हैं. विद्वानों के अनुसार आहार का बालों से प्रत्यक्ष कोई संबंध नहीं है, लेकिन असंतुलित आहार तनाव का कारण बन सकता है.

आम तौर पर हम बालों की देखभाल तब तक नहीं करते जब तक वे गिरना आरंभ न कर दें. आधुनिक सभ्य समाज में तो बालों की देखभाल का अर्थ बिना उपयुक्त चिकनाई प्रयोग कि केवल कंघी कर लेना माना जाता है. बहुत से लोग कंघी करना भी आवश्यक नहीं समझते. जहां कंघी करने से बालों के व्यायाम के अतिरिक्त सिर की त्वचा के अंदर रक्त संचारण होता है तथा बालों की जड़ें मजबूत होती हैं, वहां शिकाकाई तथा तेल भी उन्हें स्वस्थ व सबल बनाते हैं.

बालों को यथासंभव खुला रखना चाहिए जिस से खोपड़ी की त्वचा भलीभांति श्वास ले सके. बालों को जितना प्राकृतिक ढंग से रखा जाएगा, वे उतने ही स्वस्थ होंगे और उन की आयु उतनी ही अधिक होगी. बाजार में उपलब्ध बालों के टानिक अस्थायी रूप से भले ही बालों का गिरना बंद कर दें, लेकिन ये समस्या का स्थायी समाधान नहीं बन सकते. इसी तरह गंजेपन को दूर करने और फिर से सिर पर बाल उगने के लिए ओषधियों का प्रयोग न केवल निरर्थक है अपितु बालों व मानसिक स्वास्थ्य के लिए घातक भी बन सकता है. अतः इन से बचने की आवश्यकता है. ●

बलात्कार, हत्या, डकैती, तस्करी, जालसाजी, वेश्यावृत्ति की कहानियां –

क्या आप का सही मानसिक विकास करती हैं?
क्या आप का सही मनोरंजन करती हैं?
क्या आप को सही राह दिखाती हैं?
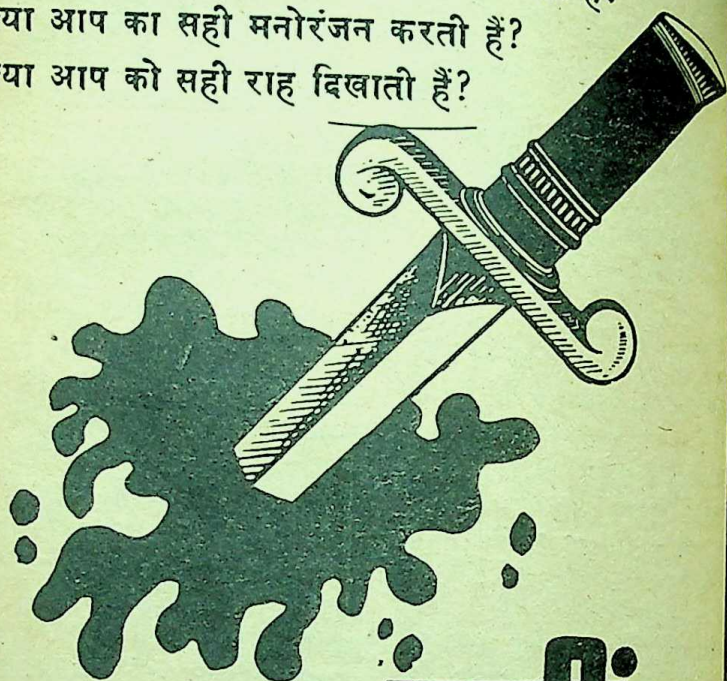
वे सिर्फ क्षणिक रोमांच देती हैं...
गलत दुनिया में भटकाती हैं...
चरित्रहीनता की ओर ले जाती हैं...

सुरुचिपूर्ण, स्वस्थ मनोरंजन के लिए प्रेरक और उद्देश्यपूर्ण साहित्य पढ़ें.

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं
ज्योति नए युग की घरघर जगाएं.

शाबाश

इस स्तंभ के लिए समाचार-पत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : शाबाश, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

एक भी शराबी नहीं

जो भी काम दृढ़ संकल्प से किया जाए उस में सफलता अवश्य मिलती है. इस का ज्वलंत उदाहरण लंगानूर गांव में देखने को मिला है, जहां के ढाई वर्ष पूर्व अधिकांश लोग शराब पीते थे, पर आज वहां एक भी शराबी नहीं है.

कर्नाटक के बीजापुर जिले में लगभग दो हजार की आबादी वाला यह गांव आज चर्चा का विषय बना हुआ है, एक सामूहिक संकल्प ने इस गांव का स्वरूप ही बदल दिया. पहले इस गांव की महिलाओं के लिए शराब अच्छाखासा सिरदर्द बनी हुई थी और शराबियों की हरकतों के कारण रोज झगड़े होते थे, अब पूर्ण शांति है.

एक दिन अचानक गांव वालों ने शराब न पीने का संकल्प लिया और शराब पीने वाले से 101 रुपए जुर्माने के रूप में वसूल करने का फैसला किया. प्रथम सप्ताह में 12 व्यक्तियों से शराब पीने के जुर्म में 1,212 रुपए वसूल किए गए.

इस के बाद इस गांव में किसी को भी शराब पीते नहीं देखा गया. अब वहां शराब की एक भी दुकान नहीं है. —स्वदेश, ग्वालियर (प्रेषक : कपूरसिंह कुहाड़)

✦

स्वावलंबी बनने का प्रयत्न

कुरुक्षेत्र के गीता हायर सेकंडरी स्कूल ने गरीब छात्रों द्वारा अपनी सहायता स्वयं किए जाने का एक अनुकरणीय तरीका निकाला है.

स्कूल के प्रधानाचार्य श्री बतरा के अनुसार इस स्कूल के गरीब छात्र प्रतिदिन आधा घंटा पहले स्कूल आते हैं तथा यहां पुस्तकों की जिल्दें चढ़ाने व स्याही बनाने आदि का काम करते हैं.

इन चीजों को धनी छात्रों या स्कूल द्वारा खरीद लिया जाता है. इस तरह कमाया गया धन बैंक में इन छात्रों के व्यक्तिगत खाते में डाल दिया जाता है जो बाद में इन्हीं छात्रों की कालिज शिक्षा के लिए व्यय किया जाएगा.

—दैनिक ट्रिब्यून, चंडीगढ़ (प्रेषक : अमरीकसिंह) **(सर्वोत्तम)**

✦

स्कूटर चालक की ईमानदारी

दिल्ली में एक तिपहिया स्कूटर चालक ने हाल ही में अपनी ईमानदारी का परिचय दिया.

एक सुबह दो महिलाएं नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से शक्ति नगर जाने के लिए कुलभूषण के स्कूटर पर सवार हुईं. लेकिन घर पहुंचने पर वे स्कूटर से अपना सूटकेस उठाना भूल गईं.

कुलभूषण को भी इस का पता नहीं चला. लेकिन थोड़ी देर बाद उस स्कूटर

में जब एक महिला सवारी बैठी तो उस ने सूटकेस की ओर चालक का ध्यान दिलाया.

इस पर कुलभूषण तुरंत उस मकान पर गया, जहां उस ने उन महिलाओं को उतारा था और उन का सूटकेस उन के हवाले कर दिया.

—नवभारत टाइम्स, दिल्ली (प्रेषक : संजयकुमार गुप्त)

✦

सिपाही ने फर्ज निभाया

नई दिल्ली रेलवे पुलिस के एक सतर्क सिपाही ने पिछले दिनों प्रथम श्रेणी के मुख्य आरक्षण कार्यालय की पहली मंजिल से छलांग लगा कर भागते हुए एक लुटेरे को दबोच कर उस से छः हजार रुपए की लूटी हुई राशि बरामद कर ली.

हुआ यों कि दो युवक आरक्षण कार्यालय में आए और सीधे प्रथम मंजिल पर स्थित राजधानी एक्सप्रेस के काउंटर नंबर 16 पर गए. वहां पहुंच कर इन दोनों ने काउंटर पर बैठी श्रीमती कौशल्या रानी को बातों में लगा लिया. इसी बीच एक युवक काउंटर के भीतर घुस गया. इस युवक ने वहां रखे रुपयों और कागजात को उठाया और भाग लिया.

युवक को भागते देख श्रीमती कौशल्या रानी ने शोर मचाया. तब ड्यूटी पर तैनात सिपाही सुरजीतसिंह यादव उस युवक के पीछे भागा. युवक बचने के लिए सीढ़ियों की ओर भाग खड़ा हुआ. सिपाही यादव ने जब देखा कि अब युवक को पकड़ना मुशकिल है तो उस ने तत्काल पहली मंजिल से छलांग लगाइ और भागते युवक को दबोच लिया.

पूछताछ के दौरान युवक से पता चला कि वह आंध्र प्रदेश का रहने वाला है. उस का नाम वादी वालू है.

रेलवे पुलिस उप आयुक्त ने श्री यादव को वीरता और कर्तव्यनिष्ठा के लिए पुरस्कार दे कर सम्मानित किया.—**दैनिक हिंदुस्तान, दिल्ली** (प्रेषक : क. ल. खुराना)

✦

डाकू से बंदूक छीनने वाला बालक

सरधना उपखंड के पाली नामक गांव की ग्राम रक्षा समिति ने 14 वर्षीय बालक ब्रजवीर को 121 रुपए पुरस्कार दे कर सम्मानित किया है. इस बालक ने एक डाकू के हाथ से बंदूक छीन ली थी और उस डाकू को मारने में साहस का परिचय दिया था.

डाकुओं का मुकाबला करने में साहस का परिचय देने वाले अन्य 13 ग्रामवासियों को भी प्रशंसापत्र दे कर सम्मानित किया गया है.

—**अमृत प्रभात, लखनऊ** (प्रेषक : किशोर हीरो)

✦

लड़कियों ने क्लर्क को पीटा

रिवाड़ी के राव वीरेंद्रसिंह कालिज आफ एजुकेशन के एक क्लर्क की छात्राओं ने जूतों और सैंडिलों से पिटाई की.

बताया जाता है कि वह क्लर्क एक छात्रा से छेड़खानी करता था. छात्रा ने क्लर्क के इस व्यवहार की सूचना छात्रों को दी लेकिन उन्होंने कोई कारवाई नहीं की. अंत में छात्रा ने अपनी सहेलियों की सहायता ली.

एक दिन जब क्लर्क ने उस छात्रा के साथ फिर छेड़खानी की तो सारी छात्राएं इकट्ठी हो गई और उन्होंने उस क्लर्क की जूतों और सैंडिलों से अच्छी खबर ली. —**सांध्य टाइम्स, दिल्ली** (प्रेषक : मुकेशकुमार जैन 'पारस')

काल्पनिक डाक टिकट ... और यह देखने की जरूरत ही नहीं समझी कि ऐसा कोई टिकट जारी हुआ भी है या नहीं.

'तुगलक' के दफ्तर में ऐसी सैकड़ों चिट्ठियां मिली हैं जिन पर काल्पनिक डाक टिकट लगा हुआ है.

—सन्मार्ग, कलकत्ता (प्रेषक : आनंद वेगवानी)

✦

तमंचा प्रेमिका को दिखा लेने दें

उतरोना के पुलिस थाने में उस समय भीड़ इकट्ठी हो गई, जब देशी तमंचे के साथ पकड़ा गया एक युवक थानाध्यक्ष से अनुरोध करने लगा कि एक बार उसे वह तमंचा उस की प्रेमिका को दिखा लेने दें.

अभियुक्त वह तमंचा इसलिए लाया था कि वह अपनी प्रेमिका को दिखा सके कि उस के मिलने में कोई बाधा नहीं पहुंचा सकता. मगर उसे गोरी बांहों की जगह हथकड़ियां मिलीं. अभियुक्त को शस्त्र कानून के तहत जेल भेज दिया गया है.

—अमृत प्रभात, लखनऊ (प्रेषक : दयानंद जायसवाल)

✦

प्रेमिका : एक पुलिस अधिकारी की

प्रेम अंधा तो होता ही है, यदि वह प्रेमी कोई सत्ताधीश हो तो फिर अपनी प्रेमिका को खुश करने के लिए वह चाहे जिस पर और चाहे जितना भी जुल्म ढा सकता है.

हाल ही में भिवानी की पुलिस ने यह दिखा दिया कि इस मैदान में वह भी किसी राजामहाराजा से कम नहीं है. एक पुलिस अधिकारी की चहेती की शिकायत पर चोरी के आरोप में दो व्यक्तियों धर्मपाल और विनोदकुमार को गिरफ्तार किया गया और पीटपीट कर उन से यह मनवा लिया गया कि उन्होंने निर्मला देवी के 112 रुपए चुराए हैं.

इस के बाद उन दोनों से यह वादा ले कर कि वह चोरी की रकम लौटा देंगे, उन्हें छोड़ दिया गया. मगर देवीजी को इस से जरा भी संतोष नहीं हुआ. सो बेचारे वे दोनों उसी रात फिर गिरफ्तार कर लिए गए.

सवेरे उन के घर वालों को उन के स्थान पर उन के शव मिले, जो पानी में डूबे रहने से फूल गए थे.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक : सतीश 'किशोर' हरचंदानी) **(सर्वोत्तम)**

✦

प्रेमिका 50 वर्ष की, प्रेमी 18 वर्ष का

प्रेम में उम्र बाधक नहीं होती, इस की ताजा मिसाल गुलरिहा थाने में दाखिल वह प्रार्थनापत्र है जिस के अनुसार एक 50 वर्षीया महिला अपने पति को छोड़ कर एक 18 वर्षीय युवक के साथ रहने के लिए सहमत है.

उल्लेखनीय है कि इस महिला के चार पुत्र व एक पौत्र भी है. बताया जाता है कि स्टेंडपुर ग्राम की एक महिला का एक युवक से प्रेम हो गया. इस से क्षुब्ध उस के पति ने युवक को गिरफ्तार करने के लिए गुलरिहा पुलिस से आग्रह करते हुए एक प्रार्थनापत्र दिया.

बाद में महिला ने अपने पति पर शराबी होने का आरोप लगाते हुए एक और प्रार्थनापत्र दिया कि वह उस युवक के साथ रहने के लिए सहमत है.

पता चला है कि वह महिला उसी युवक के साथ इस समय कहीं और रह रही है.

—दैनिक जागरण, कानपुर (प्रेषक : बांकेलाल)

मार्गदर्शन करने वाला एक संग्रहणीय अंक

गृहशोभा

मार्च, 1981

नववधू विशेषांक

मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छायाकार : मधु कारंदीकर, बंबई.

मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छायाकार : स. कु. गुप्ता, वाराणसी.

तुम,
मिल कर भी न मिल सके,
जैसे कोई पथिक प्यासा,
सागर जल अंजुलि में भर,
हसरत से देखे
पर प्यास को न छल सके.
कुछ यूं ही
मैं तुम्हें देखती रही,
शब्द बन गए भावों के बांध थे,
तुम किसी और के चांद थे.

—आभा मायुर

प्रायः वही बिछुड़े भाइयों की कहानी, वही बाक्स आफिस के फार्मूले देसाई की हर फिल्म में होते हैं. फिर भी उन की फिल्में सफल कैसे हो जाती हैं?

"मैं नामी सितारों को लेकर ही फिल्में बनाता हूं."

मनमोहन देसाई

भेंटवार्ता • अमिचार

मनमोहन देसाई भारतीय फिल्म उद्योग के निर्देशकों में एक जानापहचाना नाम है. अभी तक वह 14 फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं. इन में से अधिकांश पैसा बटोरने की दृष्टि से बहुत सफल रही हैं. मगर बाद की फिल्मों में बारबार ऐसे भाइयों की कहानी को ही दोहराया गया, जो बचपन में बिछुड़ गए और उन में से एक अच्छे रास्ते पर अग्रसर होता गया और दूसरा बुरे रास्ते पर. उन की इन फिल्मों में किसी नई बात का न होना यह प्रश्न पैदा करता है—'क्या मनमोहन देसाई अपनी नंबर एक की स्थिति से नीचे आते जा रहे हैं?'

मनमोहन देसाई से मुलाकात का समय तय कर मैं उन से फिलिमस्तान स्टूडियो में 'नसीब' के सेट पर मिला. इस समय उन की जो तीन फिल्में बन रही हैं, उन में एक 'नसीब' भी है ... भव्य था और लगता था कि इस पर कई लाख रुपए खर्च किए गए हैं. यह फिल्म बहुत बड़े बजट से तैयार की जा रही है. इस में नामी सितारों के करीब एक दरजन जोड़ों को लिया गया है. और उस वक्त जो दृश्य फिलमाया जा रहा था, उस में अमिताभ बच्चन फिल्म 'धर्मवीर' की रजत जयंती समारोह के उपलक्ष्य में
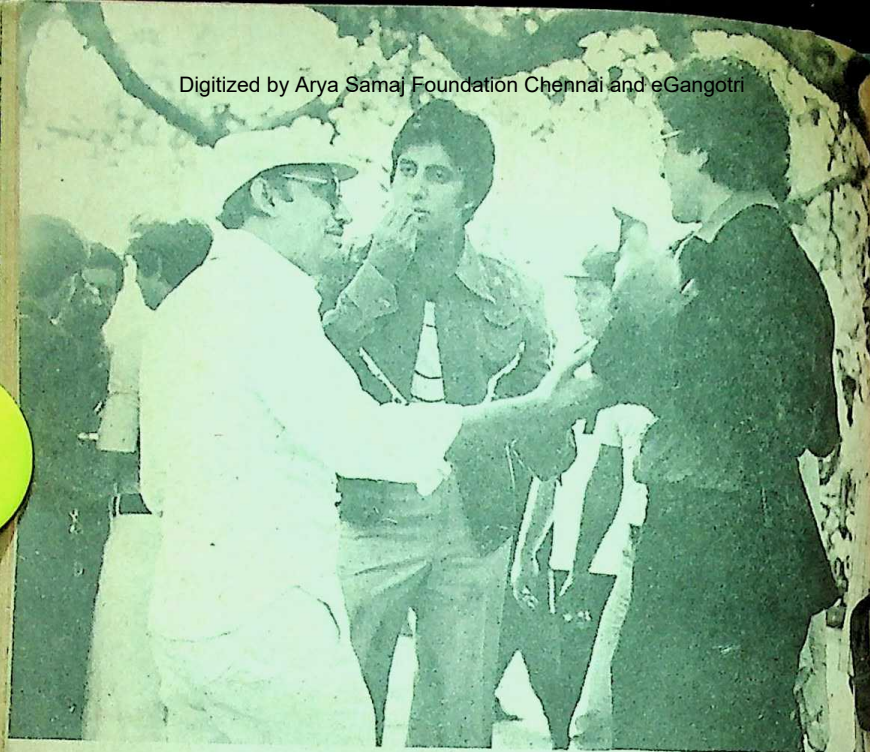
फिल्म 'सुहाग' के सेट पर मनमोहन देसाई अमिताभ व शशि को एक दृश्य समझाते हुए. पास ही खड़े हैं 'सुहाग' के एक निर्माता सुभाष शर्मा (एकदम दाएं).

आयोजित समारोह में बैरे की पोशाक पहने गीत गा रहा था.

उन की हाल ही में प्रदर्शित फिल्म 'सुहाग' थी, जिस के बारे में समीक्षकों का कहना है कि वह अव्वल दर्जे की बेवकूफी भरी फिल्म थी. इस में भी वही बिछुड़े भाइयों वाले कथानक को रखा गया था. जब मैं ने 'सुहाग' के बारे में अपनी राय से उन्हें परिचित कराया तो वह गुस्से में बोले कि मुट्ठी भर लोगों की बात उन के लिए कोई मानी नहीं रखती. जब तक आम दर्शक उन की फिल्में पसंद करते रहेंगें, तब तक वह फिल्में बनाते रहेंगे, चाहे उन की कहानी वही पुरानी बिछुड़े भाइयों वाली ही क्यों न हो. वह आवेश में आ कर बोले, "क्या आप ने देखा नहीं कि लोग इसे पसंद करते हैं? यह उन्हें अच्छी लगती हैं, वरना मेरी फिल्म इतने अरसे तक कैसे चल पाती है?"

मनमोहन देसाई ऐसा नहीं सोचते कि निर्देशक के रूप में उन की प्रतिष्ठा गिरती जा रही है. उन का कहना है, "मैं अब भी उतनी ही मेहनत करता हूं जितनी पहले किया करता था. और जब मैं पूरी लगन और मेहनत से काम करता हूं तो मेरी यही कामना होती है कि फिल्म सफल हो."

18 वर्ष की उम्र में निर्देशक बने

मनमोहन देसाई फिल्मी दुनिया में बहुत लंबे समय से हैं. उन के पिता कीकू भाई देसाई फिल्म निर्माता थे. उन्होंने बहुत सी फिल्में बनाई थीं, जिन में ज्यादातर स्टंट फिल्में थीं. मनमोहन देसाई की पढ़ाई में कभी रुचि नहीं रही. इसी कारण वह पढ़ाई छोड़ कर निर्देशक बाबू भाई मिस्तरी के शागिर्द हो गए. उन्होंने उन से बहुत कुछ सीखा और जब उन के भाई ने 'छलिया' फिल्म बनाने का विचार किया और मनमोहन देसाई को उस का

निर्देशन करने को कहा, उस वक्त मनमोहन देसाई की उम्र 18 वर्ष थी. फिर भी उन्होंने उस फिलम का निर्देशन किया और वह खूब चली.

नामी सितारे ही क्यों?

उस के बाद मनमोहन देसाई ने 'ब्लफ मास्टर' बनाई जो असफल रही. फिर 'बदतमीज' आई जो सफल रही. 'किस्मत', 'सच्चा झूठा,' 'शराफत', 'भाई हो तो ऐसा', 'रामपुर का लक्ष्मण', 'आ गले लग जा,' 'रोटी', 'धर्मवीर', 'चाचा भतीजा', 'अमर अकबर एंथोनी', 'परवरिश,' और 'सुहाग' उन के द्वारा निर्देशित कुछ फिल्में हैं. इन में से बहुत सी फिल्में बाक्स आफिस पर काफी अच्छी साबित हुईं. अब वह 'नसीब', 'सरफरोश' और 'देश प्रेम,' नामक फिल्में बना रहे हैं. अब तक मनमोहन देसाई 'आ गले लग जा' फिल्म को अपनी सब से अच्छी फिल्म मानते हैं जब कि हकीकत यह है कि वह अत्यधिक भावुकता वाली फिल्म थी. उन का कहना है, "भावुकता जरूरी है, विशेषकर हिंदी फिल्मों में. लोग इसे पसंद करते हैं."

मेरे यह पूछने पर कि क्या यह सच है कि उन का राजेश खन्ना के साथ फिर से मेल हो गया है? वह सिर हिलाते हुए बोले कि राजेश उन के साथ एक फिल्म भी कर रहा है. उन्होंने आशा प्रकट की कि राजेश खन्ना के साथ उन का फिर मेल हो जाने से न सिर्फ उन दोनों को बल्कि दूसरों को भी फायदा होगा. "हम दोनों ने मिल कर कई सफल फिल्में बनाई हैं और आने वाले वर्षों में फिर ऐसा कर सकेंगे."

भले ही मनमोहन देसाई और राजेश खन्ना के बीच उभरे मतभेद अब न रहे हों, लेकिन इस के बावजूद मनमोहन देसाई अभिताभ को नहीं छोड़ना चाहते, और हकीकत यह है कि उन की आने वाली बहुत सी फिल्मों में अमिताभ काम कर रहा है. मनमोहन देसाई ने खुद माना है, "मैं नामी सितारों को लेता हूं, क्योंकि फिल्म की सफलता में उन का बहुत बड़ा हाथ होता है. फिल्म बिकने में भी इस से

'सुहाग' की लंबी शूटिंग करने के बाद आराम के क्षणों का आनंद लेते हुए मनमोहन देसाई, शशि कपूर व निर्माता प्रकाश मेहरा.
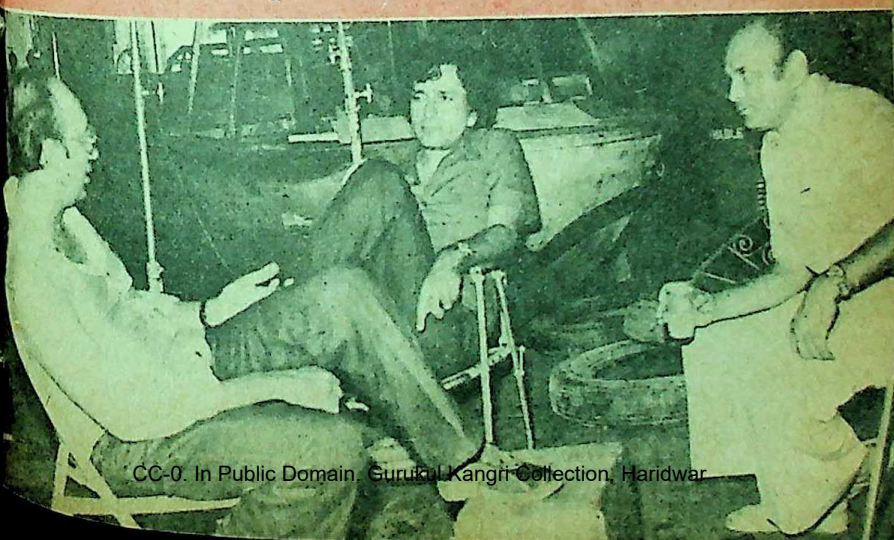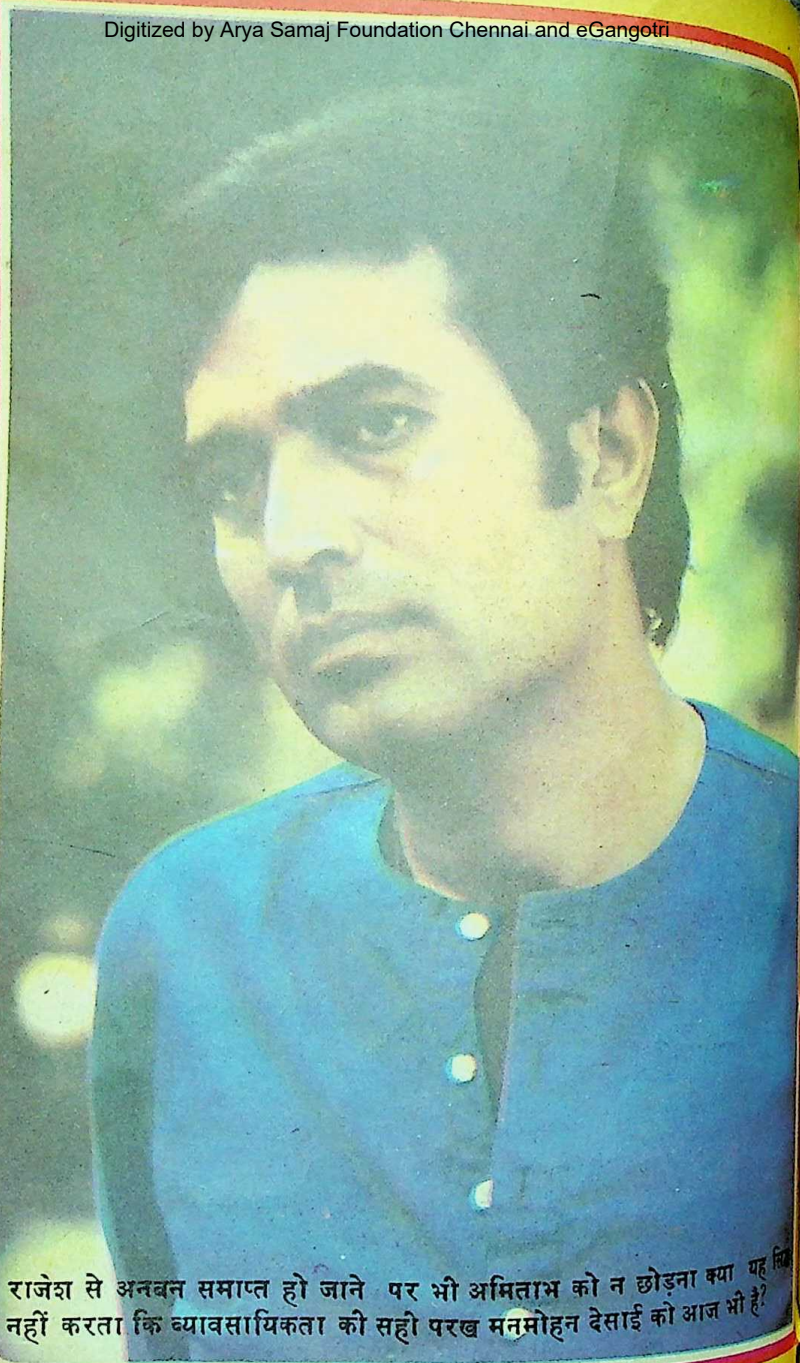
राजेश से अनबन समाप्त हो जाने पर भी अमिताभ को न छोड़ना क्या यह सि[illegible] नहीं करता कि व्यावसायिकता की सही परख मनमोहन देसाई को आज भी है?

मदद मिलती है."

यद्यपि मनमोहन देसाई हमेशा बड़े और नामी कलाकारों को ही लेते हैं, फिर भी वह उन के आगे झुकते नहीं और न ही उन्हें किसी तरह से अनुचित फायदा उठाने देते हैं. वह साफ कहते हैं, "

किसी का चमचा नहीं हूं."

वह ऐसा नहीं सोचते कि भाइयों के बिछुड़ने और फिर मिलने का विषय कभी बासी हो सकता है या लोग [illegible] नापसंद करने लगेंगे. उन का कहना है, "हमारे पुराणों और लोक कथाओं में इस प्रकार की घटनाओं के वर्णन भरे पड़े हैं और चूंकि

देसाई द्वारा निर्देशित फिल्म 'धर्मवीर' के एक दृश्य में नीतू सिंह : वही पुरानी कहानी पर फिर भी फिल्म बाक्स आफिस पर हिट हुई.
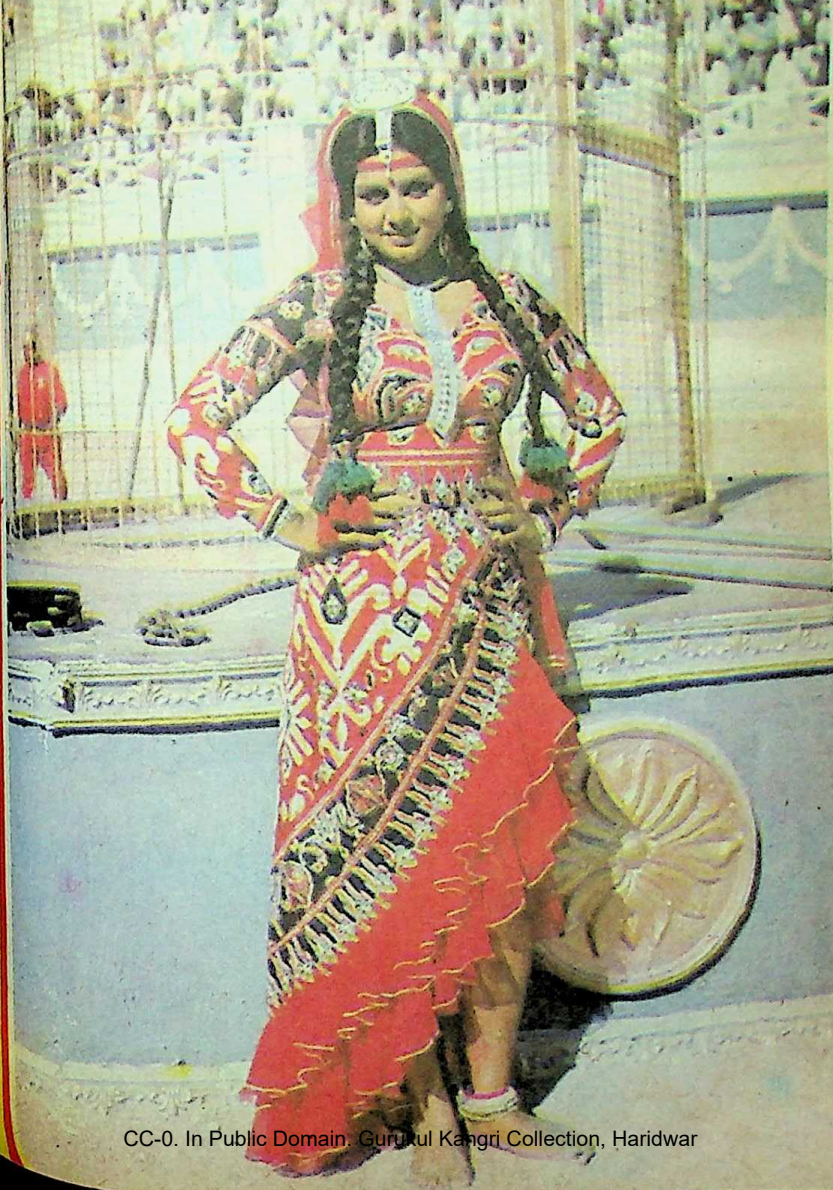
लोगों के दिमागों में ऐसी बातें बहुत गहराई से पैठ चुकी हैं इसलिए वे स्वभावतः आज भी इसे पसंद करते हैं. संसार में सब कुछ हो सकता है. वास्तव में जिंदगी स्वयं में एक बहुत बड़ा संयोग है."

सफल फिल्म की कसौटी

मनमोहन देसाई आजकल एक नई फिल्म 'सरफरोश' पर भी काम कर रहे हैं, इस ने उन के लिए एक समस्या खड़ी कर दी है. इस की शुरुआत काफी शानदार ढंग से हुई थी. इसलिए देसाई चाहते हैं कि अगर इस का अंत ज्यादा अच्छा न हो सके तो भी शुरुआत जैसा तो हो ही. उन का कहना है, "वास्तव में किसी अच्छी व सफल फिल्म के लिए जरूरी है कि उस की शुरुआत अच्छी हो, उस की कहानी रोचक ढंग से चलती रहे और अंत भी अच्छा हो."

मनमोहन देसाई का विचार है कि भविष्य में वह एक साथ कई सितारों को ले कर फिल्म नहीं बना[illegible] क्योंकि अपने कार्यक्रम के अनुसार उन[illegible] समय पर शूटिंग कराने में दिक्कत हो[illegible] हैं. वह अंगरेजी भाषा में विदेशी कलाकारों को ले कर एक फिल्म बनाना चाहते हैं लेकिन उस का नायक भारतीय होगा.

शूटिंग में व्यस्त मनमोहन देसाई: भविष्य में कई सितारों को ले कर फिल्म बनाने का कोई इरादा नहीं.

वह जो कुछ भी करें, इतना निश्चित है कि वह एक ऐसे निर्देशक हैं जो काम करना चाहते हैं और सिर्फ अपने काम से ही जुड़े रहना चाहते हैं. वह अभी तक ऊंचाई पर हैं और आगे आने वाले समय में भी रहेंगे, मगर तभी यदि उन्होंने 'सुहाग' जैसी कोई और फिल्म न दी तो •

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्त्वपूर्ण होती है, लेखक का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दिया जा रहा है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इस में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 50 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए

द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए

तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.

इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे.

इस के लिए 35 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,

नई दिल्ली-110055.

परदे के आगे परदे के पीछे

तमन्ना अधूरी

तमन्ना ने फिल्मी दुनिया में आते ही धर्मेंद्र के साथ अपने तथाकथित संबंधों को नमकमिर्च लगा कर ऐसे फैलाया मानो धर्मेंद्र उस के बिना मरा जा रहा हो. लेकिन यह स्टंट काम नहीं कर सका. धर्मेंद्र ने उस के प्रचार से नाराज हो कर उसे अपने दोस्त अर्जुन हिंगोरानी की फिल्म 'कातिलों का 'कातिल' से निकलवा दिया. हेमा से बाद में उस ने शादी भी कर ली. अब तमन्ना कह रही है, "अगर मेरा धर्मेंद्र के साथ रोमांस होता तो क्या मैं उसे आसानी से अपने हाथ से निकल जाने देती? भला कोई भी बड़ी उम्र का व्यक्ति 30 साल की औरत (हेमा) की तुलना में 15 साल की लड़की (तमन्ना) को महत्त्व देगा?"

[illegible]' प्रदर्शित हुई है.
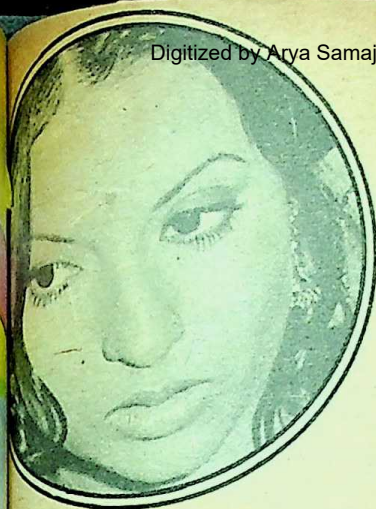
पूनम 'पूनम' में

एक फिल्म बन रही है 'पूनम' जिस की नायिका पूनम ढिल्लों ही है. जाहिर है कि फिल्म में उस का नाम भी पूनम ही है. हिंदी फिल्मों में बहुत कम मौके ऐसे आए हैं जब किसी कलाकार के नाम से ही फिल्म बनाना शुरू किया गया. इंद्रसेन जौहर ने जरूर अपनी कुछ बेतुकी हास्य फिल्मों का नाम अपने नाम पर रखा, मसलन—'जौहर इन कशमीर,'

रीता भादुड़ी : हिंदी फिल्मों में असफल मगर गुजराती फिल्मों में सफल.

तमन्ना : "अगर मेरा धर्मेंद्र से रोमांस होता तो मैं उसे भला अपने हाथों से जाने देती?"

पूनम : 'पूनम' नाम से बन रही फिल्म में काम कर के क्या और प्रसिद्धि पा सकेगी?

बेहतर होगा कि बजाए इधरउधर की बातें करने के वह अपने अभिनय पर ज्यादा ध्यान दे.

गुजराती में रजत जयंती

रीता भादुड़ी (जया भादुड़ी की बहन नहीं) हिंदी फिल्मों में बहन से आगे नहीं बढ़ सकी, लेकिन गुजराती भाषा में उसे नायिका और वह भी सफल नायिका बनने का मौका मिल गया. आज हालत यह है कि वह गुजराती फिल्मों की व्यस्ततम नायिकाओं में से एक है. हाल ही में नायिका के तौर पर गुजराती की उस [illegible] की 25वीं [illegible]

'जौहर इन बांबे' या 'जौहर महमूद इन गोश्रा.' जानीवाकर व दारासिंह के नाम पर फिल्में बनीं. जहां तक नायिकाश्रों का सवाल है, पिछले कम से कम 40 सालों में तो उन में से किसी के नाम पर फिल्म नहीं बनी है. वर्षों पहले 'साधना' बनी थी जिस में नायिका साधना न हो कर वैजयंतीमाला थी. इसी तरह 'श्राशा' की श्राशा भी श्राशा पारिख न हो कर रीना राय थी.

विदेशी भूत उतरा

'शालीमार' की जबरदस्त श्रसफलता के बाद लगता है कि श्रमरीका में बसे भारतीय फिल्म निर्माता कृष्ण शाह का विदेशी भूत उतर गया है. तभी तो विदेशी किस्म की स्टंट फिल्म 'शालीमार' से वह सीधे पूरी तरह भारतीय फिल्म 'श्रम्मा' पर श्रा गए हैं. इस फिल्म का लेखन पक्ष कमलेश्वर के जिम्मे है श्रौर मुख्य कलाकार हैं—श्रशोककुमार, राखी व मिथुन चक्रवर्ती.
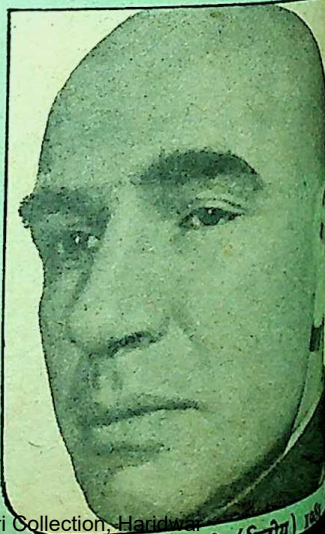
अमजद : 'शोले' में गब्बरसिंह की भूमिका उतनी सशक्त नहीं थी जितना अभिनय.

'शोले' बनाम 'शान'

जरूरी नहीं कि एक निर्माता सफल फिल्म बना कर दूसरी फिल्म उसी टक्कर की बना सके. 'शान' के साथ यही हुश्रा है. 'शोले' जैसी भव्यता व 'शोले' जैसी बात इस में कहीं पैदा नहीं हो पाई है. सब से ज्यादा नुकसान कुलभूषण खरबंदा को हुश्रा है कि दूसरा श्रमजद खान यानी गब्बर बनने का सलीम जावेद का दावा रेत की दीवार की तरह ढह गया. कुलभूषण सिर्फ इसी फिल्म का खास खलनायक रहा है. श्रागे उसे वैसी सफलता मिल पाने की गुंजाइश ही नहीं है जैसी श्रमजद को 'शोले' के बाद मिली थी क्योंकि 'शोले' में श्रमजद ने श्रपनी भूमिका में जो विशिष्टता पैदा की थी उसे कुलभूषण 'शान' में पैदा नहीं कर पाया है.

कुलभूषण खरबंदा : 'शान' में खलनायक तो बना मगर क्या अमजद जैसा अभिनय भी कर सका?

रीना राय : बिना मेकअप किए तो शायद कोई पहचान भी न सके.

मुहासों का चक्कर

मुहासे पूनम ढिल्लों व पद्मिनी कोल्हापुरे जैसी किशोर और कमसिन लड़की को परेशान करें तो बात समझ में आती है, लेकिन फिल्मों में ऐसी हीरोइनें भी हैं जिन के मुहासे निकलने की उम्र तो बीत चुकी है लेकिन चेहरे पर छाए मुहासों व झाइयों को दूर करने के लिए उन्हें मेकअप की मोटी परतें अपने चेहरे पर जमानी पड़ती हैं. मुहासों से रीना राय, स्मिता पाटिल व दीप्ति नवल खासी परेशान हैं. रीना राय को तो अगर बिना मेकअप के देख लिया जाए तो उसे [illegible] ही मुश्किल हो जाए.

'लव स्टोरी' का अंजाम

एक निर्माता के रूप में राजेंद्रकुमार की पहली फिल्म का नाम 'लव स्टोरी' जरूर है लेकिन उस की इस फिल्म ने अब तक घृणा ही बटोरी है. पहले राजेंद्र-कुमार के लड़के व 'लव स्टोरी' के नायक कुमार गौरव और राज कपूर की लड़की रीमा के बीच सगाई टूटी और फिर फिल्म का निर्देशक राहुल रवेल फिल्म से अलग कर दिया गया. पहले मामले की वजह बताने को कोई भी पक्ष तैयार नहीं है. हां, दूसरा मामला काफी विवादास्पद बन गया है.

राहुल कहता है कि राजेंद्रकुमार ने उसे धोखा दिया. जब कि राजेंद्र का कहना है, "राहुल फिल्म को पूरा करने में काफी समय ले रहा था. आम तौर पर 70 से 120 दिन की शूटिंग में एक फिल्म पूरी हो जाती है. राहुल 185 की शूटिंग में डेढ़ लाख फुट फिल्म खपा चुका है लेकिन काम अब भी नहीं हुआ है. मेरी यूनिट ने उस का नाम 'मि. थर्टी' रख दिया था, क्योंकि कोई भी शाट 30 बार रीटेक किए बिना वह पूरा नहीं करता. एक सीन का उस ने 119 बार रीटेक किया जो एक विश्व रिकार्ड है."

परीक्षित साहनी व राखी ('हम कदम' के एक दृश्य में.) : दोनों ही अपने फिल्मी जीवन के प्रति अब सचेत हैं.

फिल्मी दुनिया में यह अफवाह है कि राहुल ने राज कपूर के इशारों पर 'लव स्टोरी' को लेट करने के लिए अड़ंगे लगाए. लेकिन राजेंद्रकुमार कहता है, "मैं नहीं समझता कि राज कपूर मेरे लड़के का कैरियर तबाह करना चाहेगा."

संजय की नायिका?

संजय खान ने जीनत ग्रमान के साथ जो व्यवहार किया उस की वजह से कोई भी ग्रभिनेत्री उस के साथ काम करने को तैयार नहीं हो रही है. लिहाजा ग्रपनी ग्रगली फिल्म के लिए वह 'कुरबानी' की पाकिस्तानी गायिका नाजिया हसन को लेने की सोच रहा है. नाजिया को गाना तक ग्राता नहीं था फिर भी फिरोज खान ने उस से 'कुरबानी' में गाना गवा लिया. ग्रभिनय से भी उस का दूर तक का कोई वास्ता नहीं है. देखने की बात यह है कि संजय उस से कहां तक ग्रभिनय करा पाता है. वैसे नाजिया का परिवार इस प्रस्ताव से काफी खुश है, क्योंकि इस बहाने उन्हें भारत की मुफ्त सैर करने का मौका जो मिल जाएगा.

पटरी से उतरी गाड़ी

परीक्षित साहनी ने निर्देशन का डिप्लोमा मास्को जा कर लिया था लेकिन भारत ग्रा कर वह ग्रभिनेता बना ग्रौर ग्रब ग्रभिनय में ज्यादा सफल न हो पाने के बाद उस ने लेखन का काम शुरू कर दिया है. एस. एम. सथ्यू के लिए वह एक फिलम की पटकथा लिख रहा है. इस में दीप्ति नवल, फारुख शेख व नसीरुद्दीन शाह के साथ कलाकार के रूप में वह खुद भी होगा.

वापसी की तैयारी

पिछले दिनों राखी ने 15 दिनों तक किसी भी फिलम की शूटिंग में हिस्सा नहीं लिया. इस ग्ररसे में उस ने शराब बिलकुल नहीं पी, सिर्फ फलों का रस लिया ग्रौर डाक्टर की हिदायत पर नियमित रूप से दवाएं भी लीं. 15 दिन बाद जब वह स्टुडियो पहुंची तो उस के चेहरे की सूजन गायब हो गई थी और वह ताजा लग रही थी. लगता है कि ग्रब उस ने गंभीरता से ग्रपने फिलमी जीवन को ले कर सोचना शुरू कर लिया है. ●
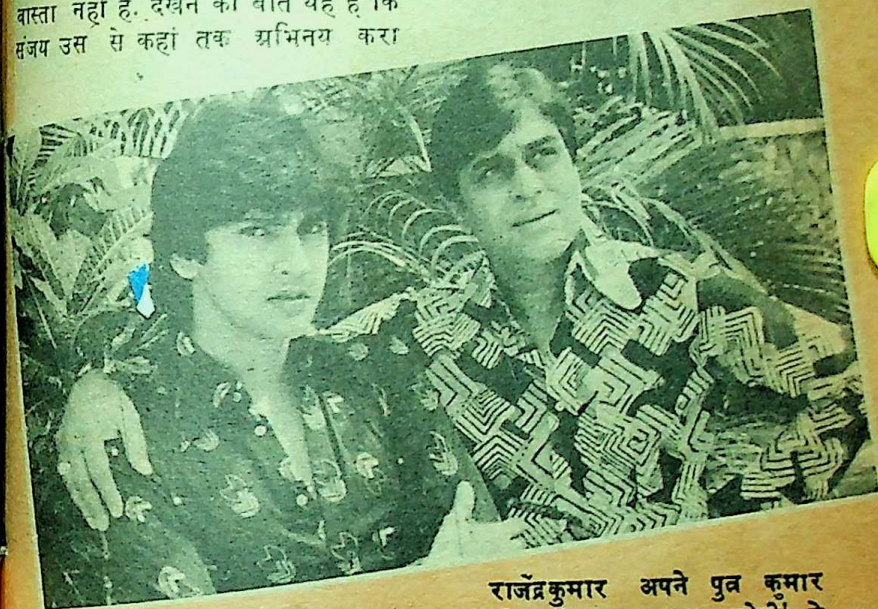
राजेंद्रकुमार अपने पुत्र कुमार गौरव के साथ : 'लव स्टोरी' से लगी आशाएं धूमिल होती जा रही हैं.
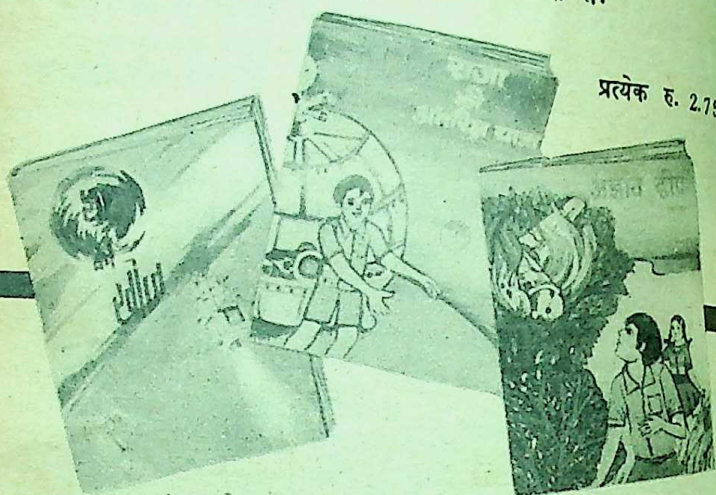
राजा की अंतरिक्ष यात्रा :

खेलखेल में ही राजा एक नए लोक में पहुंच गया, जहां की हर चीज इस दुनिया से अलग थी...........राजा ने निश्चय किया कि वह अपने साथियों को भी इस जगह लाएगा और एक नई दुनिया बसा कर स्वयं यहां का राजा बनेगा. क्या उसका यह सपना सच हो पाया? एक मनोरंजक और प्रेरणादायक बाल उपन्यास.

अज्ञात द्वीप :

'बाल कहानी प्रतियोगिता' में पुरस्कृत सात बालक व तीन बालिकाएं विमान द्वारा मिस्र जा रही थीं. तूफान में विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया मगर वे सभी बच निकले...... जिस द्वीप पर वे पहुंचे, वहां आदमी का चिन्ह तक न था. पास ही के एक अन्य द्वीप पर उन्हें एक खजाने के होने का पता चला, जिस की खोज में कुछ अंग्रेज डाकू आए हुए थे. छोटे बालकों की डाकुओं से मुठभेड़ की रोचक कथा.

शुक्र की खोज :

प्रसिद्ध वैज्ञानिक उमेश अपने विमान के साथ अंतरिक्ष में खो गए थे. कोई पता न चलने पर वैज्ञानिकों ने उन्हें लापता घोषित कर दिया. मगर उन का भतीजा दीपू इस निर्णय से संतुष्ट न था. और वह अपने मंगलवासी मित्र मिक के साथ उमेश चाचा को खोजने निकल पड़ा......उन्होंने उमेश चाचा को किस तरह ढूंढ़ा? इस खोज के दौरान उन्होंने अंतरिक्ष में क्याक्या देखा? बच्चों के लिए एक शिक्षाप्रद और मनोरंजक उपन्यास.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य: दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनॉट सरकस नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट मंगाने पर डाक खर्च की छूट. आदेश के साथ दो रुपए अग्रिम

आणविक अनुसंधानों का उपयोग अब केवल ऊर्जा यानी बिजली के उत्पादन तक ही सीमित नहीं रह गया है. कृषि व बागबानी के क्षेत्र में भी आणविक अनुसंधानों की सहायता से प्रगति की जा रही है. कृषि व बागबानी

कृषि के क्षेत्र में एक नई उपलब्धि

रेडियोएग्रोनामी

लेख • विवेक सक्सेना

आणविक अनुसंधानों ने कृषि व बागबानी के क्षेत्र में की जाने वाली खोजों का क्षेत्र व्यापक बनाने के साथ ही उन के विकास की संभावनाएं भी बढ़ा दी हैं...

न्यूलिक आणविक अनुसंधान सुविधा केंद्र का एक कर्मचारी हाथ में गाजर व मूली लिए हुए है. जिस गमले में रेडियोधर्मी मिट्टी थी, उस के पौधों की बढ़वार साधारण मिट्टी वाले पौधों की तुलना में कहीं अधिक हुई.
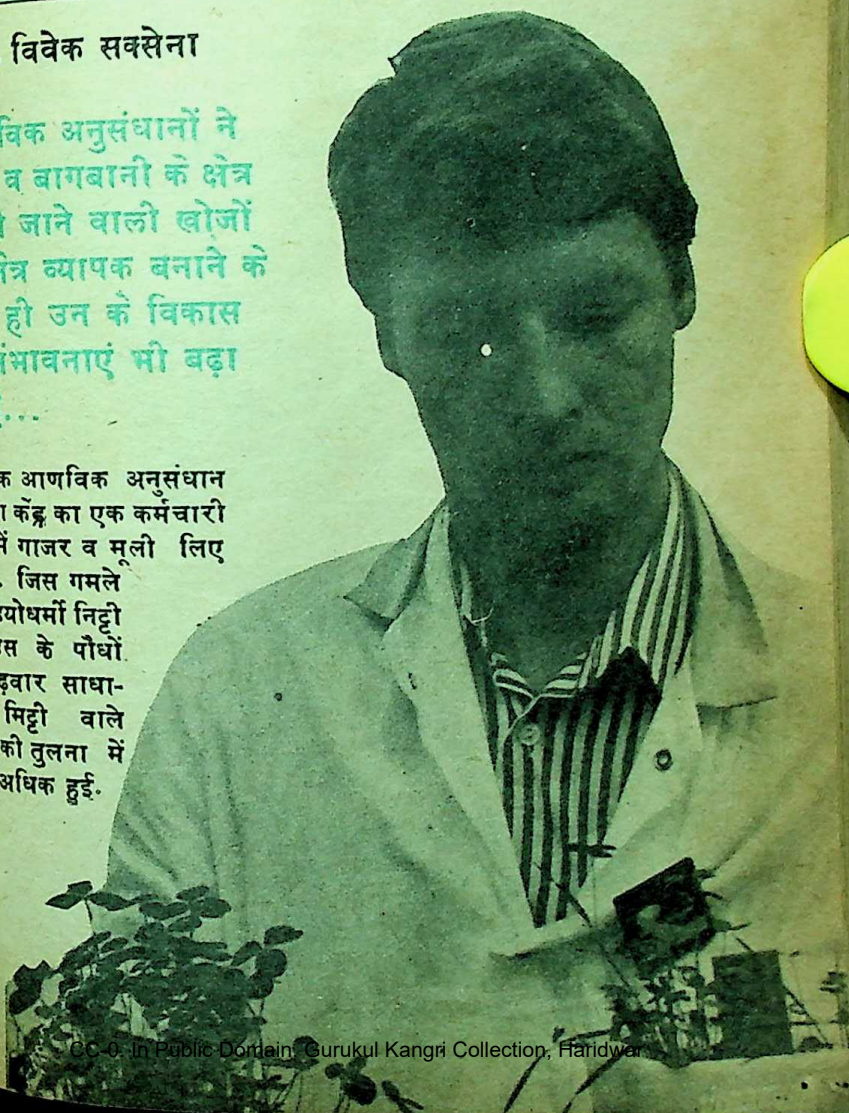
के क्षेत्र में आणविक तकनीक के उपयोग के परिणाम अच्छे रहे हैं.

उदाहरण के तौर पर पश्चिम जरमनी के ज्यूलिक शहर में बहुत बड़े पैमाने पर आणविक अनुसंधानों का प्रयोग उन्नत किस्म की फसलें पैदा करने तथा फलपौधों के संरक्षण के लिए किया जा रहा है.

ज्यूलिक आणविक के पुराने नगरों में एक है. कोलोन से 30 किलोमीटर पश्चिम में स्थित ज्यूलिक आणविक अनुसंधान केंद्र के चारों ओर काफी दूरी तक बागीचे और 'ग्रीन हाउस' (कोमल पौधों को उगाने के लिए बनाए गए कांच के घर) दिखाई पड़ते हैं.

यहां पर कृषि व बागवानी की विभिन्न समस्याओं को रेडियोधर्मी तत्वों की सहायता से हल किया जाता है. इस विज्ञान को 'रेडियोएग्रोनामी' यानी रेडियो कृषि कला नाम दिया गया है.

इस अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि फसलों और पौधों को

जब रेडियोधर्मी कीटनाशक को पत्ती के आधे भाग पर छिड़का जाता है तो भी उस का प्रभाव पूरी पत्ती पर पड़ता है.
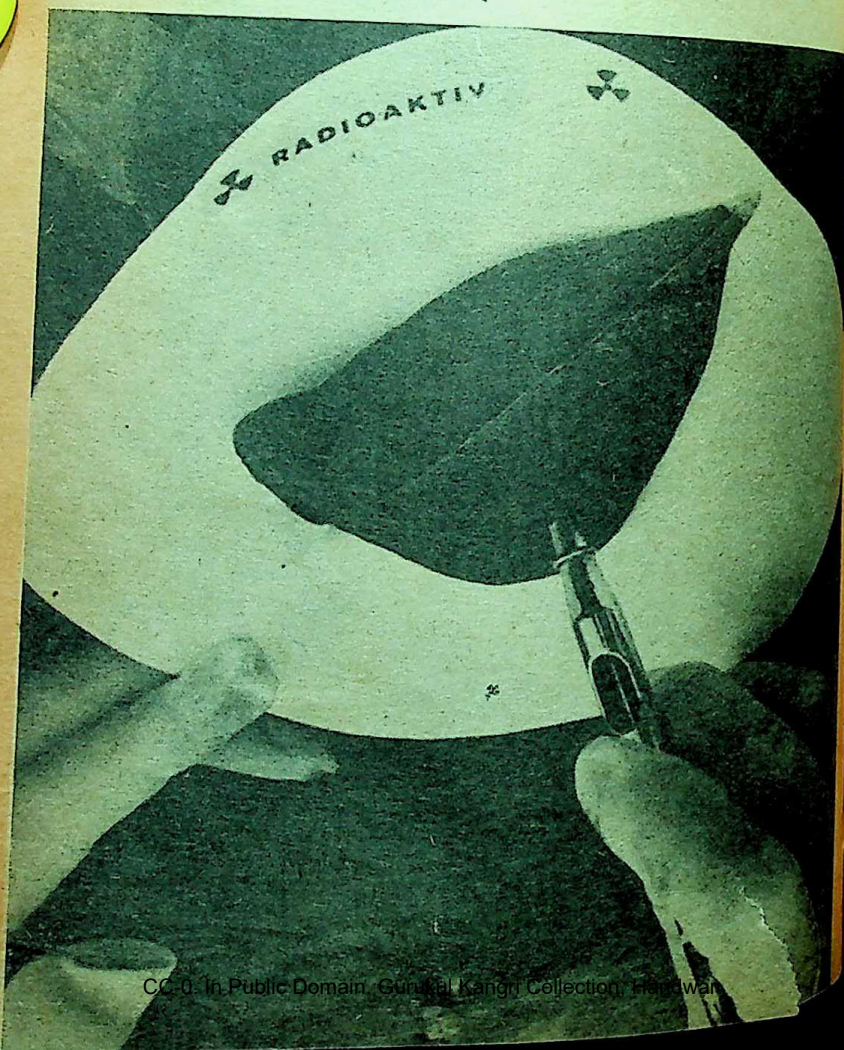
लगने वाली बीमारियों व अन्य समस्याओं को हल करने में विकिरण का उपयोग कहां तक किया जा सकता है.

व्यापक अनुसंधान केंद्र

ज्यूलिक आणविक अनुसंधान केंद्र पश्चिम जरमनी के 10 विशाल अनुसंधान केंद्रों में से है. इस केंद्र द्वारा 15 संस्थानों का संचालन किया जाता है जिन में सब मिला कर 5,000 कर्मचारी काम करते हैं.

मनुष्य को इस समय जिन सब से बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है और भविष्य में भी करना पड़ेगा, उन में से एक यह है कि शांतिपूर्ण कार्यों में अणुशक्ति का उपयोग कैसे किया जाए.

रेडियो कृषि कला के लाभ

प्रश्न यह है कि खेती के काम में रेडियो कृषि कला से क्याक्या लाभ होने की संभावनाएं हैं, क्योंकि इस से पौधों में रेडियोधर्मिता की बहुत सहीसही जानकारी

रेडियोधर्मिता के कारण सेबों में केलशियम 45 की मात्रा में काफी वृद्धि हुई है.

मिल जाती है, इसलिए किसी भी पौधे के अंदर के तत्वों व प्रक्रियाओं को जितनी अच्छी तरह इस विधि द्वारा जाना जा सकता है, उतनी अच्छी तरह का विश्लेषण वर्तमान रासायनिक विधियों द्वारा संभव नहीं है. पौधे, मिट्टी और पशु में रेडियोधर्मी मिश्रणों का उपयोग रोग का निदान करने के लिए किया जा रहा है. इस प्रकार इन के उपयोग से फलों व सब्जियों में विभिन्न रसायनों द्वारा उत्पन्न हानिकारक प्रभावों की रोकथाम की जा सकती है. आणविक विशेषज्ञ केंद्र के आसपास के इलाके से मिट्टी के नमूने भी एकत्र करते हैं.

वैज्ञानिकों का ध्येय

आज बहुत से लोगों की सब से बड़ी चिंता यह है कि उन के आसपास का वातावरण शुद्ध रहे और वे जिन खाद्य पदार्थों का उपयोग करें वे दूषित न हों. इसी लिए खाद्य उत्पादक इस बात के लिए उत्सुक रहते हैं कि उन के उत्पादनों में कीटनाशक दवाओं का अंश कम से कम हो. वैज्ञानिक व बागबानी के विशेषज्ञ भी यह पता लगाने का प्रयत्न कर रहे हैं कि जब कीड़े मारने वाली दवाएं प्रकृति के वायुमंडल में प्रवेश करती हैं तो उस की क्या प्रतिक्रिया होती है. क्या इस से नए प्रकार के मिश्रण पैदा होते हैं? क्या वे ऐसे होते हैं जो मनुष्य के लिए खतरनाक हो सकते हैं?

ज्यूलिक में वैज्ञानिक मिट्टी में मिलाई जाने वाली कीड़ामार दवाओं के घटते रासायनिक प्रभाव के साथसाथ खेतों में उगने वाली बेकार घासफूस को समाप्त करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली दवाओं की उपयोगिता के बारे में भी गहराई से जांच करते हैं.

अनुसंधान करते समय सब से ज्यादा ध्यान इस बात पर दिया जाता है कि पौधे अपनी जड़ों व पत्तियों द्वारा कितनी मात्रा में इन्हें ग्रहण करते हैं. यहीं रेडियोधर्मी मिश्रणों का उपयोग किया जाता है. यदि दवा ग्रहण करने के बाद मूल मिश्रण का स्वरूप बदल भी गया हो, तब भी पौधों में उस का पता आसानी से लगाया जा सकता है.

परीक्षणों की सफलता

देखने में यह सब काम काफी आसान नजर आता है, पर इस तरह के परीक्षण करते समय काफी सावधानी बरतनी पड़ती है. रेडियोधर्मी सक्रिय तत्वों को काम में लाते समय अगर जरा सी भी चूक हो जाए तो वे जीवन के लिए बहुत ही घातक साबित होते हैं. इसलिए इस तरह के परीक्षण विशेष प्रकार की प्रयोगशालाओं में किए जाते हैं, जहां सुरक्षा का पूरा प्रबंध रहता है.

ज्यूलिक स्थिति इस केंद्र में कृषि, बागबानी, कृषि कला, फल विज्ञान, पोषण (सब्जियों का उत्पादन) विषयों के वैज्ञानिक भी रेडियो कृषि कला विभाग में अनुसंधान करते हैं. उन का व्यावसायिक संस्थाओं से पूरा संपर्क रहता है जो केंद्र को अनुसंधान के लिए प्रायः उपयोगी प्रारंभिक आंकड़े उपलब्ध कराते हैं. इस प्रकार इस केंद्र में बाजार में बिकने वाले कीटनाशकों के अलावा उन कीटनाशकों के प्रभाव का भी अध्ययन किया जाता है, जो अभी तक बाजार में नहीं आए हैं.

रेडियो कृषि कला का उपयोग विकिरण पौधों के गुणों में परिवर्तन करने के लिए भी किया जा रहा है. विकिरण की सहायता से फूलों व फसलों पर प्रयोग कर के नई किस्में तैयार की जा रही हैं.

इस प्रकार रेडियो कृषि कला ने कृषि, बागबानी के क्षेत्र में की जाने वाली खोजों का क्षेत्र काफी व्यापक बना दिया है और इस के कारण बागबानी के क्षेत्र में विकास की संभावनाएं काफी बढ़ती जा रही हैं.

हुमायूं की मृत्यु के बाद जब दिल्ली के आसपास पुनः अव्यवस्था फैली, तब कुछ समय के लिए शेरशाह सूरी का सेनानायक हाजी खां पठान बादशाह बन बैठा. इस काम में चितौड़ के महाराणा उदयसिंह ने उस की मदद की.

हाजी खां पठान ने छोटेमोटे विद्रोहों को कुचल दिया और शांति स्थापित हो जाने के बाद वह किसी काम से दिल्ली से अजमेर गया. वह अपने साथ कई हजार फौजी तथा कई हजार का खजाना भी ले कर गया. पर इन सब में वह जो एक उल्लेखनीय चीज अपने साथ ले कर गया वह थी—रंगराय पातर.

राजस्थानी भाषा में 'पातर' वेश्या को कहते हैं. रंगराय पातर बेहद सुंदर थी. उस की सुंदरता की ख्याति दूरदूर

महाराणा उदयसिंह रंगराय पातर के हुस्न पर मोहित हो गए थे. किसी भी तरह उसे हासिल करने के लिए उन्होंने हाजी खां पठान के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया. पर क्या तब भी वे उसे हासिल कर पाए?

जब एक वेश्या के लिए युद्ध ठना!

ऐतिहासिक कहानी

हरमन चौहान

तक फैली हुई थी. बीकानेर नरेश मालदेव ने रंगराय पातर के बारे में सुना तो तो उस ने तुरंत अजमेर की ओर सेना भेज दी. हाजी खां पठान इस हमले का मुकाबला करने में असमर्थ था. इसलिए उस ने चितौड़ के महाराणा उदयसिंह से शरण मांगी. तब महाराणा ने उस की मदद के लिए राव दुर्गा तथा जयमल मेड़तिया के साथ सेना भेज दी. रंगराय पातर के लिए राजपूत आपस में ही भिड़ने के लिए तैयार हो गए. लेकिन पृथ्वीराज जैतावत नामक एक सामंत की सूझबूझ के कारण उन में समझौता हो गया और यह संघर्ष होतेहोते टल गया. लेकिन इस से राजपूतों में एकता न रही.

जब महाराणा उदयसिंह ने अपने सामंत जयमल मेड़तिया से रंगराय पातर की सौंदर्य महिमा सुनी तो वह भी उसे देखने के लिए उतावले हो उठे. महाराणा

वेश बदल कर रंगराय पातर से मिलने गए. रंगराय पातर उन के व्यक्तित्व को देख कर अपने होशहवाश खो बैठी. एक तरफ हुस्न था और दूसरी तरफ इश्क. दोनों एकदूसरे पर मोहित हो गए. उन की मुहब्बत कुछ समय के एकांत मिलन में रंग लाई. रंगराय पातर हाजी खां पठान के पास रहते हुए बहुत दुखी व परेशान थी. उस ने महाराणा से मिन्नत की कि वह उसे चुपके से अपने साथ ले जाएं. महाराणा ने उसे चितौड़ ले जाने का वचन तो दे दिया लेकिन वह उसे भगा कर ले जाने के लिए तैयार नहीं हुए. इस तरह ले जाने से सारे राजपूतों में एक विरोध खड़ा हो उठता. महाराणा ने उसे विश्वास दिलाया कि हाजी खां उन का मित्र है. वह उस से उसे मांग कर ले लेंगे. महाराणा को पूरा भरोसा था कि हाजी खां पठान उन की बात को टालेगा नहीं. महाराणा रंगराय पातर से वायदा कर के चित्तौड़ लौट गए.

चित्तौड़ से महाराणा ने हाजी खां पठान को खबर भिजवाई कि वह रंगराय को देखना चाहते हैं, इसलिए वह उसे चित्तौड़ भेज दें. हाजी खां ने महाराणा को अजमेर आने की दावत दी. महाराणा रंगराय पातर को देखने के लिए इस बार खुले रूप से गए. हाजी खां ने महाराणा के स्वागत में एक जलसे का आयोजन किया. इस जलसे में रंगराय पातर को नाचने का आदेश हुआ. हाजी खां और महाराणा अन्य दरबारियों के साथ बैठे थे. कसूंबे की रस्म आरंभ हुई. कसूंबा राजपूतों की एक परंपरा थी, जिस में मेजबान मेहमान को अपनी हथेली में अमल, (अफीम) घुला पानी भर कर पिलाता है. इसी तरह मेहमान भी यह रस्म अदा करता है. फिर सभी दरबारी कसूंबा लेते हैं.

रंगराय पातर ने ... में नाचना शुरू किया. इधर हाजी खां पठान ने महाराणा को कसूंबा पेश किया. महाराणा ने रंगराय पातर को ... समय आंखों से सलाम किया. जवाब में उस ने भी झुक कर सलाम किया. रंगराय पातर अब दूनी खुशी में झूमझूम कर नाचने लगी. महाराणा ने भी हाजी खां को कसूंबा पेश किया. दरबारियों में कसूंबा शुरू हुआ और रंगराय पातर के नाच के साथ कसूंबे के दौर पर दौर चलने लगे. सभी की आंखों में सुरूर आने लगा.

महाराणा और रंगराय पातर के बीच तो कोई और ही सुरूर चढ़ रहा था. वह था इश्क का. महाराणा ने अपनी हथेली में कसूंबा लिया और उठ कर भरी महफिल में नाचती हुई रंगराय को कसूंबा दिया. रंगराय पातर ने महाराणा की हथेली को अपने नाजुक होंठों से छू लिया. उधर रंगराय पातर ने भी अपनी हथेली में अमल रख कर कसूंबा पेश किया. महाराणा ने उस के दोनों हाथों को पकड़ कर नाजुक हथेली में रखी अमल को सुड़क कर चूम लिया. नाच और अमल कसूंबे का दौर चलता रहा.

हाजी खां पठान को अब कुछ शंका हो उठी. रंगराय पातर पहले कभी ऐसा नहीं नाचती थी, न इतनी खुश नजर आती थी. नृत्य समाप्त होने पर हाजी खां ने उसे भीतर अपने खेमे में भेज दिया. महाराणा ने हाजी खां से रंगराय पातर को देखने की इच्छा प्रकट की तो हाजी खां ने उसे उन के सामने लाने से इनकार कर दिया. हाजी खां ने महाराणा को नाचने वाली का नाम भी नहीं बताया था. महाराणा ने अपनी मांग को दोहराया लेकिन हाजी खां ने फिर साफ इनकार कर दिया. इस पर महाराणा को क्रोध आ गया. वह हाजी खां को इस अपमान का परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहने को कह कर वहां से चल दिए.

रंगराय पातर को देख कर मालदेव ने कहा, "क्या यही है वह पातर, जिस के कारण भाईभाई में युद्ध हुआ?"

खेमे से बाहर उन के घोड़े के पास रंगराय पातर वेश बदल कर महाराणा का इंतजार कर रही थी. महाराणा के आते ही वह उन के साथ खड़ी हो गई और महाराणा से अपने साथ ले जाने की विनती की. महाराणा ने उसे आश्वासन दिया कि वह शीघ्र ही हाजी खां को युद्ध में पराजित कर के उसे ले जाएंगे. लेकिन रंगराय पातर अपनी जिद पर अड़ी रही. अब वह और ज्यादा इंतजार नहीं कर सकती थी. तब महाराणा ने उसे अपने घोड़े पर बैठा कर एड़ लगाई. हाजी खां के सैनिकों ने महाराणा के साथ रंगराय पातर को पहचान लिया. हाजी खां को तुरंत सूचना दी गई. हाजी खां ने उन का पीछा करने के लिए सैनिकों की एक पूरी टुकड़ी भेज दी. इस टुकड़ी ने कुछ दूरी पर [illegible] को घेर लिया और उन से रंगराय पातर को छीन लिया. महाराणा घायल हो कर चित्तौड़ लौटे.

कुछ ही दिनों बाद महाराणा एक बड़ी फौज ले कर हाजी खां से युद्ध करने के लिए चल पड़े. महारानी ने बहुत मना किया कि किसी पातर (वेश्या) के लिए युद्ध करना राजपूतों की शान के खिलाफ है. लेकिन वह नहीं माने. वह युद्ध करने के लिए उतावले हो उठे. उसी हाजी खां के साथ जिसे उन्होंने कभी शरण दी थी और दिल्ली का बादशाह बनने में मदद की थी. आज वही हाजी खां महाराणा से आंख लड़ाता है, उन का अपमान करता है. यह महाराणा को सहन नहीं था. उन्होंने निश्चय किया कि वह रंगराय पातर को अपने साथ ले कर आएंगे और हाजी खां को उस के दुस्साहस के लिए बंदी बनाएंगे.

बेवफाई

हम से क्या हो सका
मुहब्बत में,
खैर, तुम ने तो
बेवफाई की. —फिराक गोरखपुरी

अजमेर के पास हरमाड़ा गांव (अब सरमालिया) के करीब ही 25 जनवरी, 1557 को दोनों ओर की फौजें युद्ध के लिए तैयार खड़ी थीं. हाजी खां ने बीकानेर के नरेश मालदेव से मदद मांगी. उस ने तुरंत हाजी खां की मदद के लिए अपनी फौज भेज दी. राजपूत सरदार आपस में लड़नेमरने के लिए आमनेसामने खड़े थे. एक वेश्या के लिए युद्ध ठन गया था. महाराणा उदयसिंह का कहना था कि युद्ध इसी शर्त पर टल सकता है, जब हाजी खां माफी मांगे और उन्होंने उसे दिल्ली का बादशाह बनाने के समय जो मदद की थी उसे पूरा करे. महाराणा ने 40 मन सोना, 100 हाथी, 50 घोड़े और इन के साथ रंगराय पातर को भी देने की मांग की.

हाजी खां रंगराय पातर को छोड़ महाराणा की शर्तें मानने को तैयार हो गया. लेकिन महाराणा ने कहा कि अगर उन्हें केवल रंगराय पातर सौंप दी जाए तो वह अपनी और मांगें छोड़ देंगे.

युद्ध के मैदान में दोनों ओर की फौजें डटी हुई थीं. समझौता न होने पर फौजें भिड़ गईं. हाजी खां ने इस युद्ध में धोखा किया. वह पहाड़ी की आड़ में अपनी फौज के साथ दूर खड़ा हो गया. बाकी कुछ पठान तथा बीकानेर के राठौड़ राजपूतों को युद्ध के लिए उतार दिया. घमासान युद्ध हुआ और इस आपसी बैर में कई सौ राजपूत मारे गए. मालदेव और महाराणा की फौज लड़ती रही.

हाजी खां दूर से तमाशा देखता ... मालदेव की सेना जब युद्ध में हार ... भागने लगी, तभी हाजी खां ने ... बोल दिया. महाराणा की सेना की ... शिकस्त हुई और महाराणा घायल हो ...

मालदेव उस समय जोधपुर में ... मालदेव का सेनापति जब हाजी खां ... रंगराय पातर को जोधपुर में मालदेव ... पास ले गया तब रंगराय पातर को ... कर मालदेव ने कहा, "क्या यही है ... रंगराय पातर (वेश्या), जिस के कारण भाईभाई में युद्ध हुआ?"

रंगराय पातर ने जवाब दिया, "हां महाराज, मैं वही पातर हूं. मेरे ही कारण युद्ध हुआ. मैं ने ही भाईभाई को लड़ाया है. राजपूतों की बुद्धि और वीरता मुझे देखनी थी. मैं ने राजपूतों और पठानों दोनों ही का घमंड चूरचूर किया है. लेकिन महाराणा की बहादुरी से मेरे हुस्न का गरूर टूट चुका है. मैं उन से मुहब्बत करती हूं. यह उन की शिकस्त नहीं बल्कि फतह है. मुझे उन के पास भेज दिया जाए."

हाजी खां इस बात पर राजी नहीं हुआ. हाजी खां ने इस युद्ध के बाद रंगराय पातर के पीछे अपनी बादशाही खो दी. वह मालदेव की ओर चला गया लेकिन रंगराय पातर रास्ते में एक रात वेश बदल कर घोड़े पर सवार हो महाराणा के पास चली गई. हाजी खां पठान हाथ मलता रह गया. रंगराय पातर महाराणा की रानी बन कर उन के महल में रहने लगी. रंगराय पातर ने मालदेव को चित्तौड़ बुलवा कर अमल कसूंबे के साथ महाराणा से उन की संधि करवा दी. दोनों भाईभाई गले मिले और उन की पुरानी दुश्मनी खत्म हो गई.

कहते हैं, हाजी खां के किसी समर्थक ने बाद में कोई तीन साल बाद उसे जहर दे दिया. रंगराय पातर ने महाराणा की गोद में दम तोड़ दिया. राजस्थान के राजपूतों में वह एक इतिहास बन गई. ●

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए एवं सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : ये शिक्षक, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

हमारे महाविद्यालय में भौतिक विज्ञान के अध्यापक बहुत कड़क थे. हमेशा हमें कोसते रहते थे.

हमारी वार्षिक प्रयोगात्मक परीक्षा से पूर्व उन्होंने हमारी अतिरिक्त कक्षा ली. उस कक्षा में उन्होंने हमें 'नैतिक मूल्य' पर बहुत बड़ा भाषण दिया. परीक्षा के दिन जब मेरे आगे कठिनाई आई तो मैं ने उन से कुछ पूछा. उन्होंने तुरंत जवाब दिया, "तुम्हारा यह पूछना नैतिकता के अनुसार गलत है."

मैं चुपचाप बैठ गया. थोड़ी देर बाद जब मैं पानी पीने के लिए बाहर जा रहा था तब मैं ने देखा कि वही शिक्षक महोदय दूसरे कमरे में एक लड़की को, जिसे वह ट्यूशन पढ़ाया करते थे, प्रयोग कर के दे रहे थे.

—र. व. जलतारे

✦

हमारे स्कूल में एक अध्यापक की उम्र करीब 25 साल थी. एक रोज शिष्टाचार के विषय में पढ़ाते समय बहुत सी बातें बताने के बाद वह बोले, "अपनों से बड़ों के पैर छू कर प्रणाम करना चाहिए."

इतने में मैं खड़ा हो गया और पूछ बैठा, "गुरुजी, हैड मास्टर साहब तो आप से बड़े हैं. फिर भी वह आप को प्रणाम करते हैं. आप उन्हें प्रणाम नहीं करते, ऐसा क्यों?"

गुरुजी बोले, "तुम अभी बच्चे हो. तुम नहीं जानते कि मैं ब्राह्मण हूं और वह चमार हैं. इसलिए मैं बड़ा हूं."

—अखिलेशप्रसाद सिंह

✦

✦ हमारे कन्या विद्यालय में एक शिक्षिका कुछ गंभीर विषय समझा रही थीं.

पीछे बैठी कुछ लड़कियों की आपस में बातें करने की आवाजें आ रही थीं. शोर सुन कर उन्होंने सब को शांत रहने का आदेश दिया. शांति होने पर वह फिर से समझाने लगीं.

कुछ देर बाद लड़कियों की बात करने की आवाज फिर से आई. इस पर वह बहुत नाराज हुईं और गुस्से से बोलीं, "जो लड़कियां बात कर रही थीं वे कुरसियों पर खड़ी हो जाएं."

पर कोई भी लड़की खड़ी नहीं हुई. इस पर उन्होंने कहा, "अगर तुम लोग अपनी गलती मान कर उस की सजा भुगतने को तैयार नहीं हो तो मैं सजा भुगतूंगी."

वह सचमुच कुरसी पर काफी देर तक खड़ी रहीं. यह देख कर सारी छात्राएं काफी लज्जित हुईं और बाद में वे लड़कियां स्वयं ही खड़ी हो गईं, जो पीछे बैठी बातें कर रही थीं.

—आशा 'मानव' (सर्वश्रेष्ठ)

विश्व विजय प्रकाशन
का एक और नया सेट

विश्व सुलभ साहित्य

● **खाई** — कुसुम गुप्ता

यौन स्वच्छंदता के मुलम्मे के नीचे छिपी जिंदगी की तस्वीर और एक नारी का अंतर्द्वंद्व प्रस्तुत करने वाला मनोवैज्ञानिक व सामाजिक उपन्यास.

2.50

● **ये पति**

हास्य के मूल स्त्रोत आप खुद भी हैं. आप व आप की पत्नी व रिश्तेदारों की कई बातें व्यंग्य के रूप में पतियों पर छींटाकशी करती हैं जिन्हें सुन कर पति महोदय के अतिरिक्त पूरा परिवार हंसने लगता है.

2.50

● **मेहंदी का पौधा** — रा. श्यामसुंदर

दांपत्य जीवन कैक्टस की तरह नहीं है जो कि हर हाल में बिना कुछ पाए भी जीवित रहे. यह तो मेहंदी के पौधे की तरह है—बेहद नाजुक और स्नेह का प्यासा.

2.50

विश्व पाकेट बुक्स

● **प्रतिहिंसा** — जनमित्र

प्रतिहिंसा की आग में जलते हुए लोगों की एक ऐसी कहानी जिस की शुरुआत रहस्यों से होती है और अंत भी चौंका देता है.

2.50

हर कदम पर एक नया रहस्य, एक नई उलझन.

● **आधी रात को दिन** — सुनील नाथ चक्रवर्ती

सुनामिका समझ रही थी कि वह सेठ हिरजी के खिलौने ढो रही है पर उसे पता नहीं था कि वह स्वयं एक गिरोह के हाथ का खिलौना बन रही है. क्या था उन खिलौने में जो सेठ हिरजी इतनी गोपनीयता बरत रहा था.

2.50

● **एक भूल** — मदन मसीह

प्रकाश की हत्या कर दी गई. संदेह में किशनसिंह गिरफ्तार. कुसुम व भूपेंद्र से कागजातों की मांग व अपहरण! बोस जांच करते खुद ही जाल में जा फसा. लेकिन जब कोहरा छंटा तो किशनसिंह की भूल का पता चला. वह क्या भूल थी? रहस्य, रोमांच व मनोरंजन से भरपूर रोचक उपन्यास.

2.00

पूरा सेट लेने एवं पूरा धन अग्रिम भेजने पर 10% छूट एवं डाक व्यय केवल पचास पैसे वी. पी. द्वारा.

सभी पुस्तक विक्रेताओं से प्राप्य या

विश्वविजय प्रकाशन एम 12, कनाट सरकस नई दिल्ली-110001

पुरानी कार का सौदा बड़ी सावधानी से पक्का करना चाहिए. ऐसा न हो जल्दबाजी में कार खरीद कर आप सदा के लिए एक मुसीबत मोल ले बैठें...

आजकल जहां पैट्रोल के दाम इतने अधिक बढ़ गए हैं, वहां कारों के मूल्य भी ज्यादा बढ़े हैं. भारत में प्रायः दो ही प्रकार की मोटरकारें लोकप्रिय हैं—फिएट और एंबेसेडर. ये दोनों भारत में ही बनती हैं. इन की मरम्मत भी देश में किसी भी स्थान पर आसानी से हो जाती है. इन दोनों के फालतू पुर्जे भी आसानी से सारे देश में मिल जाते हैं.

आप पुरानी कार खरीदने जा रहे हैं?

लेख • डा. निर्मलचंद्र

यों विदेशी कारें भी भारत में बिकती हैं, पर इन का रखरखाव बहुत ही महंगा है, इसलिए ये सफेद हाथी पाल लेने के बराबर हैं. भारत में इन की मरम्मत की सुविधा केवल कुछ बड़े नगरों में ही उपलब्ध है. फिर इन विदेशी कारों के पुर्जे भी बड़ी कठिनाई से मिल पाते हैं. इन कारणों से पुरानी कार के इच्छुक खरीदार इन विदेशी कारों के झमेले में न ही पड़ें तो बेहतर है. वैसे पुरानी कारों के विक्रेता इन विदेशी कारों के खूब गुण बखान कर ग्राहकों को इस झमेले में फंसा ही लेते हैं.

भारत में निर्मित फिएट और एंबेसेडर दोनों की अपनीअपनी विशेषताएं हैं. नौकरीपेशा, डाक्टर और वकील आदि फिएट कार को अधिक महत्त्व देते हैं तो व्यापारी, उद्योगपति और टैक्सी चालक एंबेसेडर कार को पसंद करते हैं.

पुरानी कार के इच्छुक खरीदार प्रायः वे लोग होते हैं, जिन के पास नई कार खरीदने लायक पर्याप्त पैसा नहीं होता. पुरानी कार के खरीदार को बड़ी सावधानी से सौदा पक्का करना चाहिए. कभीकभी जल्दबाजी में कार का खरीदार ऐसा कर के सदा के लिए अपने लिए मुसीबत मोल ले बैठता है.

पुरानी कार प्रायः हर रोज खराब ही रहती है. उस की मरम्मत में बेतहाशा पैसा बरबाद होता है. यहां तक कि कई बार तो यह सौदा नई कार खरीदने से भी महंगा पड़ जाता है.

कारों की कीमत ऊंची हो जाने के कारण आजकल सरकारी अधिकारी कार के लिए सरकार से मिलने वाला ऋण ले कर ही कार खरीदते हैं. कार के लिए ऋण की राशि अब इतनी कम रह गई कि इस से केवल पुरानी कार ही खरीदना संभव है.

इस स्थिति का लाभ उठाते हैं पुरानी कारों की बिक्री कराने वाले दलाल. इन दलालों की खूब मिलीभगत रहती है और

भारत में निर्मित फिएट कार: विदेशी कार की अपेक्षा सस्ती भी और रखरखाव भी कहीं ज्यादा आसान.
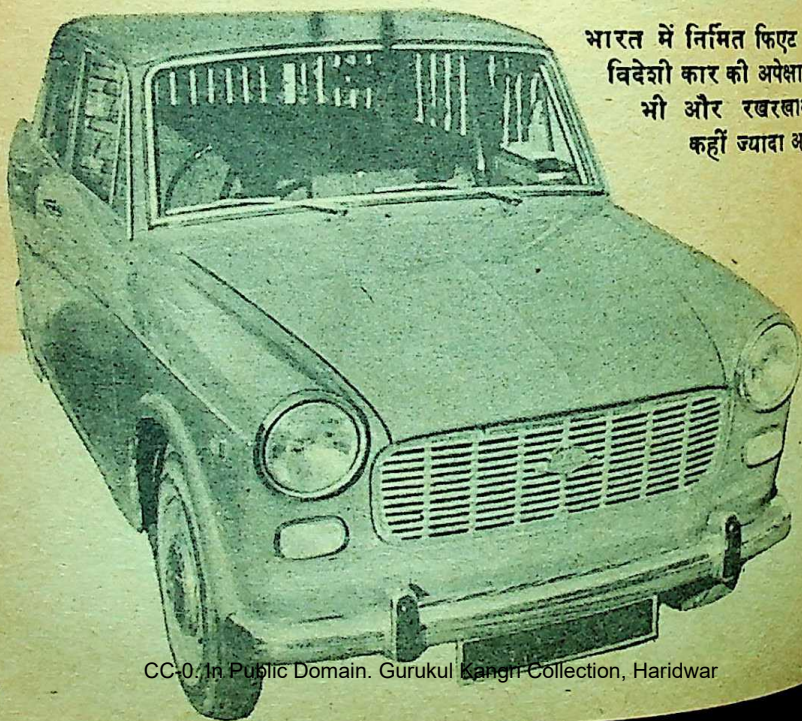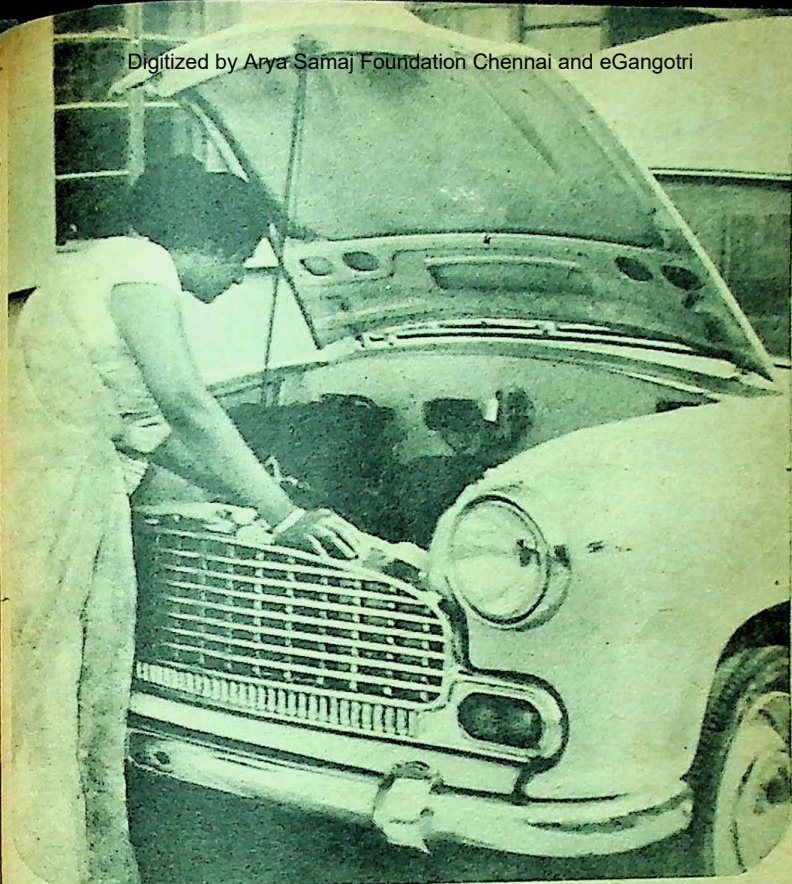
पुरानी कार प्रायः हर रोज खराब ही रहती है. उस की मरम्मत में कई बार इतना पैसा खराब हो जाता है जितनी रकम में एक नई कार खरीदी जा सकती है.

बेचारा खरीदार लुटता रहता है. ये दलाल बाकायदा दैनिक समाचारपत्रों में अपने विज्ञापन भी छपवाते हैं.

दलालों के हथकंडे

जब कोई पुरानी कार खरीदने का इच्छुक व्यक्ति किसी ऐसे दलाल से संपर्क करता है तो वह जोंक की तरह उस से चिपट जाता है. वह फोन द्वारा अन्य कार दलालों से संपर्क कर के उन के पास बिक्री के लिए मौजूद पुरानी कारें ग्राहक को दिखलाता है. फिर कई तरह के झूठ बोल कर ग्राहक को अपने जाल में फांसने का प्रयत्न किया जाता है. पहले परंपरा थी कि हर एक कार की बिक्री में दलाल को 700 रुपए की दलाली कार विक्रेता व खरीदार दोनों से मिल जाती थी.

दलाली के बदले में दलाल का फर्ज यह बनता है कि वह ग्राहक को अच्छी कार दिलवाए और उस कार के कागजात वगैरा का तबादला नए मालिक के नाम ठीक ढंग से करवा दे. पर आजकल ऐसे दलाल एक कार की बिक्री में चारपांच हजार या उस से भी ज्यादा मुनाफा कमा लेते हैं. जब कहीं कोई अच्छी कार बिकाऊ होती है, उसे ये दलाल स्वयं खरीद लेते हैं फिर उस कार के सब अच्छे पुर्जे निकाल लिए जाते हैं और उन के स्थान पर

कबाड़ी बाजार से खरीदे गए सस्ते घटिया पुर्जे उस में जड़ दिए जाते हैं. मान लीजिए, खरीदार को सन 1972 के माडल की कोई एंबेसेडर कार पेश की जाती है तो हो सकता है कि केवल उस का ढांचा ही 1972 का हो, उस में पुर्जे 1960-62 के होंगे.

अगर कार में खड़खड़ाहट हो तो ये दलाल पिछले पहियों के डिफ्रेंशल में तेल के स्थान पर ग्रीस और लकड़ी का बुरादा भर कर उसे शांत कर देते हैं. पुरानी कार के ऊपर खड़िया मिट्टी पोत कर घटिया किस्म का स्प्रे पेंट कर दिया जाता है. बारिश में यह पेंट धुल जाता है.

दलाल अपने द्वारा खरीदी गई कारों को बेचने के लिए खरीदार के सामने कल्पित विक्रेता भी खड़ा कर देते हैं. अगर कोई सैनिक अफसर कार खरीदना चाहता है तो कल्पित विक्रेता भी आप को सेना का अधिकारी ही बताता है. इसी प्रकार डाक्टर ग्राहक को नकली डाक्टर विक्रेता से मिलवा कर फंसा जाता है.

कई बार यह दलाल कई दुर्घटनाग्रस्त कारें एक साथ खरीद कर उन के पुर्जे एकदूसरे में जोड़ कर एक नई कार बना लेते हैं. यह कार कामचलाऊ ही होती है. कभीकभी इंजन या कार के चेसिस न

भारत में निर्मित एक और कार एंबेसेडर : यों तो पुरानी कार खरीदना मुसीबत ही है फिर भी अगर भारत में बनी कार खरीदी जाए तो उस की मरम्मत आसानी से संभव है चूंकि इस के सभी कलपुर्जे हर कहीं उपलब्ध होते हैं.
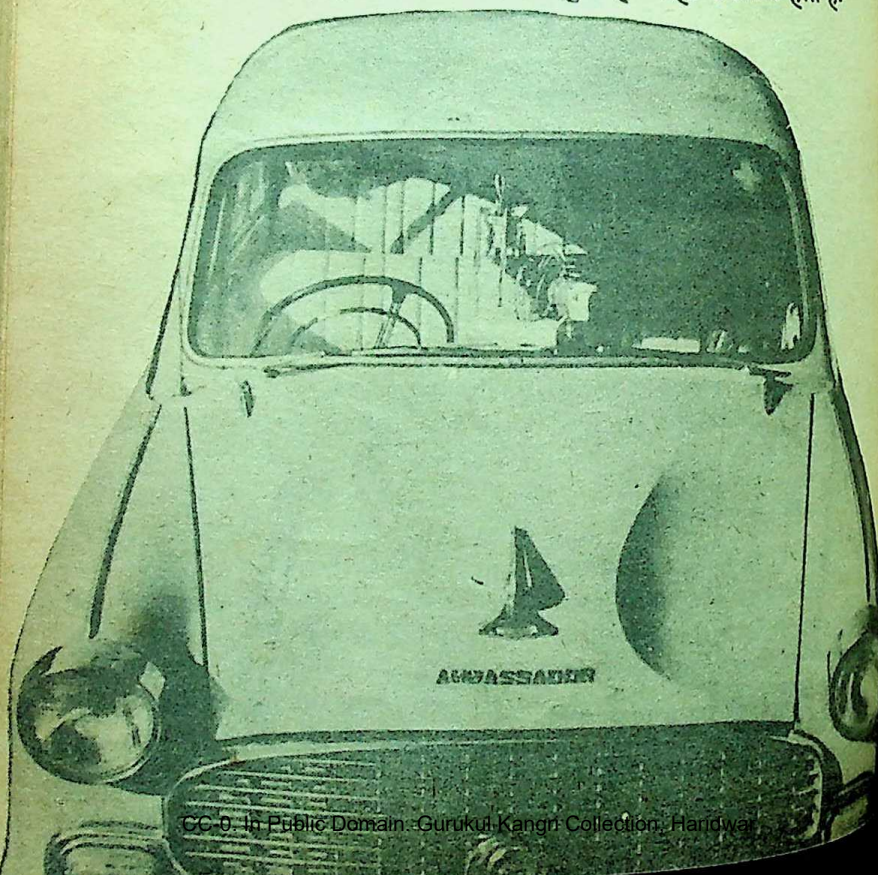
नंबर भी मिटा कर दोबारा खोद दिया जाता है. इस धोखे की कार के मालिक का नाम बदलने में ट्रांसपोर्ट अथारिटी के अधिकारियों की भी मिलीभगत होती है. ये लोग पैसा ले कर सब कुछ कर देते हैं. चोरी की गई कारें इसी प्रकार हेराफेरी कर के बेची जाती हैं.

खरीदार काफी चौकस रहे

पुरानी कार के खरीदार को इसी कारण काफी चौकस रहना चाहिए. अच्छा तो यही होगा कि पुरानी कार के विक्रेता से सीधा संपर्क कर बिना किसी दलाल के माध्यम से उसे खरीदा जाए. पर अगर आप दलाल के माध्यम से कार खरीदने के लिए बाध्य ही हों तो कभी भी दलाल की खुद खरीदी कार उस से न खरीदें. उस में अवश्य ही हेराफेरी की गई होती है.

दलाल के माध्यम से केवल किसी वास्तविक विक्रेता से ही संपर्क करें. इस बात की भली प्रकार जांच कर लें कि विक्रेता असली व्यक्ति ही है, कहीं दलाल का गुमाश्ता तो नहीं.

कोई भी सौदा तय करने से पूर्व कार की पंजीकरण पुस्तिका की भी भली भांति जांच कर लें. ध्यान रखें कि कहीं इस पुस्तिका पर अंगरेजी भाषा में 'डुप्लीकेट' शब्द तो नहीं लिखा है. अगर ऐसा है तो कार के मालिक से उस बारे में विस्तृत जानकारी मांगें.

फिर अपने किसी जानकार मिस्तरी से कार की भली भांति जांच करवाएं. उस के इंजन और चैसिस के नंबर भली प्रकार स्वयं जाचें.

ध्यान रखें कि उन में कोई हेराफेरी या बदली न की गई हो. इन नंबरों को पंजीकरण पुस्तिका में अंकित नंबरों से मिलाएं.

दलाल की दलाली का कुछ रुपया रोक लें. इस का भुगतान तभी करें, जब वह आप के नाम पर कार का पंजीकरण करा कर उस की पंजीकरण पुस्तिका आप को ला कर दे दे, पूरा कमीशन पाने के बाद दलाल प्रायः लापरवाह हो जाते हैं और ग्राहक की उपेक्षा करने लगते हैं.

यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कार का विक्रेता मालिक कार के पंजीकरण ट्रांसफर फार्म पर आप के सामने स्वयं हस्ताक्षर करे. इस से मालिक वही है या नहीं, इस की भी जांच हो जाएगी. पहले से हस्ताक्षर किए गए फार्म वाली कार प्रायः दलाल की अपनी खरीदी कार होती है. इस प्रकार की कार संदेहास्पद होती है. हो सकता है ऐसी कार का टैक्सी के रूप में भी उपयोग हुआ हो या फिर पहले भी दोतीन बार खरीदीबेची जा चुकी हो तथा वह घटिया कार हो. वह चोरी की भी हो सकती है, इसलिए ट्रांसफर फार्म पर विक्रेता के हस्ताक्षर अपने सामने कराएं.

मुक्ता—सरिता के स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता, सरिता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने रोचक अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजते समय स्पष्ट और सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. साथ ही यह भी लिख कर भेजें कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है. भेजी गई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में होनी चाहिए.

विश्व सुलभ साहित्य

बेतवा की कसम :
ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित बदलते हुए परिवेश, व मान्यताओं का दस्तावेज.
प्रमोद भटनागर मूल्य : 3.00

कार में हत्या :
कार में लाश मिलने पर देशपांडे उस हत्या को सुलझाने में और अधिक उलझता गया. असली अपराधी को पकड़ने में कैसे सफल हुआ ?
जनमित्र मूल्य : 3.00

ईर्ष्या का ज्वालामुखी :
देशपांडे रहस्यपूर्ण हत्याओं को सुलझाने में कैसे उलझता गया. रहस्यरोमांच से भरपूर उपन्यास.
कुसुम गुप्ता मूल्य : 3.00

इंसानों का व्यापार :
इंसानों के व्यापार के रहस्य का परदा जब देशपांडे ने उठाया तब सभी आश्चर्यचकित रह गए.
जनमित्र मूल्य : 3.00

पूरा सेट लेने तथा धन अग्रिम भेजने पर डाक खर्च 50 पैसे वी.पी.पी द्वारा.

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

न्याय परायणता

यों तो सम्राट विक्रमादित्य न्याय परायणता की साक्षात मूर्ति माने जाते थे. पर एक दरिद्र के मामले में विक्रमादित्य ने जो फैसला दिया वह बिलकुल अद्वितीय था...

लघुकथा • वासुदेव सिंधु 'भारती'

एक अदना सा आदमी.

पुत्री के विवाह में दहेज देने में असमर्थ होने के कारण अत्यंत दुखी.

साहस बटोर कर, बड़े ही आत्म विश्वास के साथ उस ने न्याय परायणता की साक्षात मूर्ति सम्राट विक्रमादित्य के द्वार खटखटाए तथा प्रार्थना पत्र दे कर गिड़गिड़ाया, "अन्नदाता, अगर दहेज के लिए धन न जुटा सका तो आई हुई बरात लौट जाएगी. कृपानिधान, समाज में मेरी नाक कट जाएगी."

सम्राट विक्रमादित्य ने उस निर्धन तथा विवश आदमी को सांत्वना देते हुए कहा, "धीरज रखो, बंधु, तुम्हारे मामले में उचित न्याय ही होगा."

महामंत्री से परामर्श ले कर उन्होंने राज्य के मुख्य शल्य चिकित्सक को लिख कर भेजा : "प्रार्थी द्वारा वर्णित कार्य के लिए बजट में कोई प्रावधान नहीं है. अतः प्रार्थी की नाक कट जाने पर तुरंत शल्य चिकित्सा द्वारा नई नाक जोड़ दी जाए."

धर्मपालक विक्रमादित्य की इस न्याय परायणता पर पूरा दरबार उन की जयजयकार से गूंज उठा. ●

सरिता मुक्ता विस्तार योजना में भाग लीजिए

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं कि... फिर गुलाम होते देर नहीं लगे... भी हजारों वर्ग मील भारती... विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की ... लिए बहुत बड़े पैमाने पर ... सहयोग और सद्भाव की आवश्... होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्था... पूंजीपति या राजनीतिक दल से ... नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रकार... सहायता स्वीकार करती है. यह ... एक ही वर्ग की सहायता और बल... निर्भर है. और वह हैं सरिता के ... इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्सा... सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ ...

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी ... सरकार का और देशी व ...

नीतिक दलों का बड़े पैमाने पर क्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण त्र पत्रकारिता प्राय: खत्म होती जा है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र त्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें. सरितामुक्ता विकास योजना इसी यास पर निर्भर है. साथ ही आप को अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप कुछ खर्च किए, एक वर्ष में तामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी क पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा ते.

तामुक्ता के प्रसारप्रचार की योजना से लाभ उठाने के लिए को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का स दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. ता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने नोटिस दे कर आप की अमानत आप को सकेगा. जब तक यह रकम सरिता र्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली " के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

भारतीय साइकल विदेशों में : तेल की बढ़ती हुई कीमतों ने पूरी दुनिया में साइकल उद्योग को बढ़ावा दिया है. कोलोन (पश्चिम जरमनी) में हुई 14वीं अंतरराष्ट्रीय साइकल व मोटरसाइकल प्रदर्शनी में भारत के अलावा गुटनिरपेक्ष क्षेत्र के तीन ही अन्य देशों—ब्राजिल, दक्षिण कोरिया व मैक्सिको ने हिस्सा लिया. भारत की तरफ से 16 फर्मों ने इस प्रदर्शनी में भाग लिया. चित्र में प्रदर्शनी के भारतीय मंडप का एक दृश्य.
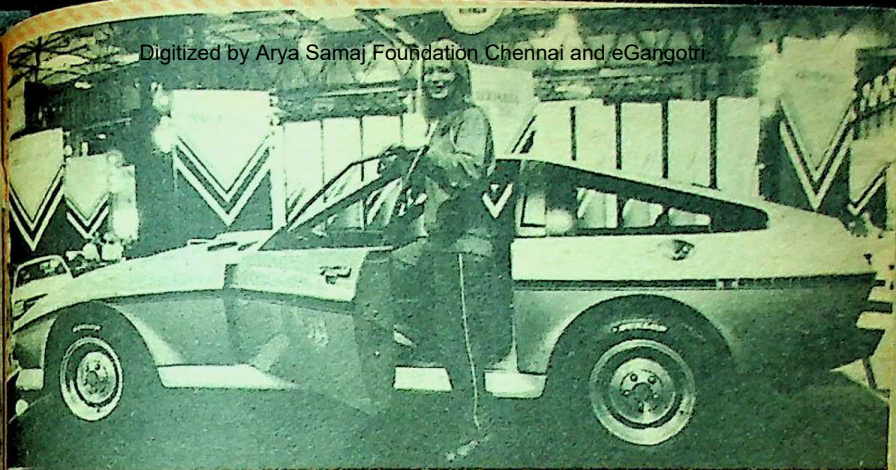
कार प्रदर्शनी : इंगलैंड के कार प्रेमियों के लिए एक खुशनुमा दिन. बर्मिंघम की अंतरराष्ट्रीय कार प्रदर्शनी ने बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित किया. इस प्रदर्शनी में दिखाई गई मुख्य कारों में से एक—ब्रिटिश टी. बी. आर. टैसमिल का नया माडल (चित्र में) भी था, जिस की कीमत 13,800 पौंड है.

एक विचित्र तरीका यह भी : बिर्लिघम के एक भूतपूर्व मुख्य रसोइए ओटो क्रेफ्ट को खाने के लिए केकड़ा पकाने में मजा नहीं आता. बल्कि वह उन्हें नींद में रखना ज्यादा पसंद करता है. इस के लिए उसे अपने हाथों को थोड़ी सी हरकत देनी होती है, घोंघे के एक खास निचले हिस्से पर वह लगातार चोट करता है और धीरेधीरे कुछ शब्द बोलता है. बस इतने से ही वह उन्हें कुछ मिनटों के लिए सम्मोहित कर पाने में सफल हो जाता है. प्रमाण के रूप में प्रस्तुत है यह चित्र जिस में तीन केकड़े ओटो के इशारे पर झुके हुए हैं.

आप के पूरे परिवार के लिए

विश्व सुलभ साहित्य

द्वारा प्रस्तुत उत्कृष्ट पुस्तकें

मृच्छकटिकम्
शूद्रक का ईसापूर्व की पहली शताब्दी में लिखा गया वह नाटक जिस के पात्र राजारानी न हो कर जनसाधारण हैं.
रु. 12.00

भटकता राही
स्पेन अफ्रीका व अन्य कई देशों की यात्रा विवरण के साथ ही भारतीयों के प्रति विदेशियों के व्यवहार की झलक देखिए.
रु. 5.00

दीवान ए गालिब
गालिब की शायरी का प्रत्येक शेर के साथसाथ भावार्थ अनुवाद संग्रह.
रु. 6.50

उद्यान की रूपरेखा
सरल सुबोध भाषा में उद्यान विषयक ज्ञान देने वाली अद्वितीय पुस्तक.
रु. 5.00

स्वर के दीप
मनमोहक चित्रों से सुसज्जित मन को छूने वाले गीतों का संग्रह.
रु. 5.00

हाकी
हाकी की रुचि रखने वालों के लिए संपूर्ण जानकारी देने वाली पुस्तक रु. 3.00

जय कश्मीर
भारतीय सेना के पराक्रम की अमर गाथा, इस महाकाव्य में पहली बार गीतों के रूप में. रु. 7.50

हिंदू समाज के पथभ्रष्टक तुलसीदास
हिंदू समाज के पथ दर्शक माने जाने वाले संत कवि की वास्तविकता क्या थी? इस पुस्तक में पढ़िए.
रु. 8.00

विश्वविजय प्रकाशन

एस-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

तीन या तीन से अधिक पुस्तक लेने पर 15 प्रतिशत तथा डाक खर्च की छूट या
कोई भी दो पुस्तकें लेने पर ...

चार मुक्तक

कोयला

कोयले की कमी
एक दिन रंग लाएगी,
इस की कालिख
केवल नेताओं के दिल में
रह जाएगी.

दानवीर

वह
किसी दानवीर से कम नहीं,
अपना सारा वेतन
दान कर डालता है.
अपना और बालबच्चों का पेट
ऊपरी कमाई से पालता है.

संघर्षरत

गरीबी हटाओ कार्यक्रम के लिए
वे संघर्षरत हैं,
निजी मोर्चे पर
सफल शतप्रतिशत हैं.

कहावत

एक पुरानी कहावत को
हम झूठा सिद्ध कर रहे हैं,
सहकारी खेती
गधे चर रहे हैं.

—मिश्रीलाल जायसवाल

आप के पूरे परिवार के लिए

विश्व सुलभ साहित्य

द्वारा प्रस्तुत उत्कृष्ट पुस्तकें

मृच्छकटिकम्
शूद्रक का ईसापूर्व की पहली शताब्दी में लिखा गया वह नाटक जिस के पात्र राजारानी न हो कर जनसाधारण हैं.
रु. 12.00

दीवान ए गालिब
गालिब की शायरी का प्रत्येक शेर के साथसाथ भावार्थ अनुवाद संग्रह.
रु. 6.50

स्वर के दीप
मनमोहक चित्रों से सुसज्जित मन को छूने वाले गीतों का संग्रह.
रु. 5.00

जय कश्मीर
भारतीय सेना के पराक्रम की अमर गाथा, इस महाकाव्य में पहली बार गीतों के रूप में.
रु. 7.50

भटकता राही
स्पेन अफ्रीका व अन्य कई देशों की यात्रा विवरण के साथ ही भारतीयों के प्रति विदेशियों के व्यवहार की झलक देखिए.
रु. 5.00

उद्यान की रूपरेखा
सरल सुबोध भाषा में उद्यान विषयक ज्ञान देने वाली अद्वितीय पुस्तक.
रु. 5.00

हाकी
हाकी की रुचि रखने वालों के लिए संपूर्ण जानकारी देने वाली पुस्तक
रु. 3.00

हिंदू समाज के पथभ्रष्टक तुलसीदास
हिंदू समाज के पथ दर्शक माने जाने वाले संत कवि की वास्तविकता क्या थी? इस पुस्तक में पढ़िए.
रु. 8.00

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

तीन या तीन से अधिक पुस्तकें लेने पर 15 प्रतिशत तथा डाक खर्च की छूट या
कोई भी दो पुस्तकें लेने पर

चार मुक्तक

कोयला

कोयले की कमी
एक दिन रंग लाएगी,
इस की कालिख
केवल नेताओं के दिल में
रह जाएगी.

दानवीर

वह
किसी दानवीर से कम नहीं,
अपना सारा वेतन
दान कर डालता है.
अपना और बालबच्चों का पेट
ऊपरी कमाई से पालता है.

संघर्षरत

गरीबी हटाओ कार्यक्रम के लिए
वे संघर्षरत हैं,
निजी मोर्चे पर
सफल शतप्रतिशत हैं.

कहावत

एक पुरानी कहावत को
हम झूठा सिद्ध कर रहे हैं,
सहकारी खेती
गधे चर रहे हैं.

—मिश्रीलाल जायसवाल

रहा है

सभी आवेदक बड़ी उम्मीद ले कर साक्षात्कार देने आते हैं, लेकिन उन्हें नौकरी नहीं मिल पाती. क्या कभी उन्होंने यह जानने की भी कोशिश की है कि रिक्त पद के योग्य होते हुए भी ऐसा क्यों हुआ?

साक्षात्कार में जाने से पहले

लेख • दयानंद अरोड़ा

आज के युग को यदि प्रतिस्पर्द्धा व प्रतियोगिता का युग कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी. कोई भी चीज हासिल करने से पहले आदमी को कड़े मुकाबले से गुजरना पड़ता है. यह बात जीवन के हर क्षेत्र में लागू होती है. नौकरी हो या निजी व्यवसाय, आप सफल तभी होते हैं, जब आप खुद को दूसरों से बेहतर साबित कर पाते हैं. बढ़ती बेरोजगारी के इस दौर में नौकरी पाना भी कोई आसान काम नहीं रहा.

पर आज इस से भी बड़ी कठिनाई यह है कि रोजगार के लिए प्रयत्नशील युवकयुवतियों को यही मालूम नहीं होता कि अपने में विद्यमान प्रतिभा को वे किस तरह से पेश करें, ताकि नौकरी के बाजार में अपने लिए स्थान बना सकें.

जहां तक सरकारी नौकरियों का सवाल है, उस के लिए ज्यादातर किसी भी
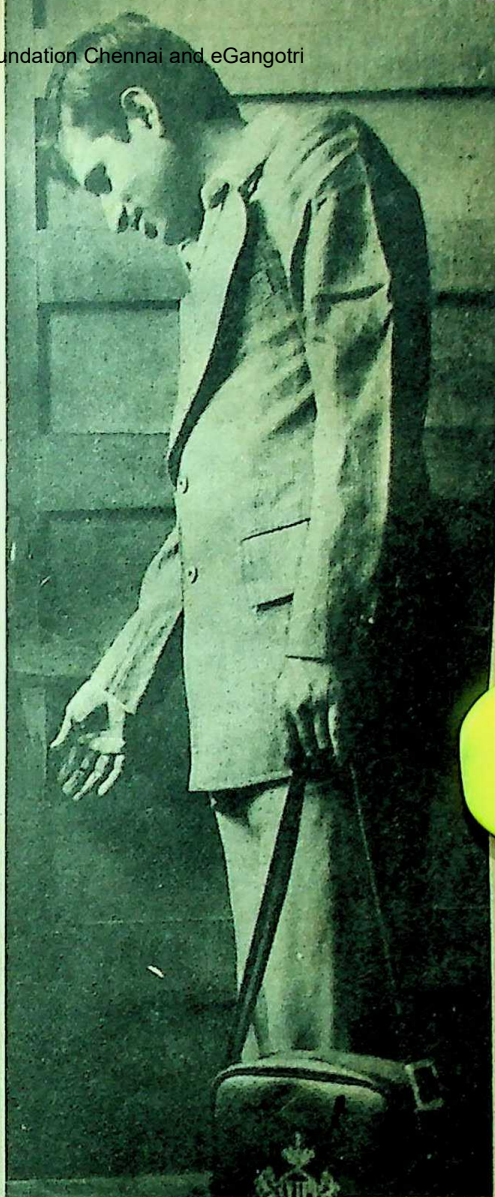
विशेष प्रतिभा की जरूरत नहीं होती. बस बी. ए., एम. ए. जैसी कोई डिगरी हासिल कर लें और सामान्य ज्ञान की दोचार किताबें पढ़ लें, यही काफी रहता है. आरामतलब जिंदगी जीने वाले अकसर यह कहते मिल जाएंगे कि उन्हें तो कोई सरकारी नौकरी मिल जाए, जहां वेतन तो अच्छा मिले, पर करने को काम न हो.
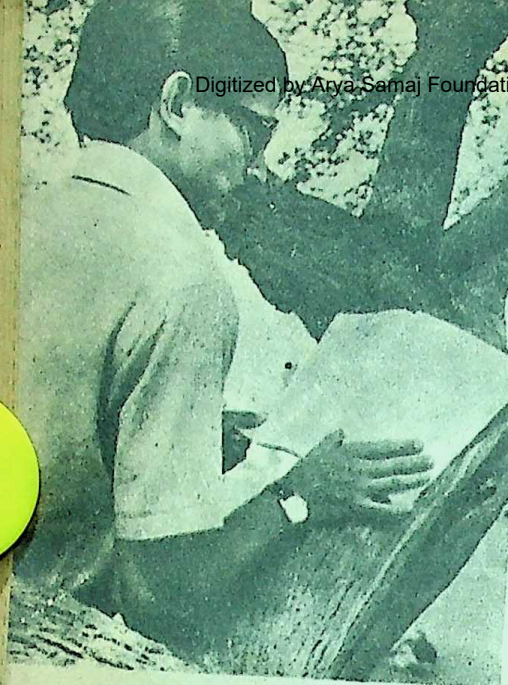
इसी मनोवृत्ति के कारण आज सर-

साक्षात्कार के लिए जाने से पहले यह देख लें कि आप ने जो तैयारी की है वह रिक्त पद की प्रकृति के अनुरूप है या नहीं.

कारी संस्थानों का सारा ढांचा ही खराब हो चुका है. वहां कोई अधिकारी न तो स्वयं काम करता है और न अपने किसी अधीनस्थ कर्मचारी से काम ले पाता है. सच तो यह है कि आज सभी सरकारी कार्यालयों की स्थिति अकर्मण्य जैसी हो कर रह गई है.

दूसरी ओर निजी संस्थानों में ऐसा नहीं है. इन संस्थानों के अधिकारी काफी योग्य और अनुभवी होने के कारण स्वयं तो ईमानदारी और परिश्रम से कार्य करते ही हैं, अपने अधीन काम करने वाले कर्मचारियों से भी कस कर काम लेना जानते हैं. अतःजिन युवकयुवतियों में अपनी मौलिक प्रतिभा होती है, वे निजी संस्थानों में ही नौकरी करना ज्यादा पसंद करते हैं. निजी संस्थानों में नौकरी करने के कुछ और लाभ भी हैं. वहां लगातार काम करते रहने से व्यक्ति की कार्यक्षमता बढ़ती है, अनुभव बढ़ता है और कार्यक्षमता बढ़ने से ही व्यक्ति का वेतन और पद भी बढ़ता है. इस के विपरीत सरकारी संस्थानों में ऐसा नहीं होता. कुछ गिनेचुने योग्य व्यक्ति वहां होते भी हैं तो उन की प्रतिभा कागजी नियम उपनियमों के बंधन में घुट कर रह जाती है और उन की योग्यता का पूरा लाभ न तो उन्हें मिल पाता है और न सरकार ही उस से कोई लाभ उठा पाती है.

आवेदन पत्र

नौकरी की तलाश में भटकने वाले लोगों के लिए आवेदन पत्र का बड़ा महत्त्व है. देखने में यह आता है कि बी. ए. और एम. ए. होने के बावजूद लोग ठीक से आवेदन पत्र भी नहीं लिख पाते. देखा जाए तो आवेदन पत्र ही वह चीज है, जो संबद्ध अधिकारियों के सामने आप की एक धुंधली सी तसवीर खड़ी कर देती है. दूसरे शब्दों में किसी अधिकारी को काफी हद तक अपने पक्ष में कर लेने का सब से पहला माध्यम आवेदन पत्र ही है. आवेदन पत्र के विषय में ध्यान देने योग्य बात यह है कि यदि आप की लिखावट सुंदर हो तो जहां तक संभव हो आवेदन पत्र अपनी लिखावट में ही दें. आवेदन पत्र में यदि गलतियां होंगी या काटपीट होगी तो वह अधिकारी पर कोई अच्छा प्रभाव नहीं छोड़ेगी. इसलिए जहां तक हो सके, हाथ से लिखते समय तो ध्यान रखें ही, टाइप करें या करवाएं तो भी अशुद्धियों से बचने का भरसक प्रयास करें.

आवेदन पत्र में आप के द्वारा दिए गए विवरण का अधिकारी पर क्या प्रभाव पड़ेगा, यह भी सोच लेना चाहिए. आवेदन पत्र में भी कभी गलत विवरण नहीं देना चाहिए, क्योंकि जिस अधिकारी को आप आवेदन कर रहे हैं, वह योग्य और अनुभवी होता है. आप का झूठ पकड़ लेना उस के लिए सामान्य सी बात है. मगर आप का पकड़ा जाना आप के लिए घातक

और अपमानजनक होगा. कोई बहुत बड़ी योग्यता या अनुभव आप के पास न भी हो, तब भी झूठ नहीं लिखना चाहिए बल्कि ईमानदारी से अपनी शिक्षा, अनुभव और योग्यता का सहीसही विवरण देना ही उचित है.

इसी सिलसिले में मुझे एक वास्तविक घटना याद आ रही है. मेरे एक मित्र हैं. अनुभव और प्रतिभा के नाम पर एकदम कोरे, पर उन के पास डिगरियों और प्रमाणपत्रों की भरमार थी. प्रथम श्रेणी में एम. ए. कर लेने के बाद भी जब उन्हें कोई नौकरी न मिली तो उन्होंने समझ लिया कि अनुभव के बिना कोई नौकरी मिलती ही नहीं. इस के बाद उन्होंने दो-तीन कंपनियों से अनुभव के झूठे प्रमाणपत्र बनवा लिए. जैसे ही उन्होंने अनुभव के वे प्रमाणपत्र अपने आवेदन पत्र के साथ लगा कर एक कंपनी में आवेदन किया, उन्हें साक्षात्कार के लिए बुला लिया गया.

मित्र महोदय बहुत घबराए. उस काम के विषय में उन्होंने इधरउधर से थोड़ीबहुत जानकारी इकट्ठी की और साक्षात्कार के लिए पहुंच गए. अधिकारियों ने जब उस कथित अनुभव को ले कर उन से कुछ प्रश्न पूछे तो हमारे मित्र महोदय को पसीने छूटने लगे. सवालों के सहीसही जवाब न दे पाने के कारण हमारे मित्र बहुत लज्जित हुए. इस घटना ने उन्हें अधिक निराश कर दिया.

आवेदन पत्र के संबंध में एक बात यह देखी गई है कि अकसर अधिकारी ऐसे प्रश्न पूछते हैं, जो आवेदन पत्र में दिए गए विवरण में से उठाए गए होते हैं. इसलिए उचित होगा अगर आवेदन पत्र की एक प्रति अपने पास रख ली जाए. साथ ही यह भी देख लेना चाहिए कि आप के आवेदन पत्र में से कैसे प्रश्न किए जा सकते हैं.

आवेदन पत्र में कभी भी गलत विवरण न भरें चूंकि साक्षात्कार लेने वाले अधिकारी आप से कहीं ज्यादा चतुर होते हैं, और झूठ प्रमाणित होने पर नौकरी नहीं अपमान मिलता है.

साक्षात्कार के समय

साक्षात्कार का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना होता है कि आवेदक रिक्त पद के लिए कहां तक उपयुक्त है. इसलिए जब भी आप साक्षात्कार के लिए जा रहे हों तो यह देख लें कि आप ने जो तैयारी की है वह रिक्त पद की प्रकृति के अनुरूप है या नहीं. उदाहरणतया यदि आप किसी बैंक में साक्षात्कार के लिए जा रहे हैं तो बैंकिंग अधिनियम की जानकारी आप को होना आवश्यक है.

यों सोचा जाए तो साक्षात्कार एक कठिन काम है. लेकिन इस के लिए घबराने की आवश्यकता नहीं है. साक्षात्कार के समय पूरे आत्मविश्वास से काम लेना चाहिए. आप के चेहरे पर घबराहट, परेशानी, निराशा या दया के भाव नहीं होने चाहिए. एक हलकी सी मुसकराहट और आप का प्रसन्नचित्त दीखते रहना साक्षात्कार में बैठे अधिकारियों को प्रभावित करता है. इतना ही नहीं, आप के

साक्षात्कार से पहले का समय गुमसुम बैठ कर नहीं, अन्य आवेदकों के साथ मुक्त वार्तालाप कर के गुजारना चाहिए. इस से आप में बजाए घबराहट के आत्मविश्वास की भावना जाग्रत होगी.

अनुमान के आधार पर कभी नहीं देना चाहिए. यदि आप को किसी प्रश्न का पूरा और सही जवाब नहीं आता तो बजाए इधरउधर की तुक भिड़ाने के सीधे क्षमा मांगते हुए यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि आप प्रश्न का उत्तर नहीं जानते.

ऐसा स्वीकार कर लेने में कोई हानि वाली बात नहीं है, क्योंकि यह आम बात है कि कोई व्यक्ति सब कुछ नहीं जानता होता. इस के विपरीत आप का स्पष्ट मना कर देना इस बात का प्रमाण माना जाएगा कि आप अपने और दूसरों के प्रति ईमानदार हैं.

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि प्रायः साक्षात्कार में दिए गए प्रश्नों के उत्तर के आधार पर ही आप का चुना जाना निर्भर करता है.

पर यह जरूर जान लें कि महत्त्व इस बात का ही नहीं है कि आप का जवाब सही है या नहीं, अपितु इस बात का भी बड़ा महत्त्व है कि किसी विषय में आप की धारणा तर्कसंगत और व्यावहारिक है या नहीं. अतएव साक्षात्कार के लिए जाने से पहले रिक्त पद से संबंधित हर छोटीबड़ी बात पर अच्छी तरह सोच लेना चाहिए और अपनी राय बना लेनी चाहिए.

ये सब सुझाव उन प्रतिभावान व्यक्तियों के लिए ही फायदेमंद हो सकते हैं जो केवल सामान्य ज्ञान की पुस्तकों के आधार पर सरकारी नौकरी नहीं पा लेना चाहते, बल्कि अपनी लगन और परिश्रम के आधार पर कुछ कर दिखाना चाहते हैं. जाहिर है कि दिए गए सुझाव सरकारी नियुक्तियों के विषय में नहीं हैं, क्योंकि उन में व्यक्ति के चयन के लिए कई अन्य आधार होते हैं. वहां जिस तरह नौकरियों में विभिन्न वर्गों का कोटा होता है वह किसी से छिपा नहीं है. इस लिए मैं ने सरकारी नौकरियों के साक्षात्कार के विषय में कुछ नहीं कहा है. ●

सावधान

इस स्तंभ के लिए समाचार-पत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लखें : सर्वोत्तम पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : सावधान, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

टार्च का कमाल

चंडीगढ़ के एक सिनेमाघर में पिक्चर देखने के लिए आई तीन युवतियों को अपने टिकट गंवा कर हाल से बाहर निकल आना पड़ा.

बात यह हुई कि एक युवक टार्च लिए एक कतार में बैठी तीन युवतियों के पास पहुंचा और उन से टिकट दिखाने को कहा. लड़कियों ने उसे सिनेमाघर का कर्मचारी समझा और उसे टिकट दे दिए. उस युवक ने उन से कहा कि वे गलत सीटों पर बैठी हैं, वे उठ कर उस के पीछेपीछे चली आएं, वह उन को अभी दूसरी सीटों पर बैठाने का प्रबंध करता है. यह कह कर वह तीनों के टिकट ले कर अंधेरे में गायब हो गया. बाद में जब टिकट चैक हुए तो उन युवतियों को वहां से वापस लौटना पड़ा.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : नत्थूराम शर्मा)

✦

सुगंधित सुपारी में घातक विष

वैज्ञानिकों ने सुगंधित सुपारी के नमूनों में एक घातक विष का पता लगाया है और पान प्रेमियों को चेतावनी दी है कि वे सड़ीगली सुपारी का उपयोग न करें.

दूषित सुपारी में 'पट्रलीन' नामक विष पाया गया है. 1952 में जापान में इस विष से डेरी के 100 पशु और 1959 में फ्रांस में कई गाएं मर गई थीं.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : अशोक खत्री)

✦

✦ साधु भेषधारी धूर्त द्वारा ढाई लाख की ठगी

नागौर जिले के पूंदलू ग्राम में 10-12 दिन तक धरना जमाने वाले साधु भेषधारी एक धूर्त ने भोलेभाले ग्रामीणों से लगभग ढाई लाख रुपए ठग लिए.

कथित बाबाजी ने बांझ एवं नि:संतान महिलाओं को अपने चमत्कार से संतान दिलाने, प्रेतात्माओं का सफाया करने, धन आगमन के अवसर प्रदान करने जैसी चमत्कारिक सिद्दियों का प्रचार कर के भोलेभाले लोगों को प्रभावित किया. जब ग्रामीणों पर उस धूर्त साधु का विश्वास जम गया तब वह लोगों को अनेक प्रकार से गुमराह कर के लगभग 100 तोले सोना, काफी मात्रा में चांदी, नकदी एवं घड़ियों आदि के रूप में ढाई लाख रुपए का माल ले कर निकल भागा.

—राष्ट्रदूत, कोटा (प्रेषक : गजेंद्रकुमार जैन) (सर्वोत्तम)

✦

शाबाशी महंगी पड़ी

हाल ही में दुबई से आए मिस्र के एक नागरिक को एक कस्टम अधिकारी की शाबाशी के कारण हवालात जाना पड़ा.

हुआ यह कि काहिरा हवाई अड्डे पर उतर कर उस नागरिक ने कस्टम अधिकारियों को बताया कि उस के पास कोई भी शुल्क योग्य सामान नहीं है.

इस पर प्रसन्न हो कर कस्टम अधिकारी ने उस की पीठ थपथपाई. पीठ थपथपाते समय अधिकारी को आभास हुआ कि उस व्यक्ति के कपड़ों में कोई चीज है. जांच करने पर पता चला कि उस मिस्री नागरिक ने अपनी विभिन्न जेबों वाली जाकेट में 392 स्वचालित जापानी घड़ियां छिपा रखी थीं.

युगधर्म, नागपुर (प्रेषक : महेंद्र मखीजा)

✦

क्रोध का नतीजा

बैंतूल के समीप हाल ही में एक क्रोधित पिता ने अपने पुत्र को इतना पीटा कि उस की मृत्यु हो गई.

जब पिता का क्रोध शांत हुआ और उस ने देखा कि पुत्र मर चुका है तो प्रायश्चित के रूप में उस ने स्वयं भी फांसी लगा कर आत्महत्या कर ली.

बताया जाता है कि बापबेटे में किसी बात को ले कर झगड़ा हो गया था.

—जनशक्ति, पटना (प्रेषक : विश्वनाथ केजरीवाल)

✦

छोटी सी भूल की भारी कीमत

बंबई में एक अनपढ़ महिला एक स्थानीय ट्रेन से गलत स्टेशन पर उतर गई और उसे इस भूल की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी.

पुलिस ने बताया कि वह बांदरा से मलाड़ जा रही थी और उसी ट्रेन में उस का पति भी था, लेकिन वह एक अन्य डब्बे में था. उक्त महिला गलती से कांदीवली स्टेशन पर उतर गई. वहां पति को न देख कर वह घबड़ा गई और रोने लगी.

तभी दो पुरुषों ने आ कर महिला से बातचीत की और उसे दिलासा देते हुए अपनी झोंपड़ी में ले गए. झोंपड़ी में महिला को एक अन्य महिला के संरक्षण में रखा गया. लेकिन दूसरे दिन उस पर बलात्कार किया गया और उस के आभूषण लूट लिए गए.

आठ दिनों तक उस महिला को कैद कर के रखा गया और इसी दौरान उस के साथ बारबार बलात्कार किया जाता रहा. अंत में वह महिला वहां से निकल भागने में सफल हो गई. उस ने पुलिस को सारी आपबीती बताई. पुलिस ने इस मामले में छः व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया है और 15 हजार रुपए के आभूषण भी बरामद किए हैं.

—नवभारत टाइम्स, बंबई (प्रेषक : सुरेशकुमार)

✦

सिपाही महिला के जेवर ले भागा

जयंतीजनता एक्सप्रेस में यात्रा कर रही एक ग्रामीण महिला के गले से सोने का एक आभूषण तोड़ कर फरार हो रहे एक व्यक्ति को रंगे हाथों पकड़ लिया गया. बताया जाता है कि किशनगढ़ रेलवे स्टेशन पर जेवर छीनने वाला वह व्यक्ति पुलिस का एक हैड कांस्टेबल था.

इस घटना के बाद रेलवे स्टेशन पर ड्यूटी दे रहे एक सिपाही ने हैड कांस्टेबल को भगा दिया और महिला तथा उस के पति के साथ दुर्व्यवहार भी किया.

इसी समय भूतपूर्व शिक्षा मंत्री भंवरलाल शर्मा तथा यूथ फेडरेशन के कार्यकर्ता वहां पहुंच गए और उन्होंने इस मामले की रिपोर्ट रेलवे पुलिस में की.

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : हरि न. घीया) ●

उस की इच्छा हुई कि चौधरी का हाथ पकड़ कर इतनी जोर से मरोड़े कि वह टूट कर अलग हो जाए. वह ऐसा कर सकता था. लेकिन चौधरी का सामाजिक रोब उस पर हावी हो गया और अपने छोटेपन के एहसास ने उसे ऐसा करने से रोक दिया.

चौधरी ने उसे कई बार मारा था और वह भी बगैर किसी विशेष कारण के. नई बात सिर्फ यह हुई थी कि बहुत सारे कामों के झमेले में वह उस के खत डाक में डालना भूल गया था. दूसरे दिन वे खत चौधरी ने उस के पास देखे तो बिगड़ पड़ा, "क्यों बे, कल के खत अभी तक डाक में नहीं डाले?" और एक जोर का हाथ गोरेलाल की कनपटी पर पड़ा.

गोरेलाल उस समय पांचछ: वर्ष का ही रहा होगा जब उस के बाप ने उसे चौधरी को सौंपा था. उस समय उस के बाप ने कहा था, "हजूर, आप ही का लड़का है. इसे दोचार क्लासें पढ़ा कर आदमी बना देना. हम तो अंगूठा छाप ही रह गए. घर का जो काम बनेगा कर देगा."

गोरे से छोटे तीन भाई बहन और थे. उस का बाप चौधरी के खेत में दिन भर हल चलाता और फसल होने पर उस की रखवाली करता था. लेकिन इस के बाद भी वह परिवार के लिए दो जून का अन्न जुटाने में नाकाम रहता. बच्चों को पढ़ाना तो दूर जब खिलाना ही भारी पड़ गया तो उस ने बड़े लड़के गोरेलाल को चौधरी की खिदमत में दे दिया.

चौधरी की स्थूलकाय पत्नी हमेशा बीमार रहती थी. जरा सा काम कर के हांफ जाती. उस से सिवा रोटी के कोई काम न हो पाता था. घर का ऊपरी काम करने के लिए उस ने गोरेलाल को रख लिया. स्कूल में नाम यह सोच कर लिखा दिया गया कि लड़का कुछ पढ़ जाएगा तो हिसाबकिताब भी समझने लगेगा और बाहरी कामों में मदद दे सकेगा.

गोरेलाल को घर में स्कूल की पढ़ाई से भी ज्यादा काम करना पड़ता. उस

चौधरी साहब ने अपने बंधुआ नौकर गोरेलाल के भाग जाने पर उस की बहुत खोजबीन की. मिलते ही उसे कठोर सजा देने का फैसला भी किया. पर जब गोरेलाल से उन की पुनः भेंट हुई तो वह उसे देखते ही भाग क्यों खड़े हुए?

छोटी सी उम्र में ही उस को पूरे घर की झाड़पोंछ करनी पड़ती. इस के बाद उसे कम दूध व ज्यादा पानी वाली गुड़ की चाय मिलती, जिस को वह सुड़कसुड़क कर पीता था. चौधराइन को उस का इस तरह चाय पीना बिलकुल पसंद नहीं था. इस कारण वह घर के बाहर बरामदे में बैठ कर ही चाय पीता था. इस के बाद चायपानी के बरतन धो कर वह नदी से पानी भरने चला जाता.

एक दिन पानी से भरी पीतल की बटलोई उस के सिर से लुड़क कर घाट के पत्थर से टकरा नदी में बह चली. वह बेचारा घबरा गया. सोचा, यदि बटलोई नदी में गुम हो गई तो उसे डांट तो पड़ेगी ही, यह भी हो सकता है कि चौधरी उसे मार कर गांव से ही भगा दे. लपक कर उस ने बटलोई को पकड़ा. घर पहुंचा तो बटलोई पर चोट का निशान देख कर चौधराइन उबल पड़ी, "सौ रुपए की बटलोई बरबाद कर दी. तेरा बाप दे जाएगा इस के पैसे ?"

कहानी • प्रेमचंद्र स्वर्णकार

चौधरी जब चाहे बात बे बात गोरेलाल को पीटता था.
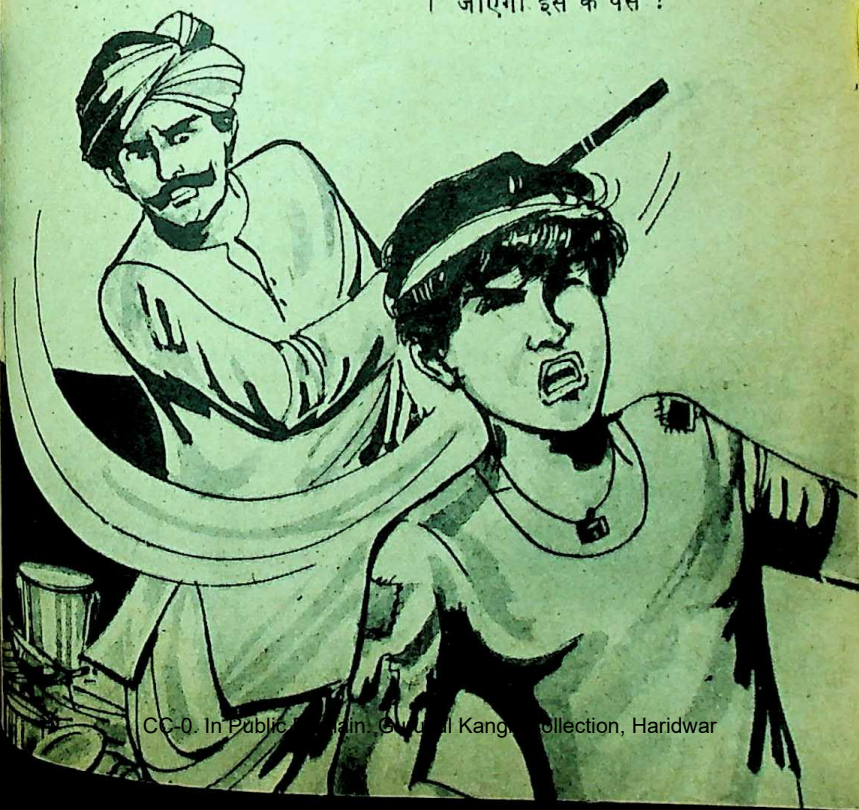
इस के बाद चौधरी ने भी उसे मारा और गालियां दीं. फिर उसे पानी भरने के लिए टीन का कनस्तर दिया जाने लगा. उसे पकड़ने और उठाने में उस को बेहद तकलीफ होती थी. इन सब कामों के अलावा उसे चौधरी की तीन साल की नन्हीं लड़की को भी खिलाना पड़ता था. रात को नौ के बाद ही वह एकदो घंटे पढ़ पाता था.

शुरू में चौधरी के परिवार को गोरेलाल पर विश्वास नहीं था. वे सोचते, पता नहीं कब क्या सामान ले कर चंपत हो जाए. इसलिए उस घर के अंदर नहीं सुलाया जाता था. ठंड में भी बेचारा फटेपुराने कंबल में बाहर बरामदे में सिकुड़ कर सो रहता : लेकिन विश्वास जम जाने के बाद उसे एक छोटी कोठरी दे दी गई. वह कोठरी भी बड़ी विचित्र थी. उस में सिवा एक दरवाजे के रोशनदान अथवा खिड़की कुछ भी नहीं थी. बिजली का बल्ब लगा होने पर भी जलता नहीं था. चौधराइन उस का उपयोग लकड़ी और उपले रखने के काम में लाती थी. झाड़पोंछ कर गोरेलाल ने उस में रहने के लिए कुछ जगह बना ही ली. रात में काम से फुरसत पा कर वह लालटेन के मद्धिम प्रकाश में ही पढ़ता. पढ़ने का चाव था सो वह हर क्लास में पहला नहीं तो दूसरा नंबर लेता रहता. और इस तरह उस ने चौधरी की सेवा करतेकरते आठ क्लासें पास कर लीं.

चौधरी ने अब उस का पढ़ना छुड़वा दिया. सोचा, यदि छोकरा ज्यादा पढ़ गया तो बददिमाग हो जाएगा. कहीं अन्यत्र जा कर नौकरी करने की सोचने लगेगा और वह परेशानी में पड़ जाएंगे. उस की असीमित सेवाओं से वंचित हो जाएंगे.

गोरेलाल को जब मालूम हुआ कि चौधरी उस का पढ़ना छुड़वा रहा है तो उसे बड़ा दुख हुआ. उस ने मालिक से आगे पढ़ने की इच्छा जाहिर की तो उस ने डपट दिया, "क्या करेगा आगे पढ़ कर, अफसर बनना है क्या?"

और इस घटना के बाद अनजाने ही गोरेलाल के मन में चौधरी के प्रति घृणा की भावना पैदा हो उठी.

गोरेलाल को रख कर चौधरी बहुत सस्ते में निबट गया था. गोरेलाल चौधरी के घर के फटेपुराने कपड़े सीसी कर पहनता था. जेब खर्च के रूप में उसे पांचदस पैसे मिल जाते. उस 13 वर्ष की उम्र में ही वह अपना खाना स्वयं बनाता था. सजातीय होने के बावजूद उसे चौधरी के रसोईघर में प्रवेश की इजाजत नहीं थी. इसलिए अलग अंगीठी पर ही वह कुछ मोटीमोटी चपातियां सेंक लेता. दाल, अचार उसे चौधराइन से मिल जाता था. जब कभी दाल न बचती तो उसे खुद बनानी पड़ती. चौधरी इतना सस्ता नौकर पा कर प्रसन्न था.

जब से चौधरी ने गोरेलाल का पढ़ना छुड़वाया था, वह उस घर से खिसकने की सोचने लगा था. लेकिन यह नहीं समझ पा रहा था कि जाए तो कहां जाए.

एक दिन वह चौधरी की लड़की के साथ खेल रहा था कि अचानक वह गिर गई. उसे चोट आ गई और खून भी निकल आया. हालांकि इस में गोरेलाल का दोष नहीं था, पर चौधरी ने गुस्से में आ कर उसे खूब मारा. गोरेलाल उसी दिन चौधरी के घर से भाग कर पिता के पास आ गया और बोला, "बापू, वहां दिन भर जुतना पड़ता है. चौधरी खूब गालियां देते हैं और मारते भी हैं."

बाप उलटे उसी पर नाराज हो कर बोला, "पर यहां क्या करेगा? ढोर चराएगा? वहां खाना, कपड़ा तो मिल जाता है, यहां सूखी रोटी भी मयस्सर नहीं होगी."

गोरेलाल का बाप गांव भर में शान से कहता फिरता था, "मेरा बेटा चौधरी
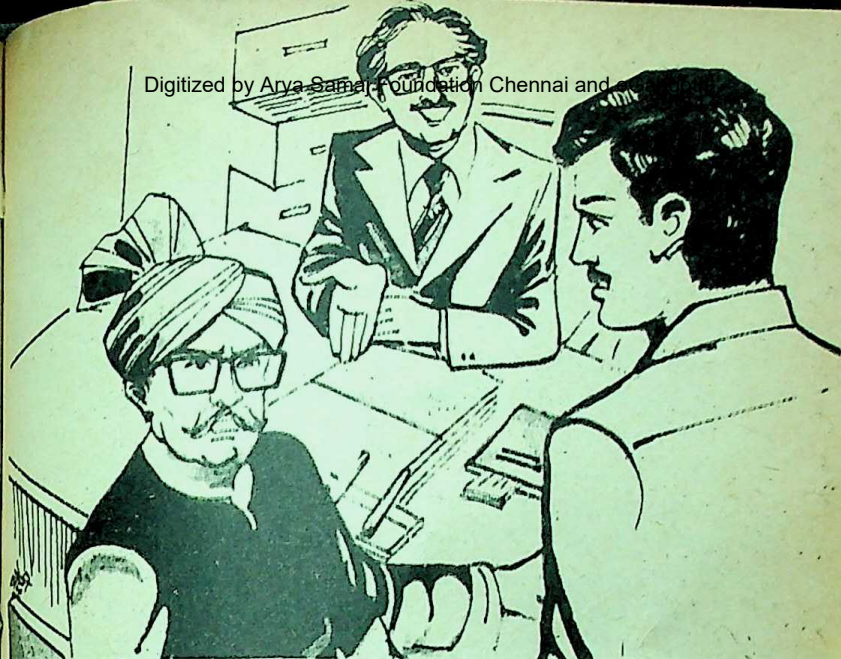
मैनेजर ने कहा, "यह ही है जी. एल. चौधरी और आप हैं मेरे रिश्तेदार चौधरी विविजयसिंह." चौधरी गोरेलाल को देखते ही चौंक गया.

साहब के यहां रह कर पढ़ रहा है." जब वह पता लगा कि उस का पढ़ना छूट गया है तो उस की प्रतिक्रिया थी, "मैं और मेरी सात पुश्तें अंगूठा छाप ही रहीं. चौधरी साहब ने आठ क्लासें पढ़ा दिया, यही बहुत है." और फिर उस ने चौधरी के एहसानों का गुण गाते हुए बेटे को चौधरी के घर वापस चले जाने को कहा.

गोरेलाल बोला, "बापू, इस से तो अच्छा यह है कि आप मुझे मेरे मामा के पास शहर भेज दें. मैं वहां रह कर आगे पढ़ूंगा."

"वहां जा कर बाइसकोप देखोगे और बिगड़ जाओगे, बेटा."

और वह जबरन गोरेलाल को दोबारा चौधरी की खिदमत में ले आया. वह चौधरी से माफी मांगता हुआ उस के पैर छू कर बोला, "माफ करना हुजूर, छोटा है. भलाबुरा नहीं समझता. मैं ने इस को समझा दिया है."

फिर वह गोरेलाल को डांटडपट कर वापस लौट गया.

गोरेलाल को बेमन से वहां रहना पड़ा. पर उस के दृष्टिकोण में अंतर आ चुका था. गोरेलाल को चौधरी के परिवार की गुलामी खलने लगी. उसे अपने शोषण की बात समझ में आ गई. उस ने सोचा, जितना वह यहां जुतता है उस का आधा भी काम किसी अन्य जगह करे तो खाने के अलावा भी 70-80 रुपए मिल जाएंगे. यहां तो सातआठ रुपए माह दे कर उसे खरीद लिया गया है.

चौधरी ने गोरेलाल के व्यवहार में बेरुखी को भांप लिया था. उस ने सोचा, छोकरे का मन उचटने लगा है. सो वह 50 पैसे रोज देने लगा. लेकिन फिर भी गोरेलाल की उदासीनता में कोई फर्क नहीं दिखाई दिया.

अब जब डाक में खत न डालने पर चौधरी ने गोरेलाल को मारा तो गोरेलाल ने यहां न रहने का निश्चय कर लिया.

रात को ही जंग लगे लोहे के संदूक में उस ने अपना सामान समेटा और शहर मामा के घर भाग आया. इस समय उस के द्वारा बचा कर रखे 15 रुपए बहुत काम आए.

गोरेलाल शहर पहुंचा तो मामा को उस ने सब कुछ बता कर कहा, "मैं आगे पढ़ना चाहता हूं."

मामा कुछ अच्छे स्वभाव का था. उस ने उस का नाम स्कूल में दर्ज करवा दिया.

काम यहां भी करता था लेकिन घर का समझ कर. काम करने के कारण मामा और उस के घर के अन्य लोगों को उस का रहना नहीं अखरा और वे उसे आगे पढ़ाते गए. वह ज्योंज्यों पढ़ता गया उस का मानसिक विकास भी होता गया और कुछ बनने की इच्छा तीव्र होती गई. मेहनती तो वह शुरू से ही था. इस कारण उसे नंबर भी अच्छे मिलते.

उधर गोरेलाल के अचानक गायब होने से चौधरी का सारा घर तितरबितर हो गया था. चौधराइन तो उसे जी भर कर कोसती रहती थी. उस के बाप को भी बुला कर डांटाफटकारा गया था. पर उस का कहना था, "सरकार, हमें कुछ नहीं मालूम. वह मेरे पास आया ही नहीं."

सुन कर वे बौखला कर रह गए थे. इच्छा हुई थी कि पुलिस में चोरी की झूठी रिपोर्ट कर दें. लेकिन फिर सोचा, खुद भी तो पुलिस के झमेले में पड़ना होगा. और उन्होंने रिपोर्ट तो नहीं की पर आसपास यह बात जरूर फैल गई कि गोरेलाल चौधरी की चोरी कर के भागा है.

अब दूसरे नौकर की तलाश शुरू हुई. बड़ी मुशकिल से मिला. साठ रुपए माहवार. खाना, कपड़ा अलग. लेकिन उन की डांटडपट उसे रास नहीं आई. जल्दी ही वह चलता बना. फिर तीसरे नौकर को रखा. वह चोरी कर के भाग गया.

गोरेलाल ने बी. ए. कर लिया प्रथम श्रेणी में. बैंक की प्रतियोगी परीक्षा में भी वह चुन लिया गया. उस के बापू को बाद में पता चल गया था, लेकिन वह चौधरी से सब कुछ छिपा गया. उसे डर था कि दोबारा तंग न करने लगे. उसे प्रति माह एक निश्चित रकम गोरेलाल भेज देता था. उस ने तो कल्पना भी नहीं की थी कि उस का बेटा आगे पढ़ कर नौकरी भी कर सकता है. वह भी शहर में. उस की बहुत इच्छा होती कि गांव के लोगों से अपने लड़के की तारीफ बढ़ाचढ़ा कर करे और दूसरों के मुंह से भी तारीफ सुने. लेकिन मन मार कर रह जाता था.

गोरेलाल के मेहनती होने के कारण मैनेजर उस से हमेशा खुश रहता था. कभीकभी वह उस की तारीफ भी कर देता था.

एक दिन वह काउंटर पर बैठा काम

...रहा था कि ... ने आ कर ...हा, "बड़े साहब आप को बुला रहे हैं."

वह तुरंत उठ कर मैनेजर के कमरे ... गया.

वहां मैनेजर के बगल में चौधरी को बैठा देख कर गोरेलाल एकदम ...प्रभ रह गया. शुरू में तो वह कुछ डरा ...किन फिर स्वयं को संभाल लिया. उस ने ...मस्ते की और मैनेजर के कहने पर वह ...हीं बैठ गया.

चौधरी ने उस की नमस्ते का उत्तर ...हीं दिया. वह भी उसे अचानक देख ...र चौंक गया था. गोरेलाल को उन का ...र छोड़े सात साल से ऊपर हो चुके थे. ...स बीच उस में काफी परिवर्तन आ ...या था. ऊंचा और लंबा दिखने लगा ...ा. भरेभरे चेहरे पर मूंछें रख लेने से ...ेहरा कुछ रोबीला हो गया था.

मैनेजर ने दोनों का परिचय करवाते ...ए कहा, "यह ही है जी. एल. चौधरी, ...और आप हैं मेरे रिश्तेदार चौधरी ...रविजयसिंह."

... आत्मग्लानि के मिलेजुले भावों में बहे जा रहा था. उस ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि उस के घर आठ साल जूठे बरतन धोने वाला नौकर फिर आठ साल बाद इस तरह जी. एल. चौधरी बन कर उस के सामने आएगा. उसे अब एक पल भी वहां रुकना भारी लग रहा था.

"अच्छा तो मैं चलूं," कह कर शीघ्र ही उठ कर बाहर हो गया.

"अरे···अरे, चाय तो पीते जाइए." मैनेजर साहब कहते ही रह गए. उन्होंने तो चौधरी के अनुरोध पर उन्हें एक अच्छा मेहनती, कमाऊ वर उन की लड़की के लिए सुझाया था और आज उसे दिखा भी दिया. लेकिन वह एकदम अचानक उठ कर क्यों चले गए, यह बात उन की समझ में नहीं आ रही थी.

यद्यपि गोरेलाल को यह नहीं मालूम था कि चौधरी वहां क्यों आया था, लेकिन उस के चले जाने के पश्चात वह स्वयं को हलका महसूस कर रहा था. ●

पूरे परिवार के मनोरंजन के लिए
विश्व सुलभ साहित्य

आखिरी दिन
परमाणु युद्ध की रहस्यमय दर्दभरी कहानी जिस का हर पात्र आप की सहानुभूति बटोर लेगा
रु. 5.00

हिम सुंदरी
द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका के बीच गंगा की घाटी में बर्फ में दबे हुए अनेक जीवित शवों की सनसनी खेज कहानी.
रु 5.00

नानावती का मुकदमा
अनैतिक प्रेम के दुष्परिणामों की सच्ची कहानी. रु. 3.00

भगवान विष्णु की भारत यात्रा
एक तीखा व्यंग्यात्मक उपन्यास. रु. 4.00

नई सुबह
एक फौजी द्वारा फौजियों की जिंदगी की कहानी. केरल साहित्य एकादमी से पुरस्कृत रु. 3.50

अंतरिक्ष के पार
कंप्यूटर हेरोकोल्ट-7, एक दिन दास से स्वामी बन बैठा, क्या मानव हार गया ? रु. 3.00

प्रतिशोध
एक जर्मन सैनिक की रोंगटे खड़े कर देने वाली सच्ची कहानी जिस ने अपनी ही सेना के विरुद्ध जिहाद कर दिया था
रु 5.00

डाकुओं के घेरे में
डाकुओं की समस्या पर लिखा गया दिलचस्प उपन्यास. रु. 5.00

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन, एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

मूल्य अग्रिम आने पर पूरा सैट 25 रुपए में, डाकखर्च नहीं, या कोई भी चार पुस्तकें केवल 15 रुपए में डाकखर्च 2 रुपए.

राजनीतिक दोहे

(कबीर व रहीम से क्षमायाचना सहित)

ऐसा भाषण झाड़िए, जनता बेसुध होय,
गुमसुम बांह मरोड़िए, चूं तक करे न कोय.

दुर्लभ नेता जन्म है, कुरसी ना बारंबार,
पांच बरस की धांधली, जीवन का आधार.

नेता कबहुं न निंदिए, जो पायनतर होय,
कबहुं उठि सत्ता धरे, बंद बोलती होय.

टूटे सुजन मनाइए, जो टूटे सौ बार,
हाथ जोड़ि के खड़ि रहे, सम्मुख एक कतार.

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय,
टी.वी., छापा, रेडियो, नेता के गुन गाय.

—हिमबाला

मौत का दूसरा नाम रक्त कैंसर

लेख • विजयकुमार श्रीवास्तव

लगभग डेढ़ शताब्दी पूर्व चिकित्सकों ने इस रोग की खोज कर ली थी. पर क्या आज भी इस का कोई स्थायी निदान खोजा जा सका है?

ब्रिटेन में एक फूल बेचने वाला व्यक्ति बीमार हुआ. काफी समय तक बुखार रहने, पेट फूलने तथा कमजोर हो जाने के बाद उस की मृत्यु हो गई. चिकित्सक उस का रोग समझने में असमर्थ रहे. बात साधारण ही थी, पर शव परीक्षा (पोस्ट मार्टम) अत्यधिक चौंकाने वाली थी. उस का जिगर तथा तिल्ली आकार में बढ़ गए थे तथा रक्त सफेद पीप (पस) जैसा हो गया था. ऐसा क्यों हुआ—यह उस समय रहस्य ही था. आधुनिक रोग निदान विज्ञान के
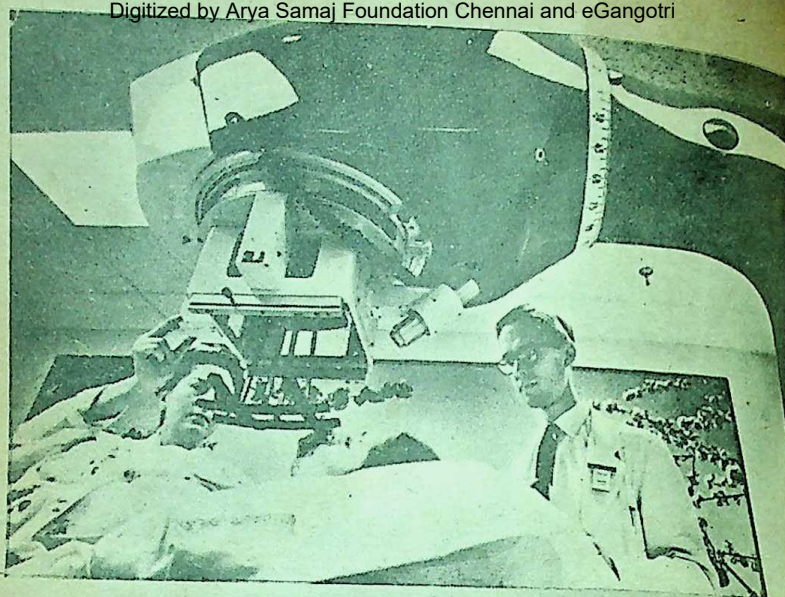
मनुष्य को कैंसर से छुटकारा किस प्रकार दिलाया जाए इस गंभीर समस्या का हल खोजने में प्रायः हर देश के वैज्ञानिक भरसक प्रयास कर रहें हैं. न्यूयार्क स्थित कैंसर प्रयोगशाला का एक दृश्य.

जन्मदाता डाक्टर विरचो ने 1845 में इस बारे में विचार व्यक्त किया था कि रक्त में ऐसा परिवर्तन विषाणु (वाइरस) संक्रमण के कारण होता है. 1847 में उन्होंने ही इस रोग को 'ल्यूकेमिया' (रक्त का कैंसर) नाम दिया.

मानव शरीर में तीन तरह के रक्त कोष

मनुष्य के रक्त में मुख्य रूप से तीन प्रकार के कोष पाए जाते हैं. लाल रक्त कोष, श्वेत रक्त कोष एवं प्लेटलेट (बिंबाणु). श्वेत रक्त कोषों की संख्या भोजन पाचन के पश्चात, महिलाओं में गर्भ धारण के समय तथा अन्य उत्तेजक अवस्थाओं में बढ़ जाती है. पर यह बढ़ी हुई संख्या किसी रोग की सूचक नहीं होती है.

ल्यूकेमिया में रक्त में श्वेत रक्त कोषों की संख्या में भारी कमी हो जाती है. शरीर के कुछ भीतरी अंगों जैसे जिगर, तिल्ली आदि का आकार बहुत बढ़ जाता है. रक्त सफेद हो कर पीप (पस) जैसा हो जाता है. कुछ अवस्थाओं में आणविक विकरण के कारण भी यह रोग उत्पन्न हो सकता है.

डाक्टर विरचो ने मुख्य रूप से ल्यूकेमिया को दो किस्मों में विभाजित किया था. पहला स्टलीनिक ल्यूकेमिया. इस में तिल्ली का आकार बढ़ जाता है. दूसरा लिफैटिक ल्यूकेमिया—इस में लसिका ग्रंथियां, जिन्हें हम बोलचाल की भाषा में गिल्टियां भी कहते हैं, बढ़ जाती हैं तथा रक्त कोष लसिका ग्रंथियों में उपस्थित कणों के समान हो जाते हैं.

अनेक प्रयोगों के माध्यम से ल्यूकेमिया से पीड़ित मनुष्य की कोशिकाओं में उपस्थित 'जीन' की बनावट तथा उन की उपापचयिक क्रियाओं के बारे में अब

तक काफी जानकारी प्राप्त की जा चुकी है. आजकल औषधि विज्ञान भी काफी उन्नति कर चुका है. साधारण कैंसर जो पहले असाध्य समझा जाता था, अब अपनी प्रारंभिक अवस्था में उपचार के पश्चात ठीक हो जाता है. पर ल्यूकेमिया अपनी खोज के डेढ़ शतक (150 वर्ष) बाद भी अभी असाध्य ही है. अभी तक कोई भी ऐसा उदाहरण उपलब्ध नहीं है, जिस में ल्यूकेमिया से पीड़ित व्यक्ति को पूर्ण रूप से ठीक किया जा सका हो. केवल कुछ मरीजों को चिकित्सक अथक प्रयास के उपरांत कुछ समय तक जीवित रखने में सफल हो सके हैं, ऐसा भी इस रोग से पीड़ित हर व्यक्ति के बारे में संभव नहीं हो पाया है.

स्वभावत: प्रश्न उठता है कि आखिर क्या कारण है कि औषधि विज्ञान के इतना अधिक विकास तथा उन्नति कर लेने पर भी ल्यूकेमिया अभी तक असाध्य है. इस को समझने के लिए साधारण कैंसर तथा ल्यूकेमिया में अंतर समझना होगा.

साधारण कैंसर व ल्यूकेमिया में अंतर

ल्यूकेमिया के अतिरिक्त शरीर के अन्य भागों में होने वाले साधारण कैंसर के लिए भी वाइरस (विषाणु) की मुख्य रूप से उत्तरदायी होता है. साधारण कैंसर में सर्वप्रथम ट्यूमर बनता है. ट्यूमर बनने में सर्वप्रथम उस अंग की एक अकेली कोशिका अथवा कोशिकाओं के समूह में परिवर्तन प्रारंभ होता है. इस के फलस्वरूप कोशिका अनियमित रूप

जिगर के कैंसर का प्रारंभिक अवस्था में पता चल जाने पर इस का इलाज किया जा सकता है. ऐसा कुछ वैज्ञानिकों का दावा है.
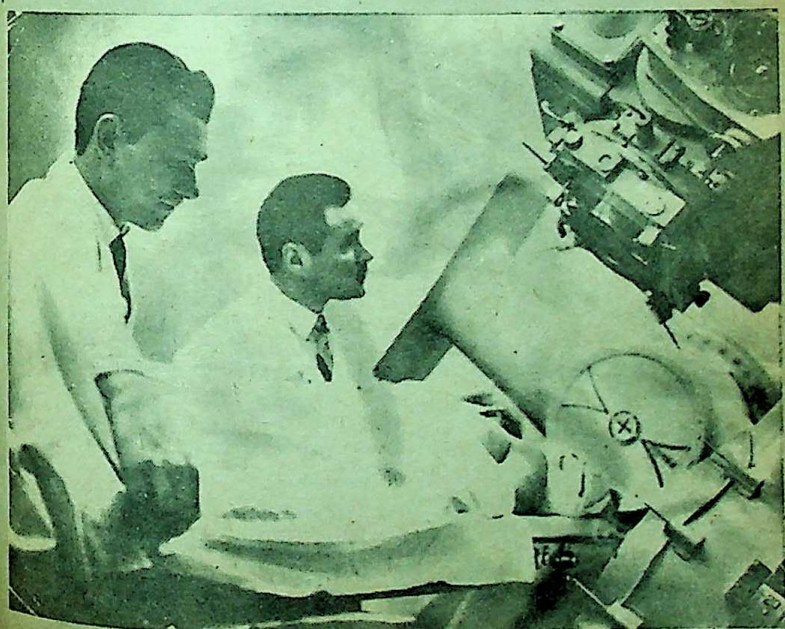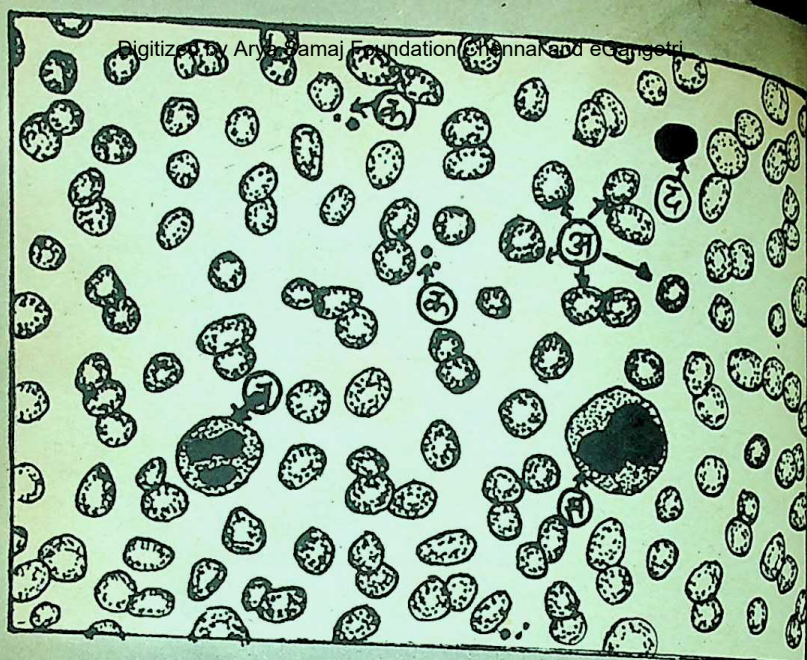
सूक्ष्मदर्शी द्वारा देखने पर एक स्वस्थ मनुष्य के रक्त में पाई जाने वाली कोशिकाएं : अ-लाल रक्त कोष, ब-पालीमार्फोन्यूक्लियर लिफोसाइट, स-मोनोसाइट, द-लिफोसाइट और क-प्लेट लेट.

से बढ़ जाती है. इसी अनियमित वृद्धि के कारण यह सामान्य कोशिकाओं पर भी आक्रमण कर के उन को क्षीण कर देती है. इस प्रकार से ट्यूमर को विकसित होने तथा असाध्य हो जाने की स्थिति तक पहुंचने में अत्यधिक समय लगता है.

रक्त कैंसर के लक्षण

विकसित होने के पश्चात भी यह ट्यूमर काफी समय तक उसी अंग विशेष तक सीमित रहता है. थोड़ी सी सावधानी से ही इस रोग का पता उस की प्रारंभिक अवस्था में ही लगाया जा सकता है और इस रोग को असाध्य बनने से बचाया जा सकता है. इस के विपरीत रक्त के कैंसर अथवा ल्यूकेमिया में रोग के बाह्य लक्षण (शरीर का पीला हो जाना, किसी अंग में सूजन आना, शरीर पर लाल चकत्ते पड़ जाना, किसी भी काम को करने में बहुत ही जल्दी थक जाना, नाक से रक्त बहना आदि) दिखाई पड़ने के समय तक रोग ग्रस्त कोशिकाएं सारे शरीर में फैल चुकी होती हैं.

इस रोग में बाह्य लक्षण भी होते हैं. जब शरीर में सामान्य रक्त कोशिकाओं का निर्माण उस के खतरनाक हो जाने की स्थिति तक कम हो जाता है, उस समय अस्थि मज्जा, जहां नए रक्त कोषों का निर्माण होता है, इन्हीं संक्रमित कोशिकाओं से भरी रहती है. यह अवस्था साधारण कैंसर से बिलकुल भिन्न होती है.

डाक्टर विरचो के पश्चात अब तक ल्यूकेमिया को कई प्रकार से वर्गीकृत किया जा चुका है. पर ल्यूकेमियाग्रस्त कोशिकाओं की उचित पहचान तथा उन के निर्माण स्थल की निश्चित पहचान न हो पाने के कारण कोई भी वर्गीकरण अपने आप में पूर्ण नहीं है. फिर भी इन

ठिनाइयों तथा इस रोग के लक्षणों एवं गंभीरता को ध्यान में रख कर ल्यूकेमिया को दो समूहों में विभाजित किया जा सकता है.

ल्यूकेमिया के दो समूह

पहला अतिपातिक अथवा अत्यंत तीव्र (एक्यूट ल्यूकेमिया). इस अवस्था में रोग के बाह्य लक्षण प्रकट होने के बाद रोगी अधिक से अधिक एक वर्ष तक जीवित रह सकता है. कुछ दशाओं में तो केवल कुछ दिनों के अंदर ही रोगी की मृत्यु हो जाती है. इस अवस्था में यह आवश्यक नहीं है कि रोगी के रक्त में श्वेत रक्त कोषों की संख्या अधिक बढ़ गई हो. लाल रक्त कोषों एवं अस्थि मज्जा की परीक्षा से रोग का पता निश्चित रूप से चल जाता है. पर इस अवस्था को ल्यूकेमिया ल्यूकेमिया कहते हैं.

दूसरी अवस्था चिरकालिक अथवा क्रौनिक ल्यूकेमिया की है. इस रोग में रोगी एक्यूट ल्यूकेमिया के रोगी की तुलना में अधिक दिनों तक जीवित रहता है. इस प्रकार के रोगी रोग के बाह्य लक्षण प्रकट होने के पश्चात भी औसतन तीनचार वर्ष तक जीवित रहते हैं. उचित चिकित्सकों की सहायता से कुछ को तो 10 वर्ष तक भी जीवित रखा जा सकता है.

क्रौनिक ल्यूकेमिया भी दो प्रकार का होता है.

माइल्वायड क्रौनिक ल्यूकेमिया : इस में जिगर तथा तिल्ली का आकार बढ़ जाता है तथा पालीमारफोन्यूक्लियर कोशिकाओं (एक प्रकार के श्वेत रक्त कोष) तथा प्लेट लेट्स की संख्या अत्यधिक बढ़ जाती है.

लिंफेटिक क्रौनिक ल्यूकेमिया : इस

क्रौनिक लिंफेटिक ल्यूकेमिया से पीड़ित मनुष्य के रक्त की कोशिकाएं : लिफोसाइट कोशिकाओं की संख्या में काफी वृद्धि दिखाई दे रही है.
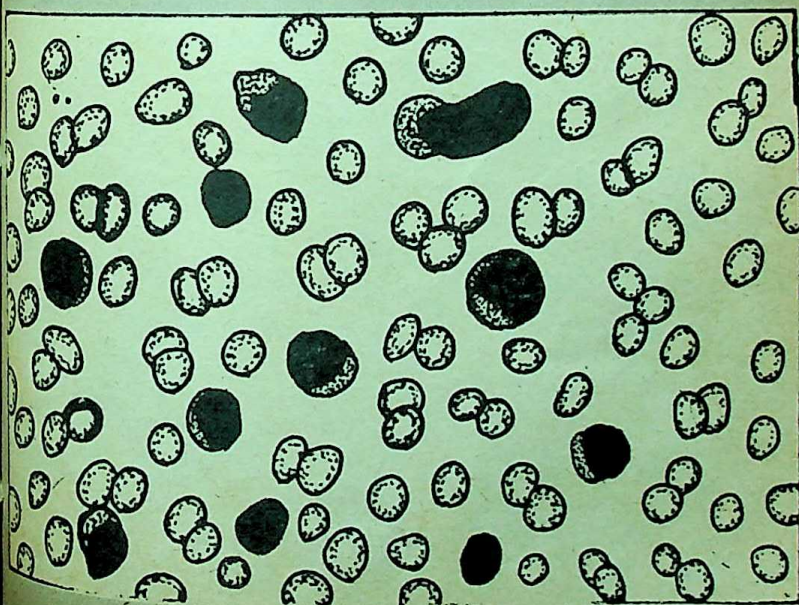
अवस्था में जिगर तथा तिल्ली के साथ-साथ लसिका ग्रंथियों का आकार भी बढ़ जाता है तथा लिंफोसाइट कोशिकाओं (दूसरे प्रकार के श्वेत रक्त कोष) की संख्या अत्यधिक बढ़ जाती है.

साधारण कैंसर से अंतर

साधारण कैंसर में ट्यूमर कोशिकाएं क्योंकि एक निश्चत अंग में होती हैं, अतएव इन कोशिकाओं को रेडियोधर्मी किरणों की सहायता से नष्ट किया जा सकता है. ट्यूमर बढ़ जाने के बाद भी, क्योंकि वह एक अंग विशेष में ही होता है, उसे शल्य चिकित्सा द्वारा शरीर से अलग किया जा सकता है. पर ल्यूकेमिया में इस से ग्रस्त कोशिकाएं सारे शरीर में समान रूप से फैल जाती हैं और इन कोशिकाओं तथा साधारण कोशिकाओं में रेडियोधर्मी किरणों के प्रति संवेदनशीलता में भी विशेष अंतर नहीं पाता है, अतएव इन को रेडियोधर्मी किरणों से जला कर नष्ट नहीं किया जा सकता है. शल्य चिकित्सा द्वारा इन को शरीर से निकाल कर अलग करना भी असंभव है.

चिकित्सकों के अनवरत प्रयासों के बाद भी अभी तक असाध्य रक्त कैंसर के उपचार हेतु तीन प्रकार से शोध कार्य किया जा रहा है. प्रथमतः ल्यूकेमिया पीड़ित कोशिकाओं के जैव रासायनिक गुणों का पता लगा कर नईनई दवाओं को संश्लेषित कर के उन पर परीक्षण करना, ल्यूकेमियाग्रस्त कोशिकाओं में उपस्थित 'जीन' का विस्तृत अध्ययन करना एवं विषाणु (वाइरस) जो इस रोग के लिए उत्तरदायी हैं, उन का गहन अध्ययन कर विषाणुओं को नष्ट करने की दवाओं का निर्माण करना.

कैंसर के लिए अभी तक निर्मित दवाओं में संभवतः सब से अधिक प्रभाव-

क्रौनिक माइलवायड ल्यूकेमिया से पीड़ित मनुष्य के रक्त की कोशिकाएं : इस में पालीमार्फोन्यूक्लियर कोशिकाओं की संख्या में काफी वृद्धि दिखाई दे रही है.
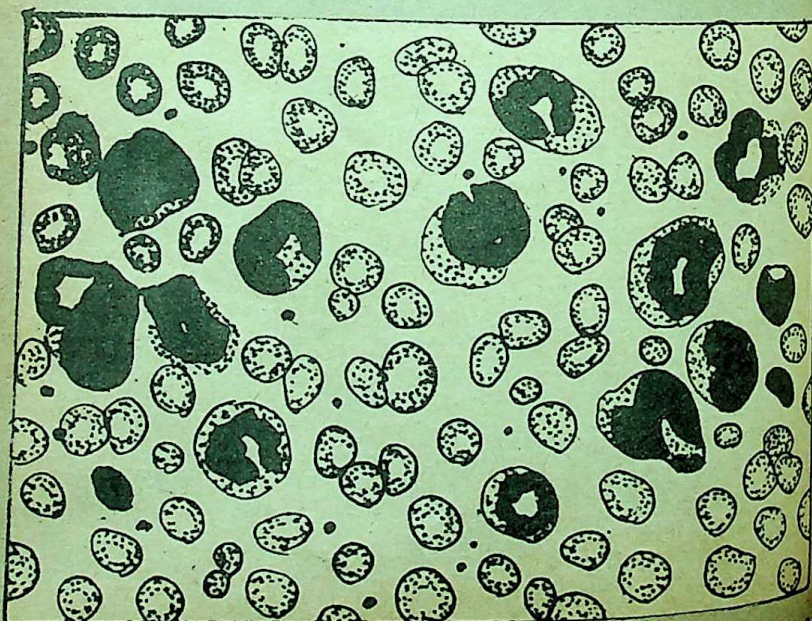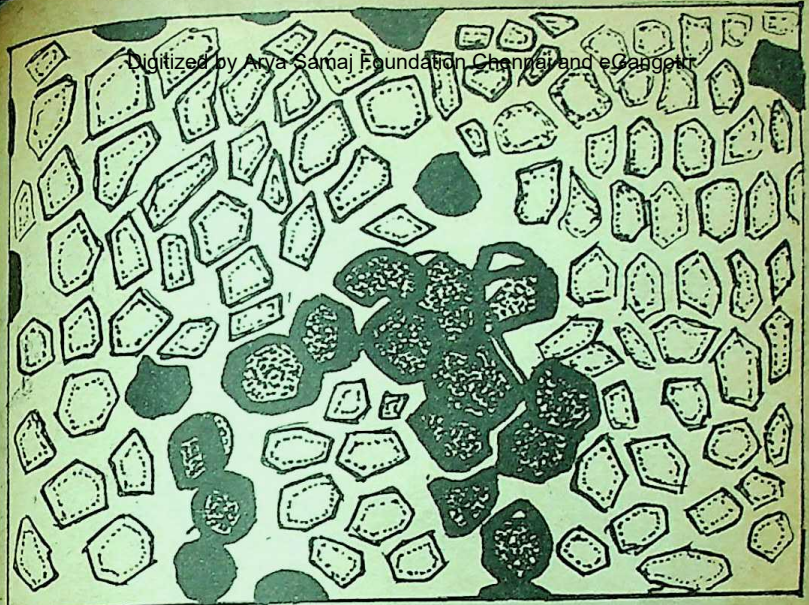
एक्यूट ल्यूकेमिया से पीड़ित मनुष्य के रक्त की कोशिकाएं : ल्यूकेमियाग्रस्त अथवा कैंसरग्रस्त कोशिकाओं की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हो गई है.

शाली दवा विन-ब्लास्टीन तथा विन-क्रिस्टीन है. ये सदाबहार नामक पौधे से तैयार होती हैं और अभी तक सब कहीं अमरीका से निर्यात की जा रही हैं. पर हाल ही में हमारे देश में पुणे स्थित रसायनशाला के वैज्ञानिकों ने सदाबहार से इन दवाओं को तैयार करने की सुलभ तथा सस्ती विधि विकसित की है. इन दोनों में इलाज की दृष्टि से विन—क्रिस्टीन अधिक प्रभावशाली है.

यह दवा रक्त कैंसर के लिए अधिक उपयोगी है और बच्चों के रक्त कैंसर के इलाज में तो काफी कारगर सिद्ध हुई है.

इन सभी अनुसंधानों और दवाओं के आविष्कार के पश्चात भी रक्त कैंसर के रोगी को पूर्ण रूप से रोग मुक्त करना तभी संभव हो सकेगा, जब उस के शरीर का सारा संक्रमित रक्त निकाल कर उस के स्थान पर नया रोग मुक्त रक्त प्रवाहित किया जा सके. पिछले 10 वर्षों से विभिन्न देशों के वैज्ञानिक किसी ऐसे द्रव की खोज में हैं, जिसे वे रक्त के स्थान पर शरीर में प्रवाहित कर रक्त बदलने की प्रक्रिया पूरी कर सकें. जापान तथा अमरीका के वैज्ञानिकों ने अभी हाल में ऐसे द्रव को बनाने में सफलता प्राप्त कर ली है.

जापानी वैज्ञानिकों याकोयामा एवं नाइटो ने चूहों पर परीक्षण करने के पश्चात यह दावा किया है कि उन का विकसित कृत्रिम रक्त शरीर के 98 प्रतिशत रक्त का स्थान ले सकता है. इस का निर्माण योक-स्टार्च, एवं फ्लुओ-साल डीएनए को उचित मात्रा में मिला कर किया गया है. अमरीका में परफ्लोरो कार्बन नामक रसायन से कृत्रिम रक्त का निर्माण किया गया है. हो सकता है विश्व के वैज्ञानिक भविष्य में किसी ऐसे द्रव का निर्माण करने में सफल हो जाएं, जिसे ल्यूकेमिया के रोगी के शरीर से समस्त दूषित रक्त को निकालने के बाद उस के शरीर में प्रवाहित कर सकें. ●

इस स्तंभ के लिए चुनावों से संबंधित रोचक झांकी या चुटकुले भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित झांकी या चुटकुले पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए :
चुनावों की चुहल, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

जिसे चुनाव लड़ना हो उसे चाहिए कि पहले अपने सारे कर्ज निबटा दे. खास तौर से उन लोगों का कर्ज जो उस के ही इलाके में रहते हों.

सन 1972 के चुनावों में एक उम्मीदवार के साथ इसी संदर्भ में एक दुर्घटना घटी. वह बेचारा एक दिन अपने प्रचार के लिए लोगों से मिलते हुए जब एक दुकान वाले के पास पहुंचा तो उस दुकानदार ने बजाए उस की बात सुनने के उस का कालर पकड़ लिया और कहने लगा, "वोट की बात तो बाद में करना, पहले मेरे रुपए चुकता करो."

भरे बाजार में ऐसी किरकिरी शायद ही किसी और उम्मीदवार की हुई हो.

—अशोककुमार विश्वकर्मा

✦

मई, 1980 के विधान सभा चुनावों में बड़वानी (मध्य प्रदेश) विधान सभा क्षेत्र से उमरावसिंह पटेल नाम के ही दो उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे थे. उन में एक भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार प्रदेश के भूतपूर्व शिक्षा मंत्री रह चुके थे.

उन्हीं दिनों इस क्षेत्र में इंदिरा कांग्रेस की एक आम सभा को संबोधित करने के लिए केंद्रीय मंत्री श्री प्रकाशचंद्र सेठी आए. अपने भाषण के दौरान इंदिरा कांग्रेस के उम्मीदवार का परिचय देने के लिए उन्होंने मंच पर बैठे एक नेता से उमरावसिंह नाम के दोनों व्यक्तियों के अंतर के बारे में पूछा. लेकिन इस से पहले कि वह नेता कुछ अंतर बताते, मंच पर पीछे बैठे एक अन्य नेता मजाक भरे लहजे में बोले, "एक भूतपूर्व हैं और दूसरे भावी हैं."

उस नेता की इस बात से सारा सभास्थल ठहाकों से गूंज उठा.

—राकेशचंद्र उपाध्याय

✦

चुनाव की एक सभा में
गुस्से में आ कर नेताजी बोले चिल्ला कर,
"कैद करो, फांसी पर लटका दो,
तस्करी और भ्रष्टाचार की
कड़ी से कड़ी सजा दो."
सुन कर यह संदेश श्रोता
आनंद विभोर हो उठे
और बोले,
"नेताजी, आप क्यों अपने प्रति
इतने कठोर हो उठे?"

—शेखर लोढ़ा

पिछले लोक सभा चुनावों की बात है. उस समय भी डीजल नहीं मिल रहा था. अतः प्रत्येक उम्मीदवार को डीजल कोटे पर दिया जा रहा था.

एक स्थानीय नेताजी जो उस समय चुनावों में एक उम्मीदवार थे, एक जनसभा को संबोधित करते हुए कह रहे थे, "मैं खुद गरीब हूं अतः गरीबों की परेशानियों को जानता हूं. मैं किसानों और मजदूरों की हालत अवश्य सुधारूंगा. मेरे पास तो औरों की तरह कोई गाड़ी भी नहीं है जिस से मैं दौरा कर सकूं..."

इतने में एक आवाज आई, "तो फिर आप ने कंट्रोल मूल्य पर डीजल क्यों लिया?"

इस के तुरंत बाद ही एक युवक ने खड़े हो कर कहा, "नेताजी तो गरीबों के मसीहा हैं. इसी लिए उन्होंने वह डीजल गरीब किसानों को काली दरों पर बेच दिया."

—असितोषकुमार जैन 'प्रसन्न'

◆

मैं 1980 के चुनावों में गाजियाबाद क्षेत्र के एक कार्यकर्ता से मिला. वह उस समय लोक दल के चुनाव कार्यालय में कार्य कर रहे थे.

दो दिन बाद स्थिति कुछ बदली तो मैं ने देखा कि वह जनता पार्टी के कार्यालय में बैठे नारा लगा रहे थे, "जनता पार्टी फिर आएगी, सुव्यवस्थित शासन लाएगी."

पर कुछ दिनों बाद चुनाव परिणाम घोषित होने पर वह इंदिरा कांग्रेस द्वारा भारी विजय हासिल करने के उपलक्ष में मिठाइयां बांट रहे थे. जब उन की पार्टी के बारे में मुझे कुछ भी समझ नहीं आया तो मैं ने उन से पूछ ही लिया, "भाई साहब, एक बात सचसच बताइए, आप किस पार्टी से संबंधित हैं?"

इस पर उन भाई साहब ने कहा :

"जहां हो कल का फायदा
उसी के साथ रहने का वायदा,
मेरा नहीं बड़ेबड़े नेताओं का कायदा
लेते रहो चारों तरफ का जायजा."

——रामगोपाल शर्मा ●

मेरे एक मित्र हैं श्री [illegible]. वह भारत सरकार के अंतर्गत एक प्रतिष्ठान में कार्यकारी अभियंता हैं. उन की गिनती प्रतिष्ठान के योग्य व कुशल तकनीकी विशेषज्ञों में होती है. यहां तक तो ठीक है पर वह एक कुशल प्रशासक भी माने जाते हैं. मुझे उन की इस योग्यता में संदेह है. मुझे ऐसा निष्कर्ष स्वयं उन से सुनी एक घटना के बाद लेना पड़ा.

उन्हें एक परियोजना का कार्यभार सौंपा गया. सहयोगी कर्मचारियों के रूप में दो सहायक अभियंता, चार कनिष्ठ अभियंता, सोलह तकनीशियन, एक लेखाधिकारी, दो क्लर्क व एक चपरासी उन्हें मिला. करीब आठ मजदूर भी उन के विभिन्न कार्यों के लिए उन्हें दिए गए थे.

परियोजना स्थल पर सारा सामान प्रतिष्ठान के स्टोर से ही भेजा जाता. बाहर से आया हुआ सामान भी इसी स्टोर में एकत्र होता था. इस प्रकार परियोजना के स्टोर का कार्य काफी बढ़ गया था. कागजों के रखरखाव के लिए उन्होंने एक सहायक अभियंता, एक कनिष्ठ अभियंता, एक तकनीशियन व एक मजदूर को तैनात

लूटो लूटने दो

कहानी • दिनेशसिंह

र रखा था. शेष ... परि-
योजना का तकनीकी कार्य देखते थे.

सामान का आना प्रारंभ हो चुका था. कुछ सामान ट्रकों से सीधे स्टोर पहुंच जाता था. कुछ छोटेमोटे सामानों को कोई न कोई तकनीशियन अपने साथ गाड़ी में रख कर ले आता था. काफी भारी या दूर से आने वाला सामान रेलगाड़ी से आया करता था.

वाडी बंदर से एक पूरा रेल वैगन परियोजना का सामान ले कर आने वाला था. वैगन में 22 टन का एंटीना भी आ रहा था. रेलवे रसीद ले कर एक मजदूर रोज ... माल गोदाम ... पर खाली लौट आता. एंटीना अभी नहीं पहुंचा था.

एक दिन माल गोदाम से फोन आया, "साहब, आप का सामान आ गया है. किसी ठेले वाले को भुगतान करने के लिए पैसे दे कर भेज दें. माल का किराया क्रेडिट नोट से चुक जाएगा."

तुरंत एक तकनीशियन को 100 रुपए दे कर रेलवे माल गोदाम भेज दिया गया.

आननफानन में एक ठेले वाले को 60 रुपए में
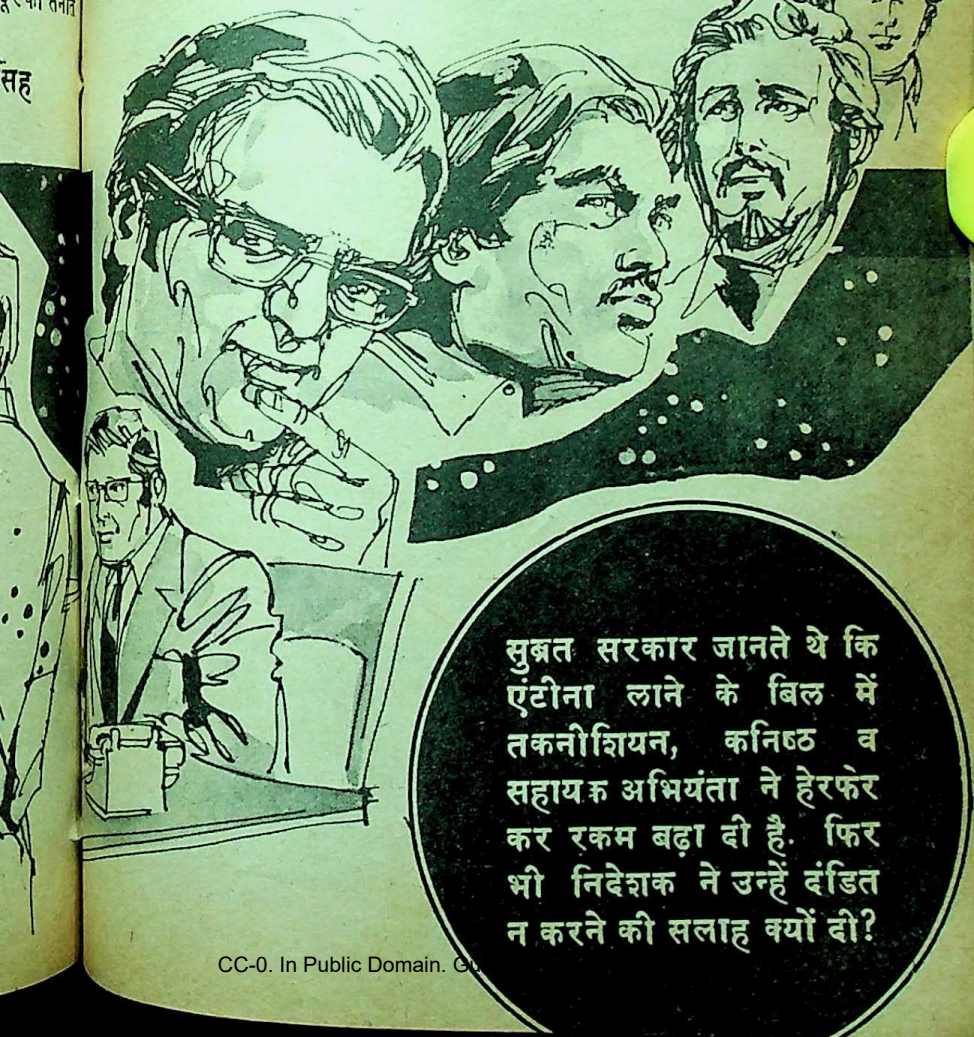
सुब्रत सरकार जानते थे कि एंटीना लाने के बिल में तकनीशियन, कनिष्ठ व सहायक अभियंता ने हेरफेर कर रकम बढ़ा दी है. फिर भी निदेशक ने उन्हें दंडित न करने की सलाह क्यों दी?

सामान पहुंचाने के लिए तैयार कर लिया गया. साथ ही ठेले वाले को बोल दिया गया कि तुम्हें सादे कागज पर रसीदी टिकट लगा कर हस्ताक्षर करने होंगे. ठेले वाले को इस पर कोई आपत्ति नहीं थी.

एंटीना स्टोर पहुंच गया. तकनीशियन ने कनिष्ठ अभियंता को कहा, "साहब, ठेले वाला 100 रुपए में आया है. उस से रसीद ले ली है. रकम नहीं भरी है उस के हस्ताक्षर उस पर हैं. आप जो चाहे रकम भर लीजिएगा."

तकनीशियन ने 10 रुपए उस मजदूर के हाथ में थमा दिए, शायद मुंह बंद रखने के लिए.

कनिष्ठ अभियंता ने वही बिना रकम लिखी रसीद अपने सहायक अभियंता को थमा दी और कहा, "श्रीमान, कल एंटीना आया था. ठेले वाले को 150 रुपए देने पड़े. कहिए तो रसीद पर रकम लिख कर दे दूं."

सहायक अभियंता तपाक से बोले, "अरे, क्या कहते हो? वही बिना रकम लिखी रसीद मुझे थमा दो. मैं देख लूंगा."

आखिर वह बिना रकम लिखी रसीद रकम लिख कर लेखा अधिकारी के पास जब पहुंची तो 200 रुपए की हो चुकी थी. इतनी अधिक रकम के औचित्य को सिद्ध करते हुए सहायक अभियंता ने अपने नोट में लिखा था, "चूंकि एंटीना 22 टन का है और साथ ही काफी नाजुक भी है, इसलिए उसे चढ़ाने व उतारने के लिए 200 रुपए की मजबूरी पूर्णतया उचित है."

आखिर वह बिना रकम लिखी रसीद रकम लिख कर लेखा अधिकारी तक पहुंचतेपहुंचते 200 रुपए की हो गई. जिन लोगों ने 60 रुपए की उस मूल रसीद की बढ़ा कर इतनी अधिक लिखी थी उन का कहना था कि उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया है.

मेरे मित्र सुब्रत को केवल 'स्वीकृत' लिख कर हस्ताक्षर भर करना था. सुब्रत ने हस्ताक्षर करने से पूर्व एकाएक कर सब को बुलवा लिया.

तकनीशियन, कनिष्ठ व सहायक अभियंता तीनों ने घपले की बात स्वीकार कर ली. पर ऐसा करने का कारण भी तत्काल बतला दिया.

तकनीशियन भरी दोपहरी में रिक्शा से रेलवे स्टेशन गया व आया था. (जब कि असल में वह साइकिल से ही गया था.) उस का पैसा मिलेगा नहीं, मजबूरन उसे अपने पैसों के लिए जुगाड़ करना पड़ा.

कनिष्ठ अभियंता और सहायक अभियंता ने कहा, "जब निदेशक महोदय आए थे तब आप ने हम दोनों से उन के लिए मुर्गा, चिकन बिरयानी व शराब का प्रबंध करने को कहा था. उन के पैसे किसी ने दिए तो थे नहीं. सब हमारी जेबों से गए थे. मजबूरन हम को अपने पैसे इस तरह निकालने पड़े."

सुब्रत सब समझता था. 10 रुपए खर्च कर के 40 रुपए का फरजी बिल बनाया जाता. पर वह मजबूर था.

पहलेपहल सुब्रत ने भी सब को कारण बताओ नोटिस दे दिया था. जाली बिल बनाने के लिए क्यों न उन के विरुद्ध कारखाई की जाए? पर उसे निदेशक के कहने पर वह नोटिस वापस लेना पड़ गया था.

निदेशक का फोन आया, "यह सब क्या कर रहे हो? जो चोरी करता है
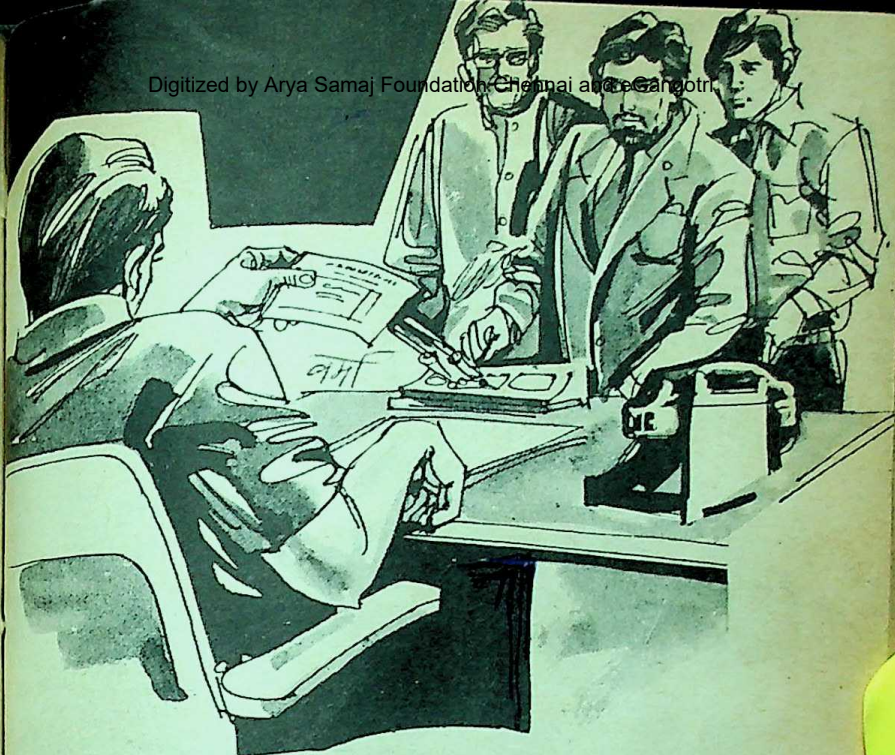
सुब्रत सरकार ने एकएक कर सब को बुला लिया. तब तकनीशियन, कनिष्ठ व सहायक अभियंता ने अपना अपराध भी स्वीकार कर लिया. पर साथ ही यह भी बताया कि उन्हें ऐसा क्यों करना पड़ा.

करने दो. अनुशासनात्मक काररवाई से तो काम रुक जाएगा. परियोजना पीछे रह जाएगी. तुम्हारी गोपनीय रिपोर्ट खराब हो सकती है. तरक्की रुक जाएगी. यह सब छोड़ कर कार्य की प्रगति पर ध्यान दो. मंत्रालय से जवाबतलब होने लगा है. सब से मिल कर चलो. तभी काम बनेगा. पैसा सरकारी है, खूब है. खर्च होने दो. काम हो या न हो, पर खर्च बराबर होता रहे. कर्मचारी दौरे पर जाते रहें. सामान की खरीद की रसीदें आती रहें.

"इस से सिद्ध होगा कि परियोजना का कार्य तेजी से हो रहा है."

सुब्रत सरकार उसी दिन से बदल गया. वह किसी की रसीद या बिल पर ऐतराज नहीं करता. यात्राभत्ते के अनाप-शनाप बिलों पर भी आंख मूंद कर हस्ताक्षर कर देता था. सारे सहयोगियों की नजर में वह एक 'अच्छा साहब' हो गया था.

आखिर एक दिन परियोजना पूरी हो गई. परियोजना की लागत 100 करोड़ से बढ़ कर 300 करोड़ रुपए हो गई.

परियोजना के उद्घाटन अवसर पर सबंधित मंत्रालय के मंत्री महोदय ने एक वाक्य कहा था, "बढ़ती हुई महंगाई के कारण परियोजना की लागत तीन गुनी हो गई है. फिर भी यह हर्ष का विषय है कि परियोजना निर्धारित अवधि में पूरी हो गई है."

सभी लोग इस के लिए सुब्रत सरकार को बधाई दे रहे थे. सुब्रत सरकार एक फीकी मुसकान के साथ सब की बधाई स्वीकार कर रहा था. ●

For the fashion-conscious

Woman's era

brings out a colourful and exciting

FASHION SPECIAL

in its
February (Second) issue

* Latest in the fashion scene
* Jeans for all times
* Dress patterns for young girls
* New designs for your child's wardrobe

Plus
Interesting articles, absorbing stories and regular features.

Ensure your copy with your nearest newsagent.

आठवां भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह

समारोह में स्वर्ण मयूर की संयुक्त विजेता फिल्म 'आक्रोश' (हिंदी) के एक दृश्य में स्मिता व ओम पुरी.
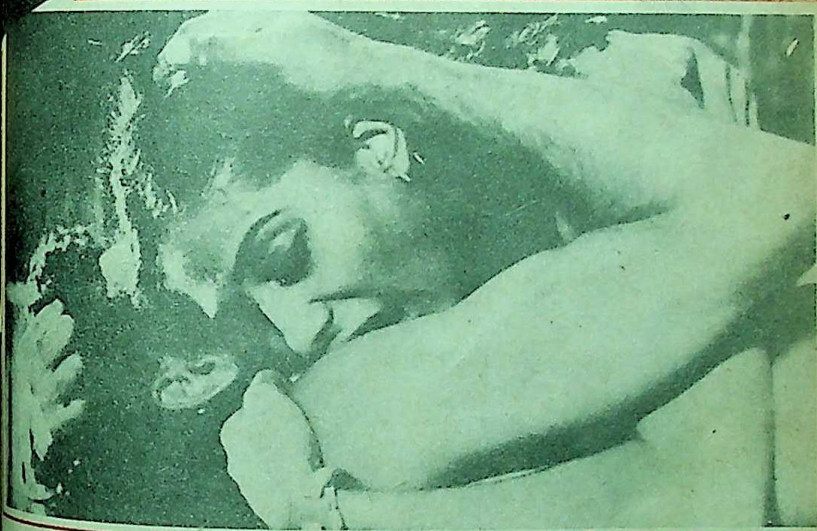
आठवां भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह क्या अपने स्तर के अनुरूप बना रह कर अपनी कोई उपयोगिता सिद्ध कर सका?

भारत का आठवां अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह अनेक दृष्टियों से फीका ही नहीं, असफल भी रहा. अभी तक भारत का पांचवां अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह ही सफलतम समारोह कहा जा सकता है. उस के बाद हर वर्ष समारोह का स्तर निरंतर गिरता

ही चला जा रहा है. संभवत: यही कारण है कि विदेशों में हमारे समारोह की कोई साख नहीं रह गई है और कोई भी देश अपनी अच्छी फिल्में प्रतियोगिता में भेजने की तकलीफ गवारा नहीं करता.

इस बार प्रतियोगिता वर्ग की फिल्में अत्यंत निराशाजनक रहीं. अमरीका ने जिस प्रकार की निम्न स्तर की फिल्में प्रतियोगिता में भेजीं, उन्हें देख कर तो ऐसा प्रतीत होता है कि अमरीका ने हमारे समारोह प्रबंधकों के साथ मजाक ही किया है. यही स्थिति लगभग अन्य देशों की भी रही. यही कारण है कि पत्रकार और फिल्म प्रतिनिधि प्लाजा पर सूचना वर्ग की फिल्में देखने में भीड़ लगाए रहे और विज्ञान भवन साधारणत: खाली पड़ा रहता था.

यही स्थिति संभवत: आयोजकों के लिए मुसीबत का कारण बन गई. विज्ञान भवन में पत्रकारों और प्रतिनिधियों की भीड़ कम होने के कारण अधिकतर टिकट बेचे जाने लगे और उन के लिए लगभग 300 सीटें छोड़ दी जातीं. स्वीडन और स्पेन की फिल्मों के प्रति दर्शकों में सदा ही आकर्षण रहा है. स्वीडन व स्पेन की संयुक्त रूप से निर्मित फिल्म 'सबीना' के बारे में यह बात फैल गई कि यह बहुत अच्छी फिल्म है, उधर उस दिन उस शो में प्लाजा में कोई अच्छी फिल्म न थी. अचानक सारी भीड़ विज्ञान भवन पहुंच गई. सीटें कम होने के कारण बहुत से पत्रकार फिल्म देखने से रह गए और अच्छाखासा हंगामा खड़ा हो गया.

दूसरे दिन तो पूरा तमाशा ही बन

स्वर्णमयूर की सह विजेता फिल्म 'दी अननोन सोलजर्स पेटेंट लेदर शू' (बुलगारिया) का एक भावपूर्ण दृश्य.

फिल्म 'बैलिट फैबियन मीट्स गाड' में सर्वोत्तम अभिनय के लिए रजत मयूर पुरस्कार पाने वाला अभिनेता गैबर कोनेज (बाएं).
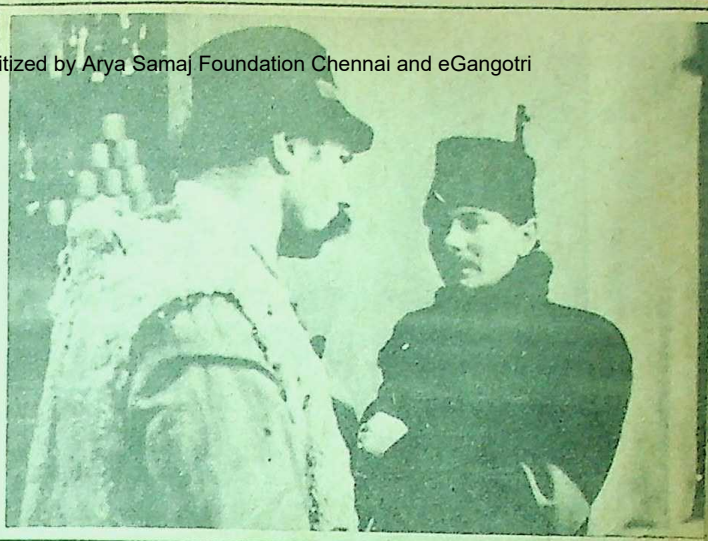
था और फिल्म का शो तक रोकना पड़ा. उस दिन भी प्लाजा में शाम के शो में कोई अच्छी फिल्म न थी और विज्ञान भवन में हंगरी की फिल्म 'बैलिट फैबियन मीट्स गाड' दिखाई जा रही थी. अनेक प्रतिनिधियों को जगह न मिलने के कारण हंगामा खड़ा हो गया. फिल्म का प्रदर्शन स्थगित कर दिया गया. सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री साठे को स्वयं आ कर स्थिति संभालनी पड़ी. बाद में इसी फिल्म के नायक को सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार मिला.

इसी दौरान रूसी फिल्म 'स्लैप इन दी फेस' के प्रदर्शन के बाद दिल्ली के एक अंगरेजी दैनिक पत्र में फिल्म की समीक्षा के अंत में ये शब्द लिख दिए गए कि यह फिल्म प्रतियोगिता में सर्वोत्तम फिल्म का स्वर्णमयूर जीतेगी. और क्यों जीतेगी यह बात सभी लोग जानते हैं. दरअसल उस का संकेत जूरी (निर्णायक मंडल) के अध्यक्ष श्री चुकराए की तरफ था, जो रूसी थे. समीक्षा में यह भी लिखा गया था कि मास्को से यह फिल्म विशेष रूप से केवल पुरस्कार जीतने के लिए ही लाई गई है. श्री चुकराए ने इसे अपना और अपनी ईमानदारी पर प्रहार समझा. उन्होंने इस समीक्षा को इतनी गंभीरता से लिया कि दूसरे दिन एक विशेष पत्रकार सम्मेलन में अपना स्पष्टीकरण दिया. उन्होंने उपर्युक्त पत्र के प्रतिनिधि

जापान के प्रसिद्ध निर्देशक कुरुसावा की विश्वविख्यात फिल्म 'कागेमूशा' में युद्ध का एक दृश्य.

को भेंटवार्ता देने से भी इनकार कर दिया.

इस बार सब से ज्यादा खलने वाली बात यह थी कि समारोह फिल्म जगत के प्रमुख व्यक्तियों व कलाकारों को आकृष्ट करने में असफल रहा. बंबई से इनेगिने लोग ही समारोह में सम्मिलित हुए. परिणामस्वरूप द्वितीय श्रेणी के कलाकार ही भीड़ का आकर्षण बने रहे. शशि कपूर केवल समारोह के आरंभ और अंत में नजर आया. दोचार दिन तनूजा भी प्लाजा में फिल्में देखती रही. एकमात्र डैनी ही ऐसा कलाकार था जो पहले दिन से ले कर अंतिम दिन तक बराबर फिल्में देखता रहा. उस के धैर्य की प्रशंसा करनी पड़ती है. पूरे समारोह में शायद वही अकेला व्यक्ति था जो प्रातः साढ़े आठ बजे आ कर प्लाजा में डट जाता था और रात को 12 बजे पूरी छः फिल्में देख कर जाता था. नीरस से नीरस फिल्म भी उसे उबा नहीं सकी.

आरंभ के कुछ दिन परवीन बाबी भी दिखाई दी पर उस के बाद वह गायब हो गई. शबाना ने भी डैनी की तरह बहुत फिल्में देखीं.

शायद अधिक व्यस्त रहने के कारण गुलजार अंतिम दिनों में आए. पर इन दिनों में उन्होंने अधिक से अधिक फिल्में देखने की कोशिश की. इन के अतिरिक्त ओमप्रकाश रल्हन, बासु चटर्जी, बासु भट्टाचार्य और श्रीराम बोहरा आदि लगातार फिल्में देखते रहे. यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि तथाकथित कला फिल्मों के लगभग सभी निर्देशक व कलाकार उपस्थित थे, पर उन को झांक भर लेने के अतिरिक्त आम दर्शकों में कोई प्रतिक्रिया नहीं होती थी.

निर्णायक मंडल (जूरी) के अध्यक्ष श्री चुकराए (बीच में) ताजमहल देखने गए.

(बाएं से दाएं) निर्णायक मंडल के सदस्य श्री एटोलियो डी ओनोफ्रियो, सचिव श्री म. कृष्णास्वामी, सदस्य प्रो. ए. एस. ब्रूसिल.

दर्शकों पर सदा की तरह सैक्सी फिल्में देखने का भूत सवार रहा. सभी सिनेमाहालों में खिड़की खुलने के दोतीन घंटों के अंदर तमाम टिकट बिक गए. पर इस बार भी उन्हें पिछली बार की तरह निराशा ही हाथ लगी. समारोह के सूचना वर्ग में दिखाई जाने वाली बहुत सी फिल्में उत्तम थीं, पर सिनेमा

...हालों में प्रदर्शित की जाने वाली फिल्में ...फिल्मों को छोड़ कर, नीरस और ...बंद फिल्में थीं. अगर आयोजक चाहते तो ...उबाऊ थीं. अगर आयोजक चाहते तो दर्शकों की अच्छी फिल्में देखने को मिल सकती थीं. पर आयोजकों की बेवकूफी का फल दिल्ली में एक सिनेमा हाल को भोगना पड़ा.

इस सिनेमाहाल में स्पेन की फिल्म 'गोल्ड मेमोरी' दिखाई जा रही थी. लोगों ने भ्रम से इसे सैक्सी फिल्म समझा. क्योंकि

हमारे यहां फिल्मों के बारे में दर्शकों को कोई पूर्व जानकारी नहीं दी जाती. पर यह फिल्म डाक्युमेंट्री युद्ध फिल्म निकली जिस में द्वितीय विश्वयुद्ध की पुरानी श्वेत श्याम फिल्में दिखाई गई थीं. उपरोक्त फिल्म देख कर दर्शक भड़क उठे और सिनेमाहाल की सीटें व शीशे तोड़ डाले. इसी का नतीजा था कि जब दूसरे सप्ताह उसी सिनेमाहाल में एक ऐसी ही जापानी फिल्म दिखाई जा रही थी तो सिनेमाहाल के प्रबंधकों ने हाल के बाहर बहुत बड़े-बड़े अक्षरों में लिख दिया कि प्रदर्शित की जा रही फिल्म मात्र एक डाक्युमेंटरी फिल्म है.

इस बार की फिल्मों में एक विशेष बात देखने में आई. समारोह के सूचना एवं प्रतियोगिता दोनों वर्गों में दिखाई जाने वाली अधिकतर फिल्में या तो सीधे रूप से युद्ध से संबंधित थीं अथवा इन पर युद्ध का प्रत्यक्ष प्रभाव था. इन फिल्मों को देख कर लगता है कि पूरा यूरोप हिटलर के दिए घावों को अभी तक सहला रहा है.

रूस और चीन की फिल्मों में कुछ परिवर्तन के लक्षण नजर आए हैं. उन में पार्टी की बातों को न छेड़ कर अब जज्बाती कहानियां ली जा रही हैं. रूस की 'आस्या' और 'ए स्लैप इन दी फेस' व चीन की 'व्हैन हिल्स टर्न रेड' इस के उदाहरण हैं. (इन फिल्मों के कथासार अलग दिए जाएंगे.)

समारोह में प्रदर्शित फिल्मों को
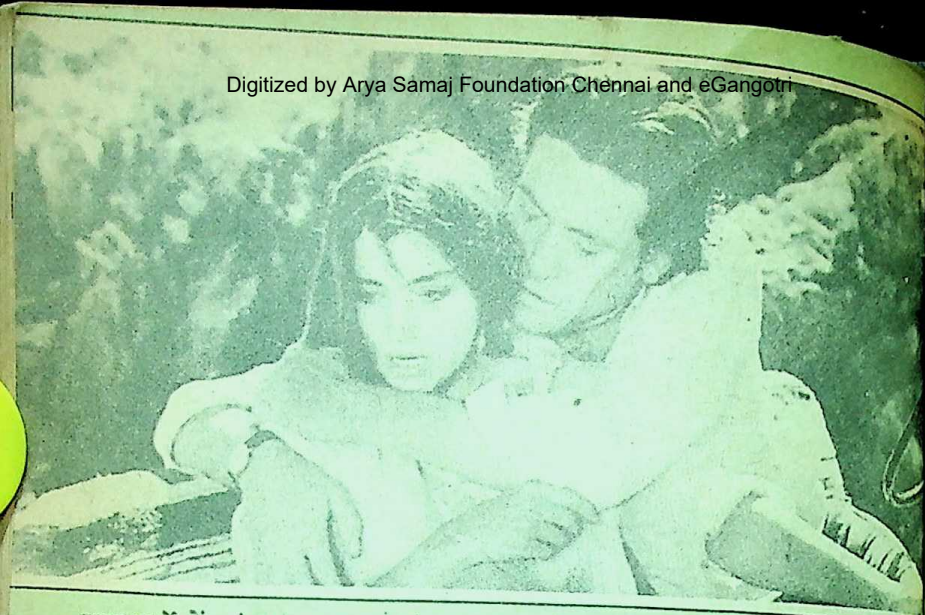
चार वर्गों में बांटा जा सकता है: (1) प्रतियोगिता वर्ग, (2) सूचना वर्ग, (3) बाजार वर्ग और (4) एक ही निर्देशक की फिल्में. प्रतियोगिता वर्ग की फिल्में सब से निकृष्ट रहीं. इस वर्ग की फिल्में देख कर लगता है कि अन्य देश इस समारोह को कोई महत्त्व नहीं देते. यही कारण है कि इस बार विश्व स्तर का कोई भी विदेशी निर्देशक या कलाकार समारोह में सम्मिलित नहीं हुआ, जब कि पिछले समारोहों में विश्वविख्यात हस्तियां आती रही हैं.

सूचना वर्ग की फिल्में

सूचना वर्ग में बहुत सी अच्छी फिल्में देखने को मिलीं. जहां प्रतियोगिता वर्ग में अमरीकी फिल्में निम्न स्तर की थीं, इस वर्ग में अमरीकी फिल्में बाजी मार गईं. 'आल दैट जैज', '1941' और 'बींग देअर' आदि फिल्में हर दृष्टि से प्रशंसनीय थीं और देखने से ताल्लुक रखती हैं. पूरा समारोह देख कर और ये फिल्में देख कर यह विश्वास हो जाता है कि केवल अमरीका ही फिल्में बनाना जानता है. 'आल दैट जैज' रंगीनियों से भरी चकाचौंध कर देने वाली संगीत प्रधान फिल्म थी तो '1941' में एक युद्ध फिल्म को हास्य फिल्म बना दिया गया है. 'बींग देअर' को एक उत्कृष्ट राजनीतिक व्यंग्य कहा जा सकता है.

सूचना वर्ग की फिल्मों में अनेक विश्व विख्यात फिल्में थीं जो विश्व के विभिन्न फिल्म समारोहों में पुरस्कृत हो चुकी थीं. इन में 'एपोकैलिप्स नौ' (कैंस, 1979), 'कंडक्टर' (सान सेबैस्टियन, 1980), जापान के प्रसिद्ध निर्देशक अकीरा कुरोसावा की 'कागेमूशा' (कैंस, 1980), 'आल दैट जैज' (कैंस, 1980), 'गलोरिया' (वीनिस, 1980) और 'फिआंसी' (कालोवी वैरी, 1980) आदि फिल्में सम्मिलित थीं.

इन में 'एपोकैलिप्स नौ' में सब से ज्यादा भीड़ रही. वियतनाम की लड़ाई पर बनी इस फिल्म के प्रदर्शन के दिन प्लाजा का हाल खचाखच भरा हुआ था. प्लाजा की बालकनी में सब से पिछली पंक्ति सिनेमा के मालिकों के लिए सुरक्षित थी. उस दिन पंक्ति में सदा की तरह डैनी और तनूजा बैठे तो उन्हें भी मालिकों के मेहमानों की खातिर उठा दिया गया.

प्रतियोगिता वर्ग में 24 फिल्में शामिल की गईं. भारत की ओर से 'आक्रोश' और 'सतह से उठता आदमी' दो प्रविष्टियां थीं.

स्पेन व स्वीडन की संयुक्त फिल्म 'सबीना' का एक प्रणय दृश्य. (बाए)

घाना की फिल्म 'लव ब्रयूज इन अफ्रीकन पाट' का एक दृश्य. (दाएं)

17 जनवरी को सायंकाल एक बड़े ही फीके समारोह में पुरस्कृत फिल्मों की घोषणा कर दी गई. यह घोषणा भी पूर्णतः अनपेक्षित रही. सर्वोत्तम फिल्म का स्वर्ण मयूर दो फिल्मों को सम्मिलित रूप से दिया गया. ये फिल्में हैं बलगारिया की 'दी अननोन सोल्जर्स पेटेंट लैदर शू' और भारत की 'आक्रोश'. सर्वोत्तम निर्देशक के लिए इटली की फिल्म 'वीनीशियन लाइज' के निर्देशक स्टेफैनो रोला को रजत मयूर मिला. हंगरी की फिल्म 'वैलिट फैबियन मीट्स गाड' के अभिनेता गेबर कोनेज को सर्वोत्तम अभिनेता का रजत मयूर मिला. जूरी का विशिष्ट

रूसी फिल्म 'ए स्लैप इन दी फेस' की नायिका एक भाव-पूर्ण दृश्य में.
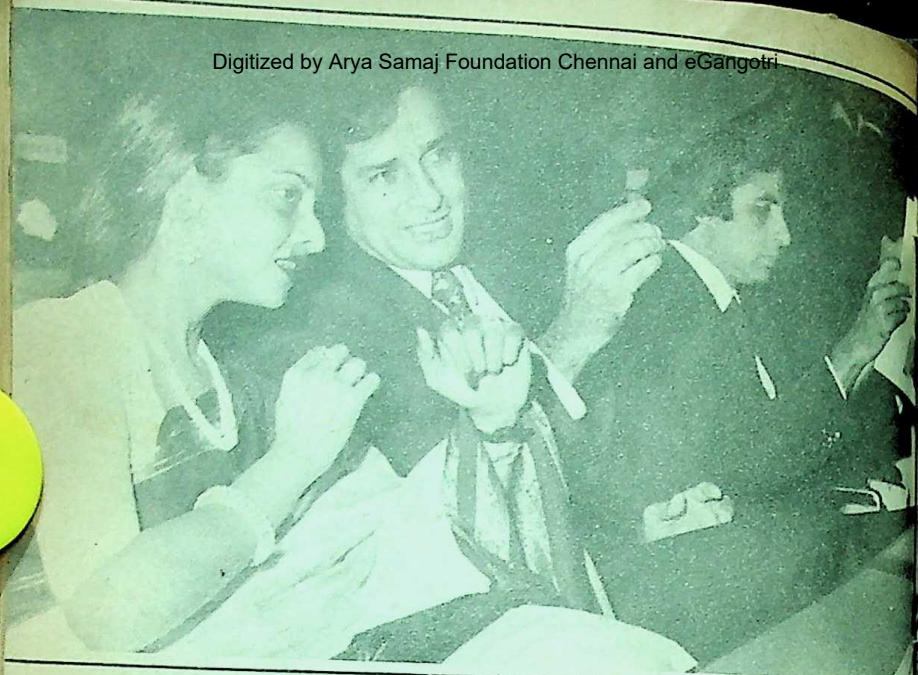
समारोह में भारतीय फिल्मी मेहमानों में से अमिताभ, शशि व रेखा (ऊपर) और शबाना तथा डेविड (नीचे) : हिंदी फिल्म जगत के कलाकारों ने समारोह के प्रति अरुचि ही प्रकट की.

पुरस्कार घाना की फिल्म 'लव ब्रयूड इन दी अफ्रीकन पाट' को दिया गया. लघु चित्रों में डेनमार्क की 'ए पीरियड आफ ट्रांजिक्शन' को स्वर्ण मयूर, मणि कौल की 'अराइवल' को रजत मयूर और इटली की फिल्म 'सेनोटेस्निका' को जूरी का विशिष्ट पुरस्कार मिला. (फिल्मों के कथासार अगले अंकों में पढ़ें.)

कुल मिला कर यह समारोह नाराजगियों का समारोह रहा. दर्शक इसलिए नाराज रहे कि उन्हें अच्छी फिल्में देखने को नहीं मिलीं और ऊंची दरों की टिकटें ले कर भी उन्हें घटिया फिल्में देखने को मिलीं. पत्रकार व प्रतिनिधि अव्यवस्था व अधिकारियों के उपेक्षापूर्ण व कटु व्यवहार के कारण नाराज रहे. जिधर देखो नाराजगी का ही वातावरण दिखाई दिया. ●

क्या एशियाई खेल हो सकेंगे?

खेल समीक्षा

नई दिल्ली में 1982 में होने वाले जिन एशियाई खेलों को 30 करोड़ रुपए की बरबादी मान कर चरणसिंह की पिछली कामचलाऊ सरकार ने रद्द कर दिया था, वही एशियाई खेल अब मौजूदा इंदिरा सरकार के लिए प्रतिष्ठा का सवाल बन गए हैं और इस थोथी प्रतिष्ठा के लिए सरकार साढ़े तीन अरब रुपए खर्च करने पर तुली हुई है. जिस तरह से एशियाई खेलों का व्यय यकायक बढ़ कर दस गुना से ज्यादा हो गया है, वह तो चौंका देने वाली बात है ही, इस से भी बड़ी और दुख की बात यह है कि इस तमाम तामझाम के बावजूद एशियाई खेल सही समय पर सही ढंग से होने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे हैं.

कई विशेषज्ञों का कहना है कि जिस तरह गैरजरूरी निर्माण कार्यों की योजनाएं बन रही हैं, उस से यह नहीं लगता कि सारा काम समय पर पूरा हो पाएगा. लोदी रोड पर बन रहे सैकड़ों कार्यालय कक्ष, ढका हुआ तरण ताल (स्वीमिंग पूल) उस के साथ विशेष रसोईघर, दो बड़े सिनेमाघर और रिंग रोड पर बन रहे वातानुकूलित इनडोर स्टेडियम आदि की सच पूछें तो एशियाई खेलों के लिए कोई जरूरत ही नहीं है. इन के बिना भी काम चलाया जा सकता है. लेकिन यूरोप के रंग में रंगे सरकारी आकाओं को कैसे समझाया जाए ? वे हर काम यूरोप या अमरीका की नकल पर करना चाहते हैं. इस में वे यह पूरी तरह भूल जाते हैं कि

इंदिरा गांधी : साढ़े तीन रुपए अरब खर्च कर के भी एशियाई खेल करवाने को तैयार हैं.
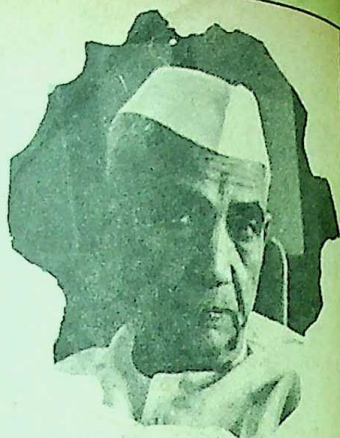
चरणसिंह : तीस करोड़ रुपए खर्च कर के भी एशियाई खेल करवाने को तैयार न थे.

न तो भारत के पास बेहताशा पैसा है और न महंगे स्टेडियमों को इस्तेमाल करने के लिए पर्याप्त खेल सुविधाएं.

रिंग रोड के स्टेडियम की पूरी योजना तो फिलहाल सामने नहीं आई है, लेकिन इस पर 25 से 30 करोड़ रुपए तक खर्चा आना मामूली बात है. इस के बाद भी अगर स्टेडियम सही समय पर बन कर तैयार हो जाए तब भी गनीमत है. राजनीति से दूर केवल अपने काम में निष्ठावान इंजीनियरों का विश्वास है कि यह स्टेडियम समय पर तैयार नहीं हो सकता..

पहले इस स्टेडियम का डिजाइन चुनने के लिए जो खुली प्रतियोगिता हुई थी उस में पहला स्थान पाने वाले डिजाइन को सिर्फ इसी लिए रद्द कर दिया गया क्योंकि दिल्ली विकास प्राधिकरण के अधिकारियों के अनुसार वह व्यावहारिक नहीं था. तीसरा पुरस्कार पाने वाले डिजाइन को चुना गया, क्योंकि उसे बनाने वाले आर्किटेक्ट ने श्रीमती इंदिरा गांधी के महरौली स्थित भवन का नक्शा तैयार किया था.

स्टेडियम की छत बनाने के लिए विदेशों से अंधाधुंध कीमत पर उपकरण और जानकारी आयात करनी पड़ रही है. जरमनी के स्टेडियम विशेषज्ञ प्रोफेसर बेनिश का कहना है, "समय इतना कम रह गया है कि अगर पूरी मुस्तैदी से भी काम किया जाए तो भी स्टेडियम का स्तर बिगड़ सकता है. फिर नदी के किनारे बनाए जाने की वजह से यह स्टेडियम कभी भी बाढ़ व नमी का शिकार हो सकता है."

इस इनडोर स्टेडियम में 25 हजार दर्शक बैठ सकेंगे और यह पूरी तरह वातानुकूलित होगा. ऐसे स्टेडियम विश्व में गिनेचुने ही हैं. लेकिन वहां उन के रखरखाव का खर्च इसलिए निकल आता है क्योंकि वहां हमेशा कोई न कोई खेल होते रहते हैं. भारत में इस का उपयोग मुशकिल से एक महीने ही हो सकेगा. इस की तुलना में जो खर्च आएगा, वह काफी ज्यादा है. स्टेडियम को वातानुकूलित रखने के लिए चार हजार टन के [illegible] पर ही हर साल 50

लाख रुपए खर्च होंगे और इस के लिए जितनी बिजली खर्च होगी उस से एक अच्छे खासे कसबे को रोशनी पहुंचाई जा सकती है.

एशियाई खेल करने का फैसला 1976 में श्रीमती इंदिरा गांधी की सरकार ने ही किया था. बाद में जनता सरकार के आने पर कहा गया कि एशियाई खेल 100 करोड़ रुपए से आयोजित हो पाएंगे. इस फजूलखर्ची पर काफी होहल्ला मचा. तब यह फैसला हुआ कि 24 से 30 करोड़ रुपए में ही एशियाई खेल आयोजित करने की कोशिश की जाए. 1979 में चरणसिंह ने तो कहा कि खेलों जैसे तमाशे पर 30 करोड़ रुपए खर्च करने में कोई तुक नहीं है.

जनवरी, 1980 में फिर श्रीमती इंदिरा गांधी की सरकार बनी. 14 जुलाई, 1980 को नई संचालन समिति ने खेलों के खर्च का बजट 42 करोड़ 5 लाख रुपए बनाया. नवंबर में यह राशि 42 करोड़ 70 लाख तक पहुंच गई और साल खत्म होतेहोते तो यह कह दिया गया कि एशियाई खेलों से जुड़े बाकी खर्चों में 250 करोड़ रुपए तक खर्च करने पड़ सकते हैं.

इंदिरा सरकार का दावा है कि पिछले एक साल में कीमतें कम हुई हैं लेकिन एशियाई खेलों का खर्च पिछले एक साल में ही बढ़ा है. खिलाड़ियों के ठहरने के लिए 3,300 कमरे बनाने पर पहले जो खर्च 50 करोड़ रुपए होना था वह अब बढ़ कर 132 करोड़ रुपए हो गया है. इसी तरह खेल गांव पर भी पहले के 15 करोड़ रुपए की तुलना में अब लगभग 25 करोड़ रुपए का खर्च आने का अनुमान है.

सिर्फ यही नहीं, सड़कों की हालत, यातायात की स्थिति और कीमतों व कानून व्यवस्था पर भी इन एशियाई खेलों का व्यापक असर पड़ेगा. दिल्ली को एक आदर्श खेल नगरी बनाने के लिए पूरे शहर के जनजीवन को दो साल तक अस्तव्यस्त रखना पड़ेगा, इस के बाद भी खेल सही ढंग से हो पाएं, इस की कोई गुंजाइश नजर नहीं आती.

नई दिल्ली में यमुना नदी के साथ एशियाई खेलों के लिए निर्माणाधीन इनडोर स्टेडियम : इसे बनाते समय क्या इस के स्थायित्व और दूरगामी उपयोग के विषय में भी किसी ने सोचने की जरूरत महसूस की है?
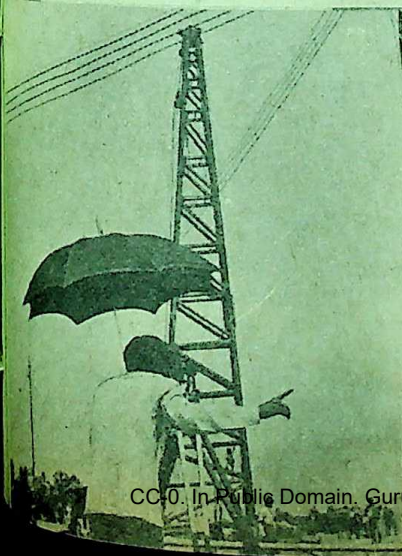
महिलाएं क्रिकेट के मैदान में

क्रिकेट पुरुषोचित खेल है और पिछले 50 सालों से इस क्षेत्र में हाथपांव मारने के बाद भी महिलाएं क्रिकेट में कोई नई उपलब्धि नहीं पा सकी हैं. फिर भी यह तमाशा जारी है और पिछले सातआठ सालों से महिला क्रिकेट का शोर भारत में भी उठ खड़ा हुआ है. वेस्टइंडीज, आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड के विरुद्ध भारतीय महिलाएं अब तक टेस्ट मैच खेल चुकी हैं. 1979 में भारत में महिलाओं की विश्व कप क्रिकेट प्रतियोगिता भी हुई जो पूरी तरह फ्लाप रही.

भारत में महिला क्रिकेट के बौने से इतिहास में राजनीति ने अपना दखल जमा लिया है. इसी का नतीजा है कि महिला क्रिकेट हमारे यहां वैसा सफल नहीं हो पाया है जैसा वह आस्ट्रेलिया या इंगलैंड में है. पिछले दिनों इंगलैंड की महिला टीम ने भारत दौरा किया. दोनों टीमों के खेल के स्तर ने क्रिकेट को एक घटिया सा तमाशा बना कर रख दिया. एक ऐसा तमाशा जिसे देखने में आम लोगों ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई.

सब से दिलचस्प बात तो यह रही कि अंगरेज खिलाड़ियों ने स्कर्ट में अपने आप को चुस्तदुरुस्त रखा, लेकिन भारतीय खिलाड़ी पैंटकमीज के ढीलेढाले लिबास से अपने आप को मुक्त नहीं रख पाईं.

इगलैंड की महिला क्रिकेट खिलाड़ी भारत दौरे पर : भारतीय खिड़ाड़ियों से अच्छा प्रदर्शन तो किया ही उन से कहीं अधिक चुस्तदुरुस्त भी दिखाई दीं.

दिल्ली क्रिकेट: विवादों का नया सिलसिला

23 जनवरी को दिल्ली में दिल्ली व पंजाब के बीच होने वाला रणजी ट्राफी मैच फिर नहीं हो सका और इस से एक बार फिर यह सिद्ध हो गया है कि दिल्ली में क्रिकेट का विवाद फिलहाल सुलझने वाला नहीं है.
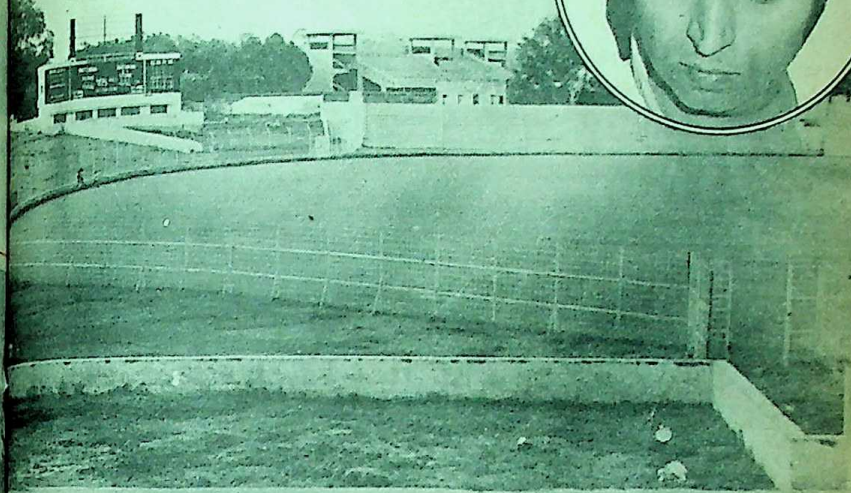
दिल्ली का क्रिकेट मैदान और क्रिकेट संघ के दो दावेदार रामप्रकाश मेहरा व कमलनाथ : आखिर संघ पर आधिपत्य जमाने की इतनी चाह क्यों है?

14 नवंबर 1980, को दिल्ली व पंजाब के बीच का यह मैच दर्शकों के हुड़दंग की वजह से नहीं हो सका था. तब दिल्ली व जिला क्रिकेट संघ (रामप्रकाश मेहरा गुट) दिल्ली शहर क्रिकेट संघ (कमलनाथ गुट) के बीच एक समझौता हुआ, जिस के तहत पांच सदस्यों की एक अस्थायी समिति बनी. इस में तीन सदस्य कमलनाथ गुट के थे और बाकी दो दूसरे गुट के. इस से लगा कि शायद झगड़ा खत्म हो जाए.

लेकिन 23 जनवरी को यह झगड़ा फिर उभर आया, जब दिल्ली व पंजाब के मैच को ले कर दोनों गुटों में खींचातानी शुरू हो गई. मैच शुरू होने के निर्धारित समय के दो घंटे बाद अंपायरों—के. एस. सुंदरम व आई. शिवरमण ने सही ढंग से टास न हो पाने के विरोध में मैदान छोड़ दिया.

हुआ यह कि कमलनाथ गुट ने इस मैच के लिए दिल्ली का कप्तान बिशनसिंह बेदी को बना दिया (यह फैसला अस्थायी समिति ने किया था जिस में कमलनाथ गुट के ही लोग ज्यादा हैं) और मेहरा गुट ने सुरेंदर अमरनाथ को. दोनों ने अपनेअपने मैनेजर तय कर लिए. इस तरह एक मैच के लिए एक पक्ष की दो टीमें घोषित की गईं. ऐसे में मैच हो ही नहीं सकता था और हुआ भी नहीं. अगर जल्दी ही यह तमाशा खत्म नहीं किया गया तो अगले सातआठ महीनों में शुरू होने वाले अंतरराष्ट्रीय सीजन में अजीब दुविधा की हालत पैदा हो सकती है. ●

भारतीय काफी

(पृष्ठ 34 से आगे)

परेशानी. आज इन में से अधिकतर काफी में आई अंतरराष्ट्रीय तेजी का लाभ उठा रहे हैं. वर्तमान स्थिति का पूरा लाभ उठाने वाले काफी उत्पादक यह स्वीकार करते हैं, "जो चीज ऊपर जाती है, कभी न कभी नीचे आएगी ही."

केरल के एक काफी उत्पादक, कृषि अर्थशास्त्री तथा अमरीका के टेनेसी विश्वविद्यालय से कृषि में कई बार डाक्टररेट की डिगरी प्राप्त करने वाले डा. आम्मेन मैथ्यूज कुछ अलग ही विचार रखते हैं.

डा. मैथ्यूज पूछते हैं, "सरकार काफी पर निर्यात शुल्क के बारे में कुछ क्यों नहीं करती? क्योंकि केवल कुर्ग के काफी उत्पादकों को हर साल अपने काफी निर्यात पर 60,000 रुपए देने पड़ते हैं."

भारतीय काफी बोर्ड के अधिकारी इस का स्पष्ट तौर पर खंडन करते हैं, "1970 के दशक के मध्य यानी 1975-76 में काफी निर्यात अभियान बड़े पैमाने पर शुरू हुआ." श्री मीनाक्षी सुंदरम कहते हैं, "भारत के काफी निर्यात पर शुल्क होना बहुत जरूरी है."

भारतीय काफी बोर्ड काफी उत्पादकों द्वारा काफी के निर्यात पर कमाए जाने वाले लाभ को समान रूप से वितरित करना चाहता है. "हम चाहते हैं कि सभी भारतीय, चाहे वे काफी उत्पादन करते हों या नहीं इस धन के भागीदार बनें."

भारतीय काफी बोर्ड द्वारा सुविधाएं

आजकल भारतीय काफी बोर्ड उत्पादकों से खरीदी और इकट्ठी की गई प्रति टन काफी के लिए 16,000 रुपए नीलामी के समय देता है. यह मूल्य बदलता रहता है. फिर भी यह उचित मूल्य है. काफी निर्यात शुल्क बिलकुल स्थिर हो गया है. भारत क्यों नहीं बढ़ने वाले काफी निर्यात पर शुल्क लगाता?

जनरलों और संतरों की इस भूमि पर किसी भी समय अगर कोई बहस होती है तो वह काफी, काफी के मूल्यों, काफी के सत्र, नई पौध के रोपण, काफी के निर्यात और करों के बारे में होती है.

हर छोटी जगह की तरह कुर्ग आज अपने रोचक इतिहास व गुणों के कारण हालांकि कोदवार की संख्या 1,00,000 से अधिक नहीं है—निश्चित ही गुटबाजी से दूर अतीत की यादों से भरा हुआ है.

इस के आकर्षण और असामान्य कृषि क्षमता का पता लगाना यहां आने

काफी की किस्मों के अनुसार बीजों को अलगअलग किया जाता है.

काफी ... तैयारी. ... जा रहा ...

वाले किसी ... आसान है. ... कुर्ग का बहु... के छोटे बड़े ... वाले 2,50,... लोग कर्नाट... कर रहे हैं, ...

कुर्ग क... (नलकनाड)... श्रेय ब्रिटिश... कैप्टन ल हा... उस ने ब्रिटि... सेनाओं की ... सामंती क्षेत्रो...

1870 ... साफ कर के ... लोभी किंतु ... ईस्ट इंडिया ... निवेशिक प्रश... इस क्षेत्र में क... व्यापार में ... ...ता

काफी की नीलामी से पूर्व की तैयारी. काफी को बोरों में भरा जा रहा है.

वाले किसी भी व्यक्ति के लिए बहुत आसान है. काफी उत्पादन और निर्यात में कुर्ग का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है. भारत के छोटे बड़े काफी बागानों में काम करने वाले 2,50,000 लोगों में से 1,50,000 लोग कर्नाटक के काफी बागानों में काम कर रहे हैं, जिस में कुर्ग सब से आगे है.

कुर्ग का पहला काफी बागान (नलकनाड) में 1854 में बना. इस का श्रेय ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारी कैप्टन ल हार्डी की कल्पना को जाता है. उस ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेनाओं की ओर से 1934 में कुर्ग के सामंती क्षेत्रों को अपने कब्जे में लिया था.

1870 तक कुर्ग के अधिकतर जंगल साफ कर के काफी के खेत बना दिए गए. लोभी किंतु कल्पनाशील यूरोपीय ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की नीतियां और औपनिवेशिक प्रशासन और शोषण के कारण इस क्षेत्र में काफी की खेती और लाभकारी व्यापार में बहुत आगे रहे. वे इसे भारत का स्काटलैंड कहते थे.

कैप्टन ल हार्डी के आगमन के 126 वर्ष बाद कुर्ग में 1,00,000 हैक्टेयर भूमि में खेती होती है जिस में से 45,000 हैक्टेयर में सिर्फ काफी की खेती होती है.

1970 के दशक के मध्य से यह प्रवृत्ति बढ़ने लगी है क्योंकि काफी उत्पादों का अंतरराष्ट्रीय मूल्य बढ़ने लगा है और अक्सर 300 से 400 प्रतिशत तक बढ़ा है.

काफी उत्पादकों की स्थिति

आज काफी का औसत उत्पादक स्वीकार करता है कि उस के लिए आज से अच्छा समय पहले कभी नहीं था. कर्नाटक और भारत के अन्य क्षेत्रों का भारी धन आज कुर्ग के काफी बागानों में लगा हुआ है. काफी बागान लाखों रुपए में बेचे गए हैं. अभी कई और काफी बागान बिक्री के लिए हैं.

हालांकि उन का जीवन काफी की खेती पर निर्भर करता है, लेकिन सभी 1,00,000 कोदवा नकदी फसल के अर्थशास्त्र में नहीं फंसे हुए हैं. सैकड़ों कोदवा बहुत पहले कर्नाटक तथा भारत के अन्य भागों और विदेशों में भी चले गए.

बहुत से कोदवा अन्य काम करने लगे हैं, क्योंकि उन्हें यह एहसास हो चुका है कि काफी के बल पर ही जीवनयापन संभव नहीं है, कुर्ग में रहने वाले कोदवा लोगों की संख्या दिनोंदिन कम हो रही है. अन्य स्थानों पर मिलने वाले अवसरों और कुर्ग की सीमाओं को देखते हुए यह प्रवृत्ति बदली नहीं जा सकती.

सशस्त्र भारतीय सेनाओं के लिए परंपरागत जनशक्ति आपूर्ति डिपो कहा जाने वाला कुर्ग आजकल भारतीय सेनाओं में अपने योगदान के लिए गर्व नहीं कर सकता. पिछले कई दशकों से सैनिक स्कूलों में भारत के अन्य भागों के लोग प्रतियोगात्मक परीक्षाओं के माध्यम से स्थान पाने लगे हैं.

काफी की फसल को विकसित करने और कई प्रकार की काफी तैयार करने के लिए काफी के पौधों को अलगअलग उगा कर परीक्षण किए जाते हैं जिस से इस क्षेत्र में और भी उन्नति की जा सके.

इस का परिणाम यह है कि अब भारतीय सेनाओं की निचली, मध्य और उच्च श्रेणियों में कोदवा लोग अधिक नहीं हैं.

इसी के साथ राज्य और राष्ट्रीय हाकी टीमों में युवा और प्रतिभाशाली और अनुभवी कोदवा खिलाड़ी नहीं मिलते. क्या राष्ट्रीय खेलों, विशेषकर हाकी के लिए उन में जो रुचि या प्रतिभा थी वह समाप्त हो गई है? बहुत से कोदवा पुरुष और महिलाएं दावा करते हैं कि नहीं.

अतीत का गुणगान

कोदवा लोग अपने उन पुराने अच्छे दिनों की याद करते हैं, जब वे अपना काम स्वयं देखते थे. अपने महत्त्व और अहं को जताते हुए वे उन दिनों की बात करते हैं जब उन का छोटा राज्य था, जिस की ब्रिटिश रेजीडेंट के अधीन बंगलौर के मैयो हाल में एक प्रशासकी इकाई थी.

कोदवा पुरातत्ववेत्ता तथा एक भारतीय विश्वविद्यालय में रीडर डा. सुबैया द्वारा अपने प्रबंध में दिया गया यह तर्क सत्य के बहुत निकट है, "आखिरी लिंगायत राजा कुर्ग के बासव को जो शिव का बहुत बड़ा भक्त तथा कर्नाटक के शक्तिसाली बेडनूर राज्य के मातहत था, 1834 में हटाए जाने तथा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा उस के राज्य पर अपना अधिकार किए जाने से उस क्षेत्र में तर्क और प्रकाश का उदय होने लगा."

भारतीय इतिहास को तोड़मरोड़ कर पेश करने वाले डा. सुबैया का गैर कोदवा लोगों के प्रति भेदभाव तथा भारत के दो देश भक्तों हैदर अली तथा टीपू सुलतान के प्रति अपने पूर्वाग्रह के कारण सदियों के सामंतवाद में इस परिवर्तन के कारण 'कुर्ग' के पुनर्जन्म' की बात को स्वीकार करते हैं.

कुर्ग में काफी बागानों के लगाए जाने के तीन वर्ष बाद सशस्त्र कोदवा लोगों ने 1857 में बंगलौर के ब्रिटिश कमिश्नर सर मार्क क्यूबन और पेरियापटन में उन की सेनाओं का साथ दिया जिस से वह श्रीरंगपटनम में 'भारतीय विद्रोहियों' का दमन कर सके. श्रीरंगपटनम कावेरी नदी के किनारे एक महत्वपूर्ण किला था, जो तत्कालीन राज्य मैसूर के शासक हैदर अली व टीपू सुलतान की राजधानी थी.

इस के कारण सर मार्क क्यूबन ने कोदवा लोगों को उस सशस्त्र अधिनियम से छूट दे दी जो उस समय भारत में लागू था. कुर्ग को कब्जे में लिए जाने से कुर्ग में दासप्रथा की समाप्ति भी हो गई, जहां दीवान (मुख्य मंत्री) और नौकरशाह बड़ी संख्या में दासों के मालिक थे. ●

MUKTA February (Second) 1981
R.N. 6502/60 D(G) 101

मुक्ता

परमाणु शक्ति : हम कहां हैं

आगरा का चमड़ा उद्योग मर रहा है!
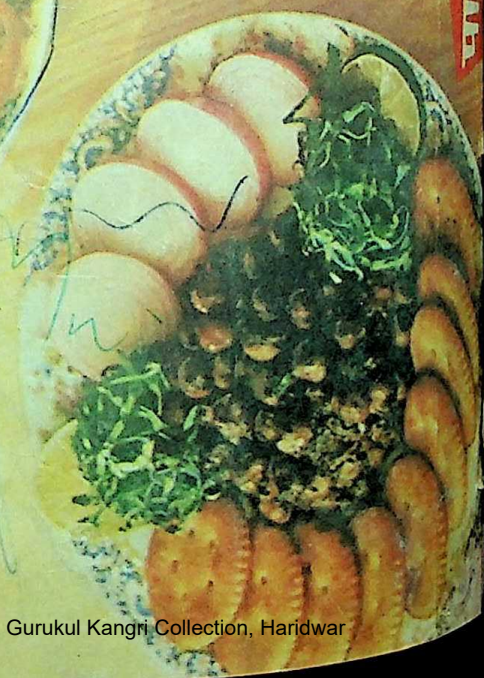
माओ की पत्नी चौकड़ी की सरगना

तंदुरुस्ती
र्नविटा पीजिए...... दिल में उमंग और चेहरे पर खुशियों का
भर लीजिए. अपने पूरे परिवार को मजेदार, स्वादिष्ट बोर्नविटा
जिए. बोर्नविटा कोको, माल्ट, दूध और शक्कर के स्वाभाविक
ों से भरपूर है. इसे बनाने वाले हैं कैडबरी, जो १००
अधिक वर्षों से आहारपेय बनाने में माहिर हैं.
कैडबरीज़
बोर्नविटा
आपके लिए गुणों से भरपूर
किफ़ायती रीफ़िल पेकों में भी मिलता है.

मुक्ता

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

कथा साहित्य

कविताएं

स्तंभ

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

जनवरी (प्रथम) 1981
अंक : 347

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स. प. प्रा. लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मुक्ता नाम रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा (केवल टिकट नहीं) आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

मूल्य : एक प्रति : 2.75 रुपए, एक वर्ष : 55.00 रुपए. विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 रुपए.

मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एम—12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.

संपादक के नाम

दिसंबर (प्रथम) अंक के 'मुक्त विचार' में 'न करेंगे, न करने देंगे' शीर्षक टिप्पणी में व्यक्त आप के विचारों से मैं पूरी तरह सहमत हूं. मैं समझता हूं कि हमें निजी व्यवस्थाओं के प्रति विश्वास प्रकट कर इन में और दिलचस्पी दिखानी चाहिए और सरकार को भी इस प्रकार की व्यवस्थाओं को प्रोत्साहन देना चाहिए, जिस से डाक सेवाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार यदि खत्म नहीं हो पाए तो कम अवश्य हो जाए.

इस प्रकार की सेवा व्यवस्था देश के हर छोटेबड़े शहर में लागू की जानी चाहिए.

—दीपक

✦

नवंबर (द्वितीय) अंक के 'मुक्त विचार' में 'तलाकशुदा स्त्रियों को सुरक्षा' पढ़ कर ऐसा लगा जैसे अभी भी कोई है जो मानवता का पुजारी कहला सके. सर्वप्रथम तो उच्च न्यायालय के विद्वान न्यायाधीश बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने एक विधवा की पीड़ित आंखों में झांक कर एक अनूठा निर्णय दिया.

इनसान कितना अधिक गिर सकता है इस का 'मुक्त विचार' में जीताजागता नमूना प्रकाशित कर के आप ने एक साहसिक कदम उठाया है. अग्नि के समक्ष सात फेरे लगाते हुए एकदूसरे के साथ जीवन भर साथ निभाने की कसमें खाने के बाद भी कोई आदमी किसी छोटी सी बात के पीछे अपने बीवीबच्चों को समाज में भटकने के लिए छोड़ देता है.

समाज विधवाओं का रक्षक होने का दावा करता है, लेकिन क्या वास्तव में वह रक्षक है?

दहेज प्रथा के खिलाफ तो काफी कुछ प्रतिदिन समाचारपत्रों, पत्रिकाओं, रेडियो आदि में पढ़नेसुनने को मिलता रहता है, लेकिन आज तक विधवा विवाह के लिए व्यावहारिक रूप से किसी ने भी कुछ नहीं किया. पुनर्विवाह संभव है, लेकिन जरूरत है समाज एवं शासन द्वारा इसे प्रोत्साहन देने की. **—कमलेश**

✦

दीपावली अंक बड़ा ही आकर्षक लगा. इस अंक के 'मुक्त विचार' में 'नकल का जहर फैल रहा है' शीर्षक टिप्पणी पढ़ी. मेरे विचार से ऐसा केवल उत्तर प्रदेश और बिहार के विश्वविद्यालयों में ही नहीं हो रहा है, यह जहर तो पूरे भारत की शिक्षा प्रणाली में ही फैल गया है. इस में दोष न तो केवल छात्रों का है और न ही केवल शिक्षकों का. यह तो हमारी शिक्षा प्रणाली का ही दोष है.

—दौलतसिंह चौहान

✦

अक्तूबर (द्वितीय) अंक के 'मुक्त

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो.
पत्र इस पते पर भेजिए :
संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

विचार' में 'नए गठबंधन का प्रयास क्यों?' शीर्षक टिप्पणी पढ़ी. आप के विचारों से मैं सहमत हूं. भारत में राजनीतिक दलों को एक करने का प्रयास जिंदा मेढकों को तौलने के समान है.

इन लोगों के पास देश की समस्याओं की तरफ ध्यान देने का समय ही नहीं है. इन के व्यक्तिगत हितों के सामने देश का हित कोई मानी नहीं रखता.

—विभा मिश्रा

✦

दिसंबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'चयन' (कहानी : सत्यकुमार) वास्तव में हृदयस्पर्शी है. लेखक ने जिस उद्देश्य को ले कर कहानी लिखी है, उस का निर्वाह वह ठीक प्रकार से कर पाया है.

—सुशील

✦

नवंबर (द्वितीय) अंक में प्रकाशित 'राजेश की वापसी—अमिताभ की विदाई' (लेख : मणि वत्सल) में लेखक ने बतलाया है कि फिल्म 'भोलाभाला' अभी तक नहीं बनी है. पर इंदौर व खंडवा में यह फिल्म करीब साल भर पूर्व चल भी चुकी है व अन्य कई जगह भी प्रदर्शित हो चुकी है. इस में राजेश खन्ना की भूमिका डाकू की है.

—सुरेश भंवर

✦

नवंबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'देश की सुरक्षा के प्रहरी' (कहानी : चंद्रमोहन प्रधान) पढ़ी.

आज यह बात एकदम सही है कि हमारे देश के वैज्ञानिकों को अपने देश में केवल पूरी सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं, बल्कि उन के आविष्कार का परीक्षण देखने के लिए हमारे मंत्रियों के पास समय भी नहीं है. यों इन मंत्रियों को उद्‌घाटनों आदि समारोहों में जाने की फुरसत रहती है.

यह भी एक कारण है कि यहां के वैज्ञानिक विदेशों में जा कर बस जाते हैं. लेखक को ऐसी कहानी लिखने पर धन्यवाद, जो कहानी हो कर भी हमारे देश के वैज्ञानिकों के शोषण की सचाई को प्रकट करती है.

—कृष्णगोपाल 'बचलस'

✦

अक्तूबर (द्वितीय) अंक पढ़ रहा था कि बाहर गाने एवं ढोलक की आवाज सुनाई दी. कौतूहलवश जब मैं बाहर दरवाजे पर आया तो सामने वाले बंगले में हिजड़े मटकमटक कर नाचगा रहे थे. साथ ही घर के मालिक से रुपए एवं पुराने कपड़ों की फरमाइश भी कर रहे थे.

जैसे ही गाना समाप्त हुआ कि एक हिजड़े की नजर मेरे हाथ में पकड़ी 'मुक्ता' पर गई. वह झटपट मेरी तरफ आया और झपट्टा मारते हुए मेरे हाथ से मुक्ता छीन ली. मैं ने कहा, "अरे, अभी

मुक्ता—सरिता के स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता, सरिता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने रोचक अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजते समय स्पष्ट और सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. साथ ही यह भी लिख कर भेजें कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है. भेजी गई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में होनी चाहिए.

तो मैं ने ही
लूंगा तो तु
इस प
जी, कभी
लोगों की त
सभी पत्रिक
गंदी चालों
मुझ से इस
यह क
हुए 21 रुप
मेरी तरफ
पूरे रुपए
वापस नहीं

सितंबर
शित 'सरक
(लेख : वि

वासुदे
इस अंक
'समझौता
सिंधु 'भार
के रहने व
के साथ ही
मंच में भी

तो मैं ने ही इसे नहीं पढ़ा है. जब मैं पढ़ लूंगा तो तुम इसे मुफ्त में ले जाना."

इस पर उस हिजड़े ने कहा, "बाबूजी, कभीकभी तो कोई पत्रिका हम लोगों की तरफ ध्यान देती है, वरना तो सभी पत्रिकाएं सिनेमा एवं राजनीति की गंदी चालों में ही जकड़ी रहती हैं. आप मुझ से इस की कीमत ले लीजिएगा."

यह कहते हुए उस ने इनाम में मिले हुए 21 रुपए में से पांच रुपए का नोट मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा, "आप ये पूरे रुपए रख लो, लेकिन मैं मुक्ता वापस नहीं दूंगा."

—कमलेशकुमार श्रीवास्तव

✦

सितंबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'सरकारी डाक्टरों की हड़ताल' (लेख : विशेष प्रतिनिधि) में एक गंभीर समस्या को प्रस्तुत किया गया है.

हड़ताल करने से भले ही इन डाक्टरों, नर्सों व अन्य कर्मचारियों की मांगें पूरी हो जाती हों, पर कोई उन से पूछे कि उन के ऐसा करने से मरीजों पर जो गुजरती है, उस का अंदाजा भी उन्होंने कभी लगाया है?

आज से चारपांच वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश के एक महानगर में एक भद्र नेताजी के नेतृत्व में सरकारी हस्पताल में स्टाफ की नर्सों ने जो हड़ताल की थी, उस के फलस्वरूप जिन विवाहिताओं को अपना सुहाग खोना पड़ा था, जिन मांओं के लाल लुट गए थे और जिन बहनों की लाज के पहरेदार चले गए थे, क्या उन नर्सों ने इन निरीह आंखों में तैरती पीड़ा को पढ़ने की कोशिश की थी?

—राधा गुप्ता

मुक्ता के लेखक

वासुदेव सिंधु 'भारती'

इस अंक में प्रकाशित लघुकथा 'समझौता' के रचयिता वासुदेव सिंधु 'भारती' जयपुर (राजस्थान) के रहने वाले हैं. कहानियां लिखने के साथ ही रेडियो रूपक तथा रंगमंच में भी आप की विशेष रुचि है.
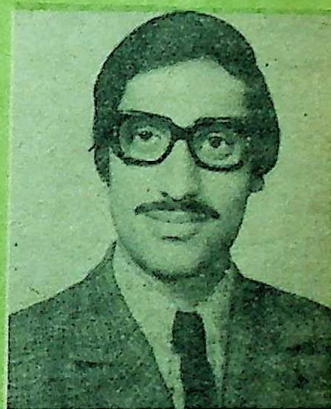
प्रेमचंद्र स्वर्णकार

प्रस्तुत अंक में प्रकाशित लेख 'फिल्मी अफसाने : बास के ठिकाने' के लेखक प्रेमचंद्र स्वर्णकार दमोह (मध्य प्रदेश) के निवासी हैं. आप प्रायः सभी विषयों पर व्यंगात्मक शैली में रचनाएं लिखते हैं.

मुक्त विचार

पुलिस की वकालत

भागलपुर जेल में अपराधियों को निर्दयता व निर्ममता से अंधे किए जाने की घटनाओं पर अगर किसी ने वास्तविक प्रतिक्रिया प्रकट की है तो वह हैं बिहार के मुख्य मंत्री श्री जगन्नाथ मिश्र. बाकी लोग तो उन घटनाओं पर केवल घड़ियाली आंसू ही बहाते रहे हैं. श्री मिश्र के कहने का अभिप्राय यह है कि अगर ऐसा हुआ तो क्या हुआ, जनता आखिर चाहती ही यह है.

दिल्ली में एक पत्रकार सम्मेलन में उन्होंने कहा कि यदि पुलिस वाले अमानुषिक व्यवहार कर रहे थे तो वे जज क्या कर रहे थे, जिन के सामने अंधे किए गए अपराधियों को प्रस्तुत किया गया? विरोधी दल वाले क्या कर रहे थे? डाक्टर क्या कर रहे थे? क्यों नहीं उन सब ने शोर मचाया? क्यों नहीं इस मामले को हाल के चुनावों में मुद्दा बनाया गया?

श्री जगन्नाथ मिश्र का कहना है कि बिहार की जनता ही यह चाहती है कि अपराधियों से इस तरह व्यवहार किया जाए कि वे दोबारा कोई भी अपराध करने की सोच ही न सकें.

श्री मिश्र यह भी कहते हैं कि यदि पुलिस ऐसा न करे तो जनता ही ऐसा कर देगी. फिर आप किसकिस को पकड़ते फिरेंगे?

अपनी और पुलिस की सफाई में उन्होंने जो भी कहा है वह यह अवश्य साबित करता है कि धर्मभीरू और अत्यंत पिछड़ा राज्य बिहार अभी भी मानसिक गुलामी की जकड़ से छूटा नहीं है. वहां पुलिस और राजनीतिबाज दोनों एकदूसरे के साथ मिल कर जनता पर इस कदर निरंकुश शासन करना चाहते हैं कि कोई व्यक्ति उन पर आंख न उठा सके. पुलिस अपना दबदबा कायम रखने के लिए यह सब करती है और सत्तारूढ़ राजनीतिबाज पुलिस की सेवा के बदले उसे खुली छूट देता है.

यही वजह है कि 1977 के बाद जेलों में सड़ने का अनुभव होने के बावजूद आज के विरोधी दलों के सदस्यों ने सत्ता में होते हुए भी पुलिस को छेड़ने की हिम्मत नहीं की.

जनता पार्टी के शासनकाल के दौरान ही गुनाह साबित हुए बिना सजा काट रहे हजारों बंदियों का मामला सामने आया था. तब जनता सरकार ने

मुक्ता के पाठकों को नववर्ष की शुभकामनाएं

भी उन बंदियों को छोड़ने में उतनी ही हीलहुज्जत दिखाई थी जितनी श्री मिश्र अब पुलिस को अपराधी ठहराने में दिखा रहे हैं.

हमारे धर्मग्रंथों ने हमारे देश के निवासियों के मस्तिष्क इस कदर गुलामी की भावना से भर दिए हैं कि वे अपने ऊपर होने वाले हर अत्याचार को पिछले जनम के कर्मों का फल मान कर चुप हो जाते हैं.

बेहद उपजाऊ जमीन में रह कर भी बिहारी सब से गरीब इसी लिए हैं कि भूख, अत्याचार, गंदगी, पिछड़ेपन आदि के लिए वे भाग्य को दोष दे कर हाथ पर हाथ रख कर बैठे रह जाते हैं.

आंखें फोड़ने का मामला सारे विश्व में चर्चित हो चुका है, पर बिहारी मनोवृत्ति ऐसी है कि अपराधी पुलिस अधिकारियों का बाल भी बांका न होगा. जब पत्रकार, जज और प्रदेश के मुख्य मंत्री तक पुलिस के साथ हैं तो कोई क्या कर सकता है?

अखिल इंदिरा कांग्रेस अधिवेशन

दिसंबर के पहले सप्ताह में हुए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (इं.) के अधिवेशन की सब से महत्वपूर्ण बात यही है कि वहां उपस्थित सभी कांग्रेसियों ने एक मत से यह स्वीकारा है कि वे अखिल इंदिरा कमेटी के सदस्यों से ज्यादा कुछ नहीं हैं.

अधिवेशन में दिए गए भाषणों और उस में स्वीकृत प्रस्तावों से साफ जाहिर है कि कोई भी सदस्य कोई भी नई बात न कहने को तैयार है, न सुनने को. जो कुछ कहा गया वह मात्र श्रीमती इंदिरा गांधी की प्रतिध्वनि था.

सत्तारूढ़ दल के ऐसे अधिवेशन सत्तारूढ़ राजनीतिबाजों पर दल का नियंत्रण रखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं. सत्ता में आते ही राजनीतिबाज सरकार का अंग हो जाता है और वह देश, जनता या मतदाता के हित की बात नहीं, सरकार व सरकारी कर्मचारी के हित की बात सोचने लगता है. दल के अधिवेशन उसे बीचबीच में उस के इस कर्त्तव्य की याद दिलाते हैं कि उस का काम जनता के हित में सरकार चलाना है न कि सरकार के हित में.

इसी लिए ऐसे अधिवेशनों में सरकारी नीति पर विवाद, किए गए कामों की आलोचना व नए सुझावों की अपेक्षा की जाती है. दल के जो लोग सरकार से बाहर होते हैं वे सत्तारूढ़ नेताओं को सरकार की कमियों और जनता की मांगों के बारे में बताते हैं.

इस अधिवेशन में ऐसा कुछ नहीं हुआ. यहां तो मात्र श्रीमती इंदिरा गांधी का गुणगान हुआ और सरकार के हर काम पर स्वीकृति की मुहर लगाई गई. यही लोकतंत्र के लिए सब से अधिक गंभीर बात है.

जब दल के अंदर लोकतंत्र की भावना ही न रहे तभी दल का नेता निरंकुश होने लगता है. उसे विश्वास हो जाता है कि अपने गुलाम दल की सहायता से ही वह पूरे देश को गुलाम बना सकेगा.

यह देश के ही नहीं, हर कांग्रेसी कार्यकर्त्ता के भी हित में है कि वह नेताओं को इस तरह लोकतंत्र की हत्या न करने दे. इस से उन के अपने दल के कर्मठ कार्यकर्ताओं को भी नुकसान होगा और जनता को भी.

रूस की नई चाल

सोवियत राष्ट्रपति लियोनिद ब्रेझनेव ने संसद के सामने बोलते हुए खाड़ी के क्षेत्र की शांति के लिए एक नया सिद्धांत प्रस्तुत किया है. उन्होंने कहा है कि खाड़ी के देशों में कोई भी देश किसी तरह के अड्डे न बनाए और वहां अणु

हथियार न रखे, बाहर के देश इस क्षेत्र के देशों के मामलों में दखलअंदाजी और ताकत का इस्तेमाल न करें.

ईरान, इराक, अफगानिस्तान, सीरिया व जोर्डन की अस्थिरता को ध्यान में रख कर बनाया गया यह सिद्धांत अन्य रूसी बातों की तरह ऊपर से तो बहुत उचित व सामान्य लगता है पर इस के पीछे भी रूस की चाल है.

रूस के पास अपना तेल भंडार समाप्त होता जा रहा है. साइबेरिया स्थित उस के कुएं सूख रहे हैं और अब उसे बाहर से तेल खरीदने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है. तेल बाहर से थोड़े से देशों से ही खरीदा जा सकता है जिन में खाड़ी के देश मुख्य हैं.

खाड़ी के देश बदले में या तो अच्छा सामान मांगते हैं या सोना. रूस के पास दोनों की ही कमी है. ऊपर से खाड़ी के देशों के मुख्य ग्राहक और तकनीकी जानकारी देने वाले भी पश्चिमी देश ही हैं.

रूस इन पश्चिमी देशों को आर्थिक दृष्टि से तो भगा नहीं सकता, इसलिए अब उस की इच्छा इस क्षेत्र पर सैनिक अधिकार करने की है.

यह सिद्धांत, जिस पर रूस श्रीमती इंदिरा गांधी की स्वीकृति की मुहर लगवाना चाहता है, इसी उद्देश्य को ले कर है. यदि पश्चिमी देश इस खाड़ी में अपने सैनिक नहीं रखेंगे तो यह क्षेत्र रूस को खुली दावत देने वाला क्षेत्र बन जाएगा.

रूसी सीमा खाड़ी से सिर्फ लगभग 1,300 किलोमीटर दूर है, जब कि अमरीका और अन्य यूरोपीय देश हजारों मील दूर हैं.

पिछले 25 वर्षों में रूस जब भी, जहां भी सेना ले कर घुसा है, वहीं का हो कर रह गया है. एक बार जो रूसी कम्यूनिज्म के चंगुल में आया वह निकल नहीं सका.

वाले संसार को आज यदि किसी से खतरा है तो वह रूस ही है. अब इस सिद्धांत की आड़ में खाड़ी के देशों के लिए भी खतरा पैदा हो रहा है.

यह गनीमत है कि श्रीमती इंदिरा गांधी ने रूसी सिद्धांत का समर्थन नहीं किया है.

सरकारी क्षेत्र के वैज्ञानिक

सरकारी क्षेत्र के वैज्ञानिकों के साथ क्या होता है, इस का अच्छा उदाहरण बंबई स्थित भाभा अणु शोध केंद्र में हुई घटनाओं से मिल सकता है.

यह केंद्र परमाणु तकनीक विकसित करने का एक मुख्य संस्थान है, जिस पर करदाताओं का करोड़ों रुपया लगा हुआ है. इस केंद्र की थोड़ीबहुत उपलब्धियां अवश्य हैं पर उन में से शायद ही किसी उपलब्धि का आज देश को नाममात्र भी लाभ हो रहा है.

यहां विदेशी शोधों के आधार पर अनुसंधान किए जाते हैं और जिन नई खोजों का श्रेय लिया भी जाता है, वे आम तौर पर अलमारियों में ही बंद रहती हैं.

चूंकि इन के काम का मूल्यांकन करना असंभव है, इसलिए यहां के वैज्ञानिक व अधिकारी अपना अधिकांश समय एकदूसरे से झगड़ने में लगाते हैं. संसार भर में वैज्ञानिक आम तौर पर यूनियनबाजी से दूर रहते हैं, क्योंकि वे अपना सारा समय प्रयोगशाला में लगाना चाहते हैं. किंतु यहां के वैज्ञानिकों ने अपनी यूनियन बना ली है जिस की बैठकों में वे अधिकारियों के खिलाफ प्रस्ताव पास करते रहते हैं. अधिकारी चूंकि नहीं चाहते कि बाहर के व्यक्ति इस तरह के विवादों का लाभ उठा कर दखलअंदाजी करें, इसलिए वे इन वैज्ञानिकों को सबक सिखाने के उद्देश्य से उन्हें किसी न किसी रूप में परेशान करते हैं.

यही वजह है कि अब इस केंद्र की उपलब्धियों के नहीं झगड़ों के समाचार प्रकाशित होते हैं.

वैज्ञानिकों को प्रोत्साहन देने के नाम पर सरकार ने जितने संस्थान बना रखे हैं, उन सब में अब यही हाल है. जो वैज्ञानिक योग्य होते हैं वे तो जल्दी ही देश छोड़ कर अमरीका या यूरोप चले जाते हैं, जहां उन की मेहनत का सही मूल्यांकन होता है, बाकी यहीं पर सरकारी दान से मौज उड़ा रहे हैं.

अब समय आ गया है कि सरकार वैज्ञानिक शोध पर कम ध्यान दे और उस पर होने वाले खर्च से एक चौथाई दाम से तकनीकें ही खरीद ले. सरकारी अफसर या राजनीतिबाज शोध संस्थानों को कभी नहीं चला सकते.

शराब पीने की खुली छूट

भारत में जहां नशाबंदी को लोक मान्यता मिली हुई है, शराब पीना अनैतिक कार्य समझा जाता है, वहां श्रीमती इंदिरा गांधी की सरकार ने दोबारा सत्ता में आते ही शराब पीने की खुली छूट दे दी है. उधर पश्चिमी देशों में, जहां शराब सामाजिक व्यवहार का अभिन्न अंग है, सरकारें शराबबंदी लागू करने की कोशिशें कर रही हैं.

स्वीडन यूरोप का सुदूर उत्तरी देश है जहां बहुत अधिक ठंड पड़ती है और कई महीने सारा देश बर्फ से ढका रहता है. उस देश ने अब नशे के विरुद्ध जेहाद छेड़ा है.

नोबेल पुरस्कार दिए जाने के बाद भोज में शैंपेन जैसी शराब देना वहां का पुराना रिवाज है, पर कड़ाके की ठंड के बावजूद इस वर्ष वहां शराब नहीं दी गई. इसी तरह फ्रांस सरकार ने भी शराब की खपत पर बहुत से प्रतिबंध लगाने शुरू कर दिए हैं.

क्या हम उन देशों में खुली शराब की बिक्री से होने वाली खराबियों से कुछ नहीं सीख सकते.

धर्मभीरू प्रवासी सिख

इंगलैंड में रह रहे सिखों का किसी सरकारी अथवा गैरसरकारी संस्थान से केश व पगड़ी को लेकर झगड़ा खड़ा होता रहता है. पहले स्कूटर या मोटरसाइकिल चलाते समय हैलमेट पहनने पर काफी विवाद हुआ था. वहां की पुलिस सब को हैलमेट पहनने पर बाध्य कर रही थी, पर सिख चूंकि केश और पगड़ी के प्रति बहुत धार्मिक विचारों के हैं, वे इस नियम को मानने से इनकार कर रहे थे. धीरेधीरे सिखों की यह मांग मान ली गई है.

कुछ स्कूल भी सिख बच्चों द्वारा नियमित ड्रेस में हैट के स्थान पर पगड़ी पहनने को अनुशासनहीनता मान रहे हैं. एक स्कूल ने जब एक सिख लड़के को इस आधार पर स्कूल से निकाल ही दिया तो यह मामला जातिभेद संबंधी कानून के अंतर्गत अदालत में ले जाया गया.

अदालत ने निर्णय दिया है कि पगड़ी पहनने पर जातिभेद का सवाल नहीं आता. यह तो महज नियमित ड्रेस संबंधी नियमों की अवहेलना है और यदि कोई नियमित ड्रेस नहीं पहनता तो स्कूल अधिकारी उसे स्कूल से निकालने का निर्णय ले सकते हैं.

यह है भी सही. सिख बच्चे अंगरेजों के स्कूल में जाएं ही क्यों? वहां जा कर उन्हें अंगरेजी पढ़नी होगी, अंगरेजी खाना खाना होगा, अंगरेजी तौरतरीके सीखने होंगे.

इंगलैंड में रह रहे सिखों को तो अपने स्कूल अलग खोलने चाहिए, जहां पढ़ाई धार्मिक हो, गुरुद्वारा जाना सिखाया जाए और ठेठ पंजाब के तौरतरीके सिखाए जाएं ताकि धर्म और संस्कृति दोनों बरकरार रहें.

माओ की पत्नी ज्यांग किंग और उस के सहयोगियों को क्या अपनी कारगुजारियों की वजह से ही कैदी के रूप में अंधकारपूर्ण जीवन जीना पड़ रहा है?

चांडाल चौकड़ी की सरगना

लेख • बी. क. कुमार

अभी हाल ही में चीनी अखबारों ने सूचना दी है कि माओ त्से तुंग की विधवा पत्नी और चांडाल चौकड़ी की सरगना ज्यांग किंग (च्यांग चिंग) पर मुकदमा शुरू हो गया.

अगस्त 1980 के वाशिंगटन पोस्ट में माओ की पत्नी के संबंध में चीन के सर्वाधिक शक्तिशाली व्यक्ति देंग कश्याओ पिंग के इस वक्तव्य ने कि वह एक दुष्टात्मा है. इतनी बड़ी दुष्टात्मा कि उस की दृष्टि में कोई भी दुष्टतापूर्ण बात दुष्टता नहीं मानी जा सकती, उस के मुकद्दर का फैसला कर दिया लगता है. भूतपूर्व प्रधान मंत्री हुआ गुआ फेंग ने भी अपने एक वक्तव्य में कहा है कि ज्यांग की कारगुजारियों के लिए उसे अगर फांसी की सजा नहीं तो कम से कम उम्रकैद की सजा तो हो ही सकती है.

29 सितंबर, 1963 को पहली बार श्रीमती माओ का चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी की प्रथम महिला के रूप में उदय हुआ

ज्यांग किंग के लिए रास्ता साफ करने में लगे लोगों का क्या यही हश्र होगा?

था. यह मौका था इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णी और उन की पत्नी के स्वागत समारोह का. 30 सितंबर को पीपल्स हेली में इस स्वागत समारोह का जो चित्र छपा उस में पाजामा सूट पहने एक मुसकराती महिला के रूप में बाहरी दुनिया ने उन्हें देखा. यह चित्र कला और अभिनय के क्षेत्र में उन के कूदने की संभावना का एक पूर्वाभास भी था, जिस पर गतिरोध डालने का दोष तत्कालीन सुरक्षा मंत्री वेंग देह हुआई और उन की मंडली पर लगाया गया था, जो उन दिनों माओ विरोधी के रूप में बदनाम थे.

1964 में ज्यांग किंग तृतीय राष्ट्रीय जन कांग्रेस की डिप्टी चुनी गईं. यह चुनाव उन्होंने अपने जन्मस्थान के प्रदेश शंघाई से लड़ा. यह उन के राजनीतिक जीवन की सफलता के मधुपान का पहला अवसर था. 1963 से 1966 तक उन की गतिविधियां उत्तरोत्तर बढ़ती गईं और उन्होंने चीन के साहित्य, कला, अभिनय के क्षेत्र में माओवादी अभियान का नेतृत्व किया. इस काल में प्राचीन को नष्टभ्रष्ट कर सब कुछ नया बनाने की माओवादी रेडगार्डों की विध्वंस लीला के नेतृत्व का श्रेय ज्यांग किंग को ही जाता है.

अगस्त 1966 में सांस्कृतिक क्रांति की विधिवत घोषणा से पहले बाहरी दुनिया को माओ की इस अंतिम पत्नी ज्यांग किंग के बारे में कुछ भी पता नहीं था. लेकिन जब उन का नाम समाचार-पत्रों में पहली बार प्रकट हुआ, दांग ना को भाग कर दक्षिण अमरीका में शरण लेनी पड़ी. दांग ना ने 1935 में ज्यांग किंग से शादी की थी. वह उस समय पेरिस में एक रेस्तोरां चला रहा था. किसी जमाने में चीनी फिल्म जगत की

मलिका ज्यांग किंग से अपने संबंधों पर पूछे गए प्रश्नों की पीड़ा से बचने के लिए उसे पेरिस से भागना पड़ा.

शंघाई की एक प्रख्यात फिल्म अभिनेत्री के रूप में ज्यांग किंग का नाम लान पिंग के रूप में प्रसिद्ध था. उस समय 'बिग थंडर स्टार्म' में कोई भूमिका प्राप्त करने के लिए उस का सर्वप्रथम संपर्क

माओ : ज्यांग किंग को अंकशायिनी ही नहीं अपने बच्चों की मां भी बनाया, पर उसे पत्नी के रूप में स्वीकारने में हिचकिचाते रहे.

चीनी फिल्म अभिनेता चांग मिन से हुआ. उस समय लान पिंग के प्यार को जीतने में असफल होने के कारण दांग ना ने आत्महत्या तक का प्रयास किया था. यह कहानी चीन के कई समाचारपत्रों में प्रकाशित हुई थी, जिस में दांग ना के नाम का उल्लेख किए बिना उसे लान पिंग के प्यार का दीवाना बताया गया था. लेकिन इस से लान पिंग को खूब प्रचार मिला. इसलिए करीब 30 वर्षों के पश्चात जब लान पिंग ... [illegible] ... प्रेम प्रसंग [illegible] था, वह अपने आप को बदनाम कर के उस के नाम को पुनः प्रचारित करने का मौका प्रेस को नहीं देना चाहता था. इसलिए वह परदे से गायब हो गया.

माओ के साथ ज्यांग जनता के सामने

लेकिन उस से कोई फर्क नहीं पड़ा. बाहरी दुनिया ने सर्वप्रथम 18 अगस्त, 1966 को पीकिंग में तिएन ऐन मेन स्थान पर सांस्कृतिक क्रांति के श्रीगणेश के लिए आयोजित विशाल रैली सभा में, जिस में लिन प्याओ, चाऊ एन लाई तथा अन्य लोग उपस्थित थे, माओ के साथ ज्यांग किंग को देखा. 31 अगस्त को उसी स्थान पर दूसरी रैली हुई. इस में ज्यांग किंग चीन की जनमुक्ति सेना की वेशभूषा में चश्मा लगाए हुए, प्रौढ़ा गृहिणी के रूप में उस मंच पर आरूढ़ हुई जो अब तक कम्यूनिस्ट पार्टी की कतिपय हस्तियों के लिए ही सुरक्षित रहता था. अगले दिन दल की केंद्रीय समिति के अंतर्गत गठित नए सांकृतिक क्रांति मंडल की प्रथम उपप्रमुख की उपाधि से वह विभूषित हो रही थीं.

इस प्रकार एक अल्प परिचित अभिनेत्री से उठ कर 70 करोड़ चीनी लोगों के अधिष्ठाता की पत्नी और फिर सांस्कृतिक क्रांति का वास्तविक रहनुमा बन जाना, पीकिंग आपेरा के किसी दृश्य परिवर्तन के समान कम विस्मयकारी नहीं था. जिस की भूमिका इस नाचीज लड़की ने बड़ी मेहनत से निभाई थी.

ज्यांग किंग का जन्म शांटुंग प्रांत के चूनेंग गांव में सन 1914 में एक साधारण परिवार में हुआ था. उस का पिता कुआन संभवत: मध्यवर्गीय किसान था. जब ज्यांग बिलकुल छोटी ही थी लुआन की मृत्यु हो गई. उस की मां शू मिग (जो ज्यांग के बचपन का नाम था) को तिसआन ले कर चली गई, जहां वे ... [illegible] ... जामिंग के साथ

रहने लगीं. वहीं छः वर्ष पश्चात उस ने 13-14 वर्ष की आयु में प्राइमरी स्कूल की परीक्षा पास की. जल्द ही उस की मां भी उसे नाना के पास अकेला छोड़ इस दुनिया से चल बसी.

अभिनय क्षेत्र में रुचि

अब लि युन हो (नाना द्वारा दिया हुआ ज्यांग का दूसरा नाम) जो रंगमंच और अभिनय में गहरी रुचि लेने लगी थी, ने अपने नाना से शांतुंग प्रांत के ताई आन स्थान पर स्थित प्रांतीय नाट्य अकादमी में प्रवेश पाने का आग्रह किया. इस अकादमी में छात्रों को पीकिंग आपेरा और सचो तथा मंदारिन नाटकों का मुफ्त प्रशिक्षण दिया जाता था. यहां नाटकों का मंचन होता था और छात्रों को उस में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था. ज्यांग ने यहां अपनी किसी विशिष्ट प्रतिभा का परिचय नहीं दिया.

ज्यांग ने 1933 में यह अकादमी छोड़ दी और जिंग बाओ विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में नौकरी कर ली. खुद माओ ने भी पीकिंग विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में काम किया था. यहां उस की मुलाकात भूमिगत कम्यूनिस्ट यू जी वई नामक एक तेजतर्रार कुलीन नवयुवक से हुई जो बाद में हुआंग जिग नाम से प्रसिद्ध हुआ और जिस की 1958 में मशीन निर्माण मंत्रालय के प्रथम मंत्री के रूप में मृत्यु हुई. यद्यपि वह यू जी वई

चीन की जनता की मांग : ज्यांग किंग की चांडाल चौकड़ी को उन के किए की सजा अवश्य मिले.
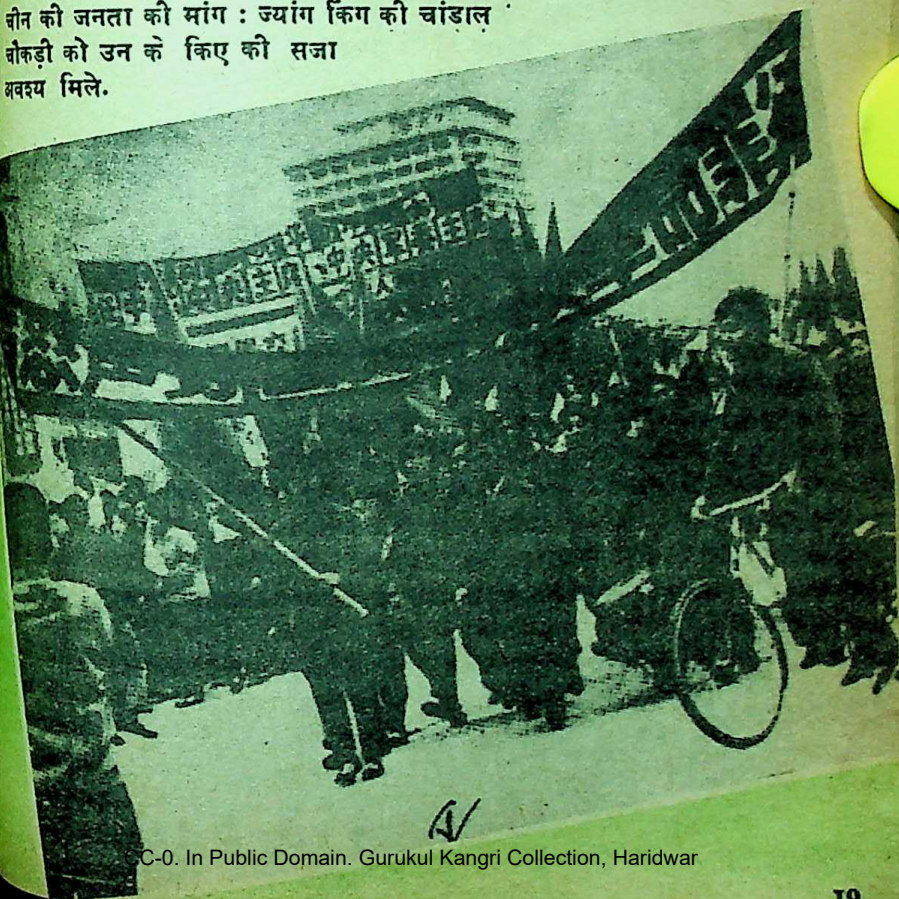
का प्रेम पाने में सफल नहीं हुई पर कम्यूनिज्म से उस का प्रथम परिचय उसी के माध्यम से हुआ.

महत्त्वाकांक्षी फिल्म अभिनेत्री

1934 में वह शंघाई पहुंची. वहां वह लान बिंग नाम से महत्त्वाकांक्षी अभिनेत्री बन गई. उसे फिल्मों में कोई महत्त्वपूर्ण भूमिका तो नहीं मिली, पर पति के रूप में बेचारे दांग ना की प्राप्ति जरूर हुई, जिस से उस का संबंध विच्छेद बहुत जल्द ही हो गया. 1937 में जापान के साथ लड़ाई छिड़ जाने पर वह फिल्म कंपनी द्वारा वुहान भेज दी गई. वहां भी जितनी फिल्में बनीं, उस में उसे कोई खास भूमिका नहीं मिली. वह एक क्षुब्ध और असंतुष्ट युवती बनी रही.

1939 की गरमियों में वह कम्यूनिस्ट छापापारों के गढ़ येनान पहुंची. यह उस के जीवन का एक नया अध्याय था. यहां वह कम्यूनिस्ट गुप्त संगठन के प्रधान कांग शेंग की सिफारिश पर कला और साहित्य के फौजी स्कूल लू जुग्रान संस्थान में अभ्यास निर्देशिका के रूप में दाखिल हुई. शुरू में यहां भी उस ने कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं किया, पर संस्थान के निर्देशक जू ई जिन का विश्वास प्राप्त कर कुछ प्रसिद्धी अवश्य प्राप्त कर ली. उस समय उसे यह पता तक नहीं था कि चीनी कम्यूनिस्टों का हृदय सम्राट माओ वहां से कुछ ही दूरी पर पड़ाव डाले पड़ा था, जिसे वह जल्दी ही अपना प्रेमपात्र बनाने वाली थी. एक ऐसा प्रेमपात्र जिस की संभावना मात्र किसी भी चीनी युवती को रोमांचित कर सकती थी और जो इस शताब्दी की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना हो सकती थी.

1940 के एक दिन सहसा ही माओ कला और साहित्य में दिशा निर्देशन के लिए उस संस्थान में आ पहुंचे. लान बिंग बिलकुल शिष्ट, सुरुचिपूर्ण, दिव्य परिधान धारण कर हाल की उस प्रथम पंक्ति में बैठी हुई थी, जहां माओ को अपना भाषण देना था. माओ के वक्तव्य समाप्त करते ही वह तुरंत उठ खड़ी हुई और माओ पर प्रश्नों की बौछार लगा दी. उस का निशाना ठीक लगा. माओ उस के व्यक्तित्व से हतप्रभ हो गए. माओ उस के प्रभाव को छिपा न सके और उन्होंने खुले आम उस की बौद्धिक तीक्ष्णता और अध्यवसाय की प्रशंसा कर डाली.

ज्यांग माओ की पत्नी बनी

छियालीस वर्ष के माओ अपने शक्ति, सौंदर्य और यौवन के चरमबिंदु का स्पर्श कर रहे थे. लेकिन वह अंदर से एकाकी थे. उन की दूसरी पत्नी हो जू जेन मास्को में अपनी स्नायविक रुग्णता का उपचार करा रही थीं. लान बिंग ने अपने दिल में एक अज्ञात स्पंदन का अनुभव किया, हालांकि इस प्रथम साक्षात्कार में उसे माओ में कोई खासियत नजर नहीं आई. वह अपने प्रियदर्शी प्रेमी के प्रेमपाश में मग्न थी. लेकिन शीघ्र ही शू ने उसे धोखा दिया. उस ने अभी हाल ही में संस्थान में प्रवेश करने वाली एक अन्य रूपवती सुन वाई शिह के प्रेम में फंस कर ज्यांग से संबंध तोड़ लिए और अंततोगत्वा सुन से शादी कर ली.

क्षुब्ध लान जाओ यूग्रान का चक्कर लगाने लगी, जहां उस के आराध्यदेव माओ ने उसे अपने बाहुपाश में आबद्ध करने में देर नहीं की. अंत में एक ऐसी रात आई जब लान संस्थान नहीं लौटी. उस ने वह रात माओ की लांग मार्च की गुफा में बिताई. दूसरे ही दिन येनान में 'माओ की नई पत्नी' की अफवाह जंगल की आग की तरह फैल गई. संस्थान के अधिकारियों ने लान को संस्थान में रहने की इजाजत नहीं दी. संभवतः माओ के ही आदेश पर केंद्रीय सैनिक आयोग के लिए पूरा अभिलेखागार की देखभाल के लिए

का तबादला चुपके से कर दिया
गया. इसी समय उसे कम्यूनिस्ट पार्टी
का विधिवत सदस्य बनने का मौका
मिला. यहीं लान विंग को ज्यांग किंग
नाम मिला, एक ऐसा नाम जो माग्रो
ने गुड़िया सी प्यारी ज्यांग को दे डाला.

1940 के हेमंत तक माग्रो और
ज्यांग का सहवास सब की जबान का
विषय बन गया था. कम्यूनिस्ट पार्टी
द्वारा अपनी तीसरी शादी के विरोध के
कारण से माग्रो ने कभी सार्वजनिक रूप से
त्याग से अपनी शादी की घोषणा नहीं
की. लेकिन ज्यांग के ढीलेढाले परिधान
से झांकता हुआ उस के शरीर का आकार
जैसेजैसे बढ़ता गया, ज्यांग से उन के
संबंधों की जनश्रुति भी चरमबिंदु पर
पहुंचती गई.

ज्यांग-माग्रो के संबंधों का रहस्योद्घाटन

ज्यांग उलझन में थी. इस उलझन
से छूटने का एक ही उपाय था. एक
दिन पार्टी के उच्चाधिकारियों की बैठक
में वह चुपचाप घुस गई और माग्रो की
उपस्थिति में ही उन से अपने संबंधों की
घोषणा कर दी. इस घोषणा से उस बैठक
में हलचल मच गई. माग्रो कठोर मुद्रा
में बैठे रहे. लेकिन इस रहस्योद्घाटन से
माग्रो द्वारा उत्पन्न ज्यांग की संतान लि
ना को सामाजिक स्वीकृति मिल गई.
तत्पश्चात ज्यांग ने माग्रो से एक दूसरी
पुत्री को भी जन्म दिया, जिस का नाम
माग्रो माग्रो रखा गया.

इस का कोई प्रमाण नहीं मिलता
कि माग्रो ने ज्यांग से विधिवत शादी की
थी. उस समय माग्रो के अत्यंत विश्वास-
पात्र सहयोगियों तक ने एक ऐसी अभि-
नेत्री से माग्रो की शादी को पसंद नहीं
किया, जिसे वे अपनी आंखों से फिल्म के
परदे पर फिल्मी अभिनेताओं की अंक-
शायिनी के रूप में देख रहे थे. उन्होंने
इसलिए भी इसे नापसंद किया क्योंकि वे
माग्रो की दूसरी पत्नी हो जे जेन जो
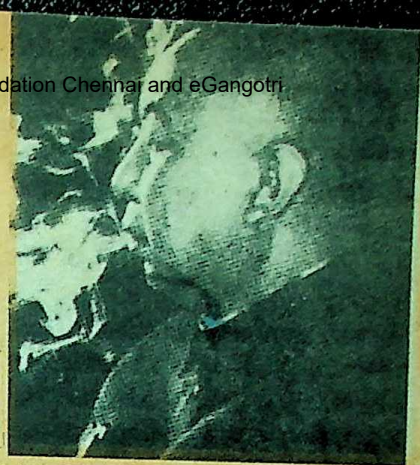
हुआ गुआ फंग : ज्यांग की कार-गुजारियों के लिए उसे अगर फांसी नहीं तो कम से कम उम्रकैद की सजा तो हो ही सकती है.

माग्रो के प्रति अत्यंत पतिपरायण थी
और जिस ने लांग मार्च के अत्यंत खतर-
नाक वक्त में भी माग्रो का साथ नहीं
छोड़ा था, बहुत ही संवेदनशील तथा
सहिष्णु थे.

उन्हें यह भी अच्छा नहीं लग रहा
था कि उन के करोड़ों गरीब मजदूर
किसानों के पैगंबर माग्रो के कंधे से कंधा
लगा कर वह बेहद भड़कीले परिधानों में
सार्वजनिक अवसरों पर खड़ी हो. इस से
उन की भावनाओं को ठेस लगती थी
और इस से पार्टी की प्रतिष्ठा भी धूमिल
हो रही थी. अतः माग्रो को अपनी पार्टी
की इच्छाओं के सामने झुकना पड़ा.
ज्यांग का बनावशृंगार छूट गया. यद्यपि
यह मानने का कोई कारण नहीं कि
ज्यांग ने माग्रो के अनुशासित कठोर चुनौ-
तीपूर्ण जीवन की सहभागी बनने में कभी
कोई हिचक दिखाई, लेकिन उन्हें पार्टी
की ओर से श्रीमती माग्रो कहलाने का
अधिकार 1949 में कम्यूनिस्ट आधिपत्य
स्थापित हो जाने के पश्चात ही मिला.

ज्यांग के लिए हमेशा परदे के पीछे
पड़े रहना और कम्यूनिस्ट पार्टी के सत्ता-
धारियों में अपने लिए कोई जगह न
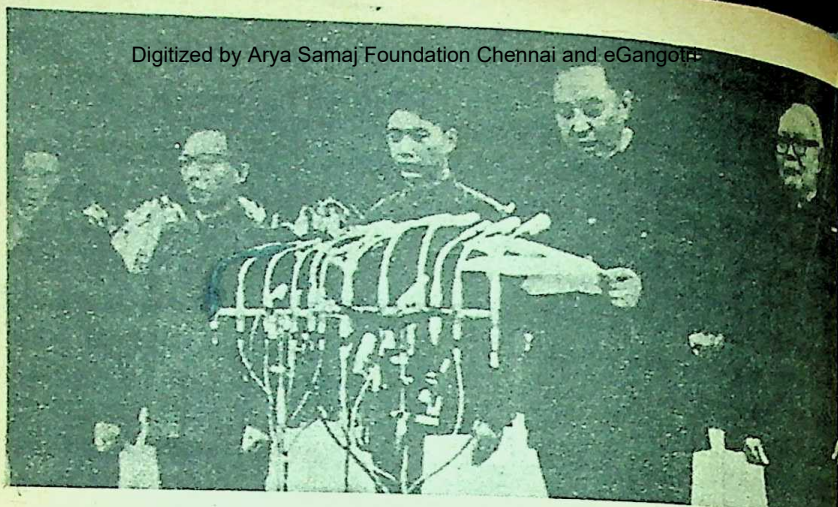
ज्यांग किंग (दाएं) माओ समर्थकों के साथ माओवादी विचारों के प्रचार में संलग्न पर इस के पुरस्कार के रूप में क्या कभी कैद की कल्पना भी की थी?

बनाना जैसा कि अन्य प्रख्यात नेताओं की पत्नियों ने बना लिया था, बड़ा मुशकिल था. इसलिए कम्यूनिस्ट आधिपत्य से पहले 1948 में ही पार्टी की केंद्रीय समिति के प्रचार विभाग के फिल्म ब्यूरो में सेंट्रल कामरेड की प्रतिष्ठा प्राप्त कर इस दिशा में उन्होंने पहल शुरू कर दी थी और फिल्म व्यवसाय के नेतृत्व में उन्होंने अन्य नेताओं के साथ साझेदारी हासिल कर ली थी. 1949 में पुनर्गठित फिल्म ब्यूरो के निर्देशक यूआन यू जिह ने जब ज्यांग की शक्ति और प्रभाव को क्षीण करना चाहा तो उन्हें इस गुस्ताखी का मजा पांच साल बाद चखना पड़ा.

जुलाई, 1948 में सभी साहित्य और कला कर्मियों को पार्टी की केंद्रीय समिति के प्रचार विभाग के सीधे नेतृत्व में लाने के लिए संपूर्ण चीन की साहित्य और कलामंडलियों के संघ की स्थापना के लिए एक बैठक बुलाई गई. इस की तैयारी समिति के प्रमुख सदस्य गुओ मो जो, माओ दुन, लो यांग, डिंग लिंग, यूआन यू जिह और यू लिंग जैसे साहित्यकार थे. इस की बैठक में ज्यांग को प्रतिनिधि के रूप में भी आमंत्रित नहीं किया गया. ज्यांग के लिए यह अपमान असहनीय था. परिणामस्वरूप 1966 की सांस्कृतिक क्रांति के दौरान इस अपमान के लिए जिम्मेदार लोगों से बदला लेने का पूरापूरा लाभ उठाया. संघ में कला तथा साहित्य से संबद्ध सभी लोगों की सफाई कर दी गई और पार्टी प्रचार विभाग तथा संस्कृति मंत्रालय के सत्ता अविक्रम को पूरी तरह बदल दिया गया.

चांडाल चौकड़ी का ह्रास

परंतु सातवें दशक में उन अजदहों की सारी आकांक्षाएं मिट्टी में मिल गईं जो बड़े तत्परतापूर्ण ढंग से ज्यांग का रास्ता साफ कर रहे थे. खासकर सितंबर 1976 में माओ की मृत्यु के बाद तो न केवल उन का भविष्य ही अंधकारमय हो गया, अपितु सांस्कृतिक क्रांति के दौरान तूफान बरपा करने वाली चांडाल चौकड़ी की सरगना के रूप में ज्यांग की सार्वजनिक निंदा भी की गई और उसे अनिश्चितकाल के लिए कैद में डाल दिया गया, जहां माओवादी आकांक्षाओं के अनचाहे पुरस्कार के रूप में शायद उसे जीवन भर कैद की सजा भुगतनी पड़े. ●

प्रेमचंद की अधिकांश रचनाएं सामाजिक कुरीतियों और पंडे-पुजारियों के पाखंडों को ललकारती हैं. इसी लिए उन्हें हिंदूद्रोही तक कहा गया था. उन पर यह आरोप लगाना क्या उसी मानसिकता का सबूत नहीं है जिसे उन्होंने अपने लेखन में बारबार दुत्कारा है?
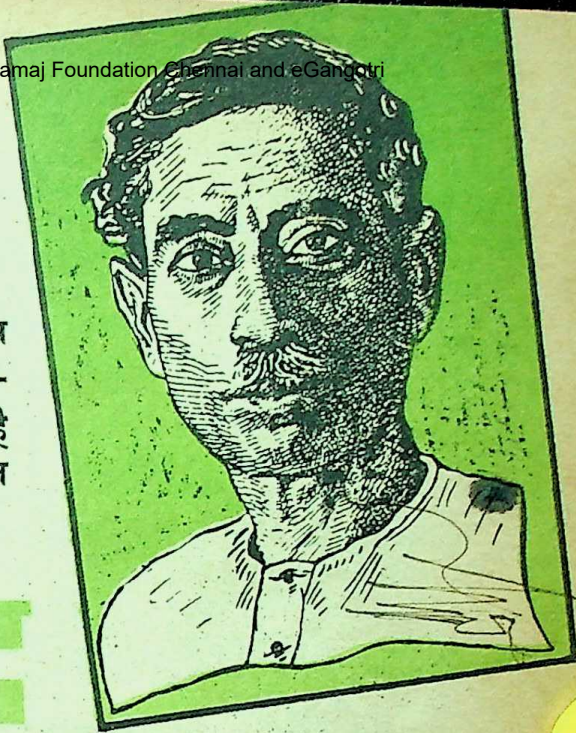
प्रेमचंद और हिंदू समाज

लेख • सैन्नी अशेष

सच्चा लेखक जमाने को पारंपरिक झुनझुनों से नहीं बहलाता. वह दुनिया से लड़ कर सर्वसाधारण के हित में अपने विचार प्रकट करता है. प्रेमचंद इस के उदाहरण हैं.

मनुष्य जीवन की समस्याओं से दूर, तिलस्मी उड़न खटोलों की कहानियों को प्रेमचंद की कलम ने और बड़ी खूबी के साथ विस्मृत करवा दिया. यह बात नहीं है कि तिलस्मी साहित्य का भ्रम तोड़ने के लिए सिर्फ प्रेमचंद ही आगे आए. लेकिन इस में प्रेमचंद का योगदान बड़ा महत्वपूर्ण और विस्तृत रहा है. प्रेमचंद की रचनाओं में उन के अपने पूर्वाग्रहों और कुछ रूढ़िवादिता के भी दर्शन होते हैं (उदाहरण के लिए 'नागपूजा' आदि कहानियां), पर साथ ही उन की नई दृष्टि और स्वस्थ दृष्टिकोण की शुरुआत भी वहीं से हो जाती है. धीरेधीरे प्रेमचंद ठोस धरती पर, जनमानस के बीच पूरी तरह आ पहुंचते हैं. इसी की परिणति है 'कफन' और 'गोदान' का सृजन.

यह कहना भी ठीक नहीं है कि प्रेमचंद ने किसान के विडंबनापूर्ण जीवन पर ही लिखा. उन का पूरा साहित्य विविध विषयों और विभिन्न स्थलों को छूता दिखाई देता है. चूंकि प्रेमचंद की परिपक्वता 'कफन' और 'गोदान' आदि में जा कर चरम बिंदु पर पहुंचती जान पड़ती है और इन्हीं रचनाओं को अधिकांश

हम व्यर्थ का भार अपने ऊपर लाद कर रूढ़ियों, विश्वासों के मलबे के नीचे दबे पड़े हैं. और यह जो ईश्वर और मोक्ष का चक्कर है, इस पर मुझे हंसी आती है. वह मोक्ष और उपासना अहंकार की पराकाष्ठा है.

पाठक पढ़ पाते हैं, अतः प्रेमचंद को मात्र कृषकवर्ग का साहित्य प्रतिनिधि मानना एक 'जरूरत' सी बन जाती है. प्रेमचंद के अन्य उपन्यासों और कथाओं को बाद में पढ़ने पर भी यह धारणा बहुधा कायम रहती है. प्रेमचंद कुछ और जीवित रहते तो 'मंगलसूत्र' (अधूरा उपन्यास) के द्वारा साहित्य साधना के कष्टों का चित्रण करने के साथसाथ अपनी नई रचनाओं को कुछ अन्य विषयों का मुद्दा भी बनाते.

सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार

'प्रतिज्ञा,' 'वरदान' और 'सेवासदन' जैसे उपन्यासों में प्रेमचंद ने क्रमशः विधवा समस्या, राजनीतिक आंदोलन और वेश्या समस्या तथा निम्न मध्य वर्ग का विचारोत्तेजक चित्रण किया है (यद्यपि ये लेखक की प्रौढ़ रचनाएं नहीं कही जा सकतीं). 'निर्मला' उपन्यास दहेज और अनमेल विवाह की प्रथाओं पर प्रहार करता है. 'कायाकल्प' तथा 'गबन' जैसे उपन्यास जहां मध्यवर्ती परिवारों के आडंबरों और निम्न मध्य वर्ग की विभिन्न समस्याओं पर विचार करने का माध्यम बने हैं, वहां रंगभूमि' उपन्यास राजनीतिक दासता और जातिप्रथा के कुप्रभावों से समाज को सावधान करता है.

कृषक आंदोलन को ध्यान में रख कर लिखा गया 'कर्मभूमि' उपन्यास भी सामाजिक कुरीतियों—मूलतः छुआछूत की बुराई का परदाफाश करता है. प्रेमचंद ने बारबार अपनी रचनाओं में हिंदू समाज के कलंकों के विरुद्ध कलम चलाई है.

'प्रेमाश्रम' उपन्यास खेतिहर के शोषण को ही नहीं, हिंदू समाज के नए आदर्शों को भी प्रतिबिंबित करता है.

'गोदान' प्रेमचंद की प्रौढ़ कृति है जो भारतीय खेतिहर कृषक के जीवन पर गहरे उतर कर सहज ही अनेक प्रश्न सामने ला कर उपस्थित कर देती है. यहीं आ कर प्रेमचंद अपने उन बड़े आदर्शों से भी मुक्त हो जाते हैं जो उन की पूर्वलिखित रचनाओं की कमजोरी रहे (और जिन के लिए आलोचक घूमफिर कर गांधीजी को जिम्मेदार ठहरा कर छुट्टी पा लेते हैं).

प्रेमचंद की अधिकांश कहानियों का जन्म सामाजिक कुरीतियों और पाखंडों को ललकारने के लिए हुआ है. 'मुक्ति-मार्ग,' 'महातीर्थ,' 'आभूषण,' 'ब्रह्म का स्वांग,' 'अनिष्ट शंका' और 'नैराश्य लीला' जैसी कितनी ही कहानियां हैं जो रूढ़ियों और पाखंडों के प्रति विद्रोह जगाती हैं. 'ब्रह्म का स्वांग' नामक कहानी में प्रेमचंद के विचार इस तरह अभिव्यंजित हुए हैं: "हम कब तक ब्राह्मण अब्राह्मण के गोरख धंधे में फंसे रहेंगे? हमारी विवाह प्रणाली कब तक गोत्र के बंधन में जकड़ी रहेगी? हम कब जानेंगे कि स्त्री और पुरुष के विचारों की अनुकूलता और समानता गोत्र और वर्ण से कहीं अधिक महत्त्व रखती है." इसी के साथ वह यह भी प्रकट करते हैं कि "स्वर्ग और नरक की चिंता में वे रहते हैं जो अपाहिज हैं, कर्तव्यहीन हैं, निर्जीव

" (वही कहानी)

'अनिष्ट शंका' कथा में उन्होंने ज्योतिषियों पर व्यंग्य किया है. 'मुक्तिमार्ग' में ब्राह्मणों की धार्मिक ठगी का रोंगटे खड़े कर देने वाला चित्रण है. इसी तरह 'महातीर्थ,' 'आभूषण' और 'नैराश्य-लीला' कहानियों में उन्होंने क्रमश: तीर्थों की 'महत्ता,' आभूषणों के पीछे भागने वाली स्त्रियों की प्रवृत्ति और व्रतउपवासों आदि पर विचारपूर्ण निष्कर्ष दिए हैं. 'नैराश्य लीला' की नायिका पूछती है, "स्त्रियां ही पुरुषों के मंगल के लिए व्रत क्यों करती हैं?" वह मान्यता के विरोध में यह भी कहती है, "मैं पुरुष की सेवा को नहीं, अपनी आत्मा की रक्षा को धर्म समझती हूं."

मौलिक विचार मौलिक अभिव्यक्ति

निस्संदेह, जिस समाज में नारी को आत्मसम्मान प्राप्त नहीं, उस समाज के सारे दावे एक ढोंग हैं.

समाज सुधार के क्षेत्र में प्रेमचंद गांधीजी से काफी प्रभावित हुए. लेकिन जब उन्होंने गांधीवादियों में ढोंग को पनपते देखा या ढोंगियों को गांधीवादी कहलाते देखा तो उन की खिल्ली उड़ाने से नहीं चूके. 'सत्याग्रह' कहानी इस का प्रमाण है. 'कफन' में प्रेमचंद अप्रत्यक्ष रह कर भी अधिक व्यक्त या मुखर हैं. सामाजिक असमानता और उस से जन्मी जड़ता को जिस खूबी से प्रेमचंद ने उभारा है, वह अद्वितीय है. इस कहानी को 'वाद' विशेष के हक में जोड़ने का विवाद पैदा न ही किया जाए तो अच्छा है. यह कहानी अंधी मान्यताओं और व्यवस्थाओं से जन्मी उस सामाजिक असंगति का परिचय कराती है जिस की जड़ पर असमानता के बेलबूटे लगते हैं. 'घीसू' गरीब बाद में है, 'चमार' पहले है. और यह एक तथ्य है कि हिंदू संस्कारों में 'छोटी जात' के लिए एक ऐसी व्यवस्था मौजूद है जिस के अंतर्गत 'नीच' आदमी नीच ही रहता है और इस नीचता का 'सेहरा' उसी के सिर बंधा रहता है, 'ऊंची जात' वालों के सिर नहीं. 'कफन' ऐसी ही व्यवस्था लिए हुए है—विद्रोह के स्वर के साथ.

'कफन' की विस्तृत व्याख्या 'गोदान' में मिल जाती है. यहां प्रेमचंद ने रहरह कर सामाजिक रूढ़ियों को आड़े हाथों लिया है. होरी जब संपन्न लोगों के दान धर्म की सरलता से प्रशंसा करता है तो उस का बेटा गोबर कहता है, "यह पाप का धन पचे कैसे? इसी लिए दान धर्म करना पड़ता है, भगवान का भजन भी इसी लिए होता है."

कहींकहीं प्रेमचंद ने स्वयं भी टिप्पणियां की हैं, जैसे छुआछूत पर टिप्पणी : "हमारा धर्म है हमारा भोजन. भोजन पवित्र रहे फिर हमारे धर्म पर कोई आंच नहीं आ सकती." उन का एक प्रबुद्ध पात्र कहता है, "हम व्यर्थ का भार अपने ऊपर लाद कर रूढ़ियों, विश्वासों और इतिहासों के मलबे के नीचे दबे पड़े हैं—और यह जो ईश्वर और मोक्ष का चक्कर है, इस पर मुझे हंसी आती है. वह मोक्ष और उपासना अहंकार की पराकाष्ठा है."

सीधेसादे हिंदू समाज के अंधविश्वास का फायदा उठाना इन पुजारियों और पंडों का धंधा है...और इसी लिए मैं उन्हें हिंदू समाज का एक अभिशाप समझता हूं. और उन्हें इस के अध:पतन के लिए उत्तरदायी मानता हूं.

'होरी' उस शोषित किसान का भी प्रतिनिधि है, जो हिंदू धर्म के ब्राह्मणवाद से भयभीत है. वह कहता है, "भगवान न करे कि ब्राह्मण का कोप किसी पर गिरे. वंश में कोई चुल्लू भर पानी देने वाला, घर में दिया जलाने वाला भी नहीं रहता."

यह भय उस की मृत्यु के साथ ही हटता है जब ब्राह्मणों को दिए जाने वाले गोदान को उपेक्षित कर दिया जाता है. इस स्थल पर प्रेमचंद का रूढ़िविरोधी स्वरूप खुल कर सामने आया है.

सैद्धांतिक नहीं व्यावहारिक भी

प्रेमचंद जानते थे कि धर्म की रूढ़ियों से जकड़े समाज को झंझोड़े बिना बराबरी का स्वप्न देखना भ्रम है. अपने मन की बात उन्होंने इस तरह भी कहलवाई है, "प्राणियों के जन्ममरण, सुखदुख, पापपुण्य में कोई ईश्वरीय विधान नहीं है... मनुष्य ने अपने अहंकार में अपने को इतना अंधा बना लिया है कि उस के हर एक काम की प्रेरणा ईश्वर की ओर से होती है." ('गोदान' के इस विचार से मेल खाता हुआ विचार प्रेमचंद ने अपने आत्मीय जैनेंद्रकुमार के नाम एक पत्र में भी व्यक्त किया था. ऐसे विचार उन के लेखों, आलोचनाओं आदि में भी भरे पड़े हैं जिन पर हम थोड़ा आगे चल कर विचार करेंगे.)

दहेज और बरात आदि के आडंबरों और कुप्रभावों को भी प्रेमचंद ने समीप से देखापरखा था. उन का आक्रोश इन शब्दों में व्यक्त हुआ, "मेरा बस चले तो दहेज लेने वालों और दहेज देने वालों दोनों को ही गोली मार दूं." (निर्मला).

लेकिन बाद में जब प्रेमचंद ने अपनी लड़की की शादी में दहेज जुटाया तो सवाल उठना स्वाभाविक है कि यह उन की मजबूरी थी, ढोंग था या हैसियत? स्त्रियों के प्रति उदार होते हुए भी उन की शिक्षा व स्वतंत्रता को ले कर प्रेमचंद कुछ अव्यावहारिक रह गए. (उन की भाभी, श्यामकुमारी देवी के संस्मरण यही बताते हैं.) इस तरह प्रेमचंद के व्यक्तित्व का यह विरोधाभास विचारणीय भी हो जाता है और तत्कालीन हिंदू समाज के संदर्भ में परखने लायक भी.

लेकिन प्रेमचंद के निकट संपर्क में आए लोगों की बातों से (उन की संकोचजनित कुछ कमजोरियों का उद्घाटन होने पर भी) उन का व्यक्तित्व प्रेरक मालूम पड़ता है, इस में दो मत नहीं. उन के सगेसंबंधी भी उन की उदारता, निष्कपटता और सरलता के उदाहरण देते हैं.

प्रेमचंद कभीकभी शराब भी पी लेते थे. गांधीजी से प्रभावित हो कर उन्होंने लिखा बहुत कुछ, पर जेल कभी नहीं गए, चरखा भी नहीं काता. इस के बावजूद वह रहे प्रेमचंद ही. मन्मथनाथ गुप्त, जैनेंद्रकुमार, बनारसीदास चतुर्वेदी, अमृत राय, फिराक गोरखपुरी आदि लोग प्रेमचंद के निकट संपर्क में रहे और इन्हीं लोगों के संस्मरण प्रेमचंद को बड़ा बनाते हैं. ब्राह्मणवाद और पुरोहितशाही के प्रति उन का विरोध उन की रचनाओं में भी है और व्यवहार में भी.

एक अलग ही व्यक्तित्व

'हंस' और 'जमाना' आदि में प्रेमचंद ने हिंदू समाज की गलत परंपराओं पर स्पष्ट विचार प्रस्तुत किए. उन की रचनाओं को ले कर कुछ विरोधी लेखकों और पुरोहितवादियों ने सन 1934 में यह शोर मचाया था कि वह ब्राह्मणद्रोही और हिंदूद्रोही हैं. इस पर उन्होंने एक विस्तृत लेख लिखा. उसी में से कुछ अंश यहां दिए जा रहे हैं :

"हम (प्रेमचंद) कहते हैं कि अगर हम में इतनी शक्ति होती तो हम अपना सारा जीवन हिंदू जाति को पुरोहितों, पुजारियों, पंडों और धर्मजीवी कीटाणुओं

...द जन्म-शताब्दी समारोह

...छले वर्ष जगहजगह समारोह कर के प्रेमचंद की जन्म शताब्दी मनाई गई. पर ...न समारोहों के आयोजकों ने उन की शिक्षाओं को अमल में लाने के विषय में ...या एक बार भी सोचा है?

...मुक्त कराने में अर्पण कर देते. हिंदू ...ति का सब से घृणित कोढ़, सब ...लज्जाजनक कलंक यही टकेपंथी दल ...जो एक विशाल जोंक की भांति उस ...खून चूस रहा है, और हमारी ...ष्ट्रीयता के मार्ग में यही सब से बड़ी ...धा है...जब तक यहां एक दल समाज ...भक्ति, श्रद्धा, अज्ञान और अंधविश्वास ...अपना उल्लू सीधा करने के लिए बना ...हेगा, तब तक हिंदू समाज कभी सचेत ...होगा..."

पंडेपुजारी समाज का एक अभिशाप

"उस दल का उद्यम यही है कि वह ...हिंदू जाति को अज्ञान की बेड़ियों में ...जकड़े रखे, जिस से वह जरा भी चूं न ...कर सके... हिंदू बालक जब से धरती ...पर आता है और जब तक वह धरती से ...प्रस्थान नहीं कर जाता, इसी अंधविश्वास ...और अज्ञान के चक्कर में सम्मोहित पड़ा ...रहता है. और नाना प्रकार के द्रष्टांतों ...मनघढ़ंत किस्सेकहानियों से, पुण्य और ...पाप के गोरखधंधों से, स्वर्ग और नरक ...की मिथ्या कल्पनाओं से, वह उपजीवी ...दल उस की सम्मोहनावस्था को बनाए ...रखता है." (हंस, 8 जनवरी, 1934)

इसी प्रतिक्रिया को प्रेमचंद ने अपने साहित्यिक मित्रों के नाम पत्रों में भी व्यक्त किया था :

"...सीधेसादे हिंदू समाज के अंधविश्वास का फायदा उठाना इन पुजारियों और पंडों का धंधा है और इसी लिए मैं उन्हें समाज का एक अभिशाप समझता हूं और उन्हें अपने अधःपतन के लिए उत्तरदायी समझता हूं. वे इसी काबिल हैं कि उन का मखौल उड़ाया जाए और यही मैं ने किया है." (चिट्ठीपत्री)

प्रेमचंद ने अपने संपादकीय दृष्टिकोण के अंतर्गत गांधीजी के अछूतोद्धार आंदोलन को हार्दिक सहयोग दिया. गांधीजी स्वयं को वर्णव्यवस्था के विरोध में खड़ा करने में संकोच करते रहे. लेकिन प्रेमचंद ने स्पष्ट कहा, "...राष्ट्रीयता की पहली शर्त वर्णव्यवस्था, ऊंचनीच के भेद और धार्मिक पाखंड की जड़ खोदना है." (हंस, 8 जनवरी, 1934)

इसी तरह शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित धर्म की आलोचना करते हुए उन्होंने लिखा : "जो धर्मशास्त्र अहंकार, दंभ और ऊंचनीच का भेद सिखाते हैं, वे मान्य नहीं हो सकते. शास्त्र भी उसी दशा में मान्य हैं, जब वे सत्य की कसौटी
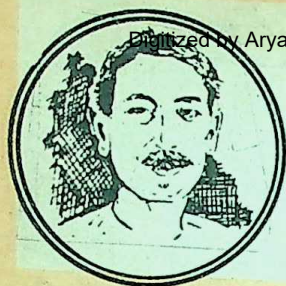
हिंदू जाति का सब से घृणित कोढ़, सब से लज्जाजनक कलंक यही टकेपंथी दल है, जो एक विशाल जोंक की भांति उस का खून चूस रहा है...और हमारी राष्ट्रीयता के मार्ग में यही सब से बड़ी बाधा है.

पर पूरे उतरें." (हंस, 26 दिसंबर, 1932)

पोंगापंथियों के धूर्त समुदायों से सावधान रहना भी प्रेमचंद जैसे स्पष्टवादी लेखक के लिए नियति बनी. प्राणों की रक्षा करते हुए हिंदू समाज को धूर्तों से सावधान करना उन का दायित्व था. वह स्वीकार करते थे, "...यह हमारी कमजोरी है कि हम बहुत सी बातें जानते हुए भी उन को लिखने का साहस नहीं रखते और हमें अपने प्राणों का भी भय है, क्योंकि यह समुदाय कुछ भी कर सकता है." (हंस, 8 जनवरी, 1934) "और यह हमारा दृढ़ विश्वास है कि जब तक यह सामुदायिकता और सांप्रदायिकता और यह अंधविश्वास हम में से दूर न होगा, जब तक समाज को पाखंड से मुक्त न कर लेंगे, तब तक हमारा उद्धार न होगा. हमारा स्वराज केवल विदेशी जुए से अपने को मुक्त करना नहीं है बल्कि सामाजिक जुए से भी, जो विदेशी शासन से कहीं घातक है." (वही)

अपनी कमजोरी की स्वीकारोक्ति प्रेमचंद की विशेषता कही जाएगी.

प्रेमचंद जानते थे कि मानसिक गुलामी का उपचार समय रहते न किया गया तो इस के विषैले प्रभाव दूरगामी होंगे. शायद तभी उन्होंने यह भी लिखा : "हमारे लेखों से भी आज से 50 साल बाद लोग यही समझेंगे कि उस समय हिंदू समाज में इसी तरह के पुजारियों, पुरोहितों, पंडों, पाखंडियों और टकेपंथियों का राज था और कुछ लोग उन के इस राज को उखाड़ फेंकने का प्रयत्न कर रहे थे." (वही)

(संयोग से यह बात प्रेमचंद ने आज से लगभग 50 वर्ष पूर्व ही लिखी थी.)

इसी क्रम में उन्होंने यह भी कहा था कि हिंदू समाज की अधोगति पर कोरे आंसू बहाने से काम नहीं चलेगा, बल्कि इस के उत्थान के लिए ठोस और रचनात्मक उपाय करने पड़ेंगे : "इस अधोगति की दशा का सुधार करना है. इस के प्रति घृणा फैलाइए, प्रेम फैलाइए, उपहास कीजिए या निंदा कीजिए. सब जायज है और केवल हिंदू समाज के दृष्टिकोण से ही नहीं जायज है, उस समुदाय के दृष्टिकोण से भी जायज है, जो मुफ्तखोरी, पाखंड और अंधविश्वास में अपनी आत्मा का पतन कर रहा है और अपने साथ हिंदू जाति को डुबाए डालता है." (वही)

जाति श्रेष्ठता अभिमान में पनपता जहर

जाति की तथाकथित श्रेष्ठता के घमंड में भेदभाव पनपता रहा है. गुणों और योग्यताओं को ताक पर रख कर कुछ लोगों ने वर्णव्यवस्था की रक्षा की है. प्रेमचंद ने कहा है : "हम यह किसी तरह नहीं भूल सकते कि हम शर्मा हैं या वर्मा, सिन्हा हैं या चौधरी, दूबे हैं या तिवारी, चौबे हैं या पांडे, दीक्षित हैं या उपाध्याय. हम आदमी पीछे हैं, चौबे या तिवारी पहले." (हंस, 15 मई, 1933)

धर्माभिमानियों से उन्होंने सीधा सवाल किया : "हिंदू धर्म पर अभिमान करने वाला कोई हरिजन काशी विश्व-

...य या किसी वैसे ही पवित्र मंदिर में ...वेश नहीं पा सकता, जब कि स्थानस्थान ...मलमूत्र विसर्जन करने वाला सांड ...दिर में दर्शनार्थियों पर सींग चलाता ...या स्वच्छंदतापूर्वक घूम सकता है." (हंस, ... मई, 1933)

मंदिरों के सौंदर्य के भीतर भ्रष्टा-...र देख कर प्रेमचंद ने कहा: "इन ...दिरों की इस समय जैसी दशा है, उसे ...ख कर तो यही कहना पड़ेगा कि हमारे ...दू मंदिर भोग और प्रसाद, पुरोहित ...र पंडे ईश्वर के नाम पर व्यभिचार ...था दुराचार करने वाले स्वार्थी और ...लुप—दर्शन करने वालों से यह पहला ...श्न करने वाले कि पैसा चढ़ाओ—...परों के अड्डे मात्र हैं...हम ने भगवान ...ो मनौती से, घूस से, पैसे से, दक्षिणा ...प्रसन्न होने वाला स्वार्थी बना रखा ...है." (वही)

अनाचार का परदाफाश

प्रेमचंद और उन के जैसे जागरूक ...खकों ने धार्मिक धांधली को बेनकाब ...रने के लिए यथासंभव आवाज उठाई. ...नता भी इस मूल भ्रष्टाचार की अस-...लियत समझने लगी, लेकिन धूर्त निर्लज्ज ...ी होते हैं. प्रेमचंद के शब्दों में, "...धर्म ...के ठेकेदार, भिक्षावृत्ति से जीने वाले... ...त्ति का माल मार कर, दुराचार तथा ...नाचार से पेट की रोटी चला कर, ...डंबर, पाखंड, स्वार्थ तथा पैसे की ...जा करने वाले क्या अब भी सचेत न ...होंगे?" (वही)

धर्मध्वजियों ने भोलेभाले और अनु-[illegible] अनुमानों से पुरोहिताई की गठरी ढोते रहने का प्रशिक्षण दे रखा है. प्रेमचंद इन मठाधीशों से पूछ चुके हैं कि ये लोग शास्त्रों के बल पर कहां तक हिंदू जाति की रक्षा कर रहे हैं--विधर्मियों के आक्रमणों से कहां तक हिंदुओं को बचा रहे हैं और राजनीतिक संग्राम में हिंदुओं के अधिकारों का किस प्रकार संरक्षण कर रहे हैं?" (हंस, 5 अक्तूबर, 1932)

इन सवालों का जवाब हमेशा नदारद होता है. जहां उत्तर देने का दंभ प्रदर्शित किया जाता है वहां भी मौलिक और तार्किक उत्तर के स्थान पर पोथियों में से लिजलिजे 'प्रमाण' प्रस्तुत किए जाते हैं, यह खिसियाहट और बौखलाहट शाश्वत है. धार्मिक दादागीरी चलाए जाने वालों से प्रेमचंद ने एक और ज्वलंत प्रश्न किया है:

"क्या मंदिरों के पुजारियों और मठों के महंतों से हिंदू जाति बनी है?" (हंस, 21 नवंबर, 1932)

प्रेमचंद ने सड़ी हुई मान्यताओं को जीवन के अंतिम क्षणों तक पास नहीं फटकने दिया. साहित्य के नाम पर 'तुलसी जयंती' जैसे खोखले समारोहों का भी उन्होंने बेझिझक बहिष्कार किया, भले ही उन्हें सभापति का सम्मान दिया जा रहा हो: "एक ऐसे व्यक्ति का तुलसी-जयंती में सभापतित्व करना...जो उन (तुलसी) के संबंध में कही जाने वाली अतिमानवी बातों में विश्वास नहीं करता, हास्यास्पद है. उन्होने राम और हनुमान को देखा और वह बंदर वाली

...बातें जानते हुए भी उन को लिखने का साहस नहीं रखते...अपने और हमें प्राणों का भी भय है, क्योंकि यह समुदाय कुछ भी कर सकता है.

यह हमारी कमजोरी है कि हम बहुत सी
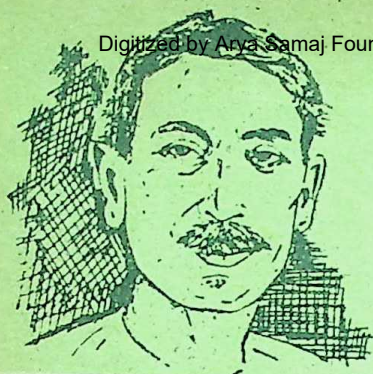
हिंदू धर्म पर अभिमान करने वाला कोई हरिजन काशी विश्वनाथ या किसी पवित्र मंदिर में क्यों नहीं प्रवेश पा सकता, जब कि स्थानस न पर मलमूत्र विसर्जन करने वाला सांड मंदिर में दर्शनार्थियों पर सींग चलाता हुआ स्वच्छंदतापूर्वक घूम सकता है?

—प्रेमचंद

घटना, सब खुराफात. मगर क्या तुलसी-भक्त मेरी काफिरों जैसी बात पसंद करेंगे? इस से क्या फर्क पड़ता है कि वह विक्रम संवत 10 में पैदा हुए या 20 में, या 40 में? क्यों अपनी बुद्धि खामखाह इस के पीछे बरबाद करो जब कि और भी न जाने कितनी चीजें करने को पड़ी हैं... उन की व्याख्या करो...मगर उन्हें ईश्वर काहे बनाते हो?" (चिट्ठीपत्री)

प्रेमचंद आस्तिक या नास्तिक

अध्यात्म के नाम पर चलने वाली अंधी धारणाओं को मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बताते हुए प्रेमचंद ने यह भी व्यक्त किया कि "परलोक में मेरा विश्वास नहीं है, इसलिए अध्यात्म का विचार जो यौवन का सब से बड़ा घातक है, मेरे पास नहीं फ़टकता." (चिट्ठीपत्री)

एक साहित्यिक संदर्भ में उन्होंने ईश्वर विषयक विश्वास पर यह विचार प्रकट किया: "पहले मैं एक परमसत्ता में विश्वास करता था, विचारों के निष्कर्ष के रूप में नहीं, केवल एक चले आते रूढ़िवादी विश्वास के नाते...वह विश्वास अब खंडित हो रहा है. निस्संदेह विश्व के पीछे कोई हाथ है, लेकिन मैं नहीं समझता कि उस को मानव व्यापारों से कुछ लेना-देना है..." (चिट्ठीपत्री). (यही भाव 'गोदान' में भी व्यक्त हुए हैं.)

प्रेमचंद का देहांत 8 अक्तूबर, 1936 में हुआ था. 9 दिसंबर, 1935 को उन्होंने जैनेंद्रकुमार को लिखा था: 'अक्ल की बातें सुनते और पढ़ते उम्र बीत गई. ईश्वर पर विश्वास नहीं आता, कैसे श्रद्धा होती? तुम आस्तिकता की ओर जा रहे हो. जा नहीं रहे पक्के भक्त बन रहे हो. मैं संदेह से पक्का नास्तिक होता जा रहा हूं." (चिट्ठीपत्री)

यहां यह बता देना असंगत न होगा कि वर्षों बाद जैनेंद्रकुमार ने वक्तव्य दिया—"धर्म, ईश्वर, नीति इत्यादि सब प्रभुता का भोग करने वाले सुविधाप्राप्त वर्ग की दी हुई बातें हैं, उन में उस से अधिक अर्थ और सार नहीं है." ('समय और हम' 1962, पृष्ठ 120)

स्पष्ट दृष्टिकोण के हिमायती

प्रेमचंद ने समाज में व्याप्त रूढ़ियों को अपने कथासाहित्य और उपन्यासों में जिस खूबी से मुखरित कर के उस का परदाफाश किया है, वह सर्वविदित है. वह यह भी जानते थे कि अपने को रूढ़िमुक्त किए बिना दूसरी सभ्यताओं का मजाक उड़ाना बहादुरी का काम नहीं है. अतः उन्होंने हिंदू समाज में घुसपैठ कर चुकी हिंदू विरोधी प्रणालियों पर कस कर वार किए. इस प्रयत्न में उन्होंने समाज के हित को सदैव सामने रखा.

'गोरक्षा' के सवाल पर उन्होंने 'जमाना' (फरवरी, 1924) में लिखा था: "हिंदुस्तान जैसे कृषि प्रधान देश के लिए गाय का होना एक वरदान है, मगर आर्थिक दृष्टि के अलावा उस का

और कोई महत्त्व नहीं है. [illegible] के सारे होहल्ले के बावजूद हिंदुओं ने गोरक्षा का ऐसा कोई सामूहिक प्रयत्न नहीं किया, जिस से उन के दावे का व्यावहारिक प्रमाण मिल सकता...जब हम देखते हैं कि बैलों के लिए चारा मयस्सर नहीं तो गायों के लिए—वह भी बुड्ढी, मरियल, कमजोर हो जाएं—चारा इकट्ठा करने की दिक्कत का हाल किसी किसान से पूछिए. वह गायों को भूख से एड़ियां रगड़रगड़ कर मरने के बदले उन्हें कसाई के हवाले कर देना ज्यादा अच्छा समझता है" (जमाना, फरवरी, 1924).

समाज को संदेश

लोगों ने प्रेमचंद से कहा कि माना टकेपंथी या पुरोहितवादी समाज निकृष्ट है, त्याज्य है, पाखंडी है, लेकिन आप उस की निंदा क्यों करते हो, उस के प्रति घृणा क्यों फैलाते हो?

प्रेमचंद ने कहा :

"इस के उत्तर में हमारा यह नम्र निवेदन है कि हमें किसी व्यक्ति या समाज से कोई द्वेष नहीं. हम अगर टकेपंथी का उपहास करते हैं, तो जहां हमारा एक उद्देश्य यह होता है कि समाज में से ऊंचनीच, पवित्रअपवित्र का ढोंग मिटाएं, वहां दूसरा उद्देश्य यह भी होता है कि टकेपंथियों के सामने उन का वास्तविक और कुछ अतिरंजित चित्र रखें, जिस में उन्हें अपने व्यवसाय, अपनी धूर्तता, अपने पाखंड से घृणा और लज्जा उत्पन्न हो, और वे उन का परित्याग कर ईमानदारी और सफाई की जिंदगी बसर करें...आदर्शवाद इसे नहीं कहते कि अपने समाज में जो बुराइयां हों, उन के सुधार के बदले उन पर परदा डालने की चेष्टा की जाए, या समाज को एक लुटेरे समुदाय के हाथों लुटते देख कर जबान बंद कर ली जाए" (हंस, 8 जनवरी, 1934).

कलाकारों का अनोखा प्रदर्शन

पेरिस की सड़कें अजीबोगरीब घटनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं. अभी हाल में ऐसा ही एक हंगामेदार दृश्य उस समय देखने को मिला, जब वहां के 12 चित्रकार अपने नंगे बदन पर चित्रकारी कर के बाहर निकल आए.

उन की मांग थी कि उन के चित्रों के प्रदर्शन के लिए निःशुल्क स्थान का प्रबंध किया जाए, अन्यथा वे यों ही अपनी कला का प्रदर्शन करते रहेंगे. मजे की बात यह थी कि जनता की हमदर्दी भी इन निर्वस्त्र कलाकारों के साथ थी. इसलिए पुलिस इन का रास्ता नहीं रोक सकी.

एक और मजेदार बात यह हुई कि एक करोड़पति आदमी को एक चित्रकार की पीठ पर बना हुआ चित्र बहुत पसंद आया. उस ने कहा, "यदि यह चित्र पीठ की जगह किसी कागज पर बना होता तो मैं इस के लिए 50 हजार डालर तक दे सकता था."

दूसरी तरफ, सरकार ने न तो उन के इस प्रदर्शन का विरोध किया और न ही उन की मांग पर कोई ध्यान दिया. लेकिन कलाकारों ने भी फैसला किया है कि जब तक उन की मांग पूरी नहीं की जाती, तब तक महीने के हर आखिरी रविवार को उन का यह 'निर्वस्त्र जलूस' निकलता रहेगा.

सरकारी घाटा बनाम गैर-जरूरी खर्चे

लेख • महर उद्दीन खां

सरकार की ओर से बताया गया है कि पिछले वर्ष एअर इंडिया को 50 करोड़ रुपए का घाटा उठाना पड़ा है. एअर इंडिया ही क्यों, घाटे की परंपरा तो भारत के हर सरकारी क्षेत्र में विराजमान है. चाहे वह आयोग हो, प्रतिष्ठान हो, निगम हो या कोई प्राधिकरण. सब की एक ही कहानी है— घाटा. सरकारी उद्यमों में घाटे के बहुत सारे कारण होते हैं, मगर यहां उन पर बहस न कर के एअर इंडिया के घाटे की बात ही हमारा विषय है. जहां तक एअर इंडिया के घाटे की बात है, यह इस कारण नहीं होता कि विमान में चलने वालों से किराया कम लिया जाता है. सच पूछें तो उन से जरूरत से ज्यादा ही किराया लिया जाता है. यहां हम कुछ ऐसी घटनाएं आप के सामने रख रहे हैं, जिस से घाटे की बात साफ हो सकती है.

केंद्रीय मंत्रिमंडल में एक मंत्री हैं: श्री प्रकाशचंद्र. सेठी श्री सेठी हवाई जहाज में सफर कर रहे थे कि अचानक उन्हें ध्यान आया कि वह भोपाल में अपनी कमीज भूल आए हैं. यह बात ध्यान आते ही उन्होंने चालक को जहाज लौटाने का आदेश दिया. जहाज लौटा और सेठीजी की कमीज ले कर फिर उड़ा.

पिछले दिनों राज्य सभा में भी बताया गया कि मध्य प्रदेश में राष्ट्रपति शासन के दौरान एक विमान और एक हैलिकाप्टर हर दूसरे दिन श्री सेठी की

एअर इंडिया को पिछले वर्ष 50 करोड़ रुपए का घाटा उठाना पड़ा. इसलिए नहीं कि उस के विमानों से यात्रा करने वालों की कमी है. वजह तो कुछ और ही है: मगर एअर इंडिया का यही रवैया रहा तो घाटे के आंकड़े साल दर साल बढ़ते ही— घटेंगे नहीं...
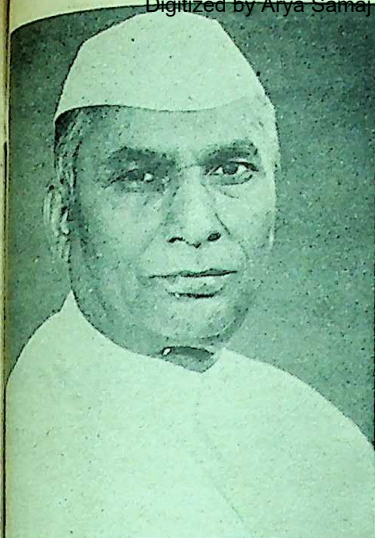
नागरिक उड्डयन मंत्री श्री अनंतप्रसाद शर्मा : उड़ान उद्घाटन के नाम पर दलबल सहित टोकियो तक की सैर.

...ना में रहता था. 7 मार्च से 31 मई ...क इन्होंने हवाई सैर के मजे जी भर कर ...टे. 20 मार्च के बाद इन की सैर का ...औसत रोजाना सात या आठ उड़ानें था. ...9 अप्रैल को इन्होंने 'किंग एअर' नामक ...विमान में नागपुर से दिल्ली, दिल्ली से ...भोपाल और वापसी तथा फिर दोबारा ...भोपाल की सैर की. 21 अप्रैल को भी ...भोपाल से दिल्ली, दिल्ली से जयपुर और ...भोपाल की सैर का कार्यक्रम रहा. उस ...से पहले 21 मार्च को श्री सेठी ने दिल्ली ...से भोपाल, भोपाल से डुरिया, डुरिया ...से रायपुर और रायपुर से फिर भोपाल ...की सैर की थी. 24 मार्च को यह सैर ...दिल्ली ग्वालियर, जयपुर ग्वालियर और ...दिल्ली के बीच हुई थी. उन्होंने 29 मार्च ...को दिल्ली, खजुराहो, रीवां, सीधी, जबल...पुर और भोपाल के बीच हवाई सैर के ...मजे लूटे थे.

...अखबारों की रिपोर्टों के अनुसार ...अप्रैल में 2, 3, 9, 12, 13, 19, 20, 21, ...26, तारीख को, मई में 9, 10, 15, 17, 25, 26, 28, 29, 30 और 31 तारीख को उन्होंने कई नगरों की हवाई सैर की. उड़ती खबरों के अनुसार सेठीजी मध्य प्रदेश राज्य सरकार के विमानों को तो वैस्पा स्कूटर की तरह और हैलीकाप्टर को साइकिल की तरह समझते हैं. भारतीय वायु सेना का विमान उन की नजर में फिर जरूर कार जैसा होगा.

श्रीसेठी की इन हवाई सैरों को उचित ठहराने के लिए स्वयं उन के और उन की पार्टी इंदिरा कांग्रेस के पास यों तो काफी दलीलें हैं मगर वे लोगों के गले नहीं उतर रहीं. इंदिरा कांग्रस के कई नेता इस तरह की यात्राओं का विरोध करते बताए जाते हैं. यों श्रीमती इंदिरा गांधी ने स्वयं भी मंत्रियों की हवाई सैरों का विरोध किया है. मगर मंत्री लोग तो यही सोचते हैं:

"सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहां, जिंदगी भी गर रही तो नौजवानी फिर कहां?"

मंत्री लोगों का सोचना ठीक भी है : जितनी सैर कर लें अच्छा है. पता नहीं फिर मंत्री रहें या न रहें!

सभी मंत्री सैर के चक्कर में

हवाई सैर के इसी क्रम में थोड़ा और आगे बढ़ें तो पता चलेगा कि मंत्री और राजनीतिबाज किस तरह ऐसी सैरों का जुगाड़ बिठाते रहते हैं. दिल्ली और टोकियो के बीच जंबो की उड़ान नौ महीने पहले शुरू हुई थी, पर उस का उद्घाटन पिछले दिनों किया गया. उस के लिए विमान सेवा के मंत्री श्री अनंतप्रसाद शर्मा के साथ एक बड़ा दल हांगकांग और टोकियो की सैर करने गया. ऐसी एक सैर पर एअर इंडिया का 30 लाख रुपए खर्च बैठता है. इस के अलावा इन लोगों के यात्रा भत्ते की मद अलग रहेगी.

इन लोगों का भी कसूर नहीं, हवाई सैर का मजा ही मजा होता है. एअर इंडिया घाटे में जाए या देश घाटे में
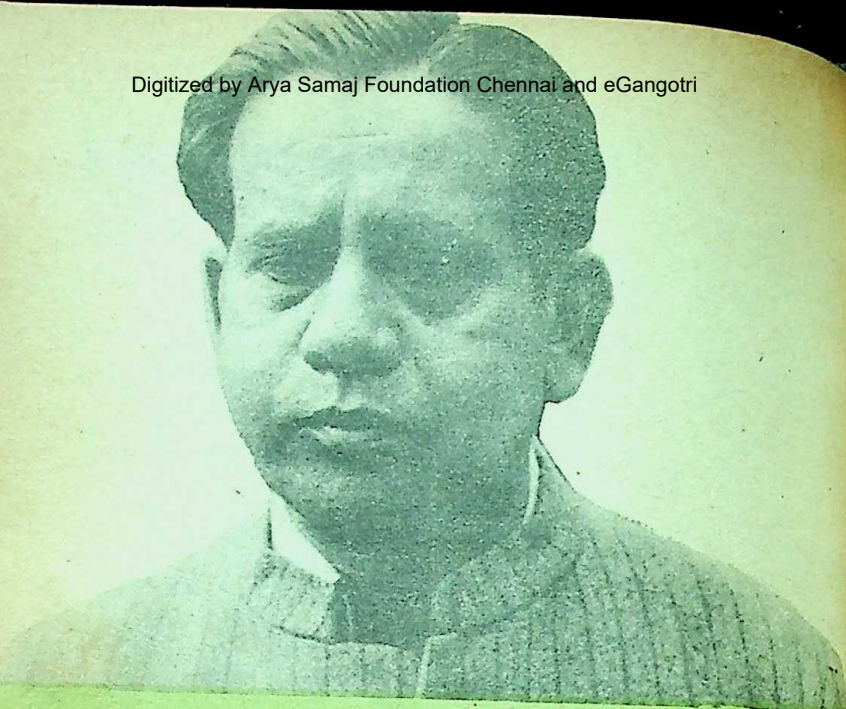
श्री प्रकाशचंद्र सेठी : जिन्होंने प्रतिदिन औसतन सातआठ अंतरदेशीय उड़ानें भर कर एक कीर्तिमान कायम किया था. क्या इसलिए कि भले ही देश का लाखों रुपया बरबाद हो पर अपनी शान कायम रहे?

जाए, राजनीतिबाज इस मजे की तलाश में रहता ही है. इस का एक ताजा नमूना है हिंदी के नाम पर संसार के देशों की सैर. इस में 33 संसद सदस्य शामिल हुए जिन में 14 इंदिरा कांग्रेस के थे. मजे की बात यह कि इस दल के आठ संसद सदस्यों व चार अधिकारियों के बारे में कहा जाता है कि वह हिंदी जानते तक नहीं."

हिंदी के नाम पर सैर सपाटा

हिंदी के नाम पर की गई इस हवाई सैर पर 50 लाख रुपए का खर्च तो केवल सफर के किराए पर होगा, हर संसद सदस्य को शहर के अनुसार 640 से 960 रुपए रोजाना भत्ता अलग से मिलेगा. इस पर भी लगभग 5,60,000 रुपए खर्च होने का अनुमान है. हिंदी का भला तो हुआ या नहीं मगर इन संसद सदस्यों का हवाई सैर के साथ विदेश दर्शन का शौक जरूर पूरा हो गया. मजा यह कि यह सब खर्चा लोगों की जेब से वसूल किया जाएगा.

देश के भीतर हवाई सफर के मजे लेने के लिए भी मंत्री लोग बाढ़ व सूखा को भी बहाना बना लेते हैं. नीचे लोग बाढ़ या सूखा से परेशान रहते हैं और हैलीकाप्टर में मंत्री जी उन की दुर्दशा देख कर अपना मनोरंजन करते हैं. सच तो है जब रोम जल रहा था तो नीरो वंशी बजा रहा था.

अब तनिक सरकार का दोगलापन भी देख लीजिए. एक ओर तो नएनए बहाने बना कर मौज लेने की खातिर यह सब कुछ हो रहा है और दूसरी ओर सरकार बारबार यह घोषणा करती रहती है कि गैरजरूरी खर्चों में कटौती की जाएगी. अब कोई सरकार से पूछे कि ऊपर बताए गए खर्चे क्या गैरजरूरी नहीं थे? ●

चितौड़
पहली बार
वाली प्रोफे
राजस्थान
महिला सां
निर्मल
द्वी, जन
35,000
इस के अ
लक्ष्मणसिंह
राजस
एकमा
प्रो.
शक
भेंट
विवेक स

चितौड़गढ़ चुनाव क्षेत्र से कांग्रेस (इं) के इतिहास में पहली बार लोक सभा में चुन कर आने वाली प्रोफेसर निर्मलाकुमारी शक्तावत, राजस्थान से चुनी जाने वाली एक मात्र महिला सांसद भी हैं.

निर्मलाजी ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी, जनता पार्टी के उम्मीदवार को 35,000 वोटों से पराजित किया था. इस के अलावा लोक दल के महाराव लक्ष्मणसिंह की जमानत ही जब्त हो गई.

निर्मलाजी कुछ महत्वपूर्ण और अछूते पक्षों को सामने रख कर सक्रिय राजनीति में आई हैं. पर राजनीति में व्याप्त स्वार्थपरता और गुटबाजी को देखते हुए क्या वह अपने लक्ष्य तक पहुंच पाएंगी?

राजस्थान में चुनी गई एकमात्र महिला सांसद

प्रो. निर्मलाकुमारी शक्तावत से भेंटवार्ता

विवेक सक्सेना

उड़ानें भर
खों रुपया

कि यह सब
सूल किया

कर के मजे
ाड़ व सूखा
नीचे लोग
इते हैं और
की दुर्दशा
रते हैं. सच
तो नीरो

दोगलापन
तो नएनए
खातिर यह
सरी ओर
करती रहती
कटौती की
पूछे कि
जरूरी नहीं

आप समाजशास्त्र की प्रोफेसर थीं. आप के पति भी प्रोफेसर हैं. परिवार में दो ही बच्चे हैं. अचानक अध्यापन कार्य छोड़ कर राजनीति में प्रवेश कुछ अजीब सा लगता है. इस जिज्ञासा को शांत करने के लिए जब मैं निर्मलाजी से मिलने गया तो वह एक घरेलू नारी की तरह कार्य में व्यस्त थीं. मेरा पहला प्रश्न था:

राजनीति में प्रवेश कब?

प्रश्न : राजनीति में आप ने कब प्रवेश किया व आप को इस में आने की प्रेरणा कहां से मिली?

उत्तर : मेरे घर का वातावरण कुछ ऐसा ही था. मेरे पिता राजस्थान सरकार में शिक्षा मंत्री रह चुके थे. जब मैं पढ़ती थी, तभी से मेरा कांग्रेस की ओर झुकाव था. मैं समाजशास्त्र की प्रोफेसर थी, पर मैं ने 1972 में नौकरी छोड़ दी व सक्रिय राजनीति में आ गई. मैं 1972-77 तक राजस्थान विधान सभा में विधायक रही व 1977 का चुनाव हार गई, क्योंकि उस समय कांग्रेस विरोधी लहर फैली हुई थी.

प्रश्न : इस चुनाव अभियान में आप को किन मुसीबतों या समस्याओं का सामना करना पड़ा?

उत्तर : लोक सभा की 543 सीटों में क्षेत्रफल के आधार पर मेरे निर्वाचन

"अभी मेरे क्षेत्र के विकास की ओर प्रतिनिधियों ने ध्यान नहीं दिया. मेरा मुख्य लक्ष्य अपने क्षेत्र का विकास करना है. राजनीति में प्रवेश कर अपने क्षेत्र के आदिवासी, पिछड़े वर्ग व प्रत्येक नागरिक की समस्या ज्यादा प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सकूंगी, ऐसा मेरा विश्वास है."—शक्तावत.

क्षेत्र चितौड़गढ़ का स्थान 16वां है. अतः इतने बड़े क्षेत्र में एक महिला होने के नाते भागदौड़ करना काफी कठिन काम था. फिर मुसीबतें तो आती ही रहती हैं. वास्तव में हमारी पार्टी के सिद्धांतों, विचारों, कार्यकर्त्ताओं के कठिन परिश्रम तथा श्रीमती गांधी के आशीर्वाद के कारण ही मैं यह विजय प्राप्त कर सकी, क्योंकि मुकाबला काफी कठिन था. मैं यह नहीं समझती हूं कि व्यक्तिगत तौर पर मैं यह सफलता प्राप्त कर सकती थी.

प्रश्न : महिलाओं के लिए यह कैसे संभव हो सकता है कि वे राजनीति में सक्रिय रहते हुए भी, परिवार के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन कर सकें?

उत्तर : देखिए, हर महिला को अपने जीवन में दो भूमिकाएं अदा करनी पड़ती हैं. एक भूमिका वह अपने परिवार में पत्नी, मां, बहन या बेटी के रूप में अदा करती है व दूसरी उस की सामाजिक होती है. उसे एक साथ दोनों पहलुओं पर ध्यान रखते हुए अपने कर्त्तव्य का पालन करना पड़ता है. यदि महिला समझदार है तो वह दोनों ही ओर बराबर ध्यान देगी व उस के लिए कोई भी समस्या उत्पन्न नहीं होगी. हां, वैसे छोटीमोटी बातें तो होती ही रहती हैं.

पर मुझे इस बारे में कभी भी किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा, क्योंकि मेरे पति ऊंचे विचारों के हैं व मेरे दो ही लड़के हैं जो होस्टल में रह कर पढ़ रहे हैं. इसलिए पारिवारिक तौर पर मुझे कोई परेशानी नहीं है. इस

वजह से स
ने निभा ले

राज

प्रश्न
पीछे आप
आ रहे होंगे
कर सकने
हो पा रही

उत्तर
हुए प्रतिनि
विकास की
कुछ भी थ
बराबर था.
क्षेत्र का वि
चाहती हूं कि
अपने क्षेत्र
प्रत्येक ना
प्रभावशाली
इन का सम
दे पाऊंगी.

और इ
लता भी मि
मैं ने अपने
जिस में को
स्वीकृति भी

प्रश्न
है कि एक
नीति में प्रवे

उत्तर
विचार से स
नीति में
स्थिति पर

"महिलाअ
मुकदमा म
लत में,
जाना चाहि
यह प्रमाणि
साथ बल
स्वयं अपने
प्रस्तुत करें

वजह से सामाजिक दायित्व भी आसानी से निभा लेती हूं.

राजनीति में प्रवेश किसलिए?

प्रश्न : राजनीति में प्रवेश करने के पीछे आप के कुछ उद्देश्य व लक्ष्य अवश्य रहे होंगे? वे क्या थे व उन्हें प्राप्त कर सकने में आप स्वयं कहां तक सफल हो पा रही हैं?

उत्तर : अभी तक मेरे क्षेत्र से चुने हुए प्रतिनिधियों ने कभी भी इस के विकास की ओर ध्यान नहीं दिया. जो कुछ भी थोड़ाबहुत किया वह नहीं के बराबर था. अतः मेरा मुख्य लक्ष्य अपने क्षेत्र का विकास करना है. मैं ऐसा समझती हूं कि लोक सभा में प्रवेश कर के अपने क्षेत्र के आदिवासी, पिछड़े वर्ग व प्रत्येक नागरिक की समस्या ज्यादा प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सकूंगी व इन का समाधान करने में अपना योगदान दे पाऊंगी.

और इस कार्य में मुझे पर्याप्त सफलता भी मिली है. पिछले कुछ महीनों में मैं ने अपने क्षेत्र के लिए बहुत कुछ किया जिस में कोटा, चित्तौड़गढ़ बड़ी लाइन की स्वीकृति भी शामिल है.

प्रश्न : क्या आप ऐसा महसूस करती हैं कि एक आम महिला के लिए राजनीति में प्रवेश कर पाना संभव नहीं है?

उत्तर : जी हां, मैं आप के इस विचार से सहमत हूं. महिलाओं का राजनीति में प्रवेश उन की पारिवारिक स्थिति पर निर्भर करता है. हमारे देश में शिक्षित महिलाओं का प्रतिशत काफी कम है. साधारण महिला तो कभी राजनीति में प्रवेश कर ही नहीं सकती है. पुरुष वर्ग सब से ज्यादा उस की प्रगति में बाधक बनता है. महिलाओं को आगे आने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है. हां, यदि एक बार वह इन से टक्कर ले कर जीत जाती है तो फिर कोई समस्या नहीं है. यही हालत महिलाओं को चुनाव का टिकट देने के समय आ जाती है. पुरुष उम्मीदवार कहते हैं कि महिलाओं का जीत सकना संभव नहीं है व वे उन का हक मार जाते हैं.

"महिलाओं पर हुए अत्याचार का मुकदमा महिला न्यायाधीश की अदालत में, पर बंद कमरे में चलाया जाना चाहिए. मेरे विचार से बजाए यह प्रमाणित करने के कि महिला के साथ बलात्कार हुआ है, अपराधी स्वयं अपने बचाव के लिए प्रमाण प्रस्तुत करें." —शक्तावत.

प्रश्न : लोक सभा में महिला सांसदों की संख्या काफी कम है. अतः आप लोग महिलाओं का प्रधिनिधित्व उचित प्रकार से कर सकने में सफल हो पाएंगी, इस में संदेह नजर आता है?

उत्तर : माफ कीजिएगा. पहले तो मैं आप को यह बता दूं कि मैं केवल महिलाओं तक ही सीमित नहीं हूं. मुझे पुरुष वर्ग ने भी वोट दिए हैं. अतः उन का प्रतिनिधित्व करना भी मेरा कर्त्तव्य है. फिर स्वयं एक महिला होने के नाते उन के लिए मेरे दिल में एक हिमायती रवैया अवश्य है. हम सभी महिला सांसदों को संसद में काफी कदर की दृष्टि से देखा जाता है. हमें अपनी बात कहने के

लिए पर्याप्त अवसर भी दिए जाते हैं. अतः मैं ऐसा नहीं समझती हूं कि महिला सांसदों की संख्या का उन के प्रतिनिधित्व पर कुछ असर पड़ेगा.

प्रश्न : भारतीय महिलाओं को आप विश्व के अन्य देशों की महिलाओं से किस तरह से भिन्न पाती हैं?

उत्तर : हमारे देश की महिलाएं काफी पिछड़ी हुई हैं. इस के पीछे मुख्य कारण उन का अशिक्षित होना ही है. वैसे हमारे देश में महिलाओं को जितना सम्मान दिया जाता है, उतना शायद ही किसी अन्य देश की महिलाओं को मिलता हो.

महिलाओं को आरक्षण

प्रश्न : क्या आप ऐसा सोचती हैं कि यह आर्थिक अथवा शैक्षिक पिछड़ापन नौकरियों में महिलाओं का आरक्षण कर के दूर किया जा सकता है?

उत्तर : मैं इस तरह के आरक्षण की सख्त विरोधी हूं. आज महिलाएं हर तरह योग्य हैं. वे अपनी योग्यता का सहारा ले कर खुद आगे बढ़ सकती हैं. शिक्षा, सुरक्षा, डाक्टरी, वकालत हर क्षेत्र में महिलाएं आगे आ रही हैं. मैं यह नहीं मानती हूं कि महिलाएं शारीरिक तौर पर या किसी और रूप में कमजोर होती हैं. अतः उन को नौकरियों या अन्य स्थानों पर आरक्षण अथवा प्राथमिकता दी जानी चाहिए.

प्रश्न : कांग्रेस (इं) के सत्ता में आने के बाद भी मूल्यों का बढ़ना जारी है, जब कि चुनाव में महंगाई को एक मुख्य मुद्दा बनाया गया था. इस बारे में आप क्या कहना चाहेंगी?

उत्तर : मूल्यों का बढ़ना एक अंतरराष्ट्रीय समस्या है. संपूर्ण विश्व में महंगाई व मूल्य बढ़ रहे हैं. हमें अर्थव्यवस्था बहुत ही बिगड़ी हुई हालत में मिली थी, जिसे संभालने के हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं. श्रीमती गांधी का यही प्रयास है कि वे जल्दी से जल्दी इस पर काबू पा लें.

महिलाओं पर अत्याचार

प्रश्न : पिछले कुछ दिनों में पुलिस द्वारा महिलाओं पर किए जाने वाले अत्याचारों में काफी वृद्धि हुई है. विरोधी दल का आरोप है कि सरकार स्वयं कोई कड़ा कदम न उठा कर पुलिस को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है?

उत्तर : यह विरोधी दल का नियोजित षड्यंत्र है. पहले उन्होंने नसबंदी का हौवा बैठाया था और अब बलात्कार को ले कर हल्ला मचा रहे हैं. मैं यह नहीं कहती हूं कि ये घटनाएं झूठी हैं. पर कई मामलों में ऐसी अनहोनी बातें कही जाती हैं कि उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता है.

फिर ये अपराध भी तो हमारे समाज की ही देन हैं. कई बार यहां तक देखने में आया है कि पिता अपनी पुत्री पर अत्याचार कर बैठा. मैं तो यही कहूंगी कि इस के लिए सामाजिक कुरीतियों को दूर करना होगा. अकेले सरकार कुछ नहीं कर सकती है. वैसे हमारी प्रधान मंत्री इस बारे में कड़े कदम उठा रही हैं. जब मैं ये बातें सुनती हूं तो मुझे लगता है कि हमारा पूरा राष्ट्र एक साथ चरित्रहीन हो गया है? मैं तो यही कहूंगी कि बात को बहुत बढ़ाचढ़ा कर बताया जा रहा है जो कि उचित नहीं है. वास्तविकता कुछ और ही है.

प्रश्न : इस का अर्थ यह हुआ कि पुलिस वाले निर्दोष हैं? क्या ऐसे अपराधों की जांच पुलिस द्वारा करवाना उचित होगा, जिस में कि वह स्वयं मिली हुई हो?

उत्तर : नहीं, मेरे कहने का यह तात्पर्य नहीं था कि पुलिस वाले दूध के धुले हैं. बहुत से पुलिस अधिकारी इन अपराधों में भागीदार हो सकते हैं व होते भी हैं. मैं तो लोक सभा में भी आवाज उठाऊंगी कि इन मामलों की जांच पुलिस

"मुझे तो ऐसा लगता है कि हमारा पूरा राष्ट्र ही एक साथ चरित्रहीन हो गया है."—निर्मलाकुमारी शक्तावत.

द्वारा न हो कर के एक अलग संस्था द्वारा की जानी चाहिए. जैसे कि ब्रिटेन में स्काटलैंड यार्ड है जो कि पुलिस के अपराधों की जांच करता है.

प्रश्न : यह संस्था किस प्रकार की होनी चाहिए, दूसरे शब्दों में इस प्रकार की जांच किन व्यक्तियों द्वारा की जानी चाहिए?

उत्तर : मेरे विचार से सेना के अवकाश प्राप्त उच्च अधिकारी पुलिस के विरुद्ध लगाए गए आरोपों की जांच के लिए नियुक्त किए जाने चाहिए, क्योंकि उन में अनुशासन, ईमानदारी व नैतिकता होती है.

प्रश्न : क्या और अधिक संख्या में पुलिस में महिलाओं की भरती कर के इस समस्या का हल निकाला जा सकता है?

उत्तर : महिलाएं पुलिस में अधिक संख्या में भरती की जाएंगी तो उन्हें रोजगार के और अवसर मिलेंगे. पर मैं ने अकसर अखबारों में पढ़ा है कि स्वयं महिला पुलिस ने ऐसी गंदी हरकतें की हैं जिस से कि सिर शर्म से झुक जाए. अतः इस संबंध में मैं कुछ नहीं कह सकती कि महिलाओं की पुलिस में और अधिक नियुक्ति करने से उन पर होने वाले अत्याचारों में कोई कमी आ जाएगी.

बलात्कार के मुकदमे कहां हों?

प्रश्न : बलात्कार की शिकार महिलाओं के मुकदमे विशेष अदालतों में चलाने तथा महिलाओं को पुलिस की हिरासत में रखने के बारे में आप क्या कहना चाहेंगी?

उत्तर : महिलाओं पर हुए अत्याचार का मुकदमा एक बंद कमरे में, महिला न्यायाधीश की अदालत में

चलाया जाना चाहिए. मेरे विचार से महिला को यह प्रमाणित न करना पड़े कि उस के साथ बलात्कार हुआ है बल्कि अपराधी स्वयं अपने बचाव के लिए प्रमाण प्रस्तुत करे. पुलिस की हिरासत में मैं महिलाओं को रखे जाने के सख्त खिलाफ हूं. मेरे निर्वाचन क्षेत्र में, पुलिस हिरासत में रखी गई महिलाओं के साथ ऐसी ही घटनाएं घटीं. मैं उस समय एक विधायक होने के बाद भी उन्हें न्याय नहीं दिलवा सकी.

पुलिस के पास बचाव के बहुत रास्ते हैं. वह पूरी की पूरी मेडिकल रिपोर्ट तक बदलवा देते हैं. बालिग को नाबालिग व नाबालिग को बालिग बना देते हैं. अतः इस प्रकार का भ्रष्टाचार तभी दूर हो सकता है जब कि पुलिस द्वारा किए गए अपराधों की जांच पुलिस द्वारा न करा कर एक अलग निष्पक्ष संस्था द्वारा कराई जाए, जिसे जनता का विश्वास प्राप्त हो. ●

आप के पूरे परिवार के लिए

विश्व सुलभ साहित्य

द्वारा प्रस्तुत उत्कृष्ट पुस्तकें

मृच्छकटिकम्
शूद्रक का ईसापूर्व की पहली शताब्दी में लिखा गया वह नाटक जिस के पात्र राजारानी न हो कर जनसाधारण हैं.
रु. 12.00

दीवान ए गालिब
गालिब की शायरी –का प्रत्येक शेर के साथसाथ भावार्थ अनुवाद संग्रह.
रु. 6.50

स्वर के दीप
मनमोहक चित्रों से सुसज्जित मन को छूने वाले गीतों का संग्रह.
रु. 5.00

जय कश्मीर
भारतीय सेना के पराक्रम की अमर गाथा, इस महाकाव्य में पहली बार गीतों के रूप में.
रु. 7.50

भटकता राही
स्पेन अफ्रीका व अन्य कई देशों की यात्रा विवरण के साथ ही भारतीयों के प्रति विदेशियों के व्यवहार की झलक देखिए.
रु. 5.00

उद्यान की रूपरेखा
सरल सुबोध भाषा में उद्यान विषयक ज्ञान देने वाली अद्वितीय पुस्तक.
रु. 5.00

हाकी
हाकी की रुचि रखने वालों के लिए संपूर्ण जानकारी देने वाली पुस्तक
रु. 3.00

हिंदू समाज के पथभ्रष्टक तुलसीदास
हिंदू समाज के पथ दर्शक माने जाने वाले संत कवि की वास्तविकता क्या थी? इस पुस्तक में पढ़िए.
रु. 8.00

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

तीन या तीन से अधिक पुस्तक लेने पर 15 प्रतिशत तथा डाक खर्च की छट या

[अप]राधियों के लिए सिर दर्द

लुटेरों से धन को बचाने के लिए [स्]वीडन की एक कंपनी ने एक अनोखा [उ]पाय खोज निकाला है. इस कंपनी ने एक [वि]शेष प्रकार का ब्रीफकेस तैयार किया है.

इस ब्रीफकेस को यदि बलपूर्वक [ख]ोला जाए तो उस में रखे सभी नोटों पर [ह]रे रंग की अमिट छाप लग जाएगी.

पांच किलो वजन के इस ब्रीफकेस के अंदर की तरफ एक स्वचालित यंत्र [ल]गा हुआ है. यदि इस ब्रीफकेस को चाबी के अतिरिक्त किसी अन्य औजार से [ख]ोलने का प्रयत्न किया जाएगा तो वह यंत्र अपने आप चलने लगेगा और सभी नोटों [क]ो रंग देगा. इस से चोर उन नोटों का लाभ नहीं उठा सकेगा.

इस यंत्र में एक घड़ी होती है जो निर्धारित अवधि के बाद यंत्र को चालू कर [दे]ती है. इस ब्रीफकेस में 70 लाख क्रोनर (स्वीडन की मुद्रा) रखे जा सकते हैं.

✦

[ज]ानवर आदमी से ज्यादा समझदार

लंदन में यातायात नियमों का पालन करने में कुत्ते इनसानों से ज्यादा समझदार पाए गए हैं.

होता यह है कि जब कोई कुत्ता बाहर घूमने निकलता है तो लंदन की भीड़ [भ]री सड़कों को पार करते समय वह पैदल पारपथ (जेबरा क्रासिंग) से ही सड़क [प]ार करता है, जब कि अनेक लोग गलत जगह से सड़क पार करते हुए दुर्घटनाओं के [शि]कार हो जाते हैं.

ब्रिटेन की बिल्लियां भी कहीं ज्यादा ईमानदार पाई गईं. वहां सुबहसुबह [दू]ध देने वाले लोग घरों के दरवाजों के सामने दूध की बोतलें रख जाते हैं. मगर बिल्लियां उन बोतलों को हानि नहीं पहुंचातीं. वे चुपचाप उन बोतलों के पास बैठी [र]हती हैं, ताकि दरवाजा खुलने पर घर वाले उन की ईमानदारी के लिए स्वयं उन्हें [थ]ोड़ा सा दूध दे दें.

✦

हवाई जहाज की छत पर यात्रा

बस या रेल की छत पर बैठ कर यात्रा करना तो फिर भी संभव है मगर हवाई जहाज की छत पर यात्रा करने की कल्पना से ही मन में दहशत पैदा होने [ल]गती है.

किंतु पश्चिमी जरमनी के एक 41 वर्षीय मोटरकार विक्रेता बेजनर ने हवाई [ज]हाज की छत पर बैठ कर अटलांटिक महासागर को पार किया. पानी को बर्फ बना [दे]ने वाली सर्दी का आठ घंटे तक मुकाबला करने के बाद वह ग्रीनलैंड से न्यूफाउंडलैंड पहुंचे.

बेजनर को हवाई जहाज की छत पर चालक कक्ष के ठीक पीछे तारों और [च]मड़े की रस्सियों से बांध दिया गया था. जहाज से उतरने के बाद उन्होंने कहा [कि] आसमान में तेज बर्फीली हवाओं के थपेड़ों के अलावा उन्हें कोई विशेष कठिनाई [न]हीं हुई. इस सर्दी से उन का सारा शरीर अकड़ गया और खून भी जम गया. वैसे [इ]स प्रकार यात्रा करना उन्हें रोमांचक लगा.

नेताजी डबल रोल में

व्यंग्य • शंकरलाल मीणा

दफ्तर में हुई हड़ताल में सभी कर्मचारी शामिल हुए थे. उन्हें कोई फायदा मिला हो या न मिला हो, पर नेताजी ने जो दोहरी चाल चली उस ने उन के वारे-न्यारे जरूर कर दिए...

नाम तो वैसे उन का [illegible] है पर कहते सब उन को नेताजी हैं. उन के व्यक्तित्व को देखते हुए उन के लिए यह विशेषण कुछ जंचता भी है. उस दिन नेताजी कुछ आवश्यकता से अधिक ही जोश में थे. दफ्तर पहुंच कर समाचार-पत्र में हड़ताल की खबर पढ़ कर उन के चेहरे पर इस तरह के भाव आ चुके थे, जैसे किसी भूखे ब्राह्मण को यजमान के यहां का न्यौता मिल गया हो. वह महसूस करने लगे कि इस समय हड़तालियों को उन की सख्त जरूरत है. उन को लगने लगा कि जैसे उन के सिर एक ऐसा काम आ पड़ा है, जिस की सारी सफलता केवल उन पर ही निर्भर है.

सो, नेताजी तुरंत हरकत में आ गए. इस क्रम में उन्होंने सब से पहला कार्य तो यह किया कि वह अपने कमरे से फौरन बाहर आए, अपनी साइकिल उठाई और हवा की गति से घर के लिए रवाना हो गए. हुआ यह था कि वह रोज की तरह कमीजपेंट पहन कर कार्यालय आ गए थे. अवसर को देखते हुए यह पोशाक उन्हें उपयुक्त नहीं लगी. इसलिए घर आ कर उन्होंने इधरउधर से ढूंढ़ कर अपना कुरतापाजामा निकाला. मारे मैल

वे सफेद से मटमैले हो रहे थे. पर इस की परवा किए बगैर उन्होंने वही पहन लिए. अच्छेखासे जूते थे. पर उन्हें निकाल कर उन्होंने हवाई चप्पलों का वरण किया. फिर किताबों व कागजों के सम्मिलित ढेर में से उन्होंने अपनी फटीपुरानी डायरी खोज निकाली. कुरते से उस की धूल साफ करते हुए उन्होंने एकदो कागज तह कर उस में रख लिए.

किंतु पूरे कमरे में इधरउधर घूम रही उन की खोजी निगाहों से लगता था कि वह अभी तक अपनी तैयारी से संतुष्ट नहीं हुए थे. कुछ ढूंढ़तेढूंढ़ते वह रसोई में जा पहुंचे. वहां खूंटी पर एक लंबा सा झोला टंगा था. एक झटके में उन्होंने उसे उतारा और उसे उलटा कर दिया. उलटा करते ही उस में से कुछ आलू व प्याज धड़ाधड़ फर्श पर आ गिरे. गिरते ही पहले तो वे कत्थक नृत्य करने लगे, फिर इधरउधर आराम फरमाने लगे. नेताजी उधर ध्यान न दे झोले को जोर-जोर से झाड़ने लगे. उस में से कुछ प्याज के छिलके व सूख कर सिमटी हुई हरी मिर्चें निकल रही थीं. झाड़ने के बाद उन्होंने उस में डायरी रखी और उसे कंधे पर लटका लिया. दरवाजे से निकलते-निकलते उन्होंने एक नजर दर्पण में डाली. अपने चेहरे की भौगोलिक स्थिति का सर्वेक्षण किया और बाहर आ गए. फिर वह साइकिल पर बैठ कर दफ्तर के लिए रवाना हो गए. रास्ते में एक स्थान से समाचारपत्र लिया और उसे भी झोले में

चदूलाल घर जा कर नेताओं का पहनावा पहन कर फिर दफ्तर आ पहुंचे और लगे भाषण झाड़ने.

रख लिया. इस प्रकार सज्जन कर वह फिर दफ्तर पहुंच गए.
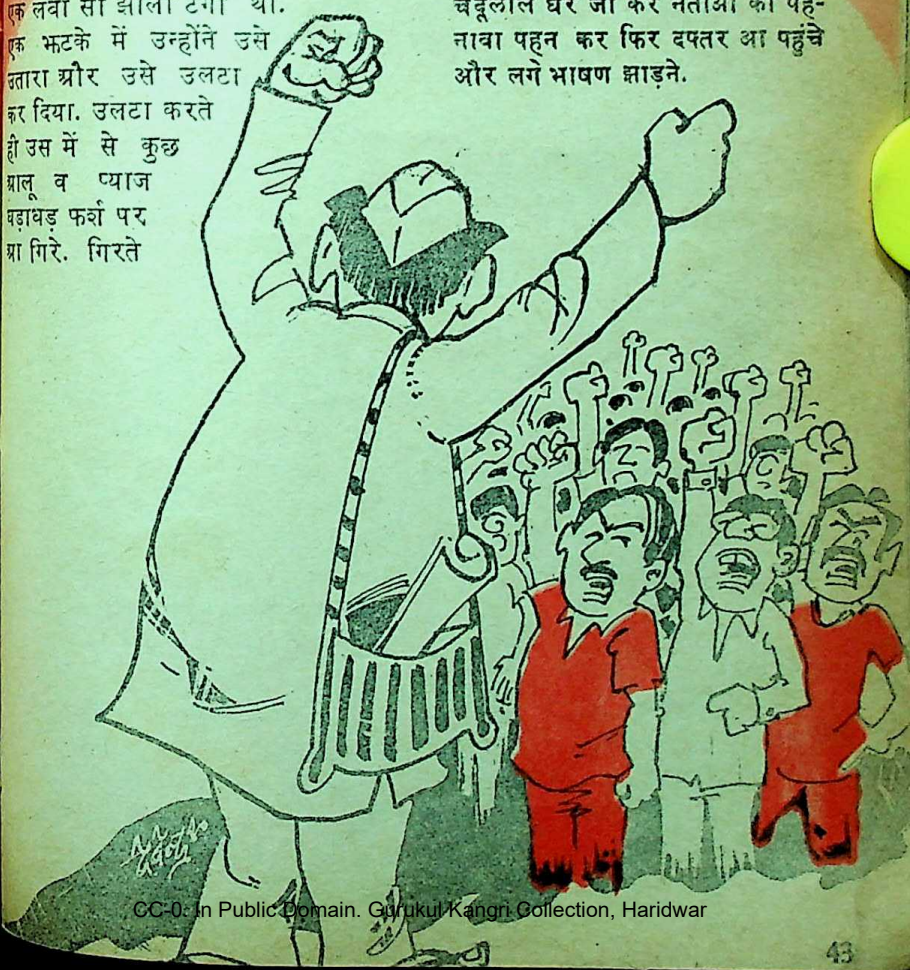
दफ्तर के सभी कर्मचारियों के बीच चर्चा का एक ही विषय था-- 'हड़ताल.' अपनीअपनी समझ के अनुसार उस पर सब टीकाटिप्पणी कर रहे थे. कुछ लोग हड़ताल का समर्थन कर रहे थे. एक सज्जन कह रहे थे, "हमारे हड़ताल में भाग लेने या न लेने से क्या फर्क पड़ेगा?"

"सभी लोग तुम्हारी तरह सोचने लगें तो हो चुका कर्मचारियों का भला."

यह बात नेताजी ने कमरे में प्रविष्ट होते हुए सामने बैठे उस कर्मचारी की बात सुन कर कही थी. उन की बात सुन कर वह सज्जन कुछ झेंप से गए. अब सभी की दृष्टि नेताजी पर केंद्रित हो गई. मुस्कराते हुए नेताजी अंदर आ कर खाली पड़ी एक कुरसी पर बैठ गए. झोले को उतार कर उन्होंने सामने मेज पर रखा. फिर उपस्थित लोगों पर नजर डाली. एक चपरासी से कह कर उन्होंने बाकी कर्मचारियों को भी वहां बुलवा लिया. सब के एकत्र हो जाने पर नेताजी ने कहना प्रारंभ किया :

"साथियो, जैसा आप लोगों ने अखबार में पढ़ा है, हमारी यूनियन ने आज से हड़ताल करने का निश्चय किया है. यह फैसला हम ने अचानक नहीं लिया है, एक महीने पहले ही इस के बारे में हम ने सरकार को नोटिस दे दिया था. पर भाइयो, कहते हैं न कि बगैर रोए तो मां भी अपने बच्चे को दूध नहीं पिलाती. यही वजह है कि अभी तक सरकार के कानों पर जूं तक नहीं रेंगी है. हार कर हम ने आंदोलन का सहारा लिया है, क्योंकि लातों के भूत बातों से नहीं मानते.

"यह आंदोलन एक बार प्रारंभ होने के बाद तभी समाप्त होगा, जब हमारी मांगें मान ली जाएंगी. उस से पहले किसी भी सूरत में नहीं. ये मांगें किसी एक व्यक्ति की नहीं हैं, किसी एक वर्ग की नहीं

हैं, बल्कि हम सब की हैं. प्रत्येक कर्मचारी को लाभ होगा. इसलिए आज से हम सब हड़ताल पर रहेंगे. न हम काम करेंगे और न ही होने देंगे. संगठन में बहुत शक्ति होती है. मजदूरों की इस संगठित शक्ति ने कई देशों में सरकारें बदल डाली हैं. फिर हमारी तो साधारण सी मांगें हैं. हम अपना हक मांग रहे हैं, कोई खैरात या भीख नहीं.

"हमारे कुछ नए साथी डर रहे हैं, यह सोच कर कि हड़ताल में भाग लेने से न जाने उन के विरुद्ध क्या काररवाई की जाएगी. मैं उन साथियों से यह कहना चाहता हूं कि डरने की कोई बात नहीं है. मुझे इस विभाग में पापड़ बेलते 15 वर्ष हो गए हैं. मैं यहां की रगरग से परिचित हूं. लेकिन फिर भी अगर कोई इस तरह की समस्या आई तो पहले उस का समाधान किया जाएगा, उस के बाद ही हम काम पर जाएंगे. इस की मैं आप को गारंटी देता हूं. अब आप सब लोग मेरे साथ आइए."

इस लंबे भाषण के बाद नेताजी कुरसी से उठ खड़े हुए. कार्यालय के बाकी कर्मचारी भी उन के पीछेपीछे कार्यालय से बाहर आ गए. नारेबाजी होने लगी. थोड़ी देर तक नारे लगवाने के बाद चंदूलाल जी बोले, "आप लोग यहीं ठहरिए. मैं जरा अधिकारी महोदय से बात कर के आता हूं. उन को बताता हूं कि आज में

इस कार्यालय में हड़ताल नहीं होगा," कहते हुए चंदूलाल ने झोले से डायरी निकाल कर हाथ में ले ली और साहब के कमरे की ओर चल दिए.

"आइए, चंदूलालजी," साहब ने कहा.

"नमस्ते श्रीमान," हाथ जोड़ कर मुस्कराते हुए चंदूलाल ने कहा.

"तो आप हड़ताल पर हैं?"

"आप तो जानते हैं, श्रीमान, मैं ने हमेशा प्रबंधकों का ही साथ दिया है, हड़ताल करने वालों का नहीं." एक कुरसी खींच कर चंदूलाल बैठ गए.

"अभी तो आप नारे लगवा रहे थे," साहब बोले.

"नारों का हड़ताल से क्या संबंध है, श्रीमान?"

"मैं समझा नहीं."

"बात यह है, श्रीमान, कि लोगों को मूर्ख बनाने के लिए यह जरूरी है."

"मतलब आप हड़ताल के पक्ष में नहीं है?" साहब ने पूछा.

"बिलकुल नहीं."

"क्यों?" साहब भी जिज्ञासु हो उठे थे.

"इसलिए कि उन की यूनियन अलग है, हमारी यूनियन अलग है. और फिर यह हड़ताल कर्मचारियों की मांगों के लिए नहीं, बल्कि नेताओं के व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए हो रही है, अपनी साख बनाने के लिए की जा रही है." चंदूलाल अर्थभरी दृष्टि से साहब की ओर देखने लगे.

"आप तो काफी पुराने आदमी हैं, चंदूलालजी, यह बताइए कि इस मौके पर हमें क्या कदम उठाने चाहिए?" साहब ने पूछा.

चंदूलाल इस समय अपने आप को विश्व का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति समझ रहे थे. उन्होंने पहले दरवाजे की ओर देखा, फिर किसी राज्यपाल के

वरिष्ठ सलाहकार की भांति धीमे स्वर में कहने लगे, "श्रीमान, मेरे विचार में तो हड़ताल में भाग लेने वाले कर्मचारियों की सूची बना कर उच्चाधिकारियों के पास भेज देनी चाहिए. बाकी काम वहां से अपने आप हो जाएगा. कुछ दिनों बाद कुछ को चार्जशीट, कुछ को तबादले के आदेश तथा कुछ को मुअत्तल कर दिया जाए. सच कहता हूं, श्रीमान, फिर इस कार्यालय में कभी हड़ताल नहीं होगी."

"धन्यवाद, चंदूलालजी, आप ने एक काम की बात बताई है." साहब ने कृतज्ञता व्यक्त की तो चंदूलाल फैल कर चौगुने हो गए. कूटनीतिक अंदाज में बोले, "मैं बाहर जा रहा हूं, श्रीमान, आप से यह कहने आया था कि मुझे अवकाश पर समझें, हड़ताल पर नहीं." कहते हुए चंदूलाल ने अपना झोला उठाया और कमरे से बाहर आ गए. बाहर खड़ा जनसमुदाय उन्हीं की प्रतीक्षा कर रहा था. चंदूलाल ने सब को पास वाले मैदान में चलने का संकेत किया.

थोड़ी देर बाद चंदूलाल मैदान में कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कह रहे थे, "साथियो, मैं ने स्थानीय अधिकारियों से बातचीत करने का प्रयास किया, किंतु वे इस के लिए तैयार नहीं हैं. पर हमारा निश्चय अटल है. हम ने फैसला किया है कि एक प्रतिनिधिमंडल उच्चाधिकारियों से वार्ता करने के लिए भेजा जाए. प्रत्येक वर्ग में से एक आदमी

इस दल में लेना पड़ेगा. फिर भी हम प्रयास करेंगे कि कम से कम आदमी हों. कुल मिला कर 10 से 12 आदमियों का एक प्रतिनिधिमंडल कल प्रातः रवाना होगा.

"इस कार्य के लिए धन की नितांत आवश्यकता है. इतने आदमियों का कम से कम आनेजाने का किरायाभाड़ा तो देना ही होगा. हो सकता है, वहां एकदो दिन ठहरना भी पड़े. ऐसी स्थिति में उन के ठहरने व खानेपीने की व्यवस्था भी करनी होगी. लेकिन यह खर्चा उस लाभ के मुकाबले में कुछ नहीं है, जो हड़ताल के बाद हम सब को होगा. इसलिए आप सब लोग अभी इसी वक्त अपनी क्षमता के अनुसार चंदा दें. ताकि शीघ्रातिशीघ्र प्रतिनिधिमंडल रवाना हो सके."

इस के बाद वहां चंदा एकत्र किया जाने लगा.

दूसरे दिन चंदूलाल अकेले ही रवाना हो गए. अकेले इसलिए कि वह अपने आप को किसी प्रतिनिधिमंडल से कम नहीं आंकते थे. राजधानी पहुंच कर उन्होंने होशियारीलाल से भेंट की. होशियारीलाल उस यूनियन के नेता थे, जिस के कहने पर यह हड़ताल प्रारंभ हुई थी. पहले चंदूलाल और होशियारीलाल दोनों एक ही यूनियन के पदाधिकारी थे. चंदूलाल अध्यक्ष और होशियारीलाल महामंत्री थे. चंदे के मामले को ले कर दोनों में झगड़ा हो गया और दोनों अपनेअपने समर्थकों को ले कर अलग हो गए थे. नेतागीरी उन के रक्त में घुल चुकी थी, इसलिए वे शांत नहीं रह सके और दोनों फिर अलग यूनियनों में आ गए थे.

आज दोनों महारथी आमनेसामने थे.

"कहिए, आप के शहर में हड़ताल कैसी चल रही है?" होशियारीलाल ने पूछा.

"शतप्रतिशत ठीक, लेकिन..."

"लेकिन क्या?"

"लेकिन वह तब तक ही रहेगी, जब तक कि मैं चाहूंगा," चंदूलाल ने कुटिलता के साथ कहा.

"मतलब?" होशियारीलालजी असमंजस में थे.

"मतलब यह कि राजपुर में हड़ताल हमारे कार्यालय पर निर्भर है और कार्यालय के सब कर्मचारी मेरी मुट्ठी में हैं. आज वे सब हड़ताल पर हैं, पर कल मैं कहूं तो सब काम पर लौट आएंगे और अगर ऐसा हुआ तो आप की इस हड़ताल की सफलता खटाई में पड़ जाएगी. तब शायद यह आप की अंतिम हड़ताल होगी. अर्थात आप की नेतागीरी का खात्मा.

होशियारीलाल चंदूलाल की बात को समझने का प्रयास कर रहे थे. बोले, "आप साफसाफ कहिए न."

"सीधी सी बात है कि इस हड़ताल की सफलताअसफलता में मेरी निर्णायक भूमिका है."

"समझा," होशियारीलाल ने गरदन हिलाते हुए कहा, "लेकिन कर्मचारियों की मांगें...?"

"अजी, कर्मचारी जाएं भाड़ में, अपनी बला से. आप अपनी सोचिए, मेरी सोचिए. अगर यह हड़ताल सफल रही तो आप की चांदी ही चांदी है," होशियारीलाल की बात बीच में काट कर चंदूलालजी फूट पड़े. होशियारीलाल भी सोचतेसोचते शायद कुछ निश्चय की स्थिति में आ चुके थे. तभी तो उन्होंने एकदम सीधे पूछ लिया, "इस में आप का मेहनताना?"

"वही पुराना समझौता," चंदूलाल ने इस तरह से कहा, जैसे यह वाक्य उन्होंने पहले से सोच रखा हो.

चंदूलाल की यह बात सुन कर होशियारीलाल मन ही मन तिलमिला उठे. पर कुछ सोच कर निर्णय लेते हुए बोले, "मंजूर है."

"यह हुई न काम की बात," प्रसन्नता

चंदूलाल की बात सुन होशियारीलाल सोच में पड़ गए.
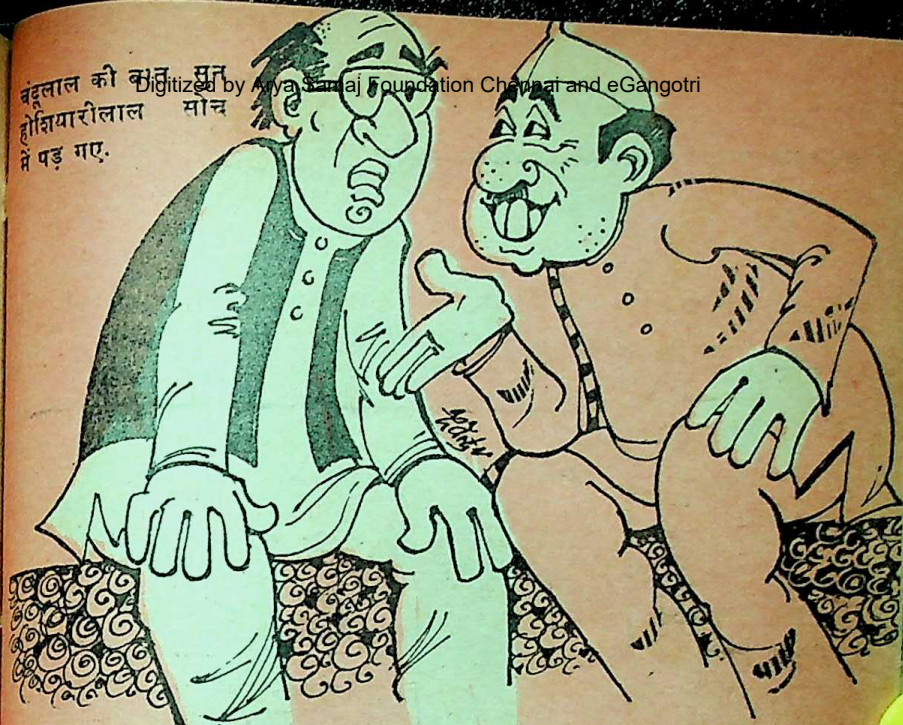
से उछलते हुए चंदूलाल ने होशियारीलाल से बड़े जोश के साथ हाथ मिलाया. फिर चलने का उपक्रम करते हुए बोले, "अब देखना आप, अधिकारियों को नाकों चने नहीं चबवा दिए तो मेरा नाम चंदूलाल नहीं."

दूसरे दिन चंदूलाल वापस आ गए. वह बेहद खुश थे. होशियारीलाल से उन का समझौता हो गया था. अगले दिन वह जुलूस के साथ कार्यालय पहुंचे. एक चपरासी ने आ कर बताया कि उन को साहब बुला रहे हैं. वह उस के साथ ही साहब के कमरे की ओर चले गए.

"एक सूची बनानी है," साहब ने कहा.

"क्षमा कीजिएगा, साहब, मैं हड़ताल पर हूं," चंदूलाल ने रहस्योद्घाटन किया.

"कल तक तो आप विरोध में थे?"

"वह इसलिए कि पहले हड़ताल व्यक्तिगत उद्देश्यों के लिए थी."

"तो अब क्या उद्देश्य बदल गए हैं?" साहब ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा.

"जी हां, मैं ने नोटिस में कुछ संशोधन करने का सुझाव रखा था, जिस को उन्होंने मान लिया. बस, हम भी आंदोलन में शामिल हो गए हैं."

"आप ने तो कहा था कि आप हमेशा प्रबंधकों के साथ रहे हैं?" साहब ने याद दिलाया.

प्रबंधकों ने हम को क्या दिया है आज तक?" चंदूलाल के बदले हुए तेवर देख कर साहब भी कुछ सहम गए. बोले, "तो आप हड़ताल करेंगे?"

"जी, हां, हम हड़ताल करेंगे और जरूर करेंगे. तब तक करेंगे, जब तक हमारी मांगें नहीं मान ली जातीं," चंदूलाल ने साहब की मेज पर जोर से मुक्का मारते हुए कहा और अपना झोला उठा कर कमरे से बाहर आ गए. बाहर आ कर उन्होंने जनसमुदाय के सामने हाथ उठा कर जोर से कहा, "इनक्लाब..."

"जिंदाबाद..." जनसमुदाय का गगनभेदी स्वर उभरा. ●

CARAVAN
Fortnightly
Of National
Resurgence
CARAVAN awakes your social
consciousness.....makes you think
of your obligations and responsi-
bilities, exploding traditional
anachronism that have retarded
India's march towards modernism.
Through views and reviews, short
stories and humour, every fortnightly
CARAVAN acts as the catalyst to
action with understanding. An
informed and enlightened citizen is
that best citizen and CARAVAN
readers are just that.
BUY
YOUR
COPY
TODAY
DELHI PRESS
GROUP OF MAGAZINES
LEAD THE WAY....

इस स्तंभ के लिए समाचार-पत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : शाबाश, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

घड़ियाल से संघर्ष

अदम्य शौर्य का एक अपूर्व उदाहरण उस समय देखने को मिला जब निकोबार के एक युवक ने स्वयं को मौत के मुंह से बचा लिया. प्रोग्रेस नामक युवक अपने संबंधियों से मिलने अंडमान से निकोबार जा रहा था. रास्ते में एक नाले को पार करते समय एक घड़ियाल ने उस के बाएं पैर को अपने जबड़ों में मजबूती के साथ पकड़ लिया. पर उस बहादुर युवक ने घुटने नहीं टेके और अपने पैर को मुक्त कराने के लिए बहादुरी के साथ संघर्ष किया.

काफी देर तक जब उस युवक को सफलता नहीं मिली तो उस ने घड़ियाल की गरदन को दबोचना आरंभ कर दिया, जिस का परिणाम यह हुआ कि घड़ियाल वह पीड़ा सहन नहीं कर सका. इस पर घड़ियाल ने अपनी पकड़ ढीली कर दी और वह युवक उस के चंगुल से निकल गया.

—विश्वमित्र, कलकत्ता (प्रेषक : बल्लभदास बिन्नानी)

✦

✦ ढाई रुपए में शादी

मध्य प्रदेश की एक युवती सीतारानी का विवाह बारीडीह में निरंकारी मंडल की ओर से ढाई रुपए में किया गया.

कहते हैं कि लड़के के पिता ने जमशेदपुर में किसी रिश्तेदार के यहां अपनी विधवा मां के साथ आई उस युवती को देखा था. लड़के के पिता और उस के पूरे परिवार को वह लड़की अच्छी लगी. इस पर उन्होंने विवाह के लिए बातचीत चलाई.

इस विवाह पर कुल ढाई रुपए खर्च आया. इस में से डेढ़ रुपया शादी करवाने वाले को तथा एक रुपया अन्य खर्च के लिए देना पड़ा. मजे की बात यह है कि यह ढाई रुपए भी दूसरों ने ही दिए. उल्लेखनीय है कि वर का पंजाब में अच्छाखासा व्यापार है.

—सांध्य टाइम्स, दिल्ली (प्रेषक : धर्मपाल जिंदल) (सर्वोत्तम)

✦

महिला के मूसल का कमाल

देवगांव थाने के बहादुरपुर गांव में एक महिला ने डाकुओं को मूसल के प्रहार से घायल कर मकान के भीतर नहीं घुसने दिया.

पिछले दिनों वहां डाकुओं ने जब एक मकान का दरवाजा तोड़ कर भीतर घुसना चाहा तो घर में सो रही एक महिला ने मूसल से एक डाकू के सिर पर प्रहार कर दिया जिस से उस का सिर फट गया. साथ ही उस ने जोर से शोर मचाना भी शुरू कर दिया जिस से डाकुओं को खाली हाथ, अपने घायल साथी को ले कर भाग जाना पड़ा.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : [illegible] बंसल) ●

ये चर्मकार कितने बेकार
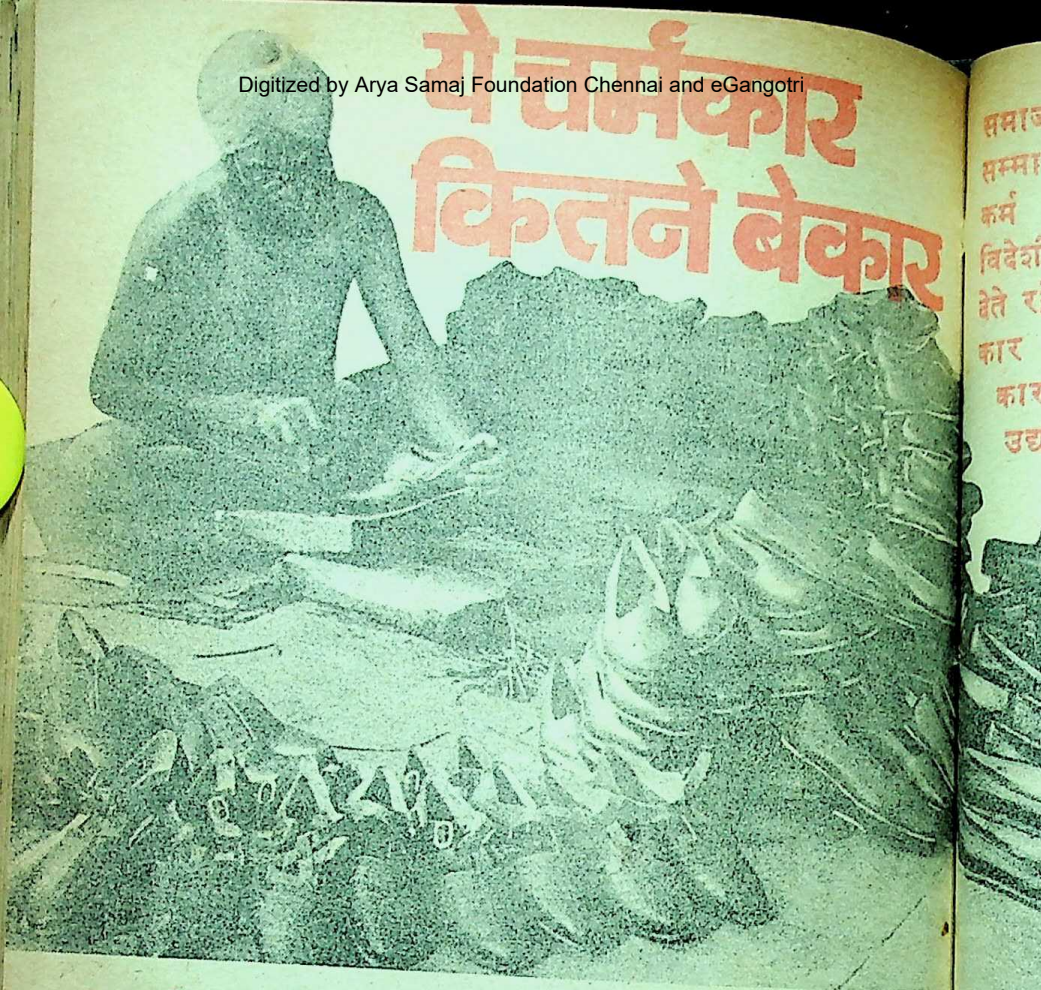
भारतीय समाज में प्राचीन काल में चर्मकार को जाति की दृष्टि से भले ही महत्त्व प्राप्त न रहा हो, पर जीवन के विभिन्न कार्यकलाप में उस का दखल जरूर रहा. ढोल, नगाड़ों, सैनिक ढालों व वस्त्रों आदि सभी पर उस की अमिट छाप होती थी. पर आज स्थिति और भी विचित्र है. आज न तो चर्मकार को समाज में गौरव प्राप्त है और न उस के काम को. इस से उस का जीवन निर्वाह तक मुश्किल हो गया है. उस के सामने अनेक विकट समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं.

कुछ लोग इस बात को मानते हैं कि चर्मकारों की समस्याओं की जटिलता का मुख्य कारण सवर्ण व हरिजन संघर्ष है. पर वास्तव में कुछ ऐसी समस्याएं भी हैं, जिन्हें ये अपनी अशिक्षा के कारण नहीं सुलझा पाते.

भारत का चर्मकार विश्व भर में अपनी कला के लिए प्रसिद्ध रहा है. वह भारत को बहुत बड़ी मात्रा में विदेशी पूंजी दिला रहा है. फिर भी वह खुद निर्धनता का शिकार है. आज लाखों चर्मकारों के समक्ष रोजीरोटी की समस्या मुंह बाए खड़ी है. यह एक विडंबना ही है कि भारत का चर्मकार कठिन परिश्रम करने के बावजूद विश्वासपूर्वक यह नहीं कह सकता कि आने वाला कल उसे या उस के परिवार को रोटी भी दे सकेगा या

समाज भले ही चर्मकार को सम्मान न दे, पर वे अपने कर्म से देश को बराबर विदेशी पूंजी जुटाने में मदद देते रहे हैं. लेकिन अब सरकार की अदूरदर्शिता के कारण देश का चर्म उद्योग भी डांवाडोल होने लगा है.

लेख • सत्येंद्र उप्पल

नहीं. ऐसा क्यों? देश उस की कलात्मकता का उचित मूल्यांकन क्यों नहीं करता? यह सब जानते हुए भी सरकार कोई कदम क्यों नहीं उठा रही है?

निर्धनता के मुख्य कारण

चर्मकारों के निर्धन होने के मुख्यत: दो कारण हैं—व्यक्तिगत और व्यावसायिक.
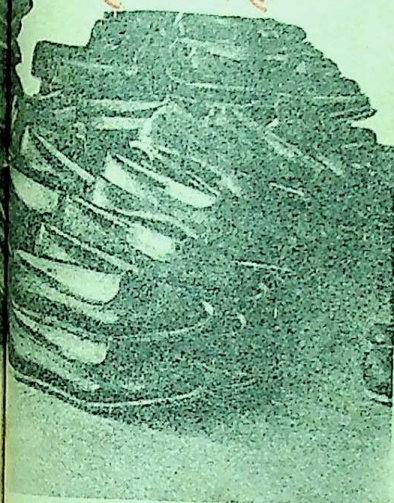
चर्मकार विभिन्न समस्याओं को खुद ही जन्म देता है. प्राय: चर्मकार अशिक्षित होते हैं, जिस के कारण उन में बहुत अंधविश्वास पाए जाते हैं. तीजत्योहारों पर अनावश्यक व्यय करते हैं और कई दिनों तक कामकाज से भी छुट्टी पर रहते हैं. शराब, अफीम आदि का सेवन कर के वे अपनी आर्थिक स्थिति और खराब कर लेते हैं.

भारतीय चर्मकार आज तक शिक्षित नहीं हो पाए हैं, जबकि इन्हें सरकारी सहायता व सुविधाएं भी प्राप्त हैं. आखिर ऐसा क्यों है?

इन के अशिक्षित रहने के अनेक कारण हैं. इन में से मुख्य कारण यह है कि इन्हें मजदूरी समय के अनुसार न दे कर कार्य के अनुसार दी जाती है. अतएव यह जितना काम करते हैं, उसी हिसाब से पैसा कमाते हैं. होलसी ने कार्य के अनुसार मजदूरी के भुगतान का जो सिद्धांत निर्धारित किया था और जो भारत सहित अनेक राष्ट्रों में अपनाया जाता है, वह इन लोगों पर लागू नहीं होता.

चर्मकारों की मजदूरी दर बहुत कम

जूतों को बाजार में बिक्री के लिए भेजने से पूर्व उसे तराशा जाता है? जिस से जूता चमकदार व मुलायम हो जाता है. पर इतनी अधिक मेहनत के बावजूद क्या चर्मकार को उस का उचित मूल्य मिल पाता है?

है, इसलिए वे सदैव अधिक कार्य करने को उत्सुक रहते हैं. परिणामतः वे अपने छोटेछोटे बच्चों को भी काम पर साथ-साथ लगाए रखते हैं और छोटेमोटे काम इन बच्चों से ही करवाते हैं. अतः इन के बच्चे पढ़ने से वंचित रह जाते हैं और व्यावसायिक दावपेंच समझने में असमर्थ हो जाते हैं.

चर्मकारों में एक व्यक्तिगत दोष यह भी है कि वे अधिक मात्रा में नशा करते हैं. मादक पदार्थों से इन का चोलीदामन का साथ रहता है. इस का भी प्रमुख कारण इन के काम के अनियमित घंटे ही हैं. जीवनयापन के लिए कुछ अधिक धन जुटाने के लिए वे रात देर तक काम करते हैं. मानव के लिए मनोरंजन आवश्यक है. पर जब तक वे काम कर के बाहर निकलते हैं तब तक मनोरंजन के सभी ठिकाने बंद हो चुके होते हैं. इसलिए प्रायः वे नशीले पदार्थों का सेवन कर झूमते हुए घर पहुंचते हैं और घर पहुंच कर अपनी पत्नी व बच्चों को पीटते हैं.

मनोरंजन के नाम पर लेदे कर पत्नी का संग ही एक साधन है. इसी अशिक्षा व अज्ञान के कारण पत्नी को गर्भ ठहर जाता है, जिस के कारण इन की जनसंख्या निरंतर बढ़ती जाती है. अंधविश्वास के कारण वे निरोध व परिवार कल्याण के अन्य कार्यक्रमों में भी रुचि नहीं लेते.

आय से व्यय अधिक होने के कारण इन की औरतें संभ्रांत परिवारों में छोटे-मोटे काम करती हैं और बच्चे सड़कों पर बूटपालिश व जूतों की मरम्मत का काम करते हैं. जहां भी चर्मकार वर्ग रहता है, वहां इन की औरतों ने सब्जी बेचने का भी काम अपने हाथ में ले लिया है.

चर्मकार आज चर्म उद्योग की समस्याओं से घबरा कर अपना काम छोड़ कर रिक्शा चलाने जैसे काम भी करने लगे हैं. इस में दोष इन चर्मकारों का है अथवा उन पैसे वाले चर्म व्यवसायियों का, जिन्होंने मूल रूप से व्यवसाय की कुंजी अपने हाथ में ले कर इन गरीब चर्मकारों को दयनीय बना दिया है.

दरअसल वर्तमान व्यावसायिक स्वरूप ही अधिक दोषपूर्ण है, जिस के फलस्वरूप भारतीय चर्म उद्योग टूटता जा रहा है. चर्म उद्योग की समस्याओं में कुछ स्वाभाविक हैं तो कुछ कृत्रिम. ज्यादा से ज्यादा कमाने की होड़ के कारण चमड़े की वस्तुओं की श्रेष्ठता घटती जा रही है. आगरा में आज भी पेठे के छिलकों के सोल लगे जूते मिल सकते हैं. गत्ता आदि लगी चर्म वस्तुएं न केवल छोटी कंपनियों
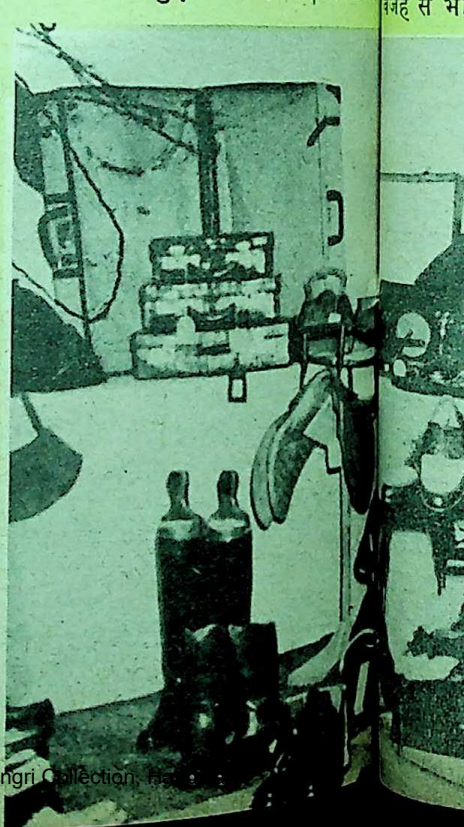
भारत में बनी चमड़े की वस्तुओं के निर्यात में पिछले 10 वर्षों से जो कमी आई है उस से भारतीय चर्म उद्योग की स्थिति और अधिक शोचनीय हो गई है. फिर भी सरकार अभी तक खामोश क्यों है?

बल्कि बड़ी बड़ी कंपनियों के नाम पर भी बेची जाती हैं, जिस से बेचारे उपभोक्ता परेशान हैं.

उत्तर प्रदेश लेदर मार्केटिंग के प्रबंधक ने बताया, "चमड़ा महंगा होता जा रहा है, परंतु उस के अनुपात में उन चर्मकारों की प्रति जोड़ा जूता दर नहीं बढ़ाई जा रही है, जो अच्छा माल लगा कर जूता बेचते हैं. परिणामतः वह पहले चमड़े को गीला कर लेते हैं और उसे खींच कर बढ़ाने की कोशिश करते हैं. चमड़ा गीला हो कर सहज ही खिंच जाता है और वह उसी गीले चमड़े से जूतों सहित अन्य चमड़े की चीजें बनाते हैं. इस प्रकार बनी वस्तुएं सूखने पर सिकुड़ कर छोटी हो जाती हैं अथवा किसी भी जगह से टूट जाती हैं. यह बात जूतों में विशेष रूप से देखी जा रही है."

कुछ ऐसे ही कारण हैं, जिन की वजह से भारत में बनी चमड़े की वस्तुओं का निर्यात कम हो गया है. पिछले 10 वर्षों में चमड़े की वस्तुओं की निर्यात दर में जो कमी आई है, उस से भारतीय चमड़ा उद्योग की स्थिति और शोचनीय हो गई है.

अधिकारियों की लाचारी

क्या सरकारी अधिकारी इन समस्याओं का निराकरण नहीं कर सकते, जिस से इस उद्योग की वृद्धि की संभावनाएं बढ़ सकें? जो सरकारी कार्यालय चर्म संस्थाओं पर नजर रखते हैं, उन का कर्त्तव्य है कि वे चर्मकारों की समस्याओं का निदान करें. पर सचाई यह है कि वे ऐसा करने में असमर्थ रहते हैं, क्योंकि उन के अधिकतर अधिकारी अंगरेजी दां होते हैं. उधर चर्मकार अंगरेजी भाषा नहीं जानते. फलस्वरूप दोनों मूकदर्शक बने एकदूसरे को ताकते रहते हैं.

अगर अधिकारियों का चयन क्षेत्रीय
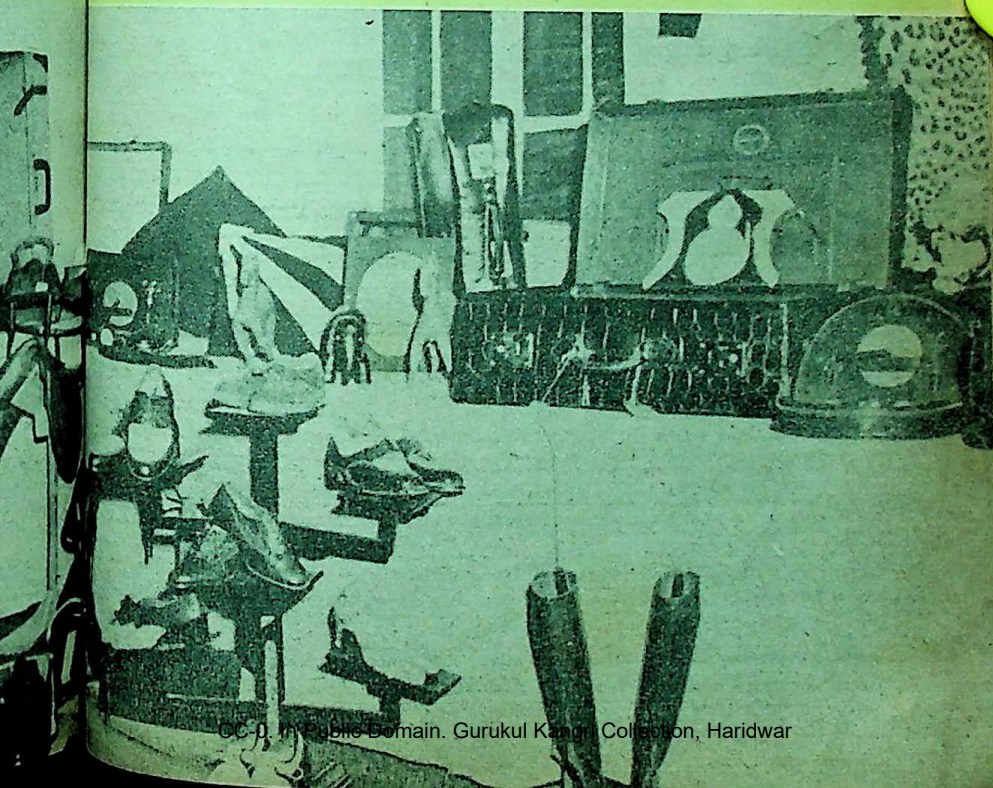
भाषा के अनुसार किया जाए तो बहुत सी व्यावसायिक व व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान किया जा सकता है. भारतीय चर्म उद्योग में जूता उद्योग की कुछ समस्याएं जटिल हैं. वास्तव में जूता निर्माण चर्म उद्योग की एक इकाई है. इस इकाई में काम करने वाले कारीगरों को 'डलियावाला' के नाम से जाना जाता है. यही वर्ग अत्यधिक संकटग्रस्त है. इस की वजह यह है कि इस वर्ग के साथ सौतेला व्यवहार होता है. इस का मुख्य कारण वे विभिन्न माध्यम हैं, जिन की वजह से इस वर्ग के लोगों को अपनी मेहनत का उचित मूल्य नहीं मिल पाता.

आढ़तियों का शिकार

डलियावाला वर्ग का कारीगर परिवार के सहयोग से कुटीर उद्योग लगा कर जूते बनाता है. वह जूते के लिए आवश्यक सामग्री स्वयं एकत्र करता है. जूते ले कर

चमड़े के जूते बनाने वाले डलियावाला वर्ग को आर्थिक तंगी की वजह से आज भी आढ़तियों की मनमानी का शिकार बनना पड़ता है.

वह मंडी पहुंचता है, जहां उस की मुलाकात आढ़तियों से होती है.
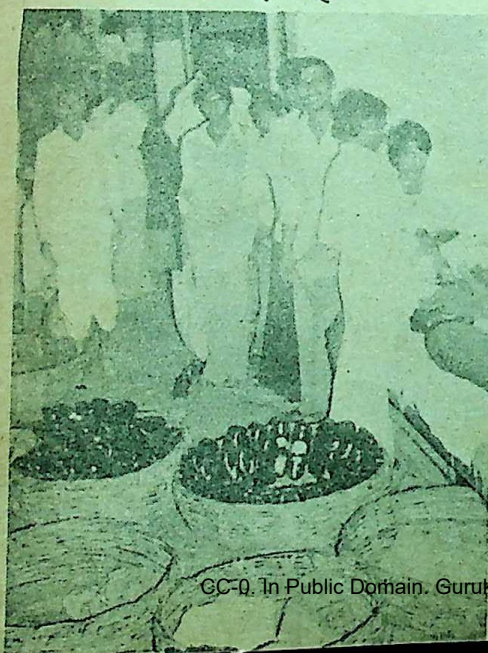
आढ़तिए चर्मकार के माल को देख कर उस की कम से कम बोली लगाते हैं. चर्मकार को अपने माल को अल्प लाभ पर बेचने को विवश होना पड़ता है, क्योंकि उस के पास नया माल खरीदने के लिए अतिरिक्त पूंजी नहीं होती. उसे अगले दिन और जूते बनाने होते हैं.

इतने पर भी उसे भुगतान जल्द नहीं मिल पाता. इस तरह उस के लाभ में और भी कमी हो जाती है.

चर्मकार द्वारा अल्प लाभ पर जूता बेचने के बाद भी उस के सामने नकद कटौती का प्रश्न झूलने लगता है. डेढ़ प्रतिशत तक काटी जाने वाली यह कटौती नकद भुगतान करने पर काटी जाती है. पर चर्मकार को माल का लगभग 30 प्रतिशत ही नकद दिया जाता है, शेष धनराशि के लिए उसे तीन से पांच वर्ष तक का एक परचा दे दिया जाता है, जो इस बात जी गारंटी होती है कि शेष भुगतान परचे की देय तिथि पर दे दिया जाएगा.

चर्मकार को तुरंत धनराशि की आवश्यकता रहती है, इसलिए वह आढ़तियों या महाजनों से पांच प्रतिशत की कटौती पर उस परचे को भुनवा लेता है. इस से उसे अपने पैसे में से यह कटौती भी देनी पड़ती है.

चर्म उद्योग की एक ज्वलंत समस्या मापन की दोषपूर्ण पद्धति है. 20 साल पहले भारत में मीट्रिक प्रणाली लागू हो चुकी है. पर चर्मकार इस पद्धति से अभी तक अनभिज्ञ हैं, क्योंकि इस प्रणाली से धन लेने पर भी वह 10 इंच के फुट से चमड़ा नाप कर देता है. इस का असर चमड़े से बनी वस्तुओं पर भी पड़ता है.

इस समस्या के समाधान के लिए सितंबर, 1979 में आगरा में डेढ़ लाख रुपए कीमत की चमड़ा मापने की मशीन लगाई गई, जिस पर हर 40 वर्ग फुट

देश में च... ध्यान न ... की कीमत...

चमड़े के म... गलती निक...

इस मशी... मंडी तीन दि... बेचने वालो... विक्रेताओं ... से नपे चमड़े... दिया कि च... नाप कर भी...

चर्मकार ...

चर्मका... महंगे होने ... 1978 को ... था, वह 19... पैसे प्रति व... लेदर जो अ...
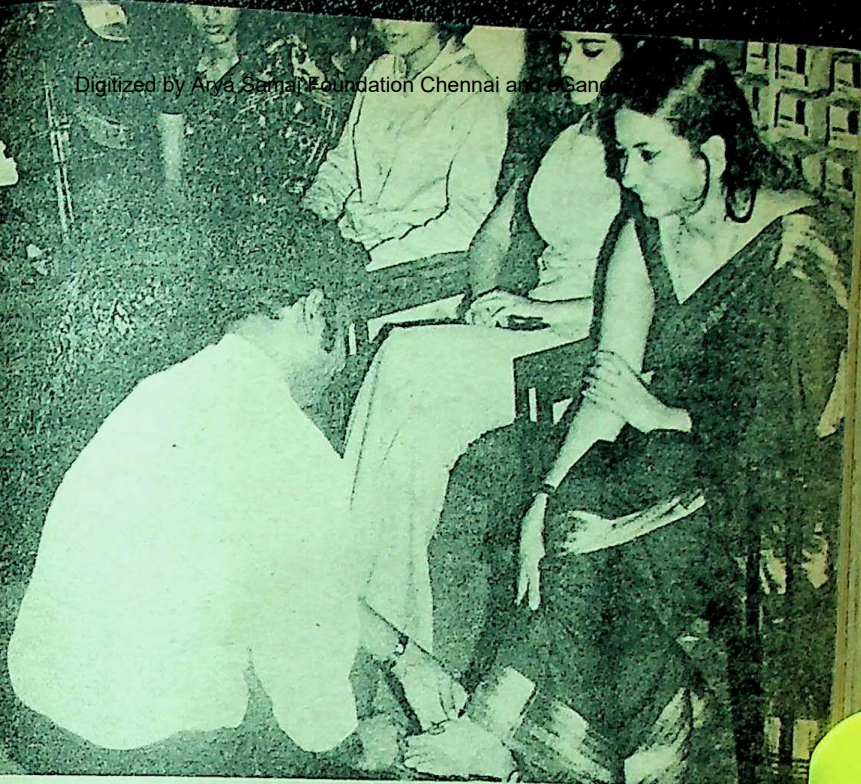
देश में चमड़े की बनी वस्तुओं की मांग दिन प्रति दिन बढ़ रही है, मगर इस ओर ध्यान न दे कर कच्चे चमड़े का अधिकाधिक निर्यात जारी है. परिणाम—वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि.

चमड़े के मापने में तीन वर्ग फुट चमड़े की गलती निकली.

इस मशीन के लगने के विरोध में चमड़ा मंडी तीन दिन बंद रखी गई, क्योंकि चमड़ा बेचने वालों को घाटा होता था. चमड़ा विक्रेताओं ने फुटे से नपे चमड़े व मशीन से नपे चमड़े के मूल्य में इतना अंतर कर दिया कि चर्मकार को मशीन से चमड़ा नाप कर भी वही हानि होने लगी.

चर्मकार की एक और समस्या

चर्मकार की एक समस्या चमड़े के महंगे होने की भी है. जो चमड़ा अक्तूबर, 1978 को 38 पैसा प्रति वर्ग डेसीमीटर था, वह 1979 में बढ़ कर लगभग 95 पैसे प्रति वर्ग डेसीमीटर हो गया. सोल लेदर जो अक्तूबर, 1978 में 12 रुपए किलो था, 1980 में 32 रुपए प्रति किलो हो गया.

चमड़ा महंगा होने का कारण कच्चा चमड़ा अधिक मात्रा में निर्यात किया जाना है, जिस के कारण देश में चमड़े की आवश्यक पूर्ति नहीं हो पाती, जब कि देश में चमड़े की मांग तेजी से बढ़ती जा रही है.

पहले पूरा का पूरा जूता निर्यात किया जाता था, परंतु अब अपर (जूते का ऊपरी भाग) ही अधिक निर्यात किया जा रहा है. इस से भी चमड़े के महंगे होने को बढ़ावा मिला है. जूता निर्यात करने वाले कारीगरों को निकाला जा रहा है. इस से चर्मकारों में बेकारी बढ़ती जा रही है.

इस दोषपूर्ण निर्यात नीति को

लेखकों के लिए सूचना

● सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.

● प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.

● प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.

● प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.

● स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.

● मुक्ता और सरिता में पूर्णविराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें :

संपादकीय विभाग

मुक्ता, दिल्ली प्रेस,
नई दिल्ली-110055.

सुधारा जाए तो समस्याओं का निराकरण किया जा सकता है.

सुझाव

अगर इस उद्योग का विकास उचित रूप से किया जाए तो निश्चित है कि यह उद्योग पुनः उसी स्थिति में आ सकता है, जब विश्व भर में भारत का ही जूता पहना जाता था.

उत्तर प्रदेश लेदर मार्केटिंग की तरह अन्य ऐसी संस्थाएं बननी चाहिए, जिस से उचित मूल्य पर चर्म कारीगरों को चमड़ा प्राप्त हो सके.

एक ऐसा निगम भी बनाया जाए, जो कारीगरों के जूतों व अन्य सामग्री को खरीद सके.

बड़ी चमड़ा कंपनियों में कारीगरों के लिए मनोरंजन की उचित व्यवस्था की जाए.

कुटीर उद्योगी चर्मकार के माल के मूल्य का भुगतान तुरंत किया जाए.

चमड़ा कारीगरों को प्रौढ़ शिक्षा के अधीन आवश्यक शिक्षा देने की व्यवस्था की जाए.

तकनीकी ज्ञान देने के लिए प्रत्येक चमड़ा कंपनी में सुविधा के अनुसार योग्य व क्षेत्रीय भाषाभाषी व्यक्तियों द्वारा ज्ञान दिया जाना चाहिए.

टैनरी में चमड़े को वैज्ञानिक पद्धति से शीघ्र कमाया और सुखाया जाए, जिस से चमड़े की किस्म खराब न हो.

निर्यात करने के नियम सरल हों.

चमड़ा वस्तुओं का ही निर्यात किया जाए, चमड़े के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया जाए.

यंत्रीकरण किया जाना जरूरी कर दिया जाए.

चमड़े के आभूषणों की लोकप्रियता बढ़ाने की पूर्ण व्यवस्था की जाए.

किसी भी चमड़े या उस से बने माल के लेनदेन में दो से अधिक माध्यम न रहें. ●

पिछड़ी हुई [illegible] जनजातियों के उत्थान के लिए इस निगम की स्थापना की गई थी. पर पर्याप्त सरकारी सुविधाओं और साधनों के बावजूद क्या निगम इन जनजातियों के विकास में सहायक बन सका है?

1971 की जनगणना के समय उत्तर प्रदेश में विभिन्न जनजातियों के 1,98,565 सदस्य थे, जिन में 1,82,768 ग्रामीण व 15,797 शहरी थे.

एक अनुमान के अनुसार इन में से करीब 70 हजार व्यक्ति देहरादून, पौड़ी, टिहरी, चमोली व उत्तरकाशी यानी गढ़वाल मंडल में रहते हैं और वहीं के

लेख • सिंधु गोयल

गढ़वाल अनुसूचित जनजाति विकास निगम

जनजीवन में साधन विहीन, समाज से उपेक्षित, दबा हुआ व्यक्तित्व लिए जी रहे हैं.

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद प्रत्येक राजनीतिक दल ने इन आदिवासियों को सब्जबाग दिखा कर इन का शोषण किया. इन के विकास के लिए लंबेचौड़े वादे किए गए. पर 1975 तक न आदिवासी घरों की गरीबी दूर हुई थी, न इन्हें सामाजिक मान्यता मिली थी और न ही इन पर लगा वेश्यावृत्ति का कलंक ही धुला था.
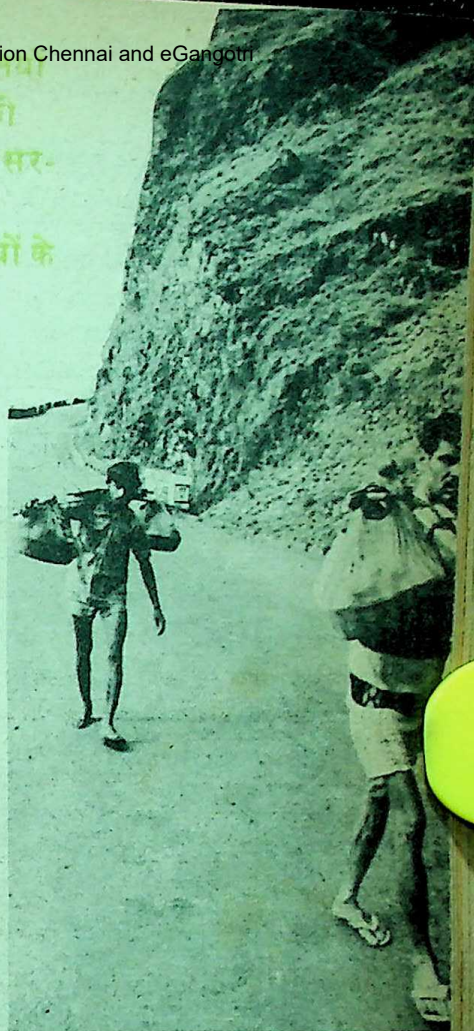
30 जून, 1975 को उत्तर प्रदेश सरकार ने एक साहसिक निर्णय ले कर पांच लाख रुपए की अधिकृत पूंजी से गढ़वाल अनुसूचित जनजाति विकास निगम लिमिटेड की स्थापना की. यह पूंजी 1977-78 में बढ़ा कर 20 लाख रुपए कर दी गई.

इस निगम के उद्देश्य हैं :

कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देना

तथा स्थानीय कच्चे माल का अधिकतम उपयोग करना.

कुटीर उद्योगों में उपयोगी तकनीक का आधुनिकीकरण करना जिस से उत्पादन क्षमता में वृद्धि हो.

अनुसूचित जनजाति के लोगों को कृषि, उद्यान एवं वनों पर आधारित उद्योगों की स्थापना एवं विकास में आर्थिक व तकनीकी सहायता दे कर व्यापार की सुविधा उपलब्ध कराना.

निगम के प्रारंभिक दो वर्ष

यदि आप विभिन्न चीजों की बिक्री के लिए एक बड़ी दुकान खोलें तो उस में चारपांच लाख रुपए खर्च हो जाते हैं. उसे एक समझदार व दोतीन मामूली पढ़ेलिखे लोग आराम से चला लेते हैं.

पर निगम 1975-76 में एक पैसे के बराबर भी काम करने में असफल रहा, क्योंकि शासन द्वारा वांछित नियुक्तियों पर प्रतिबंध था. ऐसे में सेब को पेटी में भरवाने, ऊन इकट्ठी करवाने, हाथ से कालीन बुनवाने जैसे काम बिना महा प्रबंधक, सचिव, कार्यकारी प्रबंधक, क्षेत्र अधिकारी और परियोजना अधिकारी के कैसे हो सकते थे? वास्तव में आम जनता का निगम में विश्वास तो 1975-76 में ही समाप्त हो गया था.

उस वर्ष उद्घाटन, पैट्रोल, मनोरंजन, स्टेशनरी, फरनीचर आदि पर ही खर्च हुआ व शेष राशि बैंक में पड़ी रही.

लेकिन अगले वर्ष के लिए आदत से मजबूर निगम ने वादों एवं योजनाओं का ढेर अवश्य लगा दिया.

पर 1976-77 में भी निगम का वही हाल रहा.

उस वर्ष निगम ने जोशीमठ व छिनका क्षेत्रों में दो कालीन उत्पादन केंद्रों की स्थापना की.

पर इन दोनों केंद्रों में सिर्फ आठ रुपए रोज के मजदूर रखे गए और पूरे साल में केवल 11 हजार रुपए मूल्य के कालीन ही तैयार किए जा सके.

यह माल भी निहायत घटिया दरजे का था. नतीजा यह हुआ कि इस वर्ष भी एक भी पैसे का माल नहीं बिक पाया.

अपनी असफलता को छिपाने के लिए निगम ने रोना रोया कि पांच लाख रुपए की पूंजी से कोई ढंग का काम कर पाना संभव ही नहीं है, इसलिए सरकार निगम को और पैसा दे.

दुख की बात यह है कि किसी भी सरकारी अधिकारी ने निगम से यह नहीं पूछा कि जब पूरे दो वर्षों में पांच लाख रुपए का ही प्रयोग नहीं हो पाया तो पूंजी बढ़ाने से क्या लाभ है.

पर चूंकि सरकारी धन को फालतू समझा जाता है, इसलिए 1977-78 में निगम की पूंजी 20 लाख रुपए कर दी गई.

इस वर्ष निगम ने कालीन के अलावा ऊन आदि से बनने वाली पंखी, शाल, थुलमा, चुटका, कोट पट्टू आदि चीजों को बड़े पैमाने पर तैयार करने का निर्णय लिया.

पर कुछ विशेष परिस्थितियों के कारण 20 लाख की पूंजी वाला निगम पूरे वर्ष में कुल 20 हजार रुपए का ही उत्पादन कर सका और 90 प्रतिशत पूंजी बेकार पड़ी रही.

मजे की बात यह रही कि यह माल भी ग्राहकों तक नहीं पहुंच सका और गोदाम की ही शोभा बढ़ाता रहा.

1978-79 में निगम ने एक महत्वपूर्ण काम यह किया कि जोशीमठ का केंद्र बंद कर दिया और उस के पास ही परसारी में एक नया केंद्र खोल दिया.

इस में हजारों रुपए खर्च हो गए, पर निगम यह बताने में असमर्थ है कि उस ने ऐसा क्यों किया.

इस वर्ष निगम ने बुनकरों को कच्चा ऊन, ऊनी धागा, बौबिन, शटल आदि भी उपलब्ध कराने का निर्णय लिया.

पर इस वर्ष भी 85 प्रतिशत पूंजी

का दुरुपयोग ही हुआ और निगम कुल 50 हजार रुपए का ही उत्पादन कर पाया.

अब तक आदिवासी लोग इस तथ्य को जान चुके थे कि उन्हें निगम से आर्थिक व तकनीकी सहायता प्राप्त हो सकती है. इसलिए बहुत बड़ी तादाद में परिवार निगम की सहायता पाने को

या उन का मार्गदर्शन करने के लिए नहीं.

1978-79 में कुल करीब 285 वर्ग मीटर कालीन, 39 पंखी, 25 कोट पट्टू व एक शाल का उत्पादन हुआ, जिस में 22,136 रुपए 27 पैसे की कीमत का 6.53 क्विंटल कच्चा माल इस्तेमाल हुआ.

इस वर्ष निगम के दो महान कार्य प्रकाश में आए :
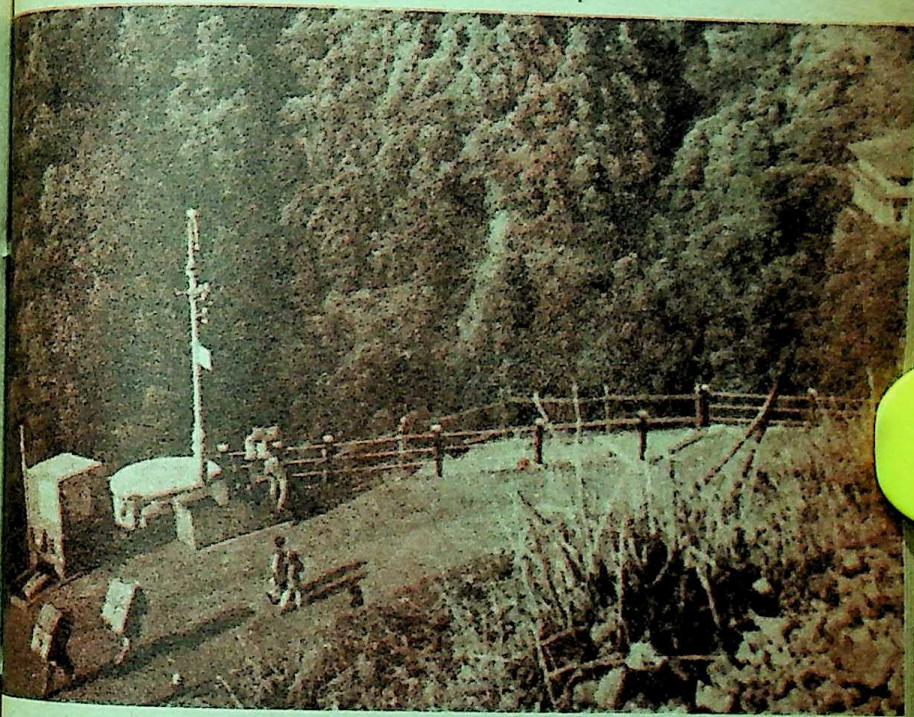
गढ़वाल में फैली वन संपदा : आए दिन गठित हो रहे विकास निगमों के बावजूद आज भी इस संपदा का सही उपयोग करने वाले का इंतजार है.

इच्छुक थे.

पर अफसरशाही की जटिल शर्तों, कागजपत्रों व चक्कर लगवाने की प्रवृत्ति का परिणाम यह हुआ कि निगम एक कसाईखाना समझा जाने लगा, जहां आम आदमी की कोई पूछ नहीं थी.

अन्य सरकारी सहायता केंद्रों से धक्के खाए जनजाति वाले यह समझ गए कि यह महकमा भी [illegible] के लिए ही है, उन की हालत को बेहतर बनाने

प्रथम—कुल एक लाख रुपए से भी कम मूल्य के कच्चे व तैयार माल के स्टाक में 11,461 रुपए 75 पैसे के माल की कमी पाई गई.

1977-78 के कालीन के स्टाक में गड़बड़ियों पर परदा डालने के लिए खातों में 31,020 रुपए 97 पैसे के कालीनों को 58,136 रुपए 90 पैसे का [illegible] स्टाक में और भी घपले पकड़े गए.

कहा जाता है कि इन दोनों मामलों की जांच चल रही है.

पर दो वर्षों में भी यह जांच पूरी क्यों नहीं हो पाई? इस का स्पष्ट कारण यह है कि जांच पूरी होने पर दोषी व्यक्ति को निकालना पड़ेगा. इस से पोलें खुलेंगी. इसलिए दो पंचवर्षीय योजनाओं तक यह जांच चलेगी, फिर एक दिन मामलों को बहुत पुराना व अनावश्यक करार दे कर हमेशा के लिए खत्म कर दिया जाएगा. या फाइलें चोरी चली जाएंगी या फिर रिकार्ड रूम में ही आग लग जाएगी.

1979-80 में कुल 33 हजार रुपए के माल का उत्पादन हुआ.

इस प्रकार पिछले पांच वर्षों में कुल 94 हजार रुपए मूल्य की वस्तुओं का उत्पादन हुआ है.

निगम के प्रशानिक खर्चे

आइए एक नजर उस अमले व खर्चे पर भी डालें, जो इस उत्पादन के लिए जिम्मेदार है.

एक अंशकालीन प्रबंध निदेशक (प्रांतीय सिविल सेवा से), एक प्रधान प्रबंधक, एक मुख्य सहायक, एक आशुलिपिक, एक सहायक लेखाकार, एक कनिष्ठ लिपिक व टाइपिस्ट, एक चपरासी, चार चौकीदार, एक सेल्स गर्ल, दो प्रभारी, स्टोरकीपर, एक आलेखक एवं प्रशिक्षक व एक सफाई नायक (अंशकालीन) इस निगम के कार्यकर्ता हैं.

ये व्यक्ति निगम से करीब 65 हजार रुपए प्रति वर्ष वेतन के रूप में प्राप्त करते हैं. करीब 10-12 हजार रुपए इन्हें मजदूरी के रूप में दिया जाता है. आठदस हजार रुपए यात्राओं पर, एक हजार रुपए मनोरंजन पर व दोतीन हजार रुपए विविध मदों पर खर्च आता है.

इस प्रकार निगम अपने कार्यकर्ताओं पर 90 हजार रुपए प्रति वर्ष खर्च करता है, और इस का औसत उत्पादन 18-19 हजार रुपए का ही रहा है.

अभी तक निगम स्वयं अपने उद्देश्यों को लगातार नकारता रहा है.

मोमबत्ती, लाखबत्ती, बेंत का फरनीचर, टोकरियां, पेटियां, वुडवूल (लकड़ी की छीलन), गोंद, चाक बत्ती, फ्रेम, लकड़ी के खिलौने, ऐश ट्रे, सिगरेट केस, पत्थर की मूर्तियां, अचार, मुरब्बे, माचिस, पेचकस के हत्थे, हथौड़े, मुरगी दाना, गाड़ियों के ढांचे, छोटे बल्ब, चावल की सफाई की मिल, दाल सफाई, चावल के छिलके से तेल निकालने की मिल, डब्बा बंद भोजन, ग्वार गम, स्लेट, सोडियम सिलिकेट, अगरबत्ती आदि अनेक कुटीर उद्योग गढ़वाल मंडल में चलाए जा सकते हैं, जिन का कच्चा माल यहां खूब व सस्ता मिलता है.

पर निगम ने केवल वही काम किया जो पहले ही वहां हो रहा था. नए कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देने का कोई प्रयास ही नहीं किया गया.

जहां तक कच्चे माल के उपयोग का प्रश्न है, देहरादून, चकराता व लैंसडाउन में लाइम स्टोन, टिहरी व देहरादून में डोलोमाइट, चमोली में मैगनेसाइट व सोप स्टोन, पोकियोहोरी व धनपुर (चमोली), गढ़वाल व टिहरी में तांबा, देहरादून तथा टिहरी में जिप्सम, देहरादून में संगमरमर, टिहरी गढ़वाल व मसूरी में फास्फोराइट, देहरादून में बाराइट, ओडाल्युसाइट व बाक्साइट प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं.

चीड़, फर, स्प्रूस, देवदार, केल, साल, आसना, तुन, हलदू, कंजू, खैर, सीसू, सेमल, गुटेल, टीक, बांस आदि वन संपदा यहां उपलब्ध है.

इस मंडल में वृक्ष संपदा से ढकी भूमि है : उत्तरकाशी (89 प्रतिशत), चमोली गढ़वाल (82 प्रतिशत), (61 प्रतिशत) तथा देहरादून (50 प्रतिशत से अधिक).

इस सब कच्चे माल ... निगम ने कोई ध्यान नहीं दिया.

जहां तक आधुनिक तकनीक को प्रयोग में लाने की बात है, उस का प्रश्न केवल तभी उठ सकता था जब निगम पहले उद्योग स्थापित करवाता.

निगम का व्यापार

रहा, आखिरी उद्देश्य व्यापार का, तो 1978-79 के अंत तक कुल उत्पादन ... हजार रुपए मूल्य का था, जिस में से करीब 50 हजार रुपए मूल्य का माल गोदामों में पड़ा सड़ रहा था. जरा सोचिए, जो अपना ही माल नहीं बेच पाता, उस से लोगों को और क्या उम्मीद हो सकती है?

पुराने स्टाक को किसी न किसी प्रकार ठिकाने लगाने की नीयत से निगम ने 1979 में अक्तूबर से दिसंबर तक मूल्यों में विशेष छूट दी, पर यह प्रयत्न भी पूर्णतया असफल रहा.

और अब अपनी कमियों को छिपाने, लाखों रुपए के घाटे पर परदा डालने व अपना उल्लू सीधा करने के लिए इस के संचालक अब सरकार व जनता की आंखों में नई योजनाओं की धूल झोंकने की तैयारी कर रहे हैं.

जड़ीबूटी संरक्षण, कार्डिंग एवं स्पिनिंग मिल, फल उद्योग, अदरक व सोंठ उद्योग आदि निगम की भावी योजनाएं हैं. अभी तक निगम अपने उद्देश्यों को पूरा करने में पूरी तरह असफल रहा है. इस में चोरी, बेईमानी, अकर्मण्यता व पूंजी के दुरुपयोग का बोलबाला रहा है. सरकार को इस पर खुले दिमाग से सोचना चाहिए.

बेहतर तो यही होगा कि वक्त रहते सरकार इस निगम की गतिविधियों व हिसाबकिताब की विशेष तौर से जांच करवाए व इस निगम को हमेशाहमेशा के लिए बंद कर दे ताकि धन का दुरुपयोग न हो सके. ●

अभिवादन व खेद सहित

व्यंग्य • कृष्णकुमार हृदयंगम

हम ने अपना सारा चिंतन उस रचना में निचोड़ कर रख दिया था. सोच रहे थे, वह रचना हमारी अमर कृति होगी और उस के लिए साहित्य सदैव हमारा आभारी रहेगा. पर मुई वह रचना भी संपादक के 'अभिवादन व खेद सहित' हमारे पास लौट आई. हमें लगा, जरूर या तो रचना संपादक की समझ के दायरे से बाहर की चीज रही, या पत्रिका के स्तर से कुछ इंच ऊपर.

'अभिवादन व खेद सहित' यह जुमला हमारे लिए नया नहीं था. हमारे अब तक के साहित्यक इतिहास में कदमकदम पर यही लिखा मिलेगा.

कालिज में हमें लड़की से मुहब्बत हो गई थी. उस ने हमें बहुत पत्र लिखे, बहुत कसमें खाईं. हम ने भी उसे बहुत फिल्में दिखाईं और रसमलाई खिलाई. उसे अपने सारे नोट्स भी दिए. पढ़ाई पूरी होने के बाद हम ने जब उस से विवाह का अनुरोध किया तो उस ने हमें वही चिट थमा दी—'अभिवादन व खेद सहित.' उस के बाद वह तो कुंआरी से विवाहित हो गई पर हम अभी तक अविवाहित चले आ रहे हैं.

नौकरी की तलाश में हम ने कहां-कहां की खाक नहीं छानी. लेकिन जहां भी हम साक्षात्कार के लिए गए—'अभिवादन व खेद सहित' लौटा दिए गए. आखिर परेशान हो कर हम ने भी अपनी
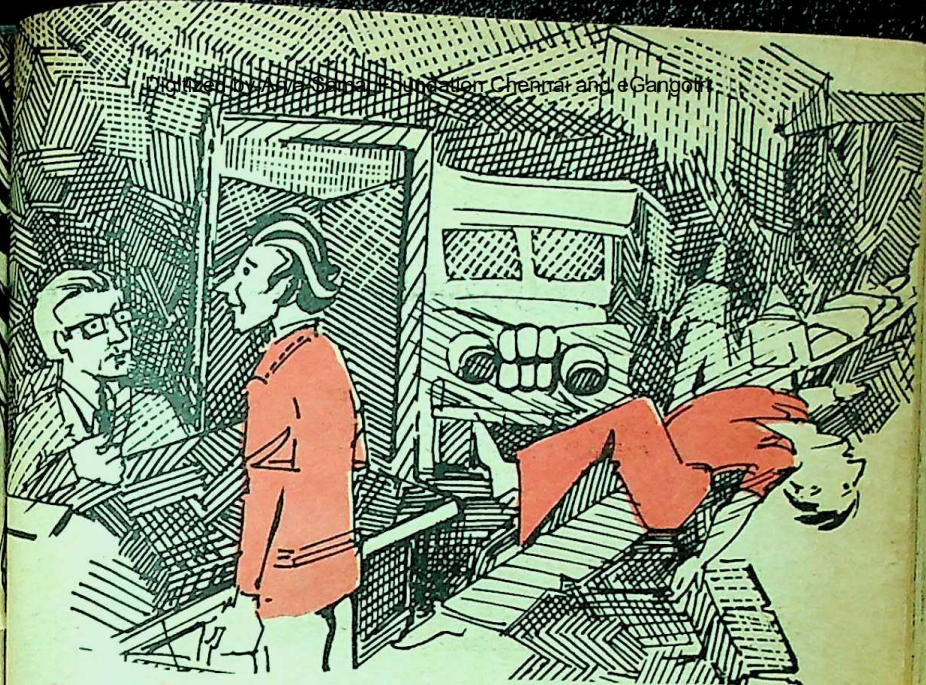
ब संपादक ने यह वाक्य लिख कर हमारी रचना लौटाई तो अचानक हमें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की घटनाएं याद आ गईं जब हमारे प्रति लोगों ने यही उद्गार प्रकट किए थे...

ारी डिगरियां बोर्ड एवं विश्वविद्यालय ने लौटा दीं, 'अभिवादन व खेद सहित.'

उस के बाद वही हुआ, जो बहुत समय से स्थगित था. जैसे ही हम घर पहुंचे, पिताजी ने हमें 'खेद सहित' घर से निकाल दिया. किसी भी पिता की यही पहचान होती है कि वह पुत्र के पैदा होते ही उस से यह अपेक्षा करने लगता है कि वह (पुत्र) उन्हें इस निर्माण का उचित मुआवजा देगा. गणित और अर्थशास्त्र में हम शुरू से ही कमजोर रहे हैं, उसी का नतीजा शायद हमें भुगतना पड़ा.

घर से निकलने के बाद हमें अपने एक अजीज दोस्त की याद आई. उन दिनों उसे नई नौकरी मय छोकरी के मिली थी. बास की छोकरी पत्नी के रूप में नहीं मिलती तो शायद नौकरी भी नहीं मिलती.

हमारा वह दोस्त सिविल लाइंस के एक अच्छे फ्लैट में रहता था. हम ने वहीं महज एक अदद कमीज और एक अदद पैंट के साथ डेरा डाल दिया. पांच दिन तक हम दोस्त को अपनी जीवनी टुकड़ों-टुकड़ों में सुनाते रहे. छठे दिन उस ने भी हमें 'खेद सहित' घर से बाहर सड़क पर भेज दिया. जरूर इस बात का संबंध या तो उस की नौकरी से रहा होगा या उस छोकरी से. हमारा अजीज दोस्त खुद कभी ऐसा नहीं कर सकता था.

हमें अपने रिश्तेदारों की याद आई. उन की खासियत यह है कि किसी दिन यदि आप उन के घर चाय पी लेते हैं तो दूसरे दिन वे आप के घर पर चाय पीने जरूर आते हैं. यदि उन्होंने आप को बिस्कुट भी खिलाए होंगे तो आप के घर चाय पीते समय उन की आंखें खाली

मेज पर कुछ ढूंढ[illegible] के बाद चाय पिला पाने की सामर्थ्य हम में नहीं थी सो रिश्तेदारों के यहां जाने का कार्यक्रम स्वयं हम ने 'खेद सहित' स्थगित कर दिया.

बड़ी मुशकिल से मामूली वेतन पर एक प्रेस में हमें प्रूफरीडर की नौकरी मिली. दिन भर हम काम करते और रात को प्रेस में ही कागज बिछा कर सो जाते. भविष्य की सुनहरी संभावनाओं से सराबोर एक साहित्यकार के इस परिणाम पर साहित्य की आंखें जरूर नम हुई होंगी.

प्रेस के मालिक ने एक दिन गुस्से में आ कर हमारी बहन को अपनी एक गाली से जोड़ दिया. हम ने 'अभिवादन व खेद सहित' वही उसे लौटा दी. न्यूटन के अनुसार क्रिया की प्रतिक्रिया अवश्य होती है. पर हमारे सिद्धांत के अनुसार प्रतिक्रिया की भी एक प्रतिक्रिया होती है. यही हुआ और हमें तत्काल नौकरी से जवाब मिल गया, 'खेद सहित.'

गमगीन हो कर हम सड़क पर आ गए. मधुशाला से तभी लौटेएक ट्रक वाले ने हमें सड़क के किनारे पर शहीद करने की कोशिश की. हम वहीं दंडवत हो गए. चोट गंभीर थी. हमें उठा कर हस्पताल ले जाया गया. उन दिनों सारे डाक्टर हड़ताल पर थे, सो हस्पताल से हमें 'अभिवादन व खेद सहित' लौटा दिया गया.

अपने जीवन से बुरी तरह जुड़ गए इस 'अभिवादन व खेद सहित' का हमें अधिक दुख नहीं है. दुख तो हमें यह है कि जब हम पैदा हुए थे, उसी समय दुनिया ने हमें 'अभिवादन व खेद सहित' एक ही मुश्त क्यों नहीं लौटा दिया. तब हमें कम से कम इस तरह किस्तों में तो न लौटना पड़ता. ●

दास्ताने दफ्तर

एक दिन मैं अपने कार्यालय में मेज पर बैठा कार्य में व्यस्त था कि चपरासी ने आ कर कहा, "आप को कुल सचिव बुला रहे हैं."

जब मैं उन के कमरे में गया तो उन्होंने मुझे लगभग डांटते हुए कहा, "कल एक आवश्यक सूचना शासन को भेजी जानी थी, वह तैयार है या नहीं?"

अधीक्षक महोदय ने छुट्टी पर जाने से पूर्व मुझे इस बारे में कुछ नहीं बताया था. पर मैं कुल सचिव से यह कह नहीं सकता था, क्योंकि यह अधीक्षक की शिकायत मानी जाती. इधर कुल सचिव भी बहुत गुस्से में थे. इसलिए उन से भी सूचना के बारे में कुछ न पूछ सका. सो चुपचाप खड़ा डांट सुनता रहा. फिर उन्होंने मुझे वापस भेज दिया.

लगभग एक घंटे बाद कुल सचिव स्वयं मेरे कमरे में आए और गुस्से में यहां तक कह गए, "अगर तुम जल्दी से तैयार नहीं कर सकते हो तो मेरे पास सारी संबंधित सामग्री और कागजात ले कर आ जाओ, मैं तैयार करा दूंगा."

पर मुझे तो पता ही नहीं था कि आखिर वह कौन सी सूचना तैयार करवाना चाहते हैं. आखिर जब मुझे कुछ और नहीं सूझा तो मैं अपने विभाग के सारे चपरासियों के साथ विभाग के पुराने, मोटेमोटे रजिस्टर ले कर उन के कमरे में पहुंच गया. जब मैं वहां पहुंचा तो वह अपने कार्य में व्यस्त थे. हमें इस तरह लदे देख कर उन्होंने यह समझा कि कार्य काफी लंबा है, इसलिए इतनी जल्दी सूचना तैयार नहीं हो सकती, जितनी जल्दी वह चाहते थे. तब वह बोले, "यह तो काफी लंबा काम है, अतः अधीक्षक के आने तक इंतजार कर लेना ही ठीक है." —**रामबाबू भटनागर**

✦

हमारे दफ्तर के एक वरिष्ठ लिपिक की यह आदत थी कि वह जब भी खाली होते कागज के टुकड़ों पर अपने हस्ताक्षर कर के इधरउधर फेंक देते थे. अतः एक बार हम ने एक योजना बनाई. योजना के अनुसार वह जिस कागज पर हस्ताक्षर कर के फेंक देते, हम उसे चुपके से उठा लेते.

हमारे दफ्तर के नीचे एक कैंटीन थी. वह लिपिक वहां से चाय मंगाते और कागज के टुकड़े पर उस के पैसे लिख कर तथा अपने हस्ताक्षर कर के कैंटीन वाले को दे देते थे. हमारे दफ्तर के लोग उन टुकड़ों को उठा कर अपने पास रख लेते और बाद में चपरासी को दे कर कैंटीन से मनमानी चीज मंगा लेते. महीने के अंत में कैंटीन के मालिक ने उन्हें 256 रुपए 75 पैसे का बिल पकड़ाया तो उन के होश उड़ गए. बिल के नीचे लगे अपने दस्तखत वाले कागजों को देख कर वह सारी बात समझ गए. इस के बाद उन्होंने यह आदत छोड़ दी. —**रूपक तनेजा**

✦

बात उस समय की है, जब मेरे पति सरकारी सेवा में नएनए आए थे. एक दिन वह कार्यालय से उदास और दुखी हो कर घर लौटे. मैं ने कारण पूछा तो बोले,

"जैसेतैसे नौकरी मिली थी, वह भी जाती दिखाई दे रही है. पुलिस की रिपोर्ट आ गई है. उस में न जाने कैसे मुझे कुख्यात अपराधी कहा गया है."

ठीक इसी समय मेरे ताऊजी आ गए. उन्होंने कहा, "क्या लिखा है रिपोर्ट में?"

मेरे पति बोले, "उस में लिखा है कि रजिस्टर नंबर आठ देखा और पाया कि शख्स अदम सजायाफता है."

यह सुन कर ताऊजी हंसने लगे और बोले, "इस का अर्थ तुम गलत कर रहे हो. इस का मतलब है कि यह आदमी सजायाफता नहीं है."

यदि उस समय ताऊजी न आ गए होते तो मेरे पति अरबी शब्द 'अदम' का सही अर्थ न जानने के कारण न जाने कब तक परेशान रहते. **—मुन्नी शर्मा**

◆

◆ हमारे दफ्तर के मैनेजर शर्माजी का कमरा पहली मंजिल पर है, जब कि हम लोग दूसरी मंजिल पर बैठते हैं.

एक बार मेरा एक मित्र फोन पर दूसरे विभाग में कार्यरत अपने एक मित्र से बातें कर रहा था, अचानक फोन कट गया और बात अधूरी रह गई. मेरे मित्र ने फोन पर रिसीवर रखा ही था कि फोन की घंटी पुन: बज उठी. मेरे मित्र ने समझा कि उस के मित्र ने बात पूरी करने के लिए दोबारा फोन मिलाया है. अत: उस ने रिसीवर उठा कर बोलना शुरू कर दिया, "यार, इस विभाग के तो फोन भी अफसरों की तरह..."

अभी वह बात भी पूरी नहीं कह पाया था कि दूसरी ओर से आवाज आई, "शटअप. आई एम शर्मा स्पीकिंग. यू कम हेयर." (चुप रहो. मैं शर्मा बोल रहा हूं. तुम मेरे पास आओ).

अब तो मेरे मित्र का चेहरा देखने लायक था. वह हड़बड़ा कर माथे पर से पसीना पोंछते हुए उन के कमरे की ओर भागा. **—अजयकुमार पूठिया (सर्वश्रेष्ठ)**

◆

एक बार मेरे मित्र ने अपने कार्यालय में एक चपरासी को सर्विस बुक देते हुए कहा, "इस का लिफाफा बना लाओ." यह कह कर वह पुन: अपने कार्य में व्यस्त हो गए. थोड़ी देर बाद उस चपरासी ने एक बड़ा सा लिफाफा ला कर मेरे मित्र की मेज पर रख दिया जिसे मेरा मित्र देखता ही रहा गया.

हुआ यह कि चपरासी ने सर्विस बुक को काट कर उस के पन्ने चिपका कर एक बड़ा लिफाफा बना डाला था, जब कि मित्र ने उस सर्विस बुक को डाक से बाहर भेजने के लिए उस के आकार का एक लिफाफा बनाने को कहा था. **—सुरेश शर्मा** ●

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है. क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 और सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए :

दास्ताने दफ्तर, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली

झोंका आया...

खुशबू फैली, झोंका आया,
किस ने मेरा दिल उकसाया?
उस के शहर से आने वाला,
कितने भीगे मौसम लाया?
अपना 'आप' भी खो बैठा हूं,
क्या आईना देख के पाया?
जब से डूबा रंग में उस के
कोई रंग न मुझ को भाया.

ऐसे फूल ने हंस कर देखा,
आंखें भीगीं, मन भर आया.
तुझ को देखूं, वह याद आए,
यह दिल जिस को भूल न पाया.
उस ने तो फिर साथ दिया है,
अकसर बिछड़ा अपना साया.
दिन तो धूप में जल कर काटा,
शाम हुई तो दीप जलाया.

इब्राहीम 'अश्क'

सरिता मुक्ता विस्तार योजना में भाग लीजिए

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं किया फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. अ भी हजारों वर्ग मील भारतीय भू विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पूर्ति लिए बहुत बड़े पैमाने पर सामूहि सहयोग और सद्भाव की आवश्यक होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्थान, पूंजीपति या राजनीतिक दल से संबंधि नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रकार सहायता स्वीकार करती है. यह केव एक ही वर्ग की सहायता और बलबूते निर्भर है. और वह हैं सरिता के पाठ इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्साहन सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती है

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी पूंजी सरकार का और देशी व विदेशी

नीतिक दलों का बड़े पैमाने पर क्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण त्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी वास पर निर्भर है. साथ ही आप को अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप कुछ खर्च किए एक वर्ष में तामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी क पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा गे.

तामुक्ता के प्रसारप्रचार की योजना से लाभ उठाने के लिए को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का स दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. ता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने नोटिस दे कर आप की अमानत आप को सकेगा. जब तक यह रकम सरिता लय में जमा रहेगी, तब तक सरिता क्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली " के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

समझौता

लघुकथा • वासुदेव सिंधु 'भारती'

कहते हैं त्रेता युग में शूर्पणखा को लक्ष्मण के सामने प्रेम निवेदन करने पर अपनी नाक कटवानी पड़ी थी. मगर इस बार ऐसे हालात में लक्ष्मण बगलें क्यों झांकने लगे?

इस बार शूर्पणखा मिडी पहने, चेहरे पर मेकअप थोप कर, ठुमकती, बलखाती लक्ष्मण के पास पहुंची और बड़े ही नाज और अंदाज से बोली, "डार्लिंग, आई लव यू टू मच." (प्रिय, मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूं.)

लक्ष्मण तिलमिला उठा और क्रोध में भर कर उस ने कोट की जेब से छोटा विदेशी चाकू निकाला.

मगर इस बार शूर्पणखा डरी नहीं. वह सीना तान कर बोली, "डियर, तुम अब मेरी नाक नहीं काट सकते. राम चुनाव लड़ रहे हैं, अगर मेरी नाक तुम्हारे हाथों काट ली गई तो जनता में राम का इमेज (छवि) बिगड़ जाएगा और विरोधी दल का उम्मीदवार बहुमत से जीत जाएगा."

लक्ष्मण बर्फ की भांति ठंडा हो गया.

तत्पश्चात उस ने ठंडी सांस ले कर अपना चाकू बंद कर के जेब में रख लिया और शूर्पणखा की बांह में बांह डाल कर काफी-हाउस के भीतर
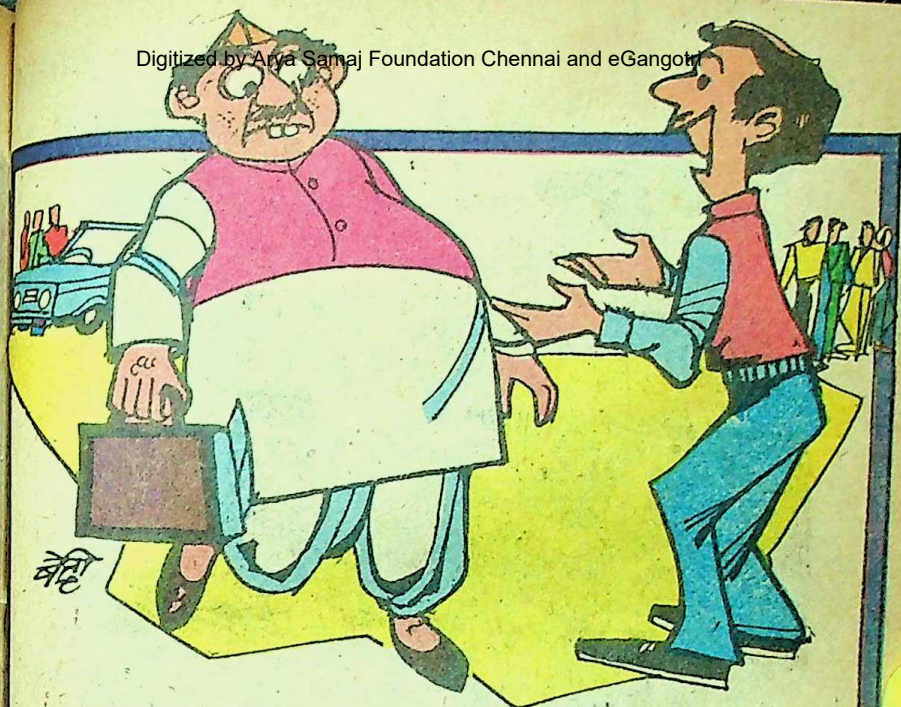
नेताजी आए हैं !

बाद एक अरसे के नेताजी,
आज मेरे दर पर आए हैं.
पांच सालों के इस लंबे अरसे में
हम भी तरसे हैं, बौखलाए हैं.
गर वह न भी आते तो
क्या कर लेते हम उन का?
वह तो यह हैं कि जो चले आए हैं.
कोई शिकवा, शिकायत नहीं है उन से,
उन की गैरत है कि खुद ही सिर झुकाए हैं.
हम भूखे हैं...नंगे हैं...उन की क्या गलती,
वह भी तो भूखे हैं, शर्म तक नहीं खाए है.
गलती तो आदमी से ही होती है दोस्तो!
वह आदमी थोड़े ही सिर्फ गांधी के साए हैं.
अब भी रखे हैं पास वही बातें, वही सपने,
कुछ मजबूरी है जो संग नहीं लाए हैं.
बेझिझक करते हैं कितनी लंबीचौड़ी बातें
हम भी हंसते हैं—कैसे बेहयाए हैं.
हाय! जाने न देंगे दूर उन्हें दिल्ली तक
कितना तरसें हैं और बौखलाए हैं.

—अर्चना मिश्र

मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छायाकार : ह. ल. मोदी, अजमेर.

मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छायाकार : स. अहमद, रायपुर.

लेख • प्रेमचंद्र [illegible]

फिल्मी अपराधों: बास के ठिकाने
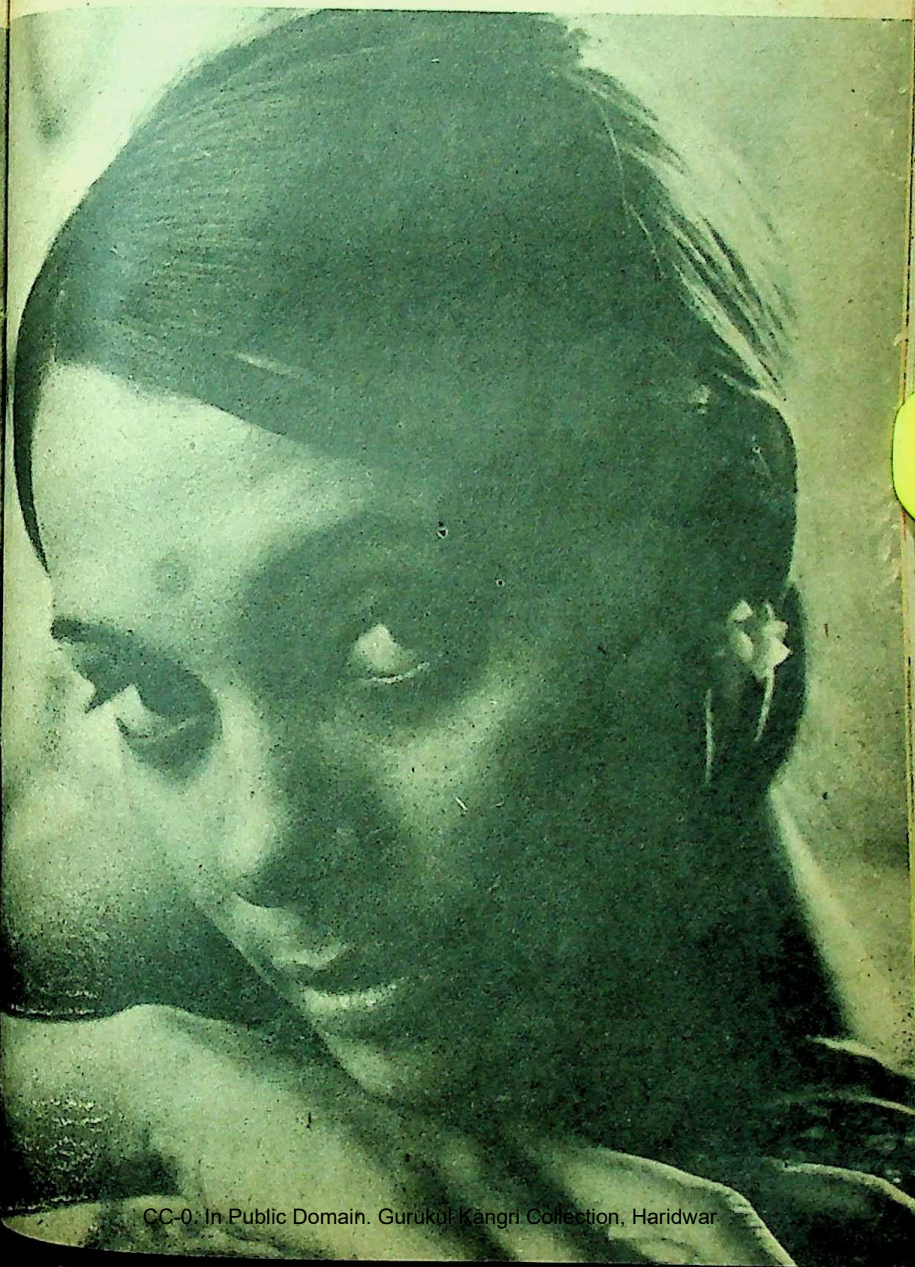
मैं [illegible] फिल्में पहले भी देखता था और अब भी देखता हूं. लेकिन आप से सच कहूं कि मुझे इन फिल्मों की कहानी, इन में बिना मतलब दिखाए जाने वाले कैबरे अथवा कोई बात-बेबात पर शुरू हो जाने वाले गानों में दिलचस्पी नहीं होती. मैं तो बास (खलनायक) के अड्डों से ही ज्यादा प्रभावित
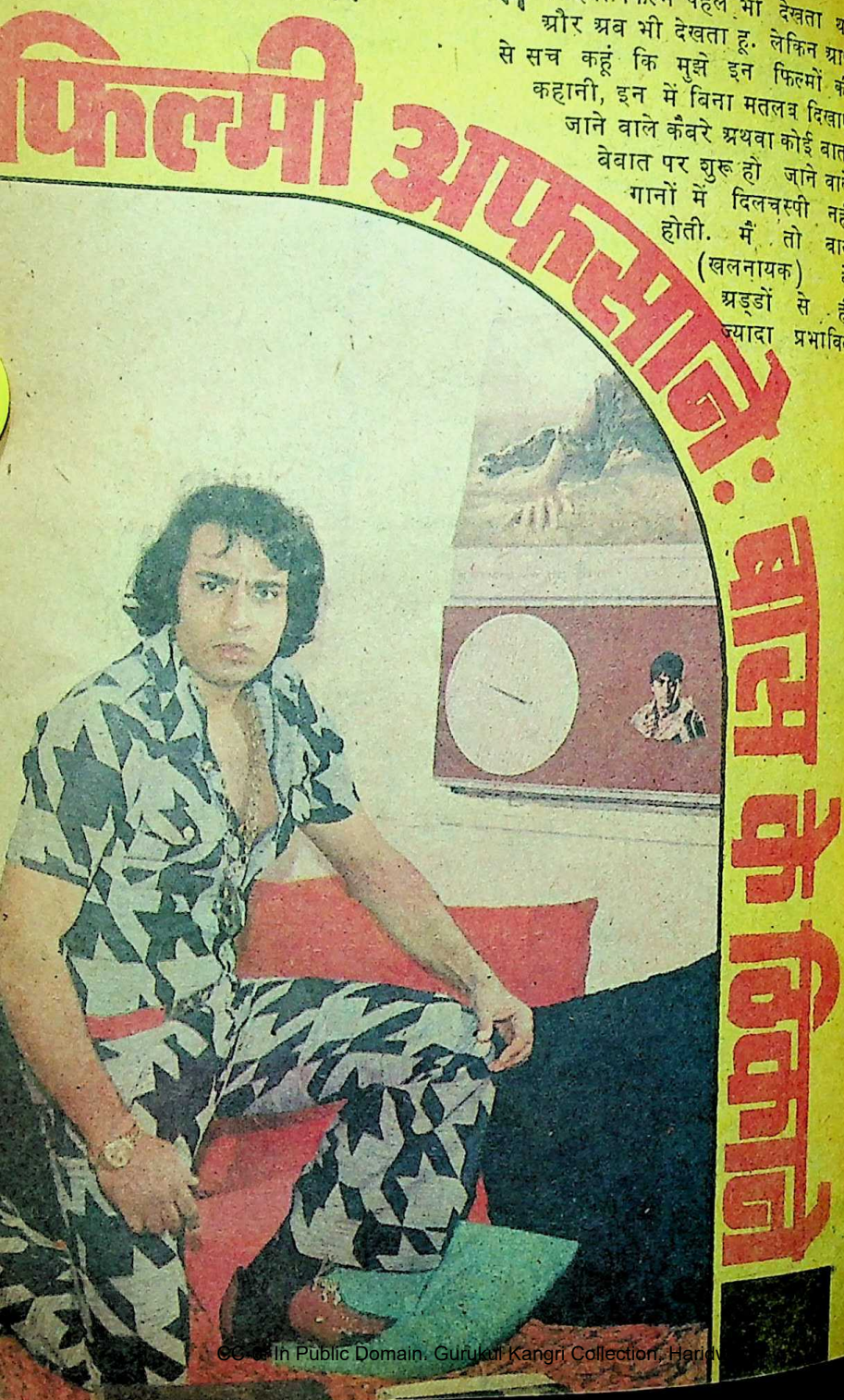
ों तो आपने फिल्मों में बहुत-कुछ अजीबोगरीब देखा होगा. र क्या आप ने कभी फिल्मी ास के तिलस्म से अड्डे ी आश्चर्यजनक स्थितियों र भी गौर किया है?

ः सभी अड्डों पर चाहे वे कितने आधुनिक ढंग के क्यों न हों, लवारें भी अवश्य रहती हैं.

हूं. फिल्म देखते हुए मेरी दृष्टि बरबस इन ठिकानों पर केंद्रित हो जाती है और मैं फिल्म की अन्य बातें प्रायः विस्मृत कर देता हूं. मैं यही देखना चाहता हूं कि करोड़ों रुपयों की तस्करी करने वाला बास किस तरह खुले आम और खूब सजेधजे आवास में रह कर भी कई वर्षों तक पुलिस की आंखों में धूल झोंकता हुआ अपना कार्य सफलतापूर्वक करता रहता है. सिर्फ़ हीरो को ही उस के ठिकाने का पता
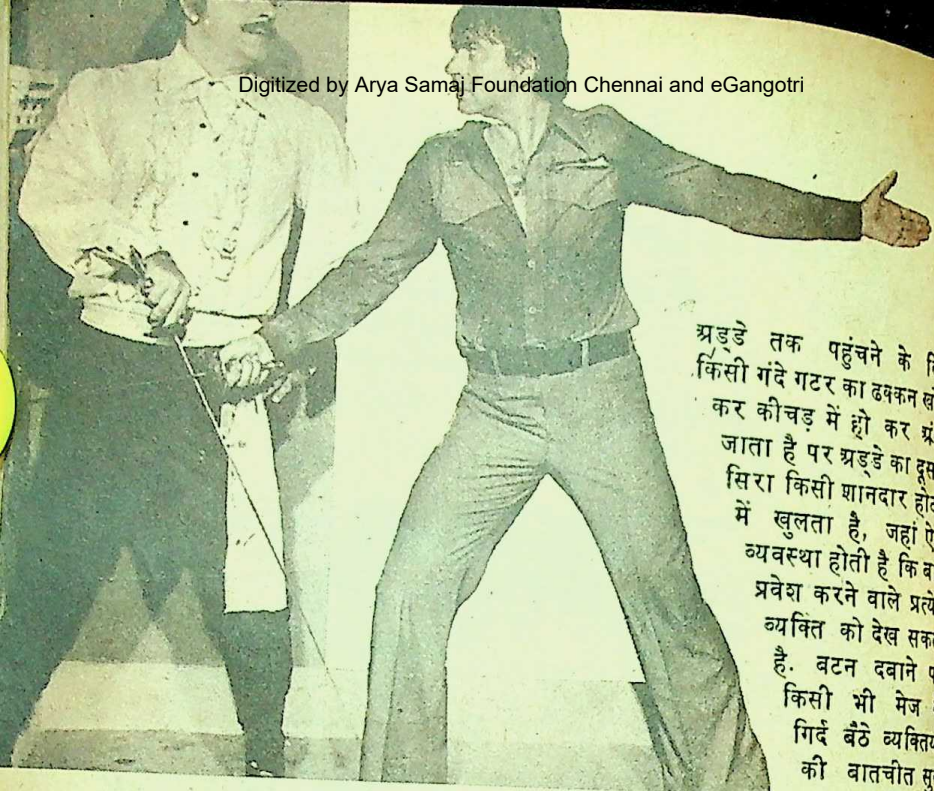
खलनायक चाहे वर्षों से नायक को रास्ते से हटाने की कोशिशें करता रहा हो, पर ऐसा अवसर मिलने पर उस से दोदो हाथ आजमाने से नहीं चूकता.

कैसे चल जाता है यह भी सदा मेरी जिज्ञासा का विषय बना रहा है. बड़ेबड़े पुलिस अफसर भी यह जानने में विफल रहते हैं कि उन का मित्र एक प्रतिष्ठित नागरिक होने के अलावा एक बड़ा तस्कर भी है.

ऐसा कई बार होता है कि बास के अड्डे की विचित्रता मेरे अंतर्मन पर पूरी तरह छा जाती है. भले ही उस का अड्डा बाहर से टूटा खंडहर नजर आता है, लेकिन उस के अंदर जाने वाली सीढ़ियों का रास्ता किसी ऐसे तहखाने तक जाता है, जहां जगमगाते कमरे में इठलाती रमणियों के बीच यह बास शराब के जाम पर जाम खाली कर रहा होता है.

ऐसा भी होता है कि हीरो बास के अड्डे तक पहुंचने के लिए किसी गंदे गटर का ढक्कन खोल कर कीचड़ में हो कर अंदर जाता है पर अड्डे का दूसरा सिरा किसी शानदार होटल में खुलता है, जहां ऐसी व्यवस्था होती है कि बास प्रवेश करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को देख सकता है. बटन दबाने पर किसी भी मेज के गिर्द बैठे व्यक्तियों की बातचीत सुन सकता है, इस के अलावा वह होटल में चल रहे कैबरे को भी देख सकता है.

कुछ नई किस्म के फिल्मी बास तो ऐसी जासूसियों के लिए टेलीविजन का भी इस्तेमाल करते हैं. मुझे तो कभीकभी इन ठिकानों को देख कर अचंभा सा होता है.

अकसर बास के ठिकानों पर मैं एक ऐसा कमरा भी देखता हूं, जहां समझ में न आने वाली बड़ीबड़ी मशीनें और लालनीले बल्बों वाले स्विच बोर्ड भी होते हैं. इन में एक ऐसा बटन भी होता है जिस को दबाने से पूरा अड्डा ध्वस्त हो सकता है. ऐसे बटन भी वहां लगे होते हैं जिन को दबाने से कोई भी दीवार अपनी जगह से हट सकती है अथवा जमीन का कोई हिस्सा अंदर धंस सकता है.

समझ में नहीं आता, इतना तकनीकी ज्ञान रखने वाले इंजीनियरों को वह बास कैसे बुला पाता होगा? बास के अड्डे से

कली सुरंग ऐसी जगह खुलती है जहां लीकाप्टर अथवा हवाई जहाज तैयार ड़ा रहता है या फिर समुद्र के निर्जन नारे पर जा कर खुलती है. वहां मोटर ट या स्टीमर, कहींकहीं तो पनडुब्बी मौजूद रहती है. बास अपने अड्डे र छापा पड़ने पर अपने कीमती सामान र अपनी प्रेमिका सहित उक्त साधनों द्वारा विदेश भागने का प्रयत्न करता. कुछ निर्दयी बास प्रेमिका को भी त में गोली मार देते हैं और केवल ल ही अपने साथ ले जाना पसंद करते

हीरो की करामात

लेकिन अफसोस तो तब होता है, ब यही सर्वशक्तिमान बास साधारण से रो द्वारा जिस का पुलिस इंसपेक्टर ना भी जरूरी नहीं होता, पकड़ लिया ाता है. बास जो हीरों की तिजोरी ोलने की अद्भुत प्रतिभा रखता है थवा दुर्लभ वस्तु को भी बड़ेबड़े महा-

फिल्मी बास नायकनायिका या उस के संबंधियों को कैद रखने के लिए अपने अड्डों का इस्तेमाल करता है.

रथियों को चकमा दे कर अपनी चतुराई से करोड़ों रुपए कमा लेता है, अंत में साधारण से हीरो से मात खा जाता है. उस हीरो से जिसे अपनी प्रेयसी से इश्क लड़ाने के अलावा कोई काम नहीं होता. लेकिन बास को बड़े मजे से निडर हो कर वह पुलिस के हवाले कर देता है. खैर मुझे इन बातों से क्या मतलब मुझे तो बात बास के ठिकानों की ही करनी है.

कुछ पुरानी फिल्मों में बास के अड्डे पर एक बड़ा भारी शेर का पिंजरा हुआ करता था. फंस जाने पर हीरो को जानबूझ कर गोली से न मार कर पराक्रम दिखलाने के लिए शेर के पिंजरे में छोड़ दिया जाता था. उस समय रोमांचित दर्शकों का कलेजा मुंह को आ जाता था, जो निहत्थे नायक द्वारा शेर को मार डालने के बाद ही अपनी जगह जा पाता था. अब आधुनिक 'बासों' के पास तो शेर-चीतों की जगह विभिन्न नस्ल के कुत्ते ही अधिकतर देखने को मिलते हैं.

कई बार फिल्म देखते हुए मुझे बड़ी हैरानी हुई जब अड्डे में बास नहीं उस की आवाज गूंजती सुनाई दी. या फिर नकाब डाले अथवा एक काली छाया के
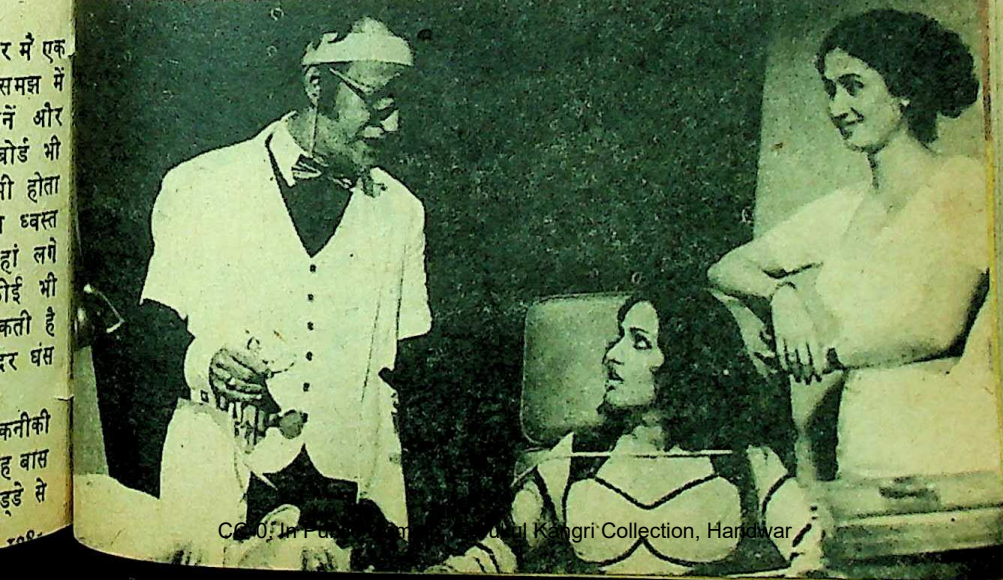
रूप में उस के दर्शन हुए. भले ही अल्प-बुद्धि भारतीय दर्शक भी फिल्मी बास की वास्तविकता शुरू से ही जान जाए लेकिन निर्माता अपनी तरफ से फिल्म के अंत तक जिज्ञासा बनाए रखने की लकीर पीटता रहता है.

कई फिल्मों में मैं ने यह भी देखा है कि बास के कुछ अड्डों पर नाटक के मंच जैसा मंच होता है. मंच के दोनों ओर समानांतर दीवारों में पैनी सलाखें सैकड़ों की संख्या में जड़ी होती हैं. जब [illegible] ताली बजा कर आदेश देता है तो परदा अपने आप खुल जाता है. फिर मंच पर यह देख कर आश्चर्यचकित हो जाना पड़ता है कि वहां फिल्म का हीरो या उस की प्रेमिका का भाई खड़ा है और उस के हाथ बंधे हुए हैं. सलाखों वाली दीवारों के बीच का अंतर कम होने लगता है और दर्शकों की चलती हुई सांस रुकरुक कर चलने लगती है. लेकिन ऐन वक्त पर जब नुकीली सलाखों की दूरी बालक अथवा स्वयं हीरो से

भला ऐसी कौन सी जगह है जहां फिल्म का हीरो न पहुंच पाए. और आखिर वह बास के इन अड्डों का भी पता लगा ही लेता है.
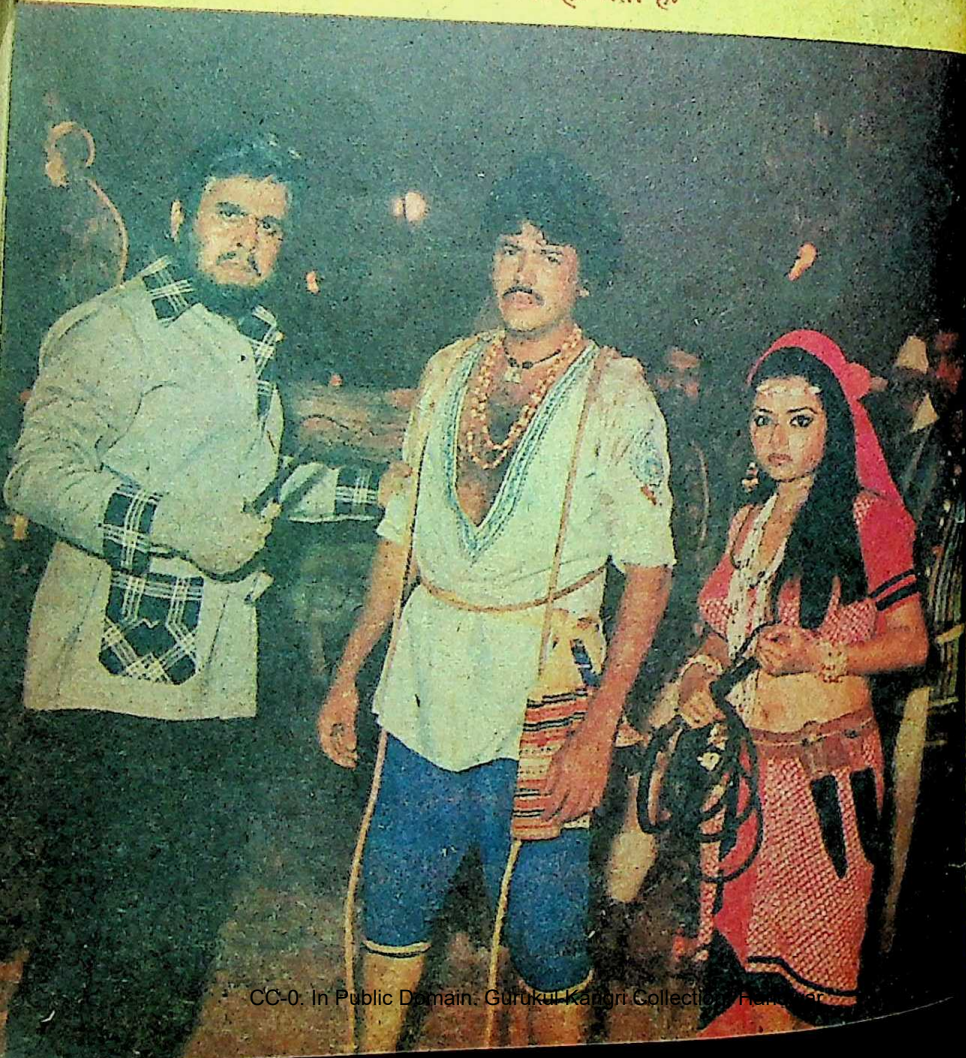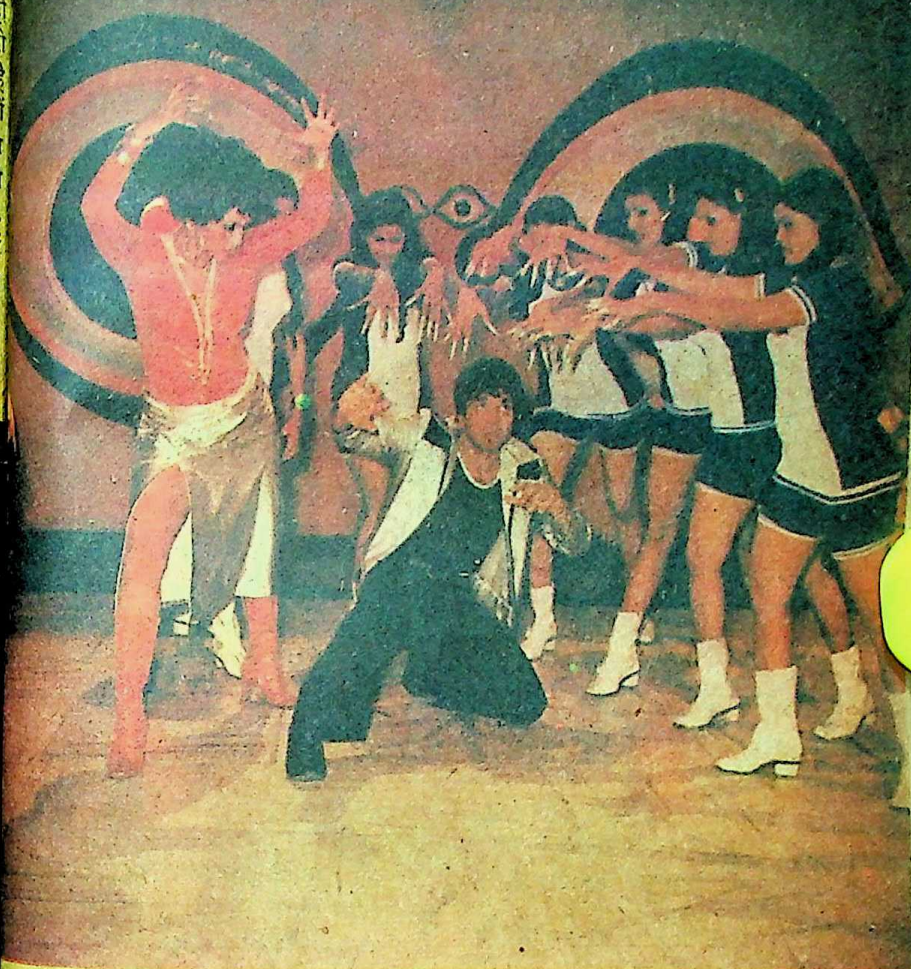
बास के अड्डे में पहुंचने पर हीरो को भुलावे में रखने के लिए नाचगाने का आयोजन भी होता है, पर प्रायः हीरो इस से अप्रभावित रहता है.

…त्र कुछ मिलीमीटर दूर रह जाती है …हीरो या इस का कोई जोकर दोस्त …ई न कोई चमत्कार कर के दीवारों …ा और आगे बढ़ना रोक देता है ताकि …कों की रुकी सांसें सामान्य हो सकें. …त दर्शक उस संकट की घड़ी में हीरो …ी तात्कालिक बुद्धि से प्रभावित हुए …ना नहीं रह पाते

पुरानी फिल्मों में बास के अड्डे

कुछ पुरानी फिल्मों में मैं ने बास के अड्डे पर जगहजगह क्रास बना कर लटकाई गई तलवारें ढालों सहित देखीं. मुझे गोलाबारूद के युग में तलवारें देख कर कुछ आश्चर्य सा हुआ था, लेकिन [illegible] हाथापाई

फिल्मी बास के अड्डे का कोई खुफिया रास्ता जंगल में या समुद्र के किनारे तक भी जाता है, जहां वह तस्करों के साथ सौदेबाजी भी करता है.

करने के बाद स्वयं बास ने एक तलवार निहत्थे नायक को थमा दी तथा एक तलवार खुद ले कर उस से युद्ध शुरू कर दिया. बाद में मुझे पता चला कि बास ने हीरो को तलवार दे कर अपनी मौत को आमंत्रण दिया था.

बास के अड्डे कहां होते हैं?

अधिकतर बास के अड्डे उस की शानदार हवेली के तहखानों में ही बने होते हैं और प्रायः इन के साथ बड़ेबड़े गोदाम भी होते हैं, जिन में खाली ड्रमों का अंबार लगा रहता है. खाली ड्रमों में क्या भरा जाता है, यह तो मैं भी नहीं समझ सका. पर सैकड़ों की तादाद में जब ये ड्रम बास के आदमियों पर ढुलकते हैं तो बड़ा ही रोचक दृश्य उत्पन्न हो जाता है. बास भले ही हीरों अथवा चरस की तस्करी करता हो लेकिन ये बड़ेबड़े ड्रम उस के गोदामों में अवश्य रहते हैं. कभी-कभी गोदामों में लकड़ी की पेटियां या मिलावट की सामग्री से भरे बोरे भी रखे रहते हैं. मारपीट के समय इन गोदामों में न जाने कहां से मोटेमोटे रस्से लटक आते हैं, जिन को पकड़ कर झूलता हुआ हीरो सरकस के नट जैसी कलाबाजियां खाता हुआ बास और उस के आदमियों पर कयामत ढा देता है और उन्हें छकाता रहता है. नायक के अनूठे कारनामे देखने के लिए उस की प्रियतमा भी वहां रहती है.

एक और बात जो मैं फिल्मों में देखता हूं वह यह कि बड़े छलकपट से बास के अनुचर नायक को पकड़ कर अड्डे पर लाते हैं. नायक को लोहे की जंजीरों से जकड़ दिया जाता है. उन लोहे की जंजीरों का वजन हीरो के भी वजन से कई गुना ज्यादा होता होगा. अकसर यह भी होता है कि अड्डे पर नायिका के मांबाप और खुद हीरोइन पहले से ही कैद हो. बास के सभी आदमी उन को चारों ओर से घेर लेते हैं. अब बास हीरो के सामने ही उस की प्रेयसी को यह कह कर नाचने के लिए विवश करता है कि यदि वह नाचेगी नहीं तो उस के प्रेमी को मार दिया जाएगा.

इस पर हीरो हीरोइन से जोरजोर से चिल्ला कर कहता है, "नहींनहीं, चाहे मेरी जान भी क्यों न चली जाए पर तुम इन भेड़ियों के सामने मत नाचना."

अब चूंकि हीरोइन को अपने प्रेमी की जान और यदि मांबाप वहीं मौजूद हों तो उन की भी जान प्यारी होती है, इसलिए वह नाचती तो है ही साथ में गाती भी है. वह तब तक नाचतीगाती रहती है जब तक कि पुलिस बास के ठिकाने पर धावा नहीं बोल देती.

यहां एक बात और समझ में नहीं आती कि पुलिस को गाने के खत्म होने का कैसे पता चल जाता है, क्योंकि गाना खत्म होते ही पुलिस अड्डे पर आ जाती है. ●

मुक्ता

नए अंकुर कहानी प्रतियोगिता 1980 के पुरस्कारों की घोषणा

इस प्रतियोगिता के अंतर्गत वर्ष भर में 8 कहानियां प्रकाशित हुईं. इन में से तीन कहानियों पर क्रमशः प्रथम, द्वितीय, एवं तृतीय पुरस्कार देने की घोषणा की गई थी. नए अंकुर के सभी प्रतियोगियों का प्रयास काफी सराहनीय रहा.

संपादक की राय व पाठकों के विचारों के आधार पर प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार निम्नलिखित कहानियों पर दिए जा रहे हैं :

प्रथम पुरस्कार— 200 रुपए देर से आई चिट्ठी—दिसंबर (द्वितीय)

द्वितीय पुरस्कार— 100 रुपए केकड़े—सितंबर (प्रथम) 1980

तृतीय पुरस्कार— 50 रुपए महामानव—जनवरी (द्वितीय) 1980

पुरस्कृत रचनाकार

सुरेंद्रकुमार 'भक्त'

प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत कहानी 'देर से आई चिट्ठी' में लेखक ने पति की ज्यादतियों से तंग आ कर उसे छोड़ने और पति के सुधर जाने पर उसे पुनः अपनाने वाली महिला की कथा द्वारा एक सही दिशा दिखाई है.

शैलेंद्र दुबे

द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कहानी 'केकड़े' के माध्यम से लेखक ने ऐसे अधिकार और सामर्थ्यवान पुरुषों का परदाफाश किया है जो असहाय युवतियों को अपनी चंद जरूरतों की खातिर शरीर तक बेचने पर विवश कर देते हैं.

गजेंद्रसिंह

तृतीय पुरस्कार प्राप्त कहानी 'महामानव' में एक संपन्न व्यक्ति द्वारा अनाथ बच्चे को उच्च शिक्षा दिलाने की कथा के माध्यम से लेखक ने अपने धन का मानवता के हित में सदुपयोग करने का रास्ता सुझाया है.

	जनवरी	फरवरी	मार्च
रवि.	... 4 11 18 25	... 1 8 15 22	1 8 15 22 29
सोम.	... 5 12 19 26	... 2 9 16 23	2 9 16 23 30
मंगल.	... 6 13 20 27	... 3 10 17 24	3 10 17 24 31
बुध.	... 7 14 21 28	... 4 11 18 25	4 11 18 25 ...
बृह.	1 8 15 22 29	... 5 12 19 26	5 12 19 26 ...
शुक्र.	2 9 16 23 30	... 6 13 20 27	6 13 20 27 ...
शनि.	3 10 17 24 31	... 7 14 21 28	7 14 21 28 ...

	अप्रैल	मई	जून
रवि.	... 5 12 19 26	31 3 10 17 24	... 7 14 21 28
सोम.	... 6 13 20 27	... 4 11 18 25	1 8 15 22 29
मंगल.	... 7 14 21 28	... 5 12 19 26	2 9 16 23 30
बुध.	1 8 15 22 29	... 6 13 20 27	3 10 17 24 ...
बृह.	2 9 16 23 30	... 7 14 21 28	4 11 18 25 ...
शुक्र.	3 10 17 24 ...	1 8 15 22 29	5 12 19 26 ...
शनि.	4 11 18 25 ...	2 9 16 23 30	6 13 20 27 ...

	जुलाई	अगस्त	सितंबर
रवि.	... 5 12 19 26	30 2 9 16 23	... 6 13 20 27
सोम.	... 6 13 20 27	31 3 10 17 24	... 7 14 21 28
मंगल.	... 7 14 21 28	... 4 11 18 25	1 8 15 22 29
बुध.	1 8 15 22 29	... 5 12 19 26	2 9 16 23 30
बृह.	2 9 16 23 30	... 6 13 20 27	3 10 17 24 ...
शुक्र.	3 10 17 24 31	... 7 14 21 28	4 11 18 25 ...
शनि.	4 11 18 25 ...	1 8 15 22 29	5 12 19 26 ...

	अक्तूबर	नवंबर	दिसंबर
रवि.	... 4 11 18 25	1 8 15 22 29	... 6 13 20 27
सोम.	... 5 12 19 26	2 9 16 23 30	... 7 14 21 28
मंगल.	... 6 13 20 27	3 10 17 24 ...	1 8 15 22 29
बुध.	... 7 14 21 28	4 11 18 25 ...	2 9 16 23 30
बृह.	1 8 15 22 29	5 12 19 26 ...	3 10 17 24 31
शुक्र.	2 9 16 23 30	6 13 20 27 ...	4 11 18 25 ...
शनि.	3 10 17 24 31	7 14 21 28 ...	5 12 19 26 ...

...लता हुआ ...यापार

...आज कोई कलाकार फिल्मों में कला से प्यार या शोहरत की वजह से ...म नहीं करता बल्कि उस की सब से ...ी इच्छा दौलत पाने की होती है. इस ...लिए सिर्फ अभिनय ही नहीं वह बाकी ...त्रों में भी टांग अड़ाने से बाज नहीं ...ता.

रीना राय को ही लें. कलकत्ता की ...ह कैबरे नर्तकी फिल्मों में बतौर नायिका ...फल क्या हुई कि उस का पूरा परिवार ...जैसे फिल्म निर्माता बनने की ठान ...ा है. दो साल पहले रीना का भाई ...जा 'मुकाबला' से निर्माता बना था. ...ब उस की बहन जो उस की सलाहकार ...संरक्षिका भी मानी जाती है यानी ...रखा राय, फिलम बना रही है. फिल्म का ...म है—'सनम तेरी कसम.' इस का ...र्देशन नरेंद्र बेदी कर रहे हैं और फिल्म ...ा नायक है—हिंदी फिल्मों के लिए अन-...ान लेकिन दक्षिण भारतीय भाषाओं की ...फल्मों का इस समय का सुपर स्टार ...मला हसन.

'मुकाबला' रीना राय की औसत ...फल्मों की तरह बकवास थी. 'सनम तेरी ...सम' क्या गुल खिलाएगी, यह देखने ...ी बात है.

अमिताभ का चक्रव्यूह

अमिताभ अब और चलेगा या नहीं, ...से ले कर कई सवाल उठ खड़े हुए हैं.

...रीना राय : सारे तमाशे का क्या केवल ...यही उद्देश्य नहीं है—जैसे भी हो ...दौलत बटोरो?

उस से कुट्टी कर लेने वाले सलीम जावेद का कहना है, "हम नहीं समझते कि हम ने अमिताभ को बनाया, लेकिन उस की सफलता में हम निश्चित रूप से भागीदार

परदे के आगे परदे के पीछे
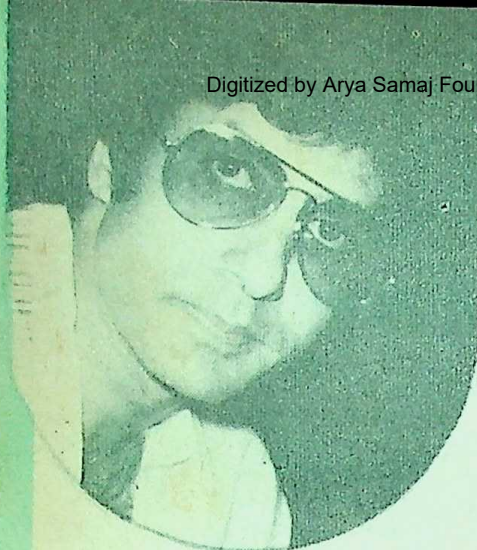
अमिताभ : फिल्मों में भविष्य कैसा है क्या यह आगामी चार फिल्मों से वास्तव में पता लग जाएगा?

हैं. उसे जरूरत थी एक अच्छी पटकथा की जो हम ने उसे दी. हम खुद एक ऐसे कलाकार की तलाश में थे जो हमारे लिखे पात्रों को साकार कर सके." गोया वह मानते हैं कि उन के बिना अमिताभ नहीं चल सकता.

निर्माता जानी बख्शी कहता है, "जिस तरह गुलजार ने हीरो बनने की अपनी इच्छा को जितेंद्र के जरिए पूरा किया, उसी तरह सलीम जावेद ने भी अमिताभ का इस्तेमाल किया. सलीम जावेद द्वारा लिखी फिल्मों में अमिताभ के फिल्मी और जावेद के असली व्यक्तित्व में काफी समानताएं तलाश की जा सकती हैं."

'मजबूर,' 'कसौटी,' 'जंजीर,' 'अमर अकबर एंथोनी' व 'दोस्ताना' के साथी कलाकार प्राण का मत है, "मुझे विश्वास है कि वह ज्यादा समय तक टाप पर रह सकेगा. उस की सब से बड़ी खूबी उस की समय की पाबंदी है. उस के काम में अनुशासनबद्धता है." 'सरफरोश' में अमिताभ प्राण के पिता की भूमिका कर रहा है.

फिलहाल अमिताभ अपना भविष्य आगामी चार फिल्मों—'राम बलराम,' 'याराना,' 'शान' व 'बरसात की एक रात' पर आधारित मान रहा है.

हंस की चाल

जरीना वहाव पहली बार इंग्लैंड क्या गई कि उसे आधुनिक बनने का भूत सवार हो गया. वहां से उस ने आधुनिक

जरीना : "मुझे भारतीय रूप व भारतीय कपड़े ही ज्यादा अच्छे लगते हैं." यह हकीकत है या खिसियाहट?

...ा के कई क... ...ा कीमती स... भारत मे... ...त साजसाम... ...स का भोंड... ...ा मसाला ह... ...कर पुराने ढ... ...किस्म के कप... मुझे भारती... ...ी ज्यादा अ... ...विदेशी स... ...या है."

स्टा...

स्टार की... ...ा सकता है... ...वालों की ... ...नर्जी कहते... ...िल्म में ले क... ...किन देव अ... ...ोई भी लड़की... ...गा." वैसे यह... ...ाहिरा को... ...िल्मों के बाद...

अभिनय प्रति... ...से ही थी.–सि...

ा के कई कपड़ेलत्ते, सैंडिल व मेकअप ा कीमती सामान खरीद डाला.

भारत में एक पखवाड़ा तक वह न साजसामान में सजीसंवरी भी, लेकिन स का भोंडापन लोगों के लिए मजाक ा मसाला ही ज्यादा बना. लिहाजा वह र पुराने ढर्रे पर लौट आई यानी देशी िस्म के कपड़ों पर. अब वह कहती है, मुझे भारतीय रूप व भारतीय कपड़े ं ज्यादा अच्छे लगते हैं. इसलिए मैं विदेशी सामान को पैक कर के रख िया है."

स्टार बनना कैसे?

स्टार कौन है और क्या उसे बनाया ा सकता है? फिल्मी दुनिया में इन वालों की तलाश जारी है. हृषीकेश ुखर्जी कहते हैं, "आप किसी को भी िल्म में ले कर स्टार नहीं बना सकते." ेकिन देव आनंद का कहना है, "मुझे ोई भी लड़की दे दो, मैं उसे स्टार बना ूंगा." वैसे यह उस की गलतफहमी ही है. ज़ाहिरा को उस ने लिया, लेकिन दो िल्मों के बाद भी उसे स्टार नहीं बना सका. जाहिरा भी उस के साथ रह कर कुछ नहीं बन सकी. जीनत अमान को भी बाहर की फिल्मों ने स्टार बनाया न कि देव की फिल्मों ने.

अभिनय प्रतिभा तो मुझ में पहले से ही थी.–स्मिता
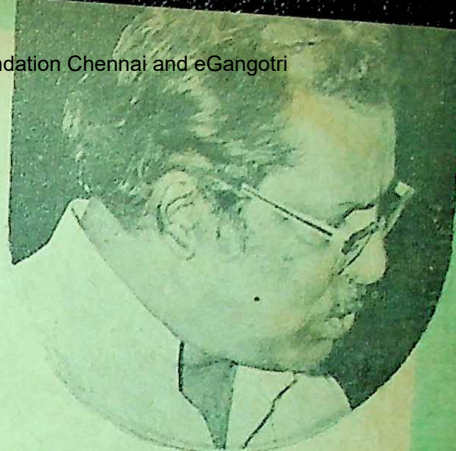
हृषीकेश मुखर्जी : किसी को भी फिल्म में ले कर उसे स्टार नहीं बनाया जा सकता.

दूसरों को स्टार बनाने की बात तो दूर, खुद वह एक स्टार के रूप में अपनी अहमियत खोता जा रहा है. इसलिए आजकल उस ने ऋषि कपूर की कुछ ज्यादा ही तारीफ करनी शुरू कर दी है. उस का कहना है, "इस लड़के में वह तमाम खूबियां हैं जो किसी भी युवा नायक में होनी चाहिए. मैं उस दिन का इंतजार कर रहा हूं जब मैं किसी फिल्म में उस का निर्देशन कर सकूं." कहीं यह ऋषि को अपनी फिल्म में लेने की उस की तैयारी तो नहीं है?

बात एहसान की

स्मिता पाटिल कहती है, "मुझे फिल्मों में लाने का श्रेय श्याम बेनेगल को है. श्याम की वजह से ही मुझे पता लगा कि मैं अभिनय कर सकती हूं. यह बात नहीं है कि श्याम ने मुझे अभिनय करना सिखाया. उन्होंने मुझे कुछ नहीं
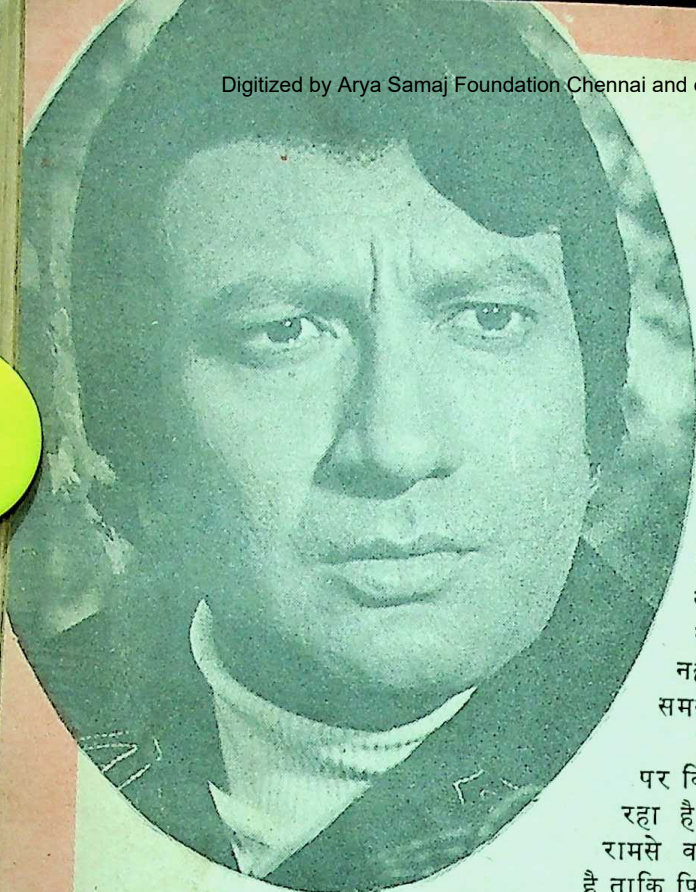
विजय आनंद : मैं एक गलत परंपरा का शिकार हो गया हूं.

'राजपूत' दो साल से बन रही है, लेकिन 40 प्रतिशत भी पूरी नहीं हो पाई है. 'एक दो तीन चार' का मुहूर्त हुए साल हो गया है लेकिन उस का एक भी शाट नहीं लिया जा सका है.

विजय कहता है, "मैं एक गलत परंपरा का शिकार हो गया हूं. ऐसा पहले कभी नहीं हुआ. काम ऐसा थका देने वाला कभी भी नहीं था. मैं नहीं समझ पाता कि इस समस्या का भविष्य क्या होगा?"

हीरो निर्माता के तौर पर विजय आनंद जो फिल्म बना रहा है उस का निर्देशन श्याम रामसे व तुलसी रामसे के हाथों में है ताकि फिल्म जल्दी से जल्दी पूरी की जा सके.

वैसे इस फिल्म में विजय ने कुछ गीत भी लिखे हैं.

सिखाया, सिर्फ मेरी अभिनय की क्षमता का पता लगाया और उस क्षमता के बारे में मुझे भी एहसास कराया."

एहसान मानते हुए भी उसे नकार देने की क्या इस से बढ़िया और कोई मिसाल हो सकती है?

व्यवस्था का दोष

फिल्मों के ढर्रे ने बड़ेबड़े खलीफाओं के पेच ढीले कर दिए हैं. कुछ समय पहले तक विजय आनंद उर्फ गोल्डी कहा करता था, "मुझे कोई भी कहानी दे दो और कैसे भी कलाकार दे दो, मैं डेढ़ साल में फिल्म पूरी कर के दिखा सकता हूं."

लेकिन 'राम बलराम' ने उस की सारी अकड़ निकाल दी है. इस फिल्म को पूरा होने में पूरे चार साल लग गए हैं.

क्षेत्रीय फिल्मों से परहेज

सात हिंदी फिल्में बनाने वाले बी. नागिरेड्डी ने अब फैसला किया है कि वह क्षेत्रीय भाषाओं में कोई फिल्म नहीं बनाएंगे. "वजह सिर्फ इतनी है कि तमिल या तेलुगू फिल्म बनाने में भी उतनी ही लागत आती है जितनी हिंदी फिल्म बनाने में, जब कि उस रकम की वापसी हिंदी फिल्म में ज्यादा होती है."

हिंदी की बाल पत्रिका 'चंदामामा', 'विशाल विजया स्टूडियो' और कई चाय बागान के मालिक बी. नागिरेड्डी अब जो फिल्म बना रहे हैं उस का निर्देशक संजीवकुमार होगा.

उ. :
स. :

पत्थर
अच्छाई अ
आधारित
से फिल्म
नि. : गुल
मेहता, प्रा
प्रतिश
में डब किय
में अच्छी
और कुछ
निर्देशन भी
की गड़ब
मजा किर
नि. : आई
जया भारत
राम
से भरपूर
फार्मूला
कहानी के
गया है. सं
मु.पा. : ध
नजर
की वहू को
उस बदमा
वहू पर ह
एक और
कार कर
अशोककुम
कपूर. अ.
इंसाप
रमेश एक
शिकार ब
जाती है,
रमेश को
नीता से र
लेने के लि
नि.: बलदे
बब्बर, दीप
दो प्रे
लखपति
फिर दोनों
चक्कर में
घिसीपिटी

पिछले छः महीनों की फिल्में

निर्देशिका

उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए म. : मनोरंजक/देख लें नि. : निर्देशक
स. : समय काटिए/चलताऊ अ. : अपव्यय/समय की बरबादी मु. पा. : मुख्य पात्र

पत्थर से टक्कर : दस सालों में बनी यह फिल्म अच्छाई और बुराई के जानेपहचाने संघर्ष पर आधारित है. ज्यादा समय में बन पाने की वजह से फिल्म का सूत्र कई जगह से टूटा हुआ है. **नि. :** गुलाबचंद्र मेहता, **मु. पा. :** संजीव, गीता मेहता, प्राण, जीवन. **अ.**

प्रतिशोध : मलयालम में बनी फिल्म का हिंदी में डब किया गया रूप, जिस में अच्छी फोटोग्राफी है और कुछ स्थानों पर बढ़िया निर्देशन भी. लेकिन डबिंग की गड़बड़ी बीचबीच में मजा किरकिरा कर देती है.

नि. : आई. वी. ससि, **मु. पा. :** मधु, सोमन, जया भारती, शारदा. **स.**

राम बलराम : सभी आजमाए हुए मसालों से भरपूर फार्मूला फिल्म. लगता है विभिन्न फार्मूला दृश्यों को अलगअलग फिलमा कर कहानी के नाम पर किसी प्रकार जोड़ दिया गया है. संगीत नीरस है. **नि. :** विजय आनंद, **मु.पा. :** धर्मेंद्र, अमिताभ, जीनत, रेखा. **अ.**

नजराना प्यार का : एक बदमाश बड़े घर की बहू को ब्लैकमेल कर के लूटता है. अचानक उस बदमाश की हत्या हो जाती है. बड़े घर की बहू पर हत्या का आरोप लगता है. अचानक एक और बदमाश शंकर हत्या का अपराध स्वीकार कर लेता है. **नि. :** एस.एम. सागर, **मु.पा. :** अशोककुमार, सारिका, राजकिरण, शक्ति कपूर. **अ.**

इंसाफ का तराजू : एक धनी नवयुवक रमेश एक माडल गर्ल भारती को बलात्कार का शिकार बनाता है. भारती उसे अदालत में ले जाती है, लेकिन लंबीचौड़ी बहस के बाद अदालत रमेश को निर्दोष बरी कर देती है. अपनी बहन नीता से रमेश द्वारा बलात्कार करने का बदला लेने के लिए भारती रमेश की हत्या कर देती है. **नि.:** बलदेव राज चोपड़ा, **मु. पा. :** जीनत, राज बब्बर, दीपक पाराशर, पद्मिनी कोल्हापुरे. **उ.**

दो प्रेमी : एक जुआरी का बेटा चेतन एक लखपति की लड़की पायल से प्यार करता है, फिर दोनों घर से भाग जाते हैं. तस्करों के चक्कर में फंसने और [illegible] घिसीपिटी कहानी. **नि. :** राज खोसला, **मु. पा. :** ऋषि, मौसमी, इंद्रसेन जोहर, ओमप्रकाश. **अ.**

मांग भरो सजना : संयोगों और भावुक प्रसंगों पर आधारित एक परंपरागत मद्रासी फिल्म, जिस में रेखा का अभिनय काफी शानदार रहा है. गीतसंगीत सामान्य. **नि. :** टी. रामाराव, **मु. पा. :** जितेंद्र, रेखा, मौसमी. **स.**

साजन मेरे मैं साजन की : 'दुलहन वही जो पिया मन भाए' की नकल पर बनी एक बकवास फिल्म, जिस में गरीब नायिका अमीर नायक को सुधार कर उसे अपनाती है. **नि. :** हीरेन नाग, **मु. पा. :** राजकिरण, रामेश्वरी, काजल. **अ.**

बदला और बलिदान : परिस्थितियोंवश एक किसान के डाकू बन जाने और बाद में उस डाकू के युद्ध में मारे जाने की कहानी, जिसे कई सालों में काफी फेरबदल के बाद प्रस्तुत किया गया है. **नि. :** केवल शर्मा, **मु. पा. :** राजेंद्रकुमार, आशा पारिख, विनोद मेहरा. **अ.**

बंदिश : किशन कालिज की एक लड़की मधु से प्यार करता है. मधु एक बदमाश कपिल को किसी आदमी की हत्या करते देख लेती है. कपिल मधु को मार देता है. किशन मधु की हत्या का बदला लेता है. अंत में पता चलता है कि कपिल उस का बचपन में खोया बड़ा भाई है. **नि. :** के. बापय्या, **मु. पा.** हेमा, राजेश खन्ना, डैनी, ओम शिवपुरी. **अ.**

दोस्ताना : दो नायकों और एक नायिका के त्रिकोण की वही जानीपहचानी कहानी. नामी लोगों के बावजूद फिल्म कहीं भी सामान्य स्तर से ऊपर नहीं उठी है. **नि. :** राज खोसला, **मु. पा. :** अमिताभ, जीनत, शत्रुघ्न. **स.**

खूनखराबा : राजा और राणा पहले पक्के दोस्त होते हैं फिर एकदूसरे के दुश्मन बन जाते हैं. अपहरण, बलात्कार और खूनखराबे की कहानी. घिसीपिटी फिल्म. **नि. :** दीपक बाहरी, **मु. पा. :** विनोद मेहरा, बिंदिया, अमजद. **अ.**

प्यारा दुश्मन : अमजद को ले कर बनाई गई फिल्म. बचपन में बिछुड़े दो भाई और एक बहन के मिलन की कहानी, बीच में मारपीट, हिंसा और लूटमार के सभी पुराने फार्मूले. **नि.:** आनंद सागर, **मु. पा. :** अमजद, विनोद मेहरा, [illegible] बिंदिया. **स.**

काला पानी : एक स्मगलर का बेटा बड़ा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो कर पुलिस इंस्पेक्टर बनता है और अपने ही पिता को पकड़वाता है. कहींकहीं फिल्म का संपर्कसूत्र टूटा सा नजर आता है. **नि. :** शिबु मित्रा, **मु. पा. :** शशि कपूर, नीतू, अजीत. अ.

निशाना : प्रताप की पत्नी जानकी का हार लेने के लिए ठाकुर उस का अपहरण करता है, लेकिन हार उस के हाथ नहीं लगता. ठाकुर की लड़की कविता राजा से प्यार करती है. तभी पता चलता है कि राजा जानकी के हत्यारे का बेटा है. अंत में राजा सब रहस्य खोलता है. अपराधी पकड़ा जाता है. **नि. :** के. राघवेंद्रा राव बी. ए., **मु. पा. :** जितेंद्र, पूनम ढिल्लों, प्रेम चोपड़ा, उत्पल दत्त. अ.

फिर वही रात : दौलत के लालच में खलनायक द्वारा नायिका को डराडरा कर मार डालने के षड्यंत्र की कहानी. निर्देशक के रूप में डैनी की पहली फिल्म, लेकिन निर्देशन के साथसाथ अभिनय में भी वह इस फिल्म में शून्य रहा. **नि. :** डैनी, **मु. पा. :** राजेश, किम, अरुणा ईरानी, डैनी. स.

किस्मत : जीवन दो छोटे बच्चों श्यामा और मोती का अपहरण करना चाहता है, लेकिन गलती से वह यशोदा की लड़की गंगा को उठा ले जाता है. बड़ा होने पर मोती जीवन से लड़ता है और अंत में उसे मारने में सफल होता है. मोती और गंगा का विवाह हो जाता है. निर्देशक ने बीच में वेश्या से नायक के विवाह का भी चित्रण किया है. **नि. :** भीष्म कोहली, **मु. पा. :** मिथुन, रंजीता, शक्ति कपूर, उर्मिला भट्ट. अ.

लूटमार : विक्रम विंग कमांडर भारत के पिता और पत्नी की हत्या कर के भाग जाता है. भारत उस की तलाश करता है. पुलिस और सैनिकों की मदद से भारत विक्रम को मारने में सफल होता है. **नि. :** देव आनंद, **मु. पा. :** देव आनंद, टीना, राखी, अमजद खान, शक्ति कपूर. अ.

अब्दुल्लाह : खलील रेगिस्तान में लोगों को लूटता है और उन के बच्चों को उठा ले जाता है. खलील एक हिंदू औरत को मार देता है. उस के बच्चे को अब्दुल्लाह पालता है. खलील को पता चलता है कि एक दिन बच्चे के कारण उस की मौत होगी. वह बच्चे को मारने की कोशिश करता है और अंत में नायक के हाथों स्वयं मारा जाता है. **नि. :** संजय खान, **मु. पा. :** संजय, जीनत, राज कपूर. अ.

अपने पराए : बड़ा भाई अपने चचेरे भाई को काम के लिए बारबार पैसा देता है और छोटा भाई व्यापार में खराब कर देता है. लेकिन मंझली बहू और भैया उसे घर से निकलवा देते हैं. एक दिन बड़े भैया और भाभी को मंझली बहू और मंझले देवर की चालाकी का पता चलता है तो वह जा कर छोटे भाई और उस की पत्नी, बच्चों को फिर घर ले आते हैं. **नि. :** बासु चटर्जी, **मु. पा. :** शबाना, अमोल, उत्पलदत्त, आशा लता. उ.

सलाम मेम साहब : सड़कों पर नाचनेगाने वाले की कहानी, जो सुखी जीवन की तलाश में इधरउधर भटकने के बाद अपने भीतर की खुशी तलाश कर लेता है. सामान्य फिल्म में सामान्य गीत संगीत. **नि.:** असरानी, **मु.पा. :** असरानी, जरीना वहाब, मंजु बंसल, रंजीत. स.

बिन मां के बच्चे : अपने पिता से बिछुड़े दो बच्चों की कहानी जो लंबीचौड़ी नाटकीयता के बाद अंत में मिल जाते हैं. सामान्य स्तर पर बनी सामाजिक फिल्म में गीत और संगीत भी सामान्य ही रहा. **नि. :** सत्येन बोस, **मु. पा. :** श्रीराम लागू, तनुजा, बिंदु. स.

बेरहम : एक पुलिस अधिकारी द्वारा अपने ही वरिष्ठ अधिकारी को पकड़ने की एक आदर्शवादी कहानी, जिस में मनोरंजन के नाम पर सभी किस्म के फार्मूले भर दिए गए हैं. निर्देशक की पकड़ की वजह से फिल्म रोचक हो गई है. **नि. :** रघुनाथ झालानी, **मु. पा. :** संजीवकुमार, शत्रुघ्न सिन्हा, रीना राय. म.

हम नहीं सुधरेंगे : तीन हमशक्ल आदमियों की कहानी. एक बदमाश चांद, एक रिश्वत लेने वाला चपरासी मदनलाल और एक जासूस पी. के.. चांद पी. के. को पकड़ कर उस की शक्ल का फायदा उठाना चाहता है, लेकिन अंत में पुलिस मदनलाल की मदद से उस तक पहुंच जाती है. चांद मारा जाता है. **नि. :** असरानी, **मु. पा. :** असरानी, मंजु बंसल, रीता भादुड़ी, योगिता बाली. स.

एक गुनाह और सही : वर्मा शंकर को बैंक लूटने के लिए मजबूर कर देता है. वर्मा शंकर की पत्नी पारो से बलात्कार करता है, पारो वर्मा को गोली मार देती है. पुलिस से बचने के लिए शंकर और पारो को भागना पड़ता है. अंत में शंकर वर्मा को मारने में सफल होता है. **नि. :** योगी कथूरिया, **मु. पा. :** सुनील दत्त, परवीन बाबी, मदन पुरी. अ.

जुदाई : पतिपत्नी के बीच अहं की लड़ाई को ले कर उठे पारिवारिक मतभेद की जानीपहचानी कहानी, जिस में वास्तविकता कम और अविश्वसनीय फार्मूले ज्यादा हैं. **नि. :** टी. रामाराव, **मु. पा. :** अशोककुमार, जितेंद्र, रेखा. स.

चित्रावली

खरीदारी की खरीदारी और सौर शक्ति का विशेष आनंद भी : यह दोहरी सुविधा उपलब्ध है अल्पाहार की दुकान में, जिसे खोला तो है मांबाप ने लेकिन उसे चला रही है उन की 20 वर्षीया लड़की मारिया बारटूम. जो कभीकभी माडलिंग भी कर लेती है.

▼

Freshly Made
Sandwiches
SOLARIUM

हवा में कलाबाजियां खातेखाते दुर्घटना का शिकार : लंदन के पास हुए 'बिगिन हिल एअर शो' के दौरान हुई इस दुर्घटना में सात व्यक्ति मारे गए और पुरानी कारों का मलबा चारों तरफ बिखर गया.

नीतियों का विरोध : इंगलैंड में पिछले दिनों जब प्रधान मंत्री मार्गरेट थैचर ने कंजरवेटिव पार्टी के अधिवेशन में अपनी नीतियां न बदलने की घोषणा की तो 8,000 उग्र प्रदर्शनकारियों को काबू में लेने के लिए 3,000 पुलिस कर्मचारियों को कोशिश करनी पड़ी.
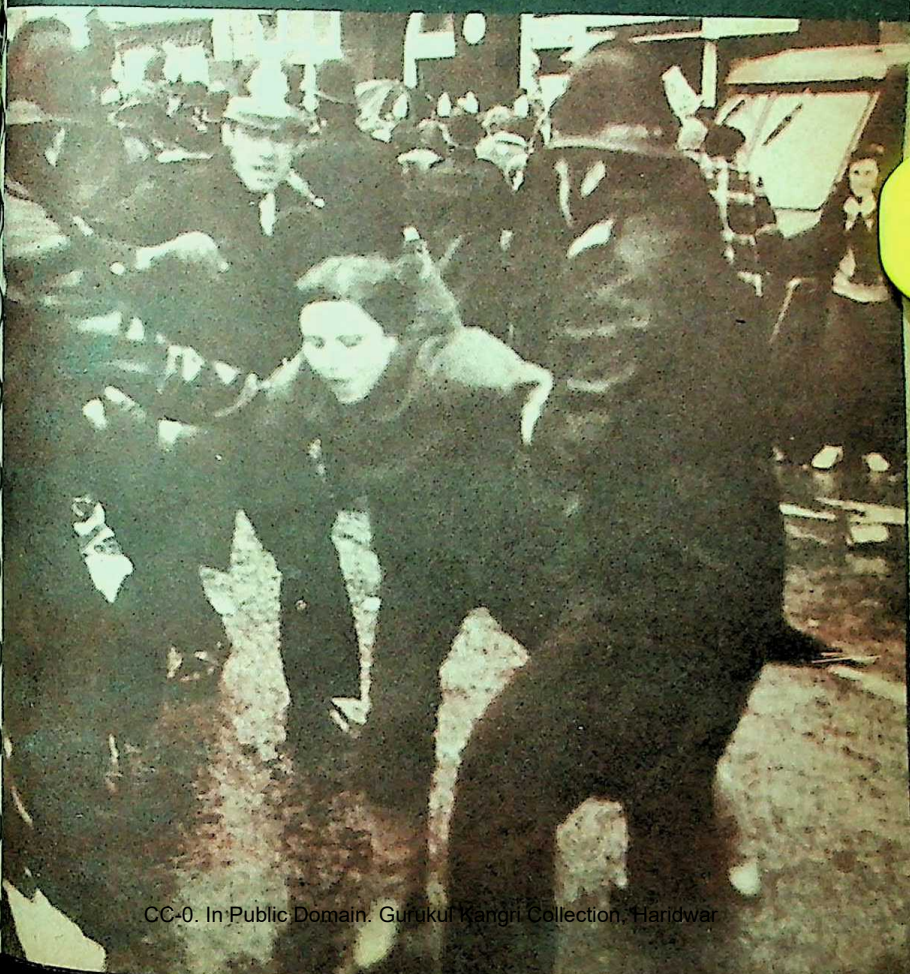
कथकली पर विमुग्ध : कोलगोन (प. जरमनी) में उस समय लोग विमुग्ध रह गए जब केरल की 'केरल कलामंडलम' नामक संस्था ने पांचवी मूकाभिनय (जिस में बिना बोले अभिनय किया जाए) अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में कथकली प्रस्तुत किया.

नाजी युग
वापस लौ
मार्टीमर

कलाकार क
हार :
शिल्पकार
मूर ने
संगमरमर
सात टुक
बना 5.8
ऊंचा औ
टन वजनी
लंदन के
स्थित 'की
गार्डन' के
इंगलैंड के
वरण मंत्री
होसेल्टीन
किया. भेंट
जाने से पहले
से आए सात
को जोड़ा
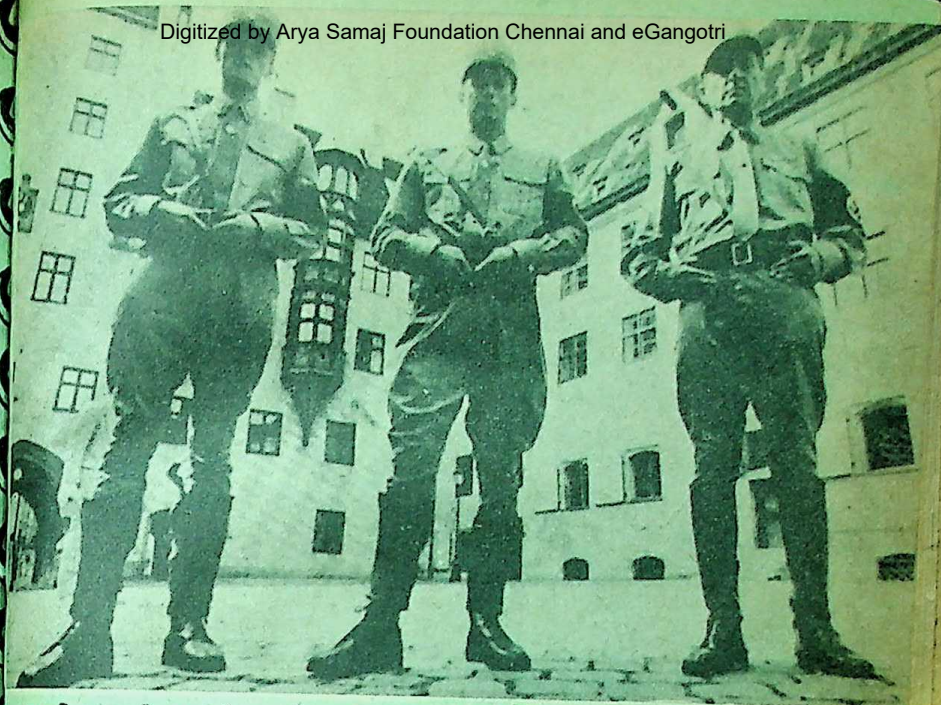
नाजी युग की वापसी : म्यूनिख (प. जरमनी) में एक बार फिर नाजी युग वापस लौट आया. लेकिन इस बार यह एक नाटक के लिए था, जिसे जान मार्टीमर ने लिखा और बी. बी. सी. (इंगलैंड) ने तैयार किया.

कलाकार का उपहार : प्रसिद्ध शिल्पकार हेनरी मूर ने रोमन संगमरमर का सात टुकड़ों में बना 5.8 मीटर ऊंचा और 30 टन वजनी मेहराब लंदन के वेस्टएंड स्थित 'कीनिंग्स्टन गार्डन' के लिए इंगलैंड के पर्यावरण मंत्री माइकल होसेल्टीन को भेंट किया. भेंट में दिए जाने से पहले इटली से आए सात टुकड़ों को जोड़ा गया.

पानी के अंदर भूतकाल की खोज

लेख : राबर्ट मार्क्स

अमरीका में लाजोला (केलिफोर्निया) के निकटवर्ती समुद्र में 205 फुट की गहराई पर बनी समुद्री प्रयोगशाला में एक समुद्र खोजी. शीशे के बाहर मछलियां दिखाई दे रही हैं.

युगों पहले मानव धरती पर किस तरह रहता रहा, क्या उन के रीतिरिवाज थे. यही सब जानने के लिए गहरे समुद्रों में लुप्त हो गईं प्राचीन मानव सभ्यताओं की खोज पुरातत्ववेत्ता आज भी कर रहे हैं...

बहुत सी मानव सभ्यताएं हमारी जानकारी से दूर या तो वीरान जंगलों में छिपी पड़ी हैं या रेगिस्तानों की कईकई फुट गहरी रेत के नीचे दबी हुई हैं. पुरातत्ववेत्ता हमेशा उन की खोज का प्रयास करते हैं. ऐसा करने में उन्हें बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है. पुरातत्ववेत्ताओं ने अब पानी के भीतर छिपी सभ्यताओं की खोज शुरू कर दी है.

धरती पर या पानी के भीतर स्थित

मानव सभ्यताओं की खोज गहरे समुद्र अथवा नदियों के तले छिपी सभ्यताओं की खोज से आसान होती है, क्योंकि पानी में यह खोज कार्य गोताखोरों को करना होता है. पानी में उसे हमेशा खतरा बना रहता है कि कहीं उस की पोशाक या सांस लेने के उपकरणों में छेद न हो जाए और वह समुद्र की अथाह गहराइयों में ही हमेशा के लिए न खो जाए अथवा खतरनाक समुद्री जानवर उस पर हमला न कर दें.

लेकिन अब इन सब कठिनाइयों पर काबू पाने का प्रयास हो रहा है. पानी के अंदर काम आ सकने वाली ऐसी तरकीबों का विकास किया जा रहा है, जिन की मदद से पुरातत्ववेत्ता अधिक आराम और कुशलता के साथ काम कर सकेंगे. दूसरे विश्व युद्ध के दौरान 'एकुआलंग' या 'स्कूबा' गोताखोरी के क्षेत्र में बहुत अधिक विकास हुआ. लेकिन समुद्र के नीचे पहली बार खोज का आरंभ करने वाले प्रथम व्यक्ति आगस्टे पिकार्ड के बेथिस्कैफे ही थे. इस प्रक्रिया का विकास महान विशेषज्ञ कमांडर जैक कूस्तो ने किया है. उन की 'गोताखोरी तश्तरियां' अत्यंत सरलता से इस्तेमाल की जा सकने वाली छोटीछोटी पनडुब्बियां हैं. उन से गोताखोर के शरीर पर अनावश्यक दबाव नहीं पड़ता और गोताखोर काफी गहराई पर दूरदूर तक जांच करते हुए घंटों तक पानी के अंदर रह सकता है.

गोताखोरी घंटियां

1535 ईस्वी से, जब फ्रांसिस्को डेमार्की ने रोमवासियों द्वारा प्राचीन काल में इस्तेमाल की गई बड़ीबड़ी नौकाओं की खोज के लिए नेमी झील में एक साधारण सा लकड़ी का मुखौटा पहन कर ही गोता लगा दिया था, तब से खोज की तकनीक में काफी विकास हो गया है. 17वीं शताब्दी से निपट अंधेरे, गहरे और ठंडे समुद्र में डूबे पुराने युद्धपोतों से कीमती युद्ध सामग्री निकालने की सफल कोशिश की जाती रही है. इस कार्य के लिए उसी समय से गोताखोरी घंटियों का प्रयोग किया जा रहा है.

डूबा हुआ जहाज केवल पुराना टूटाफूटा जहाज ही नहीं होता, वह अपने समय का स्मारक भी होता है. एक ऐसा स्मारक जो हमें पुरानी जहाज निर्माण कला, व्यापारिक और सामाजिक पद्धतियों तथा दैनिक जीवन के पक्षों के बारे में बहुत कुछ बता देता है.

जहाज बनाने के पुराने तरीकों का उस के टूटेफूटे अवशेषों से ही अध्ययन किया जा सकता है, क्योंकि उस जमाने में बड़े से बड़े जहाज भी बिना नक्शा तैयार किए बनाए जाते थे. उन्हें बनाने वाले कुशल शिल्पी अपने अनुभव की सहायता से ही उन्हें बनाते थे. 16वीं और 17वीं शताब्दी तक जहाज बनाने वालों के लिए कोई लिखित निर्देश नहीं होते थे.

पुरातत्वशास्त्र में खोज प्रक्रिया

अन्य शास्त्रों की भांति पुरातत्वशास्त्र में भी खोज प्रक्रिया के द्वारा असली बात जानने की कोशिश की जाती है. इस का एक उदाहरण लीजिए. बहुत समय तक यह विश्वास किया जाता रहा कि कांस्य युग में या तो बंदरगाह थे ही नहीं और यदि थे तो समुद्री व्यापारी उन का प्रयोग नहीं करते थे. इस का कारण उन की राय में यह था कि उन कि नौकाएं उथले सागर में भी समुद्रतट तक लाई जा सकती थीं, जिस के कारण बंदरगाहों की जरूरत नहीं पड़ती.

लेकिन अब कांस्य युग के आधाआधा टन भार वाले लंगर मिले हैं. इतने भारी लंगर छोटीछोटी नौकाओं के नहीं हो सकते, क्योंकि वे तो उन के भार से डूब ही जातीं. इतने भारी लंगर कम से कम 200 टन भार वाली 20 मीटर लंबी नौकाओं के ही हो सकते हैं. इस-

लिए यदि इतने भारीभारी लंगर मिले हैं, तो इतनी [illegible] नौकाएं भी इस युग में अवश्य होती होंगी. इतनी बड़ी नौकाएं उथले समुद्र में बिना बंदरगाहों के तट तक नहीं आ सकतीं. इस से यह निष्कर्ष निकलता है कि उस काल में बंदरगाह भी अवश्य होते होंगे.

पूर्वी भू मध्य सागर की तली को पुरानी चीजों का संसार में सब से समृद्ध संग्रहालय' कहा जाता है मानो इस संग्रहालय में चीजें प्रदर्शन के लिए तहखानों के अंदर रखी हुई हैं, वे आसानी से दिखाई नहीं पड़तीं. कभीकभी तो प्रशिक्षित गोताखोर भी उन तक नहीं पहुंच पाते.

तली में पड़ी हुई वस्तुएं या तो [illegible] की परतों के नीचे दबी हुई मिलती हैं या चूने और समुद्री जीवों की परतों के नीचे. इन परतों के ऊपर प्राकृतिक वनस्पति उग आती है, जिस से इन चीजों के ऊपर की सतह और उस के आसपास की सतह में बिलकुल भी अंतर नहीं रह जाता. उसे आम आदमी तो पहचान ही नहीं पाता, कुशल व्यक्ति भी चकरा जाते हैं.

वाशिंगटन इलैक्ट्रिक कारपोरेशन द्वारा निर्मित 'दीप स्टार' नामक पनडुब्बी : जो एक बार समुद्र में 4,000 फुट नीचे तक जा कर कई घंटे वहां रही. 1966 से समुद्री खोजों में लगी यह पनडुब्बी पूरी प्रयोगशाला ही है.

एक अजीब बात यह है कि सीधी खड़ी बड़ी चट्टानों से टकरा कर टूट जाने के कारण डूबे जहाज भी अच्छी हालत में प्राप्त होते हैं, जब कि रेतीले [illegible] में फंसे हुए जहाज शक्तिशाली

लहरों की मार से टुकड़ेटुकड़े हो गए मिले हैं. उथले पानी में डूबे जहाज तो तूफानी की मार से बिलकुल टूटफूट गए हैं.

45 मीटर या उस से अधिक गहराई में डूबे जहाजों पर सतह पर आने वाले तूफानों की हलचल का कोई प्रभाव नहीं हुआ, इसलिए वे कुछ अधिक सुरक्षित मिले हैं. लेकिन साथ ही जैसेजैसे गहराई बढ़ती जाती है, वैसे ही डूबे जहाजों का पता लगाना और उन के अध्ययन के मार्ग में दिक्कत भी बढ़ती जाती हैं.

भू मध्य सागर में पानी का तापक्रम औसतन 14 से 21 अंश सेंटीग्रेड रहता है. इस के विपरीत बाल्टिक तथा अन्य उत्तरी सागरों में वह गिर कर छ: अंश सेंटीग्रेड तक हो जाता है. इतना ठंडा पानी पुरातत्वशास्त्रियों के अनुकूल नहीं पड़ता. अलबत्ता इस से वाईकिंग
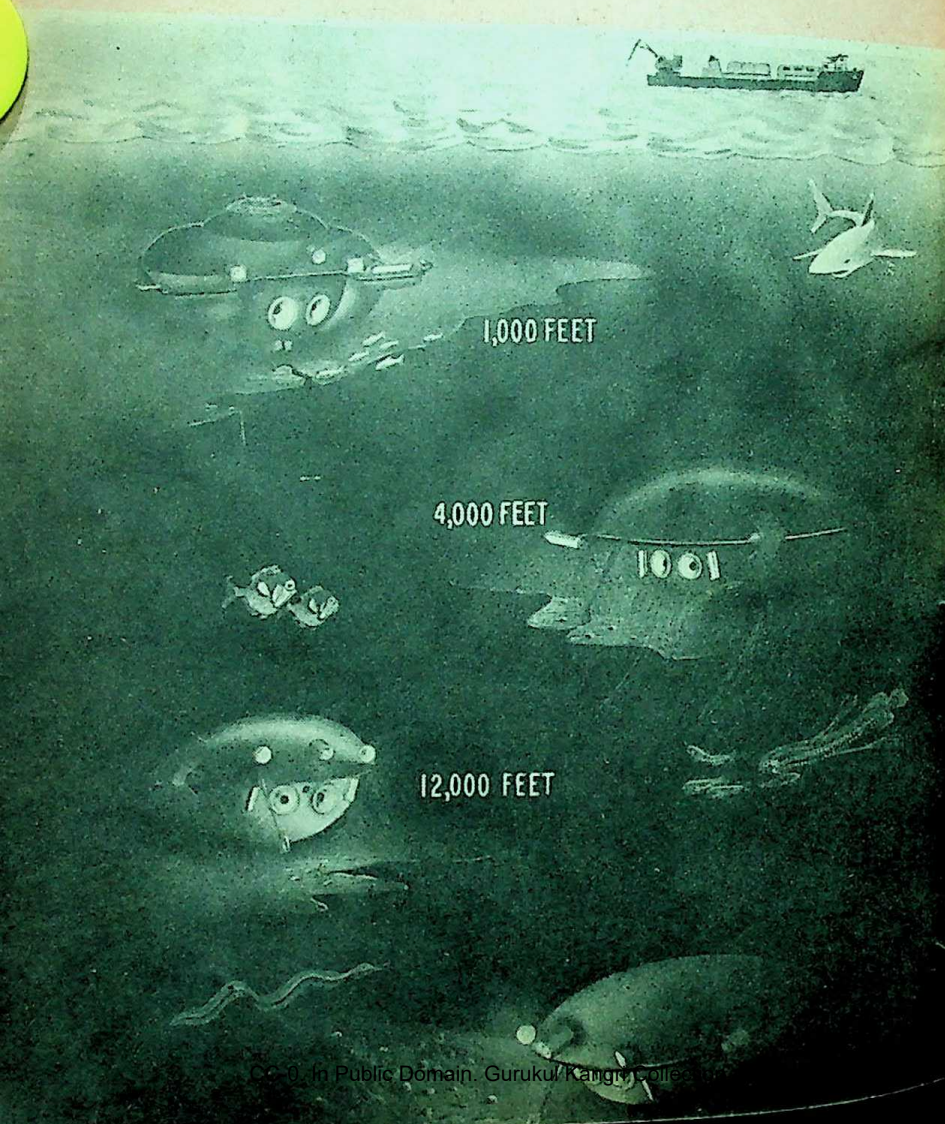
समुद्र के भीतर खोज करने वाली 'दीप स्टार' पनडुब्बियां : जो पानी के भीतर अलगअलग गहराइयों पर विभिन्न महत्वपूर्ण सूचनाएं एकत्र करने में काफी सहायकसिद्ध हुई हैं.

में उन्हें कुछ सुविधाएं मिल जाती हैं. इस क्षेत्र में मूंगे की चट्टानें बनाने कीड़े जिंदा नहीं रह पाते. इसलिए पर न तो लकड़ी अधिक खराब होती और न अन्य कार्बनिक पदार्थ. ये चीजें समय भी सुरक्षित रहती हैं, जब कि के ऊपर तलछट की परत नहीं ती. इस पानी में नमक की मात्रा भी कम है. यहां पर समुद्री जीव और ड़ी खराब करने वाले अन्य कीड़े भी हैं, जब कि भू मध्य सागर के अधिक कीन और गर्म पानी में वे बहुतायत प्राप्त होते हैं.

पहली पुरातात्विक खुदाई

पानी के नीचे आधुनिक तरीकों का योग करते हुए पहली पुरातात्विक खुदाई द्र में नहीं की गई. वह ताजे पानी क्षेत्र में की गई थी. यह क्षेत्र चिकेन ा का सेनोट अथवा पवित्र कुआं था, कि मैक्सिको के यूकेनन प्रायद्वीप के ीन मय प्रदेश में स्थित है. यह कुआं न जितना बड़ा और गहरा है. एडवर्ड एच. टांपसन ने 1904 से 1907 के बीच इस में नर बलि के प्रमाणों का अध्ययन किया था, क्योंकि मय लोग शायद नर बलि देते थे.

मय लोगों का यह भी विश्वास था कि आभूषणों में जीवन होता है. जब उन्हें आभूषणों को मारना होता था तो वे उन्हें या तो तोड़ दिया करते थे या पानी भरे गड्ढों में फेंक दिया करते थे. खुदाई के बाद पता चला कि वर्षा के देवता तक को सोने की जो बलि दी जाती थी, उस में अधिक तांबे और थोड़े सोने का मिश्रण रहता था.

शेर बीहड़ जंगल में जो मार्ग बनाता है, बाद में उस का गीदड़ भी फायदा उठाता है. यह बात थल संबंधी खोजों पर जितनी लागू होती है, उतनी ही समुद्र के अंदर की गई खोजों पर भी लागू होती है.

कुछ 'एकुआलंगर' गोताखोर खेल और इनाम पाने के लोभ में गहरे समुद्र से कोई चीज उठा लाने की खातिर उस में डूबे किसी पुराने टूटेफूटे जहाज के

मुद्र के भीतर खोज में निरंतर हो रहे वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास से ऐसा गता है कि वह दिन दूर नहीं जब एक अमरीकी वैज्ञानिक की यह कल्पना ाकार होगी.
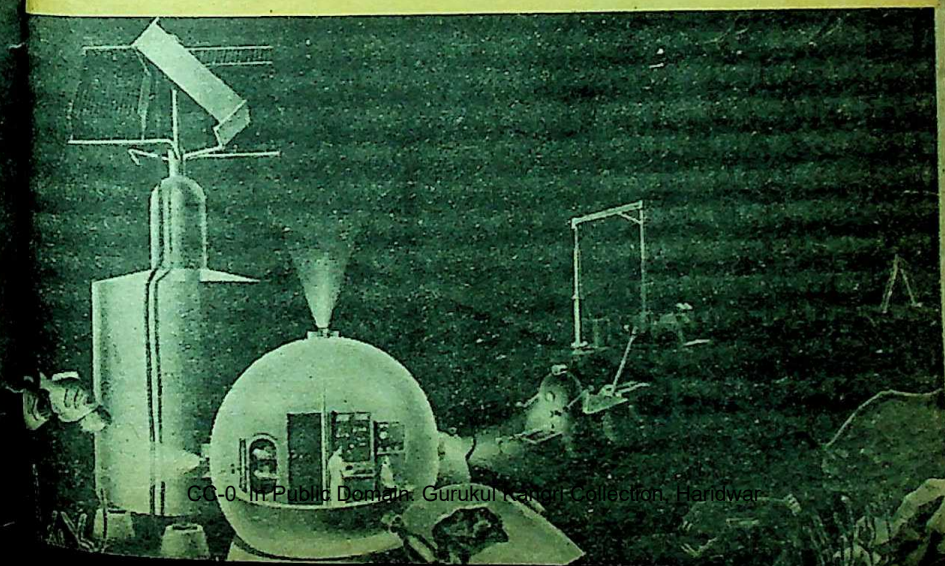
चारों ओर गोता लगाते रहते हैं. इस के विपरीत कुछ लोग इन जहाजों से चोरी-छिपे कीमती चीजें उठा लेते हैं और इन चीजों को सुरक्षित रखने के उपायों से अनभिज्ञ होने के कारण उन्हें भूमि पर ही छोड़ देते हैं, जहां पर वे अकसर खराब होती रहती हैं.

चीजों के खराब होने का कारण उन के वातावरण में अंतर आ जाना है. लकड़ी शताब्दियों तक पानी के नीचे पड़ी रहती है, लेकिन वह खराब नहीं होती. लेकिन जब उसे सतह पर लाया जाता है और वह सूखती है तो वह खराब होने लगती है. पोलिपेथिलीन ग्लाइकोल (पी. ई. जी.) समुद्र से बाहर लाई हुई लकड़ी को खराब होने से बचाने के लिए ज्ञात वस्तुओं में सब से अच्छी चीज है. लेकिन उस का दीर्घकाल तक प्रयोग करते रहना पड़ता है. अर्थात लगभग 18 मास तक.

प्राप्त वस्तुओं की हिफाजत

प्राप्त वस्तुओं को खराब होने से बचाने का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन वस्तुओं को संग्रहालय में रख देने मात्र से वे सुरक्षित नहीं हो जातीं. पुरातत्वेत्ता पहले प्राप्त वस्तुओं को सिलसिलेवार रखते हैं, फिर उन की नापतौल करते हैं, उन के चित्र बनाते हैं या लेते हैं. उन पर रासायनिक और जीवशास्त्र संबंधी परीक्षण करते हैं. उस के बाद उन का अध्ययन कर के परिणाम निकालते हैं और उन्हें लिखते हैं. लिखने का कार्य वस्तुओं को प्राप्त करने के कार्य से भी अधिक मुशकिल होता है. वैसे पानी के अंदर से वस्तुएं निकालना जमीन के अंदर से वस्तुएं निकालने से सरल होता है, क्योंकि समुद्र में उन के ऊपर जमी परत अधिक कड़ी नहीं होती.

समुद्र के नीचे से वस्तुएं प्राप्त करने के लिए पहले उस स्थान का सर्वेक्षण किया जाता है. यह कार्य जहाज में लगे टेलीविजन कैमरे करते हैं. ये पानी के अंदर काफी लंबेचौड़े क्षेत्र की छानबीन कर सकते हैं. उथले पानी में, ऊपर आकाश से भी चित्र लिए जाते हैं. कभी-कभी इन चित्रों में ऐसी बातें आ जाती हैं जो पास से लिए गए चित्रों में नहीं आ पातीं. प्रतिध्वनि की सहायता से काम करने वाला उपकरण समुद्र की तली की बनावट का बहुत जल्दी पूरा चित्र ले लेता है. लेकिन इस उपकरण से काम लेने में कुछ अन्य कठिनाइयां हैं. चुंबक शक्ति द्वारा सर्वेक्षण करते हुए खानों का पता लगाने वाले उपकरणों का भी इस कार्य में इस्तेमाल किया जा सकता है.

प्राप्त वस्तुओं का समय

पानी के नीचे जो वस्तुएं मिलती हैं, उन के समय का पता अनेक तरीकों से लगाया जा सकता है. एक तो कार्बन-14 परीक्षण है, दूसरा तरीका रेडियोधर्मी आइसोटोपों का उन चीजों पर परीक्षण करना है. तीसरा जिस स्थान पर वे जमी हुई मिलीं, उस स्थान का भूगर्भीय मापन करना है.

गोताखोर प्रायः कम उम्र, ज्ञान अथवा अनुभव वाला आदमी होता है. वह पानी के नीचे जो छायाचित्र लेता है, उस का विद्वान लोग अध्ययन करते हैं. पुरातत्ववेत्ता अकसर काफी आयु का आदमी होता है. पानी के अंदर सब से पहला चित्र 1894 ईस्वी में लुई बूटन ने लिया था. यह चित्र बहुत भारीभरकम उपकरण से लिया गया था. यह छायाचित्र बहुत अच्छा और प्रभावशाली आया था. इस में एक ऐसे गोताखोर की तस्वीर भी आई है, जिस ने मुखौटा पहना हुआ है. यह छायाचित्र समुद्र की तली पर मद्धम सा प्रकाश डाल कर लिया गया था. यद्यपि फोटोग्राफी तकनीक में उस समय से अब तक काफी उन्नति हो चुकी है, लेकिन उस काल की समस्याओं में से कुछ अब भी विद्यमान हैं.

विशेष सजधज के साथ प्रस्तुत है गृहशोभा का तृतीय बुनाई विशेषांक.

आप के परिवार को ध्यान में रख कर तैयार किए गए 20 से अधिक बुनाई के बिलकुल नए नमूने.

बचे ऊन से बनी रंगबिरंगी सजावटी वस्तुएं व बुनाई कला में निखार लाने के लिए अनेक उपयोगी सुझाव.

साथ ही साजसज्जा, स्वास्थ्य व सौंदर्य, बागबानी, बच्चों, दांपत्य व फिल्मों संबंधी सचित्र सामग्री घर-गृहस्थी की समस्याओं पर कहानियां व सभी स्थायी स्तंभ

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराएं.

पत्नी पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है. हास्यव्यंग्य के क्षेत्र में बेचारी पत्नी और उस की प्यारी सी छोटी बहन पर, जिसे साली कहा जाता है, पुराण के पुराण लिखे गए हैं. साथ ही 'पतिपत्नी संबंध कैसे मधुर रहें' इस पर कई हिदायतनामे भी छपे हैं. हिंदी की तो आज अनेक ऐसी पत्रिकाएं हैं जो हर दोएक महीने बाद लेखों में बताती रहती हैं कि पति पत्नी को कैसे प्रसन्न रखे या पत्नी पति को कैसे मुट्ठी में रखे. पर यह

मुझे मेरी बीवी से बचाओ

व्यंग्य • डा. त्रिलोकीनाथ

न तो पत्नी [illegible] है और न पत्नी को प्रसन्न रखने का कोई नुसखा. यह तो एक बेचारे पति का भोगा हुआ यथार्थ है, जिस में से शायद पत्नी को प्रसन्न रख कर घर को वास्तव में स्वर्ग बनाने के व्यावाहारिक प्रशिक्षण का सूत्र किसी बेचारे पति के हाथ पड़ जाए.

मेरा विवाह तब हुआ, जब मैं 18 वर्ष का था. लड़की की जो अवस्था 13 बरस की आयु में होती है, वही पुरुष की 18 वर्ष की आयु में होती है. इसी लिए किसी ने ठीक ही कहा है : "तिरिया तेरह...पुरुष अठारह." मैं खूबसूरत था,

वान हो रहा था. वय: संधि की अवस्था से गुजर रहा था. पढ़ालिखा था, हस्त था. विवाह के लिए ये योग्यताएं प्त थीं. उस जमाने में लड़के अपनी वाली पत्नी को देखने नहीं जाया ते थे. फिर भी एक लड़की से ही मेरा वाह हुआ और नारी को पा कर मैं आ हो गया. वह भी होना ही था.

ने पढ़ा
र सुना था
विवाह कई
रेशानियों से
क्ति दिला
ता है. मगर जब
मेरी शादी
ई तभी से मैं यह
हसूस कर रहा हूं
क ऐसा लिखने
र कहने वाले या
भूठे थे या पत्नी
बेहद डरे हुए...
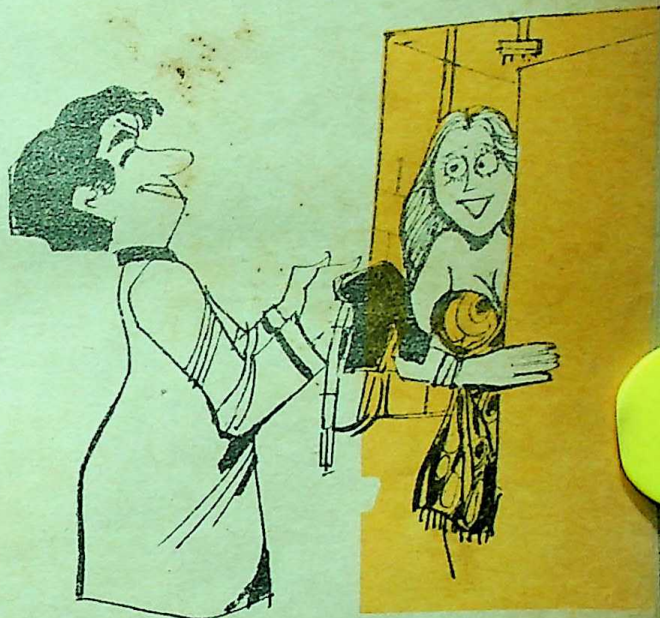
कबीरदास कह गए हैं: "नारी की छाया परत अंधा होत भुजंग..." जब भुजंग अंधा हो सकता है, फिर मैं तो केंचुआ ही था. अभी जहर भी नहीं पनपा था. कबीर की बात कैसे झूठी हो सकती है. उसे किस ने चुनौती दी है. उस ने सब से बड़ा 'भोगा हुआ यथार्थ' लिखा है. तभी से तो हिंदी में यह 'वाद' चल पड़ा है. भला उसे कौन चुनौती दे सकता है, जो यह कहे : "तू कहता है कागद लेखी, मैं कहता हूं आंखिन देखी?"

विवाह के दूसरे दिन वह गुसलखाने में नहा रही थीं. बड़े मधुर स्वर में उन्होंने पुकारा, "ए जी, सुनते हैं आप?"

मैं भागा. अरे, इन्हें तो बोलना भी जाता है शायद इन्हें हिदायत रही होगी, "पहले दिन मत बोलना. दूसरे दिन ही बोलना." मैं भागा ही नहीं, दौड़ा भी. नईनई 'उन' पर अपनी फुरती का सिक्का जमाना था. गुसलखाने के दरवाजे पर पहुंच कर मैं ने पूछा, "कहिए?"

"देखिए पलंग पर...मेरा ब्लाउज रखा रह गया है. भूल आई हूं, कृपया..."

मुझे तो कभी पत्नी को चाय बना कर देनी पड़ती है तो कभी वह नाचीज सा कपड़ा यानी उन की ब्रा.

'कृपया' शब्द इस से पहले मैं ने जिंदगी में एक बार ही सुना था, जब एक सुनयना ने इस का उच्चारण बड़ी हावभावमयी मुद्रा में किया था और मेरे वे नोट्स मांगे थे, जिन्हें मैं ने तीन महीने में तैयार किया था. इस शब्द पर मुग्ध हो कर ही मैं ने अपने नोट्स उन्हें दे डाले थे और जिस के कारण मेरी अपनी डिवीजन पांच नंबर से बिगड़ गई थी. आज दूसरी बार यह

शब्द सुनाई दिया था. मैं भागा और ब्लाउज उठा कर कहा, लीजिए.

उन्होंने दरवाजा खोल दिया, मैं ने आंखें बंद कर लीं और हाथ आगे बढ़ा दिया. मुझे क्या अधिकार था किसी को इस अवस्था में देखने का? किसी को नंगा करना, नंगापन बखान करना, नंगेपन का प्रदर्शन करना, नंगा नाच नाचना शास्त्रों में मना है, और अभी मेरी आस्था शास्त्रों पर से पूरी तरह नहीं उठी है. इसी लिए मेरे चारों ओर न जाने कितने नंगे घूमते रहते हैं, पर मैं उन्हें देख ही नहीं पाता, मेरी आंखें उन के सामने बंद हो जाती हैं.

चेहरे पर मुसकान बिखेर कर उन्होंने ब्लाउज ले लिया और मधुर स्वर से 'धन्यवाद' कह दिया. 'कृपया' पर ही मर मिटे थे...फिर मधुर मुसकान और उस की आलोकित किरणों से फूटा 'धन्यवाद.' तनमन सभी कुछ अर्पण हो गया. मैं वहां से हटा भी नहीं था कि फिर स्वर फूटा, "ए जी, क्या चले गए?"

"तुम्हें छोड़ कर कहां जाऊंगा?"

"तो सुनिए."

"कहिए?"

"मेरी...मेरी..."

"कहिए भी."

"मेरी ब्रा भी वहीं है."

मैं फिर भागाभागा गया. पलंग को पूरी तरह, पूरी निगाह से देखा, पर वहां कुछ नहीं दिखाई दिया. मैं ने बिस्तर उलटापलटा, फिर भी नहीं मिली. तब तक फिर स्वर सुनाई दिया, "जल्दी कीजिए, मैं नहाई खड़ी हूं."

मैं फिर गुसलखाने की ओर भागा और बोला, "जी, सुनिए."

"क्या सुनूं?"

"वहां तो नहीं है."

"देखिए वहीं होगी. मैं वहीं रख कर आई थी."

मैं फिर भागा. सोचा, कहीं बिस्तर में ही नायक की तरह बिस्तर में तो नहीं चिपक गई, जैसे वह खटमल या जूं व... कर चिपक गया था जब उस की 'वो... उस के पास आई थी, जिस का हुलिया उसी की जबान में यों है :

"इंतहाए लागरी से जब नजर आय न मैं,
हंस के वो कहने लगे बिस्तर को झाड़ा चाहिए."

मैं ने फिर बिस्तर को झाड़ा. एक विचित्र सा गुदगुदा वस्त्र मिला. उसे ही उठा लाया और कहा, "यह तो नहीं है?"

उन्होंने हाथ बढ़ा कर नजरें नीचे कर के उसे ले लिया और बोलीं, "आप इसे नहीं जानते?"

"अब जान गया हूं."

वह नहा कर बोलीं, "अभी आप तो नहाएंगे ही, मेरा पेटीकोट रह गया है... उस में भी साबुन लगा दीजिएगा." और फिर झट कमरे में चली गईं. मैं उन्हें जी भर कर देख भी नहीं पाया. सद्यस्नाता का सौंदर्य कवियों ने न जाने कितने रूपों में वर्णित किया है. बिहारी का एक दोहा तो याद आ ही गया :

"बिहंसति सकुचति सी हिये कुच-आंचर बिच बांहि,
भीजे पर तट को चली न्हाय सरोवरि मांहि."

पर मुझे उस के वास्तविक रूप को देखने की भारी तमन्ना थी. आज उस सुख से वंचित रह गया. सारा श्रम लोक सभा के चुनाव में हारे उम्मीदवार सा बेकार चला गया. तभी कमरे से वह बोलीं, "ए जी, जरा सुनिए."

मैं फिर भागा, "कहिए?"

वह मेरी ओर पीठ कर के खड़ी हो गईं, "जरा बटन और हुक लगा दीजिए. देखिए, नंबर दो पर रखिएगा हुक."

नंबर दो से मुझे चिढ़ है. फिर भी मैं ने...एक...दो...तीन गिने. फिर मन में आया, 'ये तीन से ज्यादा क्यों नहीं?'

तीन से ज्यादा होने ही नहीं चाहिए. ...से ज्यादा होंगे कि लाल तिकोन ...र आने लगेगा. और मुझे नंबर दो काम करना ही पड़ गया.

उस दिन से आज तक पेटीकोट, ब्लाउज और ब्रा को साबुन लगाना ...ा अनिवार्य कर्म हो गया है. कभीकभी ...ी भी धोनी पड़ जाती है. उस के ...ले में यह प्रमाणपत्र मिल जाता है, ...प जब साड़ी धोते हैं तो साफ हो ...ती है."

मैं इस तारीफ पर कुरबान हूं. मुझे ...श्चर्य होता है कि वे कैसे पति होते हैं, ...पत्नी के मुख से अपनी तारीफ सुन ...र उन पर सब कुरबान नहीं कर देते.

पत्नी पति से महान है. उस में 'नर' ...दो मात्राएं अधिक हैं. तभी तो नारी ...ो पूजनीय, वंदनीया माना है. वैसे पत्नी ...लती करे तो पति डांटते ही हैं और ...छ पति तो डांटते ही हैं, चाहे गलती ...ो या न हो. पर यदि पति गलती करे ...ो क्या उन्हें अधिकार नहीं है डांटने का. पत्नी की डांट ने ही तो सुकरात जैसे छोटे से व्यक्ति को महान दार्शनिक बना दिया था, मुझे यह हर क्षण स्मरण रहता है. एक दिन सुकरात दरवाजे पर बैठे थे. भीतर पत्नी गालियां दे रही थी, दहाड़ रही थी. वह शांत बैठे थे. वह भीतर से आई और एक बाल्टी पानी उन के ऊपर डाल गई. शिष्यों ने पूछा, "यह क्या हुआ?"

"कुछ नहीं, बादल गरजने के बाद बरसा ही करते हैं." पर यहां तो बादल रोज ही गरजते हैं. हम इसी विश्वास में बैठे हैं कि शायद कभी अमृतरस झर पड़े और हम भी सुकरात बन जाएं.

समानाधिकार का युग आया था. नारे, घोषणाएं लाया और चला गया. साहित्यकारों को रोजीरोटी दे गया, संपादकों को विषय दे गया, पर नारी को वह एक वितृष्णा के अतिरिक्त क्या दे सका? इसी से मैं इस समानाधिकार का पक्षपाती नहीं, सर्वाधिकार का पक्षपाती हूं. घर के प्रत्येक कार्यव्यापार में, योजना में, व्यय में, नीतिनिर्देशन में, एक ही का

श्रीमतीजी के पैरों में दर्द होते ही मैं झट से उन के पैर दबाने लगता हूं.

एकछत्र शासन चलता है, मेरा नहीं 'उन का'. कभी परामर्श देने का साहस किया भी तो वह 'निषेधाधिकार' के सामने कहां ठहरता है? बयालीसवें संशोधन की भांति सर्वोपरि राय उन की ही रहती है, वही कार्यान्वित होती है. इस में भी बड़ा सुख है. चिंतनमनन के झंझट से छुट्टी. आराम बड़ी चीज है, मुंह ढक कर सोइए.

क्रोध भी पत्नी पर मनहूस पतियों की मनहूस क्रिया है. फिर क्रोध नामक मनोवेग का जन्म तभी होता है, जब दुख के प्रत्यक्ष कारण की अनुभूति होती है. प्रिया से भी दुख...यह विचार तो दकियानूसी है. उस की छोटीमोटी गलतियां तो वंदनीय हैं, गाली भी मिठास भरी और मार मनुहार भरी होती है. किसी ने कहा भी है :

"मारौ मनुहारे भरी, गारी खरी मिठास."

और किसी को तो यह गारी भी नसीब नहीं होती. उस का दिल, उस में छिपा कलेजा, उस में बैठा मन इसी को तरसता रहता है : "मन फगुवा दै... गारी हू को तरस्यौ करैं." फिर क्रोध क्यों आए?

कालिज जाते समय पैंट में बटन नहीं, आलपिन से काम चल जाएगा. सुबह चाय नहीं मिली, सिंधी की झोंपड़ी में कुछ देर बैठने का अवसर ही मिल जाएगा. दोपहर को खाना नहीं बना. क्या हुआ? रोज वह ही तो बनाती हैं, रोटियां ही तो सेंकनी हैं. आज रोटियां सेंकने का मौका अच्छेअच्छों को नहीं मिलता. तीन घंटे कालिज में पढ़ा कर फिर दिन भर करना ही क्या है? बच्चों को रात में टट्टी करानी है. वह तो रात में बिस्तर से कैसे निकलें? कभी मित्र आ गए तो वह ही चाय क्यों बनाएं? उन के मित्रों को कभी हम ने चाय पिलाई है?

रविवार तो महान दिन है, वह तो 'पत्नीवार' ही है. सुबह उठ कर चाय बनाना, झाड़ू लगाना, पोंछा लगाना, सारे घर के कपड़े धोना, उन्हें सुखा कर तह कर रखना आदिआदि कोई विशेष श्रमसाध्य नहीं. छुट्टी के दिन काम करने से जवानी ज्यादा दिन बनी रहती है.

परीक्षा में ड्यूटी थी. इंचार्ज का हुक्म था, "ठीक छः बजे कालिज आना है." 'उन्हें' मजबूरी में पांच बजे उठना पड़ा. ठंड लग गई. लगनी ही थी. जब रीतिकालीन नायिकाओं को मूली के पत्ते पर पैर पड़ते ही जुकाम हो जाता था तो यह भी तो एक रीतिकाल के शोधकर्ता की प्रिया थीं. दोपहर को केंद्र में खाना मंगाया. समाचार मिला, "बहूजी के सिर में दर्द है." शाम को ड्यूटी दे कर लौटा तो वह बिस्तर में पड़ी थीं. चुपचाप चाय बनाई, एक प्याला नजर किया. शादी की सालगिरह पर भी कुछ नजर नहीं किया था, क्योंकि वह तारीख याद ही नहीं रहती. वह कराहती हुई उठीं. चाय पी कर बोलीं, "सुनिए, जरा पैर दबा दीजिए. भारी दर्द हो रहा है."

सिर का दर्द चलतेचलते पैरों तक पहुंच गया था. गनीमत थी दिल को बीच में ही छोड़ गया था. प्रिया के पैर दबाने का सौभाग्य बड़ी कठिनाई से मिलता है. श्री कृष्ण के बारे में सुना था कि उन्होंने राधा के पैर एक कुंज में दबाए थे. कुंज न सही बिस्तर ही सही. तभी तो कृष्ण इतने बड़े राजनीतिज्ञ बने थे. आज के युग में राजनीतिज्ञ बनना कौन नहीं चाहेगा? आज लोकप्रियता के शीर्ष शिखर को फिल्म अभिनेता और राजनीतिज्ञ ही तो छू रहे हैं. फिर कभी-कभी वर्ष में एक बार उन के पावन करों का स्पर्श भी तो मेरे भाल से हो जाता है. उस का भी तो प्रतिदान देना था. मैं यह सौभाग्य कैसे छोड़ता?

विरोध बड़ा सुखकर होता है. यदि विरोध न होता तो प्रिया से अनेक सुखों

वंचित रह जाता. यह तो होना ही हिए, है भी. यदि मैं कहूं, "रात है," वह कहेंगी, "दिन है." अगर कहूं, फी बना लो," तो चाय ही बनेगी. च्चे कानवेंट में पढ़ेंगे," मेरे इस आग्रह अस्वीकार कर उन्होंने उन्हें नगर-लका के स्कूल में भेज दिया. हर को उलट देना उन का स्वाभाविक है.

बड़ी बिटिया अभी 12 वर्ष की उन्हें उस की शादी की अभी से ता है. मैं ने कहा, "अभी जल्दी क्या एम.ए. तो कर लेने दो, तब तक ी अच्छे लड़के को देखते रहेंगे."

इस पर वह तुनक कर बोलीं, "कभी अच्छा लड़का नहीं मिला तो क्या ी नहीं होगी?"

मैं ने डर कर इतना ही कहा, "थोड़ा जार कर लेना चाहिए."

फिर क्या था? बरस पड़ीं, "हरगिज . मेरी शादी भी तो इसी उम्र में थीं. मेरे पिता ने कब अच्छा लड़का लने का इंतजार किया था?" यह कह उन्होंने स्पष्टतया मुझे चलताऊ ार दे दिया था.

उस दिन मेरे मित्र की पत्नी यानी भीजी ने पूछ लिया, "आप की गाड़ी ी चल रही है?"

"ठीक है, थोड़ी पंचर हो गई है."

वह हंस पड़ीं और बोलीं, "मैं तो स्थी की गाड़ी की पूछ रही हूं."

मैं झेंप गया. बोला, "भाभीजी, पतिपत्नी गाड़ी के दो पहिए हैं. गाड़ी तभी समतल चलती है, जब पहिए समान आकार के हों. यदि गाड़ी में एक साइकिल का और एक ट्रैक्टर का पहिया लगा दिया जाए तो आप ही बताइए गाड़ी कैसे चलेगी?"

वह हंस कर बोलीं, "बदल दीजिए पहिया."

"जी नहीं, हम कोई चीज नहीं बदलते. लोग दिल बदल लेते हैं, बाप बदल लेते हैं, ईमान बदल लेते हैं, दल तो रोज ही बदलते हैं. हम तो फटी चप्पल भी नहीं बदलते."

एक रात उन का मूड खराब हो गया, जब वह रात में थक जाती हैं तो कभीकभी ऐसा हो जाता है. सुबह से ही उठ कर गरजने लगीं. मैं ने सोचा, अब शायद बरखा होगी. उस दिन भीगने का मूड नहीं था. मैं घर से भाग गया.

शाम को आया और चुपचाप बिस्तर में जा छिपा. शाम तक उन का मूड रंगीन हो चुका था. शायद कोई रोमांटिक उपन्यास पढ़ लिया था. धीरे से बिस्तर में आईं, उस में प्रवेश किया और मेरा सिर अपनी जांघ पर रख कर आंखों में झांका.

प्रिया की सुकोमल जंघा पर शीश...उस की सुकोमल अनुभूति मुझे

प्रथम बार हुई. शायद ब्रह्मानंद इसे ही कहते हैं. कविवर पंत को तो यह अनुभूति अपने यौवन के प्रथम चरण में ही हो गई थी. तभी वह 'लोकायतन' की रचना कर सके. उन्होंने इसे स्वीकार किया है : "शीश रख मेरा सुकोमल जांघ पर, शशिकला सी एक बाला व्यग्र हो..." मैं भी धन्य हो गया.

घर में तभी नई चीजें आएंगी, जब पुरानी हटेंगी. पुरानी चीजों का महत्त्व कम हो जाता है, वे कारआमद नहीं रहतीं.

यह तो गनीमत है कि मुझे वह आज का आमद मान लेती हैं. ठीक साढ़े सात बजे कालिज जाना होता है. हजामत बनाने बैठा. रोज बनाता हूं, 35 पर रोज शेव करने से आदमी चुस्त दिखता है, पर शीशा नदारद. पूछा तो मधुर स्वर में बोलीं, "पुराना हो गया था, शक्ल अच्छी नहीं दिखती थी, इसलिए महरी को दे दिया."

चुप, क्या कहता? धीरे से बोला, "ए जी, सुनती हो?"

"क्यों क्या है?"

"जरा सामने बैठ जाओ. पुतलियों में तो मेरी ही सूरत है, हजामत बना लूंगा."

वह हंस कर बोलीं, "वह तो 12 बरस पहले थी. फिर आप की याददाश्त तो बड़ी पैनी है. एक बार किसी की शक्ल देख कर आप भूलते नहीं. फिर अपना चेहरा भी आप को याद नहीं?"

मैं क्या कहता? कबीर का सा अकाट्य तर्क था. इतना ही कह पाया, "मेरा चेहरा भी अब काफी बदल गया है. वह अब पहचानने में नहीं आएगा."

बिना हजामत बनाए ही कालिज जाना पड़ा.

पर मुझे उन से कोई शिकायत नहीं. यह तो मैं संसार भर के उन पतियों के हितार्थ, जो कुंठा, संत्रास, हताशा में अपनी बौद्धिक प्रतिभा को क्षीण कर रहे हैं, अपना महान 'आदर्श' प्रस्तुत कर रहा हूं, ताकि उन को कुछ प्रेरणा मिल सके और उन के जीवन रूपी पतझड़ में बसंत लहरा सके.

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : धूपछांव, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

...ा कर के अखबार खरीदा

जैसेजैसे दैनिक समाचार पत्रों की कमतों में वृद्धि होती जा रही है वैसेवैसे ...क भी इन पत्रों को पढ़ने के नएनए ढंग नकालते जा रहे हैं.

हाल ही में एक रेलवे जंक्शन पर इस का एक रोचक उदाहरण उस समय ...ने को मिला जब तीन युवकों ने दिल्ली से प्रकाशित होने वाले एक दैनिक पत्र आपस में चंदा कर के खरीदा.

एक युवक ने 15 पैसों में खेल का पन्ना तो दूसरे ने 15 पैसों में रिक्तस्थान पन्ना खरीदा. शेष पन्ने तीसरे युवक के हाथ में रह गए. यह तीनों युवक एकदूसरे ...लिए अजनबी प्रतीत हो रहे थे.

—दैनिक बिजनौर टाइम्स, बिजनौर (प्रेषक : अनुपम मार्कंडेय)

✦

26 दिन बाद दूसरा बच्चा पैदा

उड़ीसा के संबलपुर हस्पताल में दो बालक एक ही माता के गर्भ से 26 ...न के अंतर पर पैदा हुए.

गांव की 26 वर्षीया महिला ने अपने घर में एक पुत्र को जन्म दिया. लेकिन ...की प्रसव पीड़ा का अंत न हुआ. आखिर उसे शहर के हस्पताल में ले जाया गया. ...ां उस ने एक और पुत्र को जन्म दिया.

आज तक दुनिया में जुड़वां बच्चों के जन्म में इतने दिनों का अंतर नहीं ...ा गया. किसी महिला ने 26 दिन तक प्रसव पीड़ा का अनुभव भी कभी नहीं ...या होगा.

—देशबंधु, रायपुर (प्रेषक : महेंद्र मखीजा) **(सर्वोत्तम)**

✦

...लक्षण बुद्धि वाला बालक

बोकरो में विलक्षण बुद्धि वाले एक ऐसे बालक का पता चला है जो लाखों ...यों का हिसाब मिनटों में जोड़ सकता है.

जटिल से जटिल गणित के प्रश्न का उत्तर क्षण भर में दे कर राजीव ...हन रक्षित नामक बालक ने बोकारो स्टील कंपनी के बड़ेबड़े अधिकारियों को भी ...श्चर्यचकित कर दिया है.

बोकारो स्टील कंपनी के प्रबंधकों ने इस बालक की पढ़ाई आदि की व्यवस्था ...च्छे ढंग से करने का निश्चय किया है.

अभी बालक की उम्र साढ़े चार वर्ष है. उस के पिता बोकारो स्टील कंपनी ...ही एक साधारण कर्मचारी हैं.

—सन्मार्ग, कलकत्ता (प्रेषक : सिद्धेश्वर प्रसाद शर्मा) ●

अराकान में आजाद हिंद फौज का भयंकर युद्ध

लेख • बी. मोंडल

फरवरी, 1944 में जापानियों ने अराकान में लड़ाई छेड़ दी थी. उन्होंने बर्मा में अपनी शक्ति बढ़ा कर पांच के स्थान पर लगभग नौ डिवीजनें जमा कर ली थीं—यानी उन के पास अब लगभग 20,000 सैनिक हो गए थे. लेफ्टिनेंट जनरल मासाकाज़ू कवाबे के मातहत चार डिवीजनें थीं—15वीं, 54वीं और 55वीं पैदल डिवीजन

पांचवीं हवाई डिवीजन, लेफ्टिनेंट जनरल मुतुआगुची के मातहत 15वीं जापानी सेना में 18वीं, 31वीं और 56 डिवीजन थी. बर्मा स्थित सारी जापानी सेनाएं कवाबे के मातहत थीं. वह दक्षिणी क्षेत्र में जापानी अभियान सेनाओं के सर्वोच्च कमांडर फील्ड मार्शल काउंट तेरौची के मातहत थे और उन का प्रधान कार्यालय सैगोन में था. 54वीं और 55वीं डिवीजन अराकान में लड़ रही थी और 33वीं डिवीजन इंफाल में.

नेताजी सुभाषचंद्र बोस द्वारा गठित आजाद हिंद फौज के बहादुर सैनिक पर्याप्त सैन्य और खाद्य सामग्री के बिना अपने दुश्मनों के दांत खट्टे करते रहे, जब कि ब्रिटिश सैनिक सभी सुविधाएं उपलब्ध होने के बाद भी अपनी सातवीं डिवीजन की पराजय को बचा न सके. और आजाद हिंद फौज के समक्ष घुटने टेकने को विवश हो गए...

अराकान में युद्ध के लिए लेफ्टिनेंट जनरल सकुराई सीजो के मातहत जापानी सेना का एक नया प्रधान कार्यालय कायम किया गया था और 54वीं तथा 55वीं डिवीजन को वहां भेजा गया था. इस मोर्चे पर ब्रिटिश-भारतीय सैनिकों से पहली मुठभेड़ आजाद हिंद फौज की हुई थी. एक अंगरेज ने इस बारे में लिखा था:

"पकड़े गए कागजात से पता चलता है कि जापानियों ने सुभाषचंद्र बोस की कठपुतली सरकार के मातहत भारतीय नागरिकों तथा युद्धबंदियों की मदद से जो आजाद हिंद फौज खड़ी की थी, उस की एक टुकड़ी मायू पर्वतमाला के पूर्व में मोर्चे के निकट लाई गई थी."

कुशल निर्देशन के साथसाथ अपने साहस और सूझबूझ से काम लेने के कारण ही आजाद हिंद फौज ब्रिटिश फौज को हराने में सफल हो सकी.

स्पष्ट है कि इस बयान का पहला आधा भाग गलत था और दूसरे आधे भाग में तथ्यों को तोड़मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया था. यहां पर इस बात का विवेचन न करना ठीक ही है कि यह कथन सत्य से कितनी दूर था कि सुभाषचंद्र बोस जापानियों के हाथों की कठपुतली थे. लेकिन यह कहा जा सकता है कि आजाद हिंद फौज को जापानियों ने कभी खड़ा नहीं किया. उन्होंने केवल इंडियन इंडिपेंडेंस लीग को कुछ सुविधाएं दे कर इसे खड़ा करने में मदद दी थी, जैसा कि युद्धरत राष्ट्रों द्वारा शत्रु के विरोधियों को प्रोत्साहन देने के लिए अकसर किया जाता है. यह भी सही नहीं है कि आजाद हिंद फौज को केवल मोर्चे तक ही लाया गया. यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि उस ने वास्तव में युद्ध में भाग लिया था, कभी विजय प्राप्त की थी और कभी उसे पराजय का भी मुंह देखना पड़ा था. और उस ने इस की काफी कीमत भी चुकाई थी.

अराकान में घोर युद्ध कब?

फरवरी, 1944 के आरंभ में ही अराकान में घोर युद्ध छिड़ गया था. भूमि पर जापानियों की गतिविधियों को कम करने में आंग्लअमरीकी वायुसेना ने बहुत मदद दी थी. जापान अधिकृत बर्मा में उन के लड़ाकू विमानों और मध्यम दर्जे के बमवर्षकों ने पुलों को उड़ाने, गोदामों, रसद केंद्रों तथा रसद ले जाने वाली रेलगाड़ियों को नष्ट करने के लिए उड़ानें भरी थीं.

मेजर जनरल वूलनर की 81वीं पश्चिमी अफ्रीकी डिवीजन कलादान नदी के किनारेकिनारे दक्षिणपूर्व की ओर बढ़ रही थी. और अधिक दक्षिण में दो भारतीय डिवीजनें थीं—पांचवीं (मेजर जनरल ब्रिग्स के नेतृत्व में) और सातवीं (फ्रैंक मेसर्वी के नेतृत्व में). ये डिवीजनें 15वीं कोर के मातहत थीं. उस समय इन का नेतृत्व लेफ्टिनेंट जनरल क्रिस्टीसन के हाथों में था क्योंकि उस समय तक स्लिम की पदोन्नति हो चुकी थी और उन्हें 14वीं सेना का सेनाध्यक्ष बना दिया गया था.

सुभाष ब्रिगेड की एक बटालियन अर्थात मेजर पी. एस. रातुरी के मातहत एक नंबर की छापामार रेजिमेंट उस क्षेत्र में पश्चिम अफ्रीकी डिवीजन से लड़ी थी. कप्तान शाहनवाज खां के नेतृत्व में दो और बटालियनें चिन पहाड़ियों में से हो कर आगे बढ़ रही थीं. इन दो बटालियनों का नेतृत्व मेजर रणसिंह और मेजर पदमसिंह के हाथों में था. उन्हें हाका और फालम की ओर बढ़ना था.

यद्यपि यह इलाका आत्मरक्षा की दृष्टि से बहुत अच्छा था, लेकिन इन टुकड़ियों और इन के सब से बड़े कमांडर शाहनवाज खां ने सारी कठिनाइयों का अत्यंत साहस के साथ सामना किया था. और कुछ महत्वपूर्ण स्थानों को कब्जे में कर के हाका और फालम के मजबूत गढ़ों समेत मीठा हाका (नौचवांग) और कावा घाटी में रेजिमेंटों के अड्डों के बीच आठ चौकियां कायम कर लीं थीं. वे उस समय तक बराबर आगे बढ़ती रही थीं जब तक इंफाल के युद्ध में हार जाने के कारण उन्हें वापस लौटने पर मजबूर नहीं हो जाना पड़ा था.

अराकान क्षेत्र में 10-10 गुप्तचरों की दो छोटीछोटी टुकड़ियां ब्रिटिश सेनाओं की स्थिति के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए सक्रिय रूप से कारखाई कर रही थीं. इन टुकड़ियों का नेतृत्व कर्नल मिश्र और मेजर मेहरदास के हाथों में था. इन दो टुकड़ियों ने अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में महत्वपूर्ण जानकारी एकत्र की थी और मुख्यत: उन्हीं के प्रयासों से मांगडा-बुथी डांग क्षेत्र में ब्रिटिश भारत की सातवीं भारतीय डिवीजन को घेरना और उसे हराना संभव हो गया था.

लेकिन उन की गतिविधियां केवल ना एकत्र करने तक ही सीमित नहीं इन टुकड़ियों के आदमियों ने संपूर्ण में सक्रिय रूप से भाग लिया था अत्यंत कुशलता के साथ आधुनिक की चुनौतियों का सामना किया था. क्षेत्र में लेफ्टिनेंट हरीसिंह को दारे हिंद पदक प्राप्त हुआ था जो टिश विक्टोरिया क्रास के बराबर था. पदक अकेले सात ब्रिटिश सैनिकों को रने के लिए दिया गया था.

फरवरी के प्रथम सप्ताह तक मैंक्स की 26वीं भारतीय डिवीजन को यू पर्वतमाला के निकट घिरी सातवीं रतीय डिवीजन को राहत पहुंचाने के ए विमान द्वारा चटगांव से भेज दिया गा था. ग्यारहवीं सैनिक टुकड़ी के मांडर जनरल गिफार्ड ने 26वीं भारतीय डवीजन के स्थान पर आर्मी रिजर्व के रूप कलकत्ता से 36वीं ब्रिटिश डिवीजन मेजर जनरल फ्रेंक फेस्टिंग) को भेज र तुरंत रिक्त स्थान को भर दिया था. साथ ही मित्र देशों की वायु सेनाओं ने अपने प्रयास दोगुने कर दिए थे और स्पटफायर वायुयानों की मदद से अपनी श्रेष्ठता का परिचय दे दिया था.

यह नहीं कहा जा सकता कि जब फरवरी में युद्ध आरंभ हुआ था तब अंगरेजों को आक्रमण की आशा नहीं थी. लेकिन आक्रमण की तेजी और शक्ति ने उन्हें अचंभे में डाल दिया था. जनरल क्रिस्टीसन की 15वीं कोर ने दो डिवीजनों के साथ 19 जनवरी को अराकान तट के साथसाथ आगे बढ़ना आरंभ कर दिया था. पांचवीं भारतीय डिवीजन ने तट के साथसाथ और सातवीं भारतीय डिवीजन मायु पर्वतमाला के साथसाथ उस के समानांतर और अंदर की ओर. कलादान नदी की घाटी के साथसाथ और अधिक उत्तर की ओर 81वीं पश्चिम अफ्रीकी डिवीजन आगे बढ़ी थी.

मेजर रातुरी को 81वीं पश्चिम अफ्रीकी डिवीजन द्वारा दो सड़कों को मिलाने के प्रयत्न को असफल बनाने का काम सौंपा गया था. इन में से एक सड़क कलादान नदी के पूर्वी किनारे पर थी और दूसरी कलादान ग्राम से कुछ मील उत्तर में टेटमा के पश्चिमी किनारे पर. लेकिन आजाद हिंद फौज की टुकड़ी के उस स्थान पर पहुंचने से पूर्व ही इन दोनों मार्गों को जोड़ा जा चुका था. इस पर अपने 300 सैनिकों के साथ मेजर रातुरी ने तुरंत आक्रमण कर दिया था.

आजाद हिंद फौज की पहली डिवीजन

जापानी कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल

अंदमान को मुक्त कराने के बाद नेताजी काला पानी के नाम से विख्यात उस जेल को देखने गए जहां स्वतंत्रता सेनानियों को बंदी बना कर रखा जाता था.
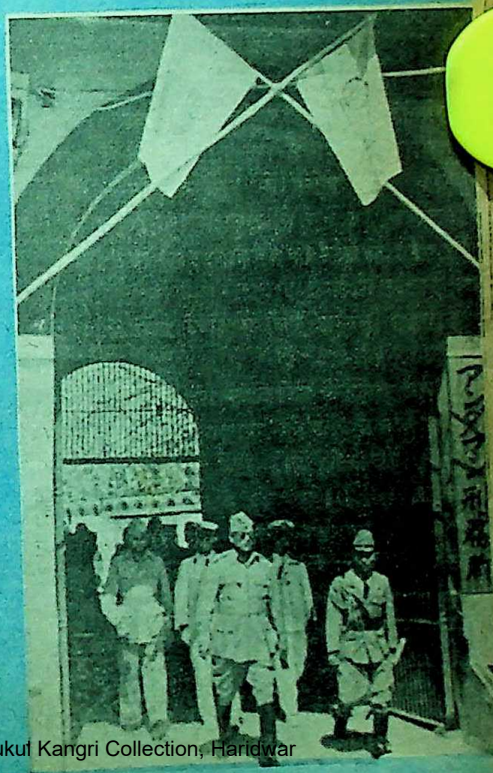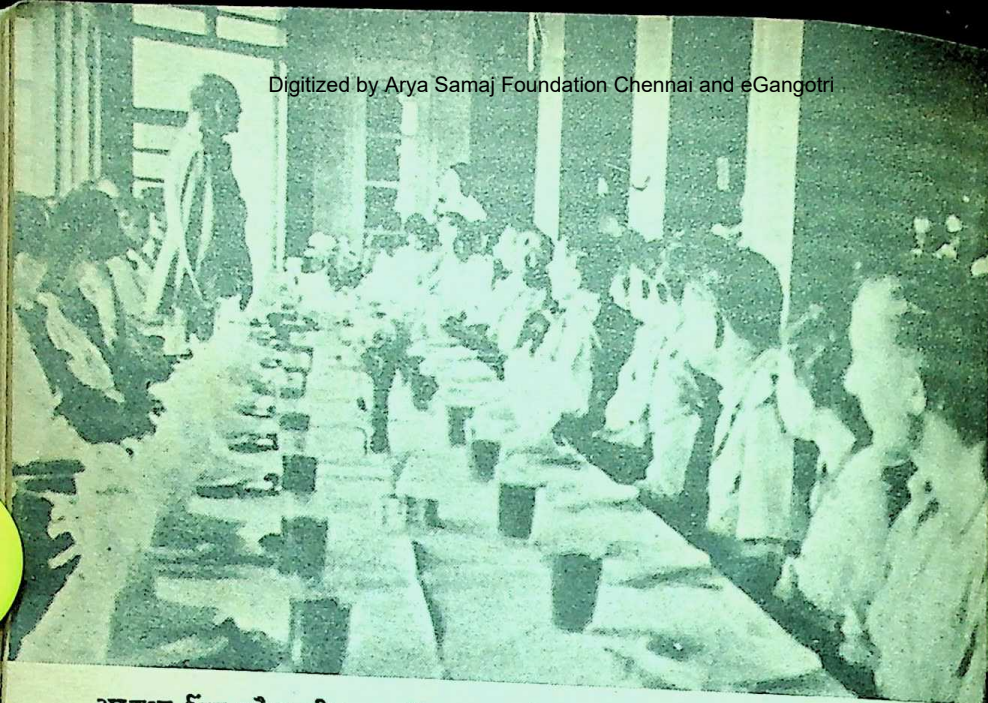
आजाद हिंद फौज की अस्थायी सरकार के गठन के बाद नेताजी द्वारा दिया गया भोज.

हनाया उस क्षेत्र में 55वीं जापानी डिवीजन के सर्वोच्च सेनाध्यक्ष थे. उन के नियंत्रण में आजाद हिंद फौज की पहली डिवीजन सुभाष ब्रिगेड अथवा नंबर 1 छापामार रेजीमेंट की भी कुछ टुकड़ियां थीं. इस रेजीमेंट में लगभग 3,000 भारतीय सैनिक थे.

सैनिक योजना और फौजों की भावी गतिविधि को संक्षेप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :

(क) कर्नल तानाहाशी को प्रमुख आक्रामक सेना के रूप में अपनी 112वीं रेजीमेंट में 7,000 सैनिकों का नेतृत्व करना था. उसे एक घने जंगल में से हो कर 81वीं डब्ल्यू. ए. डिवीजन और सातवीं भारतीय डिवीजन के बीच में से हो कर आगे बढ़ना था, पश्चिम की ओर मुड़ना था और पर्व की ओर से टौंग बाजार पर अधिकार करना था. तब उसे सातवीं भारतीय डिवीजन को, उस के कठिन रसद मार्गों को पीछे से काट कर जो मायू पर्वतमाला के आरपार [illegible] दर्रे में से हो कर जाते थे, दक्षिण की ओर मुड़ना था.

(ख) दूसरी सेना कुछ छोटी थी, जिस में लगभग एक बटालियन थी. उस का नेतृत्व कर्नल क्यूबो के हाथों में था. उसे गोपे बाजार से हो कर जाने वाले उत्तरी मार्ग को बंद करना था, पर्वतमाला पर सब ओर अपना अधिकार करना था, बावली बाजार से दक्षिण में स्थित मौंगडा को जोड़ने वाली कड़ी को तोड़ना था और तट के किनारे पर स्थित पांचवीं भारतीय डिवीजन को अलग-थलग करना था. उपर्युक्त (क) और (ख) दोनों सेनाओं को 55वीं जापानी डिवीजन की पैदल फौज के कमांडर मेजर जनरल सकुराई ताहीतारो के सीधे नियंत्रण में रखा गया था.

(ग) कुछ अन्य टुकड़ियों के साथ डिवीजन की शेष सेनाओं को रिजर्व का कार्य करना था.

इस मनोरंजक नाटक के लेखकों में से एक के अनुसार :

"इन मह[illegible] और [illegible] से बनाई गई योजनाओं को अमल में लाने के लिए कवावे के पास तीन नई डिवीजनें और एक स्वतंत्र डिवीजन भेजी गई. इस प्रकार उन के पास साढ़े सात डिवीजनें हो गईं. एक अन्य डिवीजन को मलाया में रिजर्व के रूप में रखा गया. कुछ समय के बाद दो नई सेनाओं का निर्माण किया गया—लेफ्टिनेंट जनरल एस. सकुराई के मातहत अराकान के लिए 28वीं सेना और चीनियों का विरोध करने के लिए 33वीं सेना. इस से मूतागूची अपनी सारी शक्ति को मणिपुर पर किए जाने वाले आक्रमण पर केंद्रित करने के लिए स्वतंत्र हो गए.

"टोकियो से भी इंजीनियर, परिवहन तथा रसद टुकड़ियों को काफी संख्या (लेकिन बहुत अधिक नहीं) में भेजा गया. यद्यपि उत्तर और दक्षिण की तरफ चिदविन तक आनेजाने के रास्ते प्राकृतिक दृष्टि से बहुत अच्छे थे लेकिन उस के बाद जापानियों को भी बिना सड़कों वाले वैसे ही विस्तृत पर्वतीय जंगल का सामना करना था, जिस का कि अंगरेजों को."

लड़ाई पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार आरंभ हुई, यद्यपि उस में कुछ आंतरिक कमजोरियां रह गईं, जिन्हें उन का दोष तो नहीं कहा जा सकता.

"हमारी पांचवीं डिवीजन को तट पर सामने की ओर से रोक कर उन्होंने एक डिवीजन का अधिकांश भाग, सातवीं डिवीजन का चक्कर काटते हुए जो काफी भीतर स्थित थी, जंगल में से होते हुए आगे बढ़ाया. कुछ ही दिनों में सातवीं डिवीजन को घेर लिया गया. शत्रु पांचवीं डिवीजन के पीछे तट पर स्थित मार्ग को भी धमकी देने लगा."

मित्र देशों के सर्वोच्च सेनाध्यक्ष लार्ड माउंटबेटन को ले कर मित्र देशों के शिविर में [illegible] हो गया. वह हस्पताल में थे और उन्होंने 11वीं सैनिक [illegible] के कमांडर [illegible]रल सर जार्ज गिफार्ड के इस व्यवहार की तीखी आलोचना की थी कि उन्होंने उन को सैनिकों की स्थिति के बारे में पूरी जानकारी नहीं दी. खैर प्रत्येक संभव स्रोत से तुरंत मदद पहुंचाई गई.

लेकिन हर बात आक्रमण करने वालों की योजना के अनुसार नहीं हुई. विंस्टन चर्चिल ने इस बारे में लिखा है :

"उन्हें दोनों डिवीजनों के लौट जाने की पूरी आशा थी, लेकिन उन्होंने एक बात पर विचार नहीं किया था—और वह थी विमानों द्वारा सप्लाई. सातवीं डिवीजन ने अपने आप को अच्छी तरह संगठित कर लिया, वह अपने स्थान पर डटी रही और उस ने जम कर युद्ध किया. लगभग 15 दिन तक उसे भोजन, पानी और सैनिक सामग्री बराबर पहुंचाई जाती रही. शत्रुओं को इस प्रकार की कोई सुविधा प्राप्त नहीं थी. उन के पास केवल 10 दिनों के लिए सामान था. सातवीं डिवीजन के प्रबल विरोध के कारण उन्हें और अधिक सामान प्राप्त नहीं हो पाया."

आजाद हिंद फौज की दुर्दशा

आजाद हिंद फौज की दुर्दशा का शाहनवाज खां ने इस प्रकार वर्णन किया है :

"आजाद हिंद फौज की छापामार ब्रिगेडों के पास न तो तोपें थीं और न हथगोले इत्यादि, न ही उन के पास बेतार के तार या टेलीफोन संचार व्यवस्था थी. मशीनगनों के लिए पर्याप्त पेटियों और कारतूसों का अभाव था. नेत्र संबंधी अथवा अन्य प्रकार के उपकरण भी नहीं थे. मशीनगनों के अतिरिक्त पुर्जे भी उपलब्ध नहीं थे ताकि उन का दीर्घकाल तक उपयोग किया जा सकता. ब्रिगेड के लिए चिकित्सा संबंधी सुविधाएं भी पर्याप्त नहीं थीं. लगभग 3,000 लोगों की देखभाल के लिए केवल
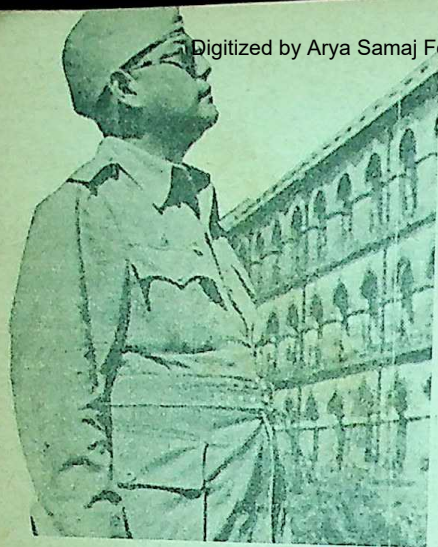
मांडले जेल : जहां नेताजी के साथियों को बंदी बना कर रखा गया था.

पांच चिकित्सा अधिकारी उपलब्ध थे."

इस के अतिरिक्त, आजाद हिंद फौज की प्रथम ब्रिगेड की नंबर 1 बटालियन, जिसे युद्ध में अपनी उपयोगिता सिद्ध करने के लिए कठोर परीक्षाओं के दौर में से गुजरना पड़ा था, कलादान घाटी में 81वीं पश्चिमी अफ्रीकी डिवीजन के विरुद्ध प्रयुक्त की गई थी, जो आधुनिक प्रकार के उपकरणों के बिना युद्ध के लिए निकृष्टतम क्षेत्र था. कलादान में अक्याब और पालेतवा (भारतीय सीमा से 60 मील दूर) के बीच स्टीमर चलाए जा सकते हैं. नदी का बहाव इतना तीव्र है कि 120 मील की लंबाई में वह 400 फुट नीचे उतर जाती है. नदी के तीव्र बहाव में नौकाओं द्वारा आने वाली सैनिक सहायता या तो विपत्ति में पड़ गई और या गंतव्य स्थान पर नहीं पहुंच पाई जिस से युद्ध की संकटमय स्थिति में उस पर निर्भर नहीं किया जा सका.

इसी क्षेत्र में, आजाद हिंद फौज के बहादुर और गुप्तचर वर्गों की टुकड़ियों ने सातवीं भारतीय डिवीजन की आरंभिक हार में महत्वपूर्ण योगदान किया.

... यह दावा ठीक ही कर सकते हैं:

"फरवरी 1944 में मौंगडा-बुथीडांग क्षेत्र में सातवीं ब्रिटिश डिवीजन की घेराबंदी और उस का लगभग पूर्ण विनाश मुख्यत: कर्नल एल. एस. मिश्र और मेजर मेहरदास के नेतृत्व वाली टुकड़ियों की गतिविधियों के कारण ही संभव हो पाया."

सारी कमजोरियों के बावजूद शुरू-शुरू में अत्यंत तीव्रता के साथ आक्रमण किया गया.

"अब हम...मौंगडा की पहाड़ियों के चारों ओर स्थित सिजवाया मैदान और कलादान घाटी में मायू और नफ नदियों की भयानक दलदलों में और न्यांगयांग के निकट जंगल में स्थित बहुत कम ज्ञात ग्रामों में...लड़ाई के ब्यौरे पर आते हैं. जापानी हर कहीं घोर युद्ध कर रहे थे और आजाद हिंद फौज उन के साथ कंधे से कंधा भिड़ा कर लड़ रही थी."

आजाद हिंद फौज का अधिकार क्षेत्र

मार्च, 1944 के मध्य तक कलादान, फोर्ट व्हाइट, लानाकोट और कैनेडी पीक पर आजाद हिंद फौज का अधिकार हो चुका था.

लेकिन शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि युद्ध में भाग लेने वाले दोनों पक्षों की शक्ति समान नहीं है. रसद और सैनिक सामग्री के बिना एक डिवीजन पूरी तरह सुसज्जित और सब प्रकार के सामान से भली प्रकार युक्त चार डिवीजनों का सामना नहीं कर सकती, न ही वह आत्मरक्षा कर सकती है. और यदि विमानों द्वारा सप्लाई कर के इन चार डिवीजनों की कार्यकुशलता और सप्लाई में और अधिक वृद्धि कर दी जाए तो आक्रमण करने वाले सैनिकों का, जिन की संख्या आत्मरक्षा करने वालों से निश्चय ही अधिक होनी चाहिए ताकि

ये उन पर अपना दबाव डाल सके लेकिन दुर्भाग्य से जिन की संख्या अधिक नहीं थी, पराजित होना निश्चित है. उन की पराजय का एक कारण यह भी था कि वायु क्षमता की दृष्टि से मित्र देश पहले ही आगे बढ़ चुके थे.

डिवीजनल प्रधान कार्यालय पर अधिकार

55वीं जापानी डिवीजन की प्रमुख टुकड़ियों पर काबू पाने के लिए अंगरेज अपने सुरक्षित सैनिक ले आए थे. इन सैनिकों—सातवीं भारतीय डिवीजन की 89वीं ब्रिगेड और 25वीं ड्रैगून की मदद से उन्होंने भयानक जवाबी हमले किए थे जिस से यद्यपि वे आजाद हिंद फौज और जापानी हमले की लहर का मुकाबला करने में असफल रहे, लेकिन फिर भी उन का उद्देश्य पूरा हो गया था. उन की आगे बढ़ने की गति को धीमा कर के उन की अपार हानि की गई थी.

दो दिन के भीतर आक्रमण करने वालों ने मेसर्वी के डिवीजनल प्रधान कार्यालय पर अधिकार कर लिया था. इस आक्रमण के कारण अंगरेजों को पीछे हटना पड़ा और प्रलेखों तथा अन्य वस्तुओं को नष्ट करने के बाद एडमिनिस्ट्रेटिव बाक्स में शरण लेनी पड़ी थी. सातवीं और पांचवीं भारतीय डिवीजनों की टुकड़ियों के परस्पर मिलने के अथक प्रयासों को असफल कर दिया गया था. मेजर जनरल के बराबर की हस्ती के डिवीजनल कमांडर को डर कर, अपना जनरल पद का हैट आक्रमणकारियों की ही दया पर छोड़ कर, भागने की जरा कल्पना कीजिए. मेसर्वी को इतनी अधिक तेजी के साथ पदाक्रांत किया गया था. यह तो उन का सौभाग्य था कि वह गिरफ्तार होने से बच गए. और युद्ध में सफलता इन्हीं छोटीछोटी बातों पर निर्भर रही.

अब जनरल फ्रैंक मेसर्वी की सेनाओं ने मिल कर एक इस्पाती शिकंजा तैयार कर लिया था. यह शिकंजा अनेक टैंकों और बख्तरबंद गाड़ियों का था तथा स्थानस्थान पर फील्ड गनें भी थीं. किसी

युद्ध के उपरांत लाल किले में चल रहे मुकदमे से बरी हुए आजाद हिंद फौज के कुछ अधिकारी : जो महात्मा गांधी के समक्ष राष्ट्रीय धुन गा रहे हैं.

भी आक्रमणकारी सेना के लिए, जिस के आदमियों के पास इस कारण बहुत कम उपकरण थे कि उन्होंने शीघ्र गति से आगे बढ़ने को अधिक महत्त्व देते हुए जो कुछ भी पुराने ढंग की सैनिक साज सामग्री एकत्र की थी उस की बिलकुल भी परवाह नहीं की थी, उस लौह दीवार को भेद सकना एक अत्यंत कठिन कार्य था. यदि उन्हें पर्याप्त संख्या में विमान मिल जाते या थोड़े से बमवर्षक ही मिल जाते जो 1,000 पौंड के कुछ बम गिरा सकते, तो युद्ध का परिणाम कुछ भिन्न ही होता. श्री सी. ई. ल्यूकस फिलिप्स ने इस संबंध में इस प्रकार लिखा है :

"एडमिनिस्ट्रेटिव बाक्स के चारों ओर लड़ाई चल रही थी, जिस में क्लर्क मैकेनिक, ड्राइवर और खच्चरों पर चढ़े नेता ज्योफ्रे इवांस की उस नवीं ब्रिगेड की युद्धरत सेनाओं से कुछ कम साहस के साथ नहीं लड़ रहे थे, जो कुछ तोपचियों और कुछ 25वीं ड्रैगून के कुछ टैंकों के साथ उन की सहायता के लिए शीघ्रतापूर्वक आ गई थीं. पंद्रह दिन तक जापानियों ने दिनरात आक्रमण कर के अपर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था वाले विपक्ष पर बुरी तरह दबाव डाला...विमानों द्वारा बमवर्षा और दूरी तक मार कर सकने वाली तोपों द्वारा बमबारी से भी सुरक्षा व्यवस्था को, जैसा कि हनाया ने स्वयं कहा है, तोड़ा नहीं जा सका."

टौंग बाजार पर पुनः अधिकार

लेकिन शीघ्र ही शत्रु की सेनाएं आक्रमण करने वालों से न केवल अधिक शक्तिशाली हो उठीं बल्कि रसद और सैनिक साजसामग्री की कमी के कारण भी वे निर्बल सिद्ध हुए. उन्हें विमानों की बिलकुल भी सहायता प्राप्त नहीं थी. दूसरी ओर घिरी हुई सातवीं भारतीय डिवीजन को राहत प्रदान करने के लिए फरवरी, 1944 के आरंभ में लोमैक्स के नेतृत्व वाली 26वीं भारतीय डिवीजन को 48 घंटे के अंदर ही विमान द्वारा चटगांव से बावली बाजार लाया गया था. अब इस नई डिवीजन की टुकड़ियां दक्षिण की ओर बढ़ीं और उन्होंने टौंग बाजार पर पुनः अधिकार कर लिया. इस के शीघ्र बाद मेजर जनरल फेस्टिंग की 36वीं ब्रिटिश डिवीजन ने बावली बाजार के निकट मोर्चा बनाया और 26वीं डिवीजन की सारी सेनाओं को सातवीं भारतीय डिवीजन के अधिकार में आए ठिकानों की रक्षा के कार्य से मुक्त कर दिया.

मित्र सेनाओं द्वारा हमला

आक्रमणकारी अब स्वयं दो हमलों के शिकार हो गए थे. ये हमले दो मित्र सेनाओं द्वारा किए जा रहे थे जो कि घिरी हुई सेनाओं को राहत प्रदान करने के लिए उन पर दबाव डाल रही थीं. अब लोमैक्स की 26वीं भारतीय डिवीजन उत्तर से आई तो घेरा डालने वाले स्वयं घेरे में आ गए. राशन की कमी के कारण वे परेशान हो गए और भूख से अधमरे हो गए. इस कारण वे अब किसी भी स्थान पर अधिकार नहीं कर पाए. हनाया के वापसी के लिए औपचारिक आदेश देने से पूर्व ही उन्हें भूमि पर 4,600 शवों को छोड़ कर अपने अधिकार में शेष भागों से पीछे हट जाना पड़ा.

और अधिक सैनिक तथा रसद प्राप्त करने के सारे प्रयास विफल हो गए, क्योंकि जिन संचार मार्गों पर अत्यंत कठिनाई के साथ कब्जा किया हुआ था उन पर जल्दीजल्दी बमबारी होने लगी जिस से अकसर सप्लाई की वस्तुएं नष्ट होने लगीं. नदियों में चलने वाली नौकाओं को ब्रिटिश वायुसेना द्वारा डुबा दिया गया. इस से आक्रमणकारियों की स्थिति में 81वीं पश्चिम अफ्रीकी डिवीजन ने आगे बढ़ना जारी रखा और तानाहाशी की उन पूर्वी सेनाओं के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न कर दिया जिन्होंने

सिंगापुर पहुंचने पर आजाद हिंद फौज के अधिकारियों द्वारा नेताजी का हार्दिक स्वागत किया गया.

इतनी अधिक कुशलता के साथ सातवीं भारतीय डिवीजन को घेरा था.

जब भूमि पर जीवन और मृत्यु का यह संघर्ष चल रहा था, तब आकाश में अधिक शक्तिशाली बनने के लिए ऐसा संग्राम आरंभ हो गया जिस के परिणाम की कल्पना नहीं की जा सकती थी. आकाश में संख्या की दृष्टि से मित्र देशों की वायुसेना जापानियों की वायुसेना से कहीं अधिक श्रेष्ठ थी. अराकान मोर्चे पर उन की चार डिवीजनों (पांचवीं, सातवीं, 26वीं और 81वीं) को विमानों द्वारा खूब रसद पहुंचाई जाती रही. इस दौरान मार्गों को या तो काफी समय तक मुक्त रखा जाता था और या उन के खंडों को साफ रखने का प्रयास किया जाता था. इस कार्य में अकसर सफलता मिलती थी. इस के अतिरिक्त, समय की मांग को पूरा करते हुए लार्ड माउंटबेटन के विशेष प्रयासों के द्वारा हंप से सी-46 विमानों की एक टुकड़ी उधार ली गई. जापानी वायुसेना उन का मुकाबला नहीं कर सकी. अराकान के आकाश पर युद्ध करते हुए उन की बहुत अधिक हानि हुई क्योंकि उन के बमवर्षकों को लड़ाकू विमानों की पर्याप्त सुरक्षा प्राप्त नहीं थी.

ब्रिटिश वायुसेना का भारी दबाव

इस के परिणामस्वरूप उन्हें जमीन पर बहुत अधिक हानि उठानी पड़ी, जापानी वायुसेना इस क्षेत्र में तेजी से क्षीण होती गई. अपने पुराने ढंग के लड़ाकू विमानों और भूमि पर लड़ने वाले थोड़े से सैनिकों द्वारा जिन्हें शीघ्रता में एकत्र कर लिया गया था और जिन्हें उचित प्रशिक्षण नहीं मिला था, वह ब्रिटिश वायुसेना के विमानों को नहीं रोक सकती थी. अल्प साधन संपन्न विमान विध्वंसक टुकड़ियां मित्र देशों के विमानों की एक के बाद एक आने वाली लहर को नहीं रोक सकती थीं, दूसरी ओर अनेक जापानी बमवर्षकों को जमीन से मार करने वाली तोपों द्वारा गिरा दिया गया. अपेक्षाकृत कुछ पुराने ढंग के हानि के कारण वे शत्रु का मुकाबला नहीं

कर पाए और अंगरेजों के सैनिक लक्ष्यों तथा रसद मार्गों पर अंदर घुस कर आक्रमण करने में असफल रहे.

अंत में पेट्रोलियम की कमी ने उन की बमबारी के लिए की गई पहले से ही सीमित उड़ानों को और भी सीमित कर दिया.

मित्र देशों को जितने विमान गंवाने पड़े उस से दस गुनी उन की हानि हुई. इन सब कारणों से उन की शक्ति में कमी आई जिस से उन के पराजित होने की गति और तीव्र हो गई.

फरवरी, 1944 के तीसरे सप्ताह तक अराकान मोर्चे पर लड़ाई समाप्त हो गई.

"हमारी 26वीं डिवीजन के उत्तर से, जिसे रिजर्व में से लाया गया था, आगे बढ़ाई गई हमारी अगली सेनाओं का मुकाबला करने में असमर्थ हो वे अपने 5,000 मृत सैनिकों को पीछे छोड़ लड़ते हुए जंगल में से हो कर अपना मार्ग बनाने के लिए छोटेछोटे दलों में विभाजित हो गए."

15वीं कोर का पुनः आक्रमण

इस के तुरंत बाद 5 मार्च, 1944 को अंगरेजों की 15वीं कोर ने फिर आक्रमण कर दिया और उन्हें विश्राम न करने दे कर ठीक ही किया. धीरेधीरे उस ने थोड़ाथोड़ा कर के पराजित 55वीं जापानी डिवीजन और आजाद हिंद फौज की अगली टुकड़ियों के छोटेछोटे दलों के अवशेषों को समाप्त कर दिया. फील्ड मार्शल स्लिम के संस्मरणों के निम्नलिखित अंश से इस बात का पता चल सकता है कि उचित रीति से प्रबंध की गई रसद व्यवस्था से क्या कुछ संभव है :

"इन आक्रमणों में क्रिस्टीसन ने वास्तव में बहुत अधिक बमबारी की, उन में से एक में उस की सेनाओं के तोपखाने ने दस मिनट में 500 गज दूरी पर स्थित लक्ष्यों पर हजारहजार तक

गोले बरसाए.

"फरवरी के अंतिम सप्ताह तक 36वीं ब्रिटिश डिवीजन द्वारा मौंगडा-बुथीडौंग मार्ग साफ किया जा चुका था और लड़ाई का रुख बदल चुका था."

मित्र देशों को लाभ

केवल कलादान घाटी में ही मित्र देशों की 81वीं पश्चिम अफ्रीकी डिवीजन का आगे बढ़ना रोका जा सका. उस क्षेत्र में अफ्रीकियों की गतिविधि को नियंत्रित करने के लिए मेजर पी. एस. रातुरी की नंबर 1 आजाद हिंद फौज बटालियन का प्रयोग किया गया. तेजी से पराजय को रोकने के लिए वहां पर उस की तीन कंपनियों को भेजा गया था. लेकिन शीघ्र ही युद्ध करने से थकी पांचवीं भारतीय डिवीजन के स्थान पर भारत से मेजर जनरल डेवीज की 25वीं भारतीय डिवीजन को भेजा गया. इन सेनाओं के आ जाने से आजाद हिंद फौज की पराजय निश्चित हो गई.

अराकान की खूनी लड़ाई से आजाद हिंद फौज को कोई लाभ नहीं हुआ. इस के विपरीत उस से मौंगडा, बूथीडौंग और टौंग बाजार में मित्र देशों की स्थिति अत्यंत मजबूत हो गई जो चौदहवीं सेना के छितरे भागों की रक्षा के लिए, जिन्होंने इस के तुरंत बाद बर्मा में लड़ाई छेड़ दी, मित्र देशों के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध हुई.

इस उपलब्धि के लिए अंगरेजों को जो भयानक कीमत चुकानी पड़ी वह आजाद हिंद फौज और जापानी हानियों से निश्चय ही कम थी जिन्हें बहुत अधिक नुकसान उठाना पड़ा था.

"अराकान की लड़ाई में जिन भारतीयों ने भाग लिया था उन में से लगभग एक तिहाई अधिकांशत: मलेरिया और बदहजमी तथा अंगरेजों द्वारा निरंतर बमबारी किए जाने के परिणामस्वरूप वीरगति को प्राप्त हो गए."

श्यामू चपरासी को मैं ने दूर से ही देख लिया था. हां, वही तो था. लेकिन उस के कपड़े फटेगंदे, नुचनुचे नहीं थे, बल्कि नए और इस्तिरी किए हुए थे. उस की चाल भी ढीली, मरीमरी नहीं थी, बल्कि वह उत्साह, आवेश, ठसक से मेरे अधिकाधिक करीब चला आ रहा था और साथ में थी उस की घर वाली नए कपड़ों में. कुछ दिनों पूर्व ही उस की शादी हुई थी. शायद आज अपनी नईनवेली दुलहन को बाजार घुमाने निकला था, उस पर अपना प्रभाव, रोब जमाने के लिए. मैं सोचने लगा, 'लेकिन क्या इस तरह के मामूली आदमी को भी अपनी पत्नी पर रोब जमाने के लिए पंखों से भारी बोझ उठा कर उड़ना पड़ता है?'

श्यामू और उस की पत्नी ने जब मुझे नजरअंदाज कर मेरे बड़प्पन को ठेस पहुंचाई तो मैं जाने क्याक्या ऊलजलूल सोच गया. मगर तभी बड़े साब और उन के परिवार का अपने प्रति व्यवहार देख कर मुझे मालूम हुआ कि वास्तव में बड़प्पन है क्या?

श्यामू का चेहरा अब और साफ दिखाई देने लगा था. दाढ़ी बने चेहरे पर बजाए रोजमर्रा वाली मुर्दनी के गहरे आत्माभिमान की चमक थी और अपनी घरवाली से एकदो कदम आगे चलने से, उस में पतिगत आत्मविश्वास का बखूबी परिचय भी मिल रहा था.

कहानी • राजेंद्रकुमार शर्मा

बड़े

दफ्तर में करीब 10-12 कदम दूर से झुकझुक कर नमस्कार करने की आदत है श्यामू की, लेकिन इस वक्त उस में उस नम्रता का कहीं भी नामोनिशान तक नहीं था, बल्कि वह जरूरत से ज्यादा तना हुआ लग रहा था. श्यामू सीधे मेरे मातहत था, इसलिए मेरे मन में स्वभावत: यह अपेक्षा घर करती जा रही थी कि श्यामू को झुक कर अदब से न सही, सलीके से तो मुझे नमस्कार करना ही चाहिए और उस की घरवाली को भी. मैं ने सोचा, 'श्यामू जरूर मुझे नमस्कार करेगा और उस की घरवाली भी, वरना क्या वह इतना भी नहीं जानता कि मैं नाराज हो जाऊंगा तो?' अपने अधिकारी की नाराजगी क्या गुल खिला सकती है यह तो वह दफ्तर में देखता ही है.

'श्यामू नमस्कार करेगा, उस की घरवाली नमस्ते तो...' मैं ने पुन: सोचा, 'तो रुक कर उपेक्षा से बातें करूंगा मैं, बड़प्पन की बातें, अफसरनुमा अफसरी अधिकार की बातें ताकि उस की घरवाली को भी पता चल सके कि जिस पति को वह बड़ा ऊंचा, सबल मान कर इतराइठला रही है, मैं उस से भी बड़ा, ऊंचा, सबल हूं—एक तरह से उस के पति का पति.

'श्यामू ने मुझे शायद देख लिया है,' मैं ने सोचा, क्योंकि उस ने पीछे मुड़ कर अपनी घरवाली से कुछ कहा था. शायद श्यामू ने अपनी घरवाली को यह कहासमझाया होगा कि उस को उस के 'छोटे साब' के सामने किस तरह पेश आना है. कैसे नमस्ते करनी है.

श्यामू की घरवाली ने सिर पर रखा साड़ी का पल्लू झटके से खींच लिया.

मुझे उस के सलीके से संवारे हुए बाल दिखाई देने लगे और तभी मैं ने सोचा कि शायद श्यामू ने मेरे स्वभाव, विचारों आदि का खयाल कर के ही अपनी घरवाली को सिर खुला रखने को कहा है ताकि मैं पुराने रीतिरिवाज, आडंबर, दिखावा आदि को ले कर उन को 'लेक्चर' पिलाने न लगूं.

श्यामू की समझदारी और मेरी भावनाओं के प्रति उस की आस्था देख कर मुझे बेहद गर्व होने लगा.

वैसे भी श्यामू मेरे प्रति हमेशा ही श्रद्धालु रहा है, क्योंकि उस को दफ्तर में चपरासी की नौकरी मेरे कारण ही तो मिली थी, अन्यथा बड़े साब ने तो उस की बांगरूनुमा शक्लसूरत, जर्जर कपड़े और ढीलेपन तथा कम शिक्षा आदि के कारण उस का पत्ता ही काट दिया था. शायद यही कारण है कि वह बड़े साब की भले ही उपेक्षा कर दे, लेकिन मेरी नहीं. इस नौकरी की वजह से ही तो उस को इतनी अच्छी छोकरी मिली है, अन्यथा...

मेरे बिलकुल नजदीक आता जा रहा था श्यामू और उस की घरवाली. मेरा मन न जाने क्यों धकधक करने लगा. शायद मन में यह विचार उठने लगा था कि इन के अभिवादन आदि का कैसे, क्या उत्तर दूंगा मैं.

सहसा श्यामू की निगाहें मुझ से मिलीं. लेकिन यह क्या? उस की निगाहें बजाए झुकने के अहं से भरी थीं, चेहरे पर श्रद्धा की जगह कठोरता झलक रही थी. शरीर भी नम्रता में न झुक कर तना हुआ था. मुझे लगा, जैसे मेरे मुंह पर कस कर तमाचा मार दिया है श्यामू ने, क्योंकि मैं तो यह उम्मीद लगाए हुए था कि वह और उस की घरवाली झुक कर मुझे नमस्कार करेंगे और मैं उन की ओर खास ध्यान नहीं दूंगा और इस तरह मैं कितना बड़ा हो जाऊंगा उस की घरवाली के सामने, वह देखेगी कि उस का पति कैसे गुलाम की भांति मुझे नमस्कार कर रहा है.

श्यामू और उस की घरवाली ने

मेरी तरफ देखा तक नहीं, पास से ऐसे गुजर गए जैसे मैं उन का 'छोटा साब' नहीं, कोई ऐरागैरा, नत्थूखैरा हूं.

श्यामू और उस की घरवाली की मेरे प्रति इस उपेक्षा से मेरा सिर झन्ना उठा. अपमानबोध से मैं क्रोध से भर गया. उन की बदतमीजी ने अंटशंट सोचने पर विवश कर दिया. 'इस तीन कौड़ी के श्यामू की इतनी हिम्मत कि अपनी घरवाली के सामने मेरा अपमान करे? अगर दो दिन में नौकरी से न हटवा दिया तो...तभी इन की अक्ल ठिकाने आएगी और इस की यह नईनवेली छमिया यहांवहां मारीमारी फिरेगी. भूल जाएगी ये रंगबिरंगे कपड़े पहनना. और...और यह हरामखोर श्यामू, दिनभर मुजराई अंदाज से नमस्कार करने के अलावा करता भी क्या है? यह ठसक चाल, इस्तिरी कपड़े, चमकदार थोबड़ा—सब पर धूल न बिछा दी तो... तो मेरा भी नाम कमल नहीं.'

सहसा मुझे ठोकर लगी, पत्थर था बड़ा सा. मैं पत्थर को गाली देता हुआ आगे बढ़ गया, लेकिन मेरा दिलोदिमाग श्यामू और उस की घरवाली के आसपास ही घूमता हुआ उन के पीछे चला जा रहा था. 'जरूर श्यामू मेरे बारे में अपनी घरवाली को बता रहा होगा, जरूर श्यामू की घरवाली मेरा मजाक उड़ा रही होगी, जरूर श्यामू को कल दफ्तर में...श्यामू के बच्चे, कल देखना तेरी क्या गत बनाता हूं दफ्तर में. अगर तेरी नौकरी चाट कर तुझे सड़क पर न ला दिया तो मेरा नाम...तेरा क्या बिगड़ जाता रे अगर तू मुझे नमस्कार कर देता तो? तेरी घरवाली का क्या घिस जाता मुझे नमस्ते करने में? क्या मैं खा जाता उस को? अरे, कुंआरा हूं तो क्या हुआ? हूं तो चरित्रवान.'

श्यामू की टुच्ची हरकत मुझे इतनी कचोट गई. मेरी आंखों में आंसू आ गए. 'क्या संसार में इनसानियत यही है कि...'मैं ने सोचा, 'एहसानफरामोश. वे दिन भूल गया जब मेरे पास नौकरी के लिए रोतागिड़गिड़ाता रहता था और जिंदगी भर मेरी गुलामी करते रहने की बातें करता था?''

"साहब," कह कर उस दिन किसी ने पुकारा था तो मैं चौंक कर दरवाजे की तरफ देख तटस्थता से बोला था, "क्या है? और यहां मेरे कमरे में क्या..."

"हम श्यामलाल हैं, साहब," भीतर आने की कोशिश करते हुए बोला था वह. तो मैं ने एक जरूरी काम छोड़ कर, उस के फटेहाल व्यक्तित्व को सहानुभूतिपूर्ण निगाहों से देखा था.

"साहब," निरीहता से बोला था वह, "सुना है आप के दफ्तर में चपरासी की जगह खाली है. हम बहुत गरीब हैं, साहब. बूढ़े मांबाप, दो जवान बहनें, तीन छोटे भाई, सब भूखों मर रहे हैं, माईबाप." और वह रोने लगा था.

उस की इस व्यथाकथा से मेरा मन

पसीज उठा था और न जाने किस शक्ति, प्रेरणा से मैं ने कहा था, "रोग्रो मत भई, हम तुम को नौकरी पर रख लेंगे. तुम पढ़े कहां तक हो?"

"चार किलास पास हैं, साहब."

"तुम्हारे पास सर्टिफिकेट है?"

"वह तो नहीं है, साहब."

"रोजगार कार्यालय में नाम लिखवाया है?"

"वह क्या होता है, साहब?"

मैं ने हंसते हुए कहा था, "हूं." और मन ही मन उस को नौकरी पर रखने का निश्चय करते हुए बड़े साब के पास ले गया था.

जब मैं ने बड़े साब को उस के बारे में बढ़ाचढ़ा कर बताते हुए उस को नौकरी पर रखने का अनुरोध किया था तो वह हंस कर बोले थे, "कमल, तुम इस को नौकरी पर रखवाना चाहते हो, लेकिन... यह तो भरी जवानी में ही बूढ़ा लग रहा है."

"श्रीमान," मैं ने नम्रता से कहा था, "मैं ने आप को बताया न कि श्यामलाल बहुत ही गरीब है. आप तो जानते ही हैं गरीबी, भूख, आर्थिक भार आदमी को जवानी में ही बूढ़ा बना देती है. इस के परिवार की स्थिति जान कर मेरा मन कह रहा है कि इस को नौकरी पर रख कर निश्चय ही हम एक अच्छा काम करेंगे."

"सच!" बड़े साब रहस्य से बोले थे.

"हां, श्रीमान, इस ने अपने बारे में जो कुछ बताया है उस से तो ऐसा ही लगता है."

"देखो कमल," बड़े साब ने गंभीरता से कहा था, "भावुकता जिंदगी में जरूरी तो है, लेकिन किसी भी बात में अतिरेक ज्यादा अच्छा नहीं होता. तुम जरूरत से ज्यादा भावुक हो."

"हां, श्रीमान, लेकिन इस की व्यथा..."

"कमल," बात काट कर बोले थे बड़े साब, "हर जरूरमंद आदमी के पास अपना कोई न कोई दर्दनाक किस्सा होता ही है, जिस के बूते पर वह अपना काम निकालना चाहता है. जिंदगी का ज्यादा तजरबा नहीं है न तुम को. इस से भी ज्यादा जरूरतमंद तुम को मिलेंगे जिन की जीवनव्यथा सुन कर शायद तुम..."

"जी," मैं ने भी बात काट कर गंभीरता से कहा था, "आप का कहना शतप्रतिशत सही है, लेकिन तो भी मैं श्यामलाल को नौकरी पर रखने का वचन दे चुका हूं."

"कैसा वचन?" बड़े साब ने तिक्तता से कहा था, "कमल, किसी को भी वचन देने से पहले तुम को अपनी मर्यादा...तुम...तुम जानते तो हो, आजकल किसी को भी नौकरी पर रखने के लिए कितनी, क्याक्या औपचारिकताएं पूरी करनी पड़ती हैं."

"मैं सब औपचारिकताएं पूर्ण करवा लूंगा, श्रीमान. बस आप की आज्ञा भर चाहिए."

"ठीक है," बड़े साब ने टालते हुए कहा था, "पहले इस को दिहाड़ी पर रख लो, दोचार माह इस का काम देख लो. और हां इस को तुम अपने पास ही रखोगे."

"शुक्रिया, श्रीमान," मैं खुश हो कर उत्साह से ऐसे बोला था, जैसे श्यामलाल को नहीं, मुझे नौकरी पर रखा जा रहा हो.

श्यामलाल को नौकरी पर रख लिया गया था.

श्यामलाल की नम्रता, ईमानदारी से मैं इतना खुश था कि उस की नौकरी पक्की करने के लिए मैं ने नियम आदि की भी परवा नहीं की. इतना ही नहीं, अधिकारी न होने पर भी उस को अपनी बहनों की शादी के लिए कर्ज भी दिल-

वाया था. अपनी ओर से भी आर्थिक सहायता दी थी. लेकिन...लेकिन उसी श्यामलाल.. श्यामू ने मेरे इतने एहसानों का बदला यों दिया...अपनी घरवाली के सामने मेरी उपेक्षा कर के मुझे अपमानित किया.

एकाएक सामने की ओर देख कर मैं चौंक गया. सामने बड़े साब, उन की पत्नी और बच्चे चले आ रहे थे. देख कर बड़े साब ने अपनी पत्नी और बच्चों को धीरे से कुछ कहा तो सब के चेहरे पर अतिरिक्त गर्व झलकने लगा, उन की चाल में ठसक भर गई और...'क्यों न झलके अतिरिक्त गर्व उन के चेहरों पर, क्यों न भरेगी ठसक उन की चाल में, जब उन का गुलाम यानी मैं उन को मुजराई अदा में नमस्ते करने को चला जा रहा हूं?' मैं ने सोचा, 'अच्छा लगता है न, जब हमारे सामने कोई झुकता है और हम को, 'बड़े' होने का एहसास करवाता है? कितनी आत्मतुष्टि होती है तब? लेकिन...'

बड़े साब, उन की पत्नी और उन के बच्चों से नमस्ते करना नैतिकता का तकाजा लगा मुझे, क्योंकि बड़े साब के मुझ पर इतने एहसान हैं कि वह अगर मेरी चमड़ी के जूते बनवा कर भी पहन लें तो भी मैं उन के एहसानों से उऋण नहीं हो सकता. बड़े साब ने षड्यंत्रों में फंसी मेरी नौकरी को ही नहीं बचाया था, अपितु सामान्य परंपरा, नियमों आदि की परवा न कर के तरक्कियां दिलवा कर छोटा साब भी बनवाया था.

बड़े साब, उन की पत्नी और उन के बच्चे मेरे नजदीक आते जा रहे थे और मैं तेजी से सोचे जा रहा था, 'लेकिन मुझ पर बड़े साब के एहसान हैं, उन की पत्नी और उन के बच्चों के तो नहीं, जो मैं उन को नमस्ते करूं? और बड़े साब भी दफ्तर में हैं मेरे बड़े साब. यहां सड़क पर, बाजार में तो नहीं? फिर वह मुझे अपने गर्व, ठसक, आत्मतुष्टि का माध्यम बनाने की क्यों सोच रहे हैं? हूं...तरक्कियां मुझे मेरी मेहनत, नम्रता से मिली हैं, बड़े साब की कृपा से नहीं. मेरी नौकरी मेरी सचाई, ईमानदारी से बची है, बड़े साब की दया से नहीं. चलो मान लिया कि बड़े साब ने मुझ पर बहुत एहसान किए हैं तो इस का अर्थ यह तो नहीं कि एहसानों का बदला चाहने लगें वह? इस तरह तो एहसानों की कोई गरिमा ही नहीं रहेगी.

'क्या सोचेंगी उन की पत्नी और उन के बच्चे, जब मैं सब को यहां नमस्ते करूंगा? क्या वे यह नहीं समझेंगे कि मैं उन के पति या पिता का जरखरीद गुलाम हूं, जो वहां सड़क पर..., तो आफिस में क्या, कैसे करता होऊंगा? सभी सोचेंगे कि मैं चमचा हूं जो इस तरह मक्खन लगाता हूं.

'नहींनहीं, मैं बड़े साब, उन की पत्नी और उन के बच्चों से नमस्ते नहीं करूंगा, अपितु उन की खूब उपेक्षा करूंगा.'

बड़े साब, उन की पत्नी और उन के बच्चों को नमस्ते न करने का दृढ़ निश्चय कर के मैं उन के पास से ही गुजरने लगा, उन सभी की भरपूर उपेक्षा करता हुआ. तो मुझे सुनाई पड़ा, "अरे कमल, यह किस ध्यान में चले जा रहे हो, भई."

मैं ने झटके से रुक कर देखा तो बड़े साब ने हंसते हुए कहा, "कहो, कैसे मिजाज हैं?"

मैं ने हकला कर 'नमस्ते' कहते हुए उन की पत्नी और बच्चों को देखा तो वे सभी मुसकराते हुए, हाथ जोड़ कर मेरा अभिवादन कर रहे थे. इस दृश्य से मेरा सारा शरीर झनझना उठा, 'उफ, इतने बड़े हो कर भी, मेरी उपेक्षा के बावजूद ये...वे सब मेरे साथ किस तरह पेश आ रहे हैं. सच तो है, बड़प्पन, मानसम्मान.
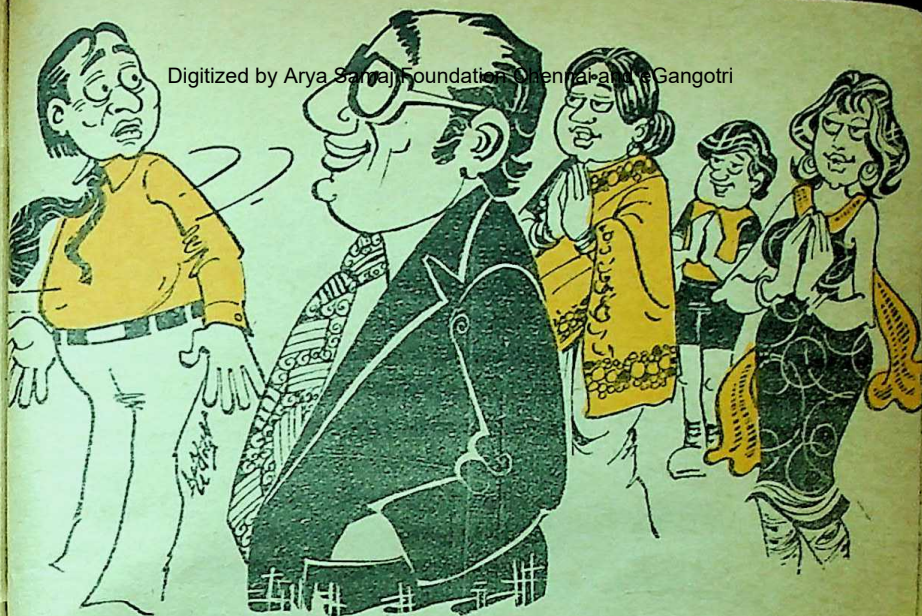
मैं ने हकला कर 'नमस्ते' कहते हुए बड़े साब की पत्नी और बच्चों को देखा तो वे सभी मुसकराते हुए, हाथ जोड़ कर मेरा अभिवादन कर रहे थे.

इज्जत पाने के लिए आदमी को 'छोटा बनना' भी जानना जरूरी है.'

"भई, क्या सोच रहे हो, कमल?" बड़े साब ने हंसते हुए कहा, "कहां जा रहे थे तुम इस वक्त?"

"वैसे ही घूमने."

"भई, घूमना ही है तो हमारे साथ चलिए न कमलजी," बड़े साब की पत्नी ने कहा तो मैं ने हकला कर कहा, "आप के साथ, मैडम..."

"कमलजी," बात काट कर वह बोलीं, "देखिए कमलजी, आप के मुंह से यह मैडमवैडम सुनना हमें अच्छा नहीं लगता है. क्या भाभी कहने में आप छोटे हो जाएंगे?"

मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या उत्तर दूं. 'मैं क्या अंटशंट सोच रहा था इन को ले कर और ये मेरे साथ...'

"चलिए न, चाचाजी." बच्चों ने आग्रह किया तो मैं मंत्रमुग्ध सा उन के साथ हो गया.

"कमल," बड़े साब ने कहा, "एक समस्या है, और तुम उसे फौरन सुलझा सकते हो."

"क्या, श्रीमान?"

"दरअसल तुम्हारी मैडम ओह सारी, भाभी ने मुझ से पूछे बिना सिनेमा के टिकट मंगवा लिए हैं," बड़े साब ने हंसते हुए कहा, "मुझे एक जरूरी बैठक में जाना था..."

"श्रीमान," मैं चट से बोला, "मैं चला जाता हूं उस जरूरी बैठक में, मुझे तो कोई भी काम नहीं है. अब तो कोई समस्या नहीं रही?"

"नहीं," बड़े साब ने प्यार से कहा, "तुम तो इन को सिनेमा दिखा लाओ, कमल प्लीज."

मैं ने चौंक कर बड़े साब की पत्नी और बच्चों की तरफ देखा तो मैं बुरी तरह चकरा गया, क्योंकि उन के चेहरों पर बजाए गुस्से, तनाव, उपेक्षा आदि के साथ चलने का मधुर आग्रह, अनुरोध का भाव था.

सुखद वैवाहिक जीवन के लिए

विश्व सुलभ साहित्य

द्वारा प्रकाशित यौन विज्ञान व परिवार संबंधी प्रमाणिक पुस्तकें.

कामकला (दो भाग)
यौन जीवन सुखमय बनाने में सहायक पुस्तक. सेक्स के हर पहलू का वैज्ञानिक विश्लेषण.
प्रत्येक भाग रु. 5.00

युवकों से
युवकों को योग्य पति और जिम्मेदार पिता बनने में सहायक पुस्तक.
रु. 3 50

युवतियों से
एक युवती समझदार बहू, प्रिय पत्नी, योग्य गृहिणी और आदर्श मां बन कर अपनी जिम्मेदारियों को सही ढंग से कैसे निभाए.
रु. 5.00

पति से
पति का पत्नी को समझने व अपना बनाए रखने में सहायक उपयोगी पुस्तक.
रु. 4.00

पत्नी से
परिवार को सुखमय बनाने के लिए विभिन्न समस्याओं का विवेचन. हर पत्नी के लिए अनिवार्य.
रु. 5.00

स्त्री पुरुष
प्राचीन भारतीय काम विज्ञान तथा आधुनिक पश्चिमी खोज के ज्ञान का समावेश इस पुस्तक में मिलेगा
रु 6.50

बच्चों की समस्याएं
बच्चों को शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ कैसे बनाएं ?
रु. 3.00

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें. या आदेश भेजें.

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

VSS 101

पूरा सैट केवल 25 रुपए में डाक खर्च सहित या कोई भी तीन पुस्तकें लेने पर रुपए अग्रिम आने पर डाक खर्च की छूट.

शराब के ठेकों के आगे देहरादून की महिलाओं का सत्याग्रह

लेख . नवीन नौटियाल

उत्तर प्रदेश में सरकार बदलने के बाद पुरानी जनता सरकार की नीतियों पर फिर से विचार किया गया. इस विचार में नई सरकार ने मद्यनिषेध की नीति को अव्यावहारिक व दोषपूर्ण मानते हुए उसे खत्म कर प्रदेश में फिर से कई स्थानों पर कई देशी व अंगरेजी शराब के ठेके व दुकानें खुलवा दीं. इन इलाकों में, जहां मद्यनिषेध होने के बाद फिर से शराब बेचने व इस्तेमाल करने पर से प्रतिबंध हटा है, उन में से देहरादून एक है.

राजस्व में हुए लगातार घाटे को पूरा करने के नाम पर यह किया गया. इस से सरकार के सामने एक विकट समस्या आ खड़ी हुई. नीलामी स्थल पर जनता का भारी जमाव और शराब खुलने के विरोध में नारे लगाते लोगों ने प्रशासन को खासा परेशान किया.

सितंबर, 1980 को जब नीलामी बोली जा रही थी तो देहरादून की कई महिलाओं ने जलूस की शकल में नीलामी

वाली जगह पर [illegible]. बाद में उन्होंने प्रशासनिक अधिकारियों का घेराव भी किया. उन क्रुद्ध पर पूरी तरह शांत महिलाओं की बात मानना जरूरी हो गया तो जिलाधिकारी श्री सिन्हा को कहना पड़ा कि देसी शराब के ठेकों को शहर के अंदर खोलने की अनुमति नहीं दी जाएगी.

ठेकों के आगे धरना

यह आश्वासन पा कर उस समय तो महिलाएं चली गईं, पर बाद में सघन बस्तियों—भंडारी बाग, आराघर, चकराता रोड, कनाट प्लेस आदि के पास जब अनधिकृत रूप से ठेके खोले जाने लगे तो इन महल्लों की महिलाओं व युवाओं ने ठेकों के आगे धरना देना शुरू कर दिया. महिलाओं ने तो कीर्तन भी शुरू कर दिया. उन के साथ चकराता रोड के दुकानदार भी सम्मिलित हो गए और उन्होंने इस घनी बस्ती में खुले आम बिकती शराब के विरोध में दुकानें बंद कर जिलाधिकारी को ज्ञापन दिया. फलत: चकराता रोड सहित अनेक जगहों से शराब विक्रेता भाग खड़े हुए.

अंगरेजी शराब के विक्रेता भी इस जन आक्रोश की अग्नि से बच नहीं पाए. कई जगहों पर अंगरेजी शराब के लकड़ी से बने अस्थायी खोखों को लोग उखाड़ कर ले गए.

जनता सरकार द्वारा शराबबंदी लागू करने से देहरादून अपेक्षाकृत निरापद व शांत स्थल बन गया था. हालांकि अवैध शराब के विक्रेता इस बीच अच्छीखासी आमदनी कर रहे थे, पर सामान्यत: कम पीने वाले लोगों ने शराब को छोड़ ही दिया था. नई नीति के लागू होने पर यहां की रातें फिर आतंकमय हो चली हैं. सामान्य व्यक्ति शाम के बाद घर से निकलते घबराता है. लोग खुले आम सड़क पर दारू पीते दिखाई देते हैं.

शराबबंदी के लिए संघर्ष में जान गई

नगर में कई स्थानों पर गठित युवा मद्य निषेध समितियों से अवैध (कच्ची) शराब बेचने वालों को भी काफी परेशानी उठानी पड़ रही है. इसी घटनाक्रम में 10 सितंबर, 1980 को इस समिति के सदस्यों व शराब विक्रेताओं में संघर्ष भी हो गया, जिस में एक युवा संतोष घिल्डियाल को जान से हाथ धोना पड़ा. अगले दिन पूरा नगर इस घटना के कारण शोक में डूब गया था. नगर की प्राय: सभी दुकानें इस अवसर पर बंद थीं.

दोषियों को तुरंत पकड़ने की मांग को ले कर युवाओं का एक जलूस भी निकला, जिस का नेतृत्व डी. ए. वी. कालिज छात्रसंघ के अध्यक्ष विवेक खंडूड़ी ने किया. क्रोध में पागल भीड़ ने अभियुक्तों के घरों में आग लगा दी थी. अब तक दो अभियुक्त गिरफ्तार किए गए हैं.

महिलाओं को देसी ठेके शहर से बाहर कराने की अपनी सफलता से बल मिला है. लगता है उन के प्रयासों से नगर की सभी घनी बस्तियों से ठेकों को उठाना पड़ेगा. प्रशासन ने नीलामी का धन प्राप्त कर लिया है और वह अब बजाए शराब विक्रेताओं की परेशानियों को दूर करने के तटस्थ रहने की नीति अपनाने में ही अपनी भलाई समझता है. ●

घाटे का सौदा

यह तो हद दरजे की बेवकूफी और नालायकी है कि रुपया खर्च करें और बदले में सिर्फ बेहोशी और बदहवासी हाथ लगे.

—तिरूवल्लुवर

अपहरण भारत सहित विश्व के हर क्षेत्र में किसी न किसी चीज का होता रहा है. पर भारत में अब तक जिन चीजों को अपरहण के योग्य समझा गया वे अपने आप में अद्वितीय समझी जाती हैं.

अपहरण: भारतीय संदर्भ में

लेख • विष्णुकांत शुक्ल

'हरण' का शाब्दिक अर्थ है—ले जाना, चुराना, हटाना या वंचित करना. 'हृ' धातु से यह शब्द बनता है, 'अप' उपसर्ग जोड़ने पर 'अपहरण' बन जाता है. इस का अर्थ है किसी व्यक्ति या वस्तु को बलपूर्वक छीन कर कहीं दूर ले जाना. 'अपहरण' में नीयत में कुछ गड़बड़ अवश्य रहती है. भारतीय दंड संहिता में इस की विवेचना करते हुए धारा 359 से 370 तक विविध रूपों में इस प्रकार के अपराध के लिए दंड निश्चित हैं.

भारतीय पुराणों में अपहरण के अनेक उदाहरण मिलते हैं. रावण के द्वारा सीता का अपहरण विश्व के पौराणिक साहित्य में अपहरण की सब से बड़ी घटना बन गई. इंद्र ने सगर के अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा अपहरण कर के ही कपिल के आश्रम में बांधा था. अपराधी इंद्र था, पर मारे गए सगरपुत्र. बालि ने सुग्रीव की पत्नी का अपहरण किया और पर्याप्त समय तक उसे अपने ही घर में रखा. रावण ने अनेक कन्याओं का तो अपहरण

राम : स्वयं तो किसी का अपहरण न किया पर अहिरावण ने इन का व लक्ष्मण का अपहरण किया तो रावण ने इन की पत्नी सीता का.

किया ही, अपने भाई कुबेर के पुष्पक विमान को भी नहीं छोड़ा. अहिरावण ने युद्धभूमि से रामलक्ष्मण का अपहरण किया था. तुलसी के अनुसार हनुमान सुषेण वैद्य को ही लंका से उठा लाया था.

इन पौराणिक उदाहरणों से एक बात सिद्ध होती है और वह यह कि स्त्री और पुरुष दोनों का ही अपहरण हो सकता है. यह और बात है कि अब तक पुरुष वर्ग द्वारा ही ऐसा होते देखा गया है. किंतु पुराणों में स्त्रियों के द्वारा पुरुषों के अपहरण की भी एकदो घटनाएं मिलती हैं.

पुरुषों का अपहरण

श्रीमद्भागवत में वर्णित चित्रलेखा द्वारा अपनी सखी ऊषा के लिए अनिरुद्ध का अपहरण एक ऐसी ही साहसिक घटना है. इसी पुराण के अनुसार ब्रह्मा ने बछड़ों का अपहरण किया, कृष्ण ने दही, मक्खन की छुटपुट चोरी से ले कर रुक्मिणी का तथा स्वर्ग से पारिजात का अपहरण किया. उन के सखा अर्जुन ने सुभद्रा का अपहरण किया.

वेश्याओं द्वारा अपहरण

वेश्याओं द्वारा अपहरण की घटनाएं भी हैं. महाभारत के अनुसार राजा लोमपाद के देश में अनावृष्टि (सूखा) दूर करने के लिए ब्राह्मणों ने ऋषि ऋष्य-शृंग की यज्ञ में उपस्थिति अनिवार्य बताई थी. तब प्रशिक्षित वेश्याओं ने अपने रूपजाल में बांध कर उन का अपहरण किया था. महाभारत के ही अनुसार गरुड़ द्वारा स्वर्ग से अमृत कलश का अपहरण, भीष्म द्वारा काशिराज की कन्याओं का अपहरण, मदालसा का पातालकेतु द्वारा अपहरण, जरासंध द्वारा किए गए अनेक अपहरण. हमारे पुराणों में इस प्रकार के अनेक अपहरणों के उदाहरण मौजूद हैं.

इस से लगता है कि पुराणों में ही

कृष्ण : बचपन में दूध, दही, मक्खन की छुटपुट चोरी की. युवा होने पर रुक्मिणी का तथा स्वर्ग से पारिजात का अपहरण किया. यानी जीवन में एक नहीं अनेक बार अपहरण किया.

सही भारत में अपहरण कोई नई बात नहीं है और यह शास्त्रसम्मत भी है. इस के अनेक रूप हो सकते हैं. उद्देश्यों के आधार पर इस के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारण हो सकते हैं. आर्थिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए आजकल डकैत अपहरण करते हैं. सीता का अपहरण राजनीतिक उद्देश्य से हुआ था. आजकल अनेक राजनीतिबाजों के अपहरणों के समाचार आए दिन मिलते रहते हैं.

सामाजिक उद्देश्य के लिए किए गए अपहरण में अपहृत युवती और अपहर्ता युवक अधिकतर विवाह बंधन में बंध जाते हैं. सांस्कृतिक उद्देश्य से किए गए अपहरण में दो संस्कृतियों के मेल से तीसरी नई संस्कृति बन जाती है. कभीकभी जाति या समुदाय के हित के लिए भी अपहरण हो जाते हैं. इजरायल और अरब में हुए अपहरण इसी श्रेणी में आते हैं. वैसे प्रत्येक अपहरण में बदले की भावना अवश्य ही निहित रहती है.

अपहरणों की भीषण बाढ़

राजपूत काल में देश में अपहरणों की भीषण बाढ़ सी आ गई थी. जिस की भी बेटी सुंदर दिखाई देती थी, निरंकुश राजा लोग उसी के लिए दांव लगा बैठते थे. तलवारों की छांह में फेरे पड़ते थे. कभीकभी अपहरण के बाद घर ला कर विवाह संस्कार होता था. प्रद्योत की कन्या वासवदत्ता का उदयन ने अपहरण किया. पृथ्वीराज चौहान द्वारा संयोगिता के अपहरण का साक्षी इतिहास है.

हरण और अपहरण को यदि एक वाक्य में परिभाषित किया जाए तो कहा जा सकता है, "हरण में किसी हद तक अपहृत की सहमति होती है, पर अपहरण में जबरदस्ती ही होती है." अपहरण में अपहर्ता की शक्ति ही प्रमुख है, वह किसी भी प्रकार की हो सकती है. किंतु हरण में अपहृत की सहमति सहायक होती है. इसी लिए सीता का अपहरण हुआ, जब कि रुक्मिणी आदि की कथाओं में पत्र आदि के द्वारा सहमति प्राप्त हो चुकी थी, इसलिए वह हरण था. फिर भी दूसरे पक्ष के परिवार की दृष्टि से इसे अपहरण ही माना जाएगा. चंद वरदाई के 'पृथ्वीराज रासो' में भी यादव कुल की पद्मावती का पृथ्वीराज द्वारा हरण किए जाने की कथा आती है, किंतु दूसरे पक्ष के अनुसार तो यह अपहरण ही था. तभी तो युद्ध की नौबत आई: हरण की स्थिति

हनुमान : लक्ष्मण के उपचार के लिए लंका से सुषेण वैद्य का अपहरण किया.
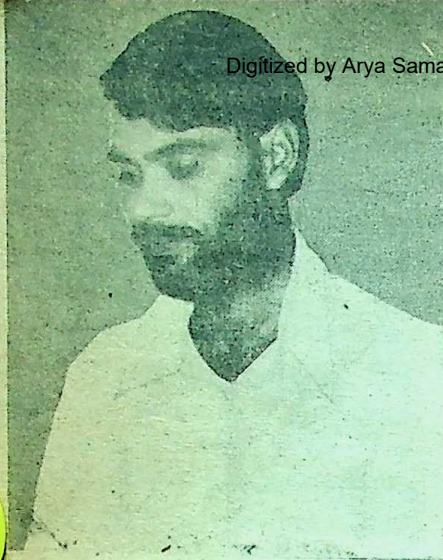
भोला पांडे : अपने भाई देवेंद्र पांडे के साथ राजनीतिक उद्देश्य के लिए भारत में पहली बार विमान का अपहरण किया.

में प्रायः पीड़ित पक्ष संतोष कर लेता है.

मुसलिम काल में अपहरण खूब होते थे. इतिहास इस का साक्षी है. अलाउद्दीन खिलजी ने किस सुनियोजित ढंग से पद्मावती का अपहरण किया, यह इतिहास और जायसी के 'पद्मावत' में स्पष्ट उल्लिखित है.

...और आधुनिक युग के अपहरण

अब तो अपहरण के और भी अनेक रूप दिखाई देते हैं. हमारे कार्यालय का विद्यासागर यूनियन के चुनाव में सचिव पद का उम्मीदवार था. उस की पार्टी ने पुलिस में उस के अपहरण की रिपोर्ट लिखाई. परचे तक छपवा कर शहर में बंटवा दिए गए. विपक्ष की घिनौनी राजनीति पर कड़ी टिप्पणी की गई. फलस्वरूप मतदाताओं की सहानुभूति विद्यासागर के पक्ष की ओर हो गई. ठीक चुनाव से एक दिन पहले वह प्रकट हो गया और चुनाव जीत गया. असलियत यह थी कि उसी के साथियों ने उसे जिले से बाहर भेज कर उस के अपहरण की अफवाह फैला दी थी.

चुनाव के अवसर पर एक साथी ने अपने 100 साथियों के परिचयपत्र सुविधा और सुरक्षा की दृष्टि से अपने पास रख लिए. कहना न होगा कि चुनाव के दिन उन के वोट अपने पक्ष में डालने के लिए ऐसा हुआ.

इसी तरह एक बार 20 साथियों को चाय के बहाने बुला कर एक यूनियन नेता ने अपने कमरे में बंद कर के अपने दुश्मन को चुनाव के युद्ध में पछाड़ दिया. परीक्षा के अवसर पर एक अध्ययनशील परीक्षार्थी को कुछ ईर्ष्यालु छात्रों ने मार्ग में ही एक घंटे तक रोक लिया, बाद में छोड़ दिया. वह बेचारा परीक्षा न दे सका.

ये विचित्र अपहरण

एक बार अखबार में बड़ी दिलचस्प खबर छपी थी .राजघाट (जिला बुलंदशहर) पर कार्तिक पूर्णिमा के स्नान पर एक नन्ही लड़की की माता अपने बराबर ठहरी हुई किसी स्त्री के नवजात पुत्र को ले कर चंपत हो गई, किंतु अपनी बेटी को बदले में वहीं छोड़ गई. क्रुद्ध स्त्री ने उस लड़की को ही गंगा में धकेल दिया.

अब तो दुनिया की हर वस्तु का अपहरण होने लगा है. जानवरों में पालतू पशुओं से ले कर पक्षियों तक तथा मानव के काम आने वाली छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी चीज का अपहरण होने लगा है. विमानों के अपहरण के किस्से विदेशों में प्रसिद्ध थे ही भारत में भी एक बार पाकिस्तानी युवकों द्वारा श्रीनगर से एक विमान अपहृत कर के ले जाया गया, जो दोनों देशों में युद्ध का कारण भी बना.

20 दिसंबर, 1978 को पांडे बंधुओं (भोला तथा देवेंद्र) ने इंदिरा गांधी की रिहाई के लिए एक विमान उड़ाया. अब तो रेलगाड़ियों का भी अपहरण होने लगा है अभी तक मध्य प्रदेश में गायब चीनी से लदी माल गाड़ी नहीं मिली है.●

लघुकथा • रोशनलाल सुरीरवाला

परमिट प्रतिज्ञा

जनक की घोषणा सुन कर सब ने यही सोचा था उन की पुत्री बिन ब्याही रह जाएगी. मगर दशरथनंदन ने वह कर दिखाया जिस की किसी ने कल्पना भी न की थी...

अधूरे मकान की चौखट पर बैठे क्लांत, निराश और परमिट आफिस के चक्करों से तंग आए जनक ने सहसा घोषणा की, "जो युवक एक सप्ताह के अंदर मुझे बिना रिश्वत सीमेंट का परमिट ला कर देगा, उसी के साथ मैं अपनी गुणसंपन्न बेटी का विवाह करूंगा."

निःसंदेह जनक की बेटी शिक्षा, सुरुचि, शरीर और सौंदर्य की दृष्टि से अप्रतिम थी. परिणामतः उसे पाने के लिए युवकों में होड़ लग गई, किंतु सभी के असफलता ही हाथ लगी. हार कर जनक ने 'वीर विहीन मही' की दुखद स्वीकृति प्रकाशित करा दी और अपनी प्रतिज्ञा पर पश्चात्ताप प्रकट किया. तभी प्रोफेसर विश्वामित्र की आज्ञा से लोकप्रिय छात्र नेता श्री दशरथनंदन ने चुनौती स्वीकार की और तीसरे दिन ही सीमेंट का परमिट ला दिया.

प्रफुल्ल जनकसुता ने दशरथनंदन को वरमाला पहना दी.

"आप ने यह चमत्कार कैसे कर दिखाया?" अवसर मिलते ही उत्सुक-आतुर नव वधू ने प्रथम प्रश्न किया.

"मेरे सौभाग्य से सभी प्रतियोगी युवक मूर्ख निकले," दशरथनंदन धीमे से मुसकराया. "परमिट तो मुझे गुरुदेव के आशीर्वाद से रिश्वत देने पर ही मिल सका था, किंतु तुम्हारे पिताजी से मैं ने यह कह दिया कि बिना रिश्वत दिए प्राप्त किया है."

"चलिए, अच्छा किया आप ने मुझे अविवाहित रहने से बचा लिया," और जनकनंदिनी लाज से सकुचा उठी.

हिंदी में रोज हजारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सब से अलग हैं- विश्व पाकेट बुक्स

एक लहर टूटी हुई:
जीवन से निराश विनोद अपने संक्षिप्त जीवन को और संक्षिप्त बना देना चाहता था. ऐसे में नीला ने निस्वार्थ भाव से विनोद को नई जिंदगी दी.
स्त्री और पुरुष के सात्विक प्रेम संबंधों की कहानी.

डाल से बिछुड़े:
रीता की शादी इंगलैंड में बसे राम के साथ तय हुई तो उसे लगा जैसे वह भावना के स्वप्नलोक में जा रही है. मगर...
ब्रिटेन में बसने वाले भारतीयों की अपमानजनक जिंदगी की सच्ची तस्वीर.

दिल्ली के आंसू:
तैमूर लंग ने एक दिन में एकाएक लाख हिंदुओं को कत्ल कर के भारत की धरती को खून से लाल कर दिया. फिर भी कई हिंदू उस के पैर चूमने में अपना सौभाग्य समझते थे....आखिर क्यों?

समय के उस पार:
अनार्य राजा करंज और आर्य कन्या अजसि का प्रेम?—असंभव.
परिणाम क्या हुआ?...
ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व की भारतीय सभ्यता व संस्कृति की रोमांचक कहानी.

उत्तरदान:
रहस्य, रोमांस व रोमांच का पुट लिए स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले उन वीरों की कहानी जो स्वयं स्वतंत्रता पाने में असफल होने के बावजूद भी अपने बच्चों के उत्तरदान में स्वतंत्रता पाने की आशा दे गए.

एक और पराजय:
टिशांग कसबे के भोले-भाले नागरिकों को चीनी गुलाम बनाना चाहते थे. क्या वे इस में सफल हो सके?

—प्रत्येक रु. 4

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या लिखें.

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

स्वर्णिम वाक्य

इस स्तंभ के अंतर्गत छपने के लिए उपयुक्त उद्धरण भेजें. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और सर्वोत्तम उद्धरण पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. उद्धरण के साथ लेखक, रचना व प्रकाशक का नाम, संस्करण, वर्ष और पृष्ठ संख्या का उल्लेख जरूरी है.

भेजने का पता : स्वर्णिम वाक्य, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

"जिंदगी से भाग कर सपनों में शरण लेने से कहीं अच्छा है सपने को पाने की खातिर जिंदगी को होम कर दो."

—मृदुला गर्ग : अनित्य से (प्रेषक : दुर्गाप्रसाद अग्रवाल)

✦

"दूर से पहाड़ जैसी बड़ी और भयंकर दिखाई पड़ने वाली मुसीबत चाहे जितनी विशाल और विराट क्यों न दिखाई दे, निकट आने पर उस में कहीं न कहीं पगडंडियां और रास्ते निकल ही आते हैं."

—राजेंद्र यादव : सारा आकाश (प्रेषक : शफी मोहम्मद)

✦

"इस संसार में न तो सुखदुख का समय और स्थान ही निश्चित है और न ही कल्पनाओं की पूर्ति आवश्यक है. मनुष्य को ऊंची कल्पनाएं करते हुए भी यथार्थ से मुंह नहीं मोड़ना चाहिए, बाधाओं से हतोत्साहित नहीं होना चाहिए और अपनी शक्ति तथा सीमाओं को ध्यान में रख कर जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए."

—हरिवंशराय बच्चन : ललित संकलन (प्रेषक : रेमी बावेजा)

✦

"संकल्प और भावना जीवन के दो पलड़े हैं. जिस को अधिक भार से लाद दीजिए, वही नीचे चला जाएगा. संकल्प कर्त्तव्य है और भावना कला. दोनों के समान समन्वय की आवश्यकता है."

—वृंदावनलाल वर्मा : मृगनयनी (प्रेषक : किशोर) (सर्वोत्तम)

✦

"अविश्वास आदमी की प्रवृत्तियों को जितना बिगाड़ता है, विश्वास आदमी को उतना ही बनाता है. ऐसे अवसरों पर जब मनुष्य को गंभीरतम उत्तरदायित्व सौंपा जाता है तब स्वभावतया आदमी के चरित्र में एक विचित्र सा निखार आ जाता है."

—धर्मवीर भारती : गुनाहों का देवता (प्रेषक : निर्मल जीत)

✦

"सच्चे खिलाड़ी कभी रोते नहीं, बाजी पर बाजी हारते हैं, चोट पर चोट खाते हैं, धक्के पर धक्के सहते हैं, पर मैदान में डटे रहते हैं. उन की त्योरियों पर बल नहीं पड़ते, हिम्मत उन का साथ नहीं छोड़ती, दिल पर मालिन्य के छींटे भी नहीं आते. न किसी से जलते हैं, न चिढ़ते हैं."

—प्रेमचंद : रंगभूमि (प्रेषक : कजोड़मल शर्मा)

कंचनपुर गांव के निकट ही छबलपुर गांव है. छबलपुर के पंडितों की लड़की उन दिनों कंचनपुर की चौपाल में विशेष चर्चा का विषय बनी हुई थी. वहां के अधिकतर निवासी आर्यसमाजी हैं.

सच्चा मार्ग

कहानी • पृथ्वीराज
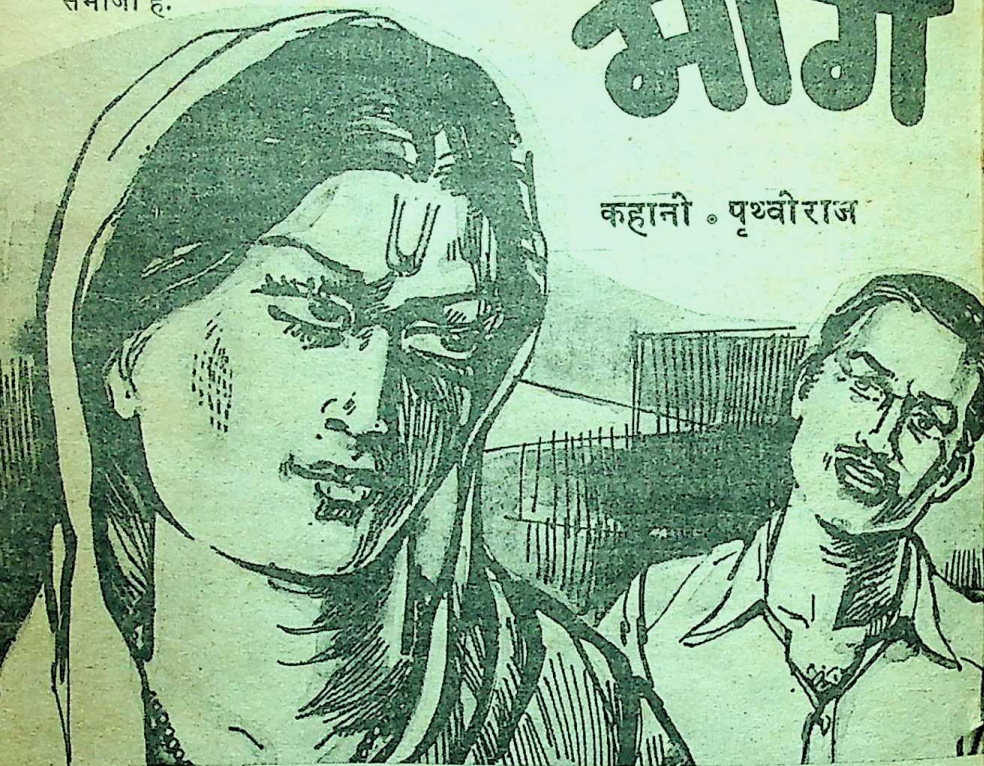
नीलम ने महंत कबीरदास के सिखाने पर साध्वी बनना स्वीकार कर लिया था. वह सोच रही थी इस तरह वैधव्य जीवन अमनचैन से बीतेगा. मगर जब शंकर ने एक और राह की ओर संकेत किया तो नीलम की समझ में आया कि वास्तव में सच्चा मार्ग कौन सा है...

विधवा लड़की नीलम साध्वी बन रही थी. कंचनपुर वालों को यह अच्छा नहीं लगा था.

शंकर व रामधन इसी सिलसिले में छबलपुर जा रहे थे. शाम हो रही थी. इक्कादुक्का आदमी ही खेतों से घर आता हुआ नजर आ रहा था.

"दादा, आप ने नीलम को समझाया नहीं?" शंकर ने चुप्पी तोड़ते हुए रामधन से पूछा.

“समझाया [illegible] वह तो मौन व्रत धारण किए हुए है, कुछ बोलती ही नहीं.”

“वह मौन व्रत कब से रखे हुए है?”

“आज पूरे नौ मास हो जाएंगे.”

“मैं उस से मिलना चाहता हूं. क्या ऐसा संभव है?”

“मिलवा तो दूंगा, पर तुम उस से मिल कर करोगे क्या?”

“वह मैं बाद में देखूंगा, आप तो बस उस से मेरी भेंट करा दीजिए.”

“अब मिल कर क्या करोगे? आज तो वह मौन व्रत तोड़ कर साध्वी हो रही है.”

“वह उसी लफंगे से दीक्षा ले रही है न, जो अपने को कबीरदास कहता है?”

“हां.”

नीलम का घर विवाह वाले घर की तरह बिजली की जगमगाहट और रंग-बिरंगी झंडियों से सजा था. वहां अनगिनत बच्चे, स्त्रीपुरुष और जवान लड़कियां एकत्र थीं. एक बड़े उत्सव का सा आभास हो रहा था.

तभी एक कार जो पूरी तरह फूलों से ढकी थी, वहां आ कर रुकी. भीड़ में शोर मच गया. कार से आने वाला व्यक्ति महंत कबीरदास ही था—काला भुजंग सा रंग, लंबा चेहरा, बूढ़े बकरे जैसी लंबी दाढ़ी व बढ़िया धवल वस्त्र. वह नीलम के घर की तरफ चला. कबीरदास जब शंकर के पास से गुजरा तो उस ने भी उस के पीछे जाना चाहा, पर न जाने क्या सोच कर रुक गया.

कुछ समय बाद कबीरदास व नीलम औरतों से घिरे हुए मंच तक पहुंचे. वहां दोनों अपनेअपने आसन पर विराजमान हो गए. उन का कार्यक्रम बड़ा दिलचस्प व लंबा था. शंकर ठीक नीलम के पीछे

नीलम को साध्वी बनाने के दो दिन बाद जब महंत कबीरदास गांव की एक और लड़की को भी साध्वी बनाने आया तभी शंकर ने उस पर प्रश्नों की बौछार कर दी.

खड़ा था. यह बयान उसे रामधन ने दिलवाया था. जो शब्द, जो विचार नीलम ने मौन व्रत तोड़ने के बाद प्रकट किए वे सब उस ने लिख लिए. उस ने कबीरदास द्वारा लिखित वह पन्ना भी प्राप्त कर लिया, जिस को नीलम ने भरी सभा में भाषण के रूप में पढ़ा था.

दो दिन बाद एक और गरीब परिवार की लड़की को गुरु नाम देने के लिए ऐसा ही आडंबर रचा गया. वह लड़की नीलम के पड़ोसी परिवार की नाबालिग लड़की थी जो थोड़ी लंगड़ा कर चलती थी. अब शंकर से न रहा गया. उस ने महंत से खुली टक्कर लेने की ठान ली.

कार्यक्रम शुरू होते ही उस ने महंत से सीधा प्रश्न किया, "आप लड़कियों और औरतों में किस ज्ञान का प्रचार कर रहे हैं, जब कि आप स्वयं अज्ञानी हैं? अभी इस लड़की की सारी उम्र पड़ी है. साध्वी बन कर जीवन बिताना क्या सहज है? फिर यह साध्वी स्वयं नहीं बन रही. आप दबाव व प्रलोभन दे कर उसे ऐसा बनने के लिए विवश कर रहे हैं. अभी इस ने देखा ही क्या है?"

"अरे, तुम हम बैरागियों से बहस करना चाहते हो? ज्ञानअज्ञान को तुम क्या जानो? तुम में अभी 'मैं' का अहंकार है. पहले इसे दूर करो तब हम से बात करना," कबीरदास ने उत्तर दिया.

"तुम बैरागी हो? जानते हो, बैराग क्या होता है?"

"बैराग में मनुष्य संसार की मोहमाया सब छोड़ देता है. वह किसी सांसारिक वस्तु का भोग नहीं करता."

"हूं, तो तुम बैरागी हो," शंकर ने चिल्ला कर कहा, "तुम बैरागी नहीं, कोई पाखंडी हो. तुम को ऐशोआराम से, लड़कियों से और सुगंधित इत्रों से, जो तुम हर वक्त लगाए रहते हो, भारी लगाव है. तुम्हारे हाथ का लिखा हुआ कागज मेरे पास है, इसे तुम ने स्वयं अपने हाथ से लिखा है. 'भगवान कहीं दूर नहीं है. वह जंगलों में नहीं है. न पहाड़ों में है और न ही पत्थरों में.' तुम ने प्रत्येक वस्तु में भगवान का होना माना है. समूची प्रकृति को ही तुम ने भगवान की संज्ञा दी है. फिर तुम क्यों किसी खास आकृति की ओर संकेत करते हो?"

वातावरण में भारी शोरगुल मच गया. कबीरदास हुड़दंग देख कर घबरा गया. उठ कर खिसकने लगा. वह दो कदम भी न चल पाया था कि शंकर ने पकड़ कर उस पर धौल जमा दिए, "जाता किधर है? बैराग का ज्ञान तो लेता जा." कंचनपुर के अन्य ग्रामवासियों ने भी कबीरदास को आड़े हाथों लिया. उस की बहुत मरम्मत की.

इस घटना के बाद शंकर नीलम के घर आनेजाने लगा. एकदो मुलाकातों में तो नीलम शंकर से अपने साध्वी हो जाने के विषय में बहस करती रही. अपनी बुद्धि से, कबीरदास के दिए ज्ञान से शंकर को हराने की कोशिश करती रही. पर फिर धीरेधीरे स्वयं अपनी युक्तियों के प्रति शंकित हो उठी. उधर शंकर नीलम को समझातेसमझाते उस के रूपजाल में उलझ गया. उस दिन भी वह रूपसी विधवा नीलम को प्यार से निहारता हुआ उस से तर्क कर रहा था.

"देखो, नीलम, तुम्हारा यह कथन कि बैराग ही उत्तम जीवन है, सही नहीं."

"क्यों?"

"क्योंकि इस ब्रह्मांड में कोई सच्चा बैरागी हो ही नहीं सकता और न आज तक कोई हुआ है, क्योंकि प्रत्येक प्राणी को किसी न किसी से जरूर लगाव रहता है. सब कुछ ठुकरा कर भी कोई बैरागी नहीं बन पाता, क्योंकि वह अपने आप से तो फिर भी राग रखता है. प्रकृति का

टल नियम है कि कोई भी, जीव राग-
त नहीं हो सकता. फिर तुम को [illegible]
पने शरीर से, अपने रूप से, इन धवल
वस्त्रों से, सब से राग है."

"तुम ने तो मुझे परेशान कर दिया. हमेशा दुखी करने वाली बातें करते हो. यदि मैं रूपसी हूं तो इस में मैं क्या कर सकती हूं? मुझे हर वक्त इसी की चिंता रहती है."

शंकर बोला, "तुम चिंतित क्यों होती हो? जब तुम्हें अभी तक आत्म संतोष नहीं मिला तो दूसरी राह अपनाओ."

"वह कैसे?"

"अपने असंतोष को मारो मत. अपनी उपयुक्त इच्छाओं का दमन मत करो. [illegible] न बनो पर उन का गला भी न घोंटो."

नीलम तड़फ उठी. उसे साध्वी से साधारण नारी बनना बहुत मुशकिल जान पड़ा. वह मानने लगी थीं कि लोगों की नजरों में वह अब एक साध्वी है, बैरागी है. दोबारा उस के साधारण स्त्री वाले रूप को देख कर लोग क्या कहेंगे, क्या वह गांव में सिर उठाए घूम सकेगी? लोग उस पर ताने कसेंगे.

"नहींनहीं, मैं अब बैराग कैसे छोड़ सकती हूं, शंकर? मेरे लिए अब पुरानी नीलम बन जाना बहुत मुशकिल है."

"सब संभव है, नीलम. इस संसार

नहाने के बाद अंगोछा लपेटे ज्यों ही शंकर अपने झोपड़े की ओर चला, नीलम को सामने बैठा देख कर वह एकदम ठिठक कर रह गया.
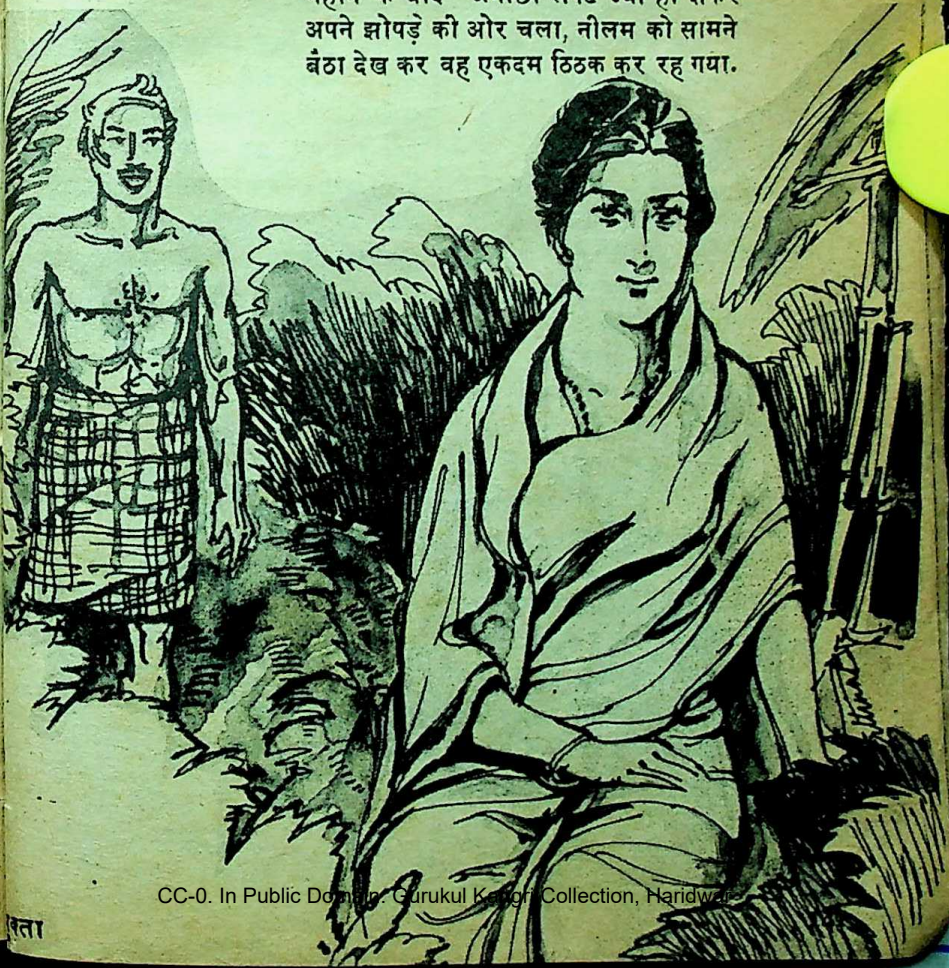
में असंभव कुछ भी नहीं. सब ठीक हो जाएगा. कोई क्या कहता है, इस पर विचारना तुम्हारा काम नहीं. तुम क्या करती हो, इस का तुम्हें ध्यान अवश्य रहना चाहिए."

"शंकर, न जाने आजकल मुझे क्या हो गया है? मैं अपने आप से बहुत भयभीत रहने लगी हूं."

"यह बहुत बुरी बात है. वैसे तुम एकांत में कम ही रहा करो और घूमने की आदत डालो. सुबह की शीतल वायु अच्छे विचारों को जन्म देती है. अगर तुम भोर के समय में घूमना शुरू कर दो तो निश्चय ही तुम में नई स्फूर्ति, नए विचार एक नया परिवर्तन ले आएंगे. तुम देखोगी कि सब कुछ कितना सुंदर है."

"अच्छा," नीलम ने इस प्रकार कहा, जैसे वर्षों बाद कोई मरीज बोला हो.

शंकर उठ कर चला गया. शाम के पांच बज चुके थे.

नीलम परेशान रहने लगी. आसन खाने को दौड़ता था. आसन पर बैठना तो क्या उस की कल्पना से भी अब उसे डर लगता था. वह सोचती, यह कैसा शांति का मार्ग था, जिस पर चल कर उसे शांति नहीं मिली.

उस दिन मन में भावनाओं का तूफान लिए सुबह होते ही नित्य की भांति वह घूमने निकल पड़ी. पेड़ों के झुरमुटों में से जाती हुई पगडंडी पर वह चलती रही. फिर एक जगह आ कर वह ठिठक गई. यहां से पगडंडी दो भागों में बंटती थी. एक उस के अपने खेतों को जाती थी, दूसरी कंचनपुर के रास्ते को काटती हुई शंकर के खेतों को. कुछ पल वह वहीं खड़ी रही, फिर दूसरी पगडंडी पर चल पड़ी.

कुछ दूर आने के बाद ही उसे शंकर के खेत नजर आने लगे. शंकर के खेत में पहुंच कर वह उस में बने मकान की ओर मुड़ गई. मकान का दरवाजा खुला था. पिछवाड़े में तालाब था. वहां कुछ देर बैठने को उस को इच्छा हो आई. सूरज कुछ चढ़ आया था. सुबह की सुनहरी धूप वृक्षों के पत्तों से छनछन कर आ रही थी. तालाब के किनारे जा कर बैठने के लिए वह आगे बढ़ी.

ज्यों ही वह मकान की आड़ से निकली, स्तब्ध रह गई. लज्जा से उस की आंखें स्वयं मुंद गईं. फिर भी उस के होंठों पर हलकी सी मुसकराहट आ गई. उस ने अपना बढ़ा हुआ कदम वापस खींच लिया. क्षण भर वह दीवार के सहारे पीठ टिकाए वहीं खड़ी रही. पीछे घूम कर देख लेने की उस की हिम्मत जवाब दे गई. धीरेधीरे चल कर वह मकान के बाहर उगी दूब पर बैठ गई.

कुछ देर बाद गुनगुनाता हुआ शंकर पिछवाड़े से भीगे बदन पर अंगोछा लपेटे हुए निकला. नीलम को वहां बैठे देख कर वह सकपका गया. फिर नीची गरदन किए शरमाता हुआ जल्दी से अंदर भाग गया. नीलम ने उस के पदचापों की ध्वनि तो सुनी, पर गरदन उठा कर नहीं देखा. कुछ देर बाद ही शंकर कपड़े पहन कर बाहर निकल आया.

नीलम सोच रही थी कि अगर शंकर को यह आभास हो गया कि उस ने उसे स्नान करते समय देखा है तो वह क्या सोचेगा. पर शायद नहीं, उसे नहीं पता. उस का मुंह तो दूसरी तरफ था.

"नीलम," नजदीक आ कर शंकर ने उसे पुकारा.

नीलम चौंक गई. न जाने क्या सोच कर वह खड़ी हो गई. हाथों की उंगलियां चटकाने लगी.

"बैठोबैठो, नीलम. आज तुम इधर कैसे निकल आईं?"

"बस, ऐसे ही घूमने. तुम ने ही तो कहा था न कि घूमना तुम्हारे लिए..."

"अच्छा, पर इधर कैसे?"

"इधर तो मैं कभीकभार तुम्हारे

तालाब के किनारे बैठने आ जाती हूं."

शंकर को अचानक हंसी आ गई. फिर तो नीलम की भी हंसी फूट पड़ी. दोनों ने आंखों की कोर से एकदूसरे को देखने की कोशिश की. दोनों ही एकदूसरे से शरमा गए.

"नीलम, मुझे नहीं मालूम था कि कोई इधर भी आ सकता है. माफ करना, जो कुछ तुम ने देखा, उसे भूल जाना."

"शंकर, तुम क्या कह रहे हो? आखिर किस लिए माफी मांग रहे हो?"

"अच्छा, छोड़ो इस बात को. बोलो, चाय पियोगी?"

"नहीं. इच्छा नहीं है."

"पर मेरी तो इच्छा है."

"तो बना लो. पर, शंकर, क्या तुम यहीं रहते हो?"

"हां, खेतों की रखवाली के लिए कल से ही यहां रहना शुरू किया है. जंगली पशु आजकल इधर बहुत आने लगे हैं." इतना कह कर शंकर फिर मकान में चला गया.

नीलम बैठी कुछ सोचती रही. इतने में शंकर चाय ले आया. उस ने चुपचाप चाय पी. फिर उठ कर खड़ी हो गई.

"अरे, देखो तो कितनी देर हो गई है."

"अच्छा, अब तुम जाओ."

नीलम घर की तरफ चल दी. शंकर कुछ देर तक उस को जाते हुए देखता रहा. फिर मंदमंद मुसकराता हुआ अंदर चला गया.

नीलम सोचती रही, 'मैं इधर क्यों आई? उसे नहाते देखने का मुझे क्या अधिकार था? एक विधवा का एक परपुरुष से अकेले में मिलना क्या अर्थ रखता है? मेरे पैर क्यों इस पगडंडी पर स्वयं मुड़ गए थे? मेरा अशांत मन क्या चाहता है? क्या शंकर मुझे रास्ते से भटका रहा है? क्या वह मेरी पवित्रता की हंसी उड़ा रहा है? क्या मैं अपवित्रता की ओर जा रही हूं? क्या शंकर मुझ से कुछ चाहता है? लेकिन शंकर ने तो ऐसा कुछ व्यक्त नहीं किया. तो क्या मैं ही शंकर को अपनी ओर खींचना चाहती हूं?

'नहीं, मेरे लिए तो ऐसी बात मन में लाना भी पाप है. मैं विधवा हूं. पर इस में शंकर का क्या दोष है? उस ने कुछ भी ऐसा नहीं कहा. सूर्य की किरणों में चमक रहे उस के कुंदन समान चमकदार शरीर में कैसा मादक खिंचाव था. छि... ये कैसे विचार आज मुझे घेरे हुए हैं?'

पंदरह हजार डालर कूड़ा बन गए

मैलबोर्न के एक दंपती द्वारा जोड़े गए पंदरह हजार डालर एक कूड़े के ढेर में मिल कर, कूड़ा बन गए. उन की कुल जमा पूंजी यही थी.

ये दोनों पतिपत्नी अपनी दिन भर की कमाई रात को एक कूड़ेदान में छिपा दिया करते थे और सफाई कर्मचारियों के आने से पहले निकाल लिया करते थे.

एक दिन ये लोग सोते ही रह गए और सफाई कर्मचारी कूड़ा बटोर कर चल दिए. सुबह उठते ही जब उन्हें इस बात का पता चला तो वे उस स्थान की ओर भागे, जहां शहर का सारा कूड़ा जमा किया जाता था.

गंदगी और दुर्गंध की परवाह किए बिना ये दोनों पतिपत्नी आठ घंटे तक अपना धन वहां ढूंढ़ते रहे, किंतु कोई लाभ नहीं हुआ. तभी अचानक जोरदार बरसात होने लगी, जिस की वजह से सारा कूड़ा कीचड़ बन गया और उन की आखिरी उम्मीद पर भी पानी फिर गया.

नीलम ने अपने सिर को दोनों हाथों से दबा लिया.

बहुत समय बाद नीलम अपने ऊपर वाले कमरे की खिड़की खोले बाहर तालाब के किनारे खड़े पुराने बरगद के पेड़ को देख रही थी. बरगद के पेड़ के बीच में से आकाश दिखाई देता था. बहुत देर बाद उसे बरगद का पेड़ एक ऐसे बड़े काले बिंदु के समान लगने लगा, जिस में कोई अनेक कोणों से युक्त सफेद नीली आकृति हो. इस बिंदु में उसे अपने अज्ञात विचार चक्कर खाते प्रतीत हुए. ऐसे में उसे वह अपनी ही छाया बनती नजर आई. उसे अपने लंबे एकाकी जीवन से डर लगने लगा. वह अपने बारे में सोचसोच कर बहुत परेशान हो उठी.

बादलों की घनघोर गर्जना शाम से ही हो रही थी, बिजली भी चमकने लगी थी. उसे अपनी स्थिति का आभास हुआ. वह फिर भी अनमनी सी खड़ी रही. इक्कादुक्का बूंदें भी गिरने लगीं. अचानक बारिश बहुत जोर से होने लगी. वह खिड़की में खड़ीखड़ी लगभग भीग गई. उस ने खिड़की के दोनों पट एक झटके के साथ बंद कर दिए. उस के होंठों पर जाड़ों की धूप सी हलकी मुसकान उभरी और लुप्त हो गई.

कौन उस के कमरे की बत्ती जला गया था और कौन उस के लिए वहां खाना रख गया, उसे कुछ ध्यान ही नहीं रहा. वह कैसी बावली सी होती जा रही है. कमरे का दरवाजा खड़खड़ा उठा. उस की विचार शृंखला टूटी. वह खाने की ओर बढ़ी. उसे खयाल आया कि सुबह भी उस ने खाना नहीं खाया था. उस की भूख और तेज हो गई. उस ने अपने गीले वस्त्र भी नहीं उतारे और खाना खाने बैठ गई. खाना गरम था.

खाना खाने के बाद नीलम ने अपने भीगे वस्त्र उतार दिए और एक हलका-फुलका आसमानी रंग का परिधान धारण किया. यह उस ने अपनी शादी के समय बनवाया था. सन्यास लेने के बाद आज पहली बार उस ने सफेद रंग के अलावा कोई दूसरे रंग का परिधान पहना था.

नीलम विचारों में खोई अपने बिस्तर पर जा लेटी, फिर धीरेधीरे न जाने कैसे उस के तनबदन में उन्मादी तरंगें सी उठने लगीं. नीलम बिस्तर पर लेटीलेटी कसमसाने लगी. इस कसमसाहट में उस का मन बेचैन हो गया. उस के मस्तिस्क में एक हथोड़ा सा बज उठा. कहां वह और कहां उस की हमउम्र सखियां, अपने पतियों के संग हंसतीइठलाती सखियां. नीलम की दृष्टि सामने वाले शीशे पर जा अटकी.

वह बिस्तर से उठ कर खड़ी हुई. फिर देर तक सोचती रही. क्या अभी उस में भी कुछ ऐसा है, जो किसी को भा सके? क्या कोई उसे अपना सकता है? नहीं, उस में अब ऐसा कुछ नहीं.

फिर अचानक उस ने वे वस्त्र भी उतार दिए. तनाव से भरी निर्वस्त्र वह अपने आप को आदमकद शीशे में देखती रही. पल भर में उसे स्वयं ही गुदगुदी सी अनुभव हुई. वह अपने आप में शरमा गई, फिर अपने बिस्तर में जा दुबकी. वह खुश थी. उस की उखड़ी हुई सांसें उस की खुशी को जाहिर कर रही थीं. हां, उस में अभी सब कुछ है. फिर न जाने उसे लेटेलेटे क्या हुआ, उस ने उठ कर अपने वस्त्र पहने. फिर बरसाती ओढ़ कर अपने कमरे से बाहर आ गई. कुछ देर वह वहां खड़ी रही, फिर धीरेधीरे कदमों से चलती हुई घर से बाहर आ गई.

वह शंकर को खेत के मकान में न पा कर घबरा गई. लालटेन की रोशनी में कमरे की चुप्पी भी उसे प्यारी लग रही थी. फिर उस का ध्यान बंटा. शंकर का कुत्ता भौंकता हुआ पास ही आता महसूस हुआ. उसे कोई डर नहीं था. वह पूर्वपरिचित था. कुत्ते ने उस के पांव चाट कर उस के साथ चिपट कर दुम हिला

कर
उस

नील
लेकि
बोल
तुम
दबा

उस
समझ

तुम्ह
तुम्हें

कर अपना प्यार जताया. नीलम के हाथ उस की पीठ पर फिरने लगे.

इतने में शंकर भी आ गया. वह नीलम को देख कर चौंका, ठिठका. लेकिन फिर मंदमंद मुसकराता हुआ बोला, "मुझे उम्मीद थी कि एक दिन तुम में तूफान जरूर उठेगा. जो तुम्हारे दबाने पर भी नहीं दबेगा."

नीलम आश्चर्यचकित डरीडरी सी उस की ओर देख रही थी, जैसे कुछ समझ न रही हो.

"घबराने की बात नहीं, नीलम. तुम्हारा मन संतुलित नहीं है. आओ, तुम्हें घर छोड़ आऊं. मैं सब समझता हूं, तुम्हें मुझ से कुछ कहने की जरूरत नहीं."

नीलम उस के कंधे से लग कर रो पड़ी.

शंकर ने उस की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, "नीलम, मैं भी तुम्हें प्यार करता हूं, मैं तुम से कहीं ज्यादा बेचैन रहने लगा हूं. पर मैं रात के इस अंधियारे में तुम्हें अपनाने से अच्छा समझता हूं कि हम सुबह का इंतजार करें, ताकि अपना नया घर बसा सकें."

नीलम की आंखों में आंसू थे, जिन्हें शंकर ने हाथ बढ़ा कर पोंछ दिया. नीलम सोच रही थी, 'वास्तव में यही सच्चा मार्ग है.' ●

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्त्वपूर्ण होती है, लेखक का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दिया जा रहा है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इस में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 50 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए

द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए

तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.

इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे.

इस के लिए 35 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,

नई दिल्ली-110055.

अराजकता, धांधलेबाजी और जातिवाद का अखाड़ा

ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय

लेख • विजय अग्रवाल 'रजनीश'

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय में इस वर्ष लगभग 50 परीक्षा केंद्र बनाए गए थे. 1980 की इंटरमीडिएट की परीक्षा और 1979 की बी. ए. की परीक्षा जो उस साल स्थगित कर दी गई थी, इन में होने वाली थी. विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति डाक्टर एच. एन. यादव ने यह निर्धारित किया था कि एक कालिज के परीक्षार्थी दूसरे कालिज में परीक्षा देंगे. यह भी निश्चय किया गया था कि जिला मुख्यालयों में ही परीक्षा केंद्र रखे जाएंगे. यदि कहीं और कोई कालिज प्रशासनिक दृष्टि से पूर्ण सक्षम है, तो उसे केंद्र बनाया जा सकेगा.

बाद में डाक्टर यादव कुलपति न रहे, तो भी इस नियम के आधार पर केंद्रों का निर्धारण हुआ. लेकिन निर्धारण में मधुबनी और दरभंगा के कालिजों के छात्रों के प्रति विशेष पक्षपात दिखलाया गया.

दरभंगा प्रमंडल के आयुक्त श्री भास्कर बनर्जी जब कुलाधिपति हुए तो उन्होंने सभी महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों तथा स्नातकोत्तर विभागों के अध्यक्षों एवं विश्वविद्यालय प्रशासन के प्रमुख व्यक्तियों की एक बैठक दरभंगा में बुलाई. इस बैठक का उद्देश्य परीक्षा का सुचारु संचालन करना, महाविद्यालयों में अध्यापन की समुचित व्यवस्था करना तथा विश्वविद्यालय को चुस्त बनाना था.

इस बैठक में कई प्रधानाचार्यों ने, जो परीक्षा केंद्रों में अधीक्षक भी रहते हैं, दरभंगा और मधुबनी के कालिजों के छात्रों के केंद्र आपस में न बदले जाने तथा कुछ

व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति में लगे चंद महत्वाकांक्षी राजनीतिबाजों ने मिथिला विश्वविद्यालय के परीक्षा विभाग की गतिविधियों में हस्तक्षेप कर के परीक्षकों, प्रधान परीक्षकों आदि की नियुक्ति जातिवाद और कृपावाद के आधार पर कर के यहां के प्रशासन को पंगु बना दिया है. और इन हालात में जो परीक्षाएं हुईं उन का दृश्य तो बस देखते ही बनता था.

स्थानों में जिला स्कूलों को केंद्र बनाए जाने की कटु आलोचना की. उन्होंने आयुक्त से स्पष्ट कहा कि इस से परीक्षाओं में नकल रोकने का प्रमुख मुद्दा ही विफल हो जाएगा. कानून और व्यवस्था की दृष्टि से भी यह गलत होगा. व्यक्तिगत सुरक्षा के भय से परीक्षा निरीक्षक व केंद्र अधीक्षक नकल को रोकने में पूरी रुचि नहीं ले पाएंगे. लेकिन ऐसा लगा कि इन केंद्रों के निर्धारण में राजनीतिक दबाव इतना ज्यादा रहा कि उन में किसी भी प्रकार का परिवर्तन आग से खेलना हो सकता था.

विश्वविद्यालय में राजनीतिक हस्तक्षेप

इसी बीच राज्य में डाक्टर जगन्नाथ मिश्र के नेतृत्व में इंदिरा कांग्रेस सरकार का गठन हो गया. मिथिला विश्वविद्यालय के क्षेत्र पंडौल से निर्वाचित श्री कुमुद रंजन शिक्षा उपमंत्री बने. उन का दरभंगा प्रमंडल की राजनीति में वर्चस्व है. इस दृष्टि से मुख्य मंत्री का आशीर्वाद उन्हें प्राप्त है. मिथिला विश्वविद्यालय के संचालन में इन्हीं दो राजनीतिक हस्तियों का महत्त्व है.

विधान सभा चुनावों से पूर्व विश्वविद्यालय की जो परीक्षाएं ली गई थीं, उस में सारे विश्वविद्यालय के लिए सिर्फ दरभंगा में ही परीक्षा केंद्र रखा गया था. उस समय दरजनों छात्र नकल के आरोप में निष्कासित कर दिए गए थे. यहां तक कि परीक्षार्थी ताकझांक करने में भी भय खाते थे. कड़े प्रश्नपत्रों के नाम पर परीक्षार्थियों द्वारा परीक्षा भवन से वाक आउट करने पर भी विश्वविद्यालय झुका नहीं था.

लेकिन नई सरकार बनने के बाद बी. ए., इंटरमीडिएट की जो परीक्षाएं शुरू हुईं तो राजनीतिक लाभ उठाने के लिए मंत्रियों ने निष्कासित छात्रों की पैरवी करनी शुरू कर दी और विश्वविद्यालय के दैनिक तथा सामान्य प्रशासन में राजनीतिक हस्तक्षेप व दबाव बढ़ गया. नीति निर्धारण और सामान्य प्रशासन दरभंगा में न रह कर मुख्य मंत्री और शिक्षा उपमंत्री के कार्यालयों में सिमट गया.

विश्वविद्यालय के परीक्षा विभाग के प्रशासन में भी कुछ परिवर्तन किए गए. श्री रूपनारायण झा को नया कुल सचिव बना दिया गया, जो इसी विश्वविद्यालय में कालिजों के निरीक्षक पद पर थे. श्री झा पहले बिहार विश्वविद्यालय के कुल सचिव रह चुके थे. जनता शासन के दौरान उन्हें वहां से हटा दिया गया था, जिस का प्रतिकार इंदिरा कांग्रेस शासन में होना जरूरी था.

विश्वविद्यालय के परीक्षा विभाग के सहायक कुल सचिव श्री काजमी को अंकेक्षण विभाग में भेज कर उन के बदले श्री रविकांत झा को सह कुल सचिव बनाया गया.

निष्कासित छात्रों को प्रश्रय

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार परीक्षार्थी परीक्षा देने की तैयारी में लगे थे. उधर सत्तारूढ़ दल के राजनीतिबाजों के कुछ चहेते तथा मंत्रियों के चमचे यह दबाव डाल रहे थे कि परीक्षा उन के अपने कालिज में ली जाए. ऐसे छात्रों में बेगूसराय, दरभंगा और मधुबनी के ही छात्र प्रभावी थे. इधर शिक्षा उपमंत्री की सिफारिश पर विश्वविद्यालय के परीक्षा विभाग ने एकदो महत्त्वपूर्ण छात्रों के विरुद्ध निष्कासन के आदेश भी वापस ले लिए और उन्हें परीक्षा में बैठने की अनुमति दे दी गई.

जब ऐसे ही एक अति महत्त्वपूर्ण छात्र मंत्री महोदय का व्यक्तिगत पत्र ले कर परीक्षा विभाग के एक अधिकारी के पास पहुंचे तो अधिकारी ने कहा, "तुम्हारी तैयारी तो है नहीं, फिर पास कैसे होओगे??" छात्र ने तुरंत उत्तर दिया कि इस बार तो जहां परीक्षार्थी पढ़ता है, वहां परीक्षाएं ली जा रही हैं. इसलिए

कर के पास हो ही जाएगा. अधि-
निरुत्तर हो गए, क्योंकि मंत्री का
उन्हें भी था.
जब परीक्षा ने राजनीतिक दबाव के
कुछ निष्कासित छात्रों के विरुद्ध
ासन के आदेश वापस ले लिए तो
निष्कासित छात्रों को भी यह छूट दे
ई. यहां तक कि जो आनर्स परीक्षा
यं नहीं बैठे थे उन्होंने भी अब पास-
की परीक्षा देने की अनुमति प्राप्त
के लिए विश्वविद्यालय में भागदौड़
कर दी. आश्चर्य की बात यह है कि
भी स्वीकृति दे दी गई. इस प्रकार
जनीतिक हस्तक्षेप के कारण परीक्षा
ग और परीक्षा निरीक्षकों व केंद्र
क्षकों का मनोबल टूट गया.

मुख्य मंत्री की ओर से हस्तक्षेप

परीक्षा से दोतीन दिन पूर्व मुख्य
ने यह निर्णय लिया कि सब छात्र
कालिजों में परीक्षा देंगे. रेडियो
अखबारों द्वारा इस की व्यापक
ा दे दी गई. जो परीक्षार्थी अपने
ारित परीक्षा केंद्रों में चले गए थे वे
स लौट आए. उपर्युक्त घोषणा ने
ों के भीतर संजीवनी बूटी का काम
ा.

जब मुख्य मंत्री के इस निर्णय के बाद
क्षा शुरू हुई तो अवैध साधनों का
कर प्रयोग होने के दृश्य सामने आने
. अपनेअपने कालिजों में परीक्षा देने
अर्थ विश्वविद्यालय के दरभंगा प्रमंडल
हार विश्वविद्यालय का पुराना क्षेत्र)
कालिजों में यह लगाया गया कि घर
ही उत्तरपुस्तिकाएं लिख कर कालिज
जमा कर देने से परीक्षा का कार्य पूरा
जाएगा. दो से 10 किलो तक कापी
ताब ले जाने की पूरी छूट रहेगी.
ीक्षा केंद्रों पर छात्रों के अभिभावक
मदद के लिए मौजूद रहेंगे.

परीक्षाएं शुरू हुईं. सारा परीक्षा
ासन, निरीक्षक, अधीक्षक, पुलिस,
ता
मजिस्ट्रेट सब के सब मूक दर्शक बन गए.
नकल के साधनों का प्रयोग धड़ल्ले से
चलने लगा. कुछ अनुभवी एवं साहसी
अधीक्षकों तथा दरजनों प्राध्यापकों ने
परीक्षा कार्य से अपने को किसी न किसी
बहाने मुक्त करा लिया. कुछ ही ऐसे
दुस्साहसी निकले, जिन्होंने अवैध साधनों
के व्यापक प्रयोग को परीक्षा विभाग के
दायित्व से अपने त्यागपत्र का कारण

बिहार के मुख्य मंत्री जगन्नाथ मिश्र: परीक्षाओं में नकल रोकने के प्रयास करने वाले प्राध्यापक को आप से यह यह नेक सलाह मिली : "आप को परीक्षा चलाने के लिए भेजा गया है न कि रोकने के लिए. यदि आप परीक्षा नहीं चला सकते तो त्यागपत्र दे दें."

बताया. परीक्षा संचालन में विश्वविद्यालय
में मगध विश्वविद्यालय के गणित विभाग
के प्राध्यापक डाक्टर शालिग्राम सिंह की
नियुक्ति हुई. इन्होंने आते ही 15 जुलाई
को दरभंगा, लहरियासराय और मधुबनी
के परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया तथा
परीक्षा भवनों से बोरियों में भर कर चिटें

तथा पुस्तकें ले आए. तुरंत परीक्षाएं स्थगित कर 21 अगस्त की तिथि पुनः परीक्षा के लिए निर्धारित कर दी गई. लेकिन उन की एक न चली. मुख्य मंत्री को इस 'दुर्घटना' की सूचना मिली तो उन्होंने टेलेक्स से डाक्टर सिंह को दो टूक शब्दों में कहा, "आप को परीक्षा चलाने के लिए भेजा गया है, न कि रोकने के लिए. यदि आप परीक्षा नहीं चला सकते तो त्यागपत्र दे दें."

बस, डाक्टर सिंह बेबस हो गए और परीक्षाएं बजाए 21 अगस्त के 19 जुलाई से ही शुरू कर दी गईं. इस तरह दरजनों छात्र परीक्षा देने से रह गए. जिन के लिए विश्वविद्यालय ने पूर्ण सहानुभूति बरतने के आदेश जारी किए हैं.

जब अचानक परीक्षाएं स्थगित कर दी गई थीं तो छात्र जोरों से उबल पड़े थे. तोड़फोड शुरू हो गई थी. दरभंगा में ही लगभग एक दरजन बसें जला दी गई थीं. प्रायः सभी जगह बाजार बंद हो गए थे. लूटखसोट आदि की भी दुर्घटनाएं घटी थीं. इन को रोकने में सामान्य प्रशासन पूर्णतः अक्षम रहा था.

इस बार जो फिर परीक्षाएं शुरू हुईं तो एक ओर जहां परीक्षार्थी खुद को गौरवान्वित समझ रहे थे, वहीं परीक्षा के अधिकारी अपने को निरीह समझ रहे थे. ऐसी खबर है कि परीक्षार्थियों ने इस बार परीक्षा देने में संभवतः विश्व रिकार्ड कायम किया है. सभी परीक्षा केंद्रों में परीक्षार्थियों ने जी खोल कर नकल की. परीक्षा केंद्रों में परीक्षार्थियों से अधिक उन के शुभचिंतकों और मददगारों की भीड़ रहती थी. प्रत्येक परीक्षार्थी को डिक्टेट कराने के लिए कम से कम एक और अधिक से अधिक पांचछः तक मददगार हर समय मौजूद रहते. छात्राओं पर मंडराने वाले ऐसे शुभचिंतकों की संख्या तो अनगिनत थी.

चिटें तैयार करने के लिए प्रत्येक परीक्षा केंद्र के बाहर पोलिंग बूथ जैसा माहौल बन गया. चुनावों में बूथ नियंत्र की भांति छात्रों ने परीक्षा भवनों व नियंत्रण अपने हाथों में ले लिया. निरीक्ष हारे हुए जुआरी की भांति परीक्षा भव से बाहर ही रहे या कंट्रोल रूम में बैठ क चाय की चुसकियों के साथ गपशप कर रहे.

आपूर्ति विभाग की तरह परीक्षा गड़बड़ी रोकने के लिए 'उड़न दस्तों' व भी नियुक्ति हुई, जिन में पर्यवेक्षक, अधी क्षक, संयुक्त अधीक्षक आदि लोग थे सशस्त्र पुलिस भी केंद्रों पर तैनात की ग थी. जिलाधीश और अनुमंडलाधिकारी व केंद्र निरीक्षण का पूर्ण अधिकार था. सार प्रशासनिक काररवाई की गई थी. हजार रुपए पर्यवेक्षकों और उड़न दस्ते को यत्र तत्र भेजने पर लगाए गए, लेकिन हुआ वही, जो आपूर्ति विभाग में होता आय है.

बहती गंगा में सभी ने हाथ धोए

गड़बड़ी करवाने में परीक्षा केंद्रों चपरासी, क्लर्कों तथा कुछ प्राध्यापकों भी बहती गंगा में हाथ धोए. भाईभतीजों रिश्तेदारों को खुश किया गया. अवै साधनों का इस तरह खुल कर प्रयो विश्वविद्यालयों के इतिहास में शायद ही कभी हुआ हो. इतना ही नहीं, महाविद्या लयों और विश्वविद्यालयों के कुछ कर्म चारी तो अति की सीमा लांघ गए. उन्होंने प्रथम पाली में इंटर की परीक्षा में निरी क्षण कार्य किया और दूसरी पाली में बी ए. की परीक्षा में खुद ही परीक्षार्थी बन कर बैठ गए या अपने किसी चहेते छात्र के लिए उस की जगह परीक्षार्थी बन कर परीक्षा दी.

विश्वविद्यालय से लगभग एक ही जाति के पर्यवेक्षकों और उड़न दस्ते के सदस्यों को भेजा गया, जब कि शिक्षा विभाग ने स्पष्टतः यह आदेश जारी किया था कि उड़न दस्ते के सदस्य के रूप में रीडर, प्रोफेसर और प्राचार्य के स्तर के

प्राध्यापकों
सुना
पर्यवेक्षकों
अपनी प्र
परीक्षा में
की चर्चा
परीक्षा
सन्निपात
इन रपटों
करने का

हर

विश्व
और रजि
वस्था की
तथा फा
कराने,
लेने तथ
निकलवा
भी औप
पैरवी
प्रकाशित
सैकड़ों

प्राध्यापकों की ही नियुक्ति की जाए.

सुना जाता है कि इन में से कुछ पर्यवेक्षकों और उड़न दस्ता सदस्यों ने अपनी प्रतिकूल रपट भी दी है और परीक्षा में अवैध साधनों के व्यापक प्रयोग की चर्चा की है. परंतु विश्वविद्यालय के परीक्षा विभाग का प्रशासन अभी ऐसे सन्निपात की स्थिति में है कि शायद ही इन रपटों के आधार पर कोई कारवाई करने का साहस जुटा पाए.

हर विभाग में अनियमितताएं

विश्वविद्यालय का परीक्षा विभाग और रजिस्ट्रेशन विभाग भी पूर्णत: अव्यवस्था की स्थिति में है. कोई भी रिकार्ड तथा फाइल ठीक नहीं है. रजिस्ट्रेशन कराने, प्राइवेट छात्रों के लिए अनुमति लेने तथा विश्वविद्यालय से परीक्षाफल निकलवाने, अंक सूची लेने या अन्य किसी भी औपचारिक कार्य के लिए अच्छीखासी पैरवी या रिश्वत चाहिए. परीक्षाफल प्रकाशित भी कर दिए जाते हैं तो भी सैकड़ों छात्रों के परिणाम अधर में लटके रहते हैं. विश्वविद्यालय में स्थापना से अब तक कोई दीक्षांत समारोह नहीं हुआ है.

परीक्षा में बैठने वाले एक तिहाई से अधिक परीक्षार्थी ऐसे होते हैं, जिन का रजिस्ट्रेशन भी नहीं हुआ होता. स्थानांतरण प्रमाणपत्र, अंक सूची आदि किसी ने प्राप्त कर लिए तो समझ लीजिए कि उस ने एक किला फतह कर लिया.

परीक्षा विभाग का हिसावकिताव रखने में पूरी अव्यवस्था है. कई अधीक्षकों ने विश्वविद्यालय से जो उत्तर पुस्तिकाएं और परीक्षा संचालन के लिए अग्रिम राशि लीं, उस का कोई हिसावकिताव नहीं दिया है. परीक्षकों, प्रधान परीक्षकों आदि की नियुक्ति में जातिवाद और कृपावाद का ही बोलवाला रहता है. अध्यापकों की वरीयता को कोई स्थान नहीं दिया जाता. इस से योग्य अध्यापकों का मनोवल गिर चुका है. यदि प्रशासन को चुस्त नहीं बनाया गया तो यह विश्वविद्यालय निश्चय ही एक ऐसे गर्त में चला जाएगा, जहां केवल अराजकता ही रहेगी. ●

पुरुष भी कैबरे करने लगे

आधुनिक सभ्यता के नाम पर दुनिया के बड़े नगरों में आजकल कैबरे नृत्य का प्रचलन बहुत बढ़ गया है. प्राय: ये नृत्य लड़कियों द्वारा लगभग नग्न अवस्था में किए जाते हैं. परंतु यूरोप के कुछ नाचघरों में अब पुरुष भी कैबरे करने लगे हैं. महिलाओं की तरह वे भी अपने कपड़े उतार कर उत्तेजक मुद्राओं का प्रदर्शन करते हैं.

जहां लड़कियों के कैबरे नृत्य में पुरुष दर्शक होते हैं वहां पुरुषों को इस रूप में नाचते देखने के लिए इन दिनों महिलाओं की भीड़ लग रही है. जेनीवा (स्विटजरलैंड) का 'सूगर शेक' सलीना का 'रेड पुसकैट' तथा ओडेबोल्ट का 'अल मैटाडोर' ऐसे ही नाचघर हैं, जो सैलानी महिलाओं, कुंआरी लड़कियों और तलाकशुदा युवतियों से भरे रहते हैं.

'सूगर शेक' में हर रात एकएक घंटे के तक तीन प्रोग्राम होते है और एक प्रोग्राम में शामिल होने के लिए महिलाओं को चार डालर खर्च करने पड़ते हैं. ऐसे ही एक नाचघर में नाचने वाले गाय गेरेट नामक 24 वर्षीय सुंदर युवक को काफी आय हो जाती है. उस का कहना है कि वह नंगा नाच कर एक सप्ताह में 900 डालर तक कमा लेता है. ●

वाह रे तकिया कलाम!

हमारे बैंक में एक हैड कैशियर थे. उन की हर बात पर 'सौ प्रतिशत' कहने की आदत थी. एक बार उन का छोटा पुत्र घर के किसी कार्य से उन के पास बैंक में आया.

तभी एक नए कर्मचारी ने उन से पूछा, "क्या यह आप का बच्चा है?"

कैशियर बोले, "जी हां, सौ प्रतिशत मेरा है."

वह कर्मचारी पहले तो कुछ चक्कर में आ गया मगर फिर वह बोला, "और बाकी बच्चे कितने प्रतिशत आप के हैं?"

उस का यह पूछना था कि सारे बैंक में हंसी का एक जोरदार ठहाका गूंज उठा.

इस के बाद कैशियर महोदय ने हर बात का प्रतिशत निकालना छोड़ दिया.

—हिसारिया देवीलाल

✦

हमारी कक्षा में एक छात्र को यह कहने की आदत थी कि 'यह काम मेरी ही कृपा' से हुआ है. कक्षा के सभी छात्र उस की इस आदत से परेशान थे.

एक बार किसी छात्र के बड़े भाई के घर में लड़का हुआ. जब उस ने यह बात हम छात्रों को बताई तो वह छात्र तुरंत अपनी आदत के अनुसार बोला, "यह काम मेरी ही कृपा से हुआ है."

यह सुन कर सभी छात्र खिलखिला कर हंस पड़े, मगर तभी उसे दूसरे छात्र से माफी मांगनी पड़ी और इस के बाद उस ने अपनी यह आदत छोड़ दी.

—रमेशकुमार जैन

✦

हमारे एक मित्र, जो हमारे साथ ही काम करते हैं, काफी हंसमुख व मजाकिया स्वभाव के हैं.

वह आम तौर पर मजाक में हमें, 'बोलो बेटा' या 'कहो बेटा क्या हाल है?' कह कर ही बोलते थे.

एक बार उन के पिताजी गांव से यहां आए और उन्होंने हमारे कार्यालय में फोन कर के कहा, "यहां पर मेरा लड़का काम करता है. कृपया उस से मेरी बात करवा दीजिए."

टेलीफोन मैं ने ही उठाया था, इसलिए अपने मित्र का फोन जान कर मैं ने उस से कहा, "बेटा, अपने बाप से बात करो."

मेरे मित्र ने टेलीफोन पकड़ते हुए अपने उसी अंदाज में कहा, "बोलो, बेटा, क्या बात है?"

दूसरी तरफ से अपने पिताजी का स्वर सुन कर उस की हालत खराब हो गई.

—जगदीशचंद्र बंसल

◆

हमारी कक्षा में इतिहास पढ़ाने वाले शिक्षक का तकिया कलाम था—'बीती बातों को दोहराना नहीं चाहिए.' एक बार हमारी कक्षा के दो विद्यार्थियों में झगड़ा हो गया.

उन में से एक ने शिक्षक महोदय से शिकायत कर दी. उन्होंने दूसरे लड़के से पूछा, "तुम ने इसे क्यों मारा?"

"कल इस ने भी तो मुझे मारा था," दूसरे वाले लड़के ने कहा.

यह सुन कर शिक्षक कहने लगे, "बीती बातों को दोहराना नहीं चाहिए."

तब लड़के ने पलट कर कहा, "आप भी तो इतिहास की पुरानी बातें ही दोहराते रहते हैं."

इस के बाद उन शिक्षक महोदय ने अपना यह वाक्य फिर कभी नहीं दोहराया.

—विष्णुप्रसाद गोयल

◆

मेरे पिताजी के कार्यालय में एक अधिकारी थे. उन का तकिया कलाम था—'मुझे पता है.' उन्हें जब भी कोई बात बताई जाती तो वह एकदम कहने लगते, "यह तो मुझे पता है. आप कुछ और कहिए."

एक बार उन के बड़े अधिकारी का अचानक तबादला हो गया, जिस की खबर उन्हें भी थी. बड़े अधिकारी अपने तबादले से काफी परेशान थे. उन्होंने इस बात की सूचना जब इन अधिकारी को दी तो इन्होंने घटना सुनते ही कहा, "साहब, यह तो मुझे पता है. आप कुछ और कहिए."

उन के बड़े अधिकारी ने जब उन्हें इस ढंग से कहते सुना तो उन्होंने समझा इस में जरूर इसी का हाथ है. मन ही मन यह सोचते रहने के कारण बड़े अधिकारी उन से बुरी तरह चिढ़ गए.

तब बड़े अधिकारी ने किसी तरह अपना तबादला तो रुकवा लिया और उन अधिकारी महोदय का तबादला कर दिया.

—नीरज गुप्ता ●

क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति से परिचित हैं जिस का कोई तकिया कलाम हो? इस बारे में आप ने कभी कोई रोचक संस्मरण सुना हो तो उसे मुक्ता के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजिए : वाह रे तकिया कलाम! मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

परमाणु शक्ति: हम कहां हैं?

लेख • सुषमा प्र. गुप्ता

आने वाले समय में परमाणु शक्ति का महत्त्व बहुत अधिक बढ़ जाएगा, इस तथ्य को महसूस कर के भारत सरकार ने 1948 में परमाणु शक्ति मंत्रालय के अधीन परमाणु शक्ति आयोग की स्थापना की थी. देश में ही प्रशिक्षित वैज्ञानिकों और तकनीशियनों द्वारा विकसित तकनीक से ऊर्जा के इस महत्वपूर्ण स्रोत से लाभ उठाने का दायित्व इस आयोग को सौंपा गया था. सरकार की नीति प्रारंभ से ही परमाणु अस्त्रों की होड़ से दूर रहने की रही है, इसलिए इस आयोग की गतिविधियां परमाणु शक्ति के शांतिपूर्ण उपयोग के नएनए क्षेत्र

समय की मांग को देखते हुए भारत के लिए परमाणु शक्ति के समुचित विकास की आवश्कता है. पर क्या इस दिशा में हम आज भी प्रयत्नशील हैं?

डा. हो...
भारत...
रखी ...
किया.
दौर से

तलाशने
उत्पादन
पर...
पर शो...
शक्ति अ...
भाभा प...
रहा है.
सब से ब...
गया है.
आधुनिक
चार प...
हैं. इन...
शक्ति)
रित है,
कनाडा
(शून्य...
10 मेग...
रिएक्टर
चल रह...
भा...
अधीन...
भूकंप ...
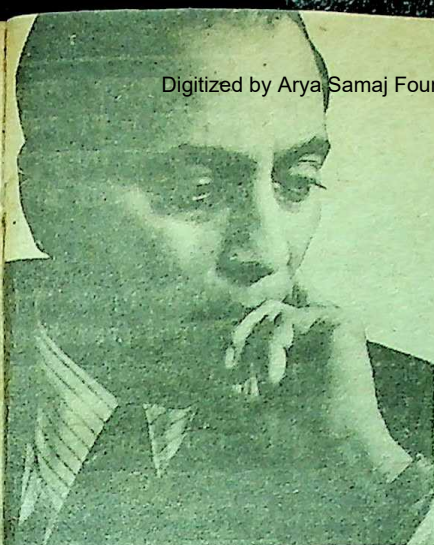
डा. होमी जहांगीर भाभा : जिन्होंने भारत में परमाणु कार्यक्रम की नींव रखी और सशक्त आधार प्रस्तुत किया. पर आज यह आधार संकट के दौर से गुजर रहा है.

तलाशने और अणुशक्ति से बिजली के उत्पादन तक ही सीमित रही.

परमाणु शक्ति के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर शोध और विकास कार्य परमाणु शक्ति आयोग के अधीन ट्रांबे (बंबई) के भाभा परमाणु शोध संस्थान में किया जा रहा है. महत्त्व की दृष्टि से यह देश का सब से बड़ा वैज्ञानिक शोध संस्थान बन गया है. इस समय यहां विश्व स्तर की आधुनिकतम प्रयोगशालाओं के अतिरिक्त चार परमाणु भट्ठियां (रिएक्टर) भी हैं. इन के नाम हैं 'अप्सरा' (एक मेगावाट शक्ति) जो तरणताल तकनीक पर आधारित है, 'साइरस' (40 मेगावाट शक्ति) जो कनाडा के सहयोग से बना है, 'जरलीना' (शून्य शक्ति) और 'पूर्णिमा.' आजकल 10 मेगावाट शक्ति के तापीय शोध रिएक्टर आर—पांच का निर्माणकार्य चल रहा है.

भाभा परमाणु शोध संस्थान के अधीन बंगलौर के समीप गोरविदानौर भूकंप मापन केंद्र भी है. यहां विश्व में कहीं भी किए गए भूमिगत परमाणु परीक्षण का पता लगाने और उस की शक्ति मापने का काम किया जाता है. संस्थान ने ऊंचे स्थान पर परमाणु शक्ति संबंधी प्रयोगों के लिए गुलमर्ग (कश्मीर) में एक प्रयोगशाला बनाई है.

इस के अतिरिक्त परमाणु ऊर्जा से बिजली प्राप्त करने के लिए तारापुर (महाराष्ट्र) और कोटा (राजस्थान) में आणविक बिजलीघर लगाए गए हैं. अब नरौरा (उत्तर प्रदेश) और कलपक्कम (तमिलनाडु) में आणविक बिजलीघरों का निर्माणकार्य प्रगति पर है. इन बिजलीघरों में बड़ेबड़े रिएक्टर लगाए जाते हैं.

असंतोषजनक प्रगति क्यों?

अब तक इन शोधकार्यों और परियोजनाओं पर परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा 1,600 करोड़ रुपए व्यय किए जा चुके हैं. चालू वर्ष के बजट में इस मद के लिए 300 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई है. जिस कार्यक्रम पर इतनी बड़ी राशि व्यय कर के ऐसी योजनाएं चलाई जा रही हों, उन के बारे में कम से कम यह देखना तो जरूरी है कि अब तक जो प्रगति हुई है, वह इस कार्य में लगे धन के हिसाब से संतोषजनक भी है या नहीं.

दरअसल परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम पर 1,600 करोड़ रुपए व्यय करने के पीछे यह उद्देश्य निहित था कि इस शताब्दी के अंत तक देश की समस्त विद्युत आवश्यकता परमाणु ऊर्जा के जरिए पूरी होने लगेगी. भारत में परमाणु कार्यक्रमों के स्वप्नदृष्टा डाक्टर होमी भाभा ने 1947 में कहा था कि हमारा लक्ष्य है कि भारत आने वाले दशकों में बिजली की जरूरत की दृष्टि से पूर्णतः आत्मनिर्भर बन जाए. परमाणु शक्ति आयोग के अध्यक्ष डाक्टर सेठना ने भी 1971 में इसी आशावाद को और आगे ले जाते हुए कहा था कि 1976 से आयोग प्रति वर्ष देश में एक नया परमाणु रिएक्टर

लगाने में समर्थ हो जाएगा.

परंतु वास्तविकता यह है कि परमाणु ऊर्जा विकास परियोजनाओं के निर्धारित लक्ष्यों और उपलब्धियों के बीच भारी अंतर है. प्रति वर्ष एक नया रिएक्टर स्थापित करना तो दूर, मौजूदा तारापुर परमाणु बिजलीघर की आणविक भट्ठी के लिए ही अमरीकी यूरेनियम मिलने में बाधा के कारण कई बार बंद होने की नौबत आई है. वह तो कहिए कि राजनीतिक कारणों से अमरीकी सेनेट ने मात्र दो मतों के बहुमत से राष्ट्रपति कार्टर के यूरेनियम ईंधन प्रस्ताव को मंजूरी दिलवा दी नहीं तो तारापुर का आणविक बिजलीघर तो बंद होने को ही था.

उत्पादन की धीमी रफ्तार

सोलह सौ करोड़ रुपए के विशाल विनियोग के बावजूद परमाणु ऊर्जा विभाग की आय केवल 300 करोड़ रुपए मात्र है. इस आय का प्रमुख हिस्सा प्लूटोनियम की विभागीय बिक्री से प्राप्त होता है. संस्थान की शोध और विकास गतिविधियों से भी कुछ आय होती है, जिस में चिकित्सा और उद्योगों में काम आने वाले रेडियो आइसोटोपों की बिक्री से दो करोड़ रुपए की आय भी शामिल है.

तारापुर और कोटा में लगे आणविक बिजलीघर अभी तक देश की कुल बिजली उत्पादन क्षमता का मात्र तीन प्रतिशत यानी 650 मेगावाट बिजली ही तैयार करते हैं. इन बिजलीघरों की उत्पादन क्षमता में बाधा का एक लंबा इतिहास है. परमाणु ऊर्जा आयोग ने 1971 में आशा प्रकट की थी कि 1980 के अंत तक देश में परमाणु जनित विद्युत का उत्पादन 2,700 मेगावाट हो जाएगा, लेकिन जानकार लोगों की राय है कि 1,250 मेगावाट तक भी कठिनता से ही पहुंचा जाएगा. प्रगति की यही रफ्तार रही तो सन 2000 के अंत तक भी देश में परमाणु विद्युत कुल उत्पादन का 10 प्रतिशत नहीं होगी, जब कि परंपरा-

देश का सब से विवादास्पद तारापुर परमाणु बिजलीघर : जो समृद्ध यूरेनियम के संकट का शिकार होता जा रहा है.

कनाडा के सहयोग से बन रहा राजस्थान परमाणु बिजलीघर : जिस की क्षमता 440 मेगावाट होगी. पर यहां भी भारी पानी का संकट मौजूद है.

गत तरीकों से विद्युत का उत्पादन पिछले 30 वर्षों में 16 गुना से भी अधिक बढ़ा है.

उपभोक्ता को भी परमाणु बिजली सस्ती नहीं पड़ती. वस्तुतः यह ताप विद्युत से 25 प्रतिशत और जल विद्युत से 50 प्रतिशत अधिक महंगी रहेगी. इस समय तारापुर की अणु बिजली 9.6 पैसे प्रति यूनिट और कोटा (राजस्थान) के अणु बिजलीघर की बिजली 15 पैसे प्रति यूनिट पड़ती है, जब कि जल विद्युत की औसत उत्पादन कीमत मात्र सात पैसे प्रति यूनिट है.
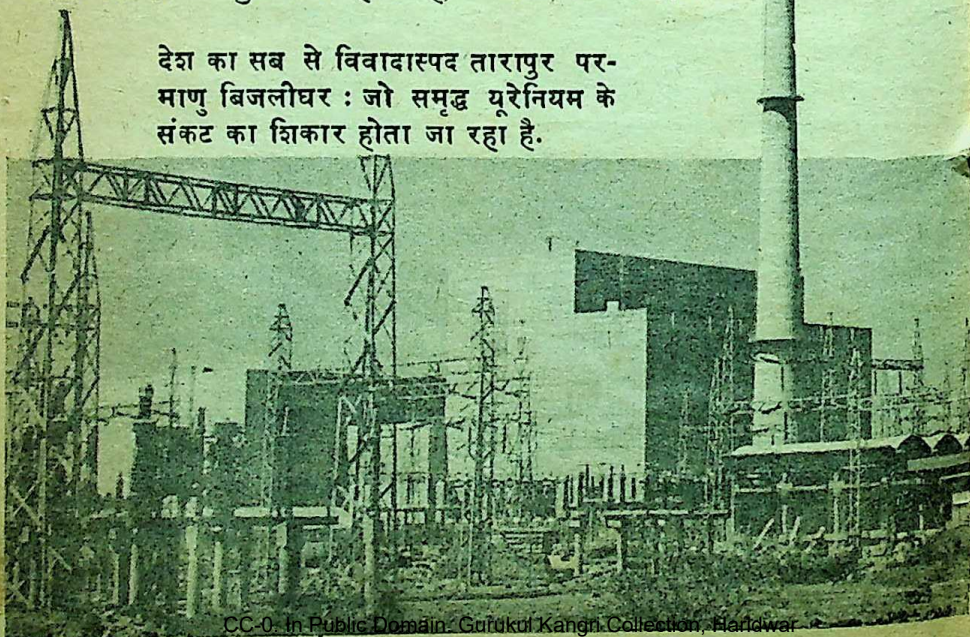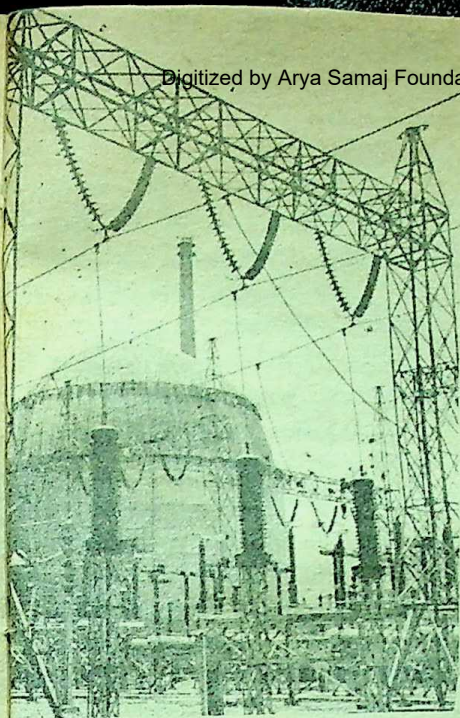
आने वाले वर्षों में आणविक बिजली की कीमत में कमी आएगी, ऐसा कोई संकेत भी अभी नहीं मिला है. इस के विपरीत नरौरा और कलपक्कम के आणविक बिजलीघरों की बिजली की कीमत और भी अधिक होगी. दरअसल जितनी कम क्षमता का परमाणु बिजलीघर होगा, उस में बनाई गई विद्युत उतनी ही अधिक महंगी होगी. इस के अतिरिक्त आणविक बिजलीघर स्थापित करने में छः वर्ष से भी अधिक समय लग जाता है. दो सौ मेगावाट से 400 मेगावाट की सीमित क्षमता का आणविक बिजलीघर लगाने पर अनुमानतः 300 करोड़ रुपए लागत आती है, जब कि इतनी क्षमता के ताप बिजलीघर पर केवल 50 करोड़ रुपए ही खर्च होते हैं.

लक्ष्य से कितनी दूर

तारापुर (आणविक बिजलीघर) का कार्य 1963 में अमरीकी फर्म जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी के सहयोग से प्रारंभ हुआ था और यह 1969 में पूरा हो गया. इस बीच इस परियोजना को जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी द्वारा घटिया सामग्री की सप्लाई जैसी समस्या से भी जूझना पड़ा. निर्माण के दौरान रेडियो विकिरण रिसने के कारण आसपास के क्षेत्र के लोगों के जीवन को खतरा हो गया था. आखिर परामणु ऊर्जा विभाग ने किसी प्रकार इन कठिनाइयों पर काबू पाया. लेकिन इस परियोजना का कार्य आज तक भी संतोषजनक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इस के दोनों बिजलीघर अपनी अधिकतम क्षमता 210 मेगावाट का पूरा उपयोग अभी तक नहीं कर पाए हैं.

राजस्थान परमाणु विद्युत परियोजना (कोटा आणविक बिजलीघर) की कहानी भी कुछ ज्यादा भिन्न नहीं है. इस का पहला बिजलीघर कनाडा की एक फर्म के सहयोग से पांच वर्ष में पूरा होना था, लेकिन इसे पूरा होने में 10 वर्ष लगे. इतने पर भी इस का कार्य अभी तक दोषमुक्त नहीं है. 1973 में तैयार इस आणविक बिजलीघर में शुरू के तीन वर्षों में 220 मेगावाट की क्षमता के बावजूद केवल 90 मेगावाट बिजली का उत्पादन हुआ. चौथे वर्ष रिएक्टर के टरबाइन का ब्लेड टूट जाने के कारण

उत्पादन रुका रहा, इस की मरम्मत सितंबर, 1977 में हो पाई. इस बीच कनाडा ने संयंत्र के लिए फालतू पुर्जे देने पर रोक लगा दी.

1971 में बनना शुरू हुआ कलपक्कम (तमिलनाडु) का आणविक बिजलीघर 1976 में पूरा हो जाना था, लेकिन फिलहाल जो प्रगति है, उसे देख कर यह कहना कठिन है कि यह परियोजना 1983 के नए समय में भी पूरी हो सकेगी या नहीं.

उत्तर प्रदेश की नरौरा परमाणु विद्युत परियोजना 1982 तक पूरी होनी थी, लेकिन काम की गति को देख कर आयोग के अधिकारियों ने लक्ष्य निर्धारित करने की औपचारिकता समाप्त सी ही कर दी है. पिछले वर्ष फरवरी में प्रधान मंत्री ने संसद में स्वीकार किया था कि कोटा का दूसरा आणविक बिजलीघर और नरौरा के आणविक बिजलीघर का कार्य निर्धारित समय से काफी पीछे चल रहा है. उन्होंने इस का कारण रिएक्टर में प्रयुक्त किए जाने वाले हैवी वाटर की कमी और निर्माण कार्य में प्रयुक्त होने वाले कुछ उपकरणों का निर्माण न हो पाना बताया था.

पानी की विकट स्थिति

परमाणु रिएक्टर में जब ईंधन के रूप प्राकृतिक यूरेनियम का प्रयोग किया जाता है, तो रिएक्टर को ठंडा रखने के लिए हैवी वाटर की आवश्यकता पड़ती है. नहीं तो ताप के असामान्य रूप से बढ़ जाने से रिएक्टर धमाके के साथ समाप्त हो सकता है. इसलिए परमाणु रिएक्टर में हैवी वाटर की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है. परमाणु ऊर्जा आयोग ने इसी लिए बड़ौदा, तूतीकेरिन, कोटा और तालचेर में भारी पानी (ड्यूटेरियम आक्साइड) संयंत्र के निर्माण का कार्य शुरू किया था. संयंत्रों में उत्पादन कार्य 1973 से 1976 तक प्रारंभ हो जाना था लेकिन अभी तक किसी भी संयंत्र में उत्पादन शुरू नहीं हुआ है.

नरौरा और कलपक्कम आणविक विद्युत परियोजनाओं के रिएक्टरों के लिए प्रारंभ से ही 800 टन भारी पानी की आवश्यकता होगी. यदि उचित परिणाम में भारी पानी नहीं सुलभ हो सका तो इन परियोजनाओं में कार्य प्रारंभ होने में और अधिक देर लग सकती है.

इस समय आयोग द्वारा स्थापित भारी पानी संयंत्रों में वांछित उत्पादन न हो सकने के कारण देश को भारी राजनीतिक और आर्थिक कीमत चुका कर राजस्थान परमाणु विद्युत परियोजना की दूसरी इकाई के लिए अन्य देशों से भारी पानी खरीदने पर बाध्य होना पड़ रहा है. रूस ने इसरार किया था कि इस परियोजना को अंतरराष्ट्रीय निगरानी व्यवस्था के अधीन रखा जाए. यदि भारी पानी की अपनी व्यवस्था नहीं हुई तो

डा. सेठना : परमाणु ऊर्जा विकास परियोजना के निर्धारित लक्ष्य और उपलब्धियों के बीच अंतर कैसे कम हो?

बूरी में यह मांग माननी पड़ सकती है.

बड़ौदा का भारी पानी संयंत्र सीसी सहयोग से लगाया गया है. छले दिनों इस के अमोनिया कनवर्टर विस्फोट से संयंत्र को काफी क्षति ची थी. फ्रांस में इस के प्रायोगिक त्र (पाइलट प्लांट) में भी इसी प्रकार तकनीकी कमी के कारण भारी क्षति थी. इसलिए बड़ौदा संयंत्र के भविष्य बारे में अनुमान लगाना कठिन नहीं तूतीकेरिन संयंत्र भी फ्रांसीसी प्रारूप बना है, इसलिए इस की सफलता भी दिग्ध सी ही है. वैसे इस संयंत्र में 976 में उष्मा परिवर्तक (हीट एक्स-जर) में विस्फोट से काफी क्षति हुई थी. लचेर का भारी पानी संयंत्र पश्चिम रमनी के सहयोग से लगाया गया है. मुद्री मार्ग से आते हुए इस संयंत्र का वर गुम हो गया था, जिस के कारण का कार्य पूरा होने में विलंब हो हा है.

भारी पानी की इसी कमी के कारण बे के भाभा परमाणु शोध संस्थान में र्माणाधीन शोध रिएक्टर आर–पांच के ावी कार्यक्रम की सफलता भी संदिग्ध नजर आती है.

रिप्रोसेसिंग प्लांट कितना उपयोगी

तारापुर में परमाणु ऊर्जा विभाग ने 0 करोड़ रुपए की लागत से आणविक धन को फिर से काम में लाने योग्य नाने के लिए रिप्रोसेसिंग प्लांट लगाया ा. इस की भी क्षमता का उपयोग नहीं पा रहा है क्योंकि इस में प्रयुक्त ाणविक ईंधन का अवशेष अमरीकी रीक्षण में रहता है. अमरीका ने इस ो दोबारा काम में लाने योग्य बनाने ी राजनीतिक कारणों से अनुमति नहीं ी है. इस बीच इस संयंत्र में राजस्थान रमाणु विद्युत परियोजना के बिजलीघर -प्रयुक्त ईंधन के अवशेष का पुनः ... में बदलने का काम किया जा सकता है, लेकिन इस बिजलीघर में काम नियमित रूप से नहीं हो सका है. इसलिए उस के ईंधन के अवशेष को दोबारा काम लायक बनाने की नौबत ही नहीं आ पाई है.

यह व्यय किसलिए

भाभा परमाणु शोध संस्थान ने खाद्य पदार्थों को विकिरण से लंबे समय तक सुरक्षित रखने का संयंत्र एक ब्रिटिश फर्म के सहयोग से लगाया था. प्रति वर्ष यहां खाद्य पदार्थों को संरक्षित करने के शोध पर लाखों रुपए खर्च किए जाते हैं. हाल ही में विकसित देशों ने विकिरण संरक्षण प्रणाली को व्यय साध्य और निरापद न होने के कारण तिलांजलि दे दी है, लेकिन हमारे यहां अभी भी इस पर काफी धन व्यय किया जा रहा है.

अधिकतर वैज्ञानिक और तकनीशियन यह अनुभव करते हैं कि विभिन्न विकसित देशों की सहायता से लगाए गए संयंत्रों और रिएक्टरों से अपेक्षित लाभ नहीं पहुंच पा रहा है. अमरीका, फ्रांस, कनाडा और जरमनी अकसर इन परियोजनाओं को ले कर राजनीतिक दबाव डालने की कोशिश करते हैं, क्योंकि अभी भी हम इस क्षेत्र के लिए उन्हीं पर निर्भर हैं.

समय की मांग है कि परमाणु ऊर्जा से संबद्ध योजनाओं के प्रारूप से ले कर उत्पादन तक की तकनीक हमारे यहां ही विकसित की जाए ताकि देश को अंतरराष्ट्रीय निगरानी और राजनीतिक दबावों का सामना न करना पड़े. इस के साथ ही युद्ध के अस्त्रों के लिए परमाणु शक्ति के प्रयोग की वर्जना की नीति पर भी पुनर्विचार किया जाना बहुत जरूरी है. हाल ही में पश्चिमी एशिया फिर तनाव का क्षेत्र बन गया है और हमारे देश के लिए इस की चपेट में आने से बचने के लिए परमाणु अस्त्रों का विकास करना बहुत जरूरी हो गया है. ●

मैं
क

में एक
ता है. इ
ा?

सब से
ा चाहिए
फिल्मी
उन की
ों या नह
व समय
न्हें प्रका

मैं 17
ताएं लि
लेने
हुए?

कवि सम
ी है, जिस
नीति चल
त क्षेत्र मे
ा है जो न
चाहते.
र कवि हैं
बजाए
मिकता
फिर भी
ी के लिए
अपने यह
न्न साम
संस्थाअ
य पर
ी रहती

मैं क्या करूं?

अपनी समस्याएं भेजिए. इस स्तंभ के अंतर्गत नीरजा द्वारा आप की समस्याओं का समाधान दिया जाता है.
भेजने का पता : नीरजा, मैं क्या करूं? मुक्ता, नई दिल्ली-55.

मैं एक फिल्मी पत्रिका निकालना चाहता हूं. इस के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

सब से पहले तो आप को यह निर्णय करना चाहिए कि इस समय जो बहुत सी फिल्मी पत्रिकाएं बाजार में मौजूद हैं उन की प्रतिद्वंद्विता में आप टिक सकेंगे या नहीं. पत्रिका प्रकाशन में बहुत पैसा व समय लगता है और छोटे शहर से इन्हें प्रकाशित करना संभव नहीं है.

◆

मैं 17 वर्षीय विद्यार्थी हूं और कविताएं लिखता हूं. कवि सम्मेलनों में भाग लेने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

कवि सम्मेलनों की एक अलग दुनिया होती है, जिस में काफी उठापठक और राजनीति चलती है. पहले से कुछ कवियों ने इस क्षेत्र में अपना एकाधिकार जमा रखा है जो नए लोगों को आगे नहीं आने देना चाहते. यदि आप अच्छे और क्रियाशील कवि हैं तो कवि सम्मेलनों में जाने के बजाए कविताओं के प्रकाशन को प्राथमिकता दें.

फिर भी, यदि कवि सम्मेलनों में जाने के लिए आप ज्यादा ही उत्सुक हैं तो अपने यहां के जिला सूचना केंद्र और अन्य सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक संस्थाओं से संपर्क बढ़ाएं जो समय-समय पर कवि सम्मेलन आयोजित करती रहती हैं.

मैं 18 वर्षीय युवक हूं. मेरे मन में संभोग करने की तीव्र लालसा है. मेरे पास संभोग के पूरे साधन है, पर मैं डरता हूं कि इस के कारण मेरा जीवन अंधकारमय न हो जाए.

आप ने यह नहीं लिखा कि आप के पास संभोग के कौन से साधन हैं. लेकिन इतना निश्चित है कि शारीरिक व मानसिक रूप से सब से स्वस्थ संभोग केवल पत्नी के साथ हो सकता है. यदि आप अविवाहित हैं तो थोड़ा संयम रखें और प्रतीक्षा करें. यदि पढ़ रहे हैं तो पूरा मन पढ़ाई में लगाएं.

◆

मैं बी. एससी. (जीवविज्ञान) का छात्र हूं. मेरी चित्रकला में बेहद रुचि है. मैं बहुत अच्छा चित्रकार बनना चाहता हूं. मुझे क्या करना चाहिए?

चित्रकार बनने का एक आसान तरीका तो यह है कि आप किसी बड़े चित्रकार के शिष्य बन जाएं और इस विषय की पुस्तकों का उस के मार्गदर्शन में अध्ययन करें, साथ ही धैर्यपूर्वक निरंतर अभ्यास करें. दूसरा तरीका यह है कि चित्रकला (फाइन आर्ट या कमर्शियल आर्ट) का डिप्लोमा या डिगरी कराने वाले किसी कालिज में प्रवेश ले लें. डिप्लोमा या डिगरी लेना व्यावसायिक दृष्टि से भी लाभदायक रहेगा.

आप बुलंदशहर में रहते हैं, इसलिए आप के लिए दिल्ली का 'कालिज आफ

आर्ट' उपयुक्त रहेगा. यहां डिग्री कोर्स में उन लोगों को प्रवेश मिल जाता है जो 45 प्रतिशत अंक ले कर हायर सेकंडरी पास हों और जो चित्रकला से संबंधित कालिज की प्रवेश परीक्षा में सफल हो जाएं. इस कालिज का पता है :

कालिज आफ आर्ट, तिलक मार्ग, नई दिल्ली-110001.

✦

मैं एक लड़की से बेहद प्यार करता हूं. हम दोनों एक ही कालिज और एक ही कक्षा में पढ़ते हैं. मैं यह जानना चाहता हूं कि वह मुझ से प्यार करती है या नहीं. मैं उस से बात करने से भी डरता हूं.

वास्तव में आप के जेहन में प्यार की फिल्मी कल्पना है, जिस का व्यावहारिक जीवन से कोई लेनादेना नहीं होता. प्यार की बात भूल कर आप अपनी सहपाठिनी से साफसुथरी दोस्ती कायम करें और पढ़ाईलिखाई में एकदूसरे की मदद करें. बहुत अच्छी तरह एकदूसरे को समझने के बाद ही आप को यह तय करना चाहिए कि दोस्ती को कितना स्थायित्व देना है और उसे कितना बढ़ाना है.

✦

मैं 19 वर्ष की उम्र होने पर भी काफी दुबलापतला हूं. मैं जब पढ़ने बैठता हूं तो मेरे सिर में दर्द होने लगता है. क्या करूं?

दुबलेपतले होने का अर्थ यह नहीं है कि आप अस्वस्थ हैं. कई बार दुबले होने का कारण पैतृक होता है. लेकिन यदि आप अंदर से कोई कमजोरी या बीमारी महसूस करते हैं तो किसी अच्छे डाक्टर से परामर्श करें. इस के साथ ही आप को संतुलित और पौष्टिक भोजन लेना चाहिए और उतनी ही मात्रा में लेना चाहिए जितना आसानी से हजम कर सकें. नियमित रूप से हलकाफुलका व्यायाम भी करें, इतना अधिक व्यायाम न करें कि आप का शरीर बहुत ज्यादा थक जाए.

✦

मैं गुप्ता जाति का 17 वर्षीय युवक हूं और एक बंगाली लड़की से प्रेम करता हूं. हम दोनों शादी करना चाहते हैं, पर हमारे घर वाले राजी नहीं हैं. मेरी उम्र कम है इसलिए कोर्ट मैरिज भी नहीं कर सकता. क्या करूं?

कोर्ट मैरिज के लिए लड़के की आयु 21 वर्ष और लड़की की आयु 18 वर्ष होनी जरूरी है. आप को शादी के लिए चारपांच वर्ष तक और इंतजार करना चाहिए. इस चारपांच साल के अंतराल में आप लोगों को एकदूसरे को समझने का मौका भी मिल जाएगा. हो सकता है, चारपांच साल बाद आप लोग किसी और ही नतीजे पर पहुंच जाएं.

✦

मेरी शादी हुए दो वर्ष हो गए हैं लेकिन अब तक मेरे कोई संतान नहीं है. कारण—मेरी पत्नी हर दोतीन महीने बाद गर्भपात की कोई दवा खा लेती है. मुझे और मेरे घर वालों को बच्चे की बहुत चाह है.

इस विषय में आप अपनी पत्नी से साफसाफ शब्दों में बात करें. उसे प्यार से यह समझाने की कोशिश करें कि सूने घर में बच्चे का कितना महत्त्व होता है. मानोवैज्ञानिक ढंग से अपनी पत्नी के मन में बच्चे के लिए मोह जगाएं. आप की पत्नी की कोई शारीरिक समस्या या अंदरूनी बीमारी हो तो उसे भी सहानुभूतिपूर्वक जानने और हल करने की कोशिश करें.

—नीरजा